राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक—फतहसिंह, एम० ए०, डी० लिट्०

[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

संशोधित मूल्य रु. 140/-
राज्याज्ञा सं. 1(6) क्र.सं. 93
दिनांक 3-12-97 के अनुसार
प्रभारी अधिकारी
रा० प्रा० वि० प्र० भरतपुर

ग्रन्थाङ्क ११३

कविराजा ठाकुर बुधसिंह-कृत

देवीचरित

द्वितीय भाग

[तथा ग्रन्थकार की अन्य लघु कृतियाँ]

प्रकाशक

राजस्थान-राज्य-संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR.

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक—फतहसिंह, एम० ए०, डी० लिट्०

[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क ११३

कविराजा ठाकुर बुधसिंह-कृत

देवीचरित

द्वितीय भाग

[तथा ग्रन्थकार की अन्य लघु कृतियाँ]

सम्पादक

श्री हुक्मचन्द चतुर्वेदी, एम० ए०

प्रकाशक

राजस्थान-राज्य-संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR.

१९६९ ई०

प्रथमावृत्ति ७५० मूल्य २१.००

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान-राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिल भारतीय तथा विशेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषानिबद्ध
विविध वाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट-ग्रन्थावली

प्रधान सम्पादक

फतहसिंह, एम० ए०, डी० लिट्०
निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

ग्रन्थाङ्क ११३

देवीचरित

द्वितीय भाग

[तथा ग्रन्थकार की अन्य लघु कृतियाँ]

प्रकाशक

राजस्थान-राज्याज्ञानुसार

निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

१९६९ ई०

वि० सं० २०२६ — भारत राष्ट्रीय शकाब्द १८९१

मुद्रक : जगदीशचन्द्र स्वर्णकार, अजन्ता प्रिन्टर्स, जोधपुर.

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

प्रधान सम्पादकीय

देवीचरित का द्वितीय भाग प्रस्तुत है। जैसा कि सम्पादक महोदय ने अपनी भूमिका में लिखा है, यह ग्रन्थ किसी एक सम्प्रदाय का नहीं अपितु सभी का समन्वय करता हुआ आधुनिक विज्ञान के इस तथ्य की पुष्टि करता है कि नाना-रूपात्मक जगत् के मूल में वस्तुतः एक ही प्रकृति है। इसी को भारतीय-साहित्य में माया, देवी, जगदम्बा आदि नाम देकर काव्यात्मक रूप दिया गया है। यही आगमों की शक्ति है, इसी की 'वाक्' नाम से वैदिक-साहित्य में स्तुति की गई है और इसी को पुराणों के समान सिन्धु-मुद्रालेखों में भी उमा, परा सा, इंद्रा आदि कहा गया है। देवी की कल्पना शुद्धरूपेण वैदिक है; मार्शल तथा उनका अनुसरण करके अनेक अन्य विद्वानों ने देवी-पूजा को अवैदिक और अनार्य कहकर जो भ्रम फैलाया है उसका निराकरण मैंने अपनी सिन्धु-सभ्यता-सम्बन्धी लेखों और भाषणों में प्रायः किया है। जो पाठक इस विषय में रुचि रखते हों उनसे निवेदन है कि वे प्रतिष्ठान की त्रैमासिक 'स्वाहा' में निरन्तर प्रकाशित होने वाले लेखों को पढ़ें।

मैं विद्वान् सम्पादक को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने अपने स्वास्थ्य की उपेक्षा करके भी इस श्रम-साध्य कार्य को किया। उन्होंने इस महाग्रन्थ के मूल में स्थित दार्शनिक-परम्परा की जो संक्षिप्त रूप में अभिव्यक्ति की है वह विशेष रूप से सराहनीय है। अन्त में, मैं अपने सम्पादन तथा प्रकाशन विभागों के सर्वश्री लक्ष्मीनारायण गोस्वामी, म० विनयसागर तथा गिरधरवल्लभ दाधीच को धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने अनेक कठिनाइयों के होते हुए भी पुस्तक को यथा-सम्भव शीघ्र ही प्रकाशित कर दिया है। देवीचरितकार बुधसिंहजी की कुछ लघु कृतियाँ उनके पौत्र श्री माधोसिंह के सौजन्य से प्राप्त हुई हैं जो ग्रन्थ के अन्त में उन्हीं के द्वारा सम्पादित होकर परिशिष्ट के रूप में प्रकाशित हो रही है। इसलिए मैं श्री माधोसिंह का हृदय से आभारी हूँ।

—फतहसिंह

दिनांक १०-७-६९.

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

भूमिका

देवीचरित के प्रथम भाग में प्रथम चार स्कंध प्रकाशित किये गये थे, किन्तु फिर भी वह भाग चारसौ से अधिक पृष्ठों का हो गया। इस द्वितीय भाग में पाँचवें स्कंध से बारहवें स्कंध तक प्रकाशित किये जा रहे हैं और इसमें लगभग साढ़े छह सौ पृष्ठ होंगे। यदि सम्पूर्ण देवीचरित अखण्डित-रूप में प्रकाशित होता, तो ग्यारहसौ पृष्ठों के एक ही ग्रंथ की जहाँ अपनी कुछ विशिष्टता होती वहाँ पाठकों की दृष्टि से वह कुछ असुविधाजनक हो सकता था। अस्तु, देवीचरित का यह द्वितीय भाग पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है।

प्रथम भाग में प्रकाशित भूमिका में यह संकेत किया जा चुका है कि कथा-प्रवाह को बनाये रखने के लिए देवीभागवत के छन्दोबद्ध-भाषा में भाषान्तरकार कविवर बुद्धसिंह चारण ने यथास्थान काट-छाँट और हेर-फेर किये हैं। क्रम को यथावत् बनाये रखकर इतने विशाल-ग्रंथ को भाषान्तरित करने में ऐसा होना स्वाभाविक है। इस प्रकार का भाषान्तर भावानुवाद की कोटि में आता है।

द्वादश-स्कंधीय देवीचरित में अनेक आख्यान और उपाख्यान आये हैं। प्रथम खण्ड की भूमिका में केवल उन्हीं स्थलों का विवरण दिया गया था जिनमें दानवी-प्रवृत्तियों के भीषण रूप धारण करने पर संत्रस्त देवताओं के संकट-निवारण के लिए जगत्-जननी को प्रत्यक्ष होना पड़ा। अन्य आख्यान अनेकानेक उन मानवी-प्रवृत्तियों से सम्बन्धित हैं जिनकी क्रिया और प्रतिक्रिया विभिन्न प्रकार के शुभाशुभ-कर्मों में व्यक्त होती है। कर्मों का फल भी होता ही है, और तदनुसार बहुधा जन्म होता है क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं की उस शृङ्खला का जिसका अन्त ही दिखाई नहीं देता, नहुष, च्यवन ऋषि, हरिश्चन्द्र आदि के आख्यान इस तथ्य के प्रमाण हैं।

देवीचरित समन्वयात्मक ग्रंथ होते हुए भी केवल अपने नाम के कारण कुछ ऐसा आभास दे सकता है कि यह सम्प्रदाय-विशेष का ग्रंथ है। आज के युग में, जब सम्प्रदाय-शब्द का उच्चारण-मात्र जन-मानस पर एक अस्पष्ट किन्तु घातक, विध्वंसक, लोकभक्षक दानव का चित्र उपस्थित कर देता है और

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

विशेषतया जब राजनैतिक वादों की दलदल में सर्वसाधारण की बुद्धि ग्रसित, स्तम्भित और विमूढ़-सी हो गई है, तो इस ग्रंथ को शाक्त-सम्प्रदाय का समझ कर कुछ लोग इसकी उपेक्षा कर सकते हैं। परन्तु ऐसा समझना और करना भ्रम-जन्य है।

जिस देवी अथवा महामाया भगवती की आराधना का इस ग्रंथ में प्रतिपादन है उसे मूल-प्रकृति के नाम से भी इस ग्रंथ में सम्बोधित किया गया है। प्रकृति-शब्द की यथास्थान जो व्युत्पत्ति दी गई है उससे स्पष्ट है कि यह शब्द सृष्टि के पूर्व की साम्यस्थिति का द्योतक है। त्रिगुणात्मिका होने के कारण वह जगत् की जननी है। सतत चेतन-शक्ति-संयुक्त होने के कारण वह परमात्म-स्वरूपिणी है। वह मानव के भीतर है और बाहर भी; वह मूलतः एक होते हुए भी नानारूपिणी तथा अजेय है। इसी बात को स्पष्ट करने के लिए नारद-विष्णु आख्यान आया है। मनुष्य स्वयं इस सृष्टि का एक अंग है। बुद्धि का अधिक प्रस्फुटन होने मात्र से उसकी सत्ता इस सृष्टि की सत्ता से पृथक् नहीं हो जाती। मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार—जिन्हें अंतःकरण-चतुष्टय की संज्ञा दी गई है—उसी प्रकार सृष्टि के नियमों के अधीन हैं जैसे देह के अन्य अवयव अथवा बाह्य-जगत् की अन्यान्य घटनाएँ। जो लोग प्रकृति पर विजय की चर्चा करते हैं वे सम्भवतः अनजाने में भ्रमात्मक-शब्दावली का प्रयोग करते हैं। सभी आकर्षणों से विमुख होकर जब अनुसन्धानकर्त्ता योगयुक्त चित्त से अपनी विशिष्ट प्रयोगशाला में तपोरत होता है, तो प्राकृतिक-नियमों के रूप में विश्वरूपिणी भगवती के रहस्यों का उद्घाटन करता है और फिर विभिन्न क्षेत्रों में अपने व्यवहार को इस प्रकार ढालता है कि प्राकृतिक-प्रवाह उसकी अभीष्ट सिद्धि में सहायक बनें। प्रकृति की प्रतिकूलता में तो विनाश ही है। प्रकृति अजेय है। माया अजेय है।

मनोयोग के अभाव में न विश्वरूपिणी भगवती की आराधना सम्भव है और न उसके अर्थात् प्रकृति के रहस्यों का उद्घाटन। ऐसे जन्मजात मनोयोगी विरले ही होते हैं जो किसी दिशा-विशेष में रहस्योद्घाटन का श्रीगणेश करने में सफल हो पाते हैं। एक बार मार्ग-दर्शन मिलने पर तो न्यूनाधिक मनोयोगवाले व्यक्ति भी अनेक सफलताओं को प्राप्त कर जाते हैं। किन्तु ऐसे महापुरुषों के जीवन में भी ऐसे क्षण आ जाते हैं जब मद अथवा अहंकार, ईर्ष्या अथवा द्वेष के

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कारण उनका मनोयोग भङ्ग हो जाता है और उनकी तपः-प्रसूत-शक्ति विध्वंसक दिशा धारण कर लेती है। मानस-जगत् के रहस्य बाह्य-जगत् के रहस्यों से कहीं अधिक गूढ़ हैं। वहाँ माया की अजेयता स्वयंसिद्ध है।

आज के मानसिक तनाव के युग में मानसिक-शान्ति और संतुलन की सबसे अधिक आवश्यकता है जिससे संघर्षमय, विक्षुब्ध, वासनोद्दीपक-वातावरण-रूपी अंधकार में, व्यक्ति काल्पनिक भयों से मुक्त होकर, विवेकमणि के प्रकाश में अपनी जीवन-यात्रा अविचल गति से पूर्ण कर सके। इस दिव्य-स्वरूप तेजोमय मणि से अपने अंतस् को प्रकाशित कर एवं श्रद्धा का सम्बल लेकर जब व्यक्ति जीवन में अग्रसर होता है, तो उस अंतःप्रसूत सुख के सहारे जो क्षुद्र सफलताओं और विफलताओं से अतीत है, आगे बढ़ता ही जाता है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए परमात्मस्वरूपिणी भगवती की आराधना की उसी प्रकार और उतनी ही आवश्यकता है जिस प्रकार जितनी विश्वस्वरूपिणी भगवती की आराधना की।

भावना-परिष्कार, मनोयोग और अंतस् की साम्यस्थिति प्राप्त करने एवं उन्हें अप्रतिहत बनाये रखने के लिए श्रद्धानुसार किसी न किसी प्रकार की आराधना अपेक्षित है। देवीचरित में विभिन्न प्रकार की साकार और निराकार साधनाओं का विवरण है, उनसे साधकगण अपनी-अपनी रुचि के अनुसार प्रेरणा ले सकते हैं। देवीभागवत समन्वयात्मक ग्रंथ है और यह दृष्टि देवीचरित में भी अक्षुण्ण रही है। कृष्ण, राधा, रुद्र, राम, तुलसी, शालग्राम आदि का विस्तृत विवरण इसका प्रमाण है। साधकगण अपनी-अपनी मनःस्थिति के अनुसार चयन कर सकते हैं।

रुद्राक्ष, तुलसी और भस्म का विस्तृत विवरण, श्रद्धा से अधिक सम्बन्ध रखते हुए भी आधि और व्याधि के विनाश करने में इनकी जिस उपयोगिता की ओर देवीचरित में संकेत किया गया है, वह अधिक विस्तृत प्रयोग की अपेक्षा करता है।

कृष्ण की रासलीला का विशद विवरण प्रतीक-रूपक है। समष्टि में व्यष्टि-लीला का निक्षेप है। राधा का उपालम्भ तो इसे पूरी तरह स्पष्ट कर देता है। भावना-जगत् और भौतिक-जगत् की घटनाएँ परस्पर सम्बद्ध ही नहीं, वे मूलरूप में समानरूपिणी भी हैं। प्रभा, शान्ति, शोभा, क्षमा आदि नाम्नी

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गोपियाँ निराकार-गुणों के साकार और स्थूल रूप हैं। राधा के क्रोधित होने पर उनका द्रवीभूत होकर सरिता का रूप धारण करना अथवा अमूर्त रूप में परिणत होना, विशेषतया सृष्टि-प्रकरण के संदर्भ में, इस बात की ओर संकेत करता है कि भौतिक-जगत् और भावना-जगत् की एकात्मकता है। भौतिक-जगत् की विभिन्न प्रकार की शक्ति-तरंगों का रूपान्तर और प्रति-रूपान्तर सम्भव होने पर ही टेलीविज़न आदि का आविष्कार सम्भव हुआ है। मानव के अंतर्जगत् के अनुशोधकों ने एक दूसरी प्रकार की प्रणाली का अनुसरण करके पिण्ड और ब्रह्माण्ड की एकात्मता के दर्शन तो किये ही थे, उन्होंने योगशास्त्र आदि के रूप में उस विधि का भी विस्तृत विवरण दिया था जिसका उपयोग करने पर जिज्ञासु उस परम-सत्य के दर्शन स्वयं कर सके। कालान्तर में अनेक प्रकार की विधियों का अनुसन्धान हुआ तथा साधना की अनेक विधियाँ प्रचलित हुईं, जिनमें से कुछ सुगम थीं और कुछ कष्टसाध्य। लक्ष्य एक ही था कि रुचि और क्षमता की विषमताओं के होते हुए भी अंतस् और बाह्य में साम्य स्थापित किया जा सके तथा संघर्षमय-जीवन की कटुता का निराकरण होकर उसमें स्निग्धता और सरसता का पुट हो सके।

विश्वरूपिणी भगवती की आराधना से भौतिक-सुख के साधनों में कल्पनातीत वृद्धि भी की जा सकती है और उन्हें सर्वसुलभ भी बनाया जा सकता है, किन्तु अंतःसाम्य के अभाव में भौतिक-साधनों की बाह्य-तरंगों को सुख की लहरों में परिणत नहीं किया जा सकता। जिन्हें निर्विवाद रूप से सुख का साधन माना जाता है वे ही ईर्ष्या, द्वेष, मद और अहंकार के कारण अंतर्जगत् को क्षुब्ध करनेवाले उत्पीडक बन जाते हैं। यही कारण है कि भौतिक दृष्टि से शत-सहस्र गुना अधिक सम्पन्न होते हुए भी आज का विश्व अंत.साम्य की उपेक्षा करने के कारण सर्वनाश के द्वार पर आ खड़ा हुआ है। विश्वरूपिणी भगवती की आराधना के साथ परमात्म-स्वरूपिणी भगवती की भी आराधना करनी ही होगी।

देवीचरित में जितनी आराधना-विधियों और यज्ञों का विवरण दिया गया है, उनमें सबसे श्रेष्ठ जप-यज्ञ बतलाया गया है। यह सर्वसाधारण की दृष्टि से सबसे अधिक उपयोगी और सबसे सुगम है। नियमित रूप से जप करने पर चित्त एकाग्र होता है और मनोयोग प्राप्त होता है। मानसिक दुर्बलता,

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अस्थिरता, शैथिल्य और दरिद्रता आदि को दूर करने के लिए श्रद्धालु साधक किसी भी बीज-मंत्र का उपयोग कर सकता है। ये बीज-मंत्र नवें से बारहवें स्कंधों में आये हैं।

काव्य-रस-प्रेमी विभिन्न आख्यानों, युद्ध-विवरणों एवं स्वरूप-चित्रों को पढ़कर विभिन्न प्रकार के रसों का आनन्द ले सकते हैं। अनुक्रमणिका को देखकर सहज-रूप में ही ऐसे स्थलों का पता लग सकता है।

इस ग्रन्थ के विभिन्न अंशों का अवलोकन करने पर ही यह स्पष्ट हो सकता है कि शान्त, करुण, शृङ्गार, वीर और भयानक रसों का कितना सुन्दर निर्वाह विभिन्न स्थलों पर कवि की सफल लेखनी द्वारा हुआ है। किन्तु इसके लिए कोरे वास्तविकतावाद की कूपमण्डूकत्व-रूपी संकीर्ण मनोवृत्ति से ऊपर उठना पड़ेगा।

इस ग्रन्थ के सम्पादन में मैं राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान के अधिकारियों का सामान्य रूप से तथा श्री लक्ष्मीनारायण गोस्वामी का विशेष रूप से आभारी हूँ, जिन्होंने अनेक बहुमूल्य सुझाव व सहयोग देकर हमारे कार्य को गौरव प्रदान किया है।

हुक्मचन्द चतुर्वेदी

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कविराजा ठा० बुधसिंहजी

प्रस्तुत ग्रन्थ की रचना करते हुए

[ग्रन्थकार के प्रपौत्र श्री देवीसिंहजी चारण के सौजन्य से प्राप्त]

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

विषयानुक्रम

पंचम-स्कंध

[पृ० १—६६]

	छन्द से छन्द तक
शौनकादि के सूतजी से प्रश्न—	१—३
उत्तर में सूतजी द्वारा व्यास-जनमेजय संवाद को सुनाना, जिससे अवतारी पुरुष कृष्ण द्वारा शिव की आराधना से उत्पन्न शंका का समाधान—	४—३०
जनमेजय द्वारा व्यास से देवीचरित्र सुनाने की प्रार्थना—	३१—३२
व्यास द्वारा देवीचरित्र-कथन—	३३—१३४२
रम्भक और रम्भ का पुत्र हेतु तप—	३४—३५
इंद्र का ग्राह बन कर रम्भक को मारना—	३६—३७
रम्भ का दुःखी होकर अपना मस्तक काट कर अग्नि में होमने को तैयार होना, अग्नि का प्रकट होकर वैसा करने से रोकना और उसे वर देना—	३८—४२
महिषासुर-जन्मकथा—	४३—५०
महिषासुर का तप और ब्रह्मा द्वारा वरदान—	५१—५८
महिषासुर का असुरों का राजा बनना और दानवों की बल-वृद्धि—	५८—६६
दैत्यों और देवों में युद्ध की तैयारियां—	६७—१४७
दैत्यों और दानवों का युद्ध—	१४८—२२१
महिषासुर को अजेय देखकर विष्णु, महेश और ब्रह्मा का युद्ध-क्षेत्र से गमन—	२२२—२२४
इंद्र, कुबेर आदि का युद्ध करते रहना और अन्त में दैत्यों की विजय—	२२४—२३२
वन और कंदराओं के जीवन से दुःखी देवताओं का ब्रह्मा के पास जाना, उनका महादेव के पास गमन और दोनों का विष्णुलोक के लिए प्रस्थान—	२३३—२४४
विष्णुलोक का वर्णन—	२४५—२७४

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

	छन्द से छन्द तक
देवों द्वारा विष्णु से अपना दुःख-कथन—	२७५—२८३
विष्णु द्वारा महिषासुर-विजय के लिए सभी देवताओं की शक्तियों से एक स्त्री उत्पन्न करने का परामर्श देना तथा 'सुरराय' देवी का स्मरण करने के लिए कहना—	२८४—२८८
देवी का प्रकट होना एवं ब्रह्मा, विष्णु, महेश, इंद्र आदि सभी देवों द्वारा अपनी-अपनी शक्ति तथा आयुध और वस्त्र देवी को अर्पण करना तथा देवी-स्वरूप वर्णन—	२८९—३१९
देवी द्वारा अट्टहास करना, महिषासुर का पता लगाने के लिए दूत भेजना और दूत द्वारा समाचार देना—	३२०—३२८
महिषासुर का अपना प्रणय-संदेश लेकर दूत को देवी के पास भेजना, दूत का संदेश देना और देवी का उत्तर—	३२९—३४७
महिषासुर का दूत से देवी का उत्तर प्राप्त करना और अपने मंत्रियों से परामर्श तथा विरूपाक्ष और ताम्र के मत—	३४८—३७२
ताम्र का देवी के पास गमन और उससे महिषासुर का प्रणय-संदेश कहकर विवाह के लिए आग्रह करना—	३७३—३८४
देवी का उत्तर—	३८५—३९०
देवी का गर्जन, ताम्र का पलायन और महिषासुर को समाचार देना—	३९१—३९३
महिषासुर का मंत्रियों के साथ परामर्श—	३९४—४०४
वास्कल और दुर्मुख का दैत्य-सेना के साथ गमन, भीषण युद्ध और उनका संहार—	४०५—४४१
ताम्र तथा दैत्य-सेना के साथ चिक्षुराक्ष का युद्ध के लिए कूच, देवी के साथ युद्ध और मृत्यु—	४४२—४६८
विड़ालाक्ष का असलोमा के साथ सेनासहित गमन, युद्ध और अंत में संहार—	४६९—५०१
महिषासुर का स्वयं युद्ध-क्षेत्र के लिए प्रस्थान, अतुल पराक्रम के साथ युद्ध, अंत में देवी द्वारा संहार—	५०२—५६५
इंद्र आदि देवताओं द्वारा देवी की स्तुति—	५६६—५८५
देवी द्वारा भविष्य के लिए आश्वासन, देवताओं की अनुनय-विनय तथा देवी का मणिद्वीप के लिए प्रस्थान—	५८६—५९२

CC-0. ORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

	छन्द से छन्द तक
महिषासुर के स्थान पर अयोध्यापति शत्रुघ्न का राजा बनना और सर्वत्र देवी-भक्ति का प्रसार, धर्म का प्रचार एवं सुख-समृद्धि—	५९३—६०२
शुंभ-निशुंभ द्वारा पाताल से आकर पुष्कर में तप, ब्रह्मा का आगमन और उन्हें वर देना—	६०३—६१४
शुंभ-निशुंभ द्वारा इन्द्र आदि देवताओं से युद्ध कर उन्हें जीतना और स्वर्ग पर अधिकार करना—	६१५—६२४
देवताओं की विपत्ति, गुधु बृहस्पति के उपदेश से उनके द्वारा बीज-मंत्र जाप, देवी की आराधना और देवी का प्रकट होना—	६२५—६४४
देवी-रूप वर्णन —	६४५ – ६४७
देवताओं द्वारा विपत्ति-कथन, देवी द्वारा उन्हें आश्वासन तथा विपत्तिहरण हेतु कालिका के रूप में एक और कला उत्पन्न करना—	६४८—६५४
देवी का शुंभ की पुरी में पहुँचना तथा चण्ड और मुण्ड द्वारा शुंभ से उसका वृत्तांत कहना—	६५५—६५८
शुंभ द्वारा सुग्रीव नामक दूत को अपना प्रणय-संदेश लेकर भेजना, सुग्रीव और देवी की वार्ता तथा देवी का उत्तर—	६५९—६८९
दूत द्वारा देवी का उत्तर और उसका विवरण देना—	६९०—७००
शुंभ और निशुंभ की मन्त्रणा —	७०१—७०६
धूम्रलोचन का दैत्य-सेना सहित जाना, शुंभ का प्रणय-संदेश कहना, अंत में युद्ध, धूम्रलोचन का अनेकों सैनिकों सहित हताहत होना एवं अवशिष्ट सैनिकों द्वारा शुंभ को युद्ध का समाचार देना—	७०७—७६२
शुंभ-निशुंभ का विचार-विनिमय तथा चण्ड और मुण्ड को युद्ध के लिए भेजना, चण्ड और मुण्ड का योद्धाओं सहित प्रस्थान, देवी से वार्तालाप, युद्ध और अंत में दोनों की भयंकर युद्ध के पश्चात् मृत्यु —	७७७ – ८२४
भागे हुए आहत सैनिकों द्वारा शुंभ को युद्ध का समाचार देना तथा अजेया काली से युद्ध न करने की प्रार्थना करना —	८२५—८३७
शुंभ द्वारा रक्तबीज को भेजना, रक्तबीज और देवी का संवाद, अत्यन्त दारुण युद्ध, अनेक शक्तियों का उत्पन्न होना, काली का विराट रूप धारण करना एवं रक्तबीज का संहार—	८३८—८८२
महादेवजी का शुंभ के पास जाकर उसे युद्ध-त्याग कर पाताल	

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

	छन्द से छन्द तक
जाने के लिए परामर्श देना, शुंभ का इसके लिए सहमत न होना—	८८३—९१५
युद्ध से भागे हुए सैनिक द्वारा शुंभ को रक्तबीज के युद्ध और उसके संहार के समाचार देना—	९१६—९२९
रक्तबीज के निधन पर शुंभ का चिंतित होना तथा निशुंभ का युद्ध के लिए तत्पर होना—	९३०—९३७
निशुंभ का युद्ध के लिए प्रस्थान, उसकी सेना तथा उसके प्रयाण का वर्णन, अत्यन्त भीषण युद्ध तथा उसका संहार—	९३८—१०३३
युद्ध से लौटे सैनिक द्वारा युद्ध का समाचार देना, कुछ नीति के वाक्य कहना, शुंभ द्वारा उन पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करना तथा युद्ध के लिए तत्पर होना—	१०३४—१०६३
शुंभ का युद्ध के लिए प्रस्थान, लोमहर्षण युद्ध का वर्णन, अंत में उसका संहार—	१०६४—११८५
देवताओं का विजय-दुंदुभि बजाना, इस कथा के श्रवण तथा पठन का माहात्म्य—	११८६—११९१
जनमेजय के प्रश्न करने पर व्यास द्वारा राजा सुरथ और समाध वैश्य का कथानक वर्णन करना—	११९२—१३४२
राजा सुरथ पर म्लेच्छों के आक्रमण और मंत्रियों के म्लेच्छों से मिल जाने पर उसका सुमेधा मुनि के आश्रम में जाना—	११९३—१२०५
सुमेधा मुनि के आश्रम का वर्णन—	१२०५—१२०७
सुरथ राजा के मुनि-आश्रम में कालयापन करते हुए समाध वैश्य से भेंट, परस्पर वार्तालाप एवं अपनी-अपनी कष्टकथाओं को मुनि से कहने का निश्चय—	१२०८—१२२९
सुमेधा मुनि द्वारा देवी की आराधना करने का उपदेश देना और इस प्रसंग में—	१२३०—१३१२
ब्रह्मा तथा विष्णु के मोहग्रस्त होकर परस्पर विवाद का आख्यान सुनाना—	१२३६—१२७०
देवी की उत्पत्ति और आराधना विधि बतलाना—	१२७१—१३११
राजा सुरथ और समाध वैश्य द्वारा देवी की आराधना, देवी का प्रकट होना और उन्हें वर देना—	१३१२—१३४२

CC-0. In Public Domain. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

षष्ठम-स्कंध

[पृष्ठ १००—१८६]

छन्द से छन्द तक

जनमेजय के प्रश्न— १—६

वृत्रासुर के वध में इन्द्र, विष्णु और देवी के सम्मिलित होने के सामान्य मायाजनित कारण— ८—१६

वृत्रासुर के जन्म के कारण के प्रसंग में त्वष्टा के पुत्र विश्वरूप उपनाम त्रिशिर मुनि का जन्म, त्रिशिर का तप करना, इंद्र द्वारा तप भंग करने का प्रयास, इसमें विफल होने पर वज्र से प्रहार करना तथा तक्षा द्वारा उसके मस्तकों को कटवाना— १७—४७

इन्द्र द्वारा विना अपराध के त्रिशिर के वध करने पर त्वष्टा का क्रोधित होकर अग्नि-कुण्ड से अत्यन्त तेजस्वी दूसरा पुत्र उत्पन्न करना— ४८—५२

त्वष्टा-पुत्र वृत्रासुर का पिता की आज्ञा-पालन करने के लिए इंद्रपुरी पर आक्रमण, भयंकर युद्ध, इंद्र का अंत में पलायन— ५३—१००

इंद्र की पराजय से तुष्टा का अपने पुत्र वृत्रासुर पर प्रसन्न होना तथा अपने भाई का प्रतिशोध लेने तथा इन्द्र को मारने के उद्देश्य से तप करने की प्रेरणा देना— १०१—१०७

वृत्रासुर का तप, इन्द्र का उसमें विघ्न डालने के प्रयास, ब्रह्मा का आगमन, तथा ब्रह्मा का वरदान— १०८—११७

पिता के दुःख मेटने के लिए वृत्रासुर का प्रस्थान, देवताओं को पराजित कर स्वर्गपुरी पर अधिकार करना एवं देवताओं का पलायन— ११९—१४८

इन्द्र का कैलाश पर और वहाँ से शुंभ के साथ ब्रह्मा के पास तथा सबका एकत्रित होकर विष्णुलोक पहुँचना, विचार-विमर्ष, करना एवं भगवती की आराधना का सुझाव देना— १४८—१६३

देवताओं का जाप-तप, देवी की स्तुति— १६४—१८२

देवी का प्रकट होना, देवी-स्वरूप-वर्णन, देवी का यह कहकर प्रस्थान कि छलयोग से वृत्रासुर का अन्त होगा— १८२—१९३

ऋषियों के मध्यस्थ बनने पर इन्द्र और वृत्रासुर की संधि— १९४—२११

इन्द्र द्वारा छल से वृत्रासुर का वध— २१२—२२६

त्वष्टा का इन्द्र को शाप— २२७—२३१

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

	छन्द से छन्द तक
लोकनिन्दा से इन्द्र का संतप्त और निस्तेज होना तथा तप के लिए गुप्त-रूप से मानसरोवर जाना—	२३२—२५०
नहुष का इन्द्रासन प्राप्त करना, विषय-विमूढ़ होकर शची की इच्छा करना, बृहस्पति की प्रेरणा से शची का नहुष से इन्द्र की खोज के लिए समय लेना, तदुपरान्त उसका विष्णु के पास जाकर उपाय पूछना—	२५१—२९२
विष्णु की प्रेरणा से इन्द्र को ब्रह्म-हत्या से मुक्त करने के उद्देश्य से अश्वमेध यज्ञ करना तथा शची द्वारा देवी की आराधना—	२९३—३०५
देवी का प्रकट होना, देवी-स्वरूप-वर्णन, शची को वर देना तथा उसे इन्द्र का गुप्त स्थान बतलाना—	३०५—३१६
मानसरोवर पर इन्द्र और शची-भेंट, वार्तालाप तथा इन्द्र द्वारा मार्ग-दर्शन करना—	३१७—३३६
शची की इच्छा-पूर्ति हेतु नहुष का सप्त-ऋषियों द्वारा पालकी को उठवाकर उसमें बैठ शची के स्थान के लिए प्रस्थान, मार्ग में कामातुर स्थिति में 'सर्प-सर्प' कहना, अगस्त्य ऋषि द्वारा शाप—	३३८—३५६
नहुष की विनती करने पर अगस्त्य द्वारा शाप से मुक्ति का समय और विधि बतलाना—	३५७—३६०
इन्द्र और शची-मिलन—	३६१—३६५
जनमेजय के शंका-निवारणार्थ पुनः प्रश्न—	३६६—३७०
शंका-समाधान हेतु व्यासजी द्वारा वर्त्तमान, संचित तथा प्रारब्ध-कर्मों का विवेचन, जन्म-मरण तथा भोग में उनकी महत्ता, और इसी प्रसंग में पांडवों तथा कृष्ण आदि के दृष्टांत तथा विभिन्न युगधर्मों की प्रबलता का वर्णन—	३७१—४३८
युगों के धर्म वर्णन—	४३९—४६६
जनमेजय के प्रश्न करने पर आधि-व्याधि विनाशक पराशक्ति की भक्ति का उपदेश—	४६७—४७३
भूमण्डल पर प्रसिद्ध तीर्थों तथा देवी के स्थानों का वर्णन गंगा-तट पर विश्वामित्र और वशिष्ठ के मध्य बगुला और आडी पक्षी के रूप में एक अयुत वर्षीय युद्ध के प्रसंग में—	४७४—४८५
सूर्यवंशी महाराजा हरिश्चन्द्र की कथा—	४८६—५१४

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

छंद से छंद तक

पुत्र की इच्छा से हरिश्चन्द्र द्वारा वरुण की आराधना, पुत्र होने पर नरमेध यज्ञ में उसे वरुण को अर्पण करने का संकल्प, पुत्र-जन्म होने पर बलिदान का स्थगित करना, बड़े होने पर प्राणों के भय से पुत्र का वन में भागना, वरुण का शाप देना, हरिश्चन्द्र का शापवश रोगग्रस्त होना, वशिष्ठ की प्रेरणा से शुनःशेप नामक ब्राह्मण-पुत्र को बलि हेतु क्रय करना, यज्ञ करना, भयाकुल शुनःशेप का करुणक्रन्दन, विश्वामित्र का आगमन, उसकी प्रेरणा से शुनःशेप द्वारा वरुण की आराधना, वरुण का आगमन, शुनःशेप की मुक्ति, हरिश्चंद्र का शापमोचन हरिश्चन्द्र का अपने पुत्र रोहित को बन से बुलवाना, राजा का आखेट के लिए वन जाना, विश्वामित्र द्वारा उनका राज्य दान में लेना—हरिश्चन्द्र को विपत्ति में देख वशिष्ठ का क्रोधित होकर शाप देना, विश्वामित्र का भी शाप देना और दोनों का क्रमशः बगुला तथा आडी पक्षी होना, परस्पर युद्ध करना, अंत में ब्रह्मा द्वारा शाप-निवृत्ति करना।

जिस अहंकार के कारण वशिष्ठ और विश्वामित्र परस्पर शापित हुए, उसे मिटाने के लिए व्यास द्वारा देवी की आराधना का उपदेश— ५१५—५१६

वशिष्ठ को मैत्रा-वरुण क्यों कहते थे, इसके प्रसंग में राजा निमि का आख्यान— ५१७—५५३

राजा निमि की अश्वमेध यज्ञ की तैयारी और

कुलगुरु वशिष्ठ का इन्द्र के यहाँ निमंत्रित होने के कारण सम्मिलित न होना,

निमि द्वारा गौतम को गुरु बनाना और अश्वमेध यज्ञ सम्पन्न करना,

गुरु वशिष्ठ का लौटने पर निमि के यहाँ जाना और अपना अनादर समझ कर निमि को शाप देना,

निमि का रुष्ट होकर वशिष्ठ को शाप देना एवं

वशिष्ठ का ब्रह्मा के पास गमन, उनके आश्वासन और प्रेरणा से मैत्रा-वरुण के शरीर में वशिष्ठ का प्रवेश करना एवं

वरुण के यहाँ उर्वशी का आगमन, मैत्रा और वरुण दोनों का मुग्ध

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

छंद से छंद तक

होना, उन दोनों के वीर्य का एक घट में गिरना तथा अगस्त्य और वशिष्ठ दोनों का जन्म।

शापवश निमि के शरीर का क्षीण होना, अपनी इच्छा-पूर्ति के लिए देवताओं और ऋषियों के उपदेश मे देवी की आराधना करना, देवी का प्रकट होकर वर देना— ५५४—५७१

निमि की देह से मंथन के द्वारा मिथि अथवा जनक नाम के पुत्र की उत्पत्ति— ५७१—५७७

ब्रह्मा-पुत्र वशिष्ठ और इक्ष्वाकु-पुत्र निमि के परस्पर शाप के प्रसंग में मायाजनित मोह, अहंकार, विद्या, शास्त्र-ज्ञान और अनुभव-ज्ञान का भेद एवं स्वभाव की प्रवलता का वर्णन— ५७८—६०५

इसी प्रसंग में हैहयवंशियों द्वारा भृगुवंशियों को मारने तथा उन्हें पीड़ा देने का आख्यान तथा अंत में भयभीत भृगुवंशी महिलाओं द्वारा गौरी की आराधना, स्वप्न में गौरी द्वारा एक महिला को आश्वस्त करना, हैहयवशियों द्वारा खदेड़ने पर उस महिला की जाँघ से मुनि और्ब का जन्म, उन्हें देखकर सब हैहयवंशियों का अंधा होना, मुनि और्ब की स्तुति करना, पुनः नेत्र प्राप्त करना तथा वैर त्यागकर सादर भृगुवंशियों को वापस लाना— ६०६—६७८

हैहयवंश के प्रवर्त्तक हैहय की जन्म-कथा— ६७६—६६८

इसी प्रसंग में विष्णु द्वारा लक्ष्मी को घोड़ी के रूप में भूतल पर रहने का शाप तथा विनय करने पर पुत्र होने पर शाप से मुक्ति का संकेत, लक्ष्मी द्वारा घोड़ी के रूप में एक सहस्र वर्ष पर्यन्त महादेवजी का ध्यान और आराधना करना।

महादेवजी का प्रकट होना तथा पराशक्ति की आराधना करने का उपदेश देकर और यह कह कर कि पति और पुत्र शीघ्र मिलेंगे—वहाँ से प्रस्थान— ६६८—७२०

महादेवजी द्वारा विष्णु के पास संदेशवाहक भेजना एवं विष्णु का उसी दूत द्वारा अपनी सहमति भेजना — ७२१—७४०

विष्णु का अश्व-रूप धारण कर लक्ष्मी से मिलना और घोड़ी-रूपिणी लक्ष्मी का गर्भवती होना, पुत्र-जन्म, विष्णु का लक्ष्मीसहित प्रस्थान— ७४१—७४७

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

उस शिशु का विद्याधर द्वारा स्वर्ग लेजाना, इन्द्र की आज्ञा से फिर उस

छंद से छंद तक

शिशु को यमुना के तट पर एक वृक्ष के मूल के निकट छोड़ना— ७४८—७५२

तुर्बसू राजा को विष्णु और लक्ष्मी का दर्शन देना, शिशु को उसे प्रदान करने की बात कहकर यमुना के तट से उसे लाने के लिए कहना— ७५३—७५८

विष्णु का प्रस्थान, राजा तुर्बसु का उस शिशु को लाकर संस्कार आदि करना — ७५९—७६६

पुत्र हैहय को राज्य देकर तुर्बसु का तप हेतु मैनाकपर्वत पर गमन तथा शरीर-त्याग— ७६७—७७०

हैहय के सुशासन का विवरण, उसका वन में आखेट के लिए गमन, वहाँ वसुमती नामक कन्या को विलाप करते हुए देखना और उससे यह ज्ञात करना कि राजपुत्री एकावली को कालकेतु बलपूर्वक हरण कर ले गया है और उसे कारागार में डाल दिया है— ७७१ —८२४

प्रश्न करने पर वसुमती द्वारा यह बतलाना कि किस प्रकार देवी ने प्रसन्न होकर उसे यह बतलाया कि वहाँ लक्ष्मी-पुत्र हैहयराज मिलेगा और वह कष्ट-निवृत्ति करेगा-- ८२५— ८३५

हैहयराज का योद्धाओं सहित कालकेतु से भीषण युद्ध और अंत में उसका संहार— ८३६—९०१

हैहयराज का एकावली और वसुमती को उनके स्थानों पर पहुँचाना, एकावली का उसके साथ विवाह तथा कार्त्तवीर्य का जन्म— ९०२—९२०

विष्णु के हय बनने की कारण-समीक्षा— ९२१ —११४५

और उस प्रसंग में नारद-व्यास का मिलन तथा व्यास द्वारा अपनी जीवन-कथा और व्यथा का कथन।

उत्तर में नारद द्वारा अपना एक वृत्तांत कहना जिसमें पर्वत-मुनि के साथ भरत-खण्ड में जाने, संजय राजा के यहाँ रहने, उसकी पुत्री दमयंती का प्रणय, पर्वतमुनि के शाप दमयंती के साथ विवाह, पर्वतमुनि का उसकी सेवा से प्रसन्न हो, अंत में शाप से मुक्ति तथा बलवती माया की प्रधानता का उल्लेख।

नारद द्वारा अपने जीवन का दूसरा वृत्तांत सुनाना, उनका बैकुंठ में गमन, विष्णु का माया को अजेय बतलाना, नारद की माया को देखने की इच्छा, उनका विष्णु के साथ गरुड़ पर प्रस्थान,

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

छन्द से छन्द तक

कन्नौज में आगमन, नारद का सरोवर में स्नान हेतु प्रवेश, उनका स्त्री-रूप होना, तट पर पड़े वस्त्राभूषणों को धारण करना, तालध्वज राजा से विवाह, सुखद दाम्पत्य-जीवन, पुत्र-पौत्रों का होना, युद्ध में सभी पुत्रों का हत होना, व्यथित होकर युद्धक्षेत्र में पहुँचना, वृद्ध ब्राह्मण का मिलना, एक अन्य सरोवर में पवित्र होने हेतु स्नान, नारद का स्वरूप धारण करना, विष्णु के सम्मुख दर्शन।

विष्णु का तालध्वज राजा को बोध देना, उसका वहाँ से प्रस्थान, पौत्र को राज्य देकर वन में तप हेतु गमन।

नारद के पूछने पर विष्णु द्वारा स्वप्न, सुषुप्ति आदि अवस्थाओं का दृष्टान्त देकर मायाजनित मोह और भ्रम के सम्बन्ध में समाधान करना।

नारद का ब्रह्मलोक पहुँच कर ब्रह्मा से सम्पूर्ण वृत्तांत कहना, ब्रह्मा द्वारा गुणों की प्रबलता तथा सभी प्राणियों का उनके वशवर्ती होने का ज्ञान देना और यह कहना कि देवी की आराधना से ही परा-शक्ति कृपा करके जीव का भ्रमजाल मिटा सकती है।

सप्तम-स्कंध

[पृष्ठ १८७—२६७]

जनमेजय द्वारा सूर्य और चन्द्रवंश तथा अन्य प्रसिद्ध राजाओं की पवित्र कथा सुनाने की प्रार्थना— १—४

ब्रह्मा के सात मानस पुत्रों तथा नारद और सनकादि चार पुत्रों की उत्पत्ति— ५—८

एक पुत्र दक्ष तथा वीरिणी नाम की कन्या का जन्म— ८—१०

नारद के दूसरे जन्म का आख्यान— ११—२२

दक्ष की साठ कन्याओं और उनके विभिन्न ऋषियों के साथ विवाह का विवरण— २३—२५

ब्रह्मा के मानस पुत्र मरीचि के प्रपौत्र, कश्यप के पौत्र, सूर्य के पुत्र, विवस्वान् के पुत्र वैवस्वत मनु की सन्तति का वर्णन (सूर्यवंश)— २६—३६

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

छन्द से छन्द तक

मनु-पुत्र शर्याति की एकमात्र पुत्री के अंधे च्यवन ऋषि के साथ विवाह का आख्यान — ३७—७७

ऋषि च्यवन के आश्रम में शर्याति-कन्या का जीवन, एक दिन अश्विनीकुमारों का उस सर्वाङ्ग सुन्दरी को देखना, मुग्ध होना, च्यवन ऋषि की सहमति से अश्विनीकुमारों की शर्त स्वीकार करने पर उनके द्वारा च्यवन ऋषि को नवजीवन और नेत्र प्रदान करना, समान स्वरूप तीनों में से देवी की कृपा से अपने पति को चुनना— ७७—११७

निराश अश्विनीकुमारों को उनके उपकार का प्रतिफल चुकाने के लिए उन्हें वर माँगने को कहना तथा शर्याति राजा के यज्ञ में उन्हें यज्ञ-भाग दिलाने का आश्वासन देना— ११८—१३३

राजा शर्याति का अपनी पत्नी की प्रेरणा से पुत्री को देखने के लिए ऋषि-आश्रम में आना, शंकित होना एवं समाधान— १३४—१४७

च्यवन की प्रेरणा से राजा शर्याति की यज्ञ की तैयारी— १४८—१५०

इन्द्र के निषेध करने पर भी च्यवन द्वारा अश्विनीकुमारों को सोमरस देना; इन्द्र का क्रुद्ध होना, वज्र का आघात करना, च्यवन द्वारा आकाश में ही रोक कर हवनकुण्ड से मद नामक दानव उत्पन्न करना, इन्द्र के वज्र को उसके द्वारा निगल जाना, देवताओं का पलायन, इन्द्र द्वारा बृहस्पति का स्मरण करना और उनकी प्रेरणा से च्यवन ऋषि की प्रार्थना करना, अश्विनीकुमारों को यज्ञ-भाग देने की प्रतिज्ञा करना, च्यवन द्वारा मद दैत्य के चार भाग करना, यज्ञ का सानन्द सम्पन्न होना— १५१—१८३

शर्याति पुत्र रैवत का अपनी पुत्री रेवती के लिए योग्य वर ज्ञात करने के उद्देश्य से पुत्री सहित ब्रह्मा के पास जाना, वहाँ आनन्दमग्न होना तथा लौटने पर उसका बलराम के साथ विवाह, पश्चात् तप हेतु बदरिकाश्रम गमन— १८४—२१८

शंका-निवारणार्थं व्यास द्वारा ब्रह्मलोक के जीवन की विशेषता तथा कुशस्थली के उजड़ने का वर्णन— २१९—२२४

इक्ष्वाकु-पुत्र विकुक्षि के वन में श्राद्ध हेतु मांस लाने, क्षुधा लगने पर उसमें से कुछ खाने, वशिष्ठ द्वारा आपत्ति करने, इक्ष्वाकु के कुपित

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

छन्द से छन्द तक

होकर वनवास देने तथा पिता के निधन पर राजा बनने का विवरण— २२५—२३७

विकुक्षि-पुत्र ककुत्स्थ की शूरवीरता का वर्णन, देवताओं की ओर से दैत्यों के साथ उनका युद्ध, इन्द्र का बैल-रूप धारण कर उनका वाहन बनना— २३८—२४६

ककुत्स्थ के पुत्र-पौत्रों का विवरण— २४६—२५०

मान्धाता के पिता के उदर से उत्पत्ति का आख्यान तथा उनके पुत्र-पौत्रों का विवरण— २५१ – २५७

राजा अरुण और उनके पुत्र सत्यव्रत का आख्यान, सत्यव्रत द्वारा एक ब्राह्मण-कन्या का हरण, पिता द्वारा निष्कासन, नीचवृत्ति के कारण श्वपचों में रहने की आज्ञा, मृगया द्वारा जीवनयापन, दुर्भिक्ष-पीड़ित विश्वामित्र-पत्नी से भेंट, नित्यप्रति भोजन पहुँचाने का वचन देकर उसे पुत्र को बेचने से वर्जित करना, मृग आदि न मिलने पर द्वेषवश वशिष्ठ की गाय मारना, वशिष्ठ का उसे त्रिशंकु नाम देना तथा पिशाचगति प्राप्त करने का शाप, शापमुक्ति से उपाय न देख चिता में जलने को तैयार होना, देवी का स्मरण करना, देवी का प्रकट होकर उसे आश्वस्त करना, नारद की प्रेरणा से पिता द्वारा बुलवाना, पिता का उपदेश, पिता के तप हेतु गमन करने पर त्रिशंकु का राजा होना— २५८—३११

पुत्र हरिश्चन्द्र का राज्याभिषेक करके सशरीर स्वर्ग जाने की इच्छा से वशिष्ठ से मिलना, वशिष्ठ का क्रोधित होकर शाप देना, त्रिशंकु का वन में एकान्तवास करना और पिशाच-रूप में पराशक्ति की आराधना करना— ३१२—३३७

विश्वामित्र का तपश्चर्या के पश्चात् लौटना, पति-पत्नी का वार्तालाप, उसी प्रसंग में पत्नी त्रिशंकु के शाप की कथा कहना तथा राजकुमार को शाप से मुक्त करने के लिए आग्रह करना— ३३८ - ३६१

विश्वामित्र का त्रिशंकु से मिलना, यज्ञ का आयोजन, वशिष्ठ आदि ब्राह्मणों का सम्मिलित न होना, विश्वामित्र का केवल तप के बल से माता एकाक्षरी के जाप से त्रिशंकु को स्वर्ग में भेजना, इन्द्र द्वारा वर्जित करना, विश्वामित्र द्वारा नई सृष्टि और नये स्वर्ग के रचने का संकल्प, इन्द्र का आगमन और त्रिशंकु का दिव्यशरीर धारण कर

CC-0. RORI Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

छन्द से छन्द तक

स्वर्ग में पहुँचना— ३६२—३८०

पिता के निष्कलंक होने पर हरिश्चन्द्र का प्रसन्न होना, वशिष्ठ की प्रेरणा से पुत्र-प्राप्त्यर्थ वरुण की आराधना, वरुण का राजा के स्वीकार करने पर कि उस पुत्र को उन्हें ही बलि कर देंगे—पुत्र देने का वचन, पुत्र का जन्म, बलिदान की तिथि का बार-बार स्थगित करना, पुत्र रोहित का वयस्क होने पर अपनी बलि की बात से अवगत होना, प्राण-भय से रोहित का वन में पलायन, वरुण का हरिश्चन्द्र को शाप, शाप-मोचन और सत्यपालन के निमित्त शुनःशेप नामक ब्राह्मण-पुत्र का क्रय, क्रीत-पुत्र की बलि का आयोजन, शुनःशेप का करुण-क्रन्दन, विश्वामित्र का आगमन, शुनःशेप से एकवर्णीय मंत्र का जाप कराना, वरुण का आना, उस बालक को छोड़ना, हरिश्चन्द्र की शापमुक्ति के निर्णय के पश्चात् शुनःशेप का विश्वामित्र के साथ जाना— ३८१—४८२

हरिश्चन्द्र का अश्वमेध यज्ञ करना, वशिष्ठ द्वारा इन्द्रपुरी में हरिश्चन्द्र की दानशीलता की प्रशंसा, विश्वामित्र की हरिश्चन्द्र को अदाता सिद्ध करने की प्रतिज्ञा— ४८३—४९३

हरिश्चन्द्र का आखेट के लिए जाना, वहाँ विलाप करती हुई स्त्री से भेंट, उसकी पीड़ा का निवारण करने के लिए विश्वामित्र से तप छोड़ कर घर जाने के लिए कहना, विश्वामित्र की क्रोधाग्नि का भड़कना— ४९४—५०६

सूकर के रूप में एक राक्षस को विश्वामित्र द्वारा भेजना, फुलवाड़ी का उजाड़ना, रक्षकों के रोकने पर न रुकना, हरिश्चन्द्र का स्वयं आना, सूकर का भागना, हरिश्चन्द्र का पीछा करते-करते एक गहन वन में पहुँचना, मार्ग भूलना, ब्राह्मण-वेश में विश्वामित्र का मिलना, विश्वामित्र का राजा को तीर्थ-स्थल में स्नान करने का परामर्श देना, हरिश्चन्द्र द्वारा स्नान-तर्पण आदि के पश्चात् दान देने को तत्पर होना, ब्राह्मण द्वारा उसके पुत्र के विवाह में सम्मिलित होने की प्रार्थना, कृत्रिम वर-वधू के विवाह के अवसर पर हरिश्चन्द्र द्वारा अपना समस्त राज्यवैभव दान में अर्पण करना, दक्षिणा बाद में देने की बात कहकर वहाँ से प्रस्थान— ५०७—५५०

हरिश्चन्द्र का चिन्तित होना, विश्वामित्र का पहुँचकर राज्यवैभव और दक्षिणा माँगना, पुत्र और पत्नी सहित राज्यवैभव को सौंप कर प्रस्थान— ५५१—५६१

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

	छंद से छंद तक
विश्वामित्र द्वारा हरिश्चन्द्र को अपना वचन छोड़ने के लिए समझाना, किन्तु राजा का अटल रहना—	५६२—५७४
हरिश्चन्द्र का पुत्र और पत्नी सहित काशीगमन, हरिश्चन्द्र कर्त्तव्य-विमूढता और पत्नी का बोध देना—	५७५—६०५
विश्वामित्र का आगमन, दक्षिणा देने की अंतिम तिथि होने की चेतावनी देना, एक ब्राह्मण का आना और विपत्ति-निवारण के लिए अभीष्ट धन देने का प्रस्ताव करना, हरिश्चन्द्र का अस्वीकार करना, पत्नी और पुत्र को एक ब्राह्मण को बेचना, प्राप्त धन-राशि को विश्वामित्र को देना —	६०६ —६६६
दक्षिणा की अवशिष्ट राशि की पूर्ति के लिए अनिच्छा और ग्लानि के होते हुए भी विश्वामित्र की आज्ञा से चाण्डाल का दास बनना—	६६७—६९२
हरिश्चन्द्र का अपनी स्थिति का सिंहावलोकन, अपनी वेदना का अन्तःचिंतन, वीरबाहु चाण्डालराज के भृत्य के रूप में श्मशानभूमि पर काम करना—	६९३—७१०
खेलते समय रोहित को सर्प द्वारा काटना, उसकी मृत्यु, स्वामी की आज्ञा न मिलने से शैव्या का अर्धरात्रि तक गृहकार्य करते रहना, आदेश मिलने पर रोहित के शव के पास पहुँचना, वहाँ रोदन करना, पड़ौसियों द्वारा उसे शिशुघातिनी समझना, शिशु को वक्षःस्थल पर बाँधकर उसे घसीट कर श्मशान ले जाना तथा अविलम्ब मारने के उद्देश्य से चाण्डाल को सौंपना, चाण्डाल का आश्वासन एवं नगरवासियों का लौटना—	७११—७५७
चाण्डाल का उस स्त्री को जलाने का आदेश देना, हरिश्चन्द्र का प्रारम्भ में हिचकना किन्तु कठोर आदेश पाकर शैव्या सहित प्रस्थान, मार्ग में पुत्रदाह करने की विनति, हरिश्चन्द्र द्वारा अनुमति देना, मुख खोलकर देखने पर अपने पुत्र को पहचानना, हरिश्चन्द्र और शैव्या का वार्तालाप, विलाप और तीनों का साथ जलने का निश्चय—	७५८—७८३
जलने से पहले माता का स्मरण करना, शताक्षी का ब्रह्मा, विष्णु, महादेव आदि सहित प्रकट होना, राजा की दासता-मुक्ति तथा रोहित को राज्य सिंहासन सौंपकर प्रजा सहित स्वर्ग को प्रस्थान—	७८४—८२२

CC-0 CPORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

छंद से छंद तक

तितिक्षा की महिमा— ८२३—८२७

शताक्षी देवी का आख्यान और इस प्रसंग में दुर्गम नामक दैत्य का जन्म, उसके द्वारा ब्रह्मा की आराधना, ब्रह्मा का वर, ब्राह्मणों का संध्या, यज्ञ आदि सत्कर्मों का भूलना, दानवों का स्वर्गपुरी पर आक्रमण, देवों का पलायन, अनावृष्टि और दुर्भिक्ष, ब्राह्मणों और देवताओं द्वारा देवी की आराधना, पार्वती का प्रत्यक्ष होना और नेत्रों से नौ दिन पर्यन्त वर्षा करना, दुर्भिक्ष का टलना— ८२८—८४१

शताक्षी देवी की स्तुति— ८४१—८४५

समाचार पाकर दानवों का आक्रमण, त्रिपुरा आदि अनेकों शक्तियों का उत्पन्न करना तथा दुर्गम सहित सभी दानवों का संहार— ८४५—८५६

ब्रह्मा आदि द्वारा स्तुति करने पर देवी द्वारा उपदेश और मार्ग-दर्शन— ८५७—८६०

पराशक्ति की भक्ति की महिमा और इस प्रसंग में सूर्य तथा सोमवंशी नरेशों का उल्लेख— ८६१—८८२

जनमेजय के लक्ष्मी तथा पार्वती सम्बन्धी प्रश्न, "जब महाशक्ति ने त्रिदेवों को पहले ही इन शक्तियों को दे दिया था तो लक्ष्मी को क्षीरसागर की पुत्री और भवानी को हिमाचल-पुत्री क्यों कहा गया"— ८८३—८८९

व्यास द्वारा उत्तर में एक पुरातन वार्ता का वर्णन, हलाहल नामक दानव का ब्रह्मा से वर पाकर प्रबल होना, विष्णु और महादेव का उससे साठ सहस्र वर्ष तक युद्ध करना एवं दानवों का संहार कर उनका लौटना, अपनी-अपनी प्रशंसा करना, महामाया प्रदत्त उन शक्तियों का अपना तिरस्कार समझ कर अन्तर्धान होना तथा पराशक्ति में विलय होना, विष्णु और महादेव का निस्तेज होना— ८९०—८९९

ब्रह्मा पर उन दोनों का भी कार्य-भार आ पड़ना, उससे व्यथित होना और दक्ष, मनु, सनकादिक से पराशक्ति की आराधना कराना— ९००—९११

महाशक्ति का प्रकट होना, संकट हरने की प्रार्थना करने पर आश्वासन देना कि "लक्ष्मी, सागर की पुत्री होगी तथा भवानी सती-रूप में दक्ष प्रजापति के यहाँ जन्म लेगी, यह भी चेतावनी देना कि भविष्य में विष्णु और महादेव उनका अपमान न करें" इसके पश्चात् देवी का मणिदीप-गमन— ९१२—९२२

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

	छन्द से छन्द तक
विष्णु और महादेव का क्रमशः लक्ष्मी और सती को प्राप्त करना, पुनः शक्ति-सम्पन्न होना, सती का दक्षप्रजापति द्वारा महादेव का अपमान करने पर अपना शरीर भस्म करना तथा हिमाचल के यहाँ जन्म लेना—	६२३—६३४
सती के जलने पर महादेव का कोप करना, वीरभद्र द्वारा प्रजापति को मारना, देवताओं की स्तुति से महादेव का शान्त होना, वीरभद्र के उपद्रव को रोकना, बकरे का शिर लगाकर प्रजापति को जीवित करना—	६३५—६४१
यज्ञ-कुण्ड से सती का शव लेकर रुदन करते हुए महादेव का प्रस्थान, भ्रांतचित्त होकर उनका भ्रमण करना, विष्णु द्वारा बाणों से शनैः शनैः सती के शव को खण्ड-खण्ड करना, सती का जहाँ-जहाँ शरीर गिरा था वहाँ-वहाँ तीर्थों, सिद्धपीठों का प्रकट होना, एक सौ आठ सिद्धपीठों का वर्णन—	६४२—६८२
भवानी के एक सौ आठ नामों के श्रवण, स्मरण का माहात्म्य—	६८३—६९७
हिमाचल के यहाँ उमा के जन्म का वृत्तांत और इस प्रसंग में महादेवजी का सती के मरणोपरान्त समाधिस्थ होना, तारक नामक दानव का जन्म, उसका शिव-पुत्र के द्वारा मरने का ब्रह्मा द्वारा वर, उसका देवताओं से युद्ध, देवताओं का पलायन, विष्णु से मंत्रणा, हिमाचल पर जाकर मणिपुर-निवासिनी महामाया की आराधना एवं देवी का प्रकट होना—	६९८—१०१४
देवी-स्वरूप वर्णन—	१०१५—१०२३
देवताओं द्वारा देवी की स्तुति और अपने कष्ट निवारणार्थ विनति—	१०२४—१०३१
भगवती का प्रसन्न होकर यह कहना कि "हिमाचल के यहाँ महादेव के निमित्त गौरी का अवतार हुआ है"—	१०३२—१०३४
हिमाचल द्वारा भगवती से योग, वेद, वेदान्तयुक्त भक्ति-भावना तथा विश्वरूप का वर्णन करने की प्रार्थना करना—	१०३५—१०३७
भगवती द्वारा उत्तर में सत् और असत् से "विलक्षण ब्रह्म, माया-शक्ति का तात्त्विक स्वरूप, सृष्टिक्रम, विराट्रूप, व्यष्टि और समष्टि में जीव और ईश्वर का भेद, जीव के सुख दुःख, सूक्ष्म और स्थूल अहंकार आदि की व्याख्या तथा अन्त में विश्वरूप-वर्णन	१०३८—११२२

Digitized by ...ulakshmi Research Academy

छंद से छंद तक

हिमाचल आदि की विनति करने पर पुनः सुन्दरी-रूप में दर्शन देना तथा यह बतलाना कि दोनों रूपों में तात्त्विक दृष्टि से भेद नहीं, अंतःकरण शुद्धि, तत्त्वज्ञान, सानुराग निश्चल भक्ति से मायाजनित उपाधि मिटती है, योग-साधन से द्वैत-बुद्धि दूर होती है— ११२३—११४९

हिमाचल के पुनः प्रश्न करने पर योग के स्वरूप, योग के अंग, विभिन्न आसन, बंध, प्राणायाम, योग-साधन-विधि, नाड़ीचक्र, कुण्डलिनी, धारणा, ध्यान, समाधि आदि का वर्णन— ११५०—१३३३

हिमाचल द्वारा सगुण-रूप की सुलभ साधना बतलाने की विनति करने पर भगवती द्वारा आराधना तथा भक्ति का मुक्तिदायक तरीका बतलाना— १३३४—१३५६

हिमाचल द्वारा मानव के पवित्र होने का तत्त्व बतलाने की प्रार्थना करने पर वर्णानुसार कर्म, दान, जाप, सदाचार, दया, सगुण उपासना आदि की व्याख्या— १३५७—१४१३

हिमाचल के यहाँ गौरी का जन्म, महादेव से विवाह, स्वामि कार्तिकेय का जन्म, तारक का बध आदि का उल्लेख— १४१४—१४१५

समुद्र-मन्थन, रमा की उत्पत्ति, विष्णु से विवाह का उल्लेख— १४१६—१४१८

देवताओं द्वारा हिमाचल के भाग्य की सराहना— १४१९—१४२४

अष्टम-स्कंध

[पृष्ठ २९८—३३७]

जनमेजय के प्रश्न— १—४

उत्तर में व्यास द्वारा नारायण-नारद-सम्वाद को उद्धृत करना, नारद के प्रश्न, इस जगत का आरम्भ में उदय कैसे हुआ, कहाँ स्थित रहता है और कहाँ लय हो जाता है, किन कर्मों के फल का उदय करता है, वह जप-ध्यान जिससे अविद्या का नाश होता है— ५—१०

नारायण का उत्तर और उस प्रसंग में ब्रह्मा के पुत्र स्वायंभुव मनु द्वारा पिता की आज्ञा से आदि माया की आराधना करना, देवी का प्रकट होना, प्रजा की सृष्टि के लिए उसकी सहायता की याचना, देवी का वर, प्रजा की सृष्टि के लिए ब्रह्मा से स्थान बतलाने को कहना,

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

	छन्द से छन्द तक
ब्रह्मा का चिन्तित होना, उनकी नासिका के अग्रभाग से वराह-रूप में यज्ञपुरुष की उत्पत्ति, वराह भगवान द्वारा जलमग्न पृथ्वी को ऊपर लाना, हिरण्याक्ष द्वारा रोकना, गदा से उसका वध करना, भूमि को स्थापित कर वैकुण्ठ जाना—	११—२८
ब्रह्मा का स्वायंभुव मनु को प्रजा-वृद्धि सम्बन्धी आदेश देना और भूमि पर प्रजा-वृद्धि का कार्य सौंपना—	२९—३५
स्वायंभुव मनु के पुत्रों का विवरण—	३६—४९
स्वायंभुव मनु-पुत्र प्रियव्रत के पुत्रों का वृत्तांत तथा स्वयं उनके द्वारा की गई पृथ्वी की सात प्रदक्षिणाओं का विवरण, सात समुद्रों एवं सात द्वीपों की उत्पत्ति तथा प्रियव्रत के विभिन्न पुत्रों का उनका अधीश्वर होने का विवरण, प्रियव्रत का योग-साधन के पश्चात् भूमि-त्याग—	५०—६३
जंबूद्वीप-वर्णन, उसका स्वरूप, उसके नवखण्ड, उसके मध्य में स्थित सुमेरु पर्वत सहित इलावृत्त-खण्ड, इलावृत्त-खण्ड के उत्तरवर्ती तीन पर्वत और तीन वर्ष (खण्ड) दक्षिणवर्ती तीन पर्वत और तीन वर्ष तथा पूर्व और पश्चिमवर्ती एक-एक पर्वत और वर्ष—	६३—७०
सुमेरु के पाद-रूप चार पर्वत, उन पर चार वृक्ष, कुण्ड, उद्यान आदि—	७०—७२
मंदरपर्वत के वृक्ष, नद आदि का विवरण—	७२—७६
मेरुमंदरपर्वत के वृक्ष आदि का वर्णन—	७६—७९
सुपार्श्व पर्वत के वृक्ष आदि का वृत्तांत—	७९—८१
कुमुदपर्वत के वृक्ष आदि का विवरण—	८२—८५
सुमेरु के मूल से निकले बीस पर्वतों के नाम—	८५—८६
सुमेरु के सन्निकट आठ पर्वतों का वर्णन—	८७—८८
सुमेरु पर स्थित ब्रह्मा आदि की नौ पुरियों का विवरण तथा गंगा की चार धाराओं का वृत्तांत—	८९—९९
भारतखण्ड की महिमा—	९९—१०१
अन्य आठ वर्षों (खण्डों) की विशेषता—	१०२—१०४
विभिन्न आठ खण्डों में विष्णु की आराधना—	१०५—१०९
इलावृत्त-खण्ड में महादेव का स्थान, उनका ध्यान-मन्त्र तथा उस खण्ड की विशेषता—	११०—१२८

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

	छन्द से छन्द तक
भद्राश्ववर्ष की विशेषता, धर्मपुत्र भद्रश्रवा द्वारा हयग्रीव की उपासना, ध्यान-मन्त्र आदि—	१२९—१४४
हरिवर्ष की विशेषता, प्रह्लाद की वहाँ उपासना, ध्यान-मन्त्र एवं नृसिंह की महिमा—	१४५—१४९
केतुमालवर्ष में कामदेव के रूप में निवास, वहाँ के निवासियों की उनकी आराधना, लक्ष्मी द्वारा उनकी स्तुति, मन्त्र आदि—	१५०—१६१
रम्यकवर्ष में मत्स्य-रूप भगवान की मनु द्वारा उपासना, ध्यान-मन्त्र आदि—	१६२—१६९
हिरण्यवर्ष में कूर्म-रूप में भगवान की अर्यमा द्वारा उपासना, मन्त्र आदि—	१७०—१७४
कुरुवर्ष में पृथ्वी द्वारा वराहरूपी भगवान की उपासना, मन्त्र आदि—	१७५—१७८
किंपुरुषखण्ड में सीताराम की हनुमान द्वारा उपासना, ध्यान-मन्त्र आदि—	१७९—१८३
भारतखण्ड में नारायण की नारद द्वारा उपासना, ध्यान-मन्त्र आदि—	१८४—१९३
जंबूद्वीप के निकटवर्ती आठ उपद्वीपों का उल्लेख—	१९४—१९५
प्लक्षद्वीप, उसके अधिपति प्रियव्रत-पुत्र इध्मजिह्व का जीवन-वृत्त तथा उस द्वीप के सात खण्डों एवं इध्मपुत्र के पुत्रों का विवरण जिन्हें उनके पिता ने उन खण्डों का अधिपति बनाया, वहाँ की नदियों, पर्वतों, चार वर्ण के निवासियों तथा उनकी आयु, बल, बुद्धि एवं उपासना का वृत्तांत—	१९९—२०९
साल्मली द्वीप, उसके अधिपति प्रियव्रत-पुत्र यज्ञवाहु, उसके सात खण्ड, उसके पर्वत और नदियों तथा चार वर्ण के निवासियों, उनकी उपासना आदि का विवरण तथा यज्ञवाहु के सात पुत्रों का उन खण्डों के अधिपति होने का वृत्तांत—	२१०—२१८
कुशद्वीप, उसके वृक्षों, नदियों, पर्वतों तथा निवासियों, उनके चार वर्णों, उनकी उपासना तथा उसके अधिपति प्रियव्रत-पुत्र हिरण्यरेता एवं उस द्वीप के सात खण्डों, हिरण्यरेता के सात पुत्रों का उनका अधिपति होने का विवरण—	२१८—२२६
क्रौंच द्वीप, उसके वन, पर्वत, नदी आदि का विवरण तथा उस द्वीप के अधिपति प्रियव्रत-पुत्र घृतपृष्ठ का वृत्तांत, उस द्वीप के सात खण्डों	

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

छंद से छंद तक

एवं घृतप्रष्ठ के सात पुत्रों का उनका अधिपति होने का वृत्तांत, वहाँ के निवासियों की उपासना आदि का विवरण— २२७—२३५

शाकद्वीप, वहाँ के पवत, नदी, निवासियों और उनकी उपासना-विधि तथा उस द्वीप के अधिपति प्रियव्रत-पुत्र मेधातिथि एवं उस द्वीप के सात खण्डों तथा मेधातिथि के सात पुत्रों का उनका अधिपति होने का विवरण— २३६—२४३

पुष्करद्वीप, उसके वृक्ष, पर्वत तथा चार पुरियों का विवरण, उसमें स्थित सुमेरु की सूर्य द्वारा प्रदक्षिणा, उस द्वीप के अधिपति प्रियव्रत-पुत्र वीतिहोत्र तथा उनके दो पुत्रों एवं उस द्वीप के दो खण्डों तथा वीतिहोत्र के दोनों पुत्रों का अधिपति होने का वृत्तांत तथा वहाँ के निवासियों की उपासना— २४४—२५०

लोकालोक पर्वत, मेरु और मानसोत्तर के मध्य की सुवर्ण भूमि का विवरण, सूर्य-किरणों की गति, सीमा, दिग्पाल, मार्तण्ड और हिरण्यगर्भ शब्दों की व्याख्या, खगोल, भूगोल और अंतरिक्ष का विवरण— २५१—२६८

उत्तरायण और दक्षिणायण, दिन और रात के सम, छोटे तथा बड़े होने एवं वीथियों का विवरण— २६९—२८५

आरोहण और अवरोहण के कारण सूर्य की गति का मन्द और द्रुत होना एवं ध्रुवों के मध्य सूर्य का वास— २८५—२९३

भारत-खण्ड के पूर्व, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर में सुमेरु पर इन्द्र, यम, वरुण और सोम-पुरियों की स्थिति तथा सूर्य द्वारा सुमेरु की प्रदक्षिणा, प्रभात, मध्याह्न, संध्या और मध्यरात्रि का विवरण— २९४ - ३०३

सूर्य-चंद्र ग्रहण, राहु की स्थिति, उससे नीचे कुछ अन्तर पर सिद्धों और चारणों का स्थान, उससे नीचे भूलोक, उसके नीचे सात विवरों की स्थिति— ३०४—३१०

अतल का विवरण— ३११—३२५

वितल का विवरण— ३२६—३३०

सुतल का विवरण— ३३१—३३२

तलातल का विवरण— ३३३—३३४

CC-0. KORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

	छंद से छंद तक
महातल का विवरण—	३३४—३३६
रसातल का विवरण—	३३७—३३८
पाताल का विवरण—	३३९—३४२
अनन्तलोक का विवरण तथा अनन्तदेव की महिमा—	३४३—३५२
नारद के पुनः प्रश्न—	३५३—३५५
उत्तर में नारायण द्वारा श्रद्धा और कर्मों के भेद तथा शुभ और अशुभ कर्मों के फल और उस प्रसंग में विभिन्न दुष्कर्मों के परिणामस्वरूप विभिन्न नर्कों की यातनाओं का अतल विवर के दक्षिण की ओर स्थित यमपुरी में मिलने का वर्णन—	३५६—४२०
पाप और ग्लानि को मिटाने वाली देवी की आराधना और साधना का विवरण—	४२१—४६५

नवम-स्कंध

[पृष्ठ ३३८—४८९]

नारायण द्वारा पाँच प्रकृतियों का उल्लेख तथा प्रकृति शब्द की व्याख्या—	१—८
अर्धनारीश्वर, मूलप्रकृति का पाँच स्वरूपों में पूर्णावतार, दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती, सावित्री और राधा का विवरण—	९—५५
प्रवृत्ति को गति प्रदान करनेवाली गंगा का विवरण—	५६—६८
मनसा, षष्ठी, मंगलाचण्डी एवं काली का वृत्तांत—	६९—८६
पृथ्वीमाता अथवा इला का विवरण—	८७—९०
मूलप्रकृति के अनेकों अवतारों का जैसे स्वाहा, दक्षिणा, स्वधा, स्वस्ति, पुष्टि, तुष्टि, सम्पत्ति, धृति आदि का विवरण—	९१—११९
विभिन्न गुणों की प्रधानता से विभिन्न प्रकार की स्त्रियों का वर्णन—	१२०—१२५
आदिशक्ति की विभिन्न रूपों में पूजा—	१२६—१३९
कृष्ण के निराकार—साकार रूप की व्याख्या—	१४०—१५६
अर्धनारीश्वर की पुरुष और स्त्री इन दो भागों में सृष्टि की आदि में विभक्ति, राधा-स्वरूप-वर्णन, कृष्ण और राधा की रासलीला,	

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

	छन्द से छन्द तक
कामलीला की थकान से राधा की ऊर्ध्वश्वास से पवन की उत्पत्ति पसीने से जल की उत्पत्ति, वरुण और वरुणानी की उत्पत्ति—	१५७—२०७
राधा को कृष्ण के शाप का कथानक—	२०८—२१५
राधा की जिह्वा से सरस्वती तथा वामांग से लक्ष्मी की उत्पत्ति, कृष्ण के दो रूप—एक द्विभुज और दूसरा चतुर्भुज, द्विभुज कृष्ण के साथ राधा और चतुर्भुज-स्वरूप विष्णु के साथ लक्ष्मी और सरस्वती का क्रमशः गोलोक और वैकुण्ठ में निवास—	२१६—२२४
पार्षदों, गोपों, नारायणी शक्ति, शिव आदि की उत्पत्ति का विवरण—	२२५—२५३
महाविराट्-रूप बालक की उत्पत्ति और विवरण—	२५४—२६९
महाविराट्-रूप बालक को कृष्ण का वरदान—	२७०—२८१
कृष्ण की ब्रह्मा और शिव को महाविराट् के रोमों में सृष्टि-रचना की आज्ञा, लघुविराटों की उत्पत्ति एवं सृष्टि-रचना—	२८२—२९९
पाँच प्रधान प्रकृतियों की पूजा-आराधना विषयक वर्णन और उस प्रसंग में उनकी अन्य कलाओं का विवरण—	३०१—३०८
सरस्वती, कृष्ण का उसको आश्वासन और वर, उसकी आराधना-विधि तथा वैकुण्ठ में विष्णु के यहाँ वास—	३०९—३३३
सरस्वती का वैकुण्ठ में विष्णु पर रुष्ट होना, सरस्वती, लक्ष्मी और गंगा का परस्पर शाप तथा विष्णु का बोध देना—	३३४—३९१
कलियुग के पाँच हजार वर्ष व्यतीत होने पर पाप-वृद्धि होने के सम्बन्ध में भविष्यवाणी, देव-आराधना, व्रत, तप आदि का लोप होना—	३९२—४१०
भगवान का अवतार और सतयुग का आगमन—	४१०—४२१
चार युगों का धर्म के चरणों की दृष्टि से भेद—	४२२—४२३
नारायण द्वारा काल-स्वरूप-वर्णन, वार, पक्ष, मास, ऋतु आदि का विवरण; मनुष्यों और देवताओं के वर्ष में भेद, इन्द्र की आयु, प्रलय का काल, प्रलयकाल में ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि का प्रकृत ब्रह्म-रूप में लय—	४२४—४३३
मूल प्रकृति अथवा महामाया की राधा द्वारा उपासना, प्रसन्न होकर महामाया का राधा के लिये कृष्ण प्रदान करना; दुर्गा, लक्ष्मी, सावित्री, शिव, विष्णु, ब्रह्मा एवं कृष्ण के तप तथा महामाया के वर	

T CC-0, RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

छन्द से छन्द तक

प्राप्त करना— ४३४—४४७

नारद के प्रश्न करने पर नारायण द्वारा धर्म द्वारा वर्णित प्रलय के उपरान्त पृथ्वी के प्रकट होने का विवरण देना, वराह भगवान द्वारा पृथ्वी का उद्धार, पृथ्वीदेवी का वराह भगवान की पत्नी होना और मंगल का पुत्र जन्म, वराह भगवान का पृथ्वी को वरदान, पृथ्वी की विनय, वराह का प्रस्थान एवं पृथ्वी की महत्ता— ४४८—४७८

भूमि सम्बन्धित विभिन्न शुभ तथा अशुभ कार्यों का तथा उनके होनेवाले शुभाशुभ फलों का विवरण— ४७९—४९९

गंगा-कथा-वर्णन और उस प्रसंग में सूर्यवंशी नरेश सगर, उसके साठ हजार पुत्रों के जन्म, सगर द्वारा अश्वमेध यज्ञ, साठ हजार पुत्रों का भस्म होना, सगर के एक पुत्र असमंजस का अवशिष्ट रहना, उसके द्वारा तप, उसके पुत्र अंशुमान का तप, अंशुमान के पुत्र भागीरथ का तप, कृष्ण का उसकी भक्ति से प्रसन्न होना और उसे दर्शन तथा वर देना— ५००—५२५

कृष्ण द्वारा गंगा को सम्बोधन और आदेश— ५२६—५३६

गंगा की कृष्ण से विनय— ५३६—५४१

कृष्ण का गंगा को आश्वस्त करना— ५४१—५५६

भागीरथ को गंगा की भक्तिपूर्वक आराधना करने का आदेश देकर कृष्ण का अंतर्ध्यान होना— ५५७—५५८

भागीरथ द्वारा गंगा की आराधना, स्तुति— ५५९—५९८

स्तुति सुनकर गंगा का भागीरथ के पीछे प्रस्थान एवं सगर के पुत्रों का उद्धार— ५९९—६०१

गंगा का त्रिपथ-गामिनी होने के प्रसंग में उसका गोलोक में प्रकट होने का वृत्तांत— ६०२—६२५

गोलोक में गंगा और राधा के मध्य वैमनस्य, गंगा-स्वरूप-वर्णन— ६२६—६३७

राधा का कृष्ण पर क्रोध करना, कृष्ण को उपालम्भ देना, गंगा का तरल-रूप होकर पलायन, राधा का पीछा करना, अखिल ब्रह्माण्ड के जल को सोखना, सर्वत्र त्राहि-त्राहि होना, कृष्ण की प्रेरणा से ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि द्वारा राधा की स्तुति, राधा का शान्त होना, कृष्ण के चरण में शरणागत गंगा का प्रकट होना, राधा के चरण

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

छन्द से छन्द तक

पूजकर गंगा का विष्णुलोक-गमन— ६३८—७०३

वेदवती की कथा और उस प्रसंग में सावर्न मनु के वंश में वृषध्वज राजा द्वारा विष्णु-भक्ति त्यागकर महादेव की आराधना, सरस्वती का पूजन न करने पर सूर्य द्वारा वृषध्वज को शाप, महादेव का क्रोध, सूर्य का अपने पिता कश्यप के साथ विष्णु के पास जाना, विष्णु द्वारा महादेव को शान्त करना, सूर्य द्वारा महादेव का चरणवन्दन एवं सबका वहाँ से प्रस्थान— ७०४—७२४

वृषध्वज के पौत्र कुशध्वज के वेदवती नाम पुत्री का जन्म, वेदवती का पुष्कर में तप, आकाशवाणी होना, वेदवती का विष्णु के लिए गंधमादन पर तप, रावण का वहाँ आगमन, वेदवती को पकड़ना, रावण को वेदवती का शाप, वेदवती का शरीर-त्याग, सीता के रूप में जन्म, राम के साथ विवाह, वनगमन, माया की सीता का रावण द्वारा हरण, रावण-वध पर वास्तविक सीता का अग्नि द्वारा प्रदान करना, माया की सीता का पुष्कर-तड़ाग पर तप, पाँच वार पति का वर माँगने के कारण पाँच पतियों का वर, द्रोपदी-रूप में जन्म, पाँच पाण्डवों का पति होना, अन्त में वेदवती का लक्ष्मी में विलय— ७२५—७५५

तुलसी-आख्यान और उस प्रसंग में वृषध्वज के दूसरे पौत्र धर्मध्वज के यहाँ तुलसी का जन्म, तुलसी का स्वरूप-वर्णन, बदरिकाश्रम में तुलसी का भीषण तप, ब्रह्मा का वर और चन्द्रचूड़ से विवाह करने की प्रेरणा तथा राधा को प्रसन्न करने का मन्त्र देना— ७५६ - ७६३

तुलसी की तप-त्याग के पश्चात् मन की स्थिति, ब्रह्मा की प्रेरणा से चन्द्रचूड़ को ब्रह्मा का प्रकट होकर आशीर्वाद देना, उनका गंधर्व-विवाह, सुखद जीवन, चन्द्रचूड़ द्वारा देवताओं की विजय— ७६४—८२०

देवताओं की विपत्ति से द्रवित होकर ब्रह्मा और महेश का विष्णु के पास जाना— ८२१—८२५

विष्णुपुरी-वर्णन तथा विष्णु की सभा का विवरण— ८२५—८४७

देवताओं की विनय— ८४८ ८४९

विष्णु द्वारा उत्तर में प्राचीन वार्ता सुनाना तथा सुदामा गोप का राधा के शाप से भूमि पर चन्द्रचूड़ के रूप में जन्म लेना, शाप की

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

	छन्द से छन्द तक
अवधि बीतने पर चन्द्रचूड़ की मृत्यु सम्भव, वध के लिए महादेव को शूल देना तथा स्वयं भी सहायता का वचन देना—	८५०—८६२
महादेव का चन्द्रचूड़ के पास दूत भेजना, स्वामि कार्तिकेय, भैरव अष्टवसु, वरुण आदि का एकत्रित होना—	८६३—८८७
तुलसी-शंखचूड़ सम्वाद तथा शंखचूड़ का युद्ध के लिए प्रस्थान—	८८७—९०५
चन्द्रचूड़ और उसकी दानवसेना तथा महादेवजी की देवसेना का भीषण युद्ध—	९०६—९६७
विष्णु का वृद्ध ब्राह्मण के वेश में आकर चन्द्रचूड़ से उसका नारायण-कवच दान में लेना तथा चन्द्रचूड़ का वेश बदलकर तुलसी का पतिव्रत भंग करना, पतिव्रत भंग होते ही चन्द्रचूड़ का युद्ध में संहार—	९६८—९७३
शंखचूड़ की शाप-मुक्ति, उसके हाड़ों का शंख बनना, शंख का पूजा में विधि और निषेध—	९७४—९७७
शिव का कैलाश-प्रस्थान —	९७८—९८०
तुलसी को विष्णु के शाप का पता लगना, उन्हें शाप देना, विष्णु का उसे आश्वस्त करना तथा तुलसी की महिमा, तुलसीदल का माहात्म्य, तुलसी के उपयोग के सम्बन्ध में विधि एवं निषेध—	९८१—१०१७
शालग्राम की पूजा, उस शिला के विभिन्न प्रकार, उनकी पूजा के प्रथक्-प्रथक् फल तथा शालग्राम की पूजा में तुलसीदल का विशेष महत्त्व—	१०१८—१०५७
सावित्री-आख्यान; और उस प्रसंग में—वशिष्ठ की प्रेरणा से राजा अश्वपति की पत्नी द्वारा गायत्री-जाप, रानी के विफल होने पर राजा द्वारा स्वयं जाप, अचल ध्यान तथा आकाशवाणी होना—	१०५८—१६६३
पाराशर मुनि द्वारा गायत्री-साधन, उसके जप और फल का विवरण एवं संध्याविहीन ब्राह्मण की स्थिति।	
इसी प्रसंग में अन्य अविहित कार्यों के करने वालों की स्थिति का विवरण।	
विधियुक्त पूजा से राजा अश्वपति को सावित्री के दर्शन और वर।	
नारद के पूछने पर नारायण द्वारा गायत्री-पूजा-विधि-वर्णन।	

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

छन्द से छन्द तक

सावित्री का गोलोक में प्रकट होना और कृष्ण की स्तुति।
राजा अश्वपति को दर्शन और उसे सावित्रीदेवी का वर।
राजा अश्वपति के सावित्री नाम की कन्या का जन्म, सत्यवान से उसका विवाह, पिता की आज्ञा से फल आदि लेने के लिए वन में जाना, सावित्री का साथ जाना, वृक्ष से गिरकर सत्यवान का प्राण-त्याग, यमराज का उसे यमपुरी लेकर चलना और सावित्री का पीछा करना।
यमराज का सावित्री को वापस जाने को कहना तथा सावित्री और यमराज के प्रश्नोत्तर—कर्म, अकर्म तथा उनके फल, विभिन्न प्रकार के नर्क, विभिन्न कुकर्मों के फलस्वरूप उनमें जाने और यातना भोगने का विवरण, देवी की आराधना, उससे पाप और दोषों के मिटने का उपाय तथा अंत में सत्यवान को वापस देना।
सावित्री-चरित्र के श्रवण तथा व्रत का माहात्म्य।
लक्ष्मी-चरित्र और उस प्रसंग में गोलोक में कृष्ण का रास, उनके वामांग से एक स्त्री का जन्म, उसका दो स्वरूपों में व्यक्त होना, वामांग से रमा और दक्षिणांग से राधा, कृष्ण के दो स्वरूप—एक द्विभुज और दूसरा चतुर्भुज; द्विभुज के साथ राधा और चतुर्भुज के साथ रमा का क्रमशः गोलोक और बैकुण्ठ में निवास, रमा का वैभव और उसका सर्वत्र लालन कार्य तथा उसकी पूजा— १६६४—१६८४
इन्द्र को दुर्वासा का शाप और उस प्रसंग में इन्द्र का वन में दुर्वासा से मिलन, दुर्वासा का उन्हें विष्णु का प्रसाद देना, मदोन्मत्त इन्द्र का हरि-प्रसाद के पुष्प को हाथी के मस्तक पर रखना, हाथी का वन में भागना, दुर्वासा का क्रोधित होना, उनके द्वारा हरि-प्रसाद की महिमा का वर्णन करना तथा इन्द्र को शाप देना— १६८५—१७१०
इन्द्र के विनय करने पर दुर्वासा द्वारा तत्त्वज्ञान का उपदेश — १७११—१७२२
इन्द्र का बृहस्पति से दुर्वासा के शाप और स्वर्गपुरी में दैत्यों के उपद्रव आदि का वृत्तान्त कहना— १७२३—१७२६
बृहस्पति का इन्द्र से धैर्य-धारण करने, ईश का निरन्तर ध्यान करने तथा कुछ उपाय करने की प्रेरणा देना— १७२६—१७४३

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

छंद से छंद तक

इन्द्र का ब्रह्मा के पास गमन, ब्रह्मा द्वारा इन्द्र की भूल बतलाना तत्पश्चात् देवताओं के साथ वैकुण्ठ-गमन — १७४४—१७५६

विष्णु द्वारा देवताओं से हरि-भक्ति की रीति का वर्णन करना तथा लक्ष्मी के निवास और परित्याग की परिस्थितियों का विवरण कहना— १७६०—१७७३

विष्णु का रमा की सहमति देखकर देवताओं से समुद्र-मंथन करके लक्ष्मी प्राप्त करने की बात कहना, समुद्र-मंथन, कमला का अन्य रत्नों के साथ प्राप्त होना, उसका विष्णु की सहधर्मिणी होना तथा देवताओं की विपत्ति का नाश— १७७४ - १७८३

लक्ष्मी-मन्त्र तथा उन विशिष्ट पुरुषों का उल्लेख जिन्होंने लक्ष्मी की आराधना की— १७८४—१७८६

स्वाहादेवी का आख्यान, स्वाहा का मन्त्र तथा उसका माहात्म्य— १७६०—१८२१

स्वधादेवी का आख्यान, स्वधा का मन्त्र और इस प्रसंग में ब्रह्मा द्वारा मानसी कन्या का उत्पन्न करने तथा उसे पितृश्वरों को उनकी तृप्ति हेतु देने का विवरण— १८२२—१८४२

दक्षिणादेवी का आख्यान, उसका मन्त्र तथा दक्षिणा का प्रत्येक यज्ञ में देने का विधान, दक्षिणा-विहीन यज्ञ की निष्फलता, दक्षिणा का माहात्म्य— १८४३—१८७५

षष्ठीदेवी का आख्यान और उस प्रसंग में स्वायंभुव मनु के पुत्र प्रियव्रत के मृत पुत्र के जन्म लेने तथा श्मशान में षष्ठीदेवी द्वारा उसे जीवित करने का प्रकरण एवं षष्ठीदेवी का मन्त्र और स्तोत्र— १८७६—१८६६

मंगलाचण्डी का आख्यान, उसकी स्तुति तथा उस प्रसंग में त्रपुर से युद्ध करते समय महादेव पर संकट, उनके द्वारा मंगलाचण्डी की स्तुति, मंगलाचण्डी का मन्त्र और उसकी पूजा का विधान— १८६०—१६१४

मनसादेवी का आख्यान, कश्यप की मानसी-कन्या, जरत्कारु की पत्नी, उसके बारह नाम, उसके नाम-जप की महिमा, आराधन-मन्त्र, उसकी उत्पत्ति सम्बन्धी कथानक, उसके द्वारा तप, जरत्कारु से विवाह, जरत्कारु का रुष्ट होना, ब्रह्मा, विष्णु और पिता कश्यप का जाप करना, तीनों का जरत्कारु को समझाना किन्तु उनका रोष शान्त न

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

छन्द से छन्द तक

होना, गर्भिणी मनसा का कैलाश जाना, आस्तीक पुत्र का जन्म, आस्तीक का तप, जनमेजय द्वारा नागयज्ञ करने पर मनसा द्वारा आस्तीक को भेजना और यज्ञ समाप्त कराना एवं मन्त्र और स्तोत्र— १९१५—१९८५

सुरभि का आख्यान, उसकी कृष्ण के वामांग से उत्पत्ति, उसकी महिमा, गोदान का फल, सर्वप्रथम राधाकृष्ण द्वारा और तदुपरान्त सभी के द्वारा पूजित, ध्यान-मन्त्र, इसी प्रसंग में वराह-कल्प का एक वृत्तांत, सुरभि-स्तोत्र, सुरभि-पूजा का फल— १९८६—२००६

राधा का आख्यान, राधा-मन्त्र, राधा का ध्यान, उसकी पूजा-विधि, राधा-स्तोत्र और उसका फल— २००७—२०३५

दुर्गा-कथा, दुर्गा-मन्त्र, देवी के महालक्ष्मी, महाकाली, सरस्वती आदि रूप, देवी का ध्यान-स्वरूप, षट्कोण, त्रिकोण आदि का विवरण एवं आराधना-विधि— २०३६—२०७६

दशम-स्कंध

[पृष्ठ ४९०—५०४]

स्वायंभुव मनु की उत्पत्ति, उनके द्वारा देवी की आराधना, देवी का वर और इस प्रसंग में विंध्याचल के ऊँचा उठकर सूर्य का मार्ग अवरुद्ध करने, देवताओं की विष्णु से इस संकट के निवारण की प्रार्थना, विष्णु की प्रेरणा से अगस्त्य मुनि से विनय, उनका पत्नी सहित काशी से प्रस्थान एवं विंध्याचल द्वारा उत्पन्न संकट का निवारण— १—४०

स्वायंभुव मनु के दो पुत्रों का विवरण— ४१—४२

स्वारोचिष मनु का विवरण— ४३—४६

प्रियव्रत-पुत्र उत्तम के मनु होने और देवी का जप करने आदि का विवरण— ४७—४९

प्रियव्रत के अन्य पुत्र तामस के मनु होने और देवी की आराधना आदि का विवरण— ४९—५१

प्रियव्रत-पुत्र रैवत के मनु होने और देवी की आराधना करने आदि का वृत्तांत— ५२—५३

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

	छंद से छंद तक
छठे मनु चाक्षुष का वृत्तांत—	५४—६३
सप्तम मनु वैवस्वत का विवरण—	६३—६४
अष्टम मनु सावर्णि का विवरण; और इस प्रसंग में उनके पूर्व जन्म की कथा, पूर्व जन्म में स्वारोचिष मन्वन्तर में सुरथ नाम के राजा, ध्रुव-पौत्र नन्द का उन पर आक्रमण, उनकी पराजय तथा वन में सुमेधा ऋषि से विनय—	६४—७२
सुमेधा ऋषि द्वारा देवी की आराधना करने का उपदेश देना और उस संदर्भ में महाकाली का चरित्र कहना जिसमें मधुकैटभ को देवी द्वारा मोहित करने पर विष्णु द्वारा उनके वध का वृत्तांत—	७२—८४
महालक्ष्मी का चरित्र-कथन और उस संदर्भ में महिषासुर के जन्म, देवी के प्रकट होने एवं योद्धाओं और सेनापतियों सहित महिषासुर के मारने का विवरण—	८४—१०२
महासरस्वती का चरित्र-कथन और उस प्रसंग में ससैन्य शुंभ-निशुंभ के वध का वृत्तांत—	१०३—११७
मेधामुनि का राजा सुरथ को महाकाली, महालक्ष्मी तथा महासरस्वती की आराधना का उपदेश—	११८—११९
सुरथ की निर्जन वन में देवी की आराधना और देवी का प्रकट होकर वर देना—	१२०—१२६
वैवस्वत मनु के छः पुत्रों द्वारा देवी की आराधना एवं देवी का प्रसन्न होकर वरदान—	१२७—१३६
इन छहों का क्रम से नवें से चौदहवें मनु होने का उल्लेख और विवरण—	१३६—१४०
भ्रामरीदेवी का आख्यान और उस प्रसंग में अरुण नामक दैत्य के तप से ब्रह्मा का उसे वर देना—	१४१—१५१
अरुण का दैत्यों का अधिपति होना, देवताओं पर संकट, आकाशवाणी का होना, देवी की आराधना करने तथा अरुण से गायत्री-जाप छुड़ाने का आदेश, गुरु बृहस्पति का अरुण के पास जाना और उसका भ्रमित होकर गायत्री-जाप छोड़ना—	१५२—१५९
भ्रामरीदेवी का प्रकट होना, देवताओं द्वारा स्तुति तथा मूल स्तुति—	१६०—१६३

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

छंद से छंद तक

देवताओं की विनय, देवी द्वारा भ्रमरों को मुट्ठी खोलकर छोड़ना तथा उनके द्वारा सभी दैत्यों का संहार— १६४—१७०

भ्रामरीदेवी की देवताओं आदि द्वारा पूजा— १७१—१७५

एकादश-स्कंध

[पृष्ठ ५०५—५३२]

नारायण द्वारा नारद से आचार की महिमा, आचार के निर्णय में वेद की प्रमाणिकता तथा वेद-विरुद्ध सभी त्याज्य— १—२०

दैनिकचर्या और इस प्रसंग में प्राणायाम के भेद, प्राणायाम-विधि, कुण्डलिनी को नमस्कार के पश्चात् गुरु का ध्यान, हरि का ध्यान, ब्रह्म और जीव की एकता प्राप्त करने की चेष्टा— २१—३६

उषाकाल, अरुणोदय और प्रभात का कालमान— ३७—३८

शौच की विधि, मिट्टी और दंतधावन का तथा हाथ धोने का विधान— ३९—६८

दंतधावन-निषेध— ६९—७०

स्नान, होम, गायत्री-जाप, प्राणायाम आदि के सम्बन्ध में विधान— ७१—८९

रुद्राक्ष का महत्त्व और उसकी धारण-विधि— ९०—९७

रुद्राक्ष-उत्पत्ति— ९८—१०१

रुद्राक्ष के अड़तीस भेद तथा तीन प्रकार एवं वर्णभेद के अनुसार उन्हें पहनने का विधान— १०१—१०४

एकमुखी रुद्राक्ष से लेकर चौदहमुखी रुद्राक्ष तक के धारण करने के विभिन्न फल— १०५—११७

रुद्राक्ष की मणिकाओं की संख्या के अनुसार विभिन्न मालाओं के पिरोने का विधान तथा आकार के आधार पर रुद्राक्ष के उत्तम, मध्यम और अधम होने का विवरण— ११८—१५६

कुण्डलिनी को जागृत करने की विधि के प्रसंग में शरीर के विभिन्न अंगों की परिकल्पनाओं के साथ प्रथक्-प्रथक् बीजमंत्रों के जप, पाप-पुरुष की हत्या तथा आत्मपरमात्म रूपिणी कुण्डलिनी का ध्यान— १५७- १९१

शिरोव्रत का विवरण, उसके शाखा-भेद से विभिन्न नाम, अथर्ववेद

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

छन्द से छन्द तक

की इस सम्बन्ध में श्रुति और उसका महत्त्व— १९२—१९८

भस्मो, उसका तिलक, भस्मी के प्रकार, भस्मी-तिलक आदि का माहात्म्य, विरजा मंत्र से हवन एवं धारण करने योग्य भस्मी तैयार करने की विधि— १९९—२७२

विभिन्न प्रकार की मिट्टी के तिलक के विभिन्न फल तथा विभिन्न अंगों में विभिन्न देवताओं का वास— २७३—२९८

संध्या-उपासना-विधि एवं ध्यान— २९८—३४५

द्वादश-स्कंध

[पृष्ठ ५३३ - ५९४]

संध्या के सम्बन्ध में गायत्री के चौबीस वर्णों के चौबीस ऋषियों तथा छन्दों का विवरण— १—१२

चौबीस वर्णों के चौबीस देवताओं का विवरण— १३—१६

चौबीस वर्णों की चौबीस शक्तियों का विवरण— १७—२०

इन वर्णों के चौबीस रंग— २१—२४

इन वर्णों के चौबीस तत्त्व— २५—२७

मुद्राओं का विवरण— २८—३१

गायत्री की महिमा तथा उसका ध्यान श्लोक— ३२—३९

गायत्री-कवच— ४०—५२

गायत्री-हृदय— ५३—५७

गायत्री-ध्यान— ५८—६८

गायत्री-स्तोत्र— ७१—९६

स्तोत्रपाठ-फल— ९७—१००

गायत्री के एक हजार आठ नाम तथा उनके जप का माहात्म्य— १०१—१०५

दीक्षा-काल और दीक्षा की विधि— १०५—२३५

जनमेजय के व्यास से शंका-निवारणार्थ प्रश्न— २३६—२४०

उत्तर में व्यास द्वारा मदोद्धत दानव का आख्यान, कथन और उस प्रसंग में देवों और दानवों के शत वर्षीय युद्ध, उसमें दानवों की पराजय

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

	छन्द से छन्द तक
तथा देवताओं का अहंकारयुक्त होने का विवरण—	२४१—२४६
एक तेजोमय ज्योति को देखकर देवताओं का आश्चर्यचकित होना तथा इन्द्र द्वारा अग्नि को उसका पता लगाने के लिए भेजना—	२४६—२५०
उस तेज और अग्नि का वार्त्तालाप, अग्नि की परीक्षा, अग्नि का परास्त होकर लौटना, इन्द्र से वृतांत कहना—	२५०—२५४
इन्द्र द्वारा वायु को भेजना, पूर्ववत् वायु की परीक्षा, वायु का भी परास्त होकर लौटना, इन्द्र से वृत्तांत कहना—	२५५—२६०
देवताओं द्वारा स्वयं जाने के लिए इन्द्र को प्रेरणा देना, इन्द्र का प्रस्थान, तेज का विलीन होना, अपना अपमान समझ कर अत्यन्त विकल होना, आकाशवाणी होना और इन्द्र को बीजमन्त्र के जाप का आदेश प्राप्त होना—	२६१—२६७
एक लाख वर्ष पर्यन्त इन्द्र द्वारा मायाबीज का जाप, देवी का कन्या रूप में प्रकट होना, देवी-स्वरूप-वर्णन—	२६८—२७७
इन्द्र द्वारा नमस्कार तथा शंका-निवारणार्थ देवी से प्रश्न—	२७८—२८०
देवी का उत्तर, ब्रह्म और माया सम्बन्धी तत्व-निरूपण, देवताओं की स्तुति तथा देवी का प्रस्थान—	२८१—३०३
ब्राह्मणों तथा देवताओं के लिए निरभिमान होकर गायत्री, बीजमंत्र-जाप आदि का विशेष विधान—	३०४—३०६
व्यास द्वारा एक अन्य आख्यान सुनाना और उस प्रसंग में अत्यन्त भीषण दुर्भिक्ष के होने, संत्रस्त ब्राह्मणों का गौतम ऋषि के आश्रम पर जाने, गौतम ऋषि का गायत्री का जाप करने, देवी द्वारा कष्ट निवारण के लिए एक पात्र के देने का विवरण—	३१०—३२४
इन्द्र द्वारा गौतम ऋषि की प्रशंसा, उसे सुनकर नारद का गौतम ऋषि के आश्रम में आना तथा देवीभक्त होने के लिए उनकी प्रशंसा करना और उन्हें धन्यवाद देना तथा वहाँ से प्रस्थान—	३२५—३३४
संकटकाल समाप्त होने पर ब्राह्मणों का अपने-अपने स्थानों को जाना तथा गौतम की प्रशंसा सुनकर उनसे ईर्ष्या करना, मुनि को कलंकित करने का परामर्श, होम के समय एक कृत्रिम गाय को प्रेरित करना, गौतम द्वारा उसे वर्जित करना एवं कृत्रिम गाय की मृत्यु—	३३५—३३८

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

छंद से छंद तक

ब्राह्मणों द्वारा गाय-वध के लिए गौतम की निन्दा तथा कोलाहल करना, गौतम को ध्यानमग्न होने पर वास्तविक स्थिति का पता लगना तथा क्रोधित होकर ब्राह्मणों को शाप देना— ३३९—३४४

देवी का गौतम को आश्वासन देना— ३४५—३४६

शाप-दग्ध ब्राह्मणों का गौतम के पास गमन और उनकी विनय करना, गौतम द्वारा गायत्री-जाप का उपदेश देना जिससे शापमुक्ति हो और यह कहना कि जब तक कृष्ण-जन्म न हो तब तक नर्कवास करना ही होगा— ३४७—३५२

व्यास का जनमेजय से कहना कि कृष्ण-जन्म के पश्चात् ब्राह्मणों का जन्म हुआ और उनमें से अनेक दम्भी और विभिन्न पंथों के प्रवर्त्तक हुए— ३५३—३५७

मणिद्वीप का विवरण और उस प्रसंग में — ३५८—५५२

माया, ब्रह्म, जीव, ईश्वर आदि तथा ब्रह्मलोक का वृत्तांत— ३५९—३७१

जगत् का मूल कारण, माया का ब्रह्मलोक के अन्तर्गत सर्वलोक में निवास और उसका मणिजटित होने के कारण मणिद्वीप संज्ञा— ३७२—३७४

मणिद्वीप का सामान्य विवरण— ३७५—३८३

लोह-प्राचीरयुक्त शाला का विवरण— ३८४—३८७

काँसी के प्राचीर युक्त मण्डित शाला का विवरण— ३८८—३९९

ताम्र-प्राचीरयुक्त शाला का विवरण— ३९९—४०६

पीतल की शाला का विवरण तथा ग्रीष्मराजा, उसकी स्त्रियों तथा वाटिका आदि का वृत्तांत— ४०६—४१०

सीसे की शाला एवं वर्षा ऋतु के राजा, उसकी पत्नियों, वाटिका आदि का विवरण— ४११—४१७

पंचलोह की शाला, शरद् ऋतु के राजा, उसकी पत्नियों तथा मंदार उपवन आदि का विवरण— ४१८—४२०

पारिजात उपवन, हेमन्त ऋतु के राजा, उसकी पत्नियों आदि का वृत्तांत— ४२१—४२३

सुवर्ण की शाला, कदम्ब के उपवन, शिशिर ऋतु के राजा, उनकी

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

छंद से छंद तक

पत्नियों आदि का विवरण— ४२३—४२६

पुष्पराग शाला का विवरण— ४२६—४२६

मणिपुर निकटवर्ती आठों दिशाओं की पुरियों का विवरण — ४३०—४४६

पुष्पराग और पद्मराग शालाओं तथा वहाँ की दिव्य चौसठ कला-रूपिणी देवियों का विवरण— ४५०—४६७

वैडूर्य शाला एवं वहाँ की देवियों का वृत्तांत— ४६८—४७१

गोमेद शाला, भुवनेश्वरी की परिचारिकाओं के भवन आदि का विवरण— ४७२ – ५०२

भुवनेश्वरी का भवन, उसके वैभव, उसके स्वरूप आदि का विस्तृत वर्णन— ५०३—५५१

व्यासजी द्वारा जनमेजय के लिए देवीय यज्ञ करने की प्रेरणा, जनमेजय का वैसा करना और उसके पिता का उद्धार— ५५२—५५५

मुनि नारद का आगमन, जनमेजय को यह समाचार देना कि उनके पिता की मुक्ति हुई, देवी की भक्ति का दृढ़ होना एवं यज्ञ समापन— ५५६—५५८

ग्रन्थ-कर्त्ता कवि बुद्धसिंह चारण का आत्म-निवेदन— ५५६—५६४

लेखक श्री परमानन्द की प्रार्थना— ५६५—५७०

परिशिष्ट १

पृष्ठाङ्क

दो शब्द (परिशिष्ट-सम्पादक के) ५६५—६००

महाराजकुमार श्री चैनसिंहजी री वार्त्ता ६०१—६१७

परिशिष्ट २

(प्रकीर्ण गीत-संग्रह)

गीत १—परमात्मारो, सिंढायच बुधसिंहजी री १४ वर्ष री उमर में बणायो— ६१८—

गीत २—ईश्वर रो, बुधजी रै कयोड़ो— ६१८—६१६

गीत ३—कुंवर चैनसिंहजी रो— ६१६—६२०

गीत ४—महाराज हणवंतसिंहजी रै बाइजी रो विवाह जोधपुर महाराजा जसवंतसिंहजी सूं कियो जिणरो— ६२०—६२१

गीत ५—नरसिंहगढ़ महाराज हणवंतसिंहजी रो— ६२१—

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गीत ६—नरसिंहगढ़-महाराजा हणवंतसिंहजी री वीरता रो— ६२२—६२३

गीत ७—महाराज हणवन्तसिंहजी रो— ६२३- ६२४

गीत ८—माहाराज हणवंतसिंहजी रो— ६२४—६२५

गीत ९—महाराज हणवंतसिंहजी नरसिंहगढ़ रो— ६२५—

गीत १०—महाराज हणवंतसिंघजी रो— ६२५—६२६

गीत ११—महाराज हणवंतसिंहजी रै बाइजी रो विवाह आछो कियो जिण रो— ६२६—

गीत १२-२५—महाराजा हणवंतसिंहजी रा, बुधजी रा कयोड़ा— ६२६—६३४

गीत २६ मेंगलगढ़ के ठाकुर शत्रुशालजी रो, सिढ़ायच बुधसिंहजी रो कयोड़ो— ६३४—

गीत २७—महाराज 'सर' प्रतापसिंहजी रो, चीण रो पैलाँ युद्ध कर फतै करी जिण रो— ६३५—६३६

गीत २८—सलूंभर-रावजी श्री केसरसिंहजी रो— ६३६—

गीत २९—नरसिंहगढ़ रियासत में रोंसला ग्राम के ठा० वनैसिंह ने अपनी खास सवारी की घोड़ी कवि-राजा बुधसिंहजी को भेंट में दी जिसके सम्बन्ध में बुधजी का कहा हुआ गीत— ६३६—६३७

गीत ३०—महाराजकुमार श्री चैनसिंहजी जो वि० सं० १८८१ में अंग्रेजों से मुकाम सीहोर में युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए जिसका— ६३७—६३९

गीत ३१—कंवर चैनसिंहजी रै युद्ध रो— ६३९—६४०

गीत ३२—चंडावल ठा० श्री सगतसिंहजी रो, सिढायच बुधजी रो कयोड़ो— ६४०—

गीत ३३—राजगढ़ का रावत श्री बळबहादुरसिंहजी रो, बुधसिंहजी रो कयोड़ो— ६४०—

गीत ३४—सिकारपुर रा ठा० वभूतसिंहजी रो— ६४१—

गीत ३५-३६—राजा अचळसिंह नरसंगढ़ रा सिढ़ायच भाऊजी (बुधसिंहजी के पितामह) रा कयोड़ा— ६४१—६४२

गीत ३७-३८—मोतीसिंहजी नरसंगढ़-महाराज रा, भाऊजी रा कयोड़ा— ६४२—६४३

गीत मरसियो ३९—प्राडल्ये ठा० कोकसिंहजी रो, बुधसिंहजी रो कह्यो— ६४३—

गीत ४०—महाराज हणुतसिंहजी घोड़ी बख्शी जिण रो, बुधजी रो कयोड़ो— ६४३—६४४

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

छप्पय १-१३—श्री महादेव रा, बुधजी रा कयोड़ा— ६४४—६४७

छप्पय १४—नरसिंहगढ़ के दीवान (राजा) अचळसिंहजी रो, भाऊजी रो कयोड़ो— ६४८—

दोहा-सोरठा १-६७—श्री गंगाजी री स्तुति रा, बुधजी रा कयोड़ा— ६४८—६५३

फुटकर सोरठा ६८-७३—भक्ति दृष्टान्त रा, बुधजी रा कयोड़ा— ६५३—

सोरठा मरसिया ७४-८५—नरसिंहगढ़ माहाराज महताबसिंहजी रा— ६५४—

कवित्त-मरसीया १—खेतड़ी माहाराज अजीतसिंहजी रो, बुधजी रो कयोड़ो— ६५५—

कवित्त २—नरसिंहगढ़ रा राजां री पीढ़ियां रो, बुधजी रो कयोड़ो— ६५५—

कवित्त ३—महाराज मेहताबसिंहजी रो— ६५५—

कवित्त ४-५—महाराज अर्जुनसिंहजी रा, बुधजी रै कयोड़ा— ६५६—

कवित्त मरसिया ६—प्रतापगढ़ दीवान (राजा) श्री उदैसिंहजी रो बुधजी रो कयोड़ो— ६५६—

कवित्त ७—खिलचीपुर-राजा अमरसिंहजी को— ६५७

कवित्त ८—नरसिंहगढ़-दरबार श्री अरजनसिंहजी रो— ६५७—

कवित्त ९—नरसिंहगढ़-महाराज अर्जुनसिंहजी रा राजतिलक रै समय रो, बुधजी रो कयोड़ो— ६५७—६५८

कवित्त १०-११—महाराज प्रतापसिंहजी नरसिंहगढ़ का विलायत सूं पधारया जींका— ६५८—

कवित्त १२-१३—नरसंगढ़-महाराज मेहताबसिंहजी रा बुधजी रा कयोड़ा— ६५८—६५९

कवित्त १४-१५—महाराज अर्जुनसिंहजी गद्दी-विराज्या जींका— ६५९—६६०

कवित्त मरसइया १६-१७—नरसिंहगढ़-महाराज मेहताबसिंहजी रा बुधजी रा कयोड़ा— ६६०—

कवित्त १८-१९—नरसिंहगढ़-माहाराज अर्जुनसिंहजी रा— ६६१—

सवइया २०—नरसिंहगढ़-माहाराज मेहताबसिंहजी रो बुधजी रो कयोड़ो— ६६१—

——

CC-0. RORI: Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बुधसिंह चारण रचित

देवीचरित

द्वितीय भाग

पंचम स्कंध

दोहा

सोनक आदिक सूत सौं, कीयौ प्रस्न कर जोर।
परम सयाने ग्याँन पथ, मेटहु संसय मोर ।।१
वासुदेव वसुदेव सुत, आय भये अवतार।
सुत हित जाचे सिंभु कौं, सुनी कथा स्रुत[1] सार ।।२
यातै विस्मय होत उर, मिटै सु कहहु मिलाय।
सुनवे कौं याही समय, अंतह वृति[2] अकुलाय ।।३

छंद त्रोटक

सुन सूत कही इह सोनक सौं, रचना करुविंद्र[3] इँही रुख सौं।
सोइ व्यास सौं पूछीय वीच सबै, जनमेजय कै प्रति भाखी जबै ।।४
कही राजन सौं इह व्यास कथा, जिह सौं हम भाखत वात जथा।
सब देवन के हरि देव सदा, वस माँनुखी देह गही विपदा ।।५
वरनास्रम धर्म वढाँवन कौं, पुन पूजनहू गरू पावन कौं।
द्विज भक्तहू पूजन देवंन की, सुख दुख्खहु आदक सेवन की ।।६
जन सोक मैं सोक लहे जिनहू, तन हर्ष में हर्ष गह्यौ तिनहू।
श्रीय सेवनहू सुख संतति कौं, मुद पाय कै बोध गह्यौ मति कौं ।।७
असटावक्र[4] स्राप गँधारीय कौ, निज हास भयौ सव नारीय कौ।
कुल जादव नास भयौ कित कौं, तन त्याग गये हरीहू तित कौं ।।८
कहौ मानुखी-कर्म न कोन कीयौ, लखकै जग कौं मग क्रस्न लीयौ।
सिव पूजन संक कहा समुझौ, तुम जाँन अग्याँन ऊपाध तजौ ।।९

---

१ श्रुति, वेद। २ चित्तवृत्ति। ३ जनमेजय। ४ अष्टावक्र।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

हित कारन क्रस्न है विस्नु हरी, केऊ वार अराधन ईस[1] करो ।
अज जाँनहु रूप अकार इहै, कमलापत रूप ऊकार कहै ।।१०
गवरीपति रूप मकार गहौ, अर्द्ध मात्र सरूपीय मात अहौ ।
परपाटीय सार विचार पखै, इकतै अधिके इक जाँन अखै ।।११
अज विस्नु सौं ईस गनौं अधिके, सिव दानीय है रिध के सिधके ।
कहौ क्रस्न अराधन सिभु करयौ, सुत कै हित ताही सौं काज सरयौ ।।१२
अरु रुद्र है मूल निमत्त अखी, सुरजेष्ट[2] हु के वर[3] ह्वै समखी ।
वँह अंस सौं रुद्र[4] भये इतने, जग पुज्जन लायक हैं जितने ।।१३
सिव मूल-हू- रुद्र की सेवन सैं, भ्रम कौं तजकै निज भेवन सैं ।
परिआई की रीत सौं पुज्जपनौ, गवरीपति देव अनाद गनौ ।।१४
सबतै पर[5] देवीय रूप सही, भगवंतीय भीम[6] ससीम भई ।
सब सौं सिव ऊत्तम जान सदा, करोयै नहीं संसय कोय कदा ।।१५
सब माया अधीन गनौं सुरकौं, अरु माँनव हू फिर आसुर कौं ।
उतपत्त करै ब्रहमंड अजा, पुन पालन नासन आद प्रजा ।।१६
जग मैं जड़ जंगम जीव जिते, रचना प्रक्रती-क्रत कर्म रते ।
प्रक्रती अहंकार ऊपावत[7] है, जड़ जंगम जीव जनावत है ।।१७
विध और हरी हर देव बने, गुन तीनहु सौं उतक्रष्ट गने ।
अहंकार विना त्रहु होत इहै, गुन हू कौ सुभाव सु कैसै गहै ।।१८
धन धाँम त्रीया थित धारन कौं, सुत बंधव काज सुधारन कौं ।
कुल बंधन कारन नाहिं कदा, सोइ बंधन है अहंकार सदा ।।१९
इह रूप तै व्याप रह्यौ उर मैं, सुर मैं नर मैं कहा आसुर मैं ।
हम है करता इह काजहि मैं, तुम सौं हम लेत हैं देत तुमैं ।।२०
वहुधा इह बाँधत बंधन तै, फिर छूटत नाहिंन फंदन तै ।
विन कारन नाहिंन काज बनै, गढवायं न हेम[8] विना गहनै ।।२१
अहंकार तै मोहहु होत उदै, विच बंधन कै कहि जीव बँधै ।
जग पालक सोय जनार्दन हू, गुन औ अहंकार जुतै गनहू ।।२२
अहंकार की धार में बिस्नु इही, ममता-वस बूड़त मोह मँही ।
सुख-दुख्खहु भोग घने सहिकै, वयकुंठ कों जावत है वहिकै ।।२३

१ महादेव । २ ब्रह्मा । ३ वर देने के लिए । ४ मूल रुद्र । ५ परे, श्रेष्ठ ।
६ महादेव । ७ उत्पन्न करती है । ८ सोना, स्वर्ण ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मुनिराज सिद्धंत महंत पनौ, गुनहू क्रम सौं अहंकार गनौ।
अहु देवहु बंधन बीच तँही, सोइ प्रकत कै बस हैं सब ही ॥२४
कोऊ मंदमती इह वात कहै, लिछमीपतिहू अवतार लहै।
वँह आप मतै इहाँ आवत है, जुत आप मतै फिर जावत है ॥२५
वस येक है वात बिचारन की, करीयै मति धारन कारन की।
ग्रभवास[१] समाँन न दुख्ख गनौ, सोइ आयकै ताहि मँही सहनौ ॥२६
क्रम येह सुतंत्र न होय करं, मृतलोक[२] मही जनमै रु मरै।
जप जोग्य रु जोगहु जाप जजै, त्रीय अंगज आदक संग तजै ॥२७
ग्रभवास तै मुक्त ही हेत गहै, वयकुंठ न जाँनत दुख्ख वहै।
प्रकती वस है हरी पावनहू, कछु नाँहिन और कहावनहू ॥२८
विध रुद्र गनौ प्रकती वसमै, जिही देव अदेवहु जाहि जुमै।
जड़[३] जंगम माँनव आद जिही, सव हैं प्रकती-वस वात सही ॥२९
वहु व्यास की भूप सुनी बतीयाँ, सीयराय[४] गई सबकी छतीयाँ।
महिमा महमाय की जाँन मुदै, उरमै भयौ ग्याँन कौ भाँन उदै ॥३०

दोहा

जोगेस्वरी प्रभाव जुत, व्यास बखाँनी बात।
स्रोतागन स्रोंनन सुनत, सबही भये सुनाथ ॥३१
जनमेजय जीय जाँनकं, कही व्यास सौं कथ्थ।
कछु चरित्र देवी कहौं, सुभ गुन ग्याँन समथ्थ ॥३२
व्यास देव सुन विनय कौं, चित चरित्र जुत चाह।
कहनै लागे फिर कथा, अतसय जुक्त उछाह ॥३३

छंद त्रोटक

दिती के सुत जाँनहु भ्रात दहूँ, किल रंभ करंभ हु नाँम कहूँ।
जिह संतती हेत बिचार जबै, तप साधन कौं जुग भ्रात तबै ॥३४
तट पंचनदी तहाँ तीरथ पै, जहाँ जाय कछू नित मंत्र जपै।
कर होम हुतासन सेव करै, धर धीरज आस्रव[५] सत्य धरै ॥३५

१ गर्भवास। २ मर्त्यलोक। ३ जड़। ४ शीतल, मोदयुक्त। ५ प्रतिज्ञा।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

स्रुत ताहि पुरंदर कथ्थ सुनी, घट भीतर वाढ़ेऊ क्षोभ घनी।
वन ग्राह प्रवेस कीयौ वन[1] कौं, तहाँ जाय करंभ गह्यौ तन कौं ॥३६
गरूवाई की राह न सक्र गही, सुर आसुर वैर विचार सही।
स्रुत ताहि हकीकत रंभ सुनी, विपरीत कहा इह वात बनी ॥३७
कर खग्ग लयौ सिर काटन कौं, द्रढ होम के कुंड मैं दाटन कौं।
तन धार हुतासन देव तँहीं, गहि हीय दया तरवार गही ॥३८
किह कारन तूं सिर काटत है, उर ग्यांन कहा उतपाटत है।
कर आस्रव वायक वेद कहै, लख आतमघात कौ पाप लहै ॥३९
वर माँगहु जो कछु वंचत है, उर कारज जो न उदंचत है।
सुन पावक देव की वात सही, कर जोर हकीकत रंभ कही ॥४०
बरदायक ह्वै मम पुत्र बली, थित जीत करै त्रहुलोक थली।
सब देव अदेवन मार सकै, जुध जाचत सत्रुन बुद्ध जकै ॥४१
द्रढ पावक सो वरदाँन दीयौ, हरक्यो[2] सुनकै तहाँ रंभ हीयौ।
सुख पायकै वंद[3] हुतासन कौं, सुविचार चल्यौ लहि सासन कौं ॥४२
निरखी वन मैं बहु नारन कौं, सुख संतति हेत सुधारन कौं।
वट जिक्षनी थाँन जहाँ विहरै, त्रीय येक न आवन दिष्ट[4]तरे ॥४३
मतवारीय येक लखी महिखी, परचंड पराक्रम मैं परखी।
क्रम-जोग तहाँ तिह संग करचौ, धर धीरज बीरज[5] चाह धरचौ ॥
गत तै महिखी तिह गर्भ गह्यौ, रखवारीय कौं दनु संग रह्यौ ॥४४
ग्रभ पूरत केतक औध गई, महिखी गुरवो[6]लख मोद मई।
इक धीरसकंध[7] लख्यौ इनकौं, महिखी रति चाहिय ता मन कौं ॥४५
भल दौर परचौ सोइ भेटन कौं, मन रंभ चह्यौ सोई मेटन कौं।
रति गाहक माहिख चाय रह्यौ, विढकै तिह रंभ बचाय बह्यौ ॥४६
द्रढ धीरसकंध कौं मार दई, निकसी रति की पसु चाह नहीं।
हट स्रंगन तै तिह रंभ हन्यौ, विपरीत इही अवसाँन वन्यौ ॥४७
डर धीरसकंध कै भैंस डही, सरनै सोई जिक्षन जाय सही।
मिल जिक्ष बचाय रखी महिखी, लही भीत लुलाय तै दीन लखी ॥४८
जिह रंभ हुतासन जारन कौं, रच काठ चिता तिह कारन कौं।
धर मृत्यु[8] तहाँ तिह सीस धरयौ, करतै जब आग प्रवेस करचौ ॥४९

१ जल। २ हर्षित हुआ। ३ स्तुति करके। ४ दृष्टि। ५ वीर्य। ६ गर्भवती। ७ भैंसा। ८ शव।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

महिखी वह दौरके आप मतै, पति संग जरी सोई मोह प्रतै।
महिषासुर ताही कै पेट मढचौ, कर रूप भयंकर सोय कढचौ ।।५०
भट रंभ तै सो रतबीज[1] भयौ, दनु सुंभ निसुंभ कौं संग दयौ।
महिषासुर सोच चल्यौ मनतै, तप साधन कौं अपने तनतै ।।५१
वन स्रंग सुमेर समीप वस्यौ, कर उग्र तहाँ तन-ताप कस्यौ।
अनुवच्छ्छर लच्छ्छ वितीत इतै, चिततै कमलासन राह चितै ।।५२
चढ हंस पितामह चाह चले, मन वंचत दाँनव जाय मिले।
वर मांगहु जो कछु वंचत है, लख तौ करनी अवलंचत[2] है ।।५३
कर जोर तवै दनुविंद्र कही, डर मृत्यु के ताप तै देह दही।
अमरत्य[3] समापहु नाथ अहौ, गन हाथ अनाथ कौ नाथ गहौ ।।५४
दनु उत्तर येह विरंच दीयौ, करता इह नाहिंन नेम कीयौ।
जग मैं उपज्यौ सोई जावत है, कथ वेद पुरान कहावत है ।।५५
रबि चंद्र नछत्र न एक रहै, अचला फिर अंबर देख अहै।
सुन बात पितामह की सबहू, तहाँ दाँनव फेर कही तबहू ।।५६
सुर-आसुर मोहि न मार सकै, तनकौं नर मात्र न मीच तकै।
अबला भय नाँहिन मोहि इतौ, मरनौ हम चाहत आप मतौ ।।५७
वरदाँन दीयौ तबही विधना, सब सिद्ध भई तप की सधना[4]।
सब असुरायन वात सुनी, अभिषेक कीयौ नृप सज्झ-अनी[5] ।।५८
असुरायन राज जग्यौ अचला, कमती तहाँ होगई देव-कला।
जुर दाँनव जीत करी जगती, परचंड भयौ महिषेसपती[6] ।।५९
सब दाँनव दौरत स्वारथ मैं, भिरकै नृप जीतत भारथ[7] मैं।
दनुविंद्र सबै जग दाव दह्यौ, रच ताहीकै ऊरध छत्र रह्यौ ।।६०
प्रगट्यौ महिषासुर हाक परी, कर सागर संगर सीम करी।
परचारक चिक्षुर सैनपती, जिह जीत करी सबही जगती ।।६१
तिनकै बहु सैनक हाथ तरै, कहै चिक्षुर जाविध काज करै।
असलोम उदर्क महा अधमा, मतमंद विड़ाल जुतै मधमा ।।६२
बल वास्कल हू पुन दर्पबली, छित जीत त्रनेत्र अगाध छली।
पुन वंधककाल[8] महा प्रबला, कहीयै कहा चातुर जुद्धकला ।।६३

१ रक्तबीज। २ व्याकुलता, घबड़ाहट। ३ अमरत्व। ४ साधना। ५ सजी सेना के साथ। ६ महिषासुर। ७ युद्ध। ८ कालबंधक।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ठिक ठौरन ठौरन ठाट ठयौ, भुय मै दनुविंद्र कौ राज भयौ।
दनुविंद्र सह्यो नृप पोतदीयैं[1] लख सासन सीस चढाय लीयैं ॥६४
कोऊ सासन जास विरुद्ध करै, करकै रन ताहि निपात करै।
मिलकै रन खत्रीय माँन मलै, तहाँ विप्रन कौं लीय हाथ तलै ॥६५
मख भाग लहै सोई मोद मई, वरदायक माहिख ह्वै विजई।
रच जोर अदेवन राज रसा, दिन देवन की भई दीन दसा ॥६६
बल आसुर देख सलाह बढी, चित जीतन की सुर चाह चढी।
सुरगी[2] सुख भोगहुँ सुंदर कौं, पठवौ इक दूत पुरंदर कौं ॥६७
कहिहै हम जाविध जाय कहै, गृह कौं तजकै वन राह गहै।
अथवा मम सेवकौं आदर कै, पग आय परै उर पाधरकै ॥६८
मम स्रंगन दारुन मारन तै, कहु देव वचै इह कारन तै।
चढ़ आवहै नातर खेत छली, बल अच्छ्छर[3] कै सुरराज बली ॥६९
त्रीयलंपट की करनी तितनी, जिह जाँनत है हमहू जितनी।
उर पौरुख होय तौ आय अरै, धिक संगर की कर वज्र धरै ॥७०
चित चातुर आतुर दूत चह्यौ, दनु मंत्र विचार निदेस दयौ।
भल दूत चल्यौ तजकै भय कौं, लहि कै तहाँ राह सुरालय कौं ॥७१
महिषासुर चाहि कही मतिसौं, परचायकै जाव सचीपत सौं।
सब दूत को कथ्थ पुरंद्र सुनी, कछु सोच विचार करी कहनी ॥७२
महिषी पसु-अंगज मंदमती, कितने दनु आय मिले कुमती।
जिनसौं कर एकत[4] जोर जमा, छित कीन कुलाहल छोड़ छिमा ॥७३
गहिकं हम धीरज नाँहि गिनी, उर-दर्प भयौ करकै इतनी।
इह दर्प मिटावहु तो उर कौ, सठ जाँनहु नाथ अहूँ स्वर कौ ॥७४
सुख चाह सुरालय की सरसी, दनुविंद्र कौं वात भली दरसी।
मम वज्र की धारन-मारन की, उर संक न स्रंग उखारन की ॥७५
अभिमान कहूँ रन कौ उर मैं, चल सत्वर आवहु चत्वर मैं।
मम हूँस[5] वढी रन की मनकौं, सठ चाहत स्रंग सरासन कौं ॥७६
विन स्रंग भये वनवास वहौ, कहनी हमहू इह जाय कहौ।
जीय चाह चहै जहाँ जाँननकौं, करहू थित थाँनन काँनन कौं ॥७७

१ कर देने वाले, अधीन। २ स्वर्ग का। ३ अप्सराओं। ४ इकत्रित। ५ अभिलाषा, उत्साह।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

नद आस्रय जीवन[1] नालन मैं, त्रन खाय रहौ तट तालन में ।
अबतौ हम दूतहु आवन दै, जीय जाँन अवध्धहु जावन दै ।।७८
उतकी कहनी सुन लीन अहौ, कहनावत हू हम जाय कहौ ।
सुन दूत चल्यौ महिषासुर कौं, कहिनी कहि जोर दहूँ कर कौं ।।७९
नमूची[2] अरि जाँनत राज नही, कछु दुज्जन बात न जात कही ।
दुरवाद कहै मम हौस डुलं, भट बोल प्रचारहु जुद्ध भलै ।।८०
हटकै सब देवन-दर्प हरौ, वननंदन मैं सुख सौं विहरौ ।
सुन क्रोध भयौ महिषेस्वर यौं, उझले मनु सात समंदर ज्यौं ।।८१
चिनगारीय सोर की रास चढी, वहिकै बड़बानल आग बढी ।
दहकी जिम दाव लगै दहनी, वसू बाढ चली प्रलया बहनी ।।८२
स्रु त केहर गाज अवाज सुनी, फिर पूँछ मरोरत जेम फनी ।
घल लालीय नैनन रोख घुर्‌यौ, अलसावत पूँछ मरोर उठ्यौ ।।८३
वढ आनन तै दुरवाद वक्यौ, धधकै जिम आग इलाव धुक्यौ ।
जिनकै बल अछ् छरनार जमा, सबकौं वँह जाँनत आप समा ।।८४
जिह स्याहिक[3] विस्नु छलो जगकौं, ठिक ताहि पिछाँनत हूँ ठगकौं ।
हरनाक्ष कौं सूकर होय हन्यौ, विजई फिर बीर नृसंघ वन्यौ ।।८५
कीय हाटक कस्यप[4] सौं करनी, बल की छल की कल[5] बिसतरनी ।
पित-पुत्र लराय कै आपुस मैं, वहुरै प्रहलाद कीयौ बसमैं ।।८६
नर नाम तै मोकँह भीत नहीं, वरदान दीयौ विधना विजई ।
दसहूं दिस भेजहु दूतन कौं, परचाय कहै दिती पूतन कौं ।।८७
जुत है दल पै दल जोर जमा, समलै सब आसुर बोल समा ।
सव व्याप्रत[6] मंत्रन वात सुनी, कीय काज ज्युंही नृप की कहनी ।।८८
पहुमी असुरायन हाक परी, लहरै जिम फौज बढी लहरी ।
पुन पव्वय धाँम पतालन तै, उमड़े घन जेम ऊतालन तै ।।८९

कवित्त

कोऊ कहै उरवसी[7] घ्रताची[8] रंभा[9] मिस्रकेसी[10],
परमंद्वरा[11] कै गाँन स्रौंन सुख पावैंगे ।

---

१ जल २ इन्द्र । ३ सहायक । ४ हिरण्यकश्यप । ५ कला । ६ एकत्रित ।
७ से ११ तक अप्सराओं के नाम ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सुनी है सु साँचो महसेनी[1] हु मदोतकटा,[2]
लोचन तिलोतमा[3] के रूप ललचावैंगे।।
नंदनविपन वीच कर है विहार नीकौ,
रमनी सुरन केरी असुर रमावैंगे।
महिषास्वर भूप धंन्य करनी अनूप जाकी,
जाके संग जंग कर सीघ्र विजै पावैंगे।।६०
जंग की उमंग कर सेना दनु संग सजी,
रंग मैं विरंग भयौ देवन के दुख कौं।
विध वरदाँन दीयौ सबकौ अकाज कीयौ,
महिषास्वर जेता नाँम मात्र ही पुरख[4] कौं।।
सुनी सुरराज कीजै किही विध काज इ,
दानव-समाज लीयै सब ही कुरख कौं।
लरै विन भाग गयै ह्वै है उपहास मेरौ,
कातर कहायकै दिखाऊँ कहाँ मुख कौं।।६१

छंद मौतीदाँम

वढी सुरराज बिखाद वसेस, दीयौ सुर वोलन काज निदेस।
क्रतंतहु वारुन आद कुबेर, विचारन मंत्र मिले तिंह वेर।।६२
कही दिस पालत तै तहाँ कथ्थ, सचीपत लायक बुद्ध समथ्थ।
पराक्रम मायक रंभ कौ पूत, दिखावत भीत पठायकै दूत।।६३
सुरालय त्याग रहौ वनवास, इहां वँह आय करी अरदास।
न तौ मिल संगर देवहु नीम, भलै दनुविंद्र बकारहु भीम।।६४
कही हम दूत प्रतै कछु कथ्थ, सुनावँह ताकहँ जाय समथ्थ।
सदा इह दुज्जन जात सुभाव, भजै नहीं नैंकहु भीरुक भाव।।६५
सबैं मिल नीक विचार सलाह, नयानय जा विध ह्वै निरवाह।
वलाबल विग्रह संध विचार, कुलीनस[5] आगम बंधहु क्यार।।६६
करौ सोई काज महा करतूत, प्रकासीय देवन सौं पुरहूत।
कही पुरहूत सुनी सोइ कथ्थ, तहाँ दिय देवन उत्तर तथ्थ।।६७

---

१ से ३ तक अप्सराओं के नाम। ४ पुरुष। ५ जल।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जहाँ इक दूत पठावहु जाय, वँहै बल देख कहै इहाँ आय।
बुलाय कै बुद्ध विचार विसेख, पुरंदर दूत बिदा कीए पेख ॥९८
भले तुम जावहु लावहु भेव, अनीकनि सभ्यत[1] कीन अदेव।
जहाँ तुम आतुर देखहु जाय, इहाँ समुझाय कहौ हम आय ॥९९
बिदा हुय दूत चल्यौ तिह वेर, मिले दल-दाँनव च्यारहु मेर।
निरख्खीय आय कही निझ नैन, विमासत इंद्र कहे इह वैन ॥१००
मघाभव आसुर प्रोहित माँन, ज्युँही सुर चित्र सिखंडज जाँन।
सबै मिल पूछहु जाहि सलाह, चहै सोई काज करौ चित चाह ॥१०१
बुलायकै देव-गरू तिंह बार, सिंघासन आसन दै सुविचार।
कही महिषास्वर की तव कथ्थ, सवै विध लायक नीत-समथ्थ ॥१०२
कहै गरूराज करै हम काज, सबै मुनिराजन के सिरताज।
सुनौ गरूदेवन की कथ स्राँन, विसारद नीत सुलोक विधाँन ॥१०३
दीयौ गरू उत्तर देवन देख, विपत्त मैं धीरज नीक विसेख।
जिही विध जाँनहु ईस्वर जीव, सदा अपटाँतर संग सदीव ॥१०४
उपासत जोगीय जोग अभ्यास, करै सोई धीरज तै परकास।
छली मम तीय हरी जब चंद, फस्यौ अत चित्तहु दुःख के फंद ॥१०५
मिली सोई धीरज तै फिर मित्त, सही हम बीतीय जाँनत सत्त।
करौ तुम जुद्ध तथा तुम काँन[2], हमै नही दीसत लाभरु हांन ॥१०६
कहै हम वात न एकहु कोय, जयाजय ईस-अधीनहु जोय[3]।
जहाँ गरूराज कही इह जाँन, नही कुसलात न वात निदाँन ॥१०७
बिचारकै वासव बुद्ध विसेख, दीयौ गरूराज कौं उत्तर देख।
गनौ परिव्राजक भूखन[4] ग्याँन, संतोखहु विप्रन कौं सुख-दाँन ॥१०८
चहै कोऊ ऐस्वरता कर चाह, तजै नही उद्दम[5] भूखन ताहि।
हीयै कर संगर की फिर हाँम, तज्यौ पुरहूत न साहँस ताँम ॥१०९
गयौ विधलोक पितामह गेह, दहै दुख ताप सदा मम देह।
पितामह देवन के प्रतपाल, भयौ महिषेस्वर जीत भुआल ॥११०
सुरालय जीतन चाहत सोय, महाँबल दूत पठायकै मोहि।
कही तिह आयकै या बिध कथ्थ, सँभावहु आयुध सक्र समथ्थ ॥१११

१ सुसज्जित की। २ किनारा करो, युद्ध न करो। ३ जो भी हो। ४ संन्यासियों-का भूषण। ५ उद्यम।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

न तौ सुरलोकहु वास निवेर, वसौ वनवास करौ मत वेर।
परंजन आद क्रतंत पचार[1] बने सरनागत रावरे बार ॥११२
करौ सुर स्याहि अबै करतार, अहो विध आप विनाँ न अधार।
विरंचहु देवन सौं कहि वात, ततौ हम मंत्र बिचारहि तात ॥११३
हलै किवलासहु कौ सिव हूँत, वनै जिम जाय कहै कछु व्यूँत।
वलावल बिग्रह संध विचार, इहै विध फेर करै उपचार ॥११४
गये दिसपालन कौं लहि गैल, सदा सिव-वास जहाँ ध्रुव[2] सैल।
जहाँ हर-देवन देवन जाय, लखे सब देवन चित्त लगाय ॥११५
अजोनीय[3] नाथ स्वरूप अनाद, निरंजन रंजन सींगीय नाद।
सुहावन चंद्रमनी तन स्वेत, सुसोभत उज्जल भस्म सहेत ॥११६
वनै भुज-बंधन कंकन ब्याल, महेस्वर नील गरै रुंड़माल।
लसै फिर काँनन-कुंडल लोल, प्रभा प्रतिबिंबत बीच कपोल ॥११७
वनै विधु वाल सुभाल विसाल, खुली छिब अंबर सींधुर-खाल[4]।
उमा सिध[5] सील सती अरधंग, गिरीसहु सीस विराजत गंग ॥११८
पढै रिख बाचत वेद पुराँन, गहै स्वर राचत गंध्रव गाँन।
विपंचीय भीन रही जहां वाज, अनूंपम होत मृदंग अवाज ॥११९
अनंदत देव लखे छिब ऐंन, बिचारकै सार कहे विध बैंन।
पती महिषेस महावल पूर, सबै सुर जीतन चाहत सूर ॥१२०
अगंजित बीर पराक्रम उद्ध, जुहारत देवन सौं सोइ जुद्ध।
दया-निध देवन के सिव देव, भली विध जाँनत संगर भेव ॥१२१
किंही गत काज करै इहाँ कोन, जिही उर मंत्र विचारहु जोन।
विचारकै सिंभु कही इह वात, नरायन जाँनत दुष्ट निपात ॥१२२
चलौ हम साथ रमापत चाह, सबै मिल कीजहु जोन सलाह।
गये बयकुंठपुरी हरि-गेह, विलोकोय धूरजटी सुरवेह[6] ॥१२३
निलै पद-पंकज पंकज नैन, दिपै कर पंकजहू सुख-दैन।
अनूंपम आँनन सोह अपार, महाँप्रभू पावन रूप मुरार ॥१२४
कीयै मकराक्रत कुंडल काँन, अनूंपम आक्रंत वाहु अजाँन।
मनी उर कौस्तुभ फूलन-माल, प्रभा तन स्याँमल ओठ प्रवाल ॥१२५

१ ललकारा है। २ हिमालय। ३ योनि से जिनका जन्म नहीं हुआ। ४ हाथी का चर्म। ५ सिद्धि। ६ ब्रह्मा।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीतांवर ओढन कौं दुति-पुंज, मिली घन दाँमन ज्यूं छिब मंज।
अनूँपम सीस किरीट उदोत, जगी मगवग्ग जवाँहर जोत ॥१२६
विराजत लच्छीय वाँम विभाग, अनूँपम रूप-भरी अनुराग।
निरंतर पद्म गदा निहसंक, सुसोभत चक्र त्यूँही कर संख ॥१२७
करै जहाँ वेद-धुनी मुनि केक, उचारत अच्छर गाँन अनेक।
गिरा-गुन गंध्रव किन्नर गाय, रमापत जाचत राग रिझाय ॥१२८
सवै विध रुद्र कही समुझाय, अनाथ के नाथ हू कौं अवगाहि।
बली महिषासुर लै बरदाँन, करै नहीं देवन की कछु काँन ॥१२९
सुरालय जीतन चाहत सोय, कीयौ वँह बिग्रह चाहत कोय।
पठायकै दूत कही पुरहूत, करौ रन बीरन की करतूत ॥१३०
न तौ तज देहु तिबिष्टप[1] लोक, सहौ बनवास ही के दुख सोक।
महावरदायक माहिष[2] वीर, पुरंदर हीय करी इह पीर ॥१३१
अधोक्षज[3] देवन की अरदास, विचारकै वृद करौ वर दास।
कही विध रुद्र हरी सुन काँन, प्रचारीय जुद्ध ही काज प्रयान ॥१३२
चढे अरुनानुज[4] पै कर चाह, उदायुध चक्र गह्यौ अवगाह।
जगी दनु मेचक[5] मेटन जोत, उदै-गिर माँनहु सूर उदोत ॥१३३
विरंचहु डंड-कमंडल वार, हले चढ हंस ही काज हकार।
हले चढ संकर संड़ हरोल, त्रसीरख पाँन भयंकर तोल ॥१३४
गहै उर गाढ विसुद्ध गजंद्र, अनूँपम भूप चढचौ जहाँ इंद्र।
कीयौ कर धारन वज्र कठोर, विडारन दानव कौं बरजोर ॥१३५
सवारीय अंतक धीरसकंध, सँभारीय साहँस जुद्ध समंध।
गह्यौ कर आयुध चंड गरूर, प्रचंडहु डंड पराक्रम पूर ॥१३६
सिखंडीय-वाहन पौरुख चंड, भयंकर सक्त गही भुजडंड।
परंजन सूर ज्युही इक पिंग, जुहारन काज निसापत जंग ॥१३७
धनंजय[6] दाँनव सौं कर धेख, प्रभंजन आद चले रन पेख।
अनी-सभ अप्पन-अप्प अधार, धरै कर आयुध पौरुख धार ॥१३८
चले दल-देवन के कर चाह, अदेवन आहव कौं अवगाह।
परी त्रहुलोकन बीच पुकार, चढी चकडोल धरा दिस च्यार ॥१३९

---

१ देवलोक। २ महिषासुर। ३ विष्णु। ४ गरुड। ५ अंधकार। ६ स्वामीकार्तिकेय।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अदेवन-देवन की अनघात, बढी जनजातन विग्रह वात।
धरा असमान बढी रन-धूंम, ललकत सैन-घटा घँन लूम ॥१४०
उभै दिस केतन-पंत[1] उचूल, झुकै गज-पीठ रहे पट झूल।
उभै दिस सिंधव राग इलाप, महाँभट चाहत जुद्ध मिलाप ॥१४१
उभै दिस आँनक होत अवाज, बढै रव भेर भयाँनक वाज।
उभै दिस गज्जत सिंधुर येम, जिही रव भद्द बलाहक जेम ॥१४२
उभै दिस डंम्मर खेह उडाँन, भयौ तम धुंधर अंबर भाँन।
उभै दिस सेल अनीन अनंत, दिपै द्रुत विद्रुत ज्यों दमकंत ॥१४३
उभै दिस नेमीय घोष अखंड, दिपै रथ ऊद्ध ज्युँही धुज-डंड।
उभै दिस भेखन[2] हेख[3] अवाज, वहै मग केक मलप्पत राज ॥१४४
उभै दिस बीरन क्रुद्ध उछाह, चले उर आगम आहव चाह।
उभै दिस तुट्टत नीरनि वाँन, प्रभंजन थक्कीय सैन प्रयाँन ॥१४५
उभै दिस खूटत है तरु अग्ग, महाँवन चत्वर होवत मग्ग।
उभै दिस धूज धरा अकुलाय, दरारन पव्वय स्रंग डुलाय ॥१४६
उभै दिस सागर सत्त[4] उफाँन, प्रलै-जल माँनहु कीन प्रयाँन।
उभै दिस ऊतर दछ्छन ओर, घुमंडीय सैन-घटा घनघोर ॥१४७
उभै दल देव-अदेवन आय, भये मुहमेज जहाँ रन भाय।
उभै दल आयुध लै कर उद्ध, जुरे भट चारु वकारत जुद्ध ॥१४८
उभै दल तीरमदाज असंख, प्रहारन लग्गीय गारध पंख।
उभै दल ढालन की कर ओट, चले करवालन मारत चोट ॥१४९
उभै दल भालन सालन अंग, परै रुहरालन रंग पतंग।
उभै दल सूलन हूल अनंत, प्रहारन पट्टस[5] मार परंत ॥१५०
उभै दल मूसलहू सिल ओर, करै घन मार कुठार कठोर।
इतै दल देवन कौ पत इंद्र, गहै उर गाढ अरोह गजिंद्र ॥१५१
लख्यौ जहाँ चिक्षुर हू गज पेल, झुक्यौ रन भार लयौ भुज झेल।
हने सर चिक्षुर तत्व[6] हकार, पुरंदर काट कीये तिह पार ॥१५२
भुजाँतक चिक्षुरकै सर भेद, खुल्यौ तन-वर्म भयौ खल-खेद।
मुरछ्छत होय गिरयौ गज मथ्थ, हन्यौ फिर वज्र जहाँ गहि हथ्थ ॥१५३

१ पताकाओं की पंक्तियां। २ भीषण, भयंकर। ३ हींस। ४ सप्त, सात। ५ भाला। ६. पांच।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

करी कर चोट लगी अकुलाय, भज्यौ रन चिक्षुर भीरुक भाय।
जहाँ रन-वासव की भई जीत, भये भ्रगु-सिख सबै भयभीत ॥१५४
इहै गत चिक्षुर की अवरेख, धिख्यौ महिषेस तहाँ उर धेख।
पुकारीय दाँनव वीर बिड़ाल[1], बिदा कीय जुद्ध महाँविकराल ॥१५५
दीयौ असुरेस बिचार निदेस, संघारहु आहव जाय सुरेस।
परंजन आद जहाँ इकपिंग, जुहारहु जाय विड़ारहु जंग ॥१५६
चल्यौ जहाँ सासन सीस चढाय, बिड़ालहु वारन अग्ग बढाय।
निहाँरीय वासव आवत नैन, सजै वहु दाँनव की संग सैन ॥१५७
पुरंदर सिंदुर कौं रन पेल, खरौ कीय बीरन कौ चहाँ खेल।
विडाल कौं तिछ्छन वाँन विडार, सचीपत पाँनप अंग सँभार ॥१५८
बिडालहू काट तहाँ सर-व्रंद्र, गरज्जीय आहव पेल गयंद।
पुरंदर अंग कलंब पचास, जहाँ कर जुद्ध प्रहारीय जास ॥१५९
कटे तहाँ आवत बीच कलंब, जहाँ उर क्रुद्ध धिख्यौ अरिजंभ[2]।
दहूँ सर मारत ताकत दाव, पलट्टत नाँहिन येकऊ पाव ॥१६०
जहाँ सर दिग्ध बहै बरजोर, अनेकन सारमई दहु ओर।
कटै तहाँ येकहु-येक कलंब, प्रकासत ज्वालहु माल प्रलंब ॥१६१
तके जहाँ वासव मारत तीर, विडालहु नैन रुकै नँही वीर।
समौ लख पाँनप सक्र सँभार, महाँबल दाँनव कौं सर मार ॥१६२
गदा गहि दाँनव ताक गजिंद्र, प्रहारीय सुंडही बीच पुरंद्र।
भज्यौ गज चिक्कर ह्वै भयभीत, सबै असुरायन होय सभीत ॥१६३
सवारीय सिंधुर[3] की तज सोय, चढयौ फिर रथ्थ विडाल चछोह।
उभै भट ऊद्ध पराक्रमवाँन, जुरे कर आस्रव बाहु अजाँन ॥१६४
उभै भट फौजन के अवतंस, वचावत अप्पन-अप्पन वंस।
उभै भट कंकटव्यूढ[4] अभंग, सरासन बाँन प्रहारत संग ॥१६५
उभै भट ताकत दाव अनेक, अहूटत येकन तं नँही येक।
उभै भट जाग बलाय की आग, मिले मुँहमेज जहाँ रन माग ॥१६६
उभै भट संगर पाव अडोल, हीयै अवगाढ अनीन हरोल।
उभै भट हूँस करै जय आस, पराक्रम अप्पन-अप्प प्रकास ॥१६७

१ विडालाक्ष (दैत्यों का एक सेनापति)। २ इंद्र। ३ हाथी। ४ बख्तर-धारी, कवचधारी।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

उभै भट मत्त करी अनुहार, रुपे मृगराज मनौ मिल रार।
उभै भट बैर विचार अनाद, विधोविध राचत आयुधवाद ॥१६८
उभै भट दर्प-भरे जनु उद्ध, जुरे लग पांखन पव्वय-जुद्ध।
मँडे रन वाँनन तै मघवांन, विडालहु वाढ़त ज्याँ बलवाँन ॥१६९
जयंत कौं वासव-अंगज जाँन, अरे रन ताहि कीयौ अगवाँन।
पराक्रम दाँनव कौ तहाँ पेल, झुक्यौ रन वासव कौ[1] भर झेल ॥१७०
उरस्थल काल इलाव की आँच, प्रहारिय दाँनव कै सर पाँच।
जयंत के बाँन लगे विष ज्वाल, विडालहु मुर्छत होय विहाल ॥१७१
समौ तक भाज गयौ जब सूत, प्रचारीय जीत पुरंदर-पूत।
सबै मिल देव करै जय सद्द, निहंसत दुंदभ वाढीय नद्द[2] ॥१७२
गहक्कत किन्नर गंध्रव गाँन, अपछ्छर तांडव राचत आँन।
सुनी दल देवन की धुन स्राँन, हीयै दनुविंद्र जरचौ लख हाँन ॥१७३
प्रचारीय तांम्र[3] तहाँ बलपूर, सबै विध लायक संगर सूर।
अनी सभ आसुर-संग अभंग, भिरचौ रन माँनहु भीम भुजंग ॥१७४
झुके सर तिछ्छन ज्यूँ विषझार, विड़ारत येकन येक वकार।
वरख्खत बूंद ज्युँही सर बृंद, सरोवर वद्दर आय समंद ॥१७५
अरे रन वारुन पास ऊठाय, परठ्ठीय मेर सिलोचय पाय।
जहाँ लख वारुन दारुन जुद्ध, कृतंतहू आय जुटे कर क्रुद्ध ॥१७६
परी तहाँ दंडहु पास प्रहार, हटै नही दाँनव माँनत हार।
उभै मिल जूटत है इक ओर, ज्युँही इक तांम्र जुटै बरजोर ॥१७७
खट्टकत खग्गन तै जहाँ खग्ग, अट्टकत[4] मूसल सूल उदग्ग।
पट्टकत येकन कौं गहि पाँन, रट्टकत सिंघ बराहर काँन ॥१७८
झट्टकन येकन-येक झपेट, फट्टकत[5] नाहिन लागत फेट।
सट्टकत[6] कायर पंथ सँभार, लट्टकत कंधरहू धर लार ॥१७९
कट्टकत[7] विद्वत[8] ज्यूँ धिक कोह, मट्टकत देहन तै तज मोह।
हट्टकत नाँहिन माँनत हार, भट्टकत नैनन क्रोध भुँहार ॥१८०
भयौ रन संकुल रूप भयाँन, सुरासुर दोवन येक समाँन।
प्रहारीय अंतक डंड प्रचंड, चल्यौ नहीं दाँनवहू बलचंड ॥१८१

१ इन्द्रपुत्र जयंत। २ नाद। ३ एक दैत्य सेनापति। ४ अटकना, उलझना। ५ निकट आना। ६ चुपचाप भाग जाना। ७ कड़कना। ८ बिजली।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पहूँचीय वासवहू गहि पाँन, विड़ारीय आसुर कै तन वाँन।
प्रकंपत तीरन वाढीय पीर, धुक्यौ तन आसुरहू तज धीर ॥१८२
मुरछ्छत तांम्र गिरचौ धर मथ्थ, धिख्यौ असुरेस गदा धर हथ्थ।
कहे महिषास्वर इंद्र कुवोल, तहाँ रन-बीच गदा कर तोल ॥१८३
भखे तुम वाँयस ज्याँ मख भाग, त्रसै जन जाहु भजै रन त्याग।
पुरंदर देख चढचौ गज प्रष्ट[1], तहाँ असुरेस गदा गहि तिष्ट ॥१८४
प्रहार करी भुज मूल प्रचार, पुरंदर कट्टीय वज्र-प्रहार।
पुरंदर अग्र वढचौ गज पेल, भुक्यौ असुरेस त्युँही खग झेल ॥१८५
रुपे दहूँ बीर कुपे बिच रार, परै तहाँ अस्त्रन सस्त्र प्रहार।
करी तहाँ सावरी[2] जाल कराल, किते असुरेस भये तिह काल ॥१८६
अचंभत होय सुरेस असेस, मुनेस न जाँनत ताहि महेस।
जहाँ तहाँ मारत देवन जाय, दसूँ दिस एक अनेक दिखाय ॥१८७
जहाँ तहाँ ठाँनत बाँनत जंग, उड़ै किरवाँनन तै कट अंग।
जहाँ तहाँ घायल घूमत जूह, करै रन सूर बकारत कूह ॥१८८
जहाँ तहाँ कायर भागत जाय, अधीरज होय घने अकुलाय।
जहाँ तहाँ केक कबंधहु जाग, फिरै मनु खेलत होरीय फाग ॥१८९
जहाँ तहाँ रूठ रहे भट जूट, मँड़े रन जंभक[3] मल्लका मूठ।
जहाँ तहाँ बाज झपेटन जाँन, परै केऊ फेटन तै तज प्राँन ॥१९०
जहाँ तहाँ देवन दाँनव जाल, लरै बहु भाँत करै चख लाल।
जहाँ तहाँ एकन-एक जुहार, रमै भट जाचत राचत रार ॥१९१
जहाँ तहाँ वीरन के कट झुंड, परे केऊ रुंडहु मुंड प्रचंड।
प्रभंजन ऊठ धनंजय पाय, परंजन अंतक आद पलाय ॥१९२
दिवाकर और निसाकर देख, पुलस्त हु[4] हार रहे जहाँ पेख।
करी ग्रहु-देवन हूँत पुकार, मिले अज औ त्रपुरार मुरार ॥१९३
रमापत चक्र प्रहारीय रोष, दनू सब क्रत्रम[5] मेटेऊ दोष।
सोइ असुरेस रह्यौ तन सेस, भयौ तहाँ वीर भयाँनक भेस ॥१९४
लीयौ परघा कर चक्षुर पेल, झुके रन पाँनन आयुध झेल।
अरे उग्र वीरज[6] औ उगरास[7], तके असलोम त्रनेत्र हु तास ॥१९५

---

१ पीठ। २ आसुरी, जादू का। ३ दाढ़। ४ कुवेर। ५ कृत्रिम, माया के।
६ दैत्य सेनापति उग्रवीर्य। ७ उग्रास्य।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अरे अंधकासुर वास्कल आय, समासम दाँनव की समुदाय।
धरैं कर चाप चढै रथ धाय, अरे मद-अंध सुदेवन आय ॥१६६
कहै मुख वायक क्रद्ध करूर, परैं जहाँ घायक सायक पूर।
मिले अंधकासुर दैत्त मदंध, रमापत जुद्ध लीयौ मग रुंध ॥१६७
दीये सर तत्वहु लिप्त दुरंत, तहाँ हरि कट्टीय वीच तुरंत।
मिल्यौ जहाँ जंग दुरूह मिलाँन, बरख्खत मूसल खग्ग सुवाँन ॥१६८
अरे दहुँ वीर तजैं तन-श्रास, परे तहाँ जुद्ध सु दीह पचास।
पुरंदर वास्कलहू भरपूर, कीयौ जिह जुद्धहु क्रुद्ध करूर ॥१६६
ज्युंही महिषेस महानट[1] जंग, रचे तिह काल अनूपम रंग।
कीयौ जिह रीतहु जुद्ध कृतंत, त्रनेता दाँनव सौं लहि तंत ॥२००
कुमेर महाहनुहू कर क्रुद्ध, जहाँ इक रीत कीयौ दहु जुद्ध।
परंजन जुद्ध कीयौ भरपूर, तहाँ असलोम वजावत तूर ॥२०१
धिख्यौ अंधकासुरहु तज धीर, गदा हरि-वाहन मारग हीर।
तहाँ हरि चाप प्रतंचन ताँन, बरखन लग्गीय तिछ्छन बाँन ॥२०२
तहाँ सर आसुर कट्टीय तास, प्रभू तन दिन्नेऊ फेर पचास।
बचाय कै बाँन सबै तिह बार, रमापत चक्र प्रहारीय रार ॥२०३
बढ्यौ रन चक्र सौं चक्र बचाय, गरज्जीय दाँनव दर्प गहाय।
तहाँ सुर मोह भये लहि त्रास, विहव्वल होय तज्यौ विसवास ॥२०४
हरख्खत दाँनव त्याँ कर हल्ल, गहै उर गाढ उचारत गल्ल।
हरी तव फेर गदा गहि हथ्थ, महा कर कोप प्रहारीय मथ्थ ॥२०५
परचौ अंधकासुर बीर प्रचंड, विहव्वल होय महाबलवंड।
हुई जब अंधक की लख हार, वढ्यौ महिषासुर क्रोध विथार ॥२०६
जुरचौ सोइ आय रमापत जंग, उभै सर मारत घाव अभंग।
कीयौ तहाँ बाँनन जंग कराल, बढै रसवीर महाविकराल ॥२०७
महा कर कोप गदा हरि मार, सक्यौ असुरेस न देह सँभार।
दिती-सुत दीन भए तिह देख, सभै स्वर कातर आतुर सेष ॥२०८
जगी मुरछा सु गई अधजाँम[2], विसारद जुद्ध महा वरीयाँम।
दई हरि कै परिघातन दाझ, मुरछ्छत होय गये महाराज ॥२०६

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१ महादेव। २ आधा पहर।

तहाँ विनता-सुत आहव त्याग, लीयै हरि दूर गए मग लाग।
पुरंदर आद सबै सुरपंत, करै रव रोदन हाय करंत ।।२१०
तहाँ कर सूल लीयै त्रपुरार, पहूँचीय आय सुनंत पुकार।
कीयौ रन दारुन ह्वै प्रतिकूल, तहाँ महिषेस बचाय त्रसूल ।।२११
हनी उर संकर सक्ति हकार, सभै स्वर उच्च सु मोद सुरार।
भए कछु घायल नाँहिन भीम, नृभै हुय जुद्ध दई तहाँ नीम ।।२१२
इतै फिर विस्नु पहूँचिय आय, सदा सुर संकट होत सहाय।
लखे इकठे हरि संकर लार, कीयौ निभ रूप महा भयकार ।।२१३
नचावत पुछ्छ सु उच्च निसंक, सबै लख देव मनावत संक।
गरज्जत मेघ ज्युँही भर गल्ल, घुमावत श्रंगन[1] स्त्रिगन[2] घल्ल ।।२१४
लख्यौ तहाँ दारुन रूप लुलाय, उभै तहाँ आय जुटे अकुलाय।
करी तहाँ बाँनन-वृष्टि कराल, लरै दहू वीर करै चख लाल ।।२१५
सभ्यौ इत आहव धीरसकंध, अगंजत दाँनवहू मदअंध।
उठाय कै पुछ्छ सौं पव्वय-अंस, तक्यौ कुल दाँनव हू अवतंस ।।२१६
महाबल विस्नु ही सौं रन मंड, कीयौ विच बाँनन सौं सतखंड।
रिसायकै चक्र प्रहार रमेस, मुरछ्छत मार कीयौ महिषेस ।।२१७
उठ्यौ कर माँनवरूप अखंड, दुरंतर धार गदा भुज-दंड।
सिलोचय[3] दीसत दिघ्घ सरीर, गरज्जत मेघ सबद गहीर ।।२१८
महाधुन कीनीय संख मुरार, सुखी भये देव दुखी निसचार।
कीयौ फिर दाँनव रूप कराल, बन्यौ पलभक्ष[4] महा विकराल ।।२१९
तक्यौ हरि-वाहन कौं ततकाल, विलूर कै कीन सरीर विहाल।
श्रवै सब अंगन तै रत श्राव, वन्यौ अरुनानुज नाहि बचाव ।।२२०
धल्यौ हरि के भुज मैं कर घाव, चले हरि चन्द्र लीयै कर चाव।
इतै निभ रूप कीयौ असुरेस, विडारीन श्रृंगन अंग विसेस ।।२२१
भयौ अरुनानुजहू चित भंग, इही गत होय रमापति-अंग।
महावरदायक जाँन मुरार, हले निभ लोक ही कौं हुसीयार ।।२२२
लखे जब विस्नु गए निभ लोक, उमापतिहू गत कौं अवलोक।
चले किवलास ही मग्ग चल्लोह, इतै विच षंडहु संभ अरोह ।।२२३

---

१ सींग। २ पर्वत-खंड। ३ पर्वत। ४ सिंह।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

इही विध चाल गए विध ओक, सबै सुर त्रास लही गहि सोक।
भए बलहीन तऊ रन भाय, पुरंदर नैक न छंडीय पाय ॥२२४

परंजन सक्त लियै कर पास, अरे रहे जुद्ध भए न उदास।
डिगे नहीं नैंक लियै कर-दंड, पराक्रम अंतक वीर प्रचंड ॥२२५

प्रभाकर इंदु जहाँ इक पिंग, जुरे रहे वायु धनंजय जंग।
इतै विच दाँनव को समुदाय, अडंबर बाज पहूँचिय आय ॥२२६

जहाँ रच बाँनन तै अति जंग, झुके मनु आयकै भीम भुजंग।
रहे रुप दाँनव हू जम-रूप, भिरे भट देख रह्यौ रन भूप ॥२२७

जुरचौ इम देवन दाँनब जुद्ध, करै हथवाह धरै उर क्रुद्ध।
टँकारत चाप जहाँ इक तार, लरै भट भार करै ललकार ॥२२८

रँगे रस बीर चितै रत रार, हकारत नाँहिन माँनत हार।
कीयौ महिषेस महा उर क्रोध, जुरचौ धर रूप लुलाय सुजोध ॥२२९

उखारत श्रृंगन स्निग उठाय, संघारत देवन की समुदाय।
महाबल देत कँही खुर मार, फिरावत पुछ्छ लगै फटकार ॥२३०

तहाँ सब देवन माँनीय त्रास, जिताहव जाँन तजी जय आस।
परी सु पलायन देवन पूर, गए सब भाजकै छंड गरूर ॥२३१

लई सब संपत लूट लुलाय, सबै गज वाहन आद सुभाय।
जहाँ रन दाँनव की भइ जीत, भजे सव देव लजे भयभीत ॥२३२

गयौ सुर संपत लै निझ गेह, मिले दनु बूठीय दूधन मेह।
वस्यौ सोइ इंद्रपुरी कर वास, प्रचारत सासन मोद प्रकास ॥२३३

लयौ पद इंद्र कौ ईस लुलाय, घुमंडत बोलत नैंन घुलाय।
ठए सव दाँनव देवन ठौर, छयौ मन मोद ढुरावत चौंर ॥२३४

कीयौ सत वछ्छर जुद्ध करूर, मिल्यौ फल जास महा सुख मूर।
गुहा कीय पव्वय की सुर गेह, दुरंतर दुःख दहै नित देह ॥२३५

थके सब और उपाय न पाय, सबै मिल देवन की समुदाय।
चितै कमलासन कौं कर चाव, अबै इह आखर एक उपाव ॥२३६

गए सब देव पितामह गेह, अरजीय जाय करी तहाँ एह।
भजै महिषासुर जग्य विभाग, भजे हम डोलत हैं निरभाग ॥२३७

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अहो विध संकट मेटहु आज, अबै नहीं दूसर और इलाज।
करी[1] सुरधेनक[2] हू कलव्रछ्छ[3], लई सब लूट सुरालय लछ्छ[4] ।।२३८
प्रभू बिन और सुनै न पुकार, करौ दुख दूर अबै करतार।
जुहार पितामह कौं करजोर, मया कर संकट मेटहु मोर ।।२३९
कही तव देवन सौं करतार, बनै इह वेर न और विचार।
चलौ मिलकै सिव पै कर चाव, वहाँ कछु जाय करैंगे उपाव ।।२४०
कीयै संग देव गये किवलास, कथा कीय देवन की परकास।
कही मुसकाय कै सिंभु कृपाल, पित मह ए तुमरी प्रतपाल ।।२४१
अवैहु निवाजस कीजीयै आप, टरै सब देवन केर संताप।
कही विध सिंभु करौ सोइ काज, सुखी सब देवन होय समाज ।।२४२
मिलौ कमलापत सौं कर मंत्र, तहाँ कछु बैठ विचारहैं तंत्र।
सबै कर सम्मत देव-समाज, करे हरि याद सुधारत काज ।।२४३

दोहा

संमत कर विध संकरह, परम मंत्र परकास।
गए सबै मिल देवगन, विस्नु जहाँ निझ वास ।।२४४

छंद त्रोटक

सुर विस्नु कौ लोक विलोक सबै, तहाँ जाय विसोक भये सु तबै।
सुभ सूचक पछ्छन बाँन सुनी, ध्रुव मंगलदायक सुछ्छ धुनी ।।२४५
पुर लोचन देवन दीख परचौ, जीय मोद लह्यौ हीय दुःख जरचौ।
वन वापीय कूप अनेक बने, सरता सर पंकज सोभ सने ।।२४६
जल मीन कलोल करै जँहवाँ, तर कछ्छप नीर रहे तँहवाँ।
वन वीच जहाँ सुकती विहरै, कल खुल्लक लोल किलोल करै ।।२४७
सुख बोल अजिम्भ[5] सुनावत है, गुन-गान मनोहरि गावत है।
त्रन भूम अनूपम सोभत है, लख नैनन सौं जीय लोभत है ।।२४८
हरतालीय क्यार उवार हरी, असपत्रका[6] राजत भीर अरी।
करुविंद पवित्र जहाँ कहरै, लगवाय सुगधन की लहरै ।।२४९

१ ऐरावत हाथी। २ कामधेनु। ३ कल्पवृक्ष। ४ लक्ष्मी। ५ मेंढक। ६ ईख।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कहूं वीरण मूल[1] सुवास करै, पर कंटक जाति न दीठ परै।
जहाँ अंब कदंब की पाँत जुरी, सरसै तहाँ चंपक बौलसरी ।।२५०
कुजरासन[2] औ बहुपत्र[3] कहीं, अति छाँह असोक उदंबर ही।
कहु रोचक मोचक श्रीफल है, गिरमल्लका वृछ्छ सुचित्त गहै ।।२५१
कँहु वंजुल[4] मंजु विराजत है, भरि भार मधुष्टल[5] भ्राजत है।
त्रयपत्र कुरंज ही सोभ तहाँ, कृतमाल अनूपम रूप कहाँ ।।२५२
कँहु साल प्रीयाल मिले सरसै, द्रग त्यों पिचुमंद सिवा दरसै।
करकंधु पलंखक लागे कहाँ, तिंतड़ी रु तमाल अनेक तहाँ ।।२५३
कपिकछ्छ अरू जुगपत्र किती, जहाँ जंभ बधूक हू और जिती।
कहूं पूरक बीज अरू करणा, वर वेण रुजाय जपा वरणा ।।२५४
कणीयार कुरंट न जात कही, जहाँ केतक राजत पीत जुही।
केउ फूल गुलाब खिली कलीयाँ, मँडराय रही भ्रमरावलीयाँ ।।२५५
छित छाइय वेल चमेलीय की, जिह देखत ताप मिटै जीय की।
लसै मोगरा और बसंत-लता, परछाँहीय देत सुरंग पता ।।२५६
कहूं मिस्र तरंग ही कुंदकली, थित राजत मंजु निकुंज थली।
जग माँहि जिती सुखदा जरीयाँ, लपटाय रही तरु वल्लरीयाँ ।।२५७
नव पल्लव मंजर भार नए, ठिक अंकुर कोमल गुछ्छ ठए।
मधुरे फल राजत है जिन मैं, परपूरन केक प्रसूनन मैं ।।२५८
वर सीतल मंद सुगंध बहै, गति सोय प्रभंजन चित्त गहै।
किल कोकल मोर भींगोर करै, भल चातक बाँन सु स्रौंन भरै ।।२५९
किल-हंस जहाँ नृप-हंसन की, बन वाँन जिती खग वंसिन की।
प्रभू कीरत सो जग पावन कौं, रट बोलत ताहि रिझावन कौं ।।२६०
प्रभु जाय लखी वयकूंठपुरी, द्रग देखत देवन ताप डुरी।
सुख दायक धाँम समाँज तहै, वर वंदन माल विराज तहै ।।२६१
उतरंग अरोहन आटन की, कहीयै कहा सोह कपाटन की।
जुर खुंभीय थंभ प्रवालन की, द्रढ मंडत छत्त दिवालन की ।।२६२
कलि चित्र तरंग अनेक करै, हिल कंचन की मिल चित्त हरै।
पुखराज मनी अरु हीर पने, सोइ वीच विराजत सोभ सने ।।२६३

---

१ खस। २ पीपल। ३ वड़, वटवृक्ष। ४ बेंत। ५ महुआ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जुर ऊछ्‌छर पालीय जालीय की, अत भीर उतंग अटालीय की ।
गुलक्यारीय फूल रही गलीयाँ, नहरै विच नीर जहाँ नलीयाँ ।।२६४।२६८
सुचि सुन्दर मिन्दर सोहत है, महकंत सुगंधीय मोहत है ।
बहु झालरि चंग मृदंग बजै, रव घंट जहाँ धुनि संख रजै ।।२६५।२६९
गुन गाँन सु गंध्रव गावत है, बहु किन्नर बीन बजावत है ।
दइवीजन द्वारन द्वारन मैं, बिहरै चहुं मुक्त वजारन मैं ।।२६६।२७०
उर चाह बढी अधवेसन मैं, पहुँचे सुर जाय प्रवेसन मैं ।
जन सनक सनंदन आद जुरे, केउ भक्त इड़ा हिय उक्त करै ।।२७१
नयनी मृग अछ्‌छर नाचत है, रव कोकल गाँन सुनावत है ।
धर ध्याँन मुनेस्वर बेद धुनी, गहरै स्वर गावत राग गुनी ।।२७२
निझ मिंदर सुंदर कौं निरखै, वर वार उनंदहु कौ वरखै ।
अति सोहत उज्जल ऊँच अटा, घुमड़ी मनु वारद छाय घटा ।।२७३
लटकै लड़ लीलम लालन की, मुकता चिव वंदत मालन की ।
बहू रत्न जरे अध बीचन मैं, दमकै दुति जाहि दरीचन मैं ।।२७४
जय और विजै जुग नाँम जँही, मिल हाजर पोल प्रतोलि मँही ।
सुचि सोय सँवारीय संचन की, कर में छरीया लीयै कंचन की ।।२७५
कहि देवन आगम जाय कहौ, इह द्वार खरे हम वीर अहो ।
इक जाय करी हरि सौं अरजी, महाराज की नीक लखै मुरजी ।।२७६
अघ गंजन श्रीपति नाथ अहो, सुर रुद्र पितामँह आद कहो ।
मन केतन के दुःख मेटन कौं, चल आए प्रभू इहाँ भेटन कौं ।।२७७
अरजी सुनकै सुर आगम को, समुहे चले नाथ समागम को ।
प्रभु मिंदर वार पधारत ही, कर जोर. नमे सुर कथ्थ कही ।।२७८
जमनाथ अहो जग तारन हौ, अघ हारन भक्त उधारन हौ ।
सरनागत के सुख सागर हौ, अज दीनन बंधु उजागर हौ ।।२७९
सब देवन की विनती सुनतै, अविलोक उदंत कही उनतै ।
सब बैठीयै देवन आसन पै, मनहू चल मिंदर भासन पै ।।२८०
किंह कारन आरत देव कहौ, द्रग दीन लखे किह ताप दहौ ।
दहु देबन देवन-देब हु कौं, भली भाँत कह्यौ सुर भेवहु कौं ।।२८१
महिषासुर लीनीय खोस मता, रहै दाँनव संगर पाप रता ।
वरदान को पाय प्रचंड बली, गहि मारन कौं नहिं एक गली ।।२८२

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मख भाग लहै, सुर कौ न मिलै, डर तै सब पव्वय बीच डुले।
सरणागत केहरि हौ सुखदा, दनु मारीयै देवन कौ दुखदा ॥२८३
समुझाय कही हरिनैं सब ही, जुर संगर जाय कीयौ जब ही।
हट लाग लरे तुम हू हमहू, जय नाँहि लही तिनतै जमहू ॥२८४
जहाँ इंद्र कुबेर षरंजन से, ससि सूरज वायु धनंजय से।
बहुरै इनतै नँही और बली, चतुराइय एकन की न चली ॥२८५

दोहा

भरै न पुरसहु मात्र तै, विध दीनौं वरदांन।
जानत हौ सब देवजन, महिष बली अप्रमांन ॥२८६
ऐसी कोन त्रीया अवर, जिह मारै तहाँ जाय।
तेज अंस सब देव तन, प्रगटै करहु उपाय ॥२८७
तातै बनहै एक त्रीय, संकट मिटहै सोय।
याद करौ सुरराय[१] कौं, करुणा कर सब कोय ॥२८८
कह्यौ विस्नु तैसौ कीयौ, सब देवन कै साथ।
सबकी माया ईश्वरी, सब कँह करण सनाथ ॥२८९
जोत स्वरूपी जगत कौं, रचत चराचर रूप।
सो प्रगटी ताही समय, सुद्ध गुनी स्वय-रूप ॥२९०

छंद त्रोटक

बिध के तन की जब जोत वढी, दुति रोहित रंग अनूप द्रढी।
सिव कौ सित जोत लखी सब ही, तहाँ तेज भयंकर की तब ही ॥२९१
दुति स्याँम रमापत की दरसी, जोइ जोत अपूरब ज्वाल जिसी।
रंग चित्र विचत्र पुरंदर की, सुख दायक स्याहिक है सुर की ॥२९२
जमराज परंजन जोत जुरी, पति किन्नर की द्रुति त्यों प्रसरी।
दरसी इम आँनहु देवन की, अंतकायक रूप अदेवन की ॥२९३
सब वेदन तेज ही की समुदा, प्रगटी इक देवीय ह्वै प्रमुदा।
दस आठ भुजा दनु कौं दहनी, विकराल मनौ प्रलया वहनी ॥२९४

---

१ देवी, सुरों की अधिष्ठात्री।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

महा लच्छीय स्वच्छ्छीय रूप महा, कहीयै तिनकी उपमा जु कहा।
तिह के प्रति अंग रु अंग तथा, जिह जाँनहु देवीय रूप जथा ।।२९५
मुख संकर तेज भयंकर ही, खल जात सकोप खयंकर ही।
भए अंतक तै कच भार ही से, तड़ता दुति ज्यों तम तार ही से ।।२९६
प्रगटी दुति तीन हु पावक सैं, द्रग क्रस्न सिता रत दावक सैं।
भ्रकुटी प्रगटो दहु भ्रूह भिरी, सोई संधक तेज हु तैं सुधरी ।।२९७
दुति दीपत यौं तिनकी दरसै, सोई चाप अनंगहु तैं सरसै।
रच स्रौंन[1] प्रभंजन जाँन रमा, छत नाभीय-देस सु तेज छिमा ।।२९८
तिह दोलाय काँमहु की दुति सौं, सुभ नासका तेज धनंदत सौं।
रद स्वेत प्रजापत तेज रजै, चिब अोठ प्रवाल सुलाल छजै ।।२९९
दस अाठ भुजा सु जनार्दन तै, भई सोभित चंड ऊदंडन तैं।
बस तेज तै अंगुरी स्वच्छ्छ बनी, कुछ सोम के तेज तै स्वाँम कनी ।।३००
सब मध्यम अंग पुरंदर सौं, सुच सुंदर काँम के मिंदर सौं।
भुँय तेज नितंब सुभार भरे, उर जंघ परंजन तेज अरे ।।३०१
विनता उपमा कवि को वरनै, सुर ताहि कै अाय रहै सरनै।
तन रूप की रास की तेज तनी, सुभ लच्छ्छन सुच्छ्छन हूँ तै सनी ।।३०२
रंग स्याँम तथा मुख श्वेत रजै, चख अारुण दारुण रूप दजै।
जिह अाठ प्रभासत तांम्र जिसा, तल हाथ हु राचत लाल तिसा ।।३०३
कमलापति देवन सौं जु कही, सब्र अायुध भूषन देहु सही।
इक गुंफत हार अनूपम ए, दुइ अंबर खीर-समुद्रद ए ।।३०४
मणि दिव्य प्रभा सिर मंडन की, तड़ता दुति ज्यों तम तंडन की।
बीय कुंडल कंकन यौं बहुटा, चमकै तिह दीपत जाँन छटा ।।३०५
कट कौंचीय नूपर अौ कँठला, चिव त्यों कर पल्लव देत छला।
कमला तन माल सु कंजन की, रमनीय सुगंधोय रंजन की ।।३०६
फिर अायुध च्यार प्रकार ही के, केउ मुक्त अमुक्त प्रहार ही के।
खलजंत्र ही मुक्त सु खंडन मैं, मुकता कहि मुक्त सु मंडन मैं ।।३०७
कऊमोद की येक गदा करकी, भननाहट सब्द भयंकर की।
फरसा जिह तिच्छ्छन धार फवै, सुभ सस्त्रन अस्त्र अपार सबै ।।३०८

1 कान।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दीय कंकट हू तन धारन कौं, अ्रत संकट देव उधारन कौं।
सुर सूत्रहुधार इते सब ही, तहाँ देव छते अरपे तब ही ।।३०६
वयजंतीय माल अनूप बनी, द्रढ़ पास त्यों संख हू दिग्घ धुनी ।
इतने फिर वारुन नै अरपै, कर हेत जहाँ धर कै कर पै ।।३१०
बर रत्न अनेकहु बाँनक के, रुच राजत रंगत राँनक के।
इक सिंध दीयौ असवारीय कौं, सब कारज देव सुधारीय कौं ।।३११
हिमवाँन दीये सु लिये हरखैं, वह पीठ चढी दुतियाँ वरखै ।
मुख दायक देव समाजन कौं, दुखदाय अदेवन दाभन कौं ।।३१२
जिह आराय येक हजार जुरै, परिहार करै खल तूट परै ।
वर विस्नु सुदर्सन तै कढ़कै, कीय अर्पंत चक्र तिही कढ़ कै ।।३१३
जहाँ संकर दीय त्रसूल जँही, तप तेज भंयकर रूप तँही ।
द्रढ़ अस्त्र सतघ्नीय सक्ति दई, गत ज्यों मन की अत वेग गही ।।३१५
भल तिछ्छन बाँनन भार भर्यौ,कढ वायु निषंग ही अर्प कर्यौ ।
वर वज्र तथा गज घंट बजै, सुरराज दये मन मोद सजै ।।३१६
महिषासुर दाँनव मारन ही, दीय दंड क्रतंत सु दारुन ही ।
कर पात्र कुबेर हू त्यों करकै, भरबे कौं सुरा तिह तैं भरकै ।।३१७
कमलासन पुस्प कमंडल ही, जिह जाँनवी नीक भर्यौ जल ही ।
करवाल दई और ढाल कसी, जिह काल दई अरिकाल जिसी ।।३१८
रसमी दीय सूरज देव रमा, अवलोकत को वरनै उपमा ।
सुर देख अचंभत यों सुघरी, कर जोर कै ताहि स्तोत्र करी ।।३१६
तब होय प्रसंन कही मुखतै, दहौ देवन आसुर के दुखतै ।
महिषासुर भीत तजौ मन मैं, रच दुष्ट कौं मारहुँगी रन मैं ।।३२०
कहिकै इह अट्टह-हास कीयौ, हहराय रह्यौं दनुजात हीयौ ।
धुनि धुज्जत पब्बय त्यों धरनी, बढ खेह अडंबर के बरनी ।।३२१
हल चल्लीय सात समंदर हू, कुल दाँनव की भई रात कुहू ।
सब देव सुखी भये ता सुनकै, गहगावत कीरत कौं गुन कै ।।३२२
सोइ सब्द महा महिसेस सुन्यौ, धर काँप उठ्यौ फिर सीस धुन्यौ ।
उर क्रोध की ज्वाल बढी अत ही, मन बिभ्रम छाय डुली मत ही ।।३२३
कुछ लायक नाँहिन देव कही, परचारक जावहु कोन पही ।
CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy
गहिकै जिह लावहु सो गरजा, पर ताहि करौ पुरजा पुरजा ।।३२४

दसहूँ दिस भेजीय दूतन कौ, बढ़ क्रोध बुलाय वरूथन कौ।
परचारक देखीय जाय प्रभा, सब सुंदर रूप अनूप सुभा ।।३२५
दस आठ भुजा द्रग ज्यों दहनी, रमनीय मनोहर त्यों रहनी।
सब आयुध भूषन अंग सजै, भये दूत अचंभत भाव भजै ।।३२६
महिषासुर की लखकै मुरजी, इह दूतन आय करी अरजी।
इक नार भुजा दस-आठन की, सब अंग सुचंग सुघाटन की ।।३२७
नरी किंन्नरी आसुरी या सुर की, पर ता पहिचाँन नही परकी।
अरु दीसत अंबर बीच अटी, जय जंपत देवन-भीर जटी ।।३२८
मन सोचकै आसुर मंदमती, परधाँन बुलाय लुलाय पती।
मिल मंत्र विचारीय मोद महा, हम लायक है इह नार हहा ।।३२९
तिह जायकै लावहु बेग तँही, रुचता सुनकै मन लाग रही।
अव स्याँम[1] हु दाँम उपायन तै, भल भेद बिचारहु भायन तै ।।३३०
अरु दंड रचौ जन आयुध सौं, बिगरै रस जाय न जा बिध सौं।
सुन दूत चल्यौ महिषासुर को, अवगाहन चाह बढी उर को ।।३३१
तिह जाय कह्यौ तुम को-तरुनी, करजोर कहूँ सुख की करनी।
वरदायक माहिष कौं बरीयै, कुल जात पवित्र सबै करीयै ।।३३२
महिषासुर दाँनव देवन मैं, सब ताहि रहै नित सेवन मैं।
पटराँनीय होउ तिंही प्रमुदा, सब सेवहु संपत की समुदा ।।३३३
चितवौ तुम गैल ही संग चलौ, मन मोद कौं लायकै बेग मिलौ।
अथवा वँह आयकै पाँय परै, करजोर कहौ सोई काज करै ।।३३४
सुनकै इह दूत की बात सही, कर धीर रमा मुसकाय कही।
जग जाँनत देवन की जननी, हठ लागकै दाँनव की हननी ।।३३५
महिषासुर भाग लहै मखतैं, दुरते रहैं देव जँहीं दुखतैं।
पुन आयकै मोहिं पुकार करी, इत आईहूँ मारन काज अरी ।।३३६
इहाँ आयकै दूत करी अरजी, सुख पूरब रूप कथा सरजी।
हीय माँझ बिचार कहैं हमहूँ, तिल मात न क्रूर कही तुमहूँ ।।३३७
कछु बातहू क्रूर-मुखा करते, ज्वल नैंन की सैनहु तै जरते।
हम दूत कहैं सोइ जाय कहौ, लख पंथ पयान कौं बेग लहौ ।।३३८

---

१ साम।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

नहिं तौ तन तिछ्छन बाँनन तैं, परजै है बिछोह सु प्राँनन तैं।
जमलोक कूँ भेजहुँगी जब ही, तुम संगर आय मिलौ तब ही ।।३३६
बहु रीत प्रबोध कीयौ बहुरै, महिषासुर दूत हू नाँहि मुरै।
कर कथ्थ सु तथ्थ ही बत्त कही, मदमत्त सु जोब्रन रूप मही ।।३४०
जिनकै रथ है दल जोर जमा, समलै रन पै दल बोल समा।
धनु-बाँन सु आयुध धारन कौं, मन मोद बढ़ै अरि मारन कौं ।।३४१
सुर भाज चले जुर आसुर सौं, बन डोलै फिरै निस वासर सौं।
घुमँडै छित दाँनव फौज घनी, जिनतैं लरहौ किम येक जनी ।।३४२
कँहाँ कोमल अँगोय नार कहौ, सर दाँनव की किम मार सहौ।
मद-मस्त करी जिम माल मलै, रमनी तुहि जाय न रूप रुलै ।।३४३
तिनतै हठ त्यागहु नैंक तीया, पति दाँनव माँनहु प्राँन-प्रीया।
श्रवनां नृप-रूप की बात सुनी, तुहिं भेटन चाहत है तरुनी ।।३४४
बलाजाँउँ मैं भूप बुलावत है, उर व्याकुल ह्वै अकुलावत है।
मनमथ्थ के बाँनन मार लीयौ, कहै फेर कहा प्रन सत्य कीयौ ।।३४५
कीय देवीय उत्तर यों कहिकै, गुन चातुर आतुरता गहिकै।
पसु-अंगज है असुरेसपती, मिलगौ पसु मंत्रीय मंदमती ।।३४६
कछु दीखत की तरुनी कहिहौं, पुरसारथ भारथ मैं पहिहौं।
जीय आस तजौ रन आय जुरौ, कुसलात मुकाम पताल करौ ।।३४७
महिषासुर आय हजूर मही, करजोर हकीकत दूत कही।
सब सुँदर रूप सुहावन मैं, लखीयै सबही तन लावन मैं ।।३४८
मद गर्बत जोवन रूप महा, कहियै कहा जाहि जवाब्र कहा।
सब रीत कही नहिं येक सुनी, गहि बोलत जाब हजार गुनी ।।३४९
कटु बात कही सोई जात कही, सब राज प्रतैं सुन लेहु सही।
सरभेई कौ पूत नही समुझै, सरभेइय देख बिवाह सझै ।।३५०
दस-आठ भुजा मम दारुन तैं, महिषेस बचै जब मारन तैं।
कुल दाँनव कौं सब संग करै, सठ जाय मुकाम पताल सरै ।।३५१
बल-दाँन करूँ तुहि देवन कौं, भल जाय कहौ मम भेवन कौं।
रस भंग कीयौ नहिं मैं रमनी, सुख साँझ की बात कहीं रु सुनी ।।३५२
कर मंत्र कहौ सोइ काज करै, धर धीरज सासन सीस धरै।
महिषासर दूत सनी मुख सौं, रचना सु बृतंत जही रुख सौं ।।३५३

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वयवृद्ध तथा धीय वृद्धन कौं, समुझाय कही नय सिद्धन कौं।
अपनो मति के अनुसार अहौ, करीयै सोई नीत बिचार कहौ ॥३५४
सुन बात कही महिषासुर की, घबरावहु भूप कहा घुरकी।
पर श्रौंन सनै इह जाँन परी, सुर सावरी जालहुँ तै सुधरी ॥३५५

दोहा

विरूपाक्ष इह बात सुन, बोल्यौ बचन विचार।
कहाँ तै आई कौन है, निडर अकेली नार ॥३५६
हठ साहँस त्रीय-जात मँह, जोबन मद बरजोर।
कोमल मुख तातै कहै, क्रुद्धत बचन कठोर ॥३५७
पर कछु नाँहिन सोच पुन, सुर जीते संग्राम।
उनकी माया सावरी, करहैं कैसे काँम ॥३५८
तीन लोक जीते तुमहिं, जाहि दिखावत जोर।
जो तीय तै डर जाहुगे, ह्वै है हास बहोर ॥३५९
हमहूँ कौं दीजै हुकँम, जहाँ नार तहाँ जाँहिं।
संगर कर याही समय, मारहुँगौ छिन माँहिं ॥३६०
अथवाँ सैन दीजीयै, जाँनत तिय भय जास।
आनहु राज हजूर पँह, पकर कँठ गुन पास ॥३६१
दुरधर दनु उत्तर दीयौ, बिरूपाक्ष सुन बैन।
काँमातुर वँह काँमनी, समुझ करत है सैन ॥३६२
तिछ्छन बाँन कटाक्ष तीय, रत मंडहिगी रार।
प्राँन हरन बीरज प्रमुख, वोलत विवध बिचार ॥३६३
काँम-सास्त्रवित दूत कोउ, लावै ताहि लुमाय।
करै नही रस भंग कहु, स्याँम दाँम समुझाय ॥३६४
तांम्र करी अरजी तबहि, मम सुनीयै महाराज।
भुज अष्टादस भाँमनी, करहै कोऊक अकाज ॥३६५
जाँनहु ताहि न काँमजुत, नहीं प्रीतजुत नार।
बिग बचन कहत न बनैं, नृप समझहु निरधार ॥३६६
कोमल अंग कठोर कर, आयुध लीयैं अभंग।
जाँनत नहिं दनुजात कौं, जाच रही त्रीय जंग ॥३६७

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कहीयै गत कछु कालक्रत, उलट भई किधुँ ग्रौर ।
दई करहै सोइ देख है, जिहतै बनत न जोर ।।३६८
मैं देखो निस ग्रजर मँह, सुपन बिचारहु सोय ।
क्रस्त बसन इक काँमनी, रहि प्रलाप कर रोय ।।३६९
काक गिद्ध श्रृगाल केउ, रोवत देखे रात ।
समाँधाँन करीयै समुझ, परत जाँन उतपात ।।३७०
नरी किंन्नरी वँह नहीं, नहीं ग्रासुरी-नार ।
देवन की माया दुसह, चितवहु नैंक बिचार ।।३७१
नहिं ताकौं भय उचत नृप, होनहार सोई होय ।
कठन काल गत करम की, किह बिध मेटै कोय ।।३७२

छंद मोतीदाँम

सुनी नृप मंत्रिन की कथ सार, बिचछ्छन वायक तांम्र बिचार ।
कीयौ तिह सासन यौं महिषेस, धरै कछु मोह धरै कछु ध्वेस ।।३७३
सबै बिध चातुर तूँ समुझाय, बुलायकै लावहु ताहि बुझाय ।
चहै वँह बैर किधौ वँह सूत, किधौं वँह देवन की करतूत ।।३७४
सबै विध बुद्ध बिसारद सूर, कीये केऊ कारज सोम करूर ।
नमै वँह नीक तौ नीक निहार, सबै समुझावहु सार-ग्रसार ।।३७५
इतै पर नाँहि चितै मम ग्रोर, जुरै जुध ताहि गहौ बरजोर ।
दढ्यौ मग तांम्र सलाह बिचार, लीयै बहु है दल पै दल लार ।।३७६
भ्रमी पुहमी भये धुँधर भाँन, इतै फिर गाज उठ्यौ ग्रसमाँन ।
सुने बहु स्वाँनन स्यारन सद्द, बिचारीय साकुन नाँहि विहद्द ।।३७७
गयौ तहाँ दाँनव माँन गहीर, बिसारद बुद्ध महाँ बरबीर ।
विलोकीय जाय ग्रनोखीय बाँम, दिपै दस-ग्राठ भुजा गुन दाँम ।।३७८
चढी सिंघ पीठ, बढ़ो जुध चाह, ग्रदेवहु तांम्र दसा ग्रवगाह ।
कही रस रीत की बात सकाज, लीयै ग्रत चातुरता तज लाज ।।३७९
बनी जुग जोर उँहा रन बंक, धरचौ किह कारन हाथ धनंक ।
कटाक्ष के बाँनन नैंन कुरंग, सँभारहु नार चलौ मम संग ।।३८०
कहाँ कर कंज हुतै कमनीय, रचौ सुख सेजहु के रमनीय ।
तजौ कर सब कठोर ग्रोगाह, बरौ महिषासुर ग्रासुर ब्याह ।।३८१

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बिलोकत भूप रह्यौ तुहि बाट, अहो निस दाहत अंग उचाट।
सबैं सुख भोग हु सेज सँबार, करी कर जोर धरी कर तार ॥३८२
पती महिसेस पराक्रम पुंज, रची तुव रूप प्रभा मन रंज।
अबै तज तर्क बितर्क उदंत, करौ असुदे हु कौं निज कंथ ॥३८३
भलै समुझाय कहूँ कहा भेव, डरे ड़र ताहि फिरै बन देव।
कृपा कर छातीय सौं भरकंठ, गहौ सुख सेज के बांधहु गंठ ॥३८४
सुनी यहँ देवीय बान सकोय, जहाँ फिर बोलीय तांम्र सौं जोय।
रच्यौ दनु उत्तर यौं सुरराय, सुनौं तुम तांम्र कहौ समुझाय ॥३८५
बनै महिषा महिषी मिल ब्याह, अरे दनु दुष्ट होयै अवगाह।
कहै मम व्याह न सत्वर कांँम, वहै पसुजात अहूँ अभिरांँम ॥३८६
नहीं हम देवन की कहूँनार, ब्रहमा रुद्र हु आद बिचार।
पती मम ब्रह्म सनातन प्रीत, महाँ सुखदायक है जग मीत ॥३८७
नही जिह रंग न रूय न रेख, अनंत अगाध अखंड अलेख।
अहूँ जग साखीय़ की अरधंग, सदाँ सुख रूप रहूँ तिह संग ॥३८८
महाँ पत त्याग बरूँ महिषेस, इहै अभिलाष तजौ अवसेस।
चले तुम जाहु पतान चछोह, महाँ मति मंद तजै किन मोह ॥३८९
परै जन दीपक होय पतंग, सबै दनु छार करूँ इक संग।
सुनीं तुम देवन की सुरराय, इहै सुन भीर[1] पहूँचीय आय ॥३९०
कीयौं कहि सद्द महा कर कोप, लता मरजाद समंदर लोप।
डिगे गिर कूट सुखाय दरार, सबै बहरे हुय जात सुरार ॥३९१
गिरे तीय दाँनव के केऊ गर्भ, सुखी सुन श्रौंन भये सुर सर्ब।
कीयौ तव सिंघहु नाद करूर, गये मिट आस उमंग गरूर ॥३९२
भज्यौ लख तांम्र महाँ भयभीत, बनी महिषेस सुनी विपरीत।
तजी उर ब्याह की चाह तुरंत, उठी उर सोक की ज्वाल अनंत ॥३९३
दौयौ दनु सासन यौं दरसाय, अमांत[2]हू नीत बिचारहु आय।
कह्यौ नृप सासन कौं सुन काँन, बिचारन लग्गीय नीत बिधाँन ॥३९४
हकीकत पूछत तांम्र कहंत, सबै मिल सोचत कथ्थ करंत।
मिले सब दाँनव मंडीय मंत, उपाव कौ दाव बिचारहु अंत ॥३९५

---

१ सेना का समूह। २ मंत्री।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दोहा

बिड़ालाक्ष बोल्यौ बचन, मम सुनीयै महाराज ।
सरजन तेज तैं सुंदरी, बन आई रच ब्याज ।।३९६
करी अग्र इह काँमनी, मिलकै देव समाँन ।
सुर आसुर संगर समय, होय जीत किधु हाँन ।।३९७
भजबे तैं मरबौ भलौ, रन जुरहै कर रोख ।
जीत भयैं मिल है बिजय, मुयैं मिलहिगी मोख ।।३९८
दुरमुख तव बोल्यौ दनुज, बिडालाक्ष सुन बात ।
कही नीत इह उचतक्रत, तजहु सोक भय तात ।।३९९
बास्कल कीनी बीनती, जास दनुज कर जोर ।
करत बात डरपोकनो, मति मैं आवत मोर ।।४००
बरुन इंद्र सिव बिस्नु कौं, जुद्ध कीये जय जाहि ।
कोपवती इक काँमनी, तुमहिं कहा भय ताहि ।।४०१
पुन रन कर मैं पकरहूँ, बीरारस कहि बाँन ।
निसचय समुजहु येह नृप, है श्रृँगार रस हाँन ।।४०२
दुरधर दनु बोल्यौ दुसह, बास्कल कही बिचार ।
सुर डरपावत है असुर, साँग सुधार सुधार ।।४०३
अष्टादस हु उखारहूँ, भुजा जुद्ध कर भीत ।
नहिं काजै कछु सोच नृप, निमत यहै नय नीत ।।४०४

छंद मोतीदाँम

बढे मिल बास्कल दुरमुख बीर, धिखे उर क्रोध महा रन धीर ।
सबै बिध बुद्ध विसारद सोय, हने जुग दीप पतंग ही होय ।।४०५
गरज्जीय देबीय देव गहीर, वदे कटु वाक्य दहूं मिल बीर ।
जये जिह देवन कौं बरजोर, महाँबल राजन को सिरमौर ।।४०६
धरै तन मानुष भूषन धार, निसा तोहि सेज रमा वहि नार ।
अहो पिक बैनीय नैनीय येन[1], सनौ हम बात करौ सख सैन ।।४०७

---

[1] मृग ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वरौ महिषासुर कौं रच व्याह, अभिष्ट हु सिद्ध करौ अवगाह।
कही जगदंब जबैं कर कोप, रही हम येक इही पन रोप ।।४०८
सुखी करहूँ सब देवन साथ, हनूं महिषासुर कौं निज हाथ।
करै अथवाक पतांल कौं कूँच, पलोटकै श्रृंग समेट कै पूंछ ।।४०९
जबै बचहै जीय दाँनव जात, नतौ दनुँ बंस ही होय निपात।
कही इह देवीय की सुन काँन, बिहूँ कर क्रोध लीये धनु बाँन ।।४१०
गरज्जीय दाँनव सद्द गहीर, तहाँ झरबूठीय तिछ्छन तीर।
पलट्टीय नाँहिन चंडीय पाव, दीये सर दाँनव कै रच दाव ।।४११
सवै सुर कारज माँनीय सिद्ध, बढ्यौ दनु देवीय जाँन बिरुद्ध।
गरज्जत दाँनव देवीय गल्ल, उठे मनु सागर सात उझल्ल ।।४१२
अरचौ रन वास्कल संमुह आय, कीयै चख लाल मनों अंतकाय।
जम्यौ जहाँ दाँनव देवीय जंग, उभै दिस मारत घाव अभंग ।।४१३
मँडे तहाँ बाँन वरछ्छीय मार, क्रपालका दंड तथा करवाल।
कीयौ तहाँ देवीय क्रोध करूर, प्रतंचन ताँनकै काँन प्रपूर ।।४१४
प्रहारीय दाँनव कै सर पाँच, खरौ तहाँ दाँनव हू धनु खाँच।
सभौ लख देवीय कै सर-सात, बिड़ारोय दाँनव बोर बिख्यात ।।४१५
लीये सब बाँनन बाँनन झेल, खरयौ रस बीर बन्यौ जहाँ खेल।
दीये दस ताक जहाँ जगदंब, कीयै कर क्रोध सु सार कलंब ।।४१६
हन्यौ अर्धचंद सु बाँन हकार, प्रतंचा धन्व परी कट पार।
गदा कर लीनीय संड गरूर, महाँबल दैत उपाध कौं मूर ।।४१७
चल्यौ रन देवीय तैं कर चाव, अगंजित माहिष कौ उमराव।
मँभारीय हाथ गदा सुरराय, वँही लग बीर परयौ अरराय ।।४१८
अचेतन होय महूरथ येक, भिरयौ फिर जुद्ध भयाँनक भेख।
गदा दीय देवीय कै फिर गात, मुरी नहीं घाव लगै तिल-मात[1] ।।४१९
बलाय कौ पूत कै ज्वालब धूल, तकी दनु देवीय लैं तिरसूल।
प्रहारीय छत्तीस बीच प्रचार, परयौ धर सीस भयौ भव पार ।।४२०
भजे सब पूरब-देव सभीत, भये तब देव सुखी तज भीत।
सबै जयकारक बोलत सद्द, बढ्यौ उर आनन्द आय बिहद्द ।।४२१

१ तिल मात्र, किंचित मात्र।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

परचौ लख वास्कल कौं गत प्राँन, बढ्यौ दुरमु:ख लीयैं धनुबाँन ।
कसै तन कंकट बाहुल क्रूर, निरख्खीय बीर बरख्खत नूर ।।४२२
चढचौ रथ आय भिरचौ कर चाह, अडंबर बज्जीय जुद्ध उछाह ।
सझी ध्वनि संख जहाँ सुरराय, टँकारीय चाप प्रतंच चढाय ।।४२३
भयौ तहाँ सद्द महाँ भयकार, मँडी तहाँ तिछ्छन बाँनन मार ।
किते सर सौं सर देबीय काट, दीये सर दाँनव कै तन दाट ।।४२४
दहूँ दिस मारत ताकत दाव, चलै खग मूसल तोमर चाव ।
प्रहारत सक्त गदा परचंड, करै सर मार धरै कऊदंड ।।४२५
कीयौ सुरसाय तहाँ अत क्रोध, जुरे तहाँ दाँनव संमुह जोध ।
कटै भट अंग हटै नहिं कोय, रटैं मुख मार दटै केऊ रोय ।।४२६
पलट्टत नाह्हिन आहव पाय, उलट्टत लोटत धाय अघाय ।
अहूटत जूटत हैं भट आँन, परै तन तूटत छूटत प्राँन ।।४२७
कीयौ तहाँ दाँनव जंग कराल, खलक्कत नीर ज्युँही रत खाल ।
करै तहाँ कातर क्रंदत कूक, अदोलत दाँनव घोस उलूक ।।४२८
परे केऊ पिंजर ह्वै गति प्राँन, मृघादन कोक भखै मुरदाँन ।
रतंदुक[1] जंबुक लेत अहार, करै मिल सद्द महाँ भयकार ।।४२९
गहक्कत गिद्धन के गन गैन, चहक्कत चिल्ल लहै भख चैन ।
बभक्कत घाव कटे भट भीर, बकै रव मार महाँ बरबीर ।।४३०
झुकै केऊ आय परै रन झूँम, भिरै केऊ आय परै कट भूँम ।
भख्यौ दुरमु:ख मरोरत भाँह, बक्यौ रन बीच उठाय कै बाँह ।।४३१
अहो चल चंडीय जाहु अविष्ट[2], न तौ तुंहि मार करूँ तन नष्ट ।
बचै महिषासुर सौं कर ब्याह, सही अब और न येक सलाह ।।४३२
सुनी कथ आसुर की सुरराय, परयौ मृतु आनन दुष्ट पलाय ।
खरौ रहि मारहुँगी रन खेत, सबै दनुजादिक भीर सहेत ।।४३३
सुनी दुरमुख्ख जबै इह श्रोन, बिड़ारन लागीय[3] बाँन विधाँन ।
सबै सर काट तहाँ सुरराय, हने दनु बाँनन धाय अघाय ।।४३४
बढे तहाँ सूरन कै मुख बाँन, परै जहाँ कातर देख पलाँन ।
महाँ सुरराय तहाँ रन मंड, कथ्यौ दुरमुख्ख भुजा कऊदंड ।।४३५

१ कुत्ता । २ दूर । ३ मू० अ० लगीय ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तहां सर तत्व दीये रथ तोर, जुरचौ रन पै दल ह्वै बरजोर।
प्रहारीय सिंघ गदा सिर पेख, धिख्यौ तहाँ चंडीय कै हीय घेख ।।४३६

तहाँ कढ खग्ग प्रहारीय तथ्थ, महाँ खल काटलीयौ तहाँ मथ्थ।
कटै तन तूट परचौ जब कंध, इला दुरमुख्ख महा मद अंध ।।४३७

बरख्खत पुस्प करै जय बाँन, अभै सुख देव दुखी असुराँन।
जहाँ भइ चंडीय की रन जीत, भये दनुजात महा भयभीत ।।४३८

सबै रिख किन्नर चारन सिद्ध, बितालहु गंध्रव आद प्रबुद्ध।
भई तहाँ अंबर मैं सुर भीर, गनैं गुन डारत पुस्प गहीर ।।४३९

दोहा

वास्कल नँही कीनीं बिजय, दुरमुख की गति देख।
परचौ तहाँ दुख कूप मैं, मुर्छत ह्वै महिसेख ।।४४०
उभय बीर साहँस अतुल, सुरजेता संग्राम।
सो मारे इक सुँदरी, बीर महाँ बिसराँम ।।४४१

काल करम जात न कही, जाँनी निसचय जोय।
पुंन्न पाप निरबल प्रबल, होनी होय सु होय ।।४४२

कहौ कहा करतव्य है, सब मिल करहु सलाह।
कारज करन बिचार कै, किह विध कीजं काह ।।४४३

सेनापति महिसेस सों, चिक्षुराक्ष कहि चाह।
दलबल लै जावहु दुसह, तिय गहि लावहु ताहि ।।४४४

छंद मौतीदाँम

उमंगीय दाँनव रथ्थ अरोह, कीयै संग तांम्र तहाँ धिक कोह।
लीयै केऊ संग बरुथनी लार, चहक्कत संग चले पलचार ।।४४५

चढी रज डंम्मर अंबर छाय, अडंबर बाजत है अकुलाय।
सभी ध्वन संख तबै सुरराय, चड्डीय चाप प्रतंच चढाय ।।४४५

मिले कहि चंडीय सौं मुहमेज, सुनौं तीय खेल करौ सुख सेज।
खरौ रन बीरन कौ इह खेल, मिलै हमरौ तुमरौ कहाँ मेल ।।४४७

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कहाँ तन तोहि, महाँ सुकमार, सहै किम आयुध तिछ्छन सार।
त्रीया तन कोमल ज्यों मखतूल, फबै नहीं मालती मारत फूल ॥४४८

बनी तीय रूप रच्यौ तन व्याज, लहै हम हाथ उठावत लाज।
जहाँ को तहाँ ई चली तुम जाह, न तौ महिषासुर मानहु नाह ॥४४९

सोई सब देवन कौं नट-साल, मिलौ तिह, डार गरै बरमाल।
कह्यौ तव देवोय दांनव क्रूर, सँभार कै बोलहु राख सहूर ॥४५०
महाखल चिक्षुर तूं मतिमंद, सुभावहु जायकै धीर-सकंध।
बकारकै आवहिगौ रन बीच, करूँ तिह मारकै स्रोनत कीच ॥४५१

लहै भग जाय रहै अधलोक, बचै कुल दाँनव होय बिसोक।
महाँ मतिमंद जो चाहत मीच, बिचारकै होहु खरौ रन बीच ॥४५२

सुनीं दनु कथ्थ कही सुरराय, करी झर बाँनन की बलकाय।
उलटीय मेघ मनौं मँडराय, सँभार कै चाप तहाँ सुरराय ॥४५३
बिड़ारीय बद्दर ज्यों चल वाय, पराक्रम दाँनव मंथीय पाय।
गदा गहि दाँनव कै दीय गात, परचौ रथ तूट भयौ धर पात ॥४५४

भई गत चक्षुर की इह भाय, इही लख तांम्र उठ्यौ अकुलाय।
चल्यौ कर चाप लीयै रन चाह, इहै कहि देबीय हू अवगाह ॥४५५

मरौ तुम नाहक क्यौं मति मंद, सझै रन लावहु धीर-सकंघ।
अजों वँह चाहत जीवन आस, तकै सिर मीच गरज्जीय तास ॥४५६

मरावत दीनन कौं वँह मेल, कहौ मम आय करै रन केल।
बुरी लग दाँनव कौं सुन बात, हरक्कत तांम्र लीयौ धनु हाथ ॥४५७

तजे सर देवीय पै गुन ताँन, अनेकन छाँन लयौ असमान।
जहाँ सुररांय अरी कर जुद्ध, कीयै चख आरुन दारुन क्रुद्ध ॥४५८

छयौ नभ तिछ्छन बाँन चलाय, उमंडीय मेघ घटा जनु आय।
इतै मुरछागत चिक्षुर ऊठ, प्रचारकै तांम्र सँभारीय पूठ ॥४५९

भिरे रन देवीय सौं दहुँ भट्ट, चलावत बाँनन चाप चउठ्ठ।
रँगी रत-देह मनौं तमरास, मनौं त्रयपत्र रजै मधुमास ॥४६०

उभै भट मंडीय जुद्ध उछाह, बढै रस बीर करै हथबाह।
भये सर देख अचंभत भाव, पलट्टत दाँनव, मोहिन पाव ॥४६१

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तक्यौ लिय ताँम्रहु मूसल हथ्थ, मृगाधिप जाय प्रहरीय मथ्थ।
गरज्जीय दाँनव हू भर गल्ल, इहाँ सुन चंडीय क्रोध उभल्ल ॥४६२
प्रहारीय खग्ग सु तिछ्छन पांन, परचौ सिर टूट भयौ गत प्राँन।
परचौ लख तांम्र बली परचंड, बढ्यौ रन चिक्षुर त्यों बलबंड ॥४६३
लीयें खग आय भिरचौ चख-लाल, बन्यौं रन देवीय सौं बिकराल।
जुरी कर चाप लीयें जगतंव, कितेकन आसुर मार कलंब ॥४६४
दीयौ सर येक परचौ खग दूर, कट्यौ सर दूसर पाँन करूर।
दीये मुर बाँन तिहीं धनु दाट, कीयौ सिर दूर कलेवर काट ॥४६५
परे धर बीर उभै गत प्राँन, गहक्कीय गंध्रव किन्नर गांन।
उमंग रिखी-गन सिद्ध अनंग, बरख्खीय फूल जहाँ सुर बृंद ॥४६६
जिताहव चंडीय कौं कर जोर, सबै मिल देव करचौ जय सोर।
परे खल चिक्षुर तांम्र प्रचंड, महा भट देवीय सौं रन मंड़ ॥४६७

दोहा

सेनापत चिक्षुर सहित, तांम्र कीयौ तन त्याग।
रंभ पूत बिसमत रह्यौ, इह धौं कवन अभाग ॥४६८
महिष ईस क्रुद्धत महा, बिड़ालाक्ष कहि बात।
असलोमा लै जाहु अब, प्रमदा करहु निपात ॥४६९

छंद उधोर

बढ वीर धीर बिड़ाल, असलोम बोल उताल।
लीय और दाँनव लार, सझ सेन सस्त्र सँभार ॥४७०
तन कसीय कंकट टोप, अत बीर रस तन ओप।
उठ चले बिव मद अंध, किल मृत्यु बैठी कंध ॥४७१
तहाँ जाय देखी ताँम, भुज अष्ट-दस की भांम।
कीय विवध भूख्न काय, सव्र सस्त्र करन सुभाय ॥४७२
असलोम बढ़ गये अग्ग, तिह विना कीनीं तग्ग।
कहि सत्य देवी काँहि, दनु बंस देत है दाह ॥४७३
मन रत्न आद मिलाय, जो चहै सो लेजाय।
नव कोमलाँगी नार, सव सजै तन स्रंगार ॥४७४

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सुठ कहत हूँ समुझाय, तज देहु सखन ताहि ।
रचीयै न फूलन रार, कर कंज तै सुकमार ।।४७५
वर सेवीयै सुख बाँम, कहा तोहिं रन तै काँम ।
बिनवौं सुधर्म बिचार, रमनीय तजीयै रार ।।४७६
क्यूं करत दनुज अकाज, इह कहहु मोकँहि आज ।
सुन कही यों सुरराय, मोहिं भक्त जाँनहु माय ।।४७७
रच रहत हूँ रमतीत, नय अनय देखत नीत ।
मम लखहु बेद म्रजाद, अनुरूप माया आद ।।४७८
अवतार मोहिं अनंत, जुग जुगन लौं परजंत ।
सुर स्वर्ग लीय महिषेस, मख लहत भाग हमेस ।।४७९
तिंह मारहूँ कर त्रास, वढ इही बयर बिलास ।
वँह दुष्ट पठवत और, ठिक रहत बैठौ ठौर ।।४८०
इह मरत वँह अपराध, बल मोहिं दोख न बाध ।
सब कहहु मिल समुझाय, जुरकै पताल ही जाय ।।४८१
लीय सुरन तैं चित लाय, तिंह बस्त सोंपहुँ ताहि ।
प्रहलाद है जिस पास, बस जाहु जहाँ कर बास ।।४८२
असलोम पूछीय येम, तहाँ कही देवी तेम ।
वरवीर येह बिड़ाल, हम सुने जैसे हाल ।।४८१
तुम हूँ सुने स्नुत तात, वढ़ कही देबी बात ।
कहौ कौंन है करतव्य, सोइ काज कीजै सभ्य ।।४८४
असलोम की सुन येम, तिह दीयौ उत्तर तेम ।
इह कही जाय न आज, मतिमंद है महाराज ।।४८५
सिर मृत्यु गरजी सोय, करीयै विलंब न कोय ।
अव छोर कै तन आस, हठ लरहु जुद्ध हुलास ।।४८६
कीय धनुष लै टंकार, हरवल्ल बीर हकार ।
बढ़ विड़ालाक्ष बिरुद्ध, असलोम रहि अविरुद्ध ।।४८७
तिह बाँन रिख दीय तिष्ट, वर बीर धीर बलिष्ट ।
सर सों कटे सर सात, पुन कीये देबी पात ।।४८८
सर दीये मुर सुरराय, मृतु भयौ दनु मुरझाय ।
बस काल लेख बिडाल, असलोम आय उताल ।।४८९

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

नय बुद्ध जाँनत नाँहि, किंह जाय कहीयै काँहि।
महिषेस मूढ अमाँन, लहि बिसद कीजै लाँन ।।४६०
इह बीर ध्रम अवदात, पर जुद्ध होय निपात।
कर लीयौ दनु कोदंड, मद-अंध तहाँ रन-मंड ।।४६१
बहु दीये सर बरसाय, जगतंब कट्टीय जाय।
मँहमाय दीय सर मर्म, वपु भेद दारत वर्म ।।४६२
जुत रक्त दीसत जेम, त्रयपत्र फुल्लत तेम।
गरु गदा सार गढंत, तहाँ लई हाथ तुरंत ।।४६३
रद पीस हिय कर रीस, सो दीय अघाधिप सीस।
करकै अघाधिप क्रुद्ध, जुर परचौ नख रद जुद्ध ।।४६४
कीय हृदय दारत कूर, वपु कर्ज तर्ज विलूर।
पर दनुज सीघ्र पलाय, सिर सिंघ चढ सरसाय ।।४६५
रन गदा हन सुरराय, धट करचौ दाँनव धाय।
सुरराय तांम्र सँभार, सिर दनुज कट्टीय सार ।।४६६
महि गिरचौ दनु रन माहि, लीय जीत देबी लाह।
सुर जयत बोलत सद्द, नभ करत दुंदभ नद्द ।।४६७
कर पुस्प-वृष्टि करंत, उर मोद लहत अनंत।
जगतंव की लख जीत, उर भये देव अभीत ।।४६८

दोहा

बची सैन कछु दाँनबी, मिली जाय महिषेस।
दई बधाई दहुँन की, विव रन मरन विसेस ।।४६६
बिड़ालाक्ष जूझ्यौ विवध, जीत सक्यौ नहिं जुद्ध।
सँमर सँघारचौ सुंदरी, कहा कहैं कर क्रुद्ध ।।५००
असलोमा साहस अतुल, खग्ग प्रहारचौ खेत।
भयौ भक्ष पलभक्ष कौ, सब ही अंग सहेत ।।५०१
महिष बिचारत मनहिं मन, सुन दनुजन की सोय।
उर व्याकुल रोवत उठत, होनी होय सु होय ।।५०२
समय बनै जैसौ समुझ, करीयैं तैसौ काँम।
मरहूँ अथवा मारहूँ, बरहूँ ताही वाँम ।।५०३

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

समुझ इहै कहि सूत सौं, तुम करहू रथ त्यार ।.
भुज अष्टादस भाँमनी, पेखहु ताहि प्रचार ॥५०४

छंद मौंतीदाम

सज्यौ रथ सासन लै नृप सूत, हुँई सिर सोभ पताकन हूँत ।
भरे बहु अस्त्रन-सस्त्रन भार, सबै रन साझ सुँभार-सुँभार ॥५०५
विछोनाय आसन राचत बेस, अरोहत होवहु श्री असुरेस ।
सुनी दनुविंद्र कही सोइ सूत, करी तब येक नई करतूत ॥५०६
रिझै लख नार मनोहर रूप, भयौ नर सुँदरहू तन भूप ।
अलंकृत आयुध सझ ता[1] अंग, अनूपम दूसर जाँन अनंग ॥५०७
अनोअन रंग पटंबर आँन, बनी सिर झीनीय पाग बिधाँन ।
तिहीं रथ आय चढ्यौ हुय त्यार, चले चिरमेहीय[2] जूप हजार ॥५०८
जुरी चिब सेत पताकन जूट, किधौं हिमवाँन कढ्यौ बलकूट ।
लीयैं चतुरंगीय फौजन लूंम, घटा घन जाँन रही नभ घूँम ॥५०९
बढी रज डंम्मर जाँन विताँन, भयौ तम सूझत नाँहिन भाँन ।
पहूँचोय देवीय कै नृप पास, लीयै कर चाप कलंब हुलास ॥५१०
बहू भट कंकट धारीय बंक, घरै अरी जुद्ध प्रहारन धंख ।
रही कछु बीच जितै सुरराय, करी धुन संख तहाँ अकुलाय ॥५११
कही दनु जाय इहै चित काँम, हीयै नर-नार सबैं सुख हाँम ।
यथा कुल चातुरता वय येक, सुभाव तथा गुन सील बिसेख ॥५१२
इते सम होय जबै रस येक, बनै सुख-संपत जांन विवेक ।
अहू वर बीर जथा वर बाँम, करौ मम देवीय पूरन काँम ॥५१३
चहै सोई रूप करूँ चित चौज, मिलै सुख साझहु रंग मनोज ।
लीये मन भूषन देवन लूट, बहै तुम धारहुं नार अनूठ ॥५१४
बनौ पट रांनीय भोग बिलास, रमावहु सेझ सदा सुखरास ।
कहै हम सोय करौ तुम काज, ततौ सुर-त्रैर करौ सब त्याज ॥५१५
भयौ सरनागत तेरौई भांम, कीयौ मोहिं पीड़त बांनन कांम ।
पराक्रम जानत मोर प्रभाव, डरै सुर येक न पुज्जत डाव[3]. ॥५१६

१ मू. प्र. 'त्त' । २ गथा । ३ दाव ।

CC-0. ROHI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ब्रह्मा आद जये हर विस्नु, जये जम श्रीद परंजन जिस्नु।
अहो नवअंगीय कोमल नार, अभै वर देहु कटाक्ष निहार ॥५१७
सुनी दनु कथ्थ कही सुरराय, नहीं तुम नीत पिछाँनत न्याय।
नहीं तुम मोर पिछाँनत नाह, रचै सोइ स्रष्ट चलावत राह ॥५१८
वँही पुरसोतम ऊत्तँम अंग, सदाँ सुख पाय रहूँ तिह संग।
भजूँ नहीं औरक हूँ भरतार, निरंजन संग रहूँ निरधार ॥५१९
अचेतन रूप सदा मुहि अंग, सचेतन होय ग्रहूँ तिह संग।
सदाँ मुहि देव करै नित सेव, भली विध जानत पूजन भेव ॥५२०
रमाँ मोहि नाँम तथा सुरराय, सदाँ सुर आस्रव ताहि सिहाय।
दीयौ दुख देवन कौं कर द्रोह, अबै तुहि कारन सिंघ अरोह ॥५२१
वनी मम आगम की इह वात, हनूँ दनु संगर मैं निझ हाथ।
हीयै तुम जीवन की कछु हाँम, वसौ अधलोक ही लै विसराँम ॥५२२
वदै किह कारन निष्ठुर वाद, परी तोहि ऊपर आय प्रमाद।
सुने पर देवन मैं वच आँन, अबै नहीं येक उपावहु आँन ॥५२३
कहा समुझावत मो कहि कथ्थ, सबै विध देव सहाय समथ्थ।
अरूपा जाँन अजन्मा ऊह, वनूँ कोइ कारन कायक व्यूँह ॥५२४
कही तोहि आगम की हम कथ्थ, गहौ सोइ नीक पिछाँनहु गथ्थ[1]।
सुनी नृप देवीय की इह स्राँन, वढ्यौ रन काज लीयै धनु-बाँन ॥५२५
चले तहाँ येखन[2] बाँन चछोह, करी झर जोर हीयै धिख कोह।
सबै बिच कट्टीय बांनन सार, बढी रन देवीय क्रुद्ध बिथार ॥५२६
दुरंतर मारत राचत दाव, भयौ जब दारुन जुद्ध अभाव।
लखे महिषासुर आसुर लार, बढ़े सुर देवीय प्रष्ठ बिचार ॥५२७
सबै सुर-आसुर येक समाँन, भयौ रन चत्वर रूप भयांन।
तहां दनु दुर्धरहू धनु तिष्ठ, करी सर मार सुबाच कलिष्ठ ॥५२८
जगी धिक चंडीय कै उर ज्वाल, लखी तिह ओर कीयै चख-लाल।
प्रहारीय तिछ्छन बाँन प्रचंड, बकारकै मार लयौ बरबंड ॥५२९
अधोगत दुर्धर की अवरेख, त्रनेत्रहुँ आय जुट्यौ कर तेख।
दीये रिख[3] बांन सु देबीय दछ्छ, प्रहारीय देवीय गारध पछ्छ ॥५३०

---

१ गाथा, कथन। २ लोह के। ३ सात।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कटे सर सौं सर ह्वै प्रतकूल, तहां तन दाँनव मार त्रसूल।
महाँबल होय त्रनेताय मीच, विहव्बल होय परचौ रन बीच ।।५३१
तहां रन तक्कीय अंधक तिष्ठ, गदा कर लिन्नीय सार गरिष्ठ।
पंचानन सीस दई गहि पांन, अगंजित अंधक बाहु अजाँन ।।५३२
पंचानन क्रुद्ध भयौ गहि रिड, पुनर्भव[1] दारत कीन प्रचंड।
गहै तन ताहि करचौ पल[2] ग्रास, इहै लख भूप तजी जय-अ स ।।५३३
जुरचौ नृप देवीय सौं जहाँ जंग, उभै सर मारत चाप अभंग।
बिहू सर काटत है अधबीच, करै बढ़ देबीय दाँनव कीच ।।५३४
तहाँ असुरेस तक्यौ जगतंब, पसारीय नैंनन आग प्रलंब।
भ्रमाय गदा कर सौं कर भीर, हनी तहाँ देबीय ह्वै हमगीर ।।५३५
लगी तन-चोट परचौ अकुलाय, मुरछ्छत माहिच ह्वै धर माहि।
मिटी तन-पीर छुट्यौ जब मोह, उठ्यौ फिर किंचत पाय उपोह[3] ।।५३६
गदा कर लिन्नीय मंड गरूर, प्रहारीय सिंघ सिखा बलपूर।
भई भुज कंटक केहर भेट, चटापट मारीय चंड चपेट ।।५३७
तज्यौ नर-रूप भज्यौ तन त्रास, होये फिर बाढीय जुद्ध हुलास।
महाँ छलि मायक त्यों महिषेस, भयौ फिर सिंघ भयानक भेस ।।५३८
भिरचौ पलभछ्छ हु तैं पलभछ्छ, तकी तहाँ देबीय दे सर तिछ्छ।
तज्यौ तिह रूप तहाँ ततकाल, करी फिर मायक जाल कराल ।।५३९
महाँ गिर दिग्घ जिही मदमस्त, हुयौ महिषासुर दारुन हस्त।
भयंकर अंजन[4] पब्बय भाँत, डरावन दीसत दीरघ दाँत ।।५४०
भ्रमावत सुंड लहै गिर-भार, प्रहारत देव्रीय सीस प्रचार।
सँभारकै चाप तहाँ सुरराय, चलावत बाँन लयौ नभ छाय ।।५४१
प्रहारत स्रंग जिते बलपूर, चलावत बाँन करै चकचूर।
बढै दनु रोष करै हथ-बाह, अनंदन देवीय जुद्ध उछाह ।।५४२
तहाँ फिर सिंघ हकारीय तथ्य, मलप्पत जाय चढ्यौ गज-मथ्थ।
अपूरब दाव बन्यौं तहाँ आय, उतै दनु हस्त इतै बनराय ।।५४३
मँडी तहाँ जंभक मल्लक[5] मार, चपेटन फेट दई पलचार।
घने भुज-कंटक[6] हू कर धाय, इहाँ दनुविंद्र उठ्यौ अकुलाय ।।५४४

---

१ नख। २ मांस। ३ स्थिरता। ४ काला। ५ दांत। ६ नख।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तज्यौ गज दाँनव रूप तुरंत, भयौ तहाँ सर्भ अनूपम भंत।
मृघाधिप मार दई रन मंड, पराक्रम मायक काय प्रचंड ।।५४५
सँभारीय खग्ग तहीं सुरराय, घने तन मारोय तिछ्छन धाय।
रच्यौ तहाँ दारुन जंग दुरूह, जुटे केऊ आँन तहाँ भट-जूह ।।५४६
लख्यौ फिर दारुन रूप लुलाय, डरावत स्रंगन पूंछ डुलाय।
घुमावत पब्बय स्रिगन धल्ल, उड़ाउत दारुन क्रोध उभल्ल[1] ।।५४७
बक्यौ तब देवीय सौं दुरबाद, पहूँचीय दीरघ नींद प्रमाद।
अहो मदमत्तीय जोवन अंग, भजै जन जाहु करूँ मद भंग ।।५४८
कहा मोहि जाँनत नाँहिन क्रूर, गहै चिब रूप गुमान गरूर।
खरी रहि मारहुँगौ रन-खेत, सँभारकै आयुध होहु सचेत ।।५४९
अहो बलवंतीय देखहुँ आज, सँघारहुँ देवन फेर समाँज।
करी तोहि अग्र वढावन कोह, मतौ कर मारन चाहत मोह ।।५५०
कही तब देवीय क्यौं अकुलाय, अरे मतिमंद कहा भय आहि।
दीये दुख देवन कौं कर द्रोह, महाँमुनिराज कीये भय मोह ।।५५१
करूँ मधुपाँन इंही मम काज, सबै दुख मेटहुँ देव समाज।
अबै कछु स्वाँस रहे अवसेस, खरौ रहि संगर मैं महिषेस ।।५५२
इती कहि कंचनपात्र अनूप, सँवारीय आकृत दिव्य स्वरूप।
कीयौ मधुपाँन जितै तिह काल, गरज्जीय दुष्ट बजावत गाल ।।५५३
करचौं मधुपाँन उठी बलकाय, बभक्कीय माँनहु आग बलाय।
सँभारत राँन उठ्यौ तब सिंघ, किधौं चटका लख भृंग कुलंग[2] ।।५५४
गहै पल चाह गहक्कीय ग्रिद्ध, सबै जय बोलत चारन सिद्ध।
वृंदारक फूल बरख्खत वृंद्र, महाँ मुद माँनीय देव मुनिंद्र ।।५५५
गुनै नभ किन्नर गंध्रव गाँन, समौ लख सिंधव राग सुजाँन।
भिस्यौ रन चंडीय सौं दनुभूप, रचावत केक भयंकर रूप ।।५५६
करी बहु ताड़त चंडीय काय, बढ्यौ असुराध-पती बलकाय।
कीयौ तब दारुन चंडीय क्रुद्ध, जुरी तहाँ रूप अनुपम जुद्ध ।।५५७
तहाँ लीय चंडीय हाथ त्रसूल, कीयौ दनु ताड़त ह्वै प्रतिकूल।
लगी हीय चोट परचौ अकुलाय, महाँबल माहिषहू धर माँहि ।।५५८

---

१ मू० प्र० उद्भल्ल। २ बाज।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जगी मुरछा घटिका जुग जात, लगावत चंड़ीय कै तन-लात।
घनाघन जेम महारव घोर, करै छल-छिद्रन दाव करोर ।।५५९
डरे जहाँ देवन के गन देख, तहाँ उर देबीय कै बढ़ तेख।
लीयौ कर चक्र कही ललकार, हनूँ तोहि आहव बीच हकार ।।५६०
अरे मतिमंद खरौ रहि आज, करूँ सिध देवन के सब काज।
सँभारीय मार सुदर्सन सून, धप्यौ रन आसुरहू सिर धून ।।५६१
तहाँ दनुविंद्र परयौ सिर तूट, किधौं गिर अंजन तै कट-कूट।
फिरै रन चत्वर मैं चहुँफेर, घुमैं घट दाँनव घूंमर घेर ।।५६२
उड़ै रत चिंच उतंग उभेल, मनौं नल गैरक जीवन मेल।
भजे अन दाँनव ह्वै भयभीत, पंचानन-पीठ लग्यौ भख प्रीत ।।५६३
खुधातुर आतुर आमख खाय, घने घट दाँनव धाय अघाय।
मुरे दनु नाँहि लहै डर मीच, वसे केऊ जाय पताल के बीच ।।५६४
सबै मनुजाद सुखी भये संत, उजागर माहिष कौ लख अंत।
जुहारीय देव तहाँ करजोर, ठये मन मोद भये इक ठौर ।।५६५

दोहा

कर सतोत्र लागे कहन, इंद्र आद सुर और।
सरराया करकै समर, मेट्यौ संकट मोर ।।५६६

छंद भुजंगी प्रयात

मती सुंमृती कीरती जोग माया, उमा पुष्टी रंभा सुतुष्टो अजाया।
जया विजया तूं दया-रूप जोती, अहो मात स्त्रधा घृती तूं उद्योती ।।५६७
प्रमेष्टी रमानाथ त्याँही कपाली, भ्रजै पालना संघरै तेजसाली।
तहाँ त्रैगुनी सक्ति अंबा तिहारी, सदाँ येक तूं कारना स्त्रष्टि सारी ।।५६८
छिमा कांती मेधाविनाँ-मात चंडी, इहीं सक्त कौं कौन राचै अखंडी।
जिते कूर्म वाराह लौं सेष जामैं, धरै धारना सक्ति तूही धरामैं ।।५६९
दीयै विप्र आहूत जो भुंज-दाहा, समर्पै सबै देव कौं रूप स्त्राहा।
तुही तोखनी पोखनी सक्त त्राता, महंमाय आदेस्वरी आद-माता ।।५७०
तूँ ही जोगनी भोग-दाता तुलज्या, लखै सुद्ध बुद्धि तूँ ही रूप लज्या।
धरा स्वर्ग पाताल कौं वास धारै, सुरी आसुरी सक्ति तूँही सँवारै ।।५७१

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

करै आततताई कहुँ कर्म कैसौ, तुहो मारकै वास दै स्वर्ग तैसौ।
जितै सक्ति तेरी नहीं भक्ति जोरै, दीयौ[1] हस्त लै मूढ़ जो कूँप दौरै ।।५७२
सुकर्ती जिते जीव साधै सुविद्या, अकर्ती हीयै होय राचै अविद्या।
उभै रूप तेरे अहो मात अंबा, तुँही सक्त है भक्त की कामँतंबा[2] ।।५७३
त्रहू ताप कौं मेटकै जीव तारै, अजा नित्य तूँ वेद-बाँनो उचारै।
नियंता समाधी तुहीं जोग निंद्रा, महंमाय ही[3] ध्याँन ध्यावै मुनिंद्रा ।।५७४
द्रवै वाक वानी सबै बोध्र-दैनी, नमस्ते रमा मुक्तिहू की निसैनी।
ओउंकार मैं अर्धमात्रा अनूपा, 'र' रंकार बाँनी तुँही सिद्ध रूपा ।।५७५
महाँ बंध-मुद्रा महा वेध-माता, स्रुती कीरती सुंमृती को सुग्याता।
रचै पिंड ब्रहमंड कौं येक राया, करै आकृती भिन-भिनात काया ।।५७६
बनावै सदा रूप नाना विधानं, पराभूत पंचातमा पंच-प्राँनं।
तुँही धुम्र[4] आकार ह्वै जोत-धारी, कला चंचला तिष्ठ द्रष्टांत-कारी ।।५७७
भजै भोग मैं जोग की रीत भासै, परं धाँम उद्धर्स आभा प्रकासै।
निराकार आकार संस्थाँन-निष्टा, दसूँ देव इंद्री तुँही तत्व-द्रष्टा ।।५७८
करामात-निर्वाँन तैं जुग्म कोटी, सही पाप औ पुंन्यहू की सचोटी।
जनै पक्ष द्वै लक्ष चौरासी जोनी, अछेहा अतीता अगँमं अजोनी ।।५७९
रची च्यार खाँनी तै ही राजराँनी, बिचारी उचारी करी च्यार बाँनी।
तुंही दंत[5] अद्वैत–रूपा त्रवैनी, इला[6] पिंगला सुखमना मध्य ऐनी ।।५८०
लखै रूप तेरौ सबै ही लखावै, दीयै जुक्त सौं मुक्ति संसिद्ध दावै।
दीयै अष्टसिद्धी नवै निद्ध-दाता, विरूपाक्ष श्रीवछ्छ ध्यावै विधाता ।।५८१
धरै तोय-कांतार[7] ध्वाँतारि[8] ध्याँनं, परा पुर्स तूँ ही प्रकर्ती प्रधाँनं।
नमै बाहुदंतेय[9] पौलस्त नित्यं, भजै दक्ष नासापती लौ प्रभर्तं ।।५८२
परा भक्ति तेरी अहो सक्ति पावै, लहै मुक्ति सा जोत ना देर लावै।
परंमातमा ब्रह्म-सत्ता पसारी, तहाँ चेतना-सक्ति अंबा तिहारी ।।५८३
अरिष्टं मिट्यौ मात तोकौं अराधी, उखारी त्रहूँ–ताप ही की उपाधी।
करी जुद्ध-क्रीड़ा दयौ मोद कैसौ, जपै जीह तै नाँहि वाख्याँन जैसौ ।।५८४
महाँक्रुद्ध ह्वै दाँनवी फौज मारी, बली महिप की आयु तै ही बिडारी।
सुराँराय साँची करी बृद साँनी, नमस्ते नमस्ते नमस्ते भवाँनी ।।५८५

१ दीपक। २ कामधेनु। ३ हृदय। ४ धुम्रां। ५ द्वैत। ६ इड़ा। ७ वरुण।
८ सूर्य। ९ इंद्र।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दोहा

करी प्रसंसा जोर कर, सब देवन इक संग।
वर दीनौं प्रफुलत वदन, अभय उछाह उमंग ।।५८६
बिपत परै कहुँ जोग-बस, याद करहु हम आय।
प्रगट पिछाँनहु मोर-पन, संकट करहु सहाय ।।५८७

छंद मोतीदाँम

सुखी भये देव सुन्यौ वर स्राँन, अरज्जीय फेर करी कछु आँन।
कीयौ परपंच जितौ जग केर, अहो-निस मात ही राखत येर ।।५८८
इहै जग-मात ही कौ उपकार, बढै सब मात हीं तै विसतार।
सहस्रन औगुन ही कर सून[1], दया तऊ मात विचारत दून ।।५८९
इहै ध्रम पुत्र ही कौ अविदात, महाव्रत तीरथ जाँनत मात।
सदाँ इक मात करै नित सेव, भजै इक मातहिं कौं निभ्र भेव ।।५९०
गहै नहिं भाव हीयै गति गूढ़, महाँ अघ गाँमीय ते मति मूढ़।
सुनी इह देव कही सोइ स्राँन, धरी उर सो भई अंतरध्याँन ।।५९१
सुधा-दध-बीच जहाँ सुख-सार, अखी मनी-दीप सगात आगार।
बसी जहाँ देवीयहू निभ्र वास, हीयै बढ़ देवन केर हुलास ।।५९२
अजुध्या भूप सत्रुघ्न उदार, विभाकर-वंसीय नीत विचार।
धरचौ सिर छत्र थप्यौ निज धाँम, मनोरथ पुज्जीय राज मुकाँम ।।५९३
गये सब देव तँही निज गेह, निरंतर राज-प्रजा बढ नेह।
बढ्यौ क्रीय-विक्रीय कौ बिवहार[2], बढ्यौ नय वृद्धीय नीत बिचार ।।५९४
वरख्खत काल ही मैं घन वार, कुटंबीय खेत बढावत क्यार।
विधोविध लोरत लावत क्रीह, दुखी जन नाँहि सुखी निस-दीह ।।५९५
गऊ बढ गोमीय[3] संत गवाल, लहै पयं खीरज होत निहाल।
नदी सर पूरन सोहत नीर, भरे फुल फूलन मैं तरु भीर ।।५९६
सुनावत चातक कोकल सोर, महाँ मुद नाचत है वन मोर।
ध्रती मति-माँन[4] तहे द्वज-धर्म, करै जिग होम तथा जप-कर्म ।।५९७

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१ सुवन, पुत्र। २ व्यवहार। ३ गौ का मालिक, गोस्वामी। ४ बुद्धिमान।

भजै नहि छत्रीय भीरुक भाव, सबै भट चारु उदार सुभाव।
सुसीलाय नार पतीव्रत सेव, भजै पति जेम त्रीया निज भेव ।।५९८
करै पितु मात ही की सुत काँन, बढै सुख संपत रीत बिधाँन।
नहीं दुरभिक्ष न ईतीय दु:ख, सबै बिध सज्जनता जन सु:ख ।।५९९
छली चुगली नँही लंपट चोर, जहाँ नँही नास्तक दंभहु जोर।
करै मख सात्वक रीत करंम, प्रहारत प्राँनन जीव परंम ।।६००
महीपत माहिष कौं रन मार, सुखी जगतंब करी दिस च्यार।
सुनै इह देबीय केर चरित्त, बिलावत दारद बाढत वित्त ।।६०१
लीयै फल च्यारहु कौ फिर लम्भ, सदाँ जगतंब कौं पूजहु सम्भ।
रची महिषासुर देबीय रार, बखाँनीय बुद्ध कबी सुविचार ।।६०२

दोहा

कथा सुंभ निसुंभ की, बरनत फेर बिसेस।
सोनकाद सौं सूत जू, यह दीनौं उपदेस ।।६०३

छंद पद्धरी

पुस्करहु धाँम तीरथ पवित्र, तिह महिमा परगट जत्र तत्र।
कर चित्त बीच अभिलाष काँम, निज भ्रात सुंभ निसुंभ नाँम ।।६०४
पातालहु तैं विद्या प्रनीत, पावन थल देख्यौ अत पुनीत।
बर जोग ध्याँन बैठे सधीर, विध हेत करत तप उग्र बीर ।।६०५
अनसन व्रत साध्यौ तज अहार, धर आसन बैठे निराधार।
इक अयुत अब्द बीतत अखंड, पिंजरा रह्यौ अवसेस पिंड ।।६०६
अवतंस देव वाचा उदार, चढ़ हंस आय कहि समाचार।
किहि हेत करत तुम तप करूर, परसंन[1] भये हम प्रेम पूर ।।६०७
वर चाहत जो कछु उभय बीर, परगट सोइ करहू हृदय पीर।
वर कृपा जुक्त देखे विचार, विध वंदन कीने बार बार ।।६०८
कर जोर प्रदक्षन उभय कीन, दनु करी अरज कहि बचन दीन।
देवाधदेव दीनन-दयाल, वच्छछल सरनागत बृद बिसाल ।।६०९

---

१ प्रसन्न।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

चतुरानन हमरे हृदय चाह, पावन प्रभु सुनीयै पाहि पाहि।
तासत है प्रांनी मात्र त्रास, दीरघ निद्रा[1] नही बधै तास ॥६१०
पर्मं मम देहु अमरत्व पाय, संकट मैं करीयै प्रभु सिहाय।
बिध कह्यौ तबै साँचौ वृतंत, उतपत तन ताकौ नास अंत ॥६११
करतार नियम निरबाँन कीन, नहिं होय बिपर्जय विध नवीन।
या महि कछुं अंतर राख और, वर लेहु सुखद वाचा बहोर ॥६१२
कर जोर अरज तब दनुज कीन, दीजै वर मोकँहू जाँन दीन।
सुर असुर मनुज पसु पछ्छु सोय, कर सकै घात नँही पुरख कोय ॥६१३
नारी भय हमरे ह्लदय नाँहि, अबला जिह जाँनत नाम आहि।
कहि तथा-अस्तु विध गमन कीन, प्रोहित भृगु पूजे पाय पीन ॥६१४
सुभ देख महूरथ भृगु सुहास, हाटक सिंघासन जुत हुलास।
अभिसेख कीयौ नृप ता उमंग, सब लीयै दनुज समुदाय संग ॥६१५
दस दिसन बढीय तिह राज दौर, छित-पाल सुँभ सिर ढुहत चौंर।
भये सुँभ तबै राज्याभिसेस, दनुजाद हरख लहि देस देस ॥६१६
सुन चंड-मुंड जुग भ्रात सूर, हय गय दल आये मिल हजूर।
द्वै अक्षोहन दल लीयै दूठ[2], इहाँ रक्तबीज आयौ अनूठ ॥६१७
जुध जीत सकै नहीं, सत्रू जाहि, तातै सु माँनव लहत त्राहि।
छित परै रक्त कन जिते छूट, इतने दनु जागत भिरत ऊठ ॥६१८
बढ़ चले किते विस्राँम वीर, भइ समिल जहाँ अनगनत भीर।
चतुरंगी सेना जुद्ध चाह, रच सीमा सागर रुध राह ॥६१९
नि:संक लीयै सेना निसुँभ, जीतन कौं चाल्यौ सत्रु जंभ।
भिर परचौ स्वर्ग संगर भयाँन, सुर असुर वयर बाढ्यौ सुजाँन ॥६२०
पुरहूत वज्र कीनौ प्रहार, नि:सुँभ करयौ मुर्छंत निहार।
दाँनवी सैन भज चली देख, बीनती करी सुँभहि बिसेख ॥६२१
चढ़ चल्यौ सेन आतुर चलाय, बिकराल रूप दारुन बलाय।
सर वृष्ट करी जहाँ सुरन-सीस, अकुलाय भज्यौ गिर्बान ईस[3] ॥६२२
पद इंद्र लह्यौ भुज बल प्रचार, बिचरत बन नंदन हित बिहार।
करि[4] काँमधेन कलवृछ्छ कोस, खल जग्य भाग लीने सु खोस ॥६२३

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१ मृत्यु। २ दुष्ट। ३ इंद्र। ४ ऐरावत, हाथी।

कर इँमृत पान आनंद-कार, उर मोद बढ़त नित-नित अपार।
जम बरुन लये पोलस्त जीत, दावानल द्वजपत जुत अदीत ।।६२४
सुर काज करत आसुर समाज, धर छत्र सुंभ राजाधिराज।
सुरदिसापाल आदक सभीत, रत बिपत देव भये रंक रीत ।।६२५
परवत बन गहबर गुफा पाय, जुग-जुग समाँन निस-दिवस जाय।
अस्थिर निवास नहीं रहत आँहि, निस रहत तहाँ दिन रहत नांहि ।।६२६
डर धरत न कंपत प्रभा ध्वंस, सविषाद रहे बछ्छर सहंस।
सुर आचारज[1] विनये सखेद, वर विद्या जाँनत मंत्र वेद ।।६२७
जप जग्य बिचारहु कष्ट जाय, अब कीजै गरू जो कछु उपाय।
वाचस्पति बोले जुत विचार, सब लह्यौ वेद को तत्व सार ।।६२८
वेद के मंत्र हू कौ विधाँन, सब देवन आस्रत सुनहु आँन।
सोइ देव फिरत तुम बिपत संग, अब कौंन उपासै मंत्र अंग ।।६२९
पर कीजै उद्दम समय पाय, पुरसारथ तजीयै नहि उपाय।
हथ उद्दम बैठे कहा होय, कीजै उपाय नय-नीत कोय ।।६३०
करता जब ह्वै है साँनुकूल, मेटन दुख उद्दम गनहु मूल।
मेधाबी सब ही सुर महांन, उद्दम समान नहीं मंत्र आंन ।।६३१
तातै इह सुनीयै उचत तात, महिषासुर मार्यौ जुक्त मात।
तुम करी प्रसंसा बहुंर ताहि, जहां दीयौ अभय वरदांन जाहि ।।६३२
सुर संकट मैं करहूँ सिहाय, आसुर कौं देहूँ दंड आय।
तातै फिर सुमरन करहु तात, महमाय अजोनी चंड-मात ।।६३३
महमाया माया-बीज-मंत्र, तहां साधन लगे मूल तंत्र।
हिम गिर उतंग सिर सथिर[2] होय, सिध बीज-मंत्र-जप जपत सोय ।।६३४
पूजन अराधन विध पुनीत, रच ध्यांन ग्यांन पूर्बानुरीत।
बंदन अराधन बार-बार, बिध-जुक्त महां-साधन बिचार ।।६३५
नित करत बीनती जपत नांम, कीजै अभिष्ट जगतंब कांम।
है प्रांन-स्वांमनी भक्त हेत, सानंद रूपनी तूं सचेत ।।६३६
तोहि नांम रूप नहिं लहत तत्व, मेधाबी ऐसो को महत्व।
जो भक्ति जोग कोऊ करै जीव, सो जाँनै गति तेरी सदीव ।।६३७

१ आचार्य, बृहस्पति। २ स्थिर।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पिंड कौं रचत तूं पुष्टि रूप, सुमृती[1] धृती तुष्टी तूँ स्वरूप ।
कांती तूँ सांती कीत काय, माया तूं दाया महंमाय ।।६३८
सुर-काज करत जोइ नांम सिद्ध, पावन जस तेरौ जग प्रसिद्ध ।
सहनता वाक बांनी सुभाव, पावत बल-बुद्धी तुहि पसाव ।।६३६
जग जननि जोग निद्रा सुजाँन, पावन प्रवाह प्रकृति प्रधांन ।
पुत्र कौं मात जो करत पोख, इह तौ परपाटी नित अदोख ।।६४०
जांनत हम इतनी रीत जोन, कारन बिन कारज रचत कोन ।
सत राजस तांमस गुन सँवार, बिध विस्नु सृष्ट राचै बिचार ।।६४१
संघार कपाली करत सोय, कर सकै न तो-बिन काज कोय ।
तै रीझ सक्तियां दई तेम, निरवाह करत सोइ सहस नेम ।।६४२
अघ-पूर आतताई अखंड, खल माहिष कीनौं खंड-खंड ।
जब दयौ हमहि वरदांन जांन, सब सत्य करहु मात आंन ।।६४३

दोहा

सब देवन आरत समुझ, निझ बर पालन नेम ।
कर करुना देर न करी, प्रगट भई जुत प्रेम ।।६४४

छंद त्रोटक

सुभ लछ्छत[2] लछ्छन[3] की समुदा, परपूरन-रूप महाँ-प्रमुदा ।
दुति जोवन की तन मैं दरसै, बर बैंनन नैंन सुधा बरसै ।।६४५
कर कोमल कंजहु तै कहीयै, लखीयै पग की चित्र त्यों लहीयै ।
वर पीन-पयोधर खीन-कटी, प्रभुता तन धार मनौं प्रगटी ।।६४६
सुच अंबर झीन सु धारन सौं, भरपूर अलंकृत भारन सौं ।
सिध रूप सिरोमन सील सती, प्रगटी गिर किंदर पारवती ।।६४७
लख ताहि सबै सुर पाय लगे, जीय जाँन परी अत्र भाग जगे ।
लख पूरन प्रेम हीयै लहिकै, गहरै स्वर बोल कृपा गहिकै ।।६४८
किह कारन देव दुखी कहीयै, लख कै मन बंचत सो लहीयै ।
सब देव करी बिनती सुनकै, गथ गूढ़-बिचार हीयै गुनकै ।।६४६

१ स्मृति । २ मू० प्र० लछता । ३ मू० प्र० लछन ।

CC-0. BORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

इनकै महिषेस विपत्त हनी, वरदाँन दीयौ सोई बात बनी।
जुग भ्रात है सुंभ-निसुंभ जिसे, तिह देवन कौं बहु रीत त्रसे ॥६५०
अरु चंड रू मुंड जुरे अधमा, मिल रक्तहु-बीज महाँ मधमा।
जिह देवन लोक लयौ जननी, हनहूं तिह दाँनव की हननी ॥६५१
सुन देवीय देवन की सबही, जीय आस्रव सत्य धरयौ जबही।
कीय देवीय दूसर आप कला, चिब कौसकी दीसत ज्यौं चपला ॥६५२
सरसात तिही रंग स्याँम सरयौ, धुर ताहीतै कालका नाँम धरयौ।
सोइ देव-समाज सहायक सी, दनु वंसिन कौं भयदायक सी ॥६५३
द्रढ देवन कौं बिसवास दीयौ, करहूँ तव कारज नेम कीयौ।
चढ सिंघ चली इक रंग छटा, घट कालका सोहत स्याँम घटा ॥६५४
भजमाँन[1] बिचारत दर्प भरी, पहुँची जुग रूपाय सुंभपुरी।
गहरै स्वर गावत राग गरै, वर वाटका पुस्प जहाँ विहरै ॥६५५
लखि चंड रू मुंड दहूँ ललना, कहि सुंभहि जाय परो कलना।
सुर-नार लखी नर की समुदा, पहिचाँनत किन्नर की प्रमुदा ॥६५६
सब नैंन लखी केऊ स्रोंन सुनी, तनकी दुति अद्भुत या तरुनी।
सुर-संपति खोस लई सबही, मन भूषन बाहन आद मही ॥६५७
चिब की ढिग नार जो हाथ चढै, बहु अंगन की सहुं सोह बढै।
कर चिंतत चंड रू मुंड कही, सब सुंभ बिचार कै बात सही ॥६५८
चित चातुर दूत सुग्रीव चह्यौ, लख कै अत आतुर बोल लह्यौ।
समुझाय उदंत कही सबहू, वँह जायकै वेग मिलौ अबहू ॥६५९
समुझाय कै लावहु सुंदर कौं मम सोह चढावहु मंदर कौं।
तब दूत चल्यौ सुख पाय तहाँ, जगतंबहि देखीय जाय जहाँ ॥६६०
मुख जाय लख्यौ जग-मोहन कौं, असवारीय सिंघ-अरोहन कौं।
कर जोर कही अभिमंत्रन कौं, तिह जाय तहाँ निझ तंत्रन कौं ॥६६१
जग जेता है भूप सुनौ जिनकी, मृघनैंनीय बात कही मनकी।
सुर थाँनक खोस लये सबही, मन हाटक वाग निकेत महो ॥६६२
हमकौं वरकै तुमही विहारौ, पट भूषन लै तन मैं पहरौ।
पग-दास करो त्रहु-लोक-पती, बर सुंदर भूप करी बिनती ॥६६३

१ समर्थ

वरदाँन दियौ हमकौं विधहू, सब तेरे ही काज भये सिधहू ।
डर मृत्तु कौ मोहि न अंग दहै, ललना अमरत्व सुहाग लहै ।।६६४
सभकै मन रत्न सिंगार सहो, रति खेलन मैं अनुरक्त रहो ।
इतनी नृप सुंभ करी अरजी, मम सत्य कहो लखकै मुरजी ।।६६५
कमलाक्ष कहौ सोइ जाय कहै, रुच होय तौ राज हजूर रहै ।
सब भेद कहाय संदेसन मैं, नृप आयकै रावरे पाय नमैं ।।६६६
सुन दूत की बात इहै सबही, ततकाल जबाब दयौ तबही ।
मुसकाय कह्यौ सुरराय मुखा, सब जाँनत हूँ मति की समुखा ।।६६७
बरदायक सुंभ-निसुंभ बली, थित खोस करी जिह देव-थली ।
सुभ लछ्छन की गुन रास सही, जग जाँनत सूर उदार जँही ।।६६८
सुभ लछ्छन षोडस दून सभै, रन मैं नर जात अवध्य[1] रजै ।
सुर किन्नर मानव देख सबै, फिर गंध्रव राखस आद फबै ।।६६९
हहरै सब ही निस-द्योस हीयै, लख सुंभ-निसुंभ कौ नाँम लीयै ।
गुरू कर्म विसारद सूर गुनी, सुभ दक्ष कुलीन सुक्रति सुनी ।।६७०
सुर जीत लये भिर संगर मै, झपकै पल ना गिर झंगर मै ।
अपने बल उन्नत जाँन अहौ, करकै वर तो कँह जाय कहौ ।।६७१
अपनी प्रभुता सु बढावन कौं, मनी चाहत हेम मढावन कौं ।
सुनीयै स्रुत दूत उदंत सहो, कर मंत्र इकंत मै जाय कहो ।।६७२
लरकाइ के कौतुक है लखीयाँ, सब खेल रही हमहू सखीयाँ ।
तव पैंज करी हम सत्य तहाँ, क्रत कारन सो समुझाय कहाँ ।।६७३
जुध देख बलाबल जोर जई, सुख पाय करूं भरतार सही ।
हीय हेर इहै मम दर्प हरौ, कर मंगल फेर विवाह करौ ।।६७४
इतनी तुम जाय कहौ अबही, समुझाय कही हम तौ सबही ।
सब रीत तूं चातुर दूत सदा, वहकै जब जावहु होय बिदा ।।६७५

दोहा

सुन देवी की बात सब, दूत कही इह देख ।
कोमल-अंगी काँमनी, बातैं करत विसेख ।।६७६

---

१ जिसे मारा न जा सके।

CC-0. BORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जो जेता जग जाँनीयै, इंद्र आद सुर और।
केसैं लरहै वाँमनी, मन मैं आवत मोर ।।६७७
इंद्र आद सुर औरहू, जम कँह कीने जेर।
समंता सुंभ-निसुंभ सौं, करै न वरुन कुबेर ।।६७८
वन-वन डोलत विपत-बस, विबुध जिते बलवाँन।
जाँनहु और न जगत मैं, सुंभ-निसुंभ समाँन ।।६७९
सिवताकी[1] वातें समुझ, रीझहिगौ दनुराव।
तजीयै हठ साहँस त्रीया, समझहु जात सुभाव ।।६८०
दाँनविंद्र दारुन दुसह, जाँनत हौं वल जास।
करकै सासन क्रुद्ध कर, पकर बुलावहि पास ।।६८१

छंन्द उघोर

तीय मृदुल कंज तुसार, दनुविंद्र क्रुद्ध दुसार।
कर धरत जव कोडंड, अभिलाख जुद्ध उदंड ।।६८२
विष झार बरखत बाँन, जिह भिरत कोंनहिं जाँन।
तूँ जुद्ध जाचत ताहि, अबला कहाँ बल आहि ।।६८३
रन-रोख करहै रार, नहीं देख सकहै नार।
दोऊ भ्रात तारुन[2] दक्ष, पत येक वरहु सपक्ष ।।६८४
कहै त्रीया वचन कठोर, वँह समय जाँनहु और।
स्रंगार-रस सरसाय, सो कहहु प्रथम सुभाय ।।६८५
देवी कह्यौ सुन दूत, कर प्रथम रन करतूत।
जो जीत है बरजोर, बर लेहु ताहि बहोर ।।६८६
पन करचौ सिसुता पाय, तजहूँ न कवहूँ ताहि।
दहुँ भ्रात कौं कहि देहु, लर जीत कै वर लेहु ।।६८७
मम सूल कौ भय माँन, कहु जुद्ध करहै काँन।
तज देहु स्वर्ग तुरंत, पाताल जावहु पंथ ।।६८८
इह दूत भ्रम अवदात, वरनैं जथारथ वात।
मो सत्य वाचा माँन, नृप जाय कहहु निदाँन ।।६८९

---

१ कल्याण करने वाली २ तरुण

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सब सोच सार असार, वाचाल दूत विचार ।
नृप-पास जाय निरास, इह करी पुन अरदास ।।६६०
कहीयै न नृप सौं क्रूर, हम उचत नाँहि हजूर ।
विनऊँ तथा जुत व्याज, अत होय राज-अकाज ।।६६१
दीय हुकम जब नृप दूत, विनती करी लख व्यूँत ।
नृप विगत सुनीयै नार, नहीं निबल बल निरधार ।।६६२
इह कहाँ की उतपत्त, सोइ नाँहि समुझी सत्त ।
वर वीर-रस जुत वाँम, है जुद्ध की हीय हाँम ।।६६३
भाख्यौ यथा चटु भाय, सृंगार-रस समुझाय ।
द्रँढ रौद्र उत्तर देत, उर-जाँन परत अहेत ।।६६४
वच कहत व्याज विधाँन, सोइ सुनहु नृपत सुजाँन ।
बिच कही सखीयन वात, वलवंत वीर बिख्यात ।।६६५
जिह संग करहूं जुद्ध, अवलोक पौरुख उद्ध ।
पस्चात करकै प्यार, भजहूं सोई भरतार ।।६६६
सुर-मनुज देखे सर्ब, गन किन्नरा गंधर्ब ।
भय ग्रस्त सुंभ-निसुंभ, खल खेल मैं जय-खंभ ।।६६७
जब इहाँ पहुंची जाँन, छिब लखहुँ सो बलवाँन ।
मिथ्या न आस्रव मोर, कर लेहु जतन करोर ।।६६८
कीय एम नार कहाव, प्रभू आप परसे पाव ।
रस भंग नँहि कीय राज, मम अरज इह महाराज ।।६६९
धर करग आयुध धींठ, पल-भक्ष बैठी पीठ ।
द्रग ज्वलत ज्यों दुति दीप, सब लखहु जाय समीप ।।७००
सुन दूत अरजी सुंभ, सविखाद पूछ निसुंभ ।
कहि भ्रात कैसौ काँम, वतीयाँ कही सुन वाँम ।।७०१
मन ऊचत आवत मोर, जिह जीतहूं बरजोर ।
जुध करहुंगौ मैं जाय, सो जतन करहु सुभाय ।।७०२
निष्ठुर अकेली नार, इह करत मम अपकार ।
नहीं सदन होत निदाँन, अपकार कौ भय आँन ।।७०३
लही क्लीवता पद लाज, सब सुनहै सूर-समाज ।
कहि उचित कीजै कौंन, तुम जाय देखहु तौंन ।।७०४

CC0. ROI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सुन कही जो नृप सुंभ, निझ भ्रात जाहि निसुंभ।
अरजी करी तिह येम, नही अपुन जावन नेन ।।७०५
धुम्राक्ष भेजहु धीठ, गहि लेय ताहि गरीठ।
विध-जुक्त लगन विचार, निज व्याह करहू नार ।।७०६
लघु भ्रात कहि चित लाय, लीय धुम्रनयन बुलाय।
सज हुकम तुरत सुनाय, उर अनख नृप अकुलाय ।।७०७
तुम करहु सैन तयार, निग्रहन[1] करहू नार।
सुर-असुर मनुज सहाय, इक नार काली आय ।।७०८
जिह सहित मारहु जोर, इह हुकम है मम ओर।
रच रहै जो कछु रार, कर कमल तैं सुकमार ।।७०९
तुम कौं कहा भय ताहि, वँह करैं आयुध वाह।
तऊ जीयत पकरहु ताँन[2], इह सिद्ध है अवसाँन ।।७१०
सुन धुम्रलोचन सूर, निज वदन वरखत नूर।
बल काय बीर विचार, हलकार सठ्ठहजार ।।७११
सज दनुज सेना सथ्थ, तहाँ जाय पहुँचोय तथ्थ।
अभिलाख जुद्ध अराँम, बिच जाय देखी बाँम ।।७१२
कीय नमस्कृत तिह काल, रच मधुर वचन रसाल।
त्रहुलोक जेता तूझ, उर रह्यौ विरह अरूझ ।।७१३
दिल चाहि भेज्यौ दूत, समझ्यौ न सूत-कसूत।
हथ कीयौ मोद हुलास, इह काज भूप उदास।। १४
श्रीय [illegible][3] वचन सपक्ष, दरसाव जाँनत दक्ष।
जुध दुविध जाँनत जाँन, इक रतज[4] लखीयत आँन ।।७१५
अरि-भाव दूसर येह, ऊछाह जनत अछेह।
प्रीय रतज समर प्रवीन, रति रचत सो रमनीन ।।७१६
कहा वयर भावज काँम, स्त्रीय-जात तैं संग्राँम।
नहीं दूत समझ्यौ नेक, विभ्र-जुक्त वात विवेक ।।७१७
हम करत अरजी हार, रति-पतहु कीजै रार।
रच सयन राचहु रंग, जहाँ जीतहूँ तीय जंग ।।७१८

१ पकड़लो। २ मू. प्र. तौंन। ३ व्यंग। ४ कामज[illegible]।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सोइ कालका कर साख, उर करहु इह अभिलाख।
पति करहु पीड़न पाँन, अत उग्र इह अवसाँन ।।७१९
इम होय हैं बस ईस, वर वात बिसवा बीस।
जब नार जेता जाँन, पति वारहै नित प्राँन ।।७२०
सुन कालका मुसकाय, तहाँ दीयौ उत्तर ताहि।
वहि लख्यौ आवत बीर, सज अस्त्र-सस्त्र सरीर ।।७२१
वाचाल सुन कैं वात, अब लखी मति अवदात।
पर पीठमर्द[1] प्रसंस, अथवा भूकुसक[2]-अंस ।।७२२
कामांर्त सिंघनी कोय, गोमायु[3] रति किम गोय।
गो गवय होय न गाँन, ज्यू वसा[4] गर्दभ जाँन ।।७२३
क्यौं बकत बात अलीक, सुन लई तेरी सीख।
मति-मंद दीसत मोहि, अब करत काँय उपोह ।।७२४
समझाय सुंभ-निसुंभ, दनुविंद्र छाँड़हु दंभ।
जग-मोहनी जीय जाँन, पती आय पीड़न-प्रान[5] ।।७२५
तोहि गात करहै तंड, महामाय संगर मंड।
सकुटंब कर संघार, प्रतना समेत प्रहार ।।७२६
पथ लेहु तुरत पताल, जब छूटहै जम-जाल।
पर जरीय हिय रिस पाग, दनु कालखंज दवाग ।।७२७
द्रग कह्यौ क्रूरा देख, तन बढ्यौ ता छिन तेख।
हन तोहि प्रथम हकार, पलभक्ष बाँन प्रहार ।।७२८
बल गर्बता गहि बाँह, नृप करूँ हाजर नाँहि।
रस भंज कौ मुहि रंज, कुमलाय लोचन-कंज ।।७२९
क्रूराँ सुनी धुन काँन, पर जरीय पावक पाँन।
मैं सुनी तुहि मति मंद, छुटकाय कै छल-छंद ।।७३०
सव भाँत वाचा सूर, धिक तोहि पौरुख धूर।
निष्ठुर निलाज नटेर, कहा कहत इह कुलटेर ।।७३१
डह[6] पूर गहि कोडंड, छत नहिन तौ दे छंड।
सुन धुम्रलोचन सूर, कर क्रोध ऊठयौ क्रूर ।।७३२

१ भाट। २ नट। ३ स्यार। ४ हथिनी। ५ नष्ट करने के लिये। ६ क्रोध।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सर तजे क्रस्ना सीस, रच दाव कर-कर रीस ।
इंद्रादि देखत ऊद्ध, जहाँ भयौ सम-सम जुद्ध ।।७३३
कोऊ करत धाव कुठार, मिल देत मूसल-मार ।
छल करत सक्ति चलाय, गरू गदा खड्ग गहाय ।।७३४
निह संत दुंदभ नद्द, बढ़ धाव दाव विहद्द ।
पर उठत दनुज प्रपात, घट करत क्रस्ना घात ।।७३५
इत लरत क्रस्ना येक, उत भिरत दनुज अनेक ।
जहाँ करत काली जुद्ध, धनु-बाँन ताँनत ऊद्ध ।।७३६
सर दीये तिछ्छन सार, सब भाँत स्रष्ट सँवार ।
वालेय[1]-अंग विडार, महमाय तब सर मार ।।७३७
चट कीयौ सिंदन[2] चूर, सभ्भ और रथ चढ़ सूर ।
भिर परयौ जुद्ध भयाँन, बिकराल वरखत बाँन ।।७३८
तहाँ कालका रन तिष्ट, काटे सु बाँन कलिष्ट ।
बहु दीये सर बरसाय, घट दनुज संगर घाय ।।७३९
सव लखत देव समर्द, महिमाय कीय अवमर्द ।
जहाँ कटे दाँनव-जूह, कल करत हारव कूह ।।७४०
क्रतहस्त काली क्रुद्ध, जिह कीयौ दारुन जुद्ध ।
वालेय सर बरसाय, गत प्राँन धरन गिराय ।।७४१
तिह धनुष कट्टीय तथ्थ, रन तोर स्वारथि रथ्थ ।
जुध जीत संख बजाय, सुर मोद दीय सरसाय ।।७४२
धर धुम्रलोचन धीर, वढ बिरथ आयी बीर ।
कहि कटुक वचन करूर, सभ्भ परघ आयुध सूर ।।७४३
क्रस्ना कुरूपा काय, प्राघात मंडहु पाय ।
चल वेग परघ चलाय, विकराल आग बलाय ।।७४४
कीय क्रुद्ध रव हुंकार, फनि सहँस जनु फुंकार ।
इम जरयौ आसुर-अंग, पर दीप जेम पतंग ।।७४५
ध्रुव नाँम लोचन ध्रुम्र, धर ध्रम्र मैं मिल ध्रुम्र ।
द्रग लखत पूरब-देव, भय भीत लहत न भेव ।।७४६

---

१ गधा । २ घोड़ा ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

विस्मय विचारत वीर, धर सके नाँहिन धीर।
भज चली प्रतना भूं, सविषाद कातर सूर ।।७४७
जहाँ अंबका भई जीत, रन-खेत इह विध रीत।
धुनि संख को धुंकार, सुन भये देव सुखार ।।७४८
भयकार लखीयत भूँम, घट रहे घायल घूँम।
बहु परे कालज बुक्क, फिफरह लेत फरक्क ।।७४९
कट परे बुथ्थन कीन, छिक आयु धन तन छीन।
वालेय हय गय वीर, सब कटे रवन[1] सरीर ।।७५०
वभकंत घाव विसाल, खलकंत जहाँ रत खाल।
गोमायु पलचर गिद्ध, सीचाँन काक, समृद्ध ।।७५१
झुक रहे चिल्लन-झुंड़, पल भखत दनुजन पिंड़।
बहु नचत भूत-बिताल, तहाँ हंसत दै-दै ताल ।।७५२
भज चले दनु इह भाय, बद्दर लगै जिम वाय।
घट भये पूरत घाव, सरसात लोहू स्राव ।।७५३
कहु कटे नासा काँन, अधफटे कऊ अधुराँन।
द्रग फुटे भ्रगुट-दरार, परकोष्टका[2] पर पार ।।७५४
कऊ कटे प्रष्ठ करंक, अकुलात दारत अंक।
कट पंचसाखा केक, कर-साख-हीन कितेक ।।७५५
सब करत हारव सोर, आये सबै नृप-ओर।
अकुलाय पूछ उदंत, भय ग्रसत क्यौं इह भंत ।।७५६
रच धुंम्रलोचन रार, नहीं पकर लायो नार।
कहा भयौ कैसौ काँम, तुम कहहु बात तमाँम ।।७५७
बोले सु घायल वीर, सव पीर-युक्त सरीर।
सुन लेहु नृपत सुजाँन, बिहुँ भ्रात तुम बलवाँन ।।७५८
सोइ दिव्य-नारी संग, जुर कालका कीय जंग।
छित धुंम्रलोचन छार, ह्वै परचौ वस हुंकार ।।७५९
प्रतना प्रहारे प्राँन, बरसायकै कर बाँन।
हम बचे रन तैं हाय, घट स्रमत ह्वै घन-घाय ।।७६०

१ ऊँट। २ कुहनी।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वँह रही संख वजाय, मद गर्बता मँहमाय।
सुर करत जय-जय सद्द, निहसंत दुंदभ नद्द ।।७६१
रन लख्यौ जैसौ रूप, भाख्यौ सु तैसौ भूप।
कर मंत्र कीजै काज, मन रुचै सोइ महाराज ।।७६२
सुन घायलन सौं सुंभ, निभ्र भ्रात जाँन निसुंभ।
कर बैठ मंत्र इकंत, अवसाँन जाँनहु अंत ।।७६३
इह सिंघ की असवार, निरदई कैसी नार।
सज कालका कौं संग, जिह करयौ ऐसौ जंग ।।७६४
सब चमूँ दनुज सँघार, मिल धुम्रलोचन मार।
बिकराल संख बजाय, सुर मुदत करत सुभाय ।।७६५
विध रुद्र आदक विस्न, जम वाय पावक जिस्नु।
सब करहिं ताहि सिहाय, निरधार जाँनहु न्याय ।।७६६
लरी यैक सैना लार, सभी यैक दुर्ग सँवार।
त्रन बज्र के सम तूल, पुन होत दिन प्रतिकूल ।।७६७
इह जांन कछु उतपात, विध-जुक्त कीजै बात।
जो नीक तौ भज जाय, अब कहहु कौन उपाय ।।७६८
सब कही बाचा सुंभ, निभ्र भ्रात जाँन निसुंभ।
नृप सुनहु वाँनी नीत, भय पाय होय अभीत ।।७६९
नय वीरता तिह नाम, करीयै न कातर-काँम।
मम सीस है धर मथ्थ, कहीयै न ऐसी कथ्थ ।।७७०
भट भेजीयैं जुग भ्रात, बर चंड-मुंड बिख्यात।
जिह काम करहै जंग, अत दाव घाव अभंग ।।७७१
निज जाहि अवला नाँम, करहै कहा रन काँम।
तिह पकर लावहै तात, नत करहै जुद्ध निपात ।।७७२
हम मुऐ पाछैं हार, नय-नीत करहु निहार।
निसुंभ की सुन नीत, भये सुंभ भूप अभीत ।।७७३

दोहा

समुझ सोच ताही समय, सासन किय नृप सुंभ।
चंड-मुंड जुग भ्रात चढ़, क्षिप्र जाहु जय खंभ ।।७७४

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

काली कौ करहू कदन, पकरहु अथवा पास।
तुम वाकौं लावहु तुरत, रूप रंग दुति रास ।।७७५
येते पै आवै न वँह, जोर करै कहु जुद्ध।
बाँनन तै प्राँनन बिगत, वाकौं भेजहु ऊद्ध ।।७७६

छंद मौतीदाँम

महाँभट दारुन चंड रु मुंड, कसे कृतहस्त धरै कोडंड।
लयौ नृप सासन पायन लग्ग, उदायुध सूर बढे दहु अग्ग ।।७७७
सजै बहु बीर बरूथनि संग, जिते लघुहस्त बिसारद जंग।
पहूँचीय देवीय कैं तहाँ पास, हीयै अभिमंत्रन जुद्ध हुलास ।।७७८
न जाँनत सुंभ-निसुंभहिं नार, रही पग रोप जुहारत रार।
जिताहव देव्र लये सब जीत, भ्रमें सोइ काँनन ह्वै भयभीत ।।७७९
करी तोहि कारन अग्र कलेस, इहै सब देवन कौ उपदेस।
भरी हम चाहत नाँहिन मित्त, सबै समुझाय कहू सोइ सत्य ।।७८०
भुजा नव दूनन राख भरोस, जथा पलभक्ष तथा उर-जोस।
निरांकुस भूपत सुंभ-निसुंभ, दुरंतर तोहि निवारहि दंभ ।।७८१
कहै हम सोय करौ तुम काज, वृथा छल-छंद न राचहु व्याज।
वृथा इह दर्प सबै बिध वांम, बृथा तुम लावहु चित्त-विराँम ।।७८२
अराधन साधहु ईस उदंच, प्रभुप्पन भुग्गहु राज-प्रपंच।
नही इह निचंते[1] काज निसिद्ध, सबै मन बंचत कारन सिद्ध ।।७८३
जिते जग माँझ चराचर जीव, द्वधा थिर जंगम राच दईव।
कीयौ तन मानव श्री करतार, विसेसन बुद्धि विवेक बिचार ।।७८४
जुहारत देवन माँनव-जात, जई असुराधिप देव-जमात।
बुलावत तोहि विचार विवाह, नहीं कोई दूसर या सम नाह ।।७८५
वरौ तुम जाय करौ मत बेर, फुरै अवसाँन न या विध फेर।
परेखहु दक्ष प्रतक्ष प्रमाँन, असार न चित्त धरौ अनुमान ।।७८६
पराभव देवन कौं परचंड, दइ तन विंद्र जई रन दंड।
मिले तुहि जीतन चाहत मूढ़, ग्रस्यौ चित अंतर कारज गूढ़ ।।७८७

१ नीच।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

भलीनस निर्जर स्वारथ मीत, प्रधाँन न जाँनहु प्रीत-प्रतीत।
धुरंधर नित्त विसारद धर्म, कहै हम सोय करौ तुम कर्म ।।७८८
हीयै धर विस्तर दाँनव हल्ल, गरज्जीय मेघ ज्युँही भर गल्ल।
कही हमकौं सिखवैं कहा कथ्थ, सदा हम देव सिहाय समथ्थ ।।७८६
महाँअघ-गामीय तें मतिमंद, विडारीय केतक दाँनव-वृंद।
हरी हर देव भई कहा हाँन, करै पति आसुर कौं तज काँन ।।७६०
अहू जग-स्वाँमनि विस्व अधार, नया नय देख रही निरधार।
करे तुम देवन कौं बहु कष्ट, गहौ नय नीत न पाप गरिष्ट ।।७६१
वनैं कुल आसुर नाँहि बचाव, अबै कर देखहु कोट उपाव।
सँभारहु आयुध कौं इक साथ, इही ध्रम वीरन कौ अवदात ।।७६२
सुने इह देबीय के वच स्रोंन, प्रहारन लागीय[1] बाँनन प्रोंन।
हरव्वल वीर दये हलकार, कसीसत चाप करै किलकार ।।७६३
इहै लख चंडीय क्रोध ऊझल्ल गरज्जीय सिंघ तहाँ भर गल्ल।
सँभारीय संख तहाँ सुरराय, करी धुन जुद्ध जुरी अकुलाय ।।७६४
भये भृगु-सिःख तहाँ भयभोंन[2], सुनै सुख दाँनीय देवन स्रोंन।
परी तहाँ अस्त्रन-सस्त्र प्रहार, क्रपालका पट्टस कुंत कुठार ।।७६५
चट्टकत[3] बीर प्रतंचन चाप, खट्टकत खग्ग निकारत खाप[4]।
भयौ रन कातर कौं भयकार, उमंडीय बाँनन मेघ असार ।।७६६
अरे दहु चंडीय चंड अभंग, रचै तहाँ जंग अनूंपम रंग।
घले हथ वाह न चूकत घाव, दहै तन दाँनव ज्यूँ वन-दाव ।।७६७
मिले असुरायन मंडल मेल, अगंजत बाँनन पांन उझेल।
रही रुप देबीय दारुन-रूप, उड़ावत बाँनन-बाँन अनूप ।।७६८
छयौ घन अंबर भाँन छिपाय, उड़ै सलभा किधु अंबर आय।
रचै जहाँ चंड भयाँनक रार, हरोलन मुंड दये हलकार ।।७६६
करी बिहु बाँनन-वृष्ट करूर, गहै रस वीर निक्रष्ट गरूर।
बढ़ी उर देबीय क्रोध वलाय, भयौ मुख-क्रस्न भयाँनक भाय ।।८००
दिपै चख लालीय वीच दहून, प्रभा लख लाजत केल प्रसून।
भृगुटीय चढ्ढ भयाँनक भ्यूंह, जुतै भ्रमरावल धुंमर ज्यूंह ।।८०१

१ मू. प्र. लगीय। २ भयभीत। ३ मू. प्र. चटकत। ४ म्यान।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

भई तमरास जहाँ थित भाल, कढी निज कालीय रूप कराल ।
सुवासन साटीय[1] चर्म सु सिंघ, जिही बिध कंचुकि ढाकन जंघ ।।८०२
फबं गज-चर्म सु कर्पट फेर, घलै रुंड-माल ककाटक[2] घेर ।
प्रकासत वापीय सुस्क पिचंड, दिपै गज-सुंड ज्युँही भुजदंड ।।८०३
लहालह जीह डुलावत लोल, वढै अटहास भयंकर बोल ।
खतंगहु आयुध हाथ खटंग, प्रहारन दाँनव अंग प्रसंग ।।८०४
लगी सोई दानव के दल लार, अमेठत हाथ न लेत अहार ।
मलै मुख सिंधुर ज्यों हरमंथ[3], दबावत जंभ चबावत दंत ।।८०५
क्रमेलक[4] रासभ जाँन मकुष्ट[5], गहै हय रास बलाट[6] गरिष्ट ।
कलामक[7] जेम भृगू-सिख काय, खिलै रन रास मिलै सोई खाय ।।८०६
इहै गत कालीय की अवरेख, भखै दनु-जूह भयंकर भेख ।
महाँभट आसुर चंड रू मुंड, विचारीय मंत्र दुहूँ बलवंड ।।६०७
वचै प्रतना नहि येकहु वीर, भिरे रच मंडल ह्वै भटभीर ।
मतौ कर येक जुटे महँमाय, चलावत बाँन लोयौ नभ छाह ।।८०८
खुधा कछु मेट उठी खल खाय, सँभारीय चाप तहाँ सुरराय ।
कटे सर तिछ्छन मार कलंब, तहाँ रन-रूठ रही जगतंब ।।८०९
न पुज्जत दाँनव जुद्ध निदाँन, प्रहारीय चक्र तहाँ गहि पाँन ।
गरज्जीय दाँनव सद्द गहीर, तकी तहाँ देवीय लै धनु-तीर ।।८१०
ततछिन चक्र कीयौ सत टूक, महा क्रतहस्त प्रक्ष्वेड़न मूक ।
लखी तहाँ चंडीय चंडहु लछ्छ, तहाँ दनु ताक दये सर तिछ्छ ।।८११
परचौ मुरछा गहि वीर प्रचंड, महाँभट आय जुटचौ तहाँ मुंड ।
वरख्खत चंडीय पै सर-वृष्ट, विसारद जुद्ध विरुद्ध बलष्ट ।।८१२
सिलाका सार लई सुरराय, बिडारीय बाँनन ताहि बलाय ।
इखू अर्धचंद्र अकार उभल्ल, घने सल दाँनव के तन घल्ल ।।८१३
मुरछ्छत होय परचौ धर मुंड, झिले तहाँ क्रंदत आसुर-झुंड ।
परे दहूँ भ्रात जहाँ रन पेख, अनंदत देवन मोद असेख ।।८१४
इतै फिर चंड उठचौ अकुलाय, गदा कर लिन्नीय गाढ गहाय ।
प्रहारीय चंडीय दछ्छन पाँन, वचाय तँही रच वीर बिधाँन ।।८१५

---

१ साड़ी। २ गरदन। ३ चना। ४ ऊँट। ५ मच्छर। ६ मूँग। ७ चाँवल।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गह्यौ तिह चंडीय मेट गरूर, जहाँ विच बाँनन पास जहूर।
लखी गत चंड भयौ बल-लीन, अटचौ विच पासीय होय अधीन ।।८१
जगी मुरछागत चंड जरूर, सगत्तीय हथ्थ सँभारीय सूर।
चल्यौ तहां कालीय तै रन चाह, बनी नँही येक तँहि हथ वाह ।।८१
भई गत सोय जहाँ लघु भ्रात, बँधे विहुँ पासीय वीर विख्यात।
कीयौ अदभूत इहै रन काँम, हीयै दनु नाँहि रही फिर हाँम ।।८१
गहे विच पास दिखावत गात, दहूँ मृदुलोमक[1] जेम दिखात।
कही तहाँ देवीय तैं इह कथ्थ, सबै विध कालीय जुद्ध समथ्थ ।।८१
उचारत वाँनीय ब्रूँह अमेठ, भली रन जग्य लहौ इह भेट।
कही तब देवीय यों मुसकाय, न छंडहु कालीय देत अन्याय ।।८२
कढी महाँकालीय उद्ध क्रपाँन, प्रहारीय कंठ भये गति प्राँन।
कटे सिर दोउन के कर क्रोध्र, पीयौ रत कालीय पाय प्रमोद ।।८२
दीयौ तब सासन देवीय देख, सबै सुर-काज करौ सोई सेख।
महाँभट मारीय चंड रू मुंड, प्रहारीय दाँनव सेन प्रचंड ।।८२
मिटचौ दुख देवन कौं सुख मांन, वरख्खत पुस्प कहैं जय वाँन।
इहै कृत कालीय कौ अत उद्ध, जयौ जीह रीत कह्यौ सोइ जुद्ध ।।८२

दोहा

मारचौ चंड रू मुंड कौं, सज काली संग्राँम।
जग मैं पुज्जत जाहि कौं, निज चामुँडा नाँम ।।८२४

छंद पद्धरी

खल कटे चंड अरू मुंड खेत, सब भजे असुर वाहन समेत।
पहुंचे सु क्षिप्र नृप सुंभ पास, उद्राव[2] भीरु जय छोड़ आस ।।८२५
कट गये देख कहुं नाक-काँन, पग कटे कहुंक-कहुं कटे पाँन।
रत स्रवत घायल लाल रंग, प्रतहोरी जीवन ज्याँ पतंग ।।८२६
वेदना जुद्ध क्रंदत विसेस, निस्वास डार गत अभिनिवेस।
विस्तार कहन लागे वृतंत, देवी इक क्रस्ना दांवदंत ।।८२७

१ खरगोश। २ पलायन कर गये।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सिंधुर हय सादी जुत समेट, चिरमेही मरुप्रिय गहि चपेट ।
भख लये स्वारथो रथी भूर, काली सुकर्म कीनौं करूर ।।८२८
वीरासन देखी जुद्ध बीच, कीने सब ग्रासुर मार कीच ।
कट कुंजर पिंजर हय करार, वालेय क्रमेलक तन विडार ।।८२९
वहि चली रक्त-धारा विलंद, नहो वार-पार दीसत नरिंद ।
करकर ग्रनु सरकर गोंद कीन, जंबाल दिखावत तट जमीन ।।८३०
सिंदन जहाँ तैरत इम सुहात, डिंडीर मनहु बुद बुद दिखात ।
सिर तुटे ग्रलाबू[1]-फल समाँन, वहि रहे ग्रंत तंतू विधाँन ।।८३१
कट कालखंज फिफ्फर कहूँक, जिम कच्छ सनायू विध जलूक[2] ।
प्रति-जंघा[3] जंघा कट पलाय, लघु दिग्घ मींन जामहिं लखाय ।।८३२
तर रहे नयन तहाँ जलज तेम, जहाँ गिद्ध वलाका[4] हंस जेम ।
कातर भयदायक नदी-कूल, हम भाग चले भय दिसा हूल ।।८३३
मम सुनहु ग्ररज इह महाँराज, कुल दाँनव कौ ह्वै है ग्रकाज ।
कालका-नार दीसत कुढंग, जिह जीत सकै येको न जंग ।।८३४
बल स्याँम[5] उपाय बचाय बंस, परचावहु काली कौ प्रसंस ।
देवी तै जाचहु ग्रभय-दांन, पुन रहे सेख जिह बचै प्राँन ।।८३५
सुन ग्ररज पलायन की सधीर, वढ क्रोध सुंभ वोल्यौ सुबीर ।
मिल चले भाग डर देख मीच, नन करहु भगोरे वात नीच ।।८३६
हारकै त्रीया ग्रागे हड्डूड, मुख जाय दिखावैं कहाँ मूड़ ।
ध्रुव रहिहै जातै वीर-धर्म, करहैं हम सोई उद्ध कर्म ।।८३७
जय होय पराजय काल जोग, संमृथ कौं नाँहिन हरक सोग ।
नृप सुंभ दीयौ ग्रातुर निदेस, बुलवाय रक्तबीजहिं बिसेस ।।८३८
त्रीय पकर जाय लावहु तुरंत, वँह पौरुख जाँनहुँ ग्राद-ग्रंत ।
द्रग देखहु जैसौ करहु दाव, भाव-जुत होय ग्रथवा ग्रभाव ।।८३९
ग्ररजी लख मुरजी करी येह, समुझहु जन भूपत उर सँदेह ।
करहूँ मन बंचत तोर काज, मम पौरुख देखहु महाँराज ।।८४०
सज हयदल पयदल सुभट संग, रथ चढचौ जाय रस वीर रंग ।
वढ चलौ खेह डंम्मर विताँन, भुय ग्रंबर लोँ सूझै न भाँन ।।८४१

---

१ तूंबा । २ जोंक । ३ पिंडली । ४ बगुला । ५ स्वामी ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

आडंबर वाजन की अवाज, गरजै जिम संबर मेह गाज।
वाहनी रही कछु दूर वाट, ठाढी गिर अंबा लख्यौ ठाट ।।८४२
कीय तहाँ संख-वाँनी करूर, प्रतिधुनि तहाँ वाढी दिसन पूर।
वढ प्रवर अग्ग पूछी सुवात, देवी कहा हमकौं भय दिखात ।।८४३
नहि फटत भुजांतर संख-नाद, बिसराय देहु दनु वयर-वाद।
निकृष्ट धुँम्रलोचन नहीज, बरबीर पिछाँनहु रक्तबीज ।।८४४
डरपोक न देखे समरदीन, पर काँम परहिं मम भुजा पीन।
नहीं काँम-सास्त्र तूँ पढी नार, समुझत कछु नाँहिन रस सृंगार ।।८४५
पारावत पंखी लखहु प्यार, नित रहै संग नर और नार।
पति करहु सुंभ त्रीय न्याय पेख, रुद्र विध विस्नु परिआय रेख ।।८४६
देखहुं संग नारी त्रहू-देव, भल समुझहु नारी पुरख भेव।
उत्तर सुन देवी दीयौ येम, निज हृदै बीच सोइ अभयनेम ।।८४७
पन कीनौ सिसुतापन प्रभाव, कर दयौ दूत संग हो कहाव।
जीतै समर्द सोइ बली जाँन, पुन करहू तातै ग्रहन पाँन ।।८४८
भय आवत तो कँहि जुद्ध भाय, पाताल दनुज जावहु पलाय।
है हीय मै जो कछु जुद्ध-हाँम, कीजियै बीर अवदात काँम ।।८४९
इह सुनत आग पर जरेउ अंग, अतसय अमर्ष वाढयौ उमंग।
कर लस्तक मुष्टी गहि करार, टंकार धनुष भय जुद्ध त्यार ।।८५०
तद्दल क्षुरप्र चल दिग्ध-तीर, भई अंतरीक्ष जहाँ इधक भीर।
देबी सिर छाया सर दिखात, आषाढ़ मनहु वरखन अघात ।।८५१
सबहिन सर छंडे येक संग, भयकार भोम मानहु भुजंग।
कोडंड अंबका ताँन काँन, बाँनन तै काटे असुर बाँन ।।८५२
तन दीये प्रवर तहाँ ताक-ताक, कीय रक्तबीज मुर्छंत कजाक।
मुरछागत देख्यौ जुद्ध माहि, तिह सैनक बोलत त्राहि-त्राहि ।।८५३
क्रंदत अबाज सुन सुंभ काँन, है रक्तबीज कछु जुद्ध-हाँन।
दल जाहु वीर काँवाज दूठ, रन राचहु चंडी रही रूठ ।।८५४
पाछैन न धरहू नैंक पाव, देखहु समर्द ज्यूं रचहु दाव।
बिच आये मंडल समर वीर, सब अस्त्र-सस्त्र धारक सधीर ।।८५५
घंटा-रव देवी करीय घोर, विकराल संख-धुन किय बहोर।
टंकार चाप भइ जद्ध त्यार, दस-दिसन खाय पब्बय दरार ।।८५६

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

विसतारौ काली मुख विसाल, करकस रद जंभा जुत कराल ।
पलभक्ष रह्यौ आँनन पसार, अरि भक्षन कौं अंतक अगार ।।८५७
कल-कल रव पहुँच्यौ असुर काँन, सज भयौ जुद्ध ह्वै सावधान ।
मुरछागत जाग्यौ टरी मीच, वढ रक्तबीज रन भूँम बीच ।।८५८
देवी सौं ताकत घाव-दाँव, पै क्रस्ना हटत न येक पांव ।
जहां असुर कदंबक रहे जूंट, चंडी धनु सायक रहे छूट ।।८५९
विध आद सक्तीयां कर विचार, पर कर जुत वीरासन पधार ।
मुखच्यार सुखद वाहन मराल, मध हृदय सोह रुद्राक्ष-माल ।।८६०
कर सूत्र कमंडल सुभग-काय, सो ब्रह्मांनी कहीयत सुभाय ।
वैस्नवी गरुड़-वाहन वरिष्ठ, तन स्यांम गदाधर चक्र तिष्ठ ।।८६१
भुजच्यार संख अरू पद्म भाय, सिर पीतांबर ओढै सुभाय ।
संकरी तीन लोचन सुसोह, अतसय अमर्ष संडहि अरोह ।।८६२
मुर सीर्षक आयुध कर मझार, अहि कंकन राजत कर अधार ।
भासत प्रदीप्त अधचंद्र भाल, मुख स्वेत वरन गल रुंड-माल ।।८६३
इंद्रानी आई गज-अरोह, कर वज्र धरै उर अधिक कोह ।
बहुरत्न अलंकृत तन विसाल, अदभूत रूप आई उताल ।।८६४
कात्यायनि वाहन नीलकंठ, उरजस्व इधक उर समर अंट ।
कर आयुध सक्ती अत करूर, गति चपल विपुल पौरुष गरूर ।।८६५
वाराही वाहन महिष वीर, दाढें कराल जिह रद कुढीर ।
सब भांत नारसिंघी समथ्थ, है अधिक अस्त्र जिह करज हथ्थ ।।८६६
जमराज सक्ति जाजुल्य जुद्ध, अत विकट लीयै कर-दंड उद्ध ।
कीनैं असवारी धीरकंध, सुर-संकट मेटन के समंध ।।८६७
कऊबेरी उतकट जुद्ध केर, वारुनी पधारी तिहीं बेर ।
सज अस्त्र-सस्त्र संग लीयै सैन, दनुजात पराभव समर दैन ।।८६८
उर देवी लख बाढचौ उछाह, दनुजात विलोकै जरत दाह ।
सुर-वृंद लखत आनंद संग, उर-विजय-आस बाढी उमंग ।।८६९
हर आये सुर-कल्याँन हेत, खित जहाँ चंडका वीर खेत ।
वीनती करी इह तिहीं बेर, देवी अब किह विध करत देर ।।८७०
कीजीयै सिद्ध अब अमर काज, सब खेत प्रहारहु दनु-समाज ।
निःसुंभ-सुंभ कीजै निपात, मुर नर मुनि निरभय करहु साथ ।।८७१

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जिग जोग विप्र-क्रम[1] होम जाप, थिर करहु बेद-मुरजाद[2] थाप।
क्रसि-कर्म प्रजा वाँनज्य-कार[3], चर-अचर सुखी ह्वै वरन च्यार ।।८७२
सिव-वचन सुने देवी सुस्राँन, भइ रौद्ररूप दरसत भयाँन।
प्रतछाया निकसी अत प्रचंड, चंडाक कलेवर तैं जु चंड ।।८७३
सत सिवा जेम सोइ करत सद्द, विकराल रूप बाँनी विहद्द।
प्रतिछाया देवी कह्यौ पेख, विधजुक्त नीत बाँनी बिसेख ।।८७४
करहू सिव मेरौ दूतकर्म, मंद नृप कहहु समुझाय मर्म।
इंद्रासन पावहिं देव ईस, धरीयै न धंख उर दनुज धीस ।।८७५
सुर लहै भाग मख काज सिद्ध, सब दिसापाल पावै समृद्ध।
जो चाहत दाँनव कुसल जाँन, पाताल मग्ग कीजै प्रयाँन ।।८७६
समुजै न बसीठी न्याय-संध, मारहु काँमातुर नृप मदंध।
हम चहत न्याव इह कहत हेत, खावँहि स्रंगाली कीन खेत ।।८७७
निःसुंभ-सुंभ जुग भ्रात नाँम, हीय बीच वँहै कछु जुद्ध हाँम।
आयुध गहि सनमुख क्यौं न आय, प्रहरन प्रचार मंडै जु पाय ।।८७८
इह सुनी नीत चंडी उदंत, कहि जाय सबै तहाँ उमा-कंत।
हम त्रपुर नास कीनौं हकार, सो भये दूत तेरै सुधार ।।८७९
तज देहु स्वर्ग आसुर तुरंत, पाताल सुधारहु नीक पंथ।
मारहिं न त चंडी जुद्ध मांहि, कुल भखहिं गृद्ध स्रंगाल काय ।।८८०
निश्चय इह देवी लह्यौ नेम, आयकै कही हम सुनी येम।
कहि आये संकर इहै कथ्थ, समुझाय न्याय-रीतहु समथ्थ ।।८८१
प्रतिछाया देवी नाँम पाय, सिवदूती सोई कहीयत सुभाय।
सिव-बाँनी जाँनी दनुज सुंभ, द्रढ़ आस्रव कीनौं छाय दंभ ।।८८२
देवीतै तजहूँ हि द्वेख, रन रचहु वीर परीआय रेख।
सब अस्त्र-सस्त्र धारै सधीर, वीरासन आयौ महाँबीर ।।८८३
कोदंड प्रतंचा ताँन काँन, वरखा तहाँ कीनी असह[4] बाँन।
कालका गदा लै खग्ग कूंत, अत अप्रल जुद्ध कीनौं अभूत ।।८८४
दांनव-कुल खंडत समर दाय, खल मिलै जाहि लै पकर खाय।
रन-चतुर ब्रहमाँनी रिसाय, अंजुलक कमंडल जल उड़ाय ।।८८५

---

१. ब्राह्मण-कर्म। २ वेद-मर्यादा। ३ व्यापार-कार्य। ४ असंख्य, असह्य।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ग्राहत दनु प्राँनन तज गड्डख, मारत जंभा जिम मूक-मूक।
तहाँ सिवा खरग धारै त्रसूल, झुक रही समर लै सक्ति झूल ।।८८६
उरजस्व मंड संडहि अरोह, कर रही जुद्ध उर अधिक कोह।
वैस्नवी रही दाँनव बिडार, पर देत गदा चक्रही प्रहार ।।८८७
धकपंख[1] करत जहाँ जुद्ध धाव, दाँनव कौं मारत समर दाव।
इंद्रानी ऐराप(व)त अरोह, दारुन रन दाँनव रचत द्रोह ।।८८८
गहि सुंड दंत मारत गजिंद्र, दल वज्र प्रहारत दाँनविंद्र।
वाराही थुथनी जिह विसाल, कर रही जुद्ध दुर्धर कराल ।।८८९
ह्वै जहाँ नारसिंही हरोल, विकराल-रूप तहाँ सद्द बोल।
भुज-कंटक संजुग करत भेट, चत्वर रन मारत दनु चपेट ।।८९०
हुंकत सिवदूती अट्टहास, गहि चंडी दाँनव करत ग्रास।
मँहमाय कँवारी चढ मयूर, कोदंड बाँन छंडहि करूर ।।८९१
बारुनि सक्त पौरुख विथार, दारुन रिपु मारत पास डार।
समुदाय सक्ति संगर समथ्थ, कर क्रोध उचारत वीर कथ्थ ।।८९२
देवी बहु मारे पूर्ब-देव, भाखै को संख्या जास भेव।
भागी बहु सेना दनुज भीर, पग मंडे नाँहिन सही पीर ।।८९३
कहि कातर वाँनी करत कूक, आसुर भये वासुर[2] ज्यौं उलूक।
सुन कातर-बाँनी जहाँ सोर, बढ रक्तबीज वाचा बहोर ।।८९४
बर आयुध धारै कवच व्यूढ़, ह्वै रथारूढ़ आयौ हड्डूड।
वरदाँनी-बाँनी कहि बिसास, परठये दनुज सब आस-पास ।।८९५
छित परै रक्त जहाँ बूंद छूट, रन रक्तबीज सोई भिरै ऊठ।
संकर वरदायक महासूर, कर कोह जद्ध मंडहि करूर ।।८९६
कालका चंडका हथन काज, सो आयौ भट लीनै समाज।
वैस्नवी हकारचो जुद्ध बेर, गहि गदा मग्ग रोक्यौ सुघेर ।।८९७
कीय चक्र-मार तहाँ अत करूर, प्रहरन तन लागे घाव पूर।
रत स्रवत जहाँ बहु लाल रंग, सज गैरक धारा सलल स्रंग ।।८९८
जहाँ रक्त-बूंद धर परत जाय, सोइ रक्तबीज ऊठत सुभाय।
भिर जुद्ध करत सोई भयाँन, सब रूप रंग येकहि समाँन ।।८९९

१ गरुड़। २ दिन।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सब रक्तबीज-मय भई सृष्ट, दीसत वीरासन येक द्रष्ट।
इंद्रांनी पँहुची जुद्ध आय, पव मार दई जहाँ मंड पाय ॥६००
दारुन ब्रह्मांनी ब्रह्म दंड, खल मारत हाँकीय खंड-खंड।
संकरी तेज ताड़त त्रसूल, हथ कीयौ जाहि तन घाव हूल ॥६०१
कीय क्रोध नारसिंघी करूर, वपु तर्ज कर्ज[1] डारचौ विलूर।
वाराही जंभा रद विडार, सक्ती कऊमारी दिय सँभार ॥६०२
झुक रही सक्तीयाँ झुंड झूँम, भयकार इधक रन लखत भूँम।
येक तैं रक्तबीज ही अनेक, कर रहे जुद्ध दारुन कितेक ॥६०३
सर-वृष्ट करत वद्दर-समाँन, इक रूप भयौ धर आसमाँन।
द्रग जिते रक्तबीज ही दिखात, सब लरत सक्तीयाँ तिनँहि साथ ॥६०४
घट ताही मिल-मिल करत धाय, सरसावत दाँनव त्यूँ सिवाय।
जहाँ रक्तबीज लख इधक जंग, सविषाद देव विस्मयत संग ॥६०५
मंडल रच देवी करत मार, ह्वै रक्तबीज ऊठत हजार।
कालका चंडका छिव करूर, हैं और सक्तीयाँ तऊ हजूर ॥६०६
निकृष्ट कबै इह होय नास, जय होय पराजय किधौं जास।
सुर चिंतातुर देखे सकोय, सबही गत देवी लखी सोय ॥६०७
अंबका कही क्रस्ना उचार, विस्तार करहु आंनन विचार।
अवकास बीच मुख देहु येम, जिह बीच समावैं दनुज जेम ॥६०८
घालहिं हम ताकौं अंग धाय, सोई रुधर पाँन करहू सुभाय।
कीय काली अंबा कह्यौ काज, सब आंनन दनु लीनौं समाज ॥६०९
तहाँ सस्त्र-अस्त्र मारे तमाम, काली कौ अद्भुत देख काँम।
बैराट-रूप धारचौ बिचार, आँनन विसाल अंतक अगार ॥६१०
विसतार करचौ इह बिध बिसेस, सब लये बीच नहीं रहे सेस।
आकर्ष स्वास सत्ता उपाय, आँनन बिच दाँनव गये आय ॥६११
सक्तीगन लागी समर संग, अत घाव दाव मारत उमंग।
आग्नेय परत मुख बीच आय, चंडी सोई लीलत इधक चाहि ॥६१२
तब घटचौ पराक्रम दनुज तेम, जब बढी सक्तीयाँ प्रलय जेम।
मूसल कुठार सर लगी मार, सब आसुर कौ कीनौं सँघार ॥६१३

---

१ नख।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बढ करचौ जुद्ध आसुर बिसेस, पुज्यौ न दाव आये न पेस।
बाढे सोई क्रत मर रक्तबीज, चंडका भक्ष तैं गये छीज ।।६१४
लेलये किते पलभक्ष लील, चौंचन तै लोंचत स्वेत चील।
वालेय रवन हय गय विहंड, झर फरत गिद्धनी भखत झुंड ।।६१५
घट कटे जूट भट समर धाय, खेंचत बिडाल फेरंड खाय।
आतुर केऊ कातर भाज आय, पिंजल[1] विहस्त नृप लगे पाय ।।६१६
अकुलाय समर भाखी उदंत, आंखन तैं देखी आद-अंत।
मारकै रक्तबीज ही मदंध, केऊ दानव के कीय छेद कंध ।।६१७
अंबका संग सत्ती अनेक, येकतै पराक्रम इधक येक।
इक प्रथम सिंघ आई अरोह, दाँनव-कुल कीनौं असह द्रोह ।।६१८
हन वीर धुम्रलोचन हकार, छित चंड-मुंड की परी छार।
जब रक्तबीज तै भयौ जंग, सुर मिली सत्तीयाँ आय संग ।।६१९
कोऊ हंस चढी कोऊ धीरकंध, चढ गरुड़ दनुजकहि चिंध-चिंध।
आई[2] कोऊक केकी अरोह, संड पै चढी कोऊ मंड छोह ।।६२०
गह पूर पीठ बैठी गजिंद्र, देखी हम सुनीयैं दानविंद्र।
नर प्रष्ठ चढी कोऊ लखी नार, प्रेत की प्रष्ठ कोऊ बल प्रचार ।।६२१
छह आनन-आनन कोऊक च्यार, नव दून भुजा नीकै निहार।
कोऊ च्यार भुजा सत्ती करूर, कोऊ अष्ट नयन द्वादस करूर ।।६२२
कोऊ तीन नयन भृगुटी कराल, मदमत्त गरै जिह रुंडमाल।
कर-दंड कमंडल लीयैं केक, कर-गदा पद्म आयुध कितेक ।।६२३
कर कस-त्रसूल कर वज्र कीन, पासी कर आयुध सक्ति पीन।
कोऊ जंभा आयुध रद कुदार, कंटक-भुज आयुध अत करार ।।६२४
जग बीच देवता जिती जात, देवीयाँ तिती संगर दिखात।
तामैं इक काली दनु क्रतंत, वाकै न पराक्रम आद-अंत ।।६२५
रन देख्यौ तैसौ कह्यौ रूप, भावै सोई कीजै काज भूप।
कालका देवीयाँ भरी क्रुद्ध, असुरन तैं पौरुख लख्यौ उद्ध ।।६२६

दोहा

रक्तबीज माया रचत, सब ही भखे समेट।
काली दनु कीने कवल, पचे सकल बिच पेट ।।६२७

---

१ व्याकुल। २ मू. प्र. आई सो।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गह्यौ मोद उर देवगन, निहसत दुंदभ नद्द।
जय जय बोलत जाहि जस, वरखत सुमन विहद्द ।।६२८
उर व्याकुल फरकत अधर, दाबत फिर-फिर दंत।
सुंभ नृपत बातैं सुनी, चकत होय मन-चित ।।६२९
बोल्यौ नृपत विचारकै, जाँनत है मम जीय।
सुर-जेता संग्राम कौ, ताहि बकारत तीय ।।६३०
चंड-मुंड हन चर्चकी[1], धुम्र-नयन कर ध्वंस।
रक्तबीज पीनौं रुधर, प्रहरन भार प्रसंस ।।६३१
सवकौ वैर बिसारकै, प्रहरन दैहू प्रष्ट।
सूरबीर सुनहैं समुझ, कहहैं मोर अपकृष्ट ।।६३२
करी सुरन तै अपक्रीया, जाँनी सकल जिहाँन।
नारी तैं रन मैं नमूँ, होय सकल जस हाँन ।।६३३
संन्निधाँन जाचत समर, ह्वै प्रतिलोम हकार।
काली कौ करहूँ कदन, न्याव इही निरधार ।।६३४
जाँनहु मत-अस मत जनँम, सूर पुरस कुल सोय।
करहूँ नहीं कातर-करम, होनी होय सु होय ।।६३५
कहि निसुंभ येतौ कहा, सोच करहु नृप सुंभ।
गोरंगन क्रस्नंगना, दुहुँन उतारहुँ दंभ ।।६३६
जुद्ध करन कौं उद्धजन, सैन करहु मम सथ्थ।
तो हित लावहुं दिव्य तीय, हन काली कौं हथ्थ ।।६३७

छंन्द त्रोटक

द्रिढ भूप कनिष्ट निदेस दयौ, लग पाँयन सीस चढाय लयौ।
कर बाहुल कंकट टोप कसै, तुदत्राँन सँवारीय सार त्रसै ।।६३८
छर[2] खग्ग गही परवार[3] चढी, मय कंचन रत्न अमोल मढी।
बड खेटक खग्ग सु पीठ बनी, सोई कंचन फूलन सोह सनी ।।६३९
कटि केहर बन्ध कलाप करचौ, भल तिछ्छन बाँनन भार भरचौ।
अंग दछ्छन त्यों जमदाढ अरी, जगमग्ग दुपख्ख जराव जरी ।।६४०

---

१ चंडी। २ तलवार की मूठ। ३ म्यान।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

असु पुत्रीय फेर कटीर अटो, घन जास अमोल लुहार घटी।
धर धंख सरासन कंध धर्यौ, कल काज निसुंभ प्रयान कर्यौ ।।६४१
मदमत्त चले गज जुथ्थ महा, गिर से उपबाह्य[1] सनाह्य गहा।
झरना जल ज्यों तलडाँन झरैं, केऊ सुंड उतंड वमुंथ करैं ।।६४२
गुड़[2] सभ्झत व्याल कराल गनौं, मजबूत दियै जमदूत मनौं।
वपु मेचक उज्जल दंत बढै, अगवाँन घटा बक जाँन उड़ै ।।६४३
छव वर्तक[3] की बंगरी चमकै, दुति दाँमनि ज्यों प्रतभा दमकै।
भद के नद ज्यों गल गज्ज भरै, सोई सैंन ऊवीत सुमग्ग सरै ।।६४४
खननाहट अंदुक[4] पै खनकै, भननाहट भौंर ज्युहीं भनकै।
दरसै गह नैंनन दोलन मैं, कर नागज[5] रंग कपोलन मैं ।।६४५
केऊ ईखायदंत परीतन के, जुत रंग-बरंगहु जीतनके।
केऊ मत्कुन खूनीय त्यों करके, ध्रुव जास उतंग बड़े धरके ।।६४६
वयपोत[6] किते गति तेज बहै, वयवस्क[7] किते रन मग्ग बहै।
वयकल्ल[8] किते दल अग्र बढै, चिब हस्तप देत कलाप चढै ।।६४७
परछाँहि निचूलन छूट पटा, घनकारीय साँमन जाँन घटा।
रव घंट बजै घरीयारन ज्यौं भर प्रष्ट हवद्दन भारन सौं ।।६४८
करतै तरू तोर तमग्ग कढै, वपु येक तै येक प्रभिन्न बढै।
बढ बाज पवीनत[9] पख्खरीया, जर तारीय जीन सजे करीया ।।६४६
मुख जंत्रन सार सुधार मुखा, रसमी असवार विचार रुखा।
धनु कंधर जाँन विवाँन धरा, सझराँन ऊडाँनन ऊँच सिरा ।।६५०
रव-वंसीय साद्रस प्रोथ रजै, लख काँनन केत की फाँक लजै।
चल-धावन चंचल चातुर यौं, पलटै पग आतुर पातुर ज्यौं ।।६५१
धर पाँव उलट्ट पलट्ट धरै, कुलटा जनु नैंन कटाछ्छ करै।
उझकै पग गात समेत उड़ै, चकरी जल मीनक ऊद्ध चढ़ै ।।६५२
तड़ता गत ज्यों तिरछे तरकै, फिर फाल लँगूलन ज्यों फरकै।
बहु कर्कर पिंगल बर्न बने, घट रंग खुँगाह उराह घने ।।६५३

---

१ राजा की सवारी योग्य। २ हाथी की झूल (पाखर)। ३ पीतल। ४ सांकल। ५ सिंदूर। ६ दस वर्ष की आयु के। ७ बीस वर्ष की आयु के। ८ तीस वर्ष की आयु के (वयकल्प)। ९ जीन सझे।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कपला केऊ नीलक रंग कढे, चिब देत कुलाह सवार चढे।
वरूथाँन रुहालक मग्ग बहै, गति चंचल पाटल रंग गहै ।।६५४
केऊ रंग कीयाह सुरूहक के, तन सोन हलाहल रंगत के।
हय राजत केतक रंग हरी, सभ सेन तुरंगी पंथ सरी ।।६५५
धुर धोरत चाल सुच्यार धरै, सिखी कंक करोड़क वभ्र सरै।
गत केक वलोठ[1] तुरंग गहै, बढ धाराय प्लूत अनूठ बहै ।।६५६
अत वेग उतेजत चाल उड़ै, वर वाज ऊतेरत चाल बढै।
हय धाराय पंच प्रकार हके, तेऊ बाढीय चंडीय जुद्ध तके ।।६५७
मयमत्त क्रमेलक भुंड मिलै, गत चंचल गाजत नद्द गलै।
भर पिंड प्रचंड प्रासाद भती, जट धारीय जंगल केर जती ।।६५८
जुग आसन प्रष्ट पवीन जमै, कस अंग दुतंगन मग्ग क्रमै।
थुंथनी लघु स्रौंनन थाटक के, कुलनासन दिग्घ क्रकाटक[2] के ।।६५६
वपु मिस्रत रंग मजीठ बने, घट मेचक रंजन रंग घने।
उड़ चालत राँनक माँन अटा, घर गंध्रव दीसत जेम घटा ।।६६०
जुवराज[3] के सैनक संग जुरे, भल दीसत लोचन खून भरे।
केऊ विस्वर चक्रीय संग क्रमे, जिह लायक पीठ सवार जमे ।।६६१
भट कंकट-व्यूढ़ उछाह भरै, जंघ-त्राँन तथा सिरत्राँन जरै।
भुज-त्राँन सुधार नागोद भिरै, केऊ जालका सज्जत अंग करै ।।६६२
फरसा-धर प्रासक वीर फबै, सभ साक्तक यष्टक धीर सबै।
कर खग्ग लीयै कोऊ अग्र क्रमै, जमदाढ़ क्रपालका स्रौंनि जमै ।।६६३
सिल मूसल सूल लीयै स्रबला, परचंड पराक्रम के प्रबला।
धनु धारीय प्रोथ कटीर धरै, सर येखन लिप्त प्रदीप्त सरै ।।६६४
क्रंतहस्त विसारद जुद्ध-कला, पंच आसन डाव रचै प्रबला।
पग बाँम तै दछ्छन अग्र परै, धर द्वैकर अंतर वक्र धरै ।।६६५
आलीढ लखौ इह आसन कौं, अरी साभन जुद्ध अभ्यासन कौं।
इक हाथ कै अंतर पाँव अरै, सोई राख बराबर जुद्ध सरै ।।६६६
वयसाख सु आसन येह वदै, सोइ वीर विसारद बुद्धि सधै।
पग दछ्छन तै जुग हस्त परै, धर बाँम जु पाँव सुधार धरै ।।६६७

---

१ झुकते मुख से। २ ऊँट। ३ निसुंभ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

इह प्रत्यय लीढ सु आसन यौं, इह भेद लहै गरू भासन यौं।
समपाद सु आसन येह सुनौं, द्रढ राख बराबर पाव दुनौं ।।६६८
पग आड़ रू दौढ़ सँवार पहै, कवी मंडल आसन येह कहै।
भल आसन पंच प्रकार भजै, सब रीत सरासन की समुझै ।।६६९
कृतहस्त विहंगम बेध करै, धर धीरज मस्तक हस्त धरै।
गहि बाँन कबाँन्तन प्रांन गही, रन थाँन मथाँनन जाँन रई ।।६७०
वपु पौरुष येक तै येक बढै, मदमत्त महा रस वीर मढै।
बज आंनक भेर भयाँनक त्यों, वर वीर बढै मुख बाँनक त्यों ।।६७१
चल प्यादीय फौज चँदोलन मैं, हय-सादीय फौज हरोलन मैं।
रथं बीच दियै जुवराज हु कौं, सज आयुध जुद्ध समाजहु कौ ।।६७२
वढ डंम्मर खेह विताँन वन्यौ, सम अंबर-संबर मेध सन्यौ।
मग चालत रथ्थ धुजा मुरकी, फिर लोचन वाँम भुजा फुरकी ।।६७३
सुर देखत बद्दर ओट समा, अह काल छई जनु रात अमा।
कर चाप निसुंभ टँकार करै, भल आवत मग्ग उछाह भरै ।।६७४
कहिकै हँस देवीय कालीय कौं, सज सैन लखौ बल सालीय कौं।
सजकै तन मूरख साँगन कौं, मिलकै मृतु आवत माँगन कौं ।।६७५
इह आस की फाँस कै बीच अरै, कर चाप लीयै सर-मार करै।
हन बाँनन कौं अबही करहूँ, करकै जुध देव सुखी करहूँ ।।६७६
कर चाप लीयौ इतनी कहिकै, गुन मस्तक बाँन दये गहिकै।
सिंघराँन सँवारन गौंन सरचौ, प्रतना दनु पै घुरराय परचौ ।।६७७
जल सागर मांनहु सैंन जमी, कहुँ जोग प्रभंजन पोत क्रमी।
घन दाँनव दीसत जेम घटा, चिब देवीय राजत रूप छटा ।।६७८
भर ताल ज्युही रन ताल भरै, करटी[1] मनु बीच बिहार करै।
थल आसुर दीसत चक्र घिरै, पर जीवन जाँन बघूल परै ।।६७९
भिर जंभक मल्लक सिंघ भखै, तिम देवीय गाहत खग्ग तकै।
केऊ बाँनन मार निपात करै, पर जुथ्थन लुथ्थ पै लुथ्थ परै ।।६८०
कीय सैनक त्रासत जुद्ध-कला, झमकै रन देवींय आग-झला।
भट दाँनव जुद्ध उछाह भिरै, ज्वल दीप पतंग ही जेम जरै ।।६८१

---

१ हाथी।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

धर धीरज के थिर पाँव धरै, जिम साखीय व्रंद दवाग जरै।
ललना तहाँ आय निसुंभ लखी, रचना अदभूत विचार रुखी ।।६८२
चख हल्लक दीठ लखै तिरछी, बढ दाँनव घाव बहै बरछी।
रसवीर वीभछ्छ भयाँन रटी, व्रती राचत तांडव आर-भटी ।।६८३
पुन रीभकै दाँनव प्राँनन कौं, बरसाय लहै धनु बाँनन कौं।
जीय आस तजी रू निसुंभ जुरचौ, धनु ताँन प्रतंचन बाँन धरचौ ।।६८४
जगतंब कही मुसकाय जहाँ, करकै द्रढ़ आस्रव सत्य कहाँ।
अधलोक प्रयाँन करौ अबही, सबही परवार समेत सही ।।६८५
ऊर्धलोक की आस जो होय अखी, मंडहु रन आसुरराय मुखी।
दोऊ रीत अभै-पद देवन कौं, भल चित्त सुनौं मम भेवन कौं ।।६८६
जुवराज उदंत सुनी जहँवाँ[1], तमक्यौ तन द्वेष जरचौ तहँवाँ[2]।
गम पायकै खेटक खग्ग गहीं, जगतंब खरी चढ़ सिंघ जँहीं ।।६८७
दहु के सिर ऊपर दाव दयौ, लख अंबका घाव बचाय लयौ।
बढ घाव अपूरब दाँव वन्यौ, हट देवीय ताहि कुठार हन्यौ ।।६८८
लग कंधर तौऊ न नैक लटचौ, जीय आस तजी फिर जुद्ध जुट्यौ।
कर देवीय घंटाय नाद करचौ, भयदायक दाँनव स्रौंन खरचौ ।।६८६
सुरराय करचौ तहाँ पाँन सुरा, अवमर्द विडारन कौं असुरा।
उर भेषन देव अदेवन सौं, भय जुद्ध तहाँ बहु भेवन सौं ।।६६०
सब भुंड की भुंड उठी सगती, मिल दाँनव मार करै मुगती।
कोऊ दंड प्रहार अदेवन कौं, दीय मोद सबै विध देवन कौं ।।६६१
तहाँ वैस्नवी चक्र लीयै तमकी, चपला जनु स्याँम घटा चमकी।
कहु सक्तीय वज्र प्रहार करै, पव वासव पब्बय जाँन परै ।।६६२
त्रपुरा-रिपु चोट त्रसूल तकै, दल दाँनव आग भला दहकै।
कऊमारीय सक्ति-प्रहार करै, भुजकंट नृसंघीय जुद्ध भिरै ।।६६३
जुर संगर सक्ति परंजन की भट दाँनव के घट भंजन की।
जहाँ रोख वराहीय जुद्ध जुरी, अत जंभक मारत सैन अरी ।।६६४
अकुलाय अदेवन सज्झ अनी, बढ देवीय ता सम रार बनी।
चल बाँनक-बाँनन भाँन छयौ, बरछाँन क्रपाँनन घाव बह्यौ ।।६६५

---

१ मू. प्र. जहांवां। २ मू. प्र. तहांवां।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दहुँ ओर तैं हूलन सूल दुरै, कहुँ चक्रन-चक्रन रार करै।
स्रबला स्रबला प्रबला सझकै, उठ आग झला बिजुला अजकै ।।९९६
केऊ अस्त्रन-सस्त्रन रार करै, भल जोगन रक्तन पत्र भरै ।
तन त्राँन तथा सिर त्राँन तुटै, फरसाँन भुजांतर सार फटै ।।९९७
कोऊ घाव रचै करवालन सौं, भचकै केऊ व्यालन-भालन सौं ।
भट दाँनव पिंड प्रचंड भिरै, जहाँ देवीय झुंडन-झुंड जुरै ।।९९८
तन तंड वयंडन सुंड तुटै, अरि खंडत मुंडहु रुंड उठै ।
घन जाँन उमंड-घुमंड घुरै, कल दंड तहाँ रव चंड करै ।।९९९
भट जूह प्रचारत मूह भिरै केऊ कातर आरत कूह करै ।
बलसालीय कालीय कोह बढचौ, मिल ज्वालीय मालीय रूप मढचौ ।।१०००
जहाँ जुद्ध उतालीय चालीय ज्यों, घट दैत क्रपालीय घालीय त्यौं ।
भुज-दंड विसालीय फौज भखै, रन तालीय पालीय नाँहि रुकै ।।१००१
वरसालीय रैन अमा विहरै, क्रम ऊद्ध करालीय जुद्ध करै ।
पटकै कहु सिंधुर सिंधुर पै, झटकै रथ त्यों रथ पै झरपै ।।१००२
गटकै केऊ दाँनव मेल गरै, सटकै केऊ कातर पंथ सरै ।
हटकै केऊ संमुँह वीर हलै, मटकै केऊ देह न खेह मिलै ।।१००३
रटकै केऊ जुथ्थन-जुथ्थ रुलै, दटकै भट दारुन हौस डुलै ।
ठटकै गहि आयुध अग्ग ठिलै, नटकै जिम नाँचत अंगनि लै ।।१००४
अटकै केऊ सम्मुह आवन मैं, बटकै केऊ बैर बढावन मैं ।
चटकै सोई आय गहै चुगटी, भटकै चख आग चढी भृगुटी ।।१००५
खटकै खग खप्पर वाढ खिरै, लटकै सिर कंधर हूँत लुरै ।
कटकै कहु कालज की किरकै, फटकै कहु फिप्फर हू फरकै ।।१००६
जमदाढ़ हु खंजर वाढ़ जुरै, केउ कुंजर पिंजर पार करै ।
झरपै केऊ बाज झपेटन तै, फिर ताहि प्रहारत फेटन तै ।।१००७
रथ स्वारथ दारत वाज रथी, मिल घाँन मथाँनन फौज मथी ।
भभकै रव स्रौंनत त्यों वभरै, झरना गिर गैरक जाँन झरै ।।१००८
कहुँ जोगन, झुंडन-झुंड क्रमै, रच डाकन साकन रास रमै ।
तहाँ भूत वितालन तालन लै, मुंडसाली जहाँ रुंडमालन लै ।।१००९
किख कोक मृघादन सद्द करै, फिर बोलत लोल फिरंड फिरै ।
पल भार लीयै गल पंखनीयाँ, सरसात चुरैलन संखनीयाँ ।।१०१०

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पल ग्रास करै कोऊ स्रौंन पीयै, हरकै-करखै बहु मोद हीयै ।
धर पुरब देवन छाय धरा, कट खाल कंकाल कपाल किरा ॥१०११
रन भूंम भयंकर रूप रचो, मिल आसुर कीन रू गौद मची ।
घट घायल दाँनव घूंमत हैं, भुक केक कबंधहु भूमत हैं ॥१०१२
कल कालीय फौज नियात करी, पर लोथन ऊपर लोथ परी ।
बल देख घटचौ दनुराव बढचौ, कर अंतक रूप कराल कढचौ ॥१०१३
थित संग्र ऊतंग सु अंग थटै, पंच दून हजार भुजा प्रगटै ।
धर आयुध तिछ्छन धारन कैं, कर कोह बढचौ रन कारन कैं ॥१०१४
अत सद्द भयंकर त्यों उचरचौ, भर पौरुख छायकै आय भिरचौ ।
वर सस्त्रन-अस्त्रन रार बढी, चहुँ ओर धरा चकडोल चढी ॥१०१५
डगमग्गीय अद्रज कूट डुलै, भगमग्ग प्रलै जनु आग भलै ।
मंड देव विवाँन छये मिलकै, घट दाँनव घाव घने घलकै ॥१०१६
कर बाँनन जंग बिहाल करचौ, मदमत्त तऊ नहिं जुद्ध मुरचौ ।
अत तिछ्छन सार वहै अनीयैं, गिरकौं त्रन मारत ज्यों गनीयैं ॥१०१७
बढ आयुध वज्र समाँन बहै, अंग लागत फूल समाँन बँहै ।
वरखा मिल बाँनन की बरसै, सिर पब्बय बूंद ज्युँही सरसै ॥१०१८
गहरै स्वर मेघ ज्युँही गरजै, वपु दाव प्रहारनतै वरजै ।
रचना रन राचत नाँहि रुकचौ, भट देवीय संमुह आय भुक्चौ ॥१०१९
तहाँ खग्ग मृगाधिप सीस तकी, सोई अंबका चोट वचाय सकी ।
कर अंबका खग्ग प्रहार करचौ, पर खग्गन-खग्ग सु पार परचौ ॥१०२०
गहि दाँनव गाढ त्रसूल गह्यौ, द्रग देखत ताहि गिराय दयौ ।
लग आग हीयैं फिर साँग लई, द्रढ काटकै ताहि गिराय दई ॥१०२१
कल दाँनव वज्र प्रहार करचौ, हटकै रन देवीय ताहि हरचौ ।
सबही भुज आयुध दुष्ट सभचौ, गहराय तहाँ भर सद्द गज्यौ ॥१०२२
अकुलाय कै देवीय जुद्ध भरी, प्रलयाँनल आग मनौ पसरी ।
भुजदंड प्रहारत रोस भरी, भुक अस्त्रन-सस्त्रन मंड भरी ॥१०२३
कर दाँनव दारत जुद्ध क्रमैं, रच आर भटी वृति रास रमैं ।
कर आसुर काट विहाल कीयौ, लख आँनन व्यूढ पसार लीयौ ॥१०२४
चित चंचल देवीय ओर चल्यौ, द्रढ मंडकै ब्रह्मीय दंड दल्यौ ।
तहाँ वैस्नवी चक्र प्रहारत ही, द्रुत दाँनव कैं वपु मार दई ॥१०२५

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

त्रपुरा तहाँ सूलन हूल तकी, जिह लागत दाँनव बुद्धि जकी ।
कर सक्रीय वज्र प्रहार कीयौ, हहराय निसुंभ प्रकंप हीयौ ।।१०२६
द्रुज जंभ वराहीय मार दई, भुजकंठ नृसिंघीय भेद भई ।
दीय मार क्रतंतीय दंडन कौं, खल चंड महाँबल खंडन कौं ।।१०२७
कऊमारीय सक्त प्रहार करी, ऊतपाटत भौ तहाँ दर्प अरी ।
तहाँ वारुजी और जुरी असरी, कर आयुध लै बहु मार करी ।।१०२८
कीय भार सकत्तीय[1] चंद्रकला, भुक वायवी संगर आग झला ।
कढ कालका खग्ग प्रहार कीयौ, हट जुद्धइ भार विदार हीयौ ।।१०२९
सिवदूतीय स्रौंन पीयौ सबही, तन ता निरजीव भयौ तबही ।
भख भैरवी जोगन भोग भयौ, लख डंकनी-संखनी खाय लयौ ।।१०३०
लहि सक्तिन मोद गुडेर लये, भल देख अनंदत देव भये ।
वरसावत फूल विमाँनन सौं, गहरै स्वर गंध्रव गाँवन सौं ।।१०३१
सब देवीय देव रिझाय सही, कर जोर नमे बहु क्रीत कही ।
जगतंब चरित्र पवित्र जथा, कबी 'बुद्ध' कही इह जुद्ध-कथा ।।१०३२

दोहा

जूझ्यौ समर निसुंभ जहाँ, सैन घटी बहु सूर ।
आये के कातर असुर, हरक नृपत हजूर ।।१०३३
सुंभ नृपत पूछी समुझ, बल निसुंभ की बात ।
कैसै तज आये कलह, भीरुक तज मम भ्रात ।।१०३४
करी अरज तिन जोर कर, भीरुक पिंजुल भेस ।
कीने व्याकुल चर्चकी, करकै कठन कलेस ।।१०३५
भिर संगर जुत चारु भट, भ्राता राज भुआल ।
सूते दीरघनींद सब, वीरासनहि विचाल ।।१०३६
सुंदर रूप स्रंगार सझ, भूषन आयुध भार ।
जुद्ध जीत ठाढी जहाँ, सब दाँनव संघार ।।१०३७
जय-जय बोलत देव-जस, देव सबै सुख देत ।
दाँनव-कुल दुख दायनी, कालरात्र तम केत ।।१०३८
नारी इह प्राक्रत नहीं, ऊतँम सक्त अनूप ।
करत जुद्ध अत क्रुद्ध कर, रचत विवध विध रूप ।।१०३९

[1] मू. प्र. सकतीय ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सुर जीते संग्राँम सभ, दनुज मनुज सह देस ।
गनहु विपर्जय काल गत, निसचै इही नरेस ॥१०४०
अबला वस बरती अनिस, सो भई वज्र समाँन ।
गूढ इहै कछु काल गत, समुझहु भूप सयाँन ॥१०४१
करन त्रान नभ केनका, सयन रेनका सार ।
दीरघनींद निसुंभ-दल, पौढे पाव पसार ॥१०४२

कवत (कवित्त)

सत्रू ह्वै अजेय तातैं मेल करै संधि गुन,
सत्रू कौ उजारै देस विग्रह मुजाँनीयै ।
सत्रू सिर जानौं सोई यान गुन तीजौ जाँन,
आनौ फिर चौथौ गुन आसन बखाँनीयै ।
दोय सत्रू होय तहाँ येक बोल बंध द्विधा,
इहै गुन पंचम है नीकै अनुमाँनीयै ।
देख कै प्रवल सत्रु औरही कौ आस्रय लै,
आस्रय है खष्टम गुन इहै उर आँनीयै ॥१०४३

दोहा

दुरग कोस बल पूर द्रढ, सो प्रभुत्व इह सक्त ।
उर उछाह जुत जीत अरि, इह उछाह विध-युक्त ॥१०४४
सक्त मंत्र है तीसरी, जाँनहु नृपत सुजाँन ।
लखहु नाम तै लछ्छना[1], इहै सक्त अनुमाँन ॥१०४५
सबल होय तौ स्याँम कर, लोभ दाँम ललचाय ।
भेद दंड जाँनहु भलै, ये गरू च्यार उपाय ॥१०४६
वेस पलट माया विवध, तजै उपेक्षा ताय ।
इंद्रजाल जप होम अरु, इह त्रय क्षुद्र उपाय ॥१०४७
जाँनहु खट-गुन नीत जुत, तीन सक्त लहि तंत ।
च्यार उपाय बिचार चित, महपत आप महंत ॥१०४८

---

१ मू. प्र. लछ्छना = लक्षण ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कवत (कवित्त)

मृघीया त्यों अक्ष खेल लंपट त्रीयान संग,
मादक को सेवन कठोर बाँनी कहीयै ।
क्रपन परायौ धन खोसवे की चाह चित्त,
इहै अर्थ दूसन है खष्टमहु जहियै ।
अल्पत कसीर[1] तापै दीरघ ही दंड देत,
पारुख कहत तातै नीत रीत गहीयैं ।
सप्तक विसन इहै अरथ विरोधी जाँन,
राजन समर्थ को निवर्त सदा रहीय ।।१०४६

दोहा

बात कही इह मंत्र विव, सबहि रीत समुझाय ।
कीजे भूप उपाय कछु, नीत प्रीत जुत न्याय ।।१०५०
काल भयौ अनुकूल जव, जीते देवन जंग ।
सो विलोम ह्वै संघरत, पेखहु काल प्रसंग ।।१०५१
कोट दुरग सज कीजीयै, अथवा तजीयै ऐंन ।
कीजै रक्षा देह की, नय उपाय लख नैंन ।।१०५२
अवसर्पन[2] की सुन अरज, नरपत दर्प निधाँन ।
बोल्यौ विवध विचार-जुत, सव विध न्याय सुजाँन ।।१०५३
सत तेता[3] द्वापुर समय, जांनहु कलजुग जोय ।
च्यार जुगन की चौकड़ी, लखै सयानै लोय ।।१०५४
अब्द तिताली लाख अरु, बीस सहस्र बिसेस ।
जुग च्यारही की जाँनीयै, संख्या इह क्रम सेस ।।१०५५
चिर इकहंतर चौकड़ी, मिलै सक्र फिर मीच ।
इंद्र चतुर-दस आवटै, ब्राँह्म दिवस इक बीच ।।१०५६
तिन दिवसन गन तीन सैं, संख्या साठ सिवाय ।
ब्रह्मा के दिन कौ वरख, सबहि कहत समुझाय ।।१०५७

१ कसूर । २ समाचार देने वाले । ३ त्रेता ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तिह संख्या तै बरख सत, जीवत ब्रह्मा जाँन ।
ब्रह्मा तै दुगने वरख, विस्नू आयु बखाँन ।।१०५८
विस्नू तै दुगने वरख, संकर अवध समस्त ।
उतपत ताकौ अंत है; गनहु नास भय-ग्रस्त ।।१०५६
अंबर धर पावक पवन, ग्रह नछत्र नभ गौंन ।
सब कँह वरतत येक सम, कहौ मृत्यु-भय कौंन ।।१०६०
धु्म्रनयन कौ ध्वंसकर, चंडमुंड हन चंड ।
रक्तबीज पीनौ रुधर, मिल काली रन मंड ।।१०६१
नास्यौ खेत निसुंभ कौं, मम भ्राता कुल-मौर ।
विसरूँ ऐसे बैर कौं, वँह कातर कोई और ।।१०६२
जैं है धन, तन जायगौ, रहै न आसुर राज ।
जस तौंहू नहिं जायगौ, आखर इहीं इलाज ।।१०६३

छंद मोती दाँम

इती कहि भूप उठयौ अकुलाय, बढयौ उर दारुन क्रोध बलाय ।
मरोरत मुछ्छ तज्यौ तन-मोह, चबावत दंतन ओठ चछोह ।।१०६४
भृगूटीय दिठ्ठ भयाँनक भेस, मनौं प्रलयानल रूप महेस ।
प्रचारीय सासन बोल प्रधाँन, धरौ उर काज सबै रजधाँन ।।१०६५
सजौ भट चारु सु अँग सनाह, उदायुध जुद्ध विचार उछाह ।
सबै भट सासन सीस चढ़ाय, सझी तब दाँनव की समुदाय ।।१०६६
समै लख भूप करी बगसीस, विधोविध अस्त्रन-सस्त्र बरीस ।
दीये बहु जाचक विप्रन दाँन, वदैं बृद मागध सूत विधाँन ।।१०६७
रचे तन अंबर कुंकम रंग, अनूपम मौल[1] बन्यौं ऊतमंग ।
बँधे बिहु बाँहन मैं भुजबंध, छई चिव मोतीय मालच छंद ।।१०६८
गही कर बाँम सु चर्म संग्राह, चक्यौ रस बीर करै रन चाह ।
तहाँ कर दछ्छन लै तरवार, सझे तन आयुध केक सँभार ।।१०६९
जुहारकै वृद्ध तहाँ बरजोर, चढयौ रथ भूप ढुरावत चौंर ।
जहाँ चिरमेहीय चंचल जोत, कसे वसु[2]-साझ भई कलधौत ।।१०७०

---

१ मुकुट । २ चाँदी ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

भयाँनक आँनक वज्जीय भेर, घुमंडीय सिंधव राग घनेर।
सझे बहु जूथ बरूथनि संग, अटै असमाँन भुजा ऊतमंग ।।१०७१
दरारन दारत स्रंग डुलाय, प्रलै जल आसुर फौज पुलाय।
नकीबन हाक बढी जुध नींम, सबै धर चाक, चढी दध सींम ।।१०७२
तरक्कत चालत संग तुरंग, द्रवै खुरतालन ज्वालन द्रंग।
चढी रज अंबर भाँन छिपाय, दसूं दिस अंधर धुंध दिखाय ।।१०७३
उड़ै गज केतन झुंड उचूल, झुलै पट रल्लक[1] रोहित झूल।
किते भट कंकट व्युढ करूर, सझै तन जाल निचोलक सूर ।।१०७४
सझे केऊ सारमई सिर स्रौंन, तहाँ केऊ बीर सझे भुज-त्रौंन।
किते कर सज्जत कूंत कुठार, धरै अस केतक तिछ्छन धार ।।१०७५
गदा गहि तोमर मंड गरूर, क्रपालका सक्त त्रसीरख क्रूर।
कसै कट केतक बाँन कलाप, छकै रन रास लीयै कर चाप ।।१०७६
दुरंतर लछ्छत तीरमदाज, अटै मुरबी बिसफार अवाज।
अडंबर बाजत जुद्ध ऊछाह, रुके धर अंबर पब्बय राह ।।१०७७
ललक्कत सैन बढी रिस लाग, उठै जिम दाह-निकेतन[2] आग।
प्रहारन चंडीय जुद्ध प्रसंग, सबै पुर रूठ चल्यौ नृप संग ।।१०७८
प्रकंपत दिग्गज सुंभ प्रयाँन, निसारन तुट्टत नीर निवाँन।
भरक्कत सेस फनालीय भार, धरक्कत धूजत पब्बय-धार ।।१०७९
करक्कत कछ्छप पीठ्ठ किराह, बरक्कत दारत दाढ[3] बराह।
मनौं जल सागर छोड़ मृजाद, बढचौ दल आसुर लाग विषाद ।।१०८०
जहाँ ललकार करै मुख जोध, संघारहिं देवीय कौं रन सोध।
चलै केऊ चत्वर जुद्ध चपेट, उखारहिं नाहर मुछ्छ अमेट ।।१०८१
कहै इक कालीय के गृह केस, प्रहारहिं कंधर पुज्जहि पेस।
कहै इक देवन कौं कर दाँव, प्रहारहिं संगर मंडहि पाँव ।।१०८२
कहै इक ब्रह्मीय दंड कराल, बकारहिं ताकँह जुद्ध विचाल।
कहै इक वैस्नवी कौं कर क्रोध, बिडारहिं ताकहिं लेय विरोध ।।१०८३
कहै इक है त्रपुरा जुत क्रुद्ध, जँही हम जायँ जु हार हैं जुद्ध।
कहै इक सक्तीय वज्र कठोर, जुहारहिं जुद्ध तिहीं, बरजोर ।।१०८४

---

१ बनातआदि। २ धुंआ। ३ मू. प्र. दढ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कहै इक दूठ कृतंतीय केर, बकारहिं जुद्ध बनै जिह बेर।
कहै इक जुद्ध वराहीय क्रूर, प्रचारहैं ताहीय कौं बलपूर ॥१०८५
कहै भुजकंट नृसिंघीय कट्ट, बिडारहिं ताकँह बैर बिकट्ट।
प्रभंजनी वारुनी, श्रीदनी पिंड, खडाननि[1] मार करै तन खंड ॥१०८६
कहै रिब[2] दीसत छिद्र किलेक, विसारद बुद्ध विचार विवेक।
पताकन तूटत है बिन पौन, अवद्दर गाजत है असमौन ॥१०८७
असाकुन धूमर संजुत आग, निहारेऊ, वृछतुछा फिर नाग।
मिले ऊनमत्त दुखी गुड़-मेल, तथा ऊपला विटहू तिल-तेल ॥१०८८
कटे फिर बल्कल ईंधन कीच, मिले अय स्रंखल दायक मीच।
मिले फिर तक्र तहाँ तुस माख[3], रजू फिर ओखधहू सिल राख ॥१०८९
निरख्खीय खंडत भाजन लौन, प्रकंपन संम्मुह वेग प्रयौन।
अमंगल काठ कपास जू आय, बरख्खीय मेघ जहाँ जुत वाय ॥१०९०
छुटे कच वंदन हीन चिनार, निभा[4] मिल गैरक वस्त्रन नार।
पलक्रीय[5] गर्भवती चख पेख, रुदंतीय पुस्पवती अवरेख ॥१०९१
खुध्यातुर खट्टन हू खलवाट, निपुंसक दंतुर के अवनाट।
मिले नर सोग उद्योगीय मग्ग, अपाटव[6] व्याकुल आवत अग्ग ॥१०९२
जटाधर मुंडत जोगीय जोय, विना द्वज चर्चक भाल बिगोय।
चढे खर विस्वर माहिक चाल, विलेपन अंबर क्रस्न विहाल ॥१०९३
सुने स्रुत धीरठ च्यार सबद्द, कुरंकर जुद्ध लख्यौ अत क्रुद्ध।
कुलाहल अग्र भयौ फिर कीर, भई द्रग गोचर सारका भीर ॥१०९४
लखी फिर बाँम जु बोलत लाट, कपिंजल दछ्छन बोल कुघाट।
दिवांधक दछ्छन हूकन देत, कपोतहु दछ्छन बोल कुहेत ॥१०९५
करापका बोलीय वाँम किराहि, चहूँदिस पिंगलका चहचाय।
मिली कढ वाँम दिसा मृघमाल, कढे मृदु-लोमक अग्र कुचाल ॥१०९६
कढे फिर वाँम जु गंडवी कोक, सबै भयदायक मृत्यु ससोक।
फिरै त्रखदंसक लोल फिरंड, झपेटत ग्रीधन चिल्लन झुंड ॥१०९७
विचारत आपुम मैं बतरात, कहै कोऊ घात किधौं कुसलात।
धरै ऊर धेख करै दल धूम, भयंकर जाय लखी रनभूम ॥१०९८

---

१ स्वामी कार्तिक की शक्ति (कौमारी देवी)। २ रवि = सूर्य। ३ उर्द। ४ आभा-रहित। ५ धवल केश वाली। ६ रोगी।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कटे गज जुथ्थन-जुथ्थ कितेक, क्रमेलक झुंड परे कट केक ।
तुरंगम जंग परे केऊ तूट, जहाँ खर विस्वर हूरन जूट ।।१०९९
कटे किह अग्रज भ्रात कनिष्ट, कटे पित पित्रब घोर कलिष्ट ।
परे मुरदा-दल पाँतन पाँत, ऊड़ें गहि गिधन चिल्लन आँत ।।११००
खसोटत कोक मृगादन खाल, सरीरन ऐंचत स्वाँन स्रगाल ।
वभक्कत स्रोनत खाल विख्यात, बहै जल नाल ज्युँही बरसात ।।११०१
कटे भट भूपत देख कुटंब, जुहारेऊ क्रोध धिखै जगतंब ।
दिपै तन रोहित जीन दकूल, मनौं जग जीवन की दुति मूल ।।११०२
उभै पग कोमल कंज अनूप, रजै पदपल्लव पऊव रूप ।
सुसोभत त्यों पदमूल सु रंग, रचै मनु ऊपर जावक रंग ।।११०३
बजै कल नूपर झींन अवाज, मँजीरक काँम प्रवेसन माझ ।
अनूपम पिंडका भ्राजत आप, किधूँ मधुदीप कलंब कलाप ।।११०४
महा रमनीय रजै उरूमंड, सुसोभत बालक ब्याल सुसुंड ।
सुसोभत केहर ज्यों कटसंध, बनै चलनी फिर उच्चय-बंध ।।११०५
प्रभा गृह राजत दिव्य पिचंड, मँडी तिंह ऊपर नाभीय मंड ।
प्रभा जिंह काँम सरोवर पेख, रजै तिंह ऊद्ध रुमावल रेख ।।११०६
वनी चिब किंकनी ओप विसाल, मनौ गृह काँम के वंदन-माल ।
पयोधर सोभत हैं जुग पींन, निरंतर कंचन कुंभ नबीन ।।११०७
बनी तिह ऊपर कंचुक बेस, मनौं पटके नका सीस-महेस ।
दियै भुज ओपम चंपक डार, अलंक्रत, अंगद रूप अगार ।।११०८
बने कर-कंकनहू व्रत[1] वेख, प्रकासत पुंज प्रभा परवेखं ।
लसै अंगुली यकहूँ अंगुलीय, निरस्तुल कंचन के कमनीय ।।११०९
मिले वृख अंकुस हू अत मंजु, प्रकासत हीर-कनी दुति पुंजु ।
रजै चिब कंठ ज्युँही त्रय रेख, अलंक्रत मोतीय-माल असेख ।।१११०
विराजत सुन्दर क्रंत बिसाल, मिली उर जाँन नछत्रन-माल ।
मिली तिंह ऊधर चिबुक मंजु, कली मनु पंकज की दुति कुंजु ।।११११
बन्यौं तिल ऊरध स्याँम विकास, अरुयौ जनु भौंर सुगंध की आस ।
लसै रद-वस्त्र[2] अनूपम लाल, प्रभा लख लाजत रंग प्रवाल ।।१११२

१ गोलाकार । २ ओठ ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दिपै रत पंत महाँ सुख दैंन, मनौं गज मोतिन के छद मैंन ।
सुसोभत नासका कीर समाँन, अलंकृत बेसर सज्जत आँन[1] ॥१११३
अनुंपम अंबक भा अरबिंद, छले जग जीव विलोकन छंद ।
बुहारन ओप बनी चिब बंक, धरचौ मधुसारथि जाँन धनंक ॥१११४
बिराजत सुंदर भाल बिसाल, लसै तिह ऊपर बिंदीय लाल ।
बदै तिह ओपम बुद्ध विचार, उप्यो अधचंद मनौं ध्रुव आर[2] ॥१११५
कपोलन ओपम और कहै न, मनौं दहुँ सद्रस दर्पन मैंन ।
छई चिब काँनन कुंडल छाँह, मनौं जुग नक्र फिरै जल माँहि ॥१११६
छुटी अलकावल आँनन चंद, मनौं दुति भेंटत है ग्रह मंद[3] ।
वरांगहू पाटीय स्यामल वार, किधों मध अंबर मग्ग कुमार ॥१११७
फबै सिर गुंफत सुंदर फूल, झुके मनु आय नछत्रन भूल ।
बनी चिब बैनीय गुंफत वार, किधौं तरु चंदन नाग कुमार ॥१११८
दिपै स्वर कोकिल[4] ज्यों सुख दैंन, वदै फिर चातक अमृत बैंन ।
अनूपम सिंजतहू ध्वन और, भनंकत सीस सुगंधीय भौंर ॥१११९
अनूपम अंबर पाट उदोत, जगी जर-तार किनारीय जोत ।
निरंजनी अंजन राजत नैंन, अनूपम वंदन की चिब ऐंन ॥११२०
अपूरब मूरत रूप अपार, किसोरीय वेस महाँ सुकमार ।
ऊदायुध राजत सिंघ अरोह, छयौ उर ऊद्ध पराक्रम छोह ॥११२१
करालीय कालीय द्रष्ट करूर, हरावल संगर संग हजूर ।
ब्रहंमीय हंस चढी वल वृद्ध, पराक्रम बैस्नवी सक्त प्रसिद्ध ॥११२२
त्रलोचनी मोचनी दुष्टन तथ्थ, संक्रंदनी वज्र लीयै कर सथ्थ ।
कृतंतनी दंड धरै कर क्रुद्ध, कुबेरीय धारन दारुन क्रुद्ध ॥११२३
परंजनी गंजनी दाँनव पिंड, पराक्रम वायबी बेग प्रचंड ।
कुमारीय-सक्ति लियै कर कोह, भृगुटीय दिठ्ठ भयाँनक भौंह ॥११२४
वराहीय ऊद्ध पराक्रम बाँन, नृसिंघीय दारुन क्रुद्ध निधाँन ।
धरै सब अस्त्रन-सस्त्रन धेख, विधोविध वाहन आद बिसेख ॥११२५
लीयै अप-अप्पन प्रकंत लार, अनी सज संगर ह्वै हुसयार ।
ठयौ सब ठौरन-ठौरन ठाट, घुमंडत देवीय जुथ्थ अघाट ॥११२६

१ मुख । २ मंगल । ३ शनि । ४ मू. प्र कोकल ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

विराजत अंबका झुंड विचाल, मनों विधु बीच नछत्रन-माल।
सबै स्वर पुज्जत सुद्ध स्वरूप, अलंकृत फूल चढाय अनूप ।।११२७
सबै सुभ लच्छ्छन रास सरीर, भरी सब देवीय की संग भीर।
निरख्खीय भूप जहाँ नियराय, कही कछु देवीय सौं मुसकाय ।।११२८
दिपै सुभ लच्छ्छन स्वच्छ दिखात, विलच्छ्छन[1] काम करै कहा वात।
मरालन चालत जै गत मंद, मयूर की चालत चाल अमंद ।।११२९
सबै तन दीसत की सुकमार, बनी द्रढ़ संध सु कोन विचार।
सुसोभत धीरज संग सुभाय, अधीरज जुद्ध रही अकुलाय ।।११३०
सदा रस सोभत अंग सिंगार, रचै रस बीर सदा बिच रार।
अनूपम भूखन है अनुराग, बिडारत दाँनव होय बिराग ।।११३१
हितू रस हास ज्युँही रत हाव, भरी रस रौद्र हीयै किह भाव।
नचै त्रीय कैसकी वृत्त सुनाच, रही सोइ आर भटो वृत राच ।।११३२
परी कछु मोकँह तोहिं पिछाँन, अनारत भासत भाव अजाँन।
बुहारन आविध चाप बनाय, सधै सर नैंनन कौं सरसाय ।।११३३
कटाक्षहु मारकै लच्छ्छ कलंब, लगावत पौरुख नार प्रलंब।
सुगंधत तेल-फुलेल सँनाह, त्रीया-गन सझ्झच करै तन ताह ।।११३४
मनोरथ रथ्थ करै जग मोह, करै किह कारन धारन कोह।
अपा तज जुद्ध जुरै उमगात, गहै सर चाप उघारत गात ।।११३५
सिखावत जो कछु कालीय सीख, निहारहु ताहि को आकृत नीक।
सुने फिर चंडीय स्रौंन सबद्द, सिवा सत जेम करै सोई सद्द ।।११३६
कला तज काँम करै रन-केल, मिलै फल संग तजै सोई मेल।
उदायुध बैठीय सिंघ अरोह, डरावत जीवन कौं कर द्रोह ।।११३७
कीयौ प्रन जुद्ध अकेलीय काय, सझी संग देवीय क्यौं समुदाय।
उजागर आस्रव तोर अलीक, निहारीय द्रष्ट सबै बिध नीक ।।११३८
कीयौ वहु दाँनव बंस अकाज, अबै कर जुद्ध स्वयंबर आज।
लीयै सब देवीय देवन लार, निहारहु तोहि पराक्रम नार ।।११३९
भुजा मम राखत नैक भरोस, जुहारत जुद्ध धरै उर-जोस।
कही सब दाँनव की सुन कथ्थ, तबै दीय देवीय उत्तर तथ्थ ।।११४०

१ मू. प्र. विलछ्छन।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दिखावत तो हीय कौं इक द्वैत, उपासत देव स्वरूप अद्वैत।
भलै स्वर आसुर मैं इह भेद, निहारहु भाव हीयै निरबेद ।।११४१
दहूँ नित आसुर कौं इह दोस, भजै स्वर मोकँह येक भरोस।
लखौ सब सक्त भई मम लीन, परेखहु दाँनव राय प्रवीन ।।११४२
कही जगतंब इहै जब कथ्थ, सकत्तीय लीन भई इक सथ्थ।
सनातन रूप रह्यौ सोई सेस, अचंभत देख भयौ असुरेस ।।११४३
कही तव देवीयहू फिर कथ्थ, सँपेखहु कारन आद समथ्थ।
मुनीस्वर जोगीय जाँनत मोंहि, सुविद्या रूप उपासत सोंहि ।।११४४
लखै जग मोमहि मैं जग लीन, महाँ जल सागर ज्यों मन मीन।
निकारत तंत सु ऊरननाभ[1], समेटत ताकहँ फेर सताब ।।११४५
परेखहु या बिध मोर प्रपंच, रचूँ जग भेद न जामहि रंच।
दिवाकर और प्रभा नहीं दोय, तिही बिध जाँनत रंगहु तोय ।।११४६
अनेकन रूप प्रकासत येक, अहूँ कहुँ धारत रूप अनेक।
कही दनुविंद्र तबै कर कोह, धरै उर-धीरज पै कछु द्रोह ।।११४७
चलाचल पावन तोहि चरत्र, प्रकासत मायक रूप पवित्र।
लखी तोहि रूपवती निज नैन, सभै भट-चार सँघारीय सैन ।।११४८
महाभट चंड रू मुंड कौं मार, हन्यौ रन धुंमर-नैन हकार।
बली फिर रक्तहुबीज कौं घात, भुजा मम फेर हन्यौ निज भ्रात ।।११४९
भई कछु गर्बवती इह भाय, निकारहुँ बैर निहारकै न्याय।
मिटाय कैं तौकहँ दर्प महाँन, प्रचारहुँ धारहुँ पीड़नपान[2] ।।११५०
दविष्टहु रूप कै तोहीय दंभ, सबै विध लायक जाँनहु सुंभ।
धरयौ तव यों कहि हाथ धनंक, प्रहारीय दाँनव गारधपंख ।।११५१
मिले दनु मंडीय बाँनन मार, उमंडीय माँनहु मेघ असार।
जुरी सर रूप अनूपम जंग, भ्रमै नभ माँनहु भींम भुजंग ।।११५२
मची करवालन भालन-मार, क्रपालका पट्टस दंड कुठार।
तहाँ चल अखन-सखन तीर, भई सिर देवीय ऊपर भीर ।।११५३
अनी सभ दाँनव संगर आय, उदायुध जुद्ध जुरे अकुलाय।
घने मिल देवीय मारत घाव, धरै सब देख अकेलीय धाव ।।११५४

१ मकड़ी। २ विवाह।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अचंभत देख भये सुर आद, बढ्यौ उर अंतर घोर विषाद।
हहा रव बोलत डोलत हीय, जहाँ अकुलावत त्रासत जीय ॥११५५
तहाँ लख देवनकौं जुत त्रास, हीयैं कर देवीय जुद्ध हुलास।
सरासन हाथ गह्यौ सर संध, महाँ रिपु दाँनव ताक मदंध ॥११५६
प्रहारन लाग महा सर-पुंज, भयंकर दाँनव के घट भंज।
बढी इम देवीय की हथवाह, दहै जिम पौंन लगै त्रन दाह ॥११५७
छयौ उर क्रोध भृगूटीय चढ्ढ, बकारत मारत दाँनव बढ्ढ।
झलपन डाव मृगाधिप मुंड, झपेटत बाज मनौं खग-झुंड ॥११५८
रिसानीय उग्र भवाँनीय रार, परी दल दाँनव सीस प्रहार।
मची तहाँ संगर बाँनन मार, परै जिम पव्वय वज्र प्रहार ॥११५९
उमंडत दाँनव ज्यूँ घन आय, बिखेरत बद्दर ज्यों चल वाय।
जुरै दनु आयकै देवीय जंग, परै जिम दीपक आय पतंग ॥११६०
जहाँ अदभूत भवाँनीय जंग, रचै रसवीर लीयै ऊच रंग।
बृह्मा आद सबै सुर बृंद, असीसत देवीय छाय अनंद ॥२१६१
चपेटन मारत सिंघ चछोह, दहै खल फेटन तै रच द्रोह।
जुरै भृगुसिख रचै सर जाल, बढै जिम देवीय क्रुद्ध विसाल ॥११६२
मनौं निध-जीवन कौं तज मोह, करीरज[1] पीवनकौं कर कोह।
रिसाँनीय येम भवाँनीय रार, संघारत दाँनव कौं गह सार ॥११६३
उड़ै रथ बाँगन तै कढ अंत, तरासत तूल ज्युँही चढ तंत।
परै गज जुथ्थन-जुथ्थ पलाय, नदी जल बाढ करारन न्याय ॥११६४
इतै रन राच भवाँनोय येक, उतै खल जूटत आय अनेक।
उदै गिर सूरज होत उदोत, ज्युँही गत होत नछत्रन जोत ॥११६५
विलावत दाँनव त्यूँ कर वाद, अखंडत देवीय रूप अनाद।
कहौ तिंह मार सकै भट कोय, सबै जग कारन जाँनहु सोय ॥११६६
रची जिन दैतन देवीय रार, परचौ दल है दल पैंदल पार।
धिक्यौ असुरेसहु कै उर घेख, पराक्रम देवीय भेव परेख ॥११६७
हल्यौ चिरमेहीय चंचल हाक, कला जुध कौसल सिभ कजाक।
कहे केऊ वायक फेर करूर, सबै विध लायक संगर सूर ॥११६८

---

१ अगस्त्य ऋषि।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बजावत नाँहि विपंचीय वाद, निनादत संख भयंकर नाद।
अनूपम नारीय कोमल अंग, अमै मम बुद्ध करूँ कहा भंग ।।११६९
बिचारकै टारत हूँ रथ बाँम, कहूँ सोई और करौ इह काँम।
जुरी चहै मोसन जुद्ध जरूर, कुरूपनी होहु सुभाव करूर ।।११७०
बनावहु मंथर दंत-नवास, ज्यूँही नत दंतन-पंतन जास।
बनावहु नैंनन रूप बिलाव, प्रभागत भंगुर हू जुग पाव ।।११७१
बनास्रय[1] अंगहु रंग बहोर, सिवा जिम आँनन बानीय सोर।
खरी जब होवहिंगी रन खाँत, मिलै मम हाथन सौं तुहि माँत ।।११७२
सबै कर पंकज तै सुकमार, न चाहत काटन कौं हम नार।
सुनी इह दाँनव की कथ स्रौंन, करी जगतंब सु आहव कौंन ।।११७३
कही तब चंडीय कालीय काज, संघारहु दाँनव जात समाज।
इहै इक काँमीय है अवसेस, उभै मिल खेत हनौं असुरेस ।।११७४
कह्यौ सुन देवीय कौं कर क्रुद्ध, जुरी दनुविंद्र गदा गहि जुद्ध।
भई इत कालीय रूप भयाँन, उतै दनुविंद्रहु बाहु अजाँन ।।११७५
रची दहुँ ओर बराबर रार, परीं खल ऊपर सस्त्र-प्रहार।
जहाँ मिल देखत देवहु जुद्ध, महाँ मुनीदेव भये मन मुद्ध ।।११७६
गदा गहि सुंभ चल्यौ मगरूर, सँभारकै कालीय कै दीय सूर।
गदा दीय कालीयहू कर गाँन, पराक्रम छाय उठायकै पाँन[2] ।।११७७
तुट्यौ रथ कंचन मंच सहेत, खुटे चिरमेहीय स्वारथि खेत।
हल्यौ दनुविंद्र हु पैदल होय, सँभारकै उच्च गदा कर सोय ।।११७८
इही तिह कालीयकै हीय दौर, जमायकै पाँन भ्रमायकै जोर।
बचायकै कालीय चोट बकार, तहाँ कर तिच्छन लै तरवार ।।११७९
दई कर बाँम परयौ कट दूर, भुजंगँम लोट लगावत भूर।
कटी इक बाँह तऊ कर क्रुद्ध, जुरयौ फिर कालीय सौं दनु जुद्ध ।।११८०
स्रवै रत कंधर चिच्छन छूट, बही गिर किंदर बीर बहूट।
उठायकै दच्छन पाँन अबीह, स आयुध रूठ चल्यौ जिम सीह ।।११८१
घने घट कालीय कै कीय घाव, दुरंतर, दाँनवहू रच दाव।
करयौ तब कालीय क्रुद्ध कराल, लयै करवाल कीयै चख लाल ।।११८२

---

१ काग, कौआ। २ हाथ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पट्टकीय दाँनव पै बल पूर, कट्टकीय माँनहु बीज करूर।
परचौ कट दछ्छन पाँन प्रलंब, बढ्यौ दनुविंद्र न कीन बिलंब ।।११८३
चढ्यौ खल छत्तीय पै रन चाहि, बढी उर कालीय रीस बलाय।
करचौ करवार कौ वार प्रकोप, तुटचो सिर कुँडल संजुत टोप ।।११८४
रुप्यौ रन खेत बिना सिर रुंड, खिलायकै ख्याल करचौ सत खंड।
परचौ पुहमीन भयौ गत प्राँन, मरौ नृप सिंभ बली अप्रमाँन ।।११८५
इंद्रादिक देख वृंदारक और, बजायेऊ दुंदुभी बाज बहोर।
मुनिंद्रन विप्रनहूँ तज मोह, सनातन धर्म प्रचारीय सोह ।।११८६
हुतासन पूजनहू जिग होम, भई नव निद्धीय-रिद्धीय भोम।
नदी सर स्वच्छ निवाँनन नीर, सुगंधत सीतल मंद समीर ।।११८७
अनामय ह्वै दसहूदिस ओक, बढे जन जातन होय विसोक।
बचे केऊ दाँनवहू जिह वार, वसे अधलोक मैं भीत निवार ।।११८८
कथा इह पावन देवीय काँन, सुनी जनमेजय भूप सयाँन।
बखाँनीय श्रीमुख व्यास बिसेस, अनूपम देवीय कौ उपदेस ।।११८९
सुनैं कोऊ पाठ करै सुविचार, पराक्रम पुत्र वढै परवार।
पदारथ चार लहै कर प्रीत, मनोरथ मंगल दायक मीत ।।११९०

दोहा

व्यास बखानी वारता, संगर देवी सुँभ।
सुर नर मुनि स्याहिक सदा, जगजाँनी जगतंब ।।११९१
पुन जनमेजय प्रीत पख, विनय कीन श्रीव्यास।
किह आराधी कौन विध, पूजन कहहु प्रकास ।।११९२
सौनकाद कौं सूत जू, कहत सुनहु दै काँन।
कुरुपति सौं कथ व्यास कहि, बरनत सहित बिधाँन ।।११९३

छंद द्वैअखरी

मुन्वंतर स्वारीचिष मांही, समह तिही नृप सुरथ सुहांही।
परम उदार प्रजा नय पालक, घट विक्रंत सत्रुन दल घालक ।।११९४
छत्र-धर्म रत पर्म सयाँनौ, जत गुरु-भक्ति विप्र-कुल जाँनौ।
धनुर्वेद अत चतुर धारना, काँमी कुटलन सुब्रत कारना ।।११९५

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

करत राज निरभय कोलापुर, धीर वीर नय नीत धुरंधर।
बासी परबत मेछ[1] बढे बल, दस-दिस जीतन काज चढे दल ।।११९६
मार-मार तिन दुंद मचायौ, छित मंडल मैं विग्रह छायौ।
है-दल पैदल घुमँड हजारन, करत जहाँ-तहाँ जुद्ध अकारन ।।११९७
भयौ कुलाहल चहुँ दिस भारी, राजा चढ्यौ करन रखवारी।
जुद्ध करचौ पुन भयौ पराजय, भाग्यौ पाय मलेछन कौं भय ।।११९८
पाछौ फिर आयौ निज पुरकै, दुरग बीच बैठौ सोई दुरकै।
मंत्री मिले मलेछन माँही, ताप पाप कौं पाय तहाँ ही ।।११९९
मन ही मन सोचत महाराजा, करचौ मलेछन मोर अकाजा।
मंत्री तज्यौ भरोस मिलन सौं, जिह विध चेह विचारचौ जन सौं ।।१२००
मिलकै करें कंद जो मोही, कहूँ बचाव न दीसै कोई।
ठिक तज लोभी करत ठगाई, सुह्रिद मात-पितु नाँहि सगाई ।।१२०१
विप्र गरू स्वाँमी कहावे वै, दुष्ट लोभ-बस दगा जु देवैं।
निगम विचार सुरथ नृप नीती, पुन मंत्रीजन तजी प्रतीती ।।१२०२
घोरैं चढ़ चाल्यौ सोइ घर सौं, देस तज्यौ निज याही डर सौं।
भूप सुरथ सत्रुन भय भीनौं, डेरौ जाय विपन मैं दीनौं ।।१२०३
द्वादस कोस जहाँ तै दूरा, परम पवित्र सुद्ध मत पूरा।
नांम सुमेधा बसें निरंतर, कछु अंतर पै ताही कंतर ।।१२०४
मुनि आस्रम नृप गयौ महाँना, लहि विसवास चित्त ललचाँना।
निकट नदी बहै निरमल नीरा, सीत मंद सोगंध समीरा ।।१२०५
मृघ निरवैर बसै जिह माँही, कुंजन-पंखी केल कराँहीं।
पढ़त वेद सिष गिरा सुपावन, सुनीयत काँन ग्याँन सरसाँवन ।।१२०६
होम सुवास रोग मल हरनी, आस्रम छाय रहे उद्धरनी।
धीरज पाय नरिंद्र धुरंधर, आस्रम देख अनंद भयौ उर ।।१२०७
अस की भूप तजी असवारी, संत-रूप लख भयौ सुखारी।
पाँव गहे मुनके पुन महिपत, महिपति मुनि समुझ्यौ आरत मत ।।१२०८
कीय सतकार मुनी नृप केरौ, विगत ताप जहाँ कीयौ बसेरौ।
कछु दिन रह्यौ लीयं कदराई, राजा देख रह्यौ मुनिराई ।।१२०९

१ म्लेच्छ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मुनि प्रसंन्न ह्वै इक दिन महिपत, पूछी नृपत कही कथ मुनि-प्रत ।
बैरिन राज लीयौ वरीआँई, मंत्री जाय मिले तिन माँई ।।१२१०
जीय विसवास तज्यौ मैं जनकौं, धरा गई अरु खोयौ धनकौं ।
सुनी बड़ाई मुनि मैं स्त्रौंनन, कीय आस्त्रय आस्त्रम पुन काँनन ।।१२११
सरन आपकौ लीय सुखकारी, हित कर मेटहु विपत हमारी ।
सुन मुनि करचौ नृपत संबोधन, मुनि आश्रम कीय वास मुदित मन ।।१२१२
खोज-खोज फल-फूल ही खावै, बसै विपन अरू दिवस बितावै ।
एक दिवस घँरकी सुध आई, ठाट-पाट सूनी ठकुराई ।।१२१३
पुत्र नार सबही परवारा, रह्यौ नहीं कोऊ रखवारा ।
सिफा वृक्ष पर बैठौ सोचत, मन ही मन उसांस हीय मोचत ।।१२१४
येक वैस्य आयौ इतने मैं, चैन भयौ ताकौं चितने मै ।
आदर कर बैठायौ वाकौं, जींय सौं दुखत जाँनकै जाकौं ।।१२१५
वैस्य पाय बिसवास बसेकत, करन लगौ राजा तासौं कथ ।
को तुम भ्रात कहाँ तै आये, पेख तुमहिं हमही सुख पाये ।।१२१६
नाँम समाध वैस्य हम नरपत, सवही धन लीनौं नारी सुत ।
निज घर तै तिन दीयौ निकारौ, और कौन मोहिं देय उधारौ ।।१२१७
आयौ चाल विपन मै येको, विपत पाय ह्वै दुखत विसेको ।
वैस्य कही अपनी कथ बीती, पूछी कथा नृपत कर प्रीती ।।१२१८
आप कौन हौं करहु उचारा, बनकौं कैसे बास बिचारा ।
राजा कह्यौ, सुरथ मैं राजा, सत्रुन खोस्यौ राज-समाजा ।।१२१९
आयौ जीव बचावन आरन, करत बास आरन इह कारन ।
भली भई अबतौ सुन भाई, मिल रहिहैं कर बिपन मिताई ।।१२२०
तुम हम येक भरम सौं त्रासे, खुस रहिहैं बतरावत खासे ।
मुसकल काटहिं मरदा-मरदी, दरदी सौं मिलकै दिल दरदी ।।१२२१
बैस्य कह्यौ सुनीयै नृप बाता, सुख सौं मन माँनत नहीं साता ।
नारी सुन मोहिं करचौ निरादर, उर बिसरै नहिं तनकौ आदर ।।१२२२
मो विन डोलहिं कोऊ दिन माँही, रात दिवस इह सोच रहाँही ।
द्रग सौं जाय तिनहि कौं देखूं, बिनता सुत अवगुन न बिसेखूं ।।१२२३
निस दिन चित्त थिरावत नाँही, भयौ भौंर की पोत भ्रमाँही ।
सुन नृप तबै बैस्य कथ साँची, बिधवत बात बैस्य प्रत बाँची ।।१२२४

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तेरौ मन जैसैं नित तरसै, दीरघ दुख हमहूँ कौं दरसै।
कारन जाय मुनहुँ कौं कहिकै, लखै बिचार ग्याँन कौं लहिकै ॥१२२५
उभय विचार चले मति येकौ, बात पूछबे काज बिवेकौ।
उभय जोर कर मुनि कै आगैं, लाभ बारता पूछन लागे ॥१२२६
रांजा कह्यौ सुनहु मुनिराया, मित्र बैस्य मम घेरचौ माया।
नारी पुत्रन कीयौ निरादर, काँनन मैं आयौ होय कादर ॥१२२७
पुन नहीं तजत तिनही सौं प्रीती, ह्रिदय करत चिंता नित रीती।
ऐंसैं ही हमहूँ बन आये, चित हमरे चिंता दुख छाये ॥१२२८
अपनैं उर जाँनत अनुमाँना, सबहि राज-सुख सुपन-समाँना।
बनी रहत निस-दिवस वासना, भूलत तऊ न भाव भासना ॥१२२९
करहु दूर यह संसय कारन, निज हिय कौ अग्याँन निवारन।
नरपति बचन सुने मुनिनाथा, ग्याँन कहन लागे पुन गाथा ॥१२३०
सुनहु नृपत इह रीत सनातन, जग की बंध मोक्ष है जा तन।
इह कारन देखहु हीय-आँखन, मति के मारग सोच मन ही मन ॥१२३१
ब्रह्मा विस्नु महेस्वर बासव, श्रीद बरुन जमराजहु साचव।
देव नाग निसचरहु अदेवा, भल जाँनहु पसु पछ्छन भेवा ॥१२३२
तरु वल्ली आदक जग जेते, इक माया क्रत हैं सब तेते।
गुन सौं उतपत जीव गनाये, बंध मोक्ष के पात्र बनाये ॥१२३३
माया जाल बंधे सब माँनौ, परमेष्ठी हरिहर पहिचाँनौं।
कौन गनत है मनुजन केरी, महाराजन सुनीयैं कथ मेरी ॥१२३४

दोहा

मुनी सुमेधा विमल मति, कहन लगे कछु कथ्थ।
वैस्य समाध सहेत बिव, सुनबै लगे सुरथ्थ ॥१२३५

छंद उधौर

मुनी[1] सुमेधा महाराज, रुच देख वैस्यहु राज।
इतीहास परम अनूप, भल कहन लागे भूप ॥१२३६

---

१ मुनि।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बिध बिस्नु ईस बिसेस, सब देब आद सुरेस।
बलवती माया बंध, फँस रहे ताही फंद ।।१२३७
बिध बिस्नु की इक बात, सुन होउ भूप सुनाथ।
सित दीप-बीच सिधाय, कीय उग्र तप निज काय ।।१२३८
इक अयुत बीते अब्द, लखै सु तपस्या लध्व।
हंसगहु बिद्या हेत, तप करत ग्याँन निकेत ।।१२३९
बीती सु तिनकौं बार, सम बिस्नु काज सुधार।
उठ चल्ये इछ्या आप, तब छोरकैं तन-ताप ।।१२४०
मिल गये मारग माँहि, अनजाँनपन मैं आय।
इत बदन च्यार अनंत, भुज च्यारहू भगवंत ।।१२४१
पूछी सु इक-इक पेख, परभाव चाव परेख।
कवि[1] कह्यौ हम करतार, सब रचत इह संसार ।।१२४२
जब कह्यौ अच्युत जौंन, करतार हम तुम कौंन।
बस रजोगुन बिलगाय, करतार फेर कहाय ।।१२४३
हम सतोगुन-जुत होय, करता कहै सब कोय।
कहि परसपर इम कथ्थ, सम अटे देव समथ्थ ।।१२४४
बिघ विस्नु उरझे बाद, पर गये फंद प्रमाद।
नहिं तजत येकहु नेम, जुर रहे अस्फुट जेम ।।१२४५
वँह भयौ अवसर येक, बिच लिंग प्रगट बिसेख।
अत तेजवंत अनंत, अध ऊर्द्ध जाहि न अंत ।।१२४६
सित रंग आभा सूर, जगमगत तेज जहूर।
सिर भई जबहू सुद्ध, आकास-बाँनी उद्ध ।।१२४७
आकास जावहु येक, पाताल येक परेख।
इह चिन्न लावहि अंत, मति बडौ सौय महंत ।।१२४८
बिन अरथ तजीयै बाद, अग्याँन रूप उपाध।
मध्यस्थ हमकौं माँन, परभाव देहु पिछाँन ।।१२४९
पाताल लावन पार, चाले तहीं भुजच्यार।
बिध चले अंबर बाट, उर पाय अमित उचाट ।।१२५०

---

१ ब्रह्मा।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बिस्नु चले बहु वार, पायौ नहीं कछु पार।
दैत्यारि[1] आये दौर, ठहरे सु ताही ठौर ॥१२५१
पहुँचे न बिधहू पार, हीय रहे आपौ हार।
अनुताप कर आलोच, पुन परे मन सौं सोच ॥१२५२
केतकी फूलहु कोय, सिव गिरचौ सिर सौं सोय।
मिल गयौ बिध कैं मेल, झट लियौ ताकौं झेल ॥१२५३
गये जहाँ तक कर गांन, थक आये ताही थाँन।
वोले सु झूठ बिचार, पायौ सु लिंग ही पार ॥१२५४
सिव चढचौ लायौ सीस, बर फूल बिसवाबीस।
विध सौं कह्यौ हरी वाच, साखी बतावहु साच ॥१२५५
बोले बिरंचन बात, है सुमन इह मम हाथ।
उर सत्य कै आधार, बोलहिं सु कुसमै बिचार ॥१२५६
बिध कही इतनी बात, वच बोल कुसम बिख्यात।
मैं चढचौ सिव के मथ्थ हर-भक्तहू कै हथ्थ ॥१२५७
लाये सु बिध तिह लेह, अज साच जाँनहु येह।
जव कह्यौ बिस्नु जवाब, हम कहैं बात हिसाब ॥१२५८
कित होय साखी कोय, जिह कहत लछ्छन जोय।
सुन लेहु बेधा काँन, मम सत्य वाचा माँन ॥१२५९
चित होय प्रांजल चाल, बिसनी न ह्वै बाचाल।
बादी यथारथ बात, सम द्रष्ट धीरज साथ ॥१२६०
निरवैर कोविद-नीत, परमार्थ सौं हीय प्रीत।
वँह माँननीय उदंत, सब कहत मुनि जन संत ॥१२६१
हम कहत हैं हीय हेर, वृषअंक[2] इक इह बेर।
सोइ साख भरहिं समथ्थ, उर छोरकै अनरथ्थ ॥१२६२
बोले हरी जिह बार, नभ गिरा भई निरधार।
सुन केतकी मम सीख, इह कहत बात अलीक ॥१२६३
भई पतित अपने भाव, उर हमहीं पाय अभाव।
बिच लई ताहि बिरंच, सुभ काज लाये संच ॥१२६४

---

१ विष्णु। २ शिव-लिंग।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

साँची न दीनी साख, मैं तजी तोकौं भाख।
इह कही सिंभु उचार. चाले सु आँनन च्यार ॥१२६५
लाचार ह्वै गहि लाज, सुन जगत के सिरताज।
सिर चढ़त सिव नहीं सोय, कली केतकी की कोय ॥१२६६
बलवती माया बेग, इम करत जग उदवेग।
छल करत लोलुप छोह, महाँ ग्याँनीअन कौं मोह ॥१२६७
बिध बिस्नु की इह बात, जन माँनवी कहा जात।
भ्रम पाय आपौ भूल, भर मोहमैं रहे भूल ॥१२६८
श्रीपती हु स्रष्ट बिसेख, अवतार लेत अनेक।
तज दया कर-कर त्रास, बध करत दनु बिसवास ॥१२६९
महा-प्रक्रत निर्मत माँन, जड़ जीव जगम जाँन।
माया रही सोइ मोहि, सिव बिस्नु आद सकोय ॥१२७०
बंधन रु मोक्ष बिख्यात, है भगवती कै हाथ।
भजीयै सु ताही भाव, कहा कहैं और कहाव ॥१२७१
सुन सुरथ नृपत सयाँन, बोले सु मुनि प्रत बाँन।
महमाय कौंन मुकाम, अरु रूप कहा अभिराँम ॥१२७२
उतपत कहाँ तै आद, महि मंडता मुरजाद।
सब देहु मोहिं सुनाय, महमा सु श्रीजगमाय ॥१२७३
बोले सु मुनि तिह बार, नृप सुनहु इह निरधार।
वँह है अजन्मा आद, इह जगत जाहि उपाध ॥१२७४
कारन हु कारन काज, सब सक्ति रूप समाज।
बिन सक्ति प्राँनी व्यूढ, मुरझाय होवत मूढ़ ॥१२७५
नित चेतना जिह नाँम, करता सु पूरन काँम।
सुर मनुज काज सिहाय, अवतार लेत हैं आय ॥१२७६
बस काल नाँहि बलिष्ट, वँह सबही जीवन इष्ट।
अनगनत सक्ति अनूप, भ्यासत सु जगमैं भूप ॥१२७७
बपु बीच नाना बेख, वँह सक्ति दीसत येक।
परवाह जाहि प्रसिद्ध, वँह सदा थिर अविरुद्ध ॥१२७८
द्रष्टा सु पुरष दईव, जग द्रस्य रूपी जीव।
जननी सु माया जाँन, पुन पिंड पोखनि प्राँन ॥१२७९

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बनवाय इह ब्रहमंड, माया सु नाटक मंड।
पऊराँन पुरख पुनीत, पुन करत रंजत प्रीत ।।१२७९
लय करत सोइ जग लील, महा बलवती चख-मील।
माया सु जग की मात, तुम भजहु निस-दिन तात ।।१२८०

दोहा

वैस्य, राज सुन वारता, पूछ्यौ मुनि प्रति प्रस्न।
तहाँ माया कौ कहहु तुम, आराधन मति ऊस्न ।।१२८१

छंद द्वैअखरी

कहन लगे मुनि सुनकै कथा, जगजननी आराधन जथा।
मंत्र होम विध-जुत महामाया, दायक सुख च्यारहु फल दाया ।।१२८२
प्रथम स्नाँन कर होय पवित्रा, वरन सुक्ल धारै वपु वस्त्रा।
करै आचमन, विधवत करकै, ध्याँन आद माया उर धरकै ।।१२८३
पूजन धाँम दिव्य कर पोतन, आसन तापै रचै उदोतन।
बैठै जापै कर बिसवासा, हिय सम-द्रष्टि हेत सहुलासा ।।१२८४
तीन आचमन करै सु तबही, साँमग्री पूजन कर सबही।
प्राँनायाम करै जुत प्रीती, भूत सुद्धि करकै तज भीती ।।१२८५
साँमग्री फिर जल सौं सीचै, प्राँन प्रतष्ठा करै जु पीछै।
कर संकल्पहु अंगन्यास कर, न्यास-मात्रका करै निरंतर ।।१२८६
पात्र ताँम्र कौं लहै पवित्रा, चंदन घोट बनावै चित्रा।
जंत्र कोन खट लिखै जु जामें, अष्टकोंन पूजा हित वामें ।।१२८७
बाहर विधवत जंत्र बनावै, मात नवाक्षर मंत्र मँडावै।
आठ दलन मैं आठहुँ अछ्छर, अक्षर अंत मध्य धर असथिर ।।१२८८
करै प्रनिष्ठा वेद-मंत्र क्रत, हीय देवी सौं आँन परमहित।
या विध बनै न रीत ऊधारा, निवहै यामलोक्त निरधारा ।।१२८९
मूरत थापन करै धातु मय, भजै मंत्र-जुत जतन त्याग भव।
पूजा करै रूप परमारथ, कर आराधन होय क्रतारथ ।।१२९०
जपै नवाक्षर-अष्टोतर जप, लहि प्रमाद-मति होय न लोलुप।
ध्याँन सतादि सहित पूजै ध्रुव, होम दसाँस करै असथिर हुव ।।१२९१

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ता पाछे दसांस कर तरपन, बहुर दसांस जिमावै विप्रन ।
महाकाली[1] महालछ्छी[2] माता, वाँनी देवी आद विख्याता ।।१२९२
कहै चरित इनके सुच-कायक, दुरगा पाठ आद सुभदायक ।
ईख[3] मास मधु[4] पख उजीयारा, इह ब्रत करै हेत उद्धारा ।।१२९३
अपनौं सुख चाहै जो इछ्या, तौ ब्रत धारै सहित तितछ्या ।
सहत सरकरा घिरत समाना, हवन करै तौ होय न हूना ।।१२९४
छगल माँस कोऊ छत्रै चढावै, विप्रन अहिंस्या रीत बढावै ।
लाल धतूर पुस्प कौं लावै, बिल्ब-पत्र बरताव बसावै ।।१२९५
तिल सरकरा बसावै तौहू, करै कृतारथ मात सकोहू ।
निरधन धनी होय निरधारा, पुत्र बढै, बाढै परवारा ।।१२९६
दारद दोख मिटावन दायक, लछ्मी सदा वढावन लायक ।
करै वरत जो नरपत कोई, हार सत्रु सौं कबहुँ न होई ।।१२९७
विद्यारथी लहै पुन विद्या, उर की नासै सकल अविद्या ।
व्रत सुभकरता च्यार वरन कौं, कलुष हरन, मंगलहू करन कौं ।।१२९८
करै नार-नर ब्रत सब कोई, जीय कल्याँन चहै उर जोई ।
मन वंचत पावै सुख मोखा, इह जगजननी-बरत अदोखा ।।१२९९
मिंदर सुंदरता कै माँही, चंद्रोदय ऊपर कर छाँही ।
माँड़ै तहाँ अनूपम मंडल, थापै कलस पूज ताही थल ।।१३००
ताकै ऊपर फेर तहाँ ही, जंत्र सथापत करै वहाँ ही ।
मूल मंत्र पढ जव ब्रत मेलै, रुचर पवित्र नीर पुन रेलै ।।१३०१
पुन पुस्पन-माला पधरावै, धूप सुगंधी दीप धरावै ।
चंडीकौं नईवेद चढावै, देवी की उर-भक्ति दिढावै ।।१३०२
गावै मंगल गीत क्रीत गुन, ब्रहुर बजावै मंगल-बाजन ।
कंन्या पूजन सहित अनूक्रम, भली रीत सौं करै छाँड़ भ्रम ।।१३०३
आठम तिथ नवमी उजीयारी, ततपर करै हवन की त्यारी ।
कर समाप्त विध वेद करम कृत, है देवी कौ जिही परम हित ।।१३०४
पाराँयन दसमी कर पूजन, गरथ[5] दछ्छना देय जु दुजगन[6] ।
नार सुहागन ब्रत इह नींकौ, परमारथ पतिब्रत हित पीकौ ।।१३०५

१ मू. प्र. माहाकाली । २ मू. प्र. माहालछ्छी । ३ आश्विन मास । ४ चैत्र मास ।
५ गृहस्थ । ६ द्विजगण, ब्राह्मण ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

विधवा करै मुगत ह्वै बासा, बाढै हीयै मात बिसवासा।
नित सुखदायक है नरही कौं, जो सुखदा सब जन के जी कौं ॥१३०६
राजा सुरथ सुनहु इह रीती, पद पंकज कर मात प्रतीती।
पूजा करहु अंबका पावन, निसचै तन त्रय ताप नसावन ॥१३०७
सत्रुन मिटहिं पराक्रम सोहू, तेरौ राज मिलहि पुन तोहू।
पोखहि पुत्र नार परवारा, सुख भोगहु अवचल संसारा ॥१३०८
वैस्य करहु तुम याही ब्रत कौं, थिर आदर पैहौ मति थित कौं।
मित्र नार सुत रहहू मिलकै, चिंता तज जावहु घर चलकै ॥१३०९
इह देवी-ब्रत पूरै आसा, बसै अंत मनीदीप ही वासा।
भक्ती माता करै भाव सौं, दुख सौं छूटै नरक दाव सौं ॥१३१०
सुनी कथा मुन सौं इह आँनन, पुन कीय विनय जोर जुग पाँनन।
नदी गंग भागीरथ लायौ, छित मंडल जाकौ जस छायौ ॥१३११
आप वंस अरू जगत उधारौ, निरनय ऐसौ आप निकारौ।
पावन कथा मात-ब्रत पावन, निसचय संसय सोक नसावन ॥१३१२
दीयौ सनाय इहै उपदेसा, कटहैं जासौं असह कलेसा।
विधीपूर्वक करे जप विधाँना, मंत्र नवाक्षर देहु महाँना ॥१३१३
हुय प्रसंन मुनि कर हीय हेतु, सहित बीज पुन ध्याँन समेतू।
नरपत दीनौं मंत्र नवाक्षर, वैस समाधहु जाँन बराबर ॥१३१४
मंत्र ग्रहन कर चले उभय मिल, थिर कर चित्त गये पावन थल।
वास नदी तट करचौ विचारे, निरजन बन येकंत निहारे ॥१३१५
कर आस्रम आसन तहाँ कीनौ, भाव मात-भक्ती उर भीनौ।
मंत्र नवाक्षर जपत मनहिं मन, पुन सतोत्र दुरगा नव पावन ॥१३१६
ध्याँन परायन होय धुरंधर, कर उपवास रु कसत कलेवर।
बीते मास येक तिह वन मैं, मात बिसाम हेत जुत मन मैं ॥१३१७
गये निकट इक दिन मतिग्याता, महपत व्यास नमाये माथा।
असथिर होय कुसासन ऊपर, दुरबल गात करत तप दुसतर ॥१३१८
राजा वैस्य देख भुनिराया, जपहु मंत्र इह फेर जताया।
फलाहार इक बरख करे फिर, निहचल भक्ती करत निरंतर ॥१३१९
येक वरख फल-दलहु अहारा, भये करत तनकौं दै भारा।
सुपनै मैं सोवत सुखदाँनी, भयौ दरस दोऊ साथ भवाँनी ॥१३२०

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

उर बिसवास भयौ जुग[1] आई, मेटहै दुख जरूर मँहमाई।
ध्याँन करत मूरत हीय धारै, दरस लालसा लगी दुखारै ।।१३२१
फल तज जल अहार लें दोऊ, सहत सीत आतप तन सोऊ।
बरख येक इह रीत बितायौ, तप सौं नृपत बैस्य मन तायौ ।।१३२२
दीयौ दरस सुपनै मैं देवी, साँच ह्रिदय कर सब बिध सेवी।
जाँन दरस दीनौ जगदंमा, वपु दुख भाजन तजै विडंबा ।।१३२३
इह विचार मति सौं ह्वै आतुर, किहु विध भये न मन मैं कातर।
कुंड वनायो येक त्रकोनूँ, दावानल जारचौ मिल दोनूँ ।।१३२४
काटन लागे मांस कलेवर, आहूती श्रोनत दै ऊपर।
जारन लागे गात जबै ही, तुरत दया कीय मात तबै ही ।।१३२५
दीय प्रतछ्छ दरसन सुखदायक, बार-बार बोली इह बायक।
मांग-मांग वर जो मन वंचत, कमी न राखहुँ तामैं किंचत ।।१३२६
राजा बोल्यौ सुन सुरराया, सत्रु मित्र मिल मोहि सताया।
खोस राज कीय अधिक खवारी[2], निज पुत्रन बिछुरे गृह-नारी ।।१३२७
वनमैं बैठौ बिपत बिताऊँ, पाछौ राज मोह मैं पाऊँ।
इह उर की मेटहु अभिलासा, निज रजधाँनी करूँ निवासा ।।१३२८
जव सुनकै बोली जगदंबा, वचन मोर राखहु विश्वंबा[3]।
सत्र मिटहिं दुख घटहि सुग्याता, सब मिलहैं सुख संपत साता ।।१३२९
अनुवछ्छर इक अयुत अखंडत, महि मुरजाद नीत नय मंडत।
राज करहु सुरपत की रीती, पूरी लावहु ह्रिदय प्रतीती ।।१३३०
वपु त्यागन कर दूसर वारा, क्रतु सूरज-गृह रहहु कुमारा।
मुन्वंतर सावर्न महाँना, होवहुगे पुन लखहै जहाँना ।।१३३१
वैस्य कहे देवी फिर बचना राजा सुरथ जेम प्रीय रचना।
वर माँगहु जनि करहु विलंबा, अत संतुष्ट भई मैं अंबा ।।१३३२
सुनी वैस्य देवी कथ स्राँनन, उर भक्ती-जुत बोल्यौ आनन।
पुत्र नार बंधव परवारा, स्वप्न समाँन झूठ संसारा ।।१३३३
मृघत्रस्ना तद्वत मँहमाया, क्रतम तत्व व्यूह है काया।
करूँ भक्ति तोहि छाँड़ कल्पना, इह जग मैं कोई नाँहि न अपना ।।१३३४

---

१ जागने पर। २ ख्वारी, बरबादी। ३ विस्वास।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ग्याँन देहु तेरे गुन गाऊँ, पद निर्बांन अंत मैं पाऊँ।
इह सुन बैस्य बचन अनुसारा, अमल ग्यान दीय हेत उधारा ।।१३३५
जुगल जनन वर दै छिन जाई, श्रीअंबा निज लोक सिधाई।
लै वरदाँन पाँय मुनि लागै, सुरथ वैस्य बिव होय सभागै ।।१३३६
उभय रहे कछु दिन सुभ आस्रम, भीत निवार विसार सकल भ्रम।
मंत्री प्रजा सकल जन मिलकै, हेरत-हेरत आये हलकै ।।१३३७
अरज करी राजा-प्रत ऐसै, भाग गये वैरी तुम भै[1]सै।
पुरी गेह कौं तुरत पधारौ, सबै राज के काज सुधारौ ।।१३३८
राजा चल्यौ लेय मुनि-रजा, पुरी आय संतोखी प्रजा।
मिल्यौ नार सुत पायौ मोदहु, कीय सागर सीमा चहुँ कोदहु ।।१३३९
पोखे सुत बंधव परवारा, धराधीस अवचल छत्र धारा।
बिचरन लागौ बैस बिग्याँनी, निसचल चित्त होय निरबाँनी ।।१३४०
कही व्यास जनमेजय कथा, जाँनी महिमा देवी जथा।
पाठ करै कोऊ सुनैं प्रवीनूं, ताप जाय तिनके पुन तीनूं ।।१३४१
भक्ति बढै उर आद भवाँनी, देवी सब देवन सुखदाँनी।
होय प्रसंन जननि दुख हरै, इह लोक रु परलोक उद्धरै ।।१३४२

---

१ भय।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बुधसिंह चारण रचित

देवीचरित

द्वितीय भाग

षष्ठम स्कंध

दोहा

कही व्यास कुरुविंद्र सौं, महमा पावन मात।
सुनी सूत सौं श्रवन सोइ, सौनकादि मुनि साथ ॥१
सौकनादि फिर सूत सौं, प्रश्न करचौ सुख पाय।
सुत त्वष्टा वृत्तासुरहि, इंद्र हन्यौ क्यौं आय ॥२
त्वष्टा सुर समुदाय तिह, अंगज द्विज मति ऊद्ध।
विस्नु-प्रेरणा बध भयौ, बाढ्यौ केम विरुद्ध ॥३
सबही देव सतोगुनी, माँनव रज गुन मेल।
गनीयत दैत तमोगुनी, इह सिद्धांत अपेल ॥४
सुरपत संभ्रव सत्त गुन, सतोगुनी हरि सुद्ध।
वृत्तासुर बिसवास कै, कीय छल कस रन क्रुद्ध ॥५
कारन देवी वध करन, सूत कहहु समुझाय।
बली फेनजल सौं बध्यौ, ऐसौ कौन उपाव ॥६

छंद उद्धोर

सुनकाद सौं सुन सूत, इह प्रस्न पर्म अभूत।
करुराज पूछी कथ्थ, इह व्यास सहित अरथ्थ ॥७
सोइ कहत हूँ समुझाय, सुन लेहु मुनि समुदाय।
जुध वृतासुर अरू जिस्नु, वंचकपनौ कीय विस्नु ॥८
इह पुराँनन आख्याँन, परसिद्ध जग पहिचाँन।
पुन करौ तुम इह प्रस्न, अब कहत हूँ मति ऊस्न ॥९
तजीयै सु संसय ताहि, मिल रहे माया माँहि।
मुनि विस्नु अरू मघवाँन, बंचे न कोऊ बलवाँन ॥१०
अवतार लै हरि आद, बहु करत रहत बिखाद।
दनुजात सौं उर द्रोह, कर कपट छल-बल कोह ॥११

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

नित करत जुद्ध निकंद, इह रीत समुझहु इंद।
जन बँधे माया-जाल, हीय हेरहू इह हाल ॥१२
मम पुत्र इह मम मित्र, कुल एहु येहु कलित्र।
इह धरा इह मम ऐंन, बंध्रव इहै मम बैन ॥१३
उरझाय आपौ आप, सुरझाय नाँहि सँताप।
जग देह धारक जीव, सुख लहत दुखहु सदीव ॥१४
इह लखहु माया ईस, बलवती बिसवावीस।
सुर बिस्नु आद सकोय, माया रही जग मोय ॥१५
मधु निकंदन मघवाँन, निझ काज करत निदाँन।
हित आप तत्पर होय, सिध करत कारज सोय ॥१६
बाढ्यौ बिरोध विख्यात, बासव वृतासुर वात।
सुन लेहु स्राँनन सोय, समुझाय कहत सकोय ॥१७
इक देवगन मैं ऊद्ध, पुन तपोबल परसिद्ध।
प्रीय पितामह परबीन परजापती गुन पीन ॥१८
निझ तिही त्वष्टा नाँम, क्रतु भये करता काँम।
सझ द्रोह ऊर सुरपत्त, इक पुत्र कीय उतपत्त ॥१९
वँह नाँम परम अनूप, राख्यौ सु विस्वारूप।
ताकैं सु आनन तीन, परचंड पौरुख पीन ॥२०
मुख येक बिसद महाँन, सोइ पढ़त वेद सुजाँन।
दूसरैं मुख सुख दाँन, पुन करत मदरा-पाँन ॥२१
वर त्रतीय मुख विख्यात, सब दिसा देखत सात।
सोइ त्रसर मुनि मति सुद्ध, सुख भोग त्याग समृद्ध ॥२२
तप करन लागे ताँम, वपु कठन छोर विराँम।
सो सहत आतप सीत, आठहू पहर अभीत ॥२३
मुनि देखकैं मघवाँन, अंदेस बाढ्यौ आँन।
तप भंग करन तिनूह, जोरचौ सु अछछर जूह ॥२४
प्रेरे सु तँह मुनि पास, हीय गई धार हुलास।
कीय हाव भाव कटाछ, नाची सु बहु-विध नाच ॥२५
सुर ताल-जुत संगीत, गाये मनोहर गीत।
वीनाद तंत वजाय, स्रंगार रूप सझाय ॥२६

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कीय कथा काँम किलोल, ललचाय लोचन लोल ।
छल करे बहुविध छंद, मति डिगी नाँहि मुनिंद ।।२७
पुरहूत पहुँची पास, अत होय चित्त ऊदास ।
कर जोर बोलो कथ्थ, सब रीत मुनि समरथ्थ ।।२८
कीय हाव-भाव कितेक, जहाँ चहै जत्न जितेक ।
गाई सु वहुविध गाँन, सुन मूक बधर समाँन ।।२९
लय जोगमैं हुय लीन, कछु नाँहि चितवन कीन ।
दीनौं न श्राप दुसार, इह मुनहू कौ उपगार ।।३०
डर गई हम तौ देख, बपु तेज पुंज बिसेख ।
अब और करहु उपाय, सुरराज काज सुभाय ।।३१
बोली सु अफछर बात, उर इंद्र गन उतपात ।
कीय मतौ मारन काज, लोभी सु तजकै लाज ।।३२
मुनि लयौ आस्रम मग्ग, गहि वज्र पाँन उदग्ग ।
दुति उग्र मुनिवर देख, तहाँ इंद्र बाढ्यौ तेख ।।३३
मुन चिते नही मघवाँन, धारना धारै ध्याँन ।
छोरचौ सुवज्र चछोह, मुनिराज उपज्यौ मोह ।।३४
पुन गौंन कीनौं प्राँन, मुनि परे लख मघवाँन ।
जिह देख कीनी जेज, तन तजत नाँहिन तेज ।।३५
विस्मयत भये तिहवार, मृत है क जीव मझार ।
उर लाय परम अँदेस, सोचनै लागे सुरेस ।।३६
तक्षा बुलाये ताँम, कहि इहै करहू काँम ।
मुनिराज काटहु मथ्थ, ऊठै जु ह्वै अनरथ्थ ।।३७
उपगार कीजै येह, सुभ काज सहित सनेह । -
सुन कही तक्षा स्राँन, मम बात सुन मघवाँन ।।३८
मुन त्रसर कौं तुम मार, लीय वृह्महथ्या लार ।
चित करी नाँहिन छोभ, लाचार ह्वै बस लोभ ।।३९
अब कहत हमकौं आप, पुन होउ भागी पाप ।
सुख नाँहिं कछु स्वारथ्थ, मुनि करै कल्पन मथ्थ ।।४०
जब दयौ वासव जाव, हित चहत्त बात हिसाब ।
जिग करत माँत्तव जात, वसु बात है विख्यात ।।४१

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बध पसू करन बिधाँन, जानत सु तुमही सुजाँन।
बलीदाँन बिसवाबीस, सोइ मिलहै तुमकौं सीस ।।४२
हित जाँन तक्षा हीय, ललचाय परसुध[1] लीय।
मुनि सीस काटे मार, कल भयौ हाहाकार ।।४३
सिर तूट परत समाँन, इक भयौ अचरज आँन।
निकरे सु मुख नीसार, पंखेरुआ अनपार ।।४४
जिग ओसधी पीय जास, पढ़ करत वेद प्रकास।
आनन सु बीच उदोत केऊ नीकरे जु कपोत ।।४५
मुख पीयत जिह मदराह, चटका सु निकरी चाह।
दिस मुखा जाहि दिखात, खरकोन[2] निकरे ख्यात ।।४६
निरमोक निकरत नीत, पुरहूत भइय प्रतीत।
मुन मृतक जाँन महाँन, मुद पाय गये मघवाँन ।।४७
स्रुत सुनी त्वष्टा सोय, हीय रह्यौ बिसमय होय।
पुत्र बिन अपराध, बज्री करचौ किम बाध ।।४८
मन विकल उपज्यौ मोह, कीय इंद्र पै पुन द्रोह।
बोले सु त्वष्ठा बैंन, निज देखहूँ बल नैंन ।।४९
बध तोहि हित बलवाँन, उपजायहूँ सुत आँन।
त्वष्टा सु अमरख ताछ, संकल्प कीय इह साच ।।५०
विधसौं अथर्वन बेद, खल इंद्र हित कीय खेद।
जाजुल्य अगन जगाय, आहूत दीनीं आय ।।५१
इम दिवस बीते आठ, पुन करत आहुत पाठ।
इक होम-कुंड अभूत, परगट्यौ सु दूसर पूत ।।५२
अत तेजवंत अखंड, पब्बय समाँन प्रचंड।
द्रग देख सुत सुखदाँन, बोले सु त्वष्टा बाँन ।।५३
अहो इंद्र सत्रू अनंत, बाढौ सु तुम बलवंत।
बाढचौ सु तेज बिसाल, जनु दुतीय पावक ज्वाल ।।५४
तन दिप्घ दीसत तेम, है मनहु गिरवर-हेम।
करता सु सत्रुन काल, वपु प्रबल अत विकराल ।।५५

---

१ फरसा। २ तीतर।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पुन बोल पितु जुत प्रेम, नय वेद देखहु नेम।
कर संसकार क्रतग्य, तन करन नाँम जु तग्य ।।५६
पितु कहहु तत पश्चात, वढ करहुँ जैसी बात।
ब्रत करत जिह निरवाह, रोकदूँ सूरज-राह ।।५७
खित मेर सहित उखार, बोरूँ क समदर-बार।
कल इंद्र बरुन कुबेर, जमराज कौं कर जेर ।।५८
सब देवगनन समेत, खंडन करूँ बिच खेत।
तुम तजहु चिंता तात, बिसवास माँनहु बात ।।५९
सुत बात सुन पितु स्राँन, बोले सुत्वष्टा बाँन।
तुम वृतन सैं हे तात, भए रक्ष करता भ्रात ।।६०
निज वृत्त तुमरौ नाँम, कुल उद्धरन इह काँम।
भये त्रसर तेरौ भ्रात, निध धरम मुनि निस्नात ।।६१
अपराध विन सुरीयंद, कीय वज्र मार निकंद।
वँह बयर कौं अवगाह, सुन स्रवन मोर सलाह ।।६२
कीय ब्रह्महथ्या काँम, वह भयौ रहत ऊदाँम[1]।
मारीयै सुरपत मूढ, गम पायकै मम गूढ ।।६३
सुन पिता सासन स्राँन, बोल्यौ सु अत बलवाँन।
पितु करै आग्या पूत, सिर धरै सोय सपूत ।।६४
मैं आप सुत महाराज, कीय इंद्र भ्रात अकाज।
मारूँ न जो रन माँहि, कुल आप उपज्यौ काँहि ।।६५
सुन पिता सुत की स्राँन, ऊद्धरस[2] बाढचौ आँन।
दीय कवच सिंदन देख, बहु सस्त्र-अस्त्र बिसेख ।।६६
पितु करे सुत परनाँम, हीय धार संगर हाँम।
दै विप्रगन कौं दाँन, आसीस लै अप्रमाँन ।।६७
पितु लेय अग्या पूत, हथ करन कौं पुरहूत।
रथ हाँककै लीय राह, वज्रीय-पुर वेबाह ।।६८
असुराद राखस और, दल मिले अगनत दौर।
आसुरी-सैन उमंड, चल चलीय चहूँ दिस चंड ।।६९

१ निःशंक। २ हर्ष।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

आतंख परेऊ अघात, वसुमती सुनकै बात।
यह सुरन सुनीयै उदंत, उर-सोक बढेऊ अनंत ॥७०

दोहा

सुरगलोक मैं अपसुगन, होन लगे जिह हेर।
सुर आये सबही समिल, बासव पँह तिह बेर ॥७१

छंद पद्धरी

सव मिल्यौ आय देवन-समाज, वोले वासव सौं छोर व्याज।
है अकसमात कछु होनहार, दुरनिमत दिखावत द्वार-द्वार ॥७२
घूंकार गिद्ध रव घुरघुरात, चिल्लनी स्वेत बहु चहचहात।
पोतकी बैठ तरू पंत-पंत, चीकू-चीकू चची चीचवंत ॥७३
अँसुवा हय गय के झरत अक्ष, विपरीत फूल-फल लहै वृक्ष।
राखसी नार कहुँ रही रोय, निज नैंन उरू पाँनी निचोय ॥७४
डिग रहे पौंन विन ध्वजा दंड, खित आय परत ह्वै खंड-खंड।
कारी तन नारी अत कुरूप, भागहू-भागहू कहत भूप ॥७५
हलचलत सिंधु भूकंप होय, सरवरी लखै दिग दाह सोय।
अरू उठत फेकरी मुखा ऊँक, भैंकरी राव सौं रही भूंक ॥७६
उल्लूक देत है हूंक आय, धाँमन पै बैठत धाय-धाय।
सब कहत देव इह समाचार, है सुरपत निश्चय होनहार ॥७७
अवसर लख करीयै अरज येव, उतपात जतन कछु अवसमेव।
वज्री इत सोचत रहे बात, सब देवन की समुदाय साथ ॥७८
इतनै मैं दूतन कही आय, त्वष्टा सुत आवत ऊरत पाय।
मारयौ तिंह बंधव वज्रमार, बिद्वेस निकारन इहीं बार ॥७९
परगट कीय त्वष्टा दुतीय पूत, इह वृत्तासुर नाँमी अभूत।
परबताकार बाहू प्रचंड, चमकावत आवत खड़ग चंड ॥८०
दूतन की सुनकै देवराज, संजुक्त सभा देवन-समाज।
गरूराज बुलाये महाग्यात, वृत्तासुर त्वष्टा कही बात ॥८१
जब सुरपत की सुन कह्यौ जीव, अंन्याय करयौ तुंमनें अतीव।
मिल निरपराध मारयौ मुनिंद्र, इह लाग्यौ फल तिंह लेहु इंद्र ॥८२

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बतरात रहे गरू इंद्र बात, घर देवन ऊपर बनी घात ।
दीने त्वष्टा के सस्त्र दूठ, ऋभू लोक प्रहारन लग्यौ रूठ ।।८३
वृत्तासुर आयौ महाबीर, सम सुप्तकाल जैसै सधीर ।
गंधर्व जिक्ष किंन्नर नगेह, अत कोलाहल बाढचौ अछेह ।।८४
मंदर तज भागे बिपन माँहि, चढ गिर किंदर आपौ छिपाय ।
बिललावत बैठे देव-वृंद्र, इह खबर सुनी गरूराज इंद्र ।।८५
जोरन देवन के लगे जूह, मेले दूतन कौं मूँह-मूँह ।
बड़वासुत पूरवा भग भवेस, नभस्वास वरुन जम अरू निधेस ।।८६
सबकौं कहाव कीय रन समंध, बाहन चढ आवंहु अनीबंध ।
गरूराज अग्र कर छोर गेह, धनु देवायुध पव कर धरेह ।।८७
ऐंरापत ऊपर चढचौ इंद्र, दनु वृत्तासुर सौं करन दुंद ।
थिर अचल जहाँ देवन सुथाँन, मानससर उत्तर किय मिलाँन ।।८८
वृत्तासुर रोक्यौ महाँबीर, सम सयल दिग्घ दीसत सरीर ।
अनगनत सैन संग आसुरीय, बिकराल सबै मनु कालबीय ।।८९
जाजुल्य होन तहाँ लग्यौ जंग, सुर और आसुरी सयन संग ।
सर गदा खङ्ग सकती त्रसूल, हठ सालन भालन साँग हूल ।।९०
दाँनव-दल आवत दौर-दौर, लूंबत जनु पव्वय अभ्र लौर ।
धर धूंम मची चहुँ ओर धूज, गिरवरन किंदरन रही गूंज ।।९१
परहूत वज्र मंडी प्रहार, लागे दाँनव की सैन लार ।
कीय दंड-मार जमराज क्रुद्ध, जूटे दल दाँनव प्रबल जुद्ध ।।९२
कर जुद्ध पुरंजन अरु कुबेर, घायल कीय अद्रन बीच घेर ।
जिह रीत औरहू देवजात, प्रहरन कर रोकी दनु प्रपात ।।९३
परहूत जुरे त्वष्टा सुपूत, उभयन विरोध बाढचौ अभूत ।
दोऊ ओर होत बहु घाव-दाव, पाछे न देत दोऊ ओर पाव ।।९४
अनेक अस्त्र-सस्त्रन ऊमंड, चकडोल मेदनी चढी चंड ।
ऊतपात होन लागे अनेक, देवन दनुजातन बढचौ द्वेख ।।९५
अर रहे जुद्ध बाहन अरोह, माहा मुनिराज लख भयौ मोह ।
बीते सत वच्छर इह बिधाँन, सुर असुर बैर बाढचौ समाँन ।।९६
जाजुल्य वृतासुर बढचौ जोर, घन प्रलय जेम रन भयौ घोर ।
पुरहूत बरुन जम फिरी पूठ, दल त्वष्टासुत कौ बढचौ दूठ ।।९७

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

लागे देवन कै दनुज लार, पुन अस्त्र-सस्त्र दीनीं प्रहार।
सुध विसरी येक न एक संग, जय आस तजी सब भजे जंग ।।९८
भागे सुर ऐसैं मति भ्रमाय, पारिंद्र देख मृघ-गन पुलाय।
ऐरापत लीनौं घेर इंद्र, आगे बढ़ त्वष्टा सुत अरिंद्र ।।९९
गज कौं तज चाल्यौ इंद्र गैल, सत्वर गत आडे देत सैल।
खोस्यौ ऐरापत जहाँ खेत, जीय माँझ आपनी ममुझ जेत ।।१००
पितु त्वष्टा आयौ जबही पास, हीय वृत्तासुर धारै हुलास।
परनाँम कीयौ पद वंद पूत, उर त्वष्टा सुख बाढ्यौ अभूत ।।१०१
बोले पितु सुत सौं देख वाँन, पुन आज भये हम पुत्रवाँन।
करतव्य भयौ सब सफल काज, अवलोक करचौ बासव इलाज ।।१०२
सीयराय दई मम उर सकोय, सुत त्रसुर बैर की आग सोय।
उपचार ओसधी दई येह, दुख माँनस जुरकौ मिटचौ देह ।।१०३
आसक दै सिक्षा देत और, ठिक आस्रम आसन करहु ठौर।
सुरपत सौं रहीयौ सावधाँन, करहू बिस्वास न तथा काँन ।।१०४
आराधन ब्रह्मा करहु और, निरभय बर माँगहु सुत निहोर।
अविनासी ह्वैकं मति अगार, मिल संगर बासव लेहु भार ।।१०५
भ्राता को बैर अरु राज-भोग, अब लैन काज करहू उध्वोग।
तपसी सुत मेरो भ्राता तोहि, कछु करचौ नहीं अप्राध कोहि ।।१०६
तिह करचौ निसूदन सुनहु तात, इँह इंद्र बैर कीय अनाघात।
ताकौ अब बल लख उरत पाय, सुन इंद्र मरन छाती सिराय ।।१०७
सुन पिता-वचन चाल्यौ सपूत, धारकैं इंद्र सौं द्वेख धूत।
गिर जाय गंधमादन गहीर, तप साधन बैठौ गंग तीर ।।१०८
नियम कौं धार विध चरन नेह, दर्भासन पै थिर करी देह।
निसचै धर त्यागौ अंन्न नीर, बिध ध्याँन परायन भयौ बीर ।।१०९
जप करत मन ही मन जोग जुक्त, बिसई सुख हू सौं ह्वै विरक्त।
सुन इंद्र बात बाढी सु चिंत, अवगाह बयर कौं आद अंत ।।११०
बिघ्न कौं कारन बासव बिसेस, भेजी सु अपछरन दिव्य भेस।
गंध्रव मिल किंन्नर करे गाँन, बज बीन पखावज मधुर बाँन ।।१११
विद्याधर बहु विध रचे वेख, येक सौं येक अद्भुत अनेक।
नहीं पलक ऊघरी तऊ नैंन, बोल्यौ नहीं आनन कोऊ बैन ।।११२

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अहि आद दिखाये भय असेख, द्रग नाँहि उघारे काज देख ।
सोचन कौं लागौ तब सुरेस, बृत्तासुर बातन सुन बिसेस ।।११३
बीते सत बछ्छर करत बिघ्न, लय ध्याँन विरंचन दरस लग्न ।
चढ हंस आयकै बदन च्यार, बरलेहु कह्यौ इह बार-बार ।।११४
छोभ कौं त्याग अरु ध्याँन छोर, जग करता वंदे करग जोर ।
वृत्तासुर कीनीं बिनय बीर, सज समर देव जीते सधीर ।।११५
बासव कछु राखत बैरभाव, दुरबुद्ध मोहिपै रत्नहि दाव ।
अयमय सस्त्रन सौं काठ आद, बपु होय सकै नही कबहु बाध ।।११६
दिन प्रतै पराक्रम बढै दौर, मोहिं अभय देहु सब सुरन-मौर ।
कहि तथा-अस्तु बिध गमन कीन, परचंड भयौ तहाँ भुजा पीन ।।११७
पितु-चरन आय कीनौं प्रनाँम, करतार करचौ सिद्धि काँम ।
पितु कहहु जथा मैं करहुँ पूत, साँची बिध जाँनहु जब सपूत ।।११८

दोहा

त्वष्टा सुन बोल्यौ तहाँ, वृत्तासुर के बैंन ।
बिस्वरूप[1] नहीं बीसरत[2], रहत याद दिन रैंन ।।११९
निरपराध मारचौ निलज, मुनि उत्तँम मघवाँन ।
तोर भ्रात कौं तात तुम, बैर लेहु बलवाँन ।।१२०

छंद मोतीदाँम

वृतासुर काँन सुनी इह बात, भयौ उर-क्रुद्ध चितार कै भ्रात ।
पिता पद-वंदन कौं कर पूत, प्रहारन काज चल्यौ पुरहूत ।।१२१
तज्यौ गृह ऊठ जहाँ ततकाल, चढयौ सोइ सिंदन ऊपर चाल ।
निहंसत संख नगारन-नाद, बढचौ मग बासव हेत विवाद ।।१२२
सिखावन देत सबै विध सैन, हन्यौ मम भ्रात कौं संसय है न ।
बिसारत येह पिता न बिरोध, संघारकै बासव देहु संबोध ।।१२३
लहूँ सुरलोक बिभूतीय लाह, दुरंतर मो पितु मेटहुँ दाह ।
चल्यौ बतरावत लै दल चंड, झिलायकै है दल पैदल झुंड ।।१२४

१ पुत्र त्रशिरा । २ भूलता ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वृतासुर बात सुनी मघवाँन, बकारकै देवन कौं बलवाँन ।
सँभारकै सैन करी सब सज्ज, बढी धुन घोर अडंवर बज्ज ॥ १२५
सबारीय है-दल पैदल संग, इकाइक संमुह चाल अभंग ।
बनायकै गिद्ध की आकृत व्यूँह, जमायकै जोर सौं जूहन-जूह ॥१२६
वृतासुर देवन सैन विलोक, थटे दल बाँधकै थोकन-थोक ।
करचौ मघवाँनहु दारुन कोप, रुक्यौ वृत आहव मैं पग रोप ॥१२७
मँड़ी तहाँ बाँन कृपाँनन मार, कती सकती अरू कूँत कुठार ।
उभै दिस मारत येकन-येक, बकारकै येकन-येक बिसेख ॥१२८
उभै जय आपनी-आपनी आस, पराक्रम आपकौ आप प्रकास ।
इतै सुरराज हू पाव अडग्ग, मिल्यौ वृत बीर दिखावत मग्ग ॥१२९
धिख्यौ तहाँ वज्रीय कै उर धेख, बिचारकै राज कौ लोभ बिसेख ।
वढ्यौ सुर वाहनी वीर बकार, मँड़ी सतकोटीय[1] की अतमार ॥१३०
ज्युँही सुर औरहु आयुध जोर, घुमंड़ेउ रार प्रहारन घोर ।
विड़ारत नैरत आसुर-वृंद, करोरन तूट परे धर कंध ॥१३१
छिके तन घाव गये पग छूट, रहे दल दाँनव पै सुर रूठ ।
कुप्यौ वृत देखकै माँनहु काल, विलोककै आपनी सैन विहाल ॥१३२
विचारकै भ्रात कौ बैर बिसेस, संघारन कारन जाँन सुरेस ।
पिता दीय आयुध कौं गहि पाँन, उपायकै सिद्ध ह्रिदै अवसाँन ॥१३३
संघारन लागेऊ देवन साथ, घनी कर अस्त्रन-सस्त्रन घात ।
जुरचौ तहाँ अंधर-धुंधर जंग, भयौ चल देवन कौ बल भंग ॥१३४
जुरचौ सोइ आयकै बासव जुद्ध, सुकारज पायकै चाहि सनिद्ध ।
करे तिह दाव रू घाव कठोर, तरासकै कंकट दीनेऊ तोर ॥१३५
हट्यौ बल बाँह जहाँ पुरहूत, सध्यौ नहीं संगर कारक सूत ।
गह्यौ सुरराजहु कौं गल गज्ज, मरोरकै दाब लयौ मुँहमज्ज ॥१३६
लख्यौ सुरराज कौं लीलत लाग, भयातुर होय चले सुर भाग ।
मिले गरूराज सौं वीनती मंड, उचारीय आहव कथ्थ उछंड ॥१३७
असंभव कीन वृतासुर आज, समेटकै लील लयौ सुरराज ।
करौ कोऊ आप उपाय कृपाल, जिही विध होय निराकृत जाल ॥१३८

१ वज्र ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मँड्यौ सुर चित्र सिखंडज मंत्र, तहाँ कीय तत्व विचारकै तंत्र ।
जँमाइय कारन जारन[1] जोर, खुले तिह वारन लाइय खोर ।।१३९
निसार कौं पायकैं देवननाथ, समेटकै अंग चल्यौ इक्र साथ ।
मिल्यौ सोइ देवन के दल माँहि, नमे गरूराज सौं मोद मनाहिं ।।१४०
सजे फिर संगर कौं सुरराज, सबै संग लैकर देव-समाँज ।
बिते अनुवच्छरहू तिहवार, हिसाब की रीत सौं येक हजार ।।१४१
बढयौ वृत साहँस वीर विधाँन, विरंचन जाहि दोयौ वरदाँन ।
जई रन जाँनकै बाहु अजाँन, मिटी जय आस चले मघवाँन ।।१४२
भजे सुर औरहू ह्वै भयभीत, बन्यौं दिन जाँन लयौ विपरीत ।
वृतासुर पाय विजै वरवीर, भई संग औरहू आसुर-भीर ।।१४३
जम्यौ सोई इंद्रपुरी कँह जाय, सँभारकै वैभव कौं सरमाय ।
इंद्रासन पाय बड़ौ इधकार, बली वन नंदन राच बिहार ।।१४४
बसायेऊ काँमदुधा कल-वृछ्छ, सबै गन अछ्छर केतन स्वछ्छ ।
सवारीय ऊच्चस्रवा गज सेत, सुवासन रत्नन-कोस सहेत ।।१४५
पदारथ और करे निज पाँन, थिती सुरलोक बसाय सुथाँन ।
भजै सुख पाय सदा जिग-भाग, उपज्जीत चैंन पिता अनुराग ।।१४६
लयौ निज बंधव-बैर निकार, पिता पन कींन भयौ सोई पार ।
सबै बिध वृत्त कहाय सपूत, प्रचारकै जीत करी पुरहूत ।।१४७
दसूं-दिस बाढेऊ राज कौ दौर, भजे सुर डोलत साँजहू भौर ।
मुनीजन सीख कौं बासव माँन, गयौ कयलासहु कौं कर गौंन ।।१४८
जुहारीय धूरजटी कर जोर, वृतासुर कथ्थ कही सु बहोर ।
सदासिव कीजहु देव सहाय, महाखल दीजहु वृत्त मिटाय ।।१४९
विचारकै सिंभु चले तिँहवार, गये सोइ ब्रह्म कै बीच अगार ।
कही करतार सौं देवन कथ्थ, सिहाय कै काज लये तब सथ्थ ।।१५०
सुकारज जाँनकै येक सलाह, रमापत-लोक लई निज राह ।
हरी कर वंदन जाय हजूर, प्रकासेऊ देवन कौ दुख पूर ।।१५१
बृतासुर खोस लयौ निज वास, बितावत दुःख फिरै बनवास ।
दया कर देव उबारहु दीन, प्रभू जग-तारन पौरुख पीन ।।१५२

---

[1] जावड़े, जारण-क्रिया ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वली दनुराज पताल बसाय, निकंटक देवपती कीय न्याय।
रमापति होयकै मोहनी रूप, अनामय अंमृत पाँन अनूप ।।१५३
करायेऊ देवन-काज कृपाल, पिछाँनकै वृद करौ प्रतपाल।
दुखी लख देव हरी गन दास, विधोविध बोध दयौ बिसवास ।।१५४
विचारकै बोध रमापति बात, बखाँनत च्यार ऊपाय विख्यात।
पिछाँनहु स्याँम रू दाँम परेख, बतावत भेदहु दंड बिसेख ।।१५५
कोऊ कछु सज्जन कौं करनीय, कोऊ हित दुष्टन कारन कीय।
सोई बल बुद्ध तथा छल साथ, निहारकै काज करै निसनात ।।१५६
दीयौ बरदाँन जिहीं विध देव, इही परभाव सौं वृत्त अजेव[1]।
बिना सोइ स्याँम उपाव के बीर, पराभव नाँहिन पावहि पीर ।।१५७
इहै खल जाँनहु जुद्ध अपेल, मिलावहु गंधृव देवन मेल।
बिसास मैं आवहिगौ जिह वेर, घृना तज मारहिंगे तिंह घेर ।।१५८
पिछाँनकै वज्र करै परवेस, इही हम स्याहिक होय असेस।
बिना बिसवास दयै वरवीर, धरै नहीं वृत्त कदाचित धीर ।।१५९
सुनौं सठ सत्रू के साथ सुकाज, कीयै सठता नहीं होय अकाज।
छले बल वाँमन कौं कर छंद, बसायेऊ जाय पताल मैं बंध ।।१६०
बिसास कै मोहनी रूप बनाय, दिखायेऊ दैंतन कौं छल दाय।
सुधा दीय देव अदेव सुराह, रखी छल की बल की विव राह ।।१६१
बतावहिं जो तुम कौं हम वाट, ऊपाव सौं जावहिं दूर उचाट।
जितै सरनागत हौवहु जाय, मनावहु आद भवाँनीय माय ।।१६२
उपावहिं मोह जबै हीय अंध, बिनासकै कालकौं बाँध है बंध।
रमापत नीत की माँन रहंस, सुपबंहु आदक नैंन सहंस ।।१६३

दोहा

गये देवगन मेर गिर, देख सघन वन देस।
निरजन थल पावन निरख, बासव सेसु बिसेस ।।१६४
जगदंबा हित जाप जप, तप साधन वपु तेम।
करन[2] लगे स्तुति [तबहिं[3]], परा सगत जुत पेम ।।१६५

---

१ अजेय। २ मू. प्र. करने। ३ मू. प्र.—शब्द छूटा हुआ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

छंद अरध हर-गीतका

सिद्धदा प्रकृत सातुकी, आधार मात अनाथ की।
तूँ कामदा जगतारनी, अघ मेट अधम उधारनी ।।१६६
महमाय दाँनव मोहनी, अनभीत सिंघ-अरोहनी।
जग जीव अंतर-जाँमनी, संसार साखी स्वाँमनी ।।१६७
आराधनीय अखंडनी, मुरजाद वेद ही मंडनी।
परमातमा परमेस्वरी, हित अरथ बंदत हर हरी ।।१६८
कल आतताय निकंदनी, बिस्वेस्वरी सुर-वंदनी।
जोगिंद्र मुन-जन जाँन कौं, नित देत पद निर्बांन कौं ।।१६९
आकासबाँनी आद तूँ, निर्गुना गुन निर्वाध तू।
संसार-ताप नसावनी, परभाव कीरत पावनी ।।१७०
भ्रम भेद बुद्धी भाव कौं, अग्याँन करन अभाव कौं।
प्रतपाल दीनन पोखनी, नित्या तुँही निर्दोखनी ।।१७१
परमार्थ सत्य प्रकासनी, निज भक्त संकट नासनी।
रमतीत निश्चय रूपनी, भगवती जग की भूपनी ।।१७२
करनी सु अंड कटाह कौं, प्रज आद स्रष्ट प्रवाह कौं।
रिखी जोगजन[1] मन रंजनी, निस्रेय रूप निरंजनी ।।१७३
विरचै न मात विसेखकें, द्रग पुत्र अवगुन देखकै।
परीआय रीत पिछाँनकै, जन स्याहि करहूँ जाँनकै ।।१७४
सब सुरन आद सुरेस की, करता सु दूर कलेस की।
महमा सनातन माय की, सुत दीन करन सहाय की ।।१७५
जिग करत अगन जगायकें, लै नाँम आहुत लायकै।
स्वाहा समर्पत सुरन कौं, कल्याँन त्रपती करन कौं ।।१७६
तूँ सुधा पित्रन-तोखनी, विस्वास द्रष्ट विलोकनी।
पुष्टी तुही जग-पालनी, सांती हू लाज सँभालनी ।।१७७
कांती तुही भव कारना, धृति ध्याँन मति की धारना।
सुमृती मेधा सरसुती, पद्मा सती तूँ प्रकती[2] ।।१७८

---

१ योगीजन। २ मू. प्र. प्रकती।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पापिष्ट महिष प्रचंड कौं, दीय जुद्ध करकै दंड कौं ।
निरभीत कीय नारायनी, अतताय असुर ऊधारनी ।।१७६
निभसुं सुंभ नसावनी, परवाह कीरत पावनी ।
अंन्नेक आसुर उद्धरे, तुव करग कमलन सौं तरे ।।१८०
अब वृतासुर पुन औतरचौ, कुल देव कौं संकट करचौ ।
अघ मेट ताहि उधारीयै, मति मूढ़ खल कौं मारीयै ।।१८१
सब देव मिल कीनीं स्तुती, वर सांत-रस धारै ब्रती ।
प्रगटी सु करुना पायकै, वपु सुभग वेख[1] बनायकै ।।१८२
भुज पास अंकुस प्रभृता, सोइ अभय मुद्रा संजुता ।
कमीनय कटकै किंकनी, धारै सु पग नूपुर धुनी ।।१८३
कर-वलय कुंडल काँन मैं, अहिवेल दल अधुराँन मैं ।
बिच भाल रंजन विंदली, सौगंध पसरत सिंदली ।।१८४
मुसकाँन मंद अमुल्लरी[2], अत हेत करुना उल्लरी ।
नालीक आभा नैन मैं, वरसत सुधारस बैन मैं ।।१८५
स्रंगार सोड़स सोहनी, उर फूल-माल अरोहनी ।
तन लाल तप तपनीय[3] सी, विद्वत सुधाधर बीय सी ।।१८६
वेदांत-रस बरसाँवनी, स्रुति-ग्याँन गुन सरसाँवनी ।
अद्वैत-रूपा आद कौं, अग्याँन समन उपाध कौं ।। १८७
जोगेस्वरी जगजाँमनी, गज-मत्त सुंदर गाँमनी ।
सुच रूप सुखद सुभाव सौं, भीनीं सु भक्तन भाव सौं ।।१८८
अवलोक देवन आप सौं, तन दीनता जुत ताप सौं ।
बोली सु देख बिचारकै, ध्रुव आँमना हीय धारकै ।।१८९
तुम कहहु कारज ताहि कौं, अब करू जाँन उपाय कौं ।
कर जोर सुर विनती करी, इक वृतासुर प्रगटचौ अरी ।।१९०
महमाय ताके मरन कौ, हित करहु मति के हरन कौ ।
हम अभय दीजै हेरकै, अब नाँहिं करहु अवेरकै ।।१९१
महमाय करकै तव मया, जुत हरष बोली जय जया ।
सोइ आप भवन सिधायगी, उर देव निश्चय आयगी ।।१९२

१ पोशाक, बेश । २ अमूल्य । ३ सोना ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

खल वृतासुर बल खूट है, छल जोग सौं दुख छूट है।
अब स्याँम दाँम उपाव कौं, द्रग देख करहै दाव कौं ।।१९३

दोहा

मिल देवन कीनौ मतौ, मारन कौं वृत मूढ़।
सम्मत कर ताही समय, ग्याँन विचारयौ गूढ़ ।।१९४
बोले रिखन बुलायकै, बिसवासहु वृत वीर।
याही मैं ह्वै है अरथ, पापी मिटैक पीर ।।१९५

छंद उधोर

सुन देवतन सिद्धंत, मिल रिखीसुर कर मंत।
गंधर्ब तपसी ग्यात, सब होय कै इक साथ ।।१९६
गये वृत्त पै कर गाँन, बिसवास कै कहि बाँन।
पुरहूत वयर पसाव, द्रढ समर राचत दाव ।।१९७
कल परत नहिं पल कोय, हित विजय चल-चल होय।
तुम करत खल जल तेम, जंभारि छल बल जेम ।।१९८
सुख होय करीयै संध, बिच बाँन बाँध है बंध।
परवीन त्वष्टा पूत, करीयै न रन करतूत ।।१९९
मघवाँन कौं कर मित निर्वैर रहहु निचिंत।
तुम वैर कै परताप, सब हमहु सहत सँताप ।।२००
तुम सुखी होवहु तात, सुर होय सकल सनाथ।
परचाय विवध प्रकार, विसवास वृत्त विचार ।।२०१
बोल्यौ सु तिह छिन बाँन, मुनिराज सबही महाँन।
मघवाँन लोभी मूल, पथ धर्म सौं प्रतकूल ।।२०२
छल करत केतक छंद, मति विकल निर्लज मंद।
वासव नहीं विसवास, रत पाप अवगुन रास[1] ।।२०३
जब दयौ मुनि-जन जाब, हम कहत बात हिसाब।
अचला हु सत्य अधार, ध्रुव रहत स्रष्टी धार ।।२०४

---

१ राशि।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

रवि सत्य सौं निज राह त्रिचारंतकै हाकत बाह ।
मरजाद सत्य मझार, वारीस सुम्भर वार ।।२०५
कर सत्य कौल करार, निश्चित होऊ निहार ।
बिस्वास राखहु बीर, सत्यात्म होय सधीर २०६
वृत आँनकै बिसवास, पन येहु कीय परकास ।
मुनि और गंध्रव मोहि, जुर जतन करहूँ जोय ।।२०७
दिन रात मैं कर दाँव, घालै न इनसौं घाव ।
सुस्कोद[1] पथ्थर सौं न, पव काष्ठ अय पहिचाँन ।।२०८
सुन इंद्र देवहिं साच, विध वेद सौं कहि बाच ।
मुनि सोच करहू मंत, सबही सयाँने संत ।।२०९
वृत की सुनी मुनि बात, बुलवाय इंद्र विख्यात ।
रवि अगन साखी रख, अत सपथ कीय अभिलाख ।।२१०
छल हीन जाँन्यौं चित्त, वृत मित्रता गन वृत्त ।
कर कौल बोल करार, निश्चित भये निरधार ।।२११
बिसवास बासव वृत्त, छल तकत धूत चरित्त ।
विव विपन नंदन बीच, निरवैर रहत नगीच ।।२१२
अरु गंधमादन अद्र, संग रहत तीर समुद्र ।
नित करत खेल निसंक, वृत्त छौरकै हीय बंक ।।२१३
जव परी त्वष्टा जाँन, सुत बोलकै सुस्थाँन ।
समुझाय दीनीं सीख, पुरहूत मित्र परीख ।।२१४
नित रहत संग निदाँन, है पुत्र तेरी हाँन ।
सुत करी पितु सम जास, वृत्त तज्यौ नहीं बिसवास ।।२१५
जाँन्यौं न मघवा जाल, कच आय पकरे काल ।
सुत्राँन[2] निस-दिन संग, मिल करत खेल उमंग ।।२१६
वृत्त छाँड़ संका बैर, लागे फिरै नित लैर ।
इक दिवस पहुँचे आय, सामंद्र तीर सुभाय ।।२१७
देखंत अपनी दाय, मन रहे दोऊ बिलमाय ।
सुचि[3] ओट लीन सुमेर, बरती सु संध्या-बेर ।।२१८

---

१. सूखा-पानी से युक्त । २. इंद्र । ३. सूर्य ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वरदाँन कीन विचार, बिध वचन की इहबार।
अह रात नाँहिन येक, बहु काल सौं वितरेक ।।२१६
धारचौ सु हीय मैं ध्यान, मधु निकंदन मघवाँन।
अप्रचंन्न[1] पहुचे आय, सुत्राँन करन सहाय ।।२२०
इक लख्यौ फेन उतंग, तिरआत[2] उदध तरंग।
सत कोटि बीच सुरेस, पुंन जाय करेऊ प्रवेस ।।२२१
जलफेन वज्र संजोग, अजमाय कीय उद्योग।
धारचौ सु उर मैं ध्याँन, श्रीपरासक्ति समाँन ।।२२२
वँह बेर सक्ती अंस, प्रवस्यौ सु आय प्रसंस।
द्रढ़ संध भय डिंडीर[3], सुत्राँन जाँन सधीर ।।२२३
पटक्यौ सु गहि कै पाँन, सिर वृत्त कै सूत्राँन।
वृत्त गिरचौ धरनी बीर, सम सयल दिघ्घ सरीर ।।२२४
बर्नना कीन बिसेस, सुर पाय लाग सुरेस।
वृत तहाँ नाँम बसाय, सुर मोद दीय समुदाय ।।२२५
वृतबीर मृतक बिलोक, श्रीविस्नु गये सालोक।
सुरराज सुरग सिधाय, हन सत्रु कौं हर खाय ।।२२६
सुन बात त्वष्टा सोय, रत वेदना हुय रोय।
धारी न हीय मैं धीर, तब गये सागर-तीर ।।२२७
बिन जीव पुत्र बिलोक, सुन हेत बाढ्यौ सोक।
कीय पारलोकिक-कर्म, ध्रुव धारना निज धर्म ।।२२८
सुत्राँन दीनौं श्राप, उर विकल होय अमाप।
मो करी अंगज मीच, निरलाज लोभी नीच ।।२२९
विस्वासघात बिसेस, सत त्याग कीन सुरेस।
दुख महा[4] भोगहु दुष्ट, पुरहूत पापी पुष्ट ।।२३०
सो गये अचल सुमेर, वपु करन तप जिंह बेर।
सुरलोक सुन कथ श्राप, सब करन लगेउ सँताप ।।२३१
मिल बैठ आपस माँहि, अघ इंद्र कौ अवगाहि।
बिध वेद नीत बिचार, इह कहत कथ्थ उचार ।।२३२

१. छिपकर। २. तैरता हुआ। ३. फेन। ४. मू. प्र. माहा

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जो देत संम्मत जाँन, मति देत कोऊ बिध म्लाँन ।
पापी करत जो पक्ष, पुन प्रेरना परतक्ष ।।२३३
होवत सो हाथोंहाथ, सब पाप भागी साथ ।
मघवाँन पक्ष मिलाय, कीय कलंकत हरि-काय ।।२३४
गंधर्ब किंन्नर ग्यात, संग रिखी मुनि साख्यात ।
धीरज बिगोयौ धर्म, कर महा[1] अनुचित कर्म ।।२३५
सिस अगन की दै साख, रवि बेद बीचै राख ।
अरु सपथ कींन अनेक, बिस्वास भाव विसेक ।।२३६
वृत तज्यौ भीत बिरोध, सित धर्म मारग सोध ।
बध्र करचौ तिह बिसवास, निज धर्म कारन नास ।।२३७
इह पाप भरता इंद्र, छल करचौ दुस्तर छंद ।
त्वष्टा सु सोकत[2] पाय, दीय स्राप महा दुखदाय ।।२३८
भुगतै बिनाँ उपभोग, अघ टरै नाँहिन ओघ ।
कथ करत देव निकाय, सो सुनत इंद्र सुभाय ।।२३९
भयग्रस्त बुद्ध भ्रमात, ज्यों-ज्यों प्रभा मुख जात ।
छाई मनौं मिल छाँह, रवि चंद पै जनु राह ।।२४०
कीय ब्रह्महथ्या क्रूर, नित घटत तातै नूर ।
इक दिवस़ देख उदास, जायवाहनी[3] कहि जास ।।२४१
वन करत नाँहि विहार, नंदनहु आद निहार ।
नहीं नदी सर के नीर, सुच करत स्नान सरीर ।।२४२
चढ करी चातुरदंत[4], कहुँ नहीं विचरत कंथ ।
सुन परत नहिं सुखदाँन, गुन गंध्रवन कौ गाँन ।।२४३
अरू सुनत नहिन अवाज, बीनाद तंतन बाज ।
कहु लखत नहिन कदाच, निज अप्छरन कौ नाच ।।२४४
इक करचौ वृत्त अहेत, खल मार लीनौं खेत ।
चित कौंन उपजी चिंत, इह कहहु नाथ इकंत ।।२४५
जब कह्यौ बासव जाहि, सुन तीया मोर सलाह ।
कीय वृह्महथ्या काँम, जीय बिकल आठहु जाँम ।।२४६

---

१ मू. प्र. माहा । २ शोक । ३ इंद्राणी । ४ ऐरावत ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जन करत निंदा जास, तन मोह उपजत त्रास।
मुख कहाँ दिखाऊँ मोर, घट घात उपजी घोर ।।२४७
पीयूख गरल प्रमाँन, पय काँमदुग्धा पाँन।
इम लगत मोकहँ श्रोर, सुख जिते दुख दसजोर ।।२४८
कही सची श्रागै कथ्थ, निकस्यौ सु इंद्र निरथ्थ।
लीय मानसर[1] की सर्न, वपु रूप कर बेवर्न ।।२४९
बस कमल-नाली बास, श्रप्रचंन्न रूप उदास।
श्रहि धार सुछ्छम श्रंग, भर पाप ह्वै चित भंग ।।२५०
सुरलोक हीन सुरेस, केऊ उपज श्राय कलेस।
वरखा मिटी वन बार, केऊ सुस्क भये कासार[2] ।।२५१
सूके सु सरता सोत, ऊद विघन होय उद्योत।
लखकै श्रराजक लोक, सुर रिखी भयेऊ ससोक ।।२५२
कीय नहुक[3] राजा काज, सुरलोक कौ सिरताज।
थिर इंद्र श्रासन थप्प, श्ररू विभत्र दीनौं श्रप्प ।।२५३
धरमिष्ठ धीरज धार, सुरलोक कीन सँभार।
कीय हाथ सुरपुर काँम, हीय वढी सुख कौ हाँम ।।२५४
बढ़ रजोगुन तिह बेर, श्रग्याँन छाय श्रधेर।
बन करत कुंज बिहार, लै श्रछ्छरन कौं लार ।।२५५
रत काँम क्रीड़ा रंग, सुध भूल विखीया[4] संग।
स्वाभाव बिसय सदीव, जग-जाल बाँधत जीव ।।२५६
सेवत ज्युँही सरसाय, उर नहिंन कोय श्रघाय।
गुन सची सुनकै गूढ़, मन भयौ लोलुप मूढ़ ।।२५७
बुलवाय रिखन विचार, श्ररू कही कथ्थ उचार।
थाप्यौ सु वासव थाँन, श्रँतरौ राखत श्राँन ।।२५८
सची करत नाँहिन सेव, दुरभाव राखत देव।
इह करहु सीघ्र उपाय, जयवाहनी समुजाय ।।२५९
मो रहै सेवा माँन, मन जाँन सम मघवाँन।
श्रावै सु मिलनै श्राज, कीजै सफल मम काज ।।२६०

---

१ मान सरोवर। २ सरोवर। ३ नहुष। ४ विषय।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दुज रीखी सुनकै देव, भाख्यौ सची कँह भेव।
उर सची होय उदास, बुलवाय गुरू[1] निज वास ॥२६१
हित कही आरत होय, मुरजाद राखहु मोहि।
विस्वास कहि गरू बाँन, सुख रहहु मो सुस्थाँन ॥२६२
जयवाँहनी गृह जीव, पहुँची सु निज हित पीव।
सरनै सु गुरुगृह संध, बाँध्यौ सची परबंध ॥२६३

दोहा

सुन्यौं नहुष राजा सकल, बृहस्पती बरतंत।
काँमातुर वंचत करन, कोप्यौ मनहु क्रतंत ॥२६४
अनदेवन रिखी आदकौं, कही नहुक नृप कथ्थ।
इद्राँनी कौं दीय अभय, विन बिचार बृसपत्त ॥२६५
लयौ बिभव सुरलौक कौ, दयौ तुमहिं रिख देव।
इंद्राँनी कैसै अलग, संम्मत करै न सेव ॥२६६
समुजावहु गरू कौं सकल, इंद्रानी दै आय।
नहिं तौ मारहु न्याव सौं, इह पापी अंन्याय ॥२६७

छंद पद्धरी

जब रिखन सुरन दीनौं जवाब, हम कहत बात सुनीयै हिसाब।
इंद्राँनी पतिव्रत तीया येक, अछ्छरो रूपबंती अनेक ॥२६८
तज सची भजहु तुम और तीय, सुचिव्रता येक इह है स्वकीय।
अरू धर्म तज्यौ नहीं कबहुँ अंग, सुरराज करत सोइ सदा संग ॥२६९
वरीआई[2] खंडत तिही वृत्त, पुन दोस लगावत बृहसपत्त।
ध्रम की रखवारी करहु धीर, पावहु जन मन मैं मृखा पीर ॥२७०
स्रंगार हेत रति कहत सुद्ध, वरजोर करै बाढै बिरुद्ध।
रस हाँन कार नही करत रीत, प्रीत सौं हीन समझहु विप्रीत ॥२७१
ऊत्तँम सिंघासन बैठ आप, पथ धर्म छाँड़ इह करत पाप।
परनारि करति रति रहत प्रेम, नरक मैं परत श्रुति वेद नेम ॥२७२

---

१ वृहस्पति। २ बल प्रयोग से।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

नृप सुनकै ऊत्तर दीय निदाँन, सुर सुनहुँ सबही रिखीगन सयाँन ।
गोतम कै मघवा जाय गेह, अनऊचत करचौ जब काँम येह ।।२७३
निज बृहसपती की हरी नार, चंदा मति-मंदा कहा बिचार ।
जब कँहाँ गये तुम सबही जाँन, हम सीख देत लख धर्म-हाँन ।।२७४
पद इंद्र करचौ मोकौं पसाव, नारी है मेरी इही न्याव ।
बरीआई बिनती कर वचार, निश्चै बुलवावहु इंद्र-नार ।।२७५
रचना इह सुनकै नहुकराज, सब ऊठ चल्यौ देवन-समाज ।
गरू के तव पहुचे जाय गेह, उच्चार वीनती सुरन येह ।।२७५
हम देख अराजक स्वर्ग हाल, वासव सिंघासन कीय बहाल ।
दुख देत हमहुँ सोई दुसाध, अंन्याय बढी हीय मैं उपाध ।।२७६
हम अरज करी केऊ सची हेत, राजा सोई मिस्रत[1] करी रेत ।
गरू करहु जतन अब छुटै गैल, मम स्वर्ग निवासी कटै मैल ।।२७७
तुम हमकौं नहिं तौ देय ताप, पुरहूत बिनाँ कोऊ बढहि पाप ।
विस्वास सुरन दै गुरू विचार, सोचन कौं लागे समाचार ।।२७८
जब गरू सची कैं निकट जाय, उर सौं बिचार नीकै उपाय ।
बिध नीत बचन बोले बिसेस, निरलाज न माँनत इह नरेस ।।२७९
तातैं परकासहु जाय तंत, इंद्रानी कहहु ऐसै उदंत ।
जीवैक मरै इह परै जाँन, मिल खोज करै तुम लेहु माँन ।।२८०
सुन मृतक हमारौ त्याग सोक, लैहैं सुख दंपत स्वर्गलोक ।
मान्यौं गरू सुनकै सची मंत, तब ऊठ चली नृप पँह तुरंत ।।२८१
गरूराज रिखी मिल देव ग्यात, इंद्रानी चाली ह्वै अनाथ ।
नृप नहुक जाय पहुँची नजीक, ललचाय बचन कहि धर्म-लीक ।।२८२
नारी कौं सुनीयें पर्म नेम, पति त्याग करै जो द्वतिय-पेम ।
स्वैरनी कहत ताकौं संसार, ऐसौ न करैं हम अनाचार ।।२८३
सूत्राँन मरन नही सुन्यौं श्राँन, कर रही नृपत मैं जाहि काँन ।
वँह मरन सुनूँ भरतार आप, पुन कछू न हमकौं लगै पाप ।।२८४
हम तुम मिल करहैं तिहीं हेर, बिनस्यौ सुन बासव जिहीं बेर ।
पति सेवहुँ तुमकौं सहित प्यार, निंदा भय तजकै पुरस नार ।।२८५

---

१ मिला दी ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

खिती जल मैं कीजै जाहि खोज, मिल उभय केल माँनहि मनोज ।
जीवत सुन करहूँ जतन जोय, बल-हीन हनहुँ ताकौं बिगोय ।।२८६
निर्भय सुख देवहु मोहिं नाथ, हित अरज करत हूँ जोर हाथ ।
इंद्राँनी सुनकै विनय येह, सुरपुज्य नहुष मेटचौ सँदेह ।।२८७
पुन कह्यौ सचीकौं नृपत पेख, बातें नम[1] बोली जुत विवेक ।
सुन नहुष कह्यौ यैसौ सवाल, हीय कौं इंद्राँनी जाँन हाल ।।२८८
जलदी तुम खोजहु इंद्र जाय, वँह मिलै खबर तौ कहहु आय ।
सुन चली सची नृप के सवाल, साहंत सब्द करनै सँभाल ।।२८९
सब देव रिखी-गन लियै साथ, निज लोक पंथ लीय रमाँनाथ ।
जहाँ जाय जनार्दन हाथ जोर, अस्तुत कर विनती करी और ।।२९०
पुरहूत ब्रह्महथ्या तपाय, जाँनत नहिं किंह थल दुरचौ जाय ।
वासव कौं दीजै हरी बताय, जिह बिना सची की लाज जाय ।।२९१
सुरनाथहु के श्रीनाथ स्याँम, करता मन वंचत सफल काँम ।
सुन आरत-वाँनी देव साथ, राजीवनयन श्री रमानाथ ।।२९२
बिन मिटै ब्रह्म-हथ्या वसेस, सचि नहिंन मिलै कबहूँ सुरेस ।
जिह हेत करहु असमेध ज्याग[2], सुरपती नार ह्वै हौ सभाग ।।२९३
श्रीजगदंबा करहै सहाय, संत्वष्ट[3] होय स्वांतक सुभाय ।
पुंन्य सौं होय वासव पवित्र, कर त्याग भीत भेटहि कलित्र ।।२९४
ऊदविघ्न ब्रह्म-हथ्याद आद, वासव के मिटहै उर विषाद ।
इंद्राँनी पूजन करै आप, जग-जननी माया मंत्र जाप ।।२९५
दुरदसा जाय सब कष्ट दूर, पति आय मिलै पुन प्रेमपूर ।
मति हरन होय नृप नहुष मूढ़, गति करनी के फल लहै गूढ़ ।।२९६
सुन रमानाथ के वचन स्राँन, पुर बृहस्पती[4] कीनौं प्रयाँन ।
जिग करन लगे कारन जरूर, दुख ब्रह्म-घात्त कौं करन दूर ।।२९७
जिग भयौ सपूरन जबही जाँन, ऐसौ उपाव फिर करचौ आँन ।
नदि वृक्ष सैल अरू धरा नार, वट करे ब्रह्म-हथ्या विचार ।।२९८
सबकौं झिलाय कर इंद्र सुद्ध, इह बृहसपती कीय काज ऊद्ध ।
जजुमाँन[5] पुरोहित धर्म जीव, ऊद्धार करचौ पौरुख अतीव ।।२९९

१ विनम्र । २ यज्ञ । ३ संतुष्ट । ४ . प्र. बृहस्पपती । ५ यजमान ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अरु इंद्र गुप्त हुय इहाँ आय, सो गये माँनसर मैं सिधाय।
जाँनं जब लागे देव जात, बोली गरूहू तैं सची बात ।।३००
जंभारि मिलै नहीं करैं ज्याग, भये कौन पाप हथ मोर भाग।
कछु और बतावहु जतन कोय, मन वंचत कारज होय मोहि ।।३०१
गरू कह्यौ सची सौं गूढ़ ग्याँन, सूत्राँन मिलन चाहत सुजाँन।
भगवती भजहु नित भक्ति-भाव, पैहौ पति आतुर तिँह पसाव ।।३०२
नृप नहुष कष्ट मिटहै निदाँन, मतिमूढ़ चहत जो तुहि मिलाँन।
उपदेस सची सुन गरूऊ धार, येकंत देख उत्तँम अगार ।।३०३
आराधन करनै लगी आप, जगदंबा पूजन मंत्र जाप।
सब भोग-वस्तु कौं त्याग संग, अतसय तप लागी करन अंग ।।३०४
बीते दिन केतक इह विधाँन, जगदंब भई संतुष्ट जाँन।
विधु कोटक सीतल तन विकास, पुन कोट सूररस्मी प्रकास ।।३०५
चँमकत कोट दुति चंचलाह, ऋतु काँम पूर्नं कोटक कलाह[1]।
भीनी करुनारस भक्ति-भाव, सामुद्र सात सातुक सुभाव ।।३०६
पद स्वछ्छ उदंबर रंग पाँन, सम स्वर्न तप्त संचर समाँन।
ऊन्नत उरोज सोभा अमंद, मुसकात मनोहर मंद-मंद ।।३०७
इछ्छन चख अंबुज छिमा ऐंन, बतरात सुधा-सम मधुर बैंन।
त्रयनेत्र नासका दीप तेम, जगमगत अलंकृत जोत जेम ।।३०८
स्वाँमनी कोट ब्रह्मंड स्रष्ट, परजंत कोट[2] विध जननि पुष्ट।
अछ्छर-स्वरूपनी रूप आद, वाहनी हंस वर्जत विषाद ।।३०९
पासांकुस धारैं अभय पाँन, पुस्तका वेद च्यारहु प्रमाँन।
भर रंजन विंदी लाल भाल, मोहनी विस्व उर मुक्त-माल ।।३१०
जाँननी ह्रिदय मति-जुक्त जीव, संसार कारनी हित सदीव।
इंद्राँनी दरसन दयौ आय, वरलेहु कहे वाचा बढाय ।।३११
बोली इंद्राँनी सुन बहोर, जोतीस्वरूप सौं हाथ जोर।
पत[3]रहै नहुष सौं मोर पिंड, आखंडल[4] पाऊँ सुख अखंड ।।३१२
जब आदि भवाँनी कह्यौ जाहि, मैं संग देत दूती मिलाय।
मानससर जावहु निज मुकाँम, धुर मूरत अचला मोर धाँम ।।३१३

१ कलाएँ। २ मू. प्र. कीट। ३ लज्जा। ४ इंद्र।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जिह विस्वकाँमनामा जनाय, संसार कहत वाचा सुनाय।
जायकै तहाँ खोजहु जरूर,, पावत है बैठौ दुःख पूर ।।३१४
मिल करहु इंद्र सौं सची मंत, तेरौ दुख मेटहु में तुरंत।
मति-हीन करहुँगी नृप मदंध, स्वय नारी करनै चहत संध ।।३१५
निज पत तूं चाहत सहित नेम, पुन मिलहै तोही पूर प्रेम।
वंदन कर अंबा बार-बार, लैकै दूती कौं सची लार ।।३१६
मानससर गई देवी मुकाँम, कल्याँन आपनौं करन काँम।
दूती प्रवीन दीनौं दिखाय, जोयकै सैन बैंनन जताय ।।३१७
इंद्रानी देख्यौ निजर[1] आप, परजरत ब्रह्महथ्या जु पाप।
हँसकै बोल्यौ तऊ सची हेर, बतायौ मोहिं किहि इहीं बेर ।।३१८
भोगतहूँ अपने पाप भोग, आधीन ईस जोग रू वियोग।
जब कह्यौ सची थिर करहु जीव, सुरराया स्याहिक है सदीव ।।३१९
आराधन कीनौं मात-आद, पाई पत तोकौं तिह प्रसाद।
दुर गये जबही तुम भये दूर, कलिमल सौं पूरत ह्वै करूर ।।३२०
सुर रिखन मंत्र कर संनिधाँन, इंद्रासन थंप्पौ नहुष आँन।
मो कौं नित बाधा करत मूढ़, पाविष्ठ काँम वस ह्वै पढ़ूढ़ ।।३२१
नित कहत इंद्र हैं हम निदाँन, कैसै तुम अबलाँ करत काँन।
अब कहा करूँ कहीयै उपाय, जासौं नहीं मेरौ धर्म जाय ।।३२२
जब कह्यौ इंद्र हम करत जेम, तेरे दिन काटहु त्रीया तेम।
जब कह्यौ सची हम कहाँ जाय, बिन इंद्रपुरी वासौ बसाय ।।३२३
सुर रिखिन बुलावत देत सीख, जयवाहनी लावहु मो नजीक।
बृसपती-काज कीनौं विचार, पति दरस लयौ छल कौं प्रसार ।।३२४
अब भये रहत सोऊ उदास, बलहीन विप्र कैसौ बिसास।
नारी कौ अबला कहत नाँम, बस करै जाहि की गनहु वाँम ।।३२५
अवलोक बिना स्याहिक अनाथ, हथ लाज करहि मोहि डार हाँथ।
वसवरतो ताकी होय वाँम, समुझहुँ फिर कैसे तोहि स्याँम[2] ।।३२६
कुलटापन लागहि मुँह कलंक, सकपकत ह्रिदय निस-दिन ससंक।
वपु-धर्म सुद्ध पतिव्रत विगोय, सुख कहा लहूँ तुम कहहु सोय ।।३२७

---

१ नजर, दृष्टि। २ स्वामी।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

निज पत्नी रक्षा करहु नाथ, अवलोक बिना स्याहिक अनाथ।
जब कह्यौ सची सौं इंद्र जोय, तनकों बचाव है कठन तोहि ॥३२८
इक सील बिनाँ नाँहिन अधार, सब रीत सील करहै सुधार।
दूसर उपाव हम कहत देख, बिस्वास काल आसन्त विसेख ॥३२९
वरदाँन भवाँनी उर विचार, सुभ हेत कहत इही समाचार।
मति-हरन करहिं नृप महंमाय, यातैं निसंक करीयै ऊपाय ॥३३०
नृप सौं मिल बातैं कहहु नीत, परचाय बढावहु ह्रिदय प्रीत।
करकै करार फिर कहहु कथ्थ, नहिँ करहु भूप वाचा निरथ्थ[1] ॥३३१
सबकी सिरोमनी नार संग, अभिलाख करहु पूरन अनंग।
करकै असवारी रिखन कंध, सिवका पै चढ़कै हित समंध ॥३३२
मो महल पधारहु महाराज, सुरपति सौं इधकौ लहि समाज।
सुरगन रिखीगन की इखी[2] साख, माँनकै अँदेसौ तजूँ माख ॥३३३
पती आय मोहि उर राज प्रीत, रस वढै सवायौ इंद्र रीत।
मोहित ह्वै ऐसौ करै मंत, ताकौ विनास जाँनहु तुरंत ॥३३४
रिखी स्राप दैहगे नृप रिसाय, इह बिना नाँहि येकौ उपाय।
दंपति दुख जावै प्रीया दूर, जातै उपाय करनौं जरूर ॥३३५
वासव की सुनकै सची बात, वह चली नीर नैंनन बहात।
धारचौ श्रीअंबा ह्रदय-ध्याँन, परतीत लाय वाचा प्रमाँन ॥३३६
नृप नहुक राज पहुँची निकेत, हीय सौं विचार बोली सहेत।
महाँराज वीनती सुनहु मोर, तप जाँन परै जग इधक तोर ॥३३७
मेरौ पुन जासौं बढै माँन, साखी मै माँनहु सु प्रमाँन।
चढ सप्तरिखी के कंध चाल, पालखी[3] बैठ आवहु नृपाल ॥३३८
तेज की होय वृद्धी तुमार, सब रीत हमारौ है सुधार।
हँसकै तब बोल्यौ नृप नहूक, अंधा हीय जैसै दिन उलूक ॥३३९
इंद्राँनी हित की कही येह, समुझहु नहीं जामै कछु सँदेह।
आतुर तुम जावहु तोहि ऐन, स्रंगार साज पुन रचहु सैन ॥३४०
आवत असवारी कर अनूप, भाँमनी ततौ मै नहुक भूप।
सुन चली सची राजा सवाल, चित खुसी होय निज भवन चाल ॥३४१

---

१ व्यर्थ। २ देखकर। ३ पालकी।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

इहाँ रिखन बुलाये नहुक ऍंन, वैधेय[1] कहे अनउचत बैंन।
वपु तप सौं लीनौ स्वर्गवास, इंद्र कौ थाँन ऊँचे अवास ॥३४३
सासन मम माँनहु रिखी-समाज, अहमत सौं ह्वैहै नत अकाज।
सासन विचारकै इही सार, औरै न होय कछु अनाचार ॥३४४
इंद्रासन दीनौ प्रथम आप, कैसौ गुन भूलत नहीं कदाप।
पर इंद्राँनी नहीं करत पेम, नहीं भयौ तुमारौ सिद्ध नेम ॥३४५
सिध[2] करहु नेम रिखीवर-समाज, इह बिनती मेरी सुनहु आज।
येते पै करहौ अहंकार, समुझौ न कछू जामै सुधार ॥३४६
हट तीया जात मैं इधक होय, संसार बात जाँनत सकोय।
जड़ता इंद्राँनी परी जाँन, मैं राख्यौ चाहत जाहि माँन ॥३४७
इह बोल कौल कर गई आज, मुनि याँन जोयकै महाँराज।
आरूढ़ होय मम महल आय, पति भजहुँ हीय सौं मोद पाय ॥३४८
जाँनकै राज-कारज जरूर, ग्याँन कौ भाँन तजकै गरूर।
पालकी वेनु[3] कंधा पसाव, करीयै मुनि मेरौ इह कहाव ॥३४९
सुन कुंमज आदक रिखी स्रौंन, माँनकै निदेसन गही मौंन।
सिवका मँगाय स्रंगार साज, संग देवन कौ लैकै समाज ॥३५०
चढ़ चल्यौ ढुरावत सीस चौंर, भ्राजत प्रभाव जनु तरुन भौंर[4]।
कलंमलत ह्रदय उर काँम केल, झलमलत अलंकृत छरी झेल ॥३५१
इंद्राँनी मिलनै हित उमंग, ऊरध ककाटका चढ़ अनंग।
चटपटी लगी सुख सयन चाह, अटपटी रीत बाढ्यौ ऊछाह ॥३५२
रिखगन कहार नहीं पढी रीत, नहिं चालन जव[5] सौं मढी नीत।
मुनि सदा काँमगाँमी[6] महंत, स्रुति चलत सनातन चाल संत ॥३५३
नृप सर्प-सर्प बोलत निदेस, मन सहन करत सबही मुनेस।
पतिलोपामुद्रा[7] रिख पुनीत, कीय पाँन उदध जिह अमर क्रीत ॥३५४
लीनौं वातापी जिही लील, पचगयौ पेट जैसे पपील[8]।
छरीया प्रहार पद लात छोर, बच सर्प-सर्प बोल्यौ बहोर ॥३५५
सुनकै अगस्त मुन दीयौ स्राप, अघपूर सर्प तुम होउ आप।
वस स्राप रह्यौ आनन बिगार, लागी न वार जाकौं लिगार ॥३५६

१ मूर्ख, कार्यसाधक। २ सिद्ध। ३ बांस। ४ सूर्य। ५ शीघ्रता से। ६ स्वच्छन्द, इच्छानुसार। ७ अगस्त्य। ८ चींटी।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बिनती नृप कीनी तिहीं बेर, अग्याँन करचौ ऐसौ अँधेर।
मिटहै इह कैसै पाप मोर, उद्धार बतावहु नाथ और ॥३५७
कुंभज क्रपाल सुन कही कथ्थ, ह्वै है द्वापुर-जुग स्राप हथ्थ।
इक भूप जुजष्टर मिलहि आप, प्रस्नोतर सुनकै मिटहि पाप ॥३५८
भल स्वर्ग-निवासी होहु भूप, सुखमाँन आपनौ लहि सरूप।
कुंभज की सुनकै तातकाल, वपु धारन कीनौ दिघ्घ व्याल ॥३५९
स्वर्ग सौं गिरचौ सोइ येक संग, भूम पै होय भारी भुजंग।
करनी फल पायौ तातकाल, हाथ-कौ-हाथ[1] इह भयौ हाल ॥३६०

दोहा

सुनी गरू बातैं सकल, इंद्राँनी अरू इंद्र।
देव-चिरत देख्यौ द्रगन, मेट्यौ पाप मुनिंद्र ॥३६१
गरू इंद्राँनी देवगन, संम्मत कर इक साथ।
माँनससर पहुँचे मिलन, सबही होन सनाथ ॥३६२
वासव सौं मिलकै बहुर, हीय आनँदत होय।
आये पुन अमरावती, जन सुख बाढ्यौ जोय ॥३६३
इंद्रासन पै इंद्र कौं, कीय सुरगुरू अभिषेक।
नंदन-वन विहरन लगे, सुख उपजाय विसेख ॥३६४
इंद्राँनी वासव ऊभय, हिल-मिल बाढ्यौ हेत।
भीत मेट हरखत भये, सुरगुरू सुरन समेत ॥३६५
व्यास कही करूविंद्र सौं, वासव व्रत की वात।
सुनकै बोले पुन समुझ, हरख जोर बिव हाथ ॥३६६

छंद द्वैअखरी

बोल्यौ नृप जनमेजय बाँनी, व्यास सुनहु सुनिवर विग्याँनी।
व्रत वासव की कथा बखाँनी, भाखी महिमा मात भवाँनी ॥३६७
पर यामैं संदेह प्रकासै, बिन पूछै सौं नाँहि विनासै।
महातपस्वी जाँनहु मघवा, ये तौ दुख भोग्यौ क्यौं अघवा ॥३६८

---

१ अविलंब।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सत वत्सर करकै जिग-साधन, बहुर भये हिंसा निरबाधन।
देवन की मिल साँम्य दसाकौं, जाहर विपत भई ग्रत जाकौं ।।३६९
कारन सहित कथा इह कहीयै, निगम-रीत वाचा निरवहीयै।
संसय मिटै सकल जन स्रोता, उर विचार ह्वै ग्याँन उदोता ।।३७०
सूत कहत सौनक रिख सोई, करहु बिचार ह्रिदै सह कोई।
भूपत पूछा माठर[1] भाखी, सो मैं कहत तोहि कर साखी ३७१।।
ग्राप्त-रूप तत जाँनन वारे, साधन करम बखाँनन सारे।
त्रविध-गती जाँनहु ताहीकी, जगमैं उतपत है जाहीकी ।।३७२
संचत बरतमाँन[2] है सैंसै, जाँनहु पुन प्रारध्व[3] ही जैसै।
जिनकी विगत कहत मैं जाँनौ, परपाटी स्त्रुती वेद प्रमानौ ।।३७३
सुभ वा ग्रसुभ-कर्म सह कोई, संचत[4] बहुत जनम के सोई।
सातुक राजस तामस सोऊ, जाँनहु त्रय प्रकार है जोऊ ।।३७४
जीय भोगत है नीक जबूना, वँह बिन भोगै नहि ह्वै ऊना[5]।
लागे रहत जीव कै लारै, कोट जनम लग मेलक तारै ।।३७५
प्रापत देह करै पुन प्राँनी, वरतमाँन तिह कहै विग्याँनी।
संचत लै कछु काल सँवारै, धारक जीव देह पुन धारै ।।३७५
सो जाँनहु प्रारध्व समाँना, ऊँच नीचहू जिह ग्रनुमाना।
भले बुरे भोगन भोगावै, बिन संसय संग देह बिलावै ।।३७७
पूर्बजन्म क्रत कर्म प्रमाँना, सब भोगत हैं येक समाँना।
सुर वा ग्रसुर मनुज तन सबही, क्रम भोगै बिन छुटै न कबही ।।३७८
ब्रहमा विस्नु रुद्र ग्ररु वासव, श्रीद प्रचेता तथा ग्रर्कसुव[6]।
किंन्नर गंध्रव देव कितेई, जाँनहु जिक्षन ग्राद जितेई ।।३७९
कर्मन-त्रस : माँनहु सब कोऊ, जामैं ग्रभिप्राय है जोऊ।
कहत सुनौ दै जाही काँना, पहिचाँनहु इह सिद्ध प्रमाना ।।३८०
कर्मस तंधन होत कदाचत, होत न देही बंध भोग हित।
सुख-दुख कारन कर्म सदाई, जासौं काहू की न जुदाई ।।३८१
जाग्रत कर्म ग्रनेक जनम सौं, काल वेग सौं जाही क्रम सौं।
प्रापत[7] मध्य दसा मैं पावत, बस प्रारध्व ही सो बिलगावत ।।३८२

---

१. व्यासजी। २. वर्त्तमान। ३. प्रारब्ध। ४ संचित। ५. न्यून, कम। ६. यमराज।
७. प्राप्त।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पुंन्न पाप जिम भोगत प्रानी, देवनहू गति इही दिखाँनी।
धरमपूत दोऊ पुन ध्याँनी, सोऊ करत कर्म सुग्याँनी ।।३८३
नर-नारायन जिनकौ नामा, क्रस्न विजय[1] दोऊ पूरन काँमा।
प्रति पुरान सै जाहि प्रमाना, कहत चिरत[2] पावत कल्याँना ।।३८४
अ्रत विभाव जामैं अ्रधिकाई, सो समुजहु देवेस सदाई।
रिखी तज काव्य करत नहीं रचना, रुद्र छोर पूजन की रचना ।।३८५
देव-अ्रंस बिन और न देता, विस्नु-अ्रंस बिन प्रथीपति वेता।
वृषा[3] अ्रग्नि जम विस्नु कुबेरा, कहत इते गुन हैं इन केरा ।।३८६
प्रभुता और प्रभाव परेखौ, दूसर कोप पराक्रम देखौ।
करता लै इन अ्रसन काजा, रचना देह करत है राजा ।।३८७
जो बलवाँन लखौ जग माँही, तीव्रहू भाग्यवाँन है त्याँहीं।
भोगवाँन अ्ररू विद्या-भाजन, जैसैहु दाँनवाँन जाँनहु जन ।।३८८
येते हैं सब देवन-अ्रंसी, पंडवहू इह रीत प्रसंसी।
वासुदेव देवांस बखाँना, नारायन सम तेज निधाँना ।।३८९
सुख-दुख भाजन सबन सरीरा, भोगत है प्राँनी भव-भीरा।
देव-अ्रधीन जन्म मृतु दोऊ, सुख्ख-दुख्ख जांनहु संग सोऊ ।।३९०
पंडव सत्यधर्म परवींना, ह्वैगये प्रथम राज सुख हीना।
विपदा लही विपन कीय वासा, पुन तिन भुजबल करेऊ प्रकासा ।।३९१
जुद्ध जीत भुव राज जमायौ, राजसूय जिन जग्य रचायौ।
ह्वे संतुष्ट देव हितकारी, वरकौं लै पुन विपत विसारी ।।३९२
अ्रंतकाल पुन होय उदासी, बहुरै भये स्वर्ग के बासी।
नर अ्रवतार विजय निरधारा, पौरसेय कीय अ्रधिक पवारा ।।३९३
अ्रंतकाल पै साहस ऊँना, जिनहू की गति भई जबूँ ना।
पुन्य करयौ माँनव-तन पाई, कहाँ गयौ क्रम गति कठनाई ।।३९४
सहजै देव न जाँनत संधी, मनुज लखै कैसै मति-मंदी।
वासुदेव कारागृह बीचै, प्रथम जनम गोकुल गये पीछै ।।३९५
बसकै ग्यारा[4] बरस बिताये, उलटे फिर मथुरापुरि आये।
कंस प्रनास अ्रभय सुख कीनौ, दरसन मात-पिता कौं दीनौ ।।३९६

---

१ अर्जुन। २ चरित्र। ३ इंद्र। ४ ग्यारह।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कारागृह सौं करेऊ निराक्रक[1], पूरन दीय आनंद जिनहु प्रत।
महीपती कोय मथुरा-मंडल, उग्रसेन जैसै आखंडल[2] ॥३९७
इतनै काल जबन भय उठचौ, ब्रज-मंडल कौ बास विछूटचौ।
बसे द्वारका जाय बिसंभर, ऊँचे रच ऐवास[3] अडंबर ॥३९८
कुटम सहेत रहे दिन कोऊ, श्राप पाय विप्रन सौं सोऊ।
गये प्रभास क्षेत्र गिरधारी, ब्रज-मंडल पति कुंजविहारी ॥३९९
महा द्वेष इठ आपुस माँही, जूझ्यौ जादव-वंस जहाँई।
पुत्र पऊत्र[4] सबही परवारा, छप्पन कोट मिले बिच छारा ॥४००
क्रस्न व्याध सर लाग कलेवर, सोऊ पार भये भवसागर।
देव अरू देवेसन देखै, लखीयै मनुज जात किह लेखै ॥४०१
व्यास करी नृप सौं बतरावन, पुन चरित्र जाँनहु अत पावन।
सौनक आद रिखन कौं सोई, कीजै सुन संसय जँन कोई ॥४०२

दोहा

कही व्यास पूरब कथा, कुरूपत सुनकै काँन।
जोर हाथ जुग विनय-जुत, पूछेऊ प्रस्न प्रमान ॥४०३
रोहिनेय हरि अवतरे, अरजुन लीय अवतार।
सब दुष्टन कौं संघरन, भूम उतारन भार ॥४०४
अवनीं द्वापुर अंत मैं, सुरभी धरचौ सरीर।
ब्रह्मा सौं कीनो बिनय, पाप परांयन पीर ॥४०५
विध कीनी हरी सौं बिनय, कमलापति सुन काँन।
अँमर संग लै अवतरे, पीड़त मही पिछाँन ॥४०६

छंद उधोर

वसुदेव-सुत[5] जुगवीर, सतपंडु विजय सधीर।
खित जीत भारथ-खंड, दीय दुष्टजन कौं दंड ॥४०७
भक्तन निवारी भीत, अतताय हनेऊ अभीत।
आचार्ज[6] भीषम और, बाह लीक द्रुपद बहोर ॥४०८

---

१ मुक्त। २ इंद्र। ३ आवास। ४ पौत्र। ५ पांडु-पुत्र = पाण्डव। ६ द्रोणाचार्य।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बैराट कर्न[1] बिसेस, मारचौ सु रन मद्रेस।
दु:जोध सकुनी दुष्ट, नृप करे अनगन नष्ट ।।४०९
भुव कौ उतारचौ भार, सब राजकुल संघार।
श्रीकृस्न कौ रनवास, खोस्यौ सु आवत खास ।।४१०
काली मलेछ किरात, सक हने क्याँन[2] सँघात।
बस रहे धरनी वास, मंडता चंड मवास ।।४११
कहा भार टारचौ कृस्न, जगती प्रजेता जिस्नु।
इह दसा कौं अवगाहि, संदेह बढ़त सिवाहि ।।४१२
सुन व्यास नृप सिद्धंत, उत्तर दयौ इह अंत।
वसु काल वरतत वार, प्रज धर्म होत प्रचार ।।४१३
जुग वर्तमाँन ज्युँहीज, बोवै सु निपजै बीज।
जो धर्म-धारक जीव, सतजुग्ग[3] जन्म सदीव ।।४१४
सुख धर्म अर्थ सुभाय, अवतरत तेता[4] आय।
ध्रम अर्थ काँम धरेह, उपजंत द्वापर येह ।।४१५
चित अरथ काँम जु चाहि, मिल ऊपजत कलि माहि।
इह काल की गति आद, मति गहत सोइ मुरजाद[5] ।।४१६
रचना न पलटत रीत, नृप येह समुझहु नीत।
वसू धर्म न्यून विसाल, करता सु जानहु काल ।।४१७
सुन व्यास की कथ सार, बोल्यो सु नृपत विचार।
अंदेस मेटहु और, मुनि विप्र-कुल के भौर ।।४१८
जे सत्ययुग के जीव, सब धर्म-तत्पर सीव।
मध रहत कौन मुकाँम, करता सु ऊत्तँम काँम ।।४१९
त्रेताहु द्वापर तेम, नित दाँन ब्रत जिन नेम।
मुन कहहु सुनकै मंत, वेला विधाँन वृतंत ।।४२०
जे दुराचारी जीव, कलिकाल संभव क्लीव।
जे देव-निंदक जाल, कहाँ रहत है कतुकाल ।।४२१
विस्तारपूर्बक बात, निच कहहु मुनि निस्नात।
बोले सु व्यास बिचार, नृप प्रस्न सुन निरधार ।।४२२

१ कर्ण। २ क्यों नहीं। ३ सत्ययुग—मू. प्र. सत्तजुगा। ४ त्रेता। मर्यादा।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ऋतुकाल सुभ करनीन, पुन्यातमा परवीन।
चहु वरन ऊतँम चाल, पथ धर्म कर प्रतपाल ।।४२३
सुभ-कर्म निवहत सोय, सुरगीय होत सकोय।
जे रजक ग्रादक जात, सत दयावाँन सुग्यात ।।४२४
ग्रद्रोह रहकै ग्राप, पाखँड तजकै पाप।
जुर ऊर्धगति कौं जात, सज्जन समागम साथ ।।४२५
जुग जिमहु त्रेता जाँन, इह रीत द्वापुर ग्राँन।
सुभ करत करनी संग, पद ऊँच लहत प्रसंग ।।४२६
कलिकाल जीव कितेक, जत धर्म-हीन जितेक।
नित करत नरक निवास, उद्धार की तज ग्रास ।।४२७
कलिकाल ग्रावत क्रूर, ग्रघ पुन्य सम ग्रंकूर।
जब होत मानव जात, वेदन बखाँनी बात ।।४२८
ग्ररू सत्यजुग कौ ग्राद, बल होत कलजुग बाध।
जब पुंन्य ग्रातम जीव, सोइ जन्म लेत सदीव ।।४२९
वँह स्वर्ग सौं भुव ग्राय, प्रगटत सु काल ही पाय।
ग्ररू होत द्वापुर ग्रंत, कलिकाल चाल करंत ।।४३०
जब नरक-वासी जीव, कलिकाल प्रगटत क्लीव।
सुन नृपत काल सुभाव, वसु होत नित बरताव ।।४३१
ग्रन्यथा होत न ऊँन, क्रमजोग च्यारहु कूँन।
कलिकाल कठन कराल, पथ ग्रसत धर्म प्रचाल ।।४३२
जिह रीत राजा जाँन, परजा ज्युँही पहिचाँन।
जो कदाचित क्रम-जोग, पलटै सुभाव प्रीयोग ।।४३३
जन सुक्रती ह्वै जोय, कलिकाल साधू कोय।
हरि-भजन सौं कर हेत, सुभ जोग त्याग सहेत ।।४३४
कलकाल धोय कलंक, निख्याध होय निसंक।
ग्रधिकार पावत ऊद्ध, सत करम करता सुद्ध ।।४३५
जनमैं सु द्वापर जाय, त्रेताहु सतजुग ताहि।
त्रेताहु सतजुग ताँम, कोऊ दुष्ट करता काँम ।।४३६
उपजै सु कलजुग ग्राय, नित ईस घर कौ न्याय।
सब पाप पुन्य संजोग, भोगत सुभासुभ भोग ।।४३७

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कीनैं सु जैसै कर्म, धारत जिहीं विध धर्मं ।
अनुसार जुग आचार, पुन करत धर्म प्रचार ।।४३८
श्रीव्यास लख सु प्रसन्न[1], पुन करचौ राजा प्रश्न ।
जुग-धर्म देहु जताय, सत-असत कर्म सुभाय ।।४३९
जब कह्यौ मुनिवर जोय, सुन लेहु राजा सोय ।
प्राँनीन काल प्रभाव, सज्जनहु होत सुभाव ।।४४०
द्रष्टांत सहित उदंत, मैं कहत हूँ मतिवंत ।
पितु तोहि धर्म-प्रवीन, मति भई जाहि मलीन ।।४४१
करतूत बस कलिकाल, स्वाभाव पलट सु चाल ।
दुज कंठ डार दुजीह[2], लोपी मृजादा लीह ।।४४२
जो उपज बंस जजात, निज धर्म-रत निस्नात ।
सो पाप दुस्तर श्राप, वपु तज्यौ करत विलाप ।।४४३
पंथ धरम करन प्रीयोग, जीय काल जाँन न जोग ।
ऋतुकाल की सुन कथ्थ, मैं कहत भूप समथ्थ ।।४४४
द्रढ वेद विध भूदेव, स्रुति परा-भक्ती सेव ।
उर सुद्ध हेत ऊधार, करता सु जप ओउंकार ।।४४५
गायत्रि इष्ट गरोय, ध्रति ध्याँन चित धरनीय ।
जप बीज माया जाँन, गरू-कर्म ग्याता ग्याँन ।।४४६
महमाय मंडप मंड, आराधनीय अखंड ।
जिग करत पूजा जाप, त्रय देह मेटत ताप ।।४४७
अरू छत्रि सूर उदार, नीतग्य नय[3] निरधार ।
निज प्रजा पालन नेम, परमार्थ सौं हीय पेम ।।४४८
क्रषी-कर्म वैस क्रतीह, वसू करत उतपत व्रीह ।
व्राँनज्य वृद्धि बसाय, गोपाल पोखन गाय ।।४४
सब सूद्र जाती सेव, भल रीत जाँनत भेव ।
निज जीवका निरवाह, गुन आपने अवगाह ।।४५०
इह सत्ययुग आचार, पुहमी सु होत प्रचार ।
निस्तार जाँनहु नेम, त्रेताहु द्वापुर तेम ।।४५१

१ मू. प्र. सुप्रस्न । २ सर्प । ३ न्याय ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ऋतुकाल तै सुभकर्म, धारना आरीय[1] धर्म।
भौ नूनता[2] कछु भाव, सोई काल पाय सुभाव ।।३५२
जनमे सु राक्षस-जात, अघपूरता ऊतपात।
अवतरे कलजुग आय, कुल विप्र विप्र कहाय ।।३५३
पाखंड दंभ प्रवीन, वाचाल वेद विहीन।
रंत सूद्र सेवा रीत, नहीं सास्त्रवेता नीत ।।३५४
तज आद कर्म तिकोय, मन मान धर्म मिलोय।
परचाय लाय प्रतीत, विध करत जग विपरीत ।।३५५
करकै खुसामद काज, वित लेत रचकै व्याज[3]।
मुख मिष्ट स्वारथ मीत, नय सीख देत न नीत ।।४५६
सुभ-धर्म आस्त्रत सत्य, वँह मूल होय अनित्य।
परजा अकर्म प्रभाव, अघ बढत बसु अन्याव ।।४५७
तज धर्म छत्री त्याग, जजु काँम वर्जत ज्याग।
परजाँ सु दै दै पीर, अन्याव लोभ अधीर ।।४५८
जिम वैस्य सुद्रहु जात, विप्रीत-धर्म बसात।
बिभचारनी बहु वाँम, पति-व्रत्ति[4] चित ऊपराँम ।।४५९
करता सु काँम कलेस, भरता सु पातक भेस।
आचरन सुद्ध आहार, नहीं करहि नर अरू नार ।।४६०
आहार सुद्धि अधीन, पुन चित्त सुद्धि प्रवीन।
चित्त सुद्धि धरमाचार, नय नेम इह निरधार ।।४६१
कलि विप्र जाती कांज, सोइ करहि सूद्र-समाज।
जप ब्रत संकर जोग, बढ होय धर्म विजोग ।।४६२
इह पायकै असलील, सब नष्ट होवहि सील।
जब बरन-संकर जात, वसू होयगी विख्यात ।।४६३
सोइ जाय नरक सदीव, जेतेक कलजुग जीव।
कलिकाल धर्म कथाह, जाँनै न जीव जथाह ।।४६४
धरमात्म हू तज धीर, तेऊ पाय कल तासीर[5]।
करहै विपर्जय काँम, निज धर्म कौ तज नाँम ।।४६५

---

१ आर्य। २ न्यूनता। ३ कपट। ४ मू. प्र. पतिव्रति=पातिव्रत। ५ गुण।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

परिभाव कलि कौ पाय, संसार गहिहि सुभाय।
चहुँ काल चहुँ विध चाल, बरनी सु वेद विचाल ।।४६६
राजा विचार रहंस, पूछी सु व्यास प्रसंस।
जे पाप करता जीव, सकलंक रहत सदीव ।।४६७
तिनके छुटै तन-पाप, वँह कथा कहीयै आप।
बोले सु व्यास बहोर, महाराज[1] सुनीयै मोर ।।४६८
श्रीपरासक्ती सेव, भक्ती करै लहि भेव।
जग-जननि करकै जाप, तनके मिटावै ताप ।।४६९
सुभ देख पुन्य सुथाँन, ध्यावै सु अंबा-ध्याँन।
अघ भस्म होय अनेक, बाढ़ै सु पुंन्य विवेक ।।४७०
अपराध छूटहि आध[2], वपु होय जन निव्यधि।
आराधनीय अखंड, महमाय करता मंड ।।४७१
व्याहृती अजपा वाँन, सोपाँन मुक्ति सयाँन।
चढ जाहु कलि कर छेह, मलि धोय भाक्ती[3] मेह ।।४७२
गायत्री दाता ग्याँन, द्वज-वर्न कौं सुख दाँन।
सोइ आद-मात सरूप, भजीयै सु निस-दिस भूप ।।४७३

दोहा

प्रस्न करयौ पारासरीय, प्रमुख परीखत-पूत।
सोइ पूछत है हित स्रवन, सौनकाद मिल सूत ।।४७४
ऊत्तम तीरथ अवन पै, सर सरता अरू सैल।
जाँने चाहत जाहि कौं, मन तस मेटन मैल ।।४७५
जात्रा करन विधाँन जिह, स्नाँन दाँन फल सुद्ध।
सबन कहहु समुझाय कै, पुहमी होय प्रसिद्ध ।।४७६

छंद हरगीतका

सुन भूप प्रस्न अनूप स्रवनन वेद व्यास विचारकै।
तीरथ कथा विस्तार सौं सोऊ लगे कहन सुधारकै ।।

१ मू. प्र. माहाराज। २ आधि। ३ भक्ति।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अस्थाँन देवी जहाँ ऊँन्नत जाँनने ध्रम जोग है ।
सो कहत तोसौं हेत सुभ सब पुंन्यदाय प्रीयोग है ।।४७७
नद गंग जमुना नर्मदा सरजू वितस्ता सरसुती ।
चर्मनवती पुन चंद्रभागा गल्लकी अरु गोमती ।।
कावेरिका सिंधव सुक्रस्ना अभ्रमती गोदावरी ।
तमसा तथा तपनात्मजा तिंह पुन्य रूप प्रभावरी ।।४७८
पाथोद मैं नद जाय प्रवसत जिती ऊत्तँम जानीयै ।
अघहारनी जगतारनी इह महाँ पावन माँनीयै ।।
मिल मास नभ स्नावन मही सरता सु होवत रजसुला[1] ।
वपु सुद्धि हित जिह स्नाँन वर्जत जाँन्हवी बिन अनजला ।।४७९
पुस्करारण्य प्रभास[2] पावन ज्यूँ प्रयागहु जाँनीयै ।
कुरुक्षेत जैसैहु नेमखारन पूज्य धरम प्रमाँनीयै ।।
अरबुदा[3] आरन वसु उजागर ध्याँन अंबा धेइयै ।
श्रीसैल और सुमेर सिखरी गंधमादन गेइयै ।।४८०
सुस्रेय पावन बिंदु सरवर लेख माँनससर लहाँ ।
अक्षोद जहवाँ बद्री-आस्रम नर-नरायन रह तहाँ ।।
सतजुपा आस्रम बाँमनाश्रम करेऊ तपसा काय सौं ।
परसिद्ध जग मैं नाँम पावन जानीयै गति जाहि सौं ।।४८१
ये सबै तीरथ महा ऊत्तम दरस देव दिखाइयै ।
व्रत दाँन जग्य विधाँन तप वपु जजन जात्रा जाइयै ।।
कहु होत सुद्धी क्रीया कर्मन द्रब्य सुद्धी दाँन सौं ।
कहु चित्त सुद्धी जाँनीयै कछु गिरा आदक ग्याँन सौं ।।४८२
तत तीर्थ जात्रा ताहि सौं मन तजत नाँहि मलीनता ।
अहंकार संजुत धर्म उर्मी दोख उर जस दीनता ।।
तीरथ व्रत रु साधना तप विघनकार विसेखीयै ।
मल माँनसी तज होय निरमल दसा कबहुँ न देखीयै ।।४८३
आचर्न[4] सत्य रु सौच आदक पुन अहिंस्या पालना ।
सतसंग बिन नहीं मिलै समता कितव झंपै काल ना ।।

---

१ रजस्वला । २ क्षेत्र । ३ आबू । ४ आचरण ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सज्जन समागम देत है सुख तीर्थ जाँनहु ताहि कौं ।
मिट जाय ह्लदय-मलीनता, इह दिब्य गनहु उपाय कौं ।।४८४
तट गंग बसत वसिष्ठ तपसी महा[1] विस्वामित्रहू ।
आड़ी बने इक बक अगोका चोह कीन चरित्रहू ।।
इक अयुत वच्छछर भयौ अद्भुत जुद्ध जाजुल जोर सौं ।
विस्मयत भये सब स्वर्गवासी देख तम-गुन दौर सौं ।।४८५
जब व्यास सौं करजोर कै कुरुविंद्र पूछी इह कथा ।
वासष्ट विस्वामित्र प्रव्रत[2] जाहि बरनहु मति जथा ।।
सब कह्यौ व्यास सुनायकै रविवंस राजा राँम के ।
पर पितामह भये काल पूरब नृपत हरचंद नाम के ।।४८६
जिह पुत्र हित सुर बरुन जिग करकै प्रतग्या इह कही ।
अघ दोष मिटहि अऊत[3] कौ जनमै सु मेरै सुत जही ।
नरमेध करकै जिग्य निश्चय दैहुगौ बलिदाँन कौं ।
प्रारंभ कीय उर धारकै पन हेर लाभ रु हाँन कौं ।।४८७
संतुष्ट भये जब वरुन सुख सौं सुभग राजा सुंदरी ।
गुर्बनी ह्वै निज गेह मैं अनछेह बढेऊ अनंदरी ।
धीमंत गर्भाधाँन के कीय संसकारहु कर्म कौ ।
ऊतपंन्न भयेऊ अनूप अंगज धारना कुल धर्म कौं ।।४८८
अत होन लागे जनम उछ्छव[4] जही अवसर जाँनकै ।
वन विप्र आये वरुन सुरवर अर्थना अनुमाँन कै ।
करजोर राजा इह कही नारी प्रसूता न्हाँन सौं ।
सुध होयगी जब दैहगे सुत बलि प्रदाँन बिधाँन सौं ।। ४८९
इक मास बीतत अवध पै नारी विजाता[5] न्हायकै ।
सुध भई पुन ताही समै इत वरुन पहुँचे आयकै ।
बलिदाँन माँग्यौ विप्र बनकै प्रथम रीत परेखकै ।
मन होय व्याकुल महपती बिसवास हीन विसेखकै ।।४९०
जब कह्यौ राजा प्रत परंजन दैहगे बलिदाँन कौं ।
कर संसकार निसेक आदिक वंस रीत विधाँन कौं ।

१ मू. प्र. माहा । २ युद्ध-वार्ता । ३ पुत्र-हीनता । ४ उत्सव । ५ प्रसूता ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

चुप होयकैं तब गये तिह छिन वरुन सुनकै बात कौं।
राजा सु करनै लग्यौ रीती जाँन छत्रीय-जात कौं।।४६१
तिह नाम दीनौं रोहिताष्य सुवेस दिन-दिन वृद्धता।
गरू-कर्म सीखन लग्यौ गरू सौं सअभ्यासन सिद्धता।।
परवीन पढकै भयौ पंडित वेस बाल बितायकै।
कह दई काहू वरुन की कथ जग्य-भेद जतायकै।।४६२
भयभीत ह्वै सु विपन भाग्यौ अपुन प्रान बचावनै।
गिर-किंदरा कहुँ दुरचौ गहवर जनन पहुचै जावनै।।
इत वरुन आये पाय अवसर नृपत पै हित नेम कै।
बलिदाँन माँग्यौ बहुरकै जिह जग्य-रीती जेम कै।।४६३
लख वरुन कौ लाचार ह्वै सुत की हकीकत अनुसरी।
कहा करूँ भाग गयौ कहाँ भय पाय मृत्यु भरा-भरी।।
सुन वरुन दीनौं स्राप कौ अहो मृखावादी अघपती।
कर कपट मो सौं लयौ सुत कँह देख हौं दुख दुरमती।।४६४
वढ है जलोदर वेदना मोंहि सत्य वाचा माँनीयै।
सुन भूप चुप ह्वै भयौ स्रापत हीय सौं लख हाँनीयै।।
गये वरुन अपने लोक कौं गृह भूप बाधा बस भयौ।
कोऊ पथक सुनकै इह कथा कँह कँवर कौं जावहु कह्यौ।।४६५
धिक्कार तोकों देह धारी पिता तन सौं ऊपज्यौ।
सो देह सौं हित लाय स्वारथ भीत सौं काँनन भज्यौ।।
जब कँवर चाल्यौ जानकै पितु मिलन कौं हित पायकै।
कर विप्र-रूप अनूप क्रत्रम इंद्र पहुचे आयकै।।४६६
बोले सु कँवर विलोक कै कहाँ जात हौ कहा कारनै।
जब कँवर दीनौं ज्वाब इह पितु-हेत मिलन प्रचारनै।।
मघवाँन सुनकै कह्यौ मूरख नाँहि जाँनत नेम कौं।
विसवास रोगी कहा विसेकत खोय है तन खेम कौं।।४६७
सुन फिरचौ इंद्र सलाह कौं गवन्यौ न अपने गेह मैं।
रुज पायकै हरचंद राजा दुःख बाढ्यौ देह मैं।।
वासष्ट गरू बुलवाय कै अरजी सु कीनीं आपकी।
गरू कह्यौ सुनकै गूढ गत कौं समन ताप सरापकी।।४६८

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सिद्धान्त आपत[1] सास्त्र कौ सुन लेहु भूप सयाँन सौं।
वाख्याँन देत सु धर्म-बेता पुत्र नीत प्रमाँन सौं ।।
भल होत तेरह भाँत के कछु नहीं अंगज कारना।
सुत क्रीत लेवहु मोलसाटै[2] वरुन जिग विसतारना ।।४९९
पुन होयगौ तोहि सत्य प्रापत जायगौ दुख जाहि तै।
दुजजात-सुत कौं द्रव्य दै मँगवाय लै पितु-मात तै ।।
गरू बात कौं सुन मंत्रिगन कौं कह्यौ नृप बुलवायकै।
कोऊ मिलै विक्रीय काँम सौं दुज-पुत्र लेहु दिखायकै ।।५००
धन देहु निरधन देखकै मुख सौं कहै सोई मोल कौं।
मोहि अरथ करीयै गर्थ[2] अर्पत वात द्रढ जुत बोल कौं ।।
सुन नृपत की कथ सचव सबही चले खोजन चाहिकै।
गये ग्राँम-ग्राँम गली-गली नृप-काज कौं चित लायकै ।।५०१
अजिगर्त विप्र मिल्यौ इतै इक महा निरधन आयकै।
मुर[3] पुत्र जामैं येक मँझला वेच वित्त बसायकै ।।
सुनसेफ जाकौ नाँम संभव आँन सचवन अघपती।
दीय देखकै तिह द्रगन सौं उर भयौ आँनद अहमती ।।५०२
नृप विप्र-जातन दै निमंत्रन जग्य करन लग्यौ जँही।
आये सु विस्वामित्र इतनै सुन्नसेफ लख्यौ सही ।।
विललात बंध्यौ थंभ सौं बहु पसू जैसै पेखकै।
मुनि दया आय कह्यौ महीपत विमल बुद्धि वसेखकै ।।५०३
सुर जाचकै आयुस समर्पहि छोर दुज कौ छोकरा।
अविचार बातैं करत हो अब डिगी मति कहा डोकरा ।।
प्यारौ है तुमकौं प्रान ज्यूं याकों हूँ प्यारौ आपकौ।
महाराज याकौं मारकै पैहौ जु कोऊ फल पापकौ ।।५०४
माँनी न विस्वामित्र की सुन बात राजा स्रौंन सौं।
अत भयें क्रुद्धत महा उर मैं मुनी खंडत मान सौं ।।
द्वज-पुत्र पै करकै दया दीय वरुन मंत्र मुनिंद्रहू।
स्वर प्लुत सौं जब सुन्नसेफहु जजन लाग जितिंद्रहू ।।५०५

---

१ आप्त। २ समूल्य, मूल्य देकर। ३ गर्त। ४ तीन।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तिह मंत्र कै परताप सौं आये सु वरुन उबारनै।
द्विज-पुत्र-बंधन छोर दीनौं नृपत दोख निबारनै ॥
लै सुजस अद्भुत लोक कौं गये वरुन अपने गेह कौं।
दुज औरहू गये दसहु दिस कौं सकल त्याग सँदेह कौं ॥५०६
राजाहू अपने राज कौं करनै लगौ सब काँम कौं।
बुलवाय लीनौ बिपन सौं निज पुत्र रोहित नाम कौं ॥
मुनिराज विस्वामित्र हू मन रोष कर धर म्लाँनता।
कछु राज नहिं माँनी कही गहि ह्रदय मैं अत ग्लाँनता ॥५०७
आखेट इक दिन गये अधपत[1] कौसकी नद कूल मैं।
वाराह हेरत विपन कै बिच भेट भई मुनि भूल मैं ॥
वयवृद्ध दुज कौ वेख बनकै जाच भूपत जाल सौं।
सरबस्व लीनौं राज संमृथ चित्त की मति चाल सौं ॥५०८
भये विपत मैं रत हीन वैभव जाँनकै जजमाँन कौं।
वासष्ट विस्वामित्र कौं बहु कहेऊ वचन कुबाँन कौं ॥
दुरबुद्धि दंभी द्वेष दुस्तर कवल करकै क्रूरता।
हरचंद कौ सब राज हरकै धार लीनी धूरता ॥५०६
बक[2] व्रती लैकै विपन विहरत करत जालक काँम कौं।
वक होऊँ तेरौ दोष सौं बपु गेह बसहु न ग्राँम कौं ॥
मुनि कह्यौ विस्वामित्र हू वासष्ट सौं इह बात पै।
हम रहैं जौंलौं बक बिहंगम आप होवहु आत[3] पै ॥४१०
बक भये कौसक जब वसष्टहु आड़ि होय उड़ान लै।
तट देख विटप तड़ाग पै तब करे वासौ काँन लै ॥
निस रहत तरु पै सूर निकरत उभय सरवर आयकै।
कर क्रुद्ध लरत हमेस कौसक रिख वसष्ट रिसायकै ॥५११
चल चोट चोंचन नखन लौंचत खाल खाँच नखूर कै।
उड़ जात कबहुँ अकास मैं दै चक्र फिर-फिर दूर कै ॥
कर क्रुद्ध दाव अनेक करकै घने मारत घाव कौं।
पुन देत उभय प्रहार पछ्छन प्रबल झटकत पाव कौं ॥५१२

---

१ महाराज हरिश्चंद्र। २ बगुला। ३ एक पक्षी (आड़ी)।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सुर देख विस्मय भये सब ही बात सुनकै विध बहे।
आये सु माँनस-ताल आतुर रिखी जहवाँ लर रहे।।
करकै निवारन कलह कौं संताप स्राप नसायकै।
विध गये अपने लोक मैं बढ परम आँनद पायकै।।५१३
वासष्ट मैत्रावरून मुनिवर मिले विसवामित्र हू।
तज क्रोध और विरोध तब ही करन लाग इकत्र हू।।
वासष्ट कौसक वारता श्रीवेदव्यास सुनायकै।
पुन कह्यौ कौरवपति प्रतै सब सभा आद सुनायकै।।५१४
बलवती माया बेग कौ परवाह गनहु अपंपरा।
मुन तपी ग्याँनी जिनहुँ मोहत बचे कौन वसुंधरा।।
सुभ व्रत तीरथ और साधन जाँनियै बहिरंग जे।
पर अंतरंग पिछाँनीयै अहंकार जोतन अंग जे।।५१५
मन होय जासौं सदा निरमल ध्याँन करीयै धारना।
अहंकार जासौं मिटै उरमी विहत[1] कर्म विचारना।।
कलिकाल कठन कराल कर्मन बच्यौ चाहै वासना।
अंन्नाद माया ईस्वरी अभ्यास करहु उपासना।।५१६

दोहा

सुनी कथा कुरूराज सब, विस्वामित्र वसिष्ट।
श्रीमुनिवर पारासरीय, प्रस्न करचौ इह पुष्ट।।५१७
ब्रह्मा-पुत्र वसिष्ट कौं, आह्वय कह्यौ जु और।
कारन जामैं कोन है, मन समझावहु मोर।।५१८
गुनकर अथवा कर्म-गत, संख्या भई जु संध।
कैसे कहे वसिष्ट कौं, मैत्रावरुन मुनिंद।।५१९

छंद द्वै अक्खरी

व्यास सुनी जनमेजय वाँनी, कहन[2] लगे वासष्ट कहाँनी।
नृप इक्ष्वाक सु तन निम नाँमी, सो द्वादसम भये वसु स्वाँमी।।५२०

---

१ विहित। २ मू. प्र. कहनै।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

आस्रम गोतम निकट उजागर, पत्तन जिह विरच्यौ जयंतपुर।
येक समय पितु बोले ऐसैं, ज्याग करहु सुधरै गति जैंसैं ॥५२१
साँमग्री सब भाँत सँवारैं, द्वज-कुल निमत बुलाये द्वारैं।
वाँमदेव गोतम वासिष्टहु, पुलह पुलस्त्य भृगू प्रतिष्टहु ॥५२२
क्रतु-रचीक[1] कौं येकत करा, अवर बुलाये रिखि अंगरा।
विद्या वेद परांगत मुनिवर, भये अनेक येकठे भूसुर ॥५२३
मुनि वसिष्ट कुल-पूज्य विमलमति, प्रथम करी नृप अरज तिहीं प्रति।
क्रतु हम राजसूय करवावहु, दीक्षा मोकौं उचत दिवावहु ॥५२४
आस्रव करहु गरू इह बारा, हायन[2] बीते पाँच हजारा।
श्रीअंबा आराधन साधन, विधवत वेद करहु निरबाधन ॥५२५
राजा सौं सुन कह्यौ रिखीस्वर, सुनीयै मेरी बात नरेस्वर।
मघवा कर्‌यौ निमंत्रन मेरौ, तासौं कारज बनै न तेरौ ॥५२६
इंद्र कराय जिग्य मैं ऐहौं, जब तेरौहू भख कर जैहौं।
जब बोल्यौ राजा कर जोरैं, ये रिखी निमत बुलाये औरैं ॥५२७
साँमग्री सब वस्तु सँभारी, सो तौ बिगर जायगी[3] सारी।
कुल-गरू होय देत हौ काँना, इह मेरौ करकै अपमाँना ॥५२८
निम राजा वहु करे निहोरे, चले गरू जजमाँनहू छोरे।
मुनि ग्याँनी वासिष्ट[4] महाँना, लोभ पाय सोऊ ललचाँना ॥५२९
होय उदास भूप लख हाँनी, गरू पूजे गोतम मुनि ग्याँनी।
करनैं लग्यौ जग्य कौ कारज, और रिखी संजुत आचारज ॥५३०
गिर हिमवाँन उदध-तट गयेऊ, भूँम पवित्र करत जिग भयऊ।
जग्य-अंत द्वज सकल जिमाई, द्रव्य दक्षना विवध दिवाई ॥५३१
रित्वज पूज बिदा कीय राजा, बाजे जबही मंगल-बाजा।
बरख हजार पाँच जब बीते, निम राजा क्रतु भये न चीते ॥५३२
राजनगर मैं आये राजा, मंत्री पुरजन मिले समाज।
सुरपत जग्य कराय सँपूरन, आये गरू वसिष्ट ह्वै ऊरन ॥५३३
उतरे राज-भवन मैं आई, सोवत राज सयन सुख पाई।
इह कारन सौं भयौ अबेरौ, कीय सतकार नहीं गरू केरौ ॥५३४

---

१ यज्ञ करने वाले। २ वर्ष। ३ मू. प्र. जाय। ४ मू. प्र. वसिष्ट।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गरू के मन में उठी गिलाँनी, ग्रन[1]कर गरू भयौ ग्रभिमाँनी ।
ग्रावत नाँहिन सनमुख ग्रंधा, कुल-रीतो फेरचौ जिह कंधा ।।५३५
ग्याँनी तऊ तमोगुत गहेऊ, भूपत निम पै क्रुद्धत भयऊ ।
स्राप देत भये मुनिवर सोऊ, ह्वं कै हथ[2] विदेह तुम होऊ ।।५३६
जागे नृपत बात सुन जबही, सोच करन लागे जन सबही ।
रिखी कै निकट गयौ तब राजा, इह बोल्यौ कहा करचौ ग्रकाजा ।।५३७
सोवत रह्यौ नीद मैं सयना, ग्राये जबही ग्रचाँनक ग्रयना ।
जाँनी कछू न बात जताई, रोख करचौ ग्रनुचित रिखीराई ।।५३८
मेरौ दोष करचौ मैं मानत, जाहू पै कछु रोष न जाँनत ।
गरू जजमाँन-पनौ कौ ग्याता, लोभ पाय बिसरे तुम नाता ।।५३९
सूतौ नीद पाय सयनासन, खबर न पूछी दास खवासन ।
श्राप दयौ ग्रनजाँनै सेती, इह चंडाल क्रुद्ध कीय येती ।।५४०
इह संसर्ग भये ग्रपवित्रा, पिंड त्याग तुम होहु पवित्रा ।
राजा श्राप दयौ रिखीराई, राजाहू इह कह्यौ रिसाई ।।५४१
श्राप-ताप लै बिव इकसंगा, भावी पाय भये मन भंगा ।
विध पै गये वसिष्ट विचारो, इहै श्राप की कथा उचारी ।।५४२
ग्रंगज श्राप करू पितु ग्रौरै, मन गिलाँन ग्रावत इह मोरै ।
करहु स्याहि मेरी तुम करता, हीय विचार दारुन दुख हरता ।।५४३
सुत पिछाँन विध करचौ सँबोधन, मत पिछतावहु सोच मनहिं मन ।
मैत्रावरून देह कै माँही, तुम प्रवेस कर रहहु तहाँही ।।५४४
ग्रवसर पाकै होहु ग्रजोनी, सुख सौ पैहौं देह सलोनी ।
ग्याँन न जैहै सुनहु सुग्याता, करता क्रम ह्वै हौ कुसलाता ।।५४५
सुन विध बचन मुनीस सिधाये, घट त्यागौ नही चित घबराये ।
मैत्रावरुन देह कै माँही, जीव ग्रंस प्रवस्यौ मुनि जाँही ।।५४६
पुन बीते बहु दिन जिह पीछै, वरती बात वरुन गृह बीचै ।
ग्रली-संग उरवसी जु ग्राई, वपु सुंदर सुच वेख बनाई ।।५४७
मैत्रावरुन भये दोऊ मोहित, चितवत बाढ़ी काँम केल चित ।
कह्यौ उरवसी ह्वै काँमातुर, चहत उभय रति करीयै चातुर ।।५४८

---

१ ग्रन्य को । २ मृत्यु प्राप्त होकर ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सुन देवन की बात सयाँनी, जुगल बात माँनी मन जाँनी।
वास करचौ कछु दिन जहाँ बीते, हिल-मिल रहे उरवसी ही तै ।।५४६
करत काँम कौतूहल केते, मैत्रावरुन उरवसी समेते।
वपु की दूर मेलकै ब्रीड़ा,[1] करत अनेक भाँत सौ क्रीड़ा ।।५५०
द्रगनन रूप उरवसी देखा, वढी अनंग तरंग बिसेखा।
उभयन बीज गिरचौ संग येकौ, परयौ कुंभ मैं जाय परेखौ ।।५५१
उभय बीज सौं प्रकटे आई, रिखी अगस्त वासिष्ट रचाई।
सिसु वय मुनि अगस्त तप साधन, अटवी बसे ईस आराधन ।।५५२
नृप इक्ष्वाकु वसिष्ट निहारे, दुज कौं राज बसाये द्वारे।
प्रोहित थाप पाव कीय पूजन, मैत्रावरुन वसिष्ट महाँमुन[2] ।।५५३
भूपत निम की इह गति भई, सुन लीजै ताही कौं सही।
मुनी जिग कारन आये मिलकै, छाय रहे नहीं गये जु चलकै ।।५५४
आये रिख बासिष्ट अजाँनै, निम कौं दीनौं श्राप निदाँनै।
होने लगी दसा नृप हीनी, खिती पर देह राखकै खीनी ।।५५५
जतन करन लागे सब जुरकै, चंदन आद सुगंधी छिरकै।
तंत्र–मंत्र कीने केऊ टोना, हिर कारज कीय जो कछु होना ।।५५६
इतने मैं मिल देवहु आये, प्रथा जग्य जे पूजन पाये।
बोले निम राजा सौं बाचा, सब देवन सेवन मैं साचा ।।५५७
कीय संतुष्ट हमैं जिग करकै, बंचत मांग लेहु तुम बरकै।
चाहत देह नवीनी चित सौं, हम प्रापत करहैं गति हित सौं ।।५५८
जब बोल्यौ राजा कर जोरै, मिथ्या देह चाहि नहि मोरै।
जग मैं प्राँनी मात्र जितेको, उपजै बिनसै जीव अनेको ।।५५९
वायु रूप द्रष्टी कर वासा, खुसी रहूँ तन त्याग खुलासा।
साखी रूप लखूं जग सारौ, है अभिष्ट इह तात हमारौ ।।५६०
देवन कह्यौ सुनहु नृप दाँनी, भजन करहु तुम आद भवाँनी।
परा अंबका जगत पसारौ, विरचत रूप चेतना वारौ ।।५६१
वाकौ ध्याँन ह्रीदै आराधहु, सिद्ध मनोरथ जो कछु साधहु।
देव–रिखी सुन बात दुहूँ की, मन की दुतीय काँमना मूकी ।।५६२

---

१ लज्जा। मू. प्र. माहामुन।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

परासक्ति पद पंकज पावन, ध्याँन अखंड लग्यौ नृप ध्यावन ।
भक्ति निवाजन जक्त भूपनी, रमा ऊक्त औउंकार रूपनी ।।५६३
वछ्छ सब्द सुन सुरभी वेसा, निकट आय दीय दरस नरेसा ।
संचर सुभ पौसाक सँवारै, अंबर पाट लाल रंग वारै ।।५६४
बैंनन नैन-सुधा-रस बरसै, दीपसिखा आभा तन दरसै ।
करुनारस भीनी जिह काया, जोगेस्वरी जीव जग जाया ।।५६५
मुनिजन सुर देखत महमाई, आरत नृपत दरस दीय आई ।
वर माँगहु बोली मन वंचत, उर मत होहु कछू अवलंचत ।।५६६
वचन ईस्वरी पाय विसासा, इहै नृपत कीनीं अरदासा ।
मुक्त देहु माँगत महमाया, क्लेस पंच[१]-जुत त्यागूँ काया ।।५६७
परम ग्याँन जीवन परकासी, वसू द्रष्ट नैंनन हुय वासी ।
देवी कह्यौ सुनहु वैदेहा, सब जीवन कौ परम सनेहा ।।५६८
जग प्रारध्व जाँनवे वारे, होवहुगे इह वचन हमारे ।
नेत्रन वास करहु निरबाँनो, पलक आज सौभाँ जाहि प्राँनी ।।५६९
अनमिख रहहि देवता यातै, जगत निसाँनी जाँनहि जातै ।
पलक नाँम जिह निमख प्रचारै, सब्द रीत परी आई सारै ।।५७०
दै वरदाँन सिधाई देवी, सुर नर नाग सकल जन-सेवी ।
राजा मुक्ति भई इह रीती, पर्म सक्ति चरनन कर प्रीती ।।५७१
राजन तन मुनिजन लै राख्यौ, अंगज उतपत चित अभलाख्यौ ।
करकै होम जाप कथने कौं, मंत्र सहित लागे मथने कौं ।।५७२
धरकै अरनी ताही धूपर, आहुती दैन लगे सब ऊपर ।
काहुक बेर लगी मुनि करता, सुत उतपत्त भयौ बहु सुरता ।।५७३
रूप रंग निम सम अत रूरौ, येको अंग न जाहि अधूरौ ।
मथन करत सुत भयौ जु निम सौं, गोत्र दयौ मिथ ताही गम सौं । ५७४
भयौ जनक सौं ताही भेवा, दूसर जनक कह्यौ मुनि देवा ।
निम का पुत्र जनक भये नाँमी, सकल सिरोमन वसुधा स्वाँमी ।।५७५
तट गंगा ऊपर नृप ताही, सुंदर मिथलापुरी बसाई ।
ताही कुल उपजे नृप तेते, जनक विदेह पुकारत जेते ।।५७६

१ अविद्या, राग, द्वेष, अस्मिता, अविवेक—

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ग्याँनी भये सवही नृप ग्याता, वसुधा बाढचौ वंस विख्याता।
सुन कुरविंद्र कथा इह सारी, व्यास प्रस्न कीय ग्याँन विचारी ॥५७७
विध-सुत मुनि वासिष्ट विग्याँनी, जिह नृप श्राप दयौ कहा जाँनी।
समीगर्भन[1] सौं नाँहिन समता, खत्री-वंस करत सब खिमता[2] ॥५७८
कुल इक्ष्वाक तजी नृप काँनी, गहत मोर चित व्यास गिलाँनी।
व्यास कह्यौ सुनीयै नृप वायक, वंस जजात हंस वर दायक ॥५७९
रागी जीव क्षमा-पन राखन, स्वारथ वाँन सत्य संभाखन।
क्रतघन कहूँ होत निसकपटी, येती बातें गनहु अटपटी ॥५८०
समरथ ह्वं पुन सहन सुभाऊ, कोटन माँझहिं देखीयै काहू।
तपनेष्टा जोगी संग त्यागी, विहत कर्म रत अरू बैरागो ॥५८१
त्रस्ना नींद क्षुधा जित तेऊ, अहंकार बिन लखै न येहू।
मोह करत जिनहूँ को माया, काँम क्रोध-बस दीसत काया ॥५८२
उरमी[3] धर्म जीतने वारे, नाँ कोऊ सुनें न नैंन निहारे।
ब्रह्मलोक वैकुंठ विचाला, पेख लेहु तुम स्वर्ग पताला ॥५८३
विध-सुत कौ कहा दोख बखाँनौं, जिनहू की मति इह गति जाँनौ।
मुनी तपी सब त्रय गुन निर्मंत, मनुजन की जाँनहु जैसै मति ॥५८४
कपल[4] जु स्यांख्य[5] सास्त्र के करता, अत पवित्र तप तन उद्धरता।
करे भसम तिन सगरकुमारा, कारन भाव गनहु अहंकारा ॥५८५
तीन लोक की उतपति तासौं, जुदे नहीं कोऊ जाँनहु जासौं।
ब्रह्मा रमाँनाथ महावरती[6] पेखहु तीन गुनन परवरती ॥५८६
तीन देह मैं गुन हैं तीनूं, प्रथक-प्रथक भखत परवींनूं।
प्रथक-प्रथक जिह भान परीखत, द्रगनन विद्यमाँन सोइ देखत ॥५८७
मनुजन सतगुन केवल मिलनौ, चितवन कठन जाहि मग चलनौ।
संकर[7] गुनन भाव सबही मैं, हेर लेहु जीवन केही मैं ॥५८८
कबहूँ ब्रद्धि होत सतगुन की, जैसै ही गत रज तम जिनकी।
समता भाव कबहु ह्वै सुख सौं, रजगुन तमगुन सतगुन रुख सौं ॥५८९
परै गुनन कै है परमातम, गहत ग्याँन अनुभव जाकी गम।
परा सक्ति ऐसै पहिचाँनौं, येकीभूत जाहि अनुमानौं ॥५९०

१ ब्राह्मण। २ क्षमा। ३ काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद। ४ कपिल मुनि। ५ सांख्य। ६ महादेव। ७ मिश्रित।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अल्प-बुद्धि जाँनत नहीं यातैं, वाद बढाय बनावत बातैं।
माँनत जुदे-जुदे अभमाँनी, पावत मोक्ष नहीं जे प्राँनी ।।५९१
माया ब्रह्म येक कर मानत, परमारथ सोइ जन पहिचाँनत।
पद निर्बांन अगम गति पावत, डंकादै वे दाँत दिखावत ।।५९२
इह सिद्धांत जानवेवारे, अंधकूप जग मैं उजीयारे।
वेद भेद द्रढ रीत बनायौ, ग्याँन दोय परकार[1] गनायौ ।।५९३
सात्विक बुद्धि जोग के सोई, जाँनत सास्त्र अरथ सौं जोई।
अनुभवाख्य दूसर अवरेखौ, दुरलभ जग मैं कोऊ डर देखौ ।।५९४
सज्जन मिलन और सतसंगा, पावत जिनकौ पाय प्रसंगा।
सब्द-ग्याँन सौं कारज सिद्धी, काय कलेस न जाय कुबुद्धी ।।५९५
अनुभव ग्याँन कोऊ अधकारी, निगम-अगम सौं जिह गति न्यारी।
जामैं इक द्रिष्टांत जनावत, ग्याँनवाँन परीआई गावत ।।५९६
दीपक वात करै तै द्रग कौ, जात नहीं अँधियारौ जग कौ।
जात अँधारौ दीप जगाये, बाती तेल मेल बिलगाये ।।५९७
कर्म वही जो बंधन काटै, विद्या मुक्ति बतावै वाटै[2]।
सिल्प-निपुनता आद सकोई, नाँम कहत विद्या निरलोई ।।५९८
कारज यातैं सधै न कोऊ, देख बिचारहु द्रगनन दोऊ।
सील संतोष जु परहित साधन, आर्जव क्षमा ईस आराधन ।।५९९
कोप अभाव जाय कठनाई, बिद्या-फल इह लहै बसाई।
विद्या पाय जु लहै विवेका उर-अग्याँन मिटै अविवेका ।।६००
जोग जुगत जप बिन जन जोई, क्रोध सत्रु नहिँ जीतै कोई।
काम-क्रोध अरु लोभ कलेसा, होत प्रगट चित माँझ हमेसा ।।६०
मन जीतै तब मिटै मलाँनो, वेद पुरानन कथा बखाँनी।
काम क्रोध बस निम क्रम कीनौं, दुज वसिष्ट कौं स्राप जु दीनौं ।।६०२
नृप जजात ज्यों क्षमा न कीनी, छत्री-धरम राह नहीं छीनीं[3]।
भृगु-मुत नृप जजात कँह भारी, दै सराप बहु करयौ दुखारी ।।६०३
जुरा-अवस्था लै तन जोई, विपता गहि समता न बिगोई।
क्रूर सुभाव भये नृप कोऊ, सील सुभाव बखाँने सोऊ ।।६०४

१ प्रकार। २ मार्ग। ३ चीन्ही, पहिचानी।

T　CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

है सुभाव आस्रत दोऊ हेतू, सुनीयै स्रुत कुरुपति ध्रमसेतू।
परंपरा रीती इह पेखौ, द्वेषरागजुत सबही देखौ ।।६०५

दोहा

हैहय-वंसी नृप हने, भ्रगुवंसी भूदेव।
कुल प्रोहित जिनकौ कलँक, भयौ नयौ तज भेव ।।६०६
छत्री बड़े कुलीन छित, क्रोध भये बस क्रूर।
ब्रह्मघात कीनीं विवध, दया मेलकै दूर ।।६०७

छंद उद्धोर

भये कार्तवीर्ज भुवाल, बली सँहँसबाहु बिसाल।
निज ताहि अर्जुन नाम, धर्मार्थ सुक्रत धाँम ।।६०८
अवतार दत्तात्रेय, सिख ताहि पावन स्रेय।
सुख-समृध-दाता सिद्ध, पुहमी भये परसिद्ध ।।६०६
भृगुवंसीयन जुत भाव, पूजत सु तिनके पाव।
जजुमाँन प्रोहित जाँन, द्रब देत अगनत दाँन ।।६१०
जिग करे अगनत जाहि, उर धर्म मति अवगाहि।
दुज-जात लैलै दाँन, बहु भये लिछमीवाँन ।।६११
पद स्रेष्टता जग पाय, सुख-भोग करत सुभाय।
वढजात केतक काल, भये कालबस भुवपाल ।।६१२
कुल कार्तवीरज केर, घर लये दारद घेर।
वित सिवायन[1] कीह व्याज, रन[2] माँग जाती राज ।।६१३
द्वज नटे करजा देत, इह उपज आय अहेत।
जजुमाँन नातौ जाँन, कीय नाँहि विप्रन काँन ।।६१४
कीनौं सु छत्रिन कोह, दुंज-जात सौं चित द्रोह।
भृगुवंसीयै भयभीत, नृप-वंसीयन लख नीत ।।६१५
भागे सु तज-तज भौंन, गिर किंदरन कीय गौंन।
लागे सु हैहय लार, मंडी सु विप्रन मार ।।६१६

---

१ सवाया। २ ऋण।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तीय लूट-लूट तमाँम, धन धरोहर पुर धाँम।
जजुमाँन हैहयजात, दुज प्रोहितन दुखदात ।।६१७
भृगु-वंसीयन के भाँन, खोदंत बीच खदाँन।
जहाँ मिलै द्रव्य जितेक, लैलेत अपनौ लेख ।।६१८
दुज मुनी तपसी दौर, आये सु सज्जन और।
हैहयन छत्री हेर, तिन कहे वायक टेर ।।६१९
जजुमाँन प्रोहित जाँन, नहीं तजै बैर निदाँन।
करता सु करम करूर, धुर धर्म मिलवत धूर ।।६२०
इह काँम करत अनर्थ, विप्रन प्रहारत व्यर्थ।
द्वज वाल वृद्धन दुष्ट, तज दया मारत तिष्ट ।।६२१
गुर्बनी फारत गर्भ, अघपूर डारत अर्भ[1]।
इह पाप नाँहि अघात, जाजुल्य हैहयजात ।।६२२
जब मुनीजन कौं जाँन, बोले सु हैहय बाँन।
हम पूर्वज्यूँ के हाल, तुम ग्यात द्रष्ट त्रकाल ।।६२३
भुज पराक्रम लीय भूम, घमसाँन फौजन घूम।
जिन करे दुसमन जेर, फुरमाँन[2] चहुँ दिस फेर ।।६२४
लै प्रजा कर वित लोर, कीय जमा लाख करोर।
दीय दुजन सोई दाँन, परमार्थ स्वार्थ पिछाँन ।।६२५
बक ब्रती विप्र विड़ाल, मेल्यौ सु घर मैं माल।
जिग करत ना कछू जाप, थाती सु राखत थाप ।।६२६
हर जातीयन कर हेत, द्रब व्याज-साँटे देत।
द्वज करत संग्रह दाँन, जय मँनावत जजुमाँन ।।६२७
सुक्रत लगावत सोय, हित जाहि दाता होय।
संसार कहत सुनाय, गति तीन द्रब्य गनाय ।।६२८
भल दाँन दूसर भोग, कँहाँ नास पाय कुजोग।
देत भोग दोऊ सुखदाय, निस्नात पुरषन न्याय ।।६२९
निध होत पापी नास, खरचै न खाबै खास।
उपजंत ताको आँन, भय राज तस्कर भाँन ।।६३०

१ गर्भस्थ शिशु। २ फरमान = आज्ञा।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जरजात अगन सँजोग, ले जात धूरत लोग।
है ऊचत बात हरेक, वित स्रधा जाँन विसेक ।।६३१
खरचै कि अथवा खाय, जाँनै जु अवसर जाय।
पुन विप्र-जात पुनीत, रिखी-वंस की इह रीत ।।६३२
इन तजी विप्रन आद, महामुनन की मुरजाद[1]।
दुज महाजन बन दुष्ट, इक द्रव्य राखत इष्ट ।।६३३
हित पुरोहित कुल होय, कर कपट छल-बल कोय।
हम माँड नीचै हाथ, संकल्प लै दुज साथ ।।६३४
दै दगा लीनौ दंन्न[2] परलोक के हित पुंन्न।
अहलोक विगरचौ आज, रन करचौ गारत राज ।।६३५
कुल-पुरोहित अनुकूल, वित-ब्याज करन बसूल।
माँग्यौ न दीनौं मोहि, हम रहे संभ्रम होय ।।६३६
पुन नीत-रीत पिछाँन, जीय राजद्रोही जाँन।
दैनै लगे जब दंड, भागै सबै मति-मंड ।।६३७
नही संध करत निलाज, इह रोग येह इलाज।
मुनी नहीं जाँनत मंत, अघपूर विप्र अनंत ।।६३८
माँनी न सीख मुनिंद्र, ऊठ चलेउ विप्र-अरिंद्र[3]।
लागे सु ढूँडन लार, भृगु-वंसीयन संभार ।।६३९
भय पाय गये द्वज भाग, मिल हिमाचल के माग[4]।
तीय जात अबला त्याँह, मेली सु मारग माँहि ।।६४०
हैहयाजाती हेर, घन करी दुःखत घेर।
भागी सु त्रीय भयराय, थित छोर उर थहराय ।।६४१
दौरे सु पीठ दे काल, हैहयन कीय बेहाल।
गये विप्रहू जिँह गैल, श्री गई ताही सैल ।।६४२
जहाँ विप्र ढूँढे जाय, नहीं मिले कोऊ नीयराय।
बिललात नार विसेस, कर सीस ऐंचत केस ।।६४३
इक वृद्ध तीय उन माँही, उपदेस दीय अवगाहि।
पूजहु सु गवरी पाव, भय त्यागकै जुत भाव ।।६४४

१ मर्यादा। २ दान। ३ विप्र-वैरी। ४ मार्ग।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सुन तीया सबही साथ, महमा सु गवरी[1] मात।
वन सघन नैंन विलोक, थिर बैठ थोकन-थोक ।।६४५
मृनमई[2] मूरत-मंड, येकंत बैठ उछंड।
सब करन लागी सेव, संजुक्त मंत्र सभेव ।।६४६
जप मंत्र गौरी जीह, दुःखार्त रात्री दीह।
इक नार सोवत आय, सुभ सुप्न मात सुभाय ।।६४७
सेवत सु मूरत साच, वँह बोल ऊठी वाच।
तो जंघ जनमहि तीय, कऊमार[3] सुख करनीय ।।६४८
सो करहि बाल सहाय, विस्रंभ रहहु बसाय।
तब जाग ऊठी तीय, हित हरख बाढचौ हीय ।।६४९
इह सुप्न सुखद अपार, नारिन कह्यौ इह नार।
उपज्यौ सु गरभ अथाँन, सोई जंघ मैं सुखदाँन ।।६५०
इतनें कहै हय[4] आय, कीय कुलाहल बलकाय।
भागी सु विप्रन भाँम, मिल त्याग-त्याग मुकाँम ।।६५१
पुन लगे हैहय पीठ, नारी सु भागत नीठ।
गर्भनी काँपत गात, बहु रोयकै बिललात ।।६५२
सुन रुदन पुत्र सयाँन, उर[5] फार प्रगटचौ आँन।
अत तेजवंत अनूप, सुखदाय गौर-स्वरूप ।।६५३
अरू उदित आभा अंग, परभात मनहु पतंग।
दुति जाहि बाढचौ दौर, वँह फैलकै चहुँ ओर ।।६५४
द्रग मुँदे हैहय देख, विस्मयत भयेऊ विसेख।
भट सबही ह्वै भयभीत, मन जाँन लीन प्रमीत[6] ।।६५५
अकुलाय डोलत अंध, कलभूँम जाँन कवंध।
कोऊ कुढ़त कर-कर कूक, अह[7] दसा जेम उलूक ।।६५६
रहे विपन बीच रुलाय, पग गरत-परत पुलाय।
सटपटत अटकत साल, भटभेर होवत भाल ।।६५७
कंटकन अरुभत केस, अट जात पट अवसेस।
बिसरे सु हैहय वीर, सुध खाँन-पाँन सरीर ।।६५८

१ गौरी। २ मिट्टी की। ३ कुमार। ४ हैहय। ५ यहाँ=जंघा। ६ मृत्यु

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

इक येक पूछत अंध, कहा पाप बैठौ कंध।
जब कहत कोऊक जाँन, कीय मेट कुल की काँन ।।६५६
पूजत सु प्रोहित पाय, घट तिनही घालत घाय।
घर छोड़ भागे धाँम, भागी सु संग ही भाँम ।।६६०
इत करी पीड़त आय, निरनौ न सोचे न्याय।
इह पाप गनहु अघोर, इधकौ न यासौं और ।।६६१
कीय महाँ निंदत काँम, मरजाद छोर मुकाँम।
लीय ब्रह्महथ्या लाख, सिस सूर भरहै साख ।।६६२
परलोक बिगरचौ पंथ, अह लोक आयौ अंत।
इक सुनी बात अभूत, प्रघटचौ सु जंघा पूत ।।६६३
जिह लख्यौ तेज जहूर, द्रग द्रष्टि भागी दूर।
मिल सबै सिसु की माय, तुम करहु बिनती ताहि ।।६६४
सिसु होयगौ सु प्रसंन्न, उरु भयौ जो ऊतपंन्न।
वयवृद्ध की सुन बात, जब सोच हैहय-जात ।।६६५
द्वज तीयन आगै दीन, कर जोर बिनती कीन।
हम करे दोख हजार, अनऊचत लोभ अगार ।।६६६
तुम प्रोहतन की तीय, हम मात सोचहु हीय।
जजुमाँन सुत सम जाँन, पथ जात राखहु प्राँन ।।६६७
मरहैं सबै बिन मौत, कुल वहहि कंठ करौत।
कहा बाल वृद्धा काय, मम हैहयन की माय ।।६६८
सुत जाँन करहु सँभार, वपु वयर भाव विसार।
सुन विप्र तीयन सकोय, सुप्रस्न ह्वै सहकोय ।।६६९
हैहयन कहेऊ सहेत, सब सुनहु होय सचेत।
पितु हने जाहि प्रचार, मुनि और्बं भ्राता मार ।।६७०
कीय गर्भ-छेदन केक, सो देखलीय सविवेक।
बस रहे जंघा-बीच, मुनि और्बं नैंनन मीच ।।६७१
अब प्रगट पलक उघार, चित समुझ पापाचार।
द्रग ग्रहन कीनीं द्रष्टि, तुम छत्रीयन की तिष्ट ।।६७२
तऊ करहु बिनती ताहि, दैहैं सु द्रष्टि दिखाय।
सुन विप्र-नारी सीख, अवगुनन अपने ईख ।।६७३

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मुनि औबं पायन माँय, गिर गये माँन गिराय।
कऊमार विप्र क्रपाल, तव द्रष्टि दीय ततकाल ।।६७४
पुन छत्रीयन मुनि पाव, पूजे सु पूर्न प्रभाव।
दीय अभय तिनकौं दाँन, सब रीत आद समान ।।६७५
लै आय हैहय लार, दुज आपने दरबार।
धुर धरा दीने धाँम, तज वयर भाव तमाँम ।।६७६
विनती करी नृप व्यास, इह स्रौंन सुन इतिहास।
भृगुवंस हैहय भाय, इह लोभ कीय अंन्याय ।।६७७
अत लोभ पापी आद, पथ-धर्म करत प्रमाद।
द्वज छत्रीयन कौ दोस, जिह लगायौ कर जोस ।।६७८
जग भये हैहय जात, खत्रीन कहीयै ख्यात।
मुद पाय व्यास मुनिंद्र, कहने लगे करुविंद्र ।।६७९
इक दिवस रिव[1]सुत आय, रेवंत रूप रचाय।
हय ऊचस्रवा चढ हाल, वैकुंठ-लोक विचाल ।।६८०
चित विस्नु-दरसन चाह, रमनीक लीनी राह।
श्रीविस्नु देखत सोय, जिह रही पद्मा जोय ।।६८१
बोले सु विस्नु विचार, इह कवन हय असवार।
हय रही पद्मा हेर, बोली नहीं तिह बेर ।।६८२
प्रभु जाँन मनमैं पाप, सोई लगे दैन सराप।
मन नहीं थिर तोहि मूल, डग रहहु डाँवाडूल ।।६८३
रमतीत रहु दिन-रात, वसु रमाँ नाँम विख्यात।
चल नाँम चंचल चित्त, पुहमीन होउ प्रवृत्त ।।६८४
थिर होयकै कहु थाँन, नहि बसहि येहु निदाँन।
मिल पास बैठी मोर, चित जात जहाँ-तहाँ चोर ।।६८५
हय हेत बाव्यौ हीय, तुम होहु बड़वा[2] तीय।
मृतुलोक बसहु मुकाँम, वयकूंठ तजकै वाँम ।।६८६
श्रीविस्नु सुनकै स्राप, बहु लगी करन विलाप।
लिक्षमी ह्वै दुखलीन, कर जोर विनती कीन ।।६८७

१ यम। २ घोड़ी।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कब स्राप मिटहिं कलेस, इह करहु हरि-उपदेस ।
जब कह्यौ विस्नू जाहि, उर ग्यान कौं अवगाहि ॥६८८
सुत जनहिगी सुख-दाँन, संतांन मोहि समाँन ।
जब छूटहै दुख जाल, कछु अवस बीतै काल ॥६८९
सुन विस्नु वायक स्रौंन, गृह-त्याग कीनौं गौंन ।
इंदरा चाली ऊठ, बस सोक तज वयकूंठ ॥६९०
पितु गई सूरज पास, उर भरत पूर उसास ।
सब कह्यौ कारन स्राप, ब्रिसवास दीनौं बाप ॥६९१
मृतुलोक कौं लीय मग्ग, तन त्याग कीनौं तग्ग ।
कोऊ दिवस पूरब-काल, ब्रिव नदी संग विचाल ॥६९२
जहाँ करचौ पूरन जाप, तन तरुन तरुनी[1] ताप ।
जहाँ लक्षमीहू जाय, कीय रूप बड़वा-काय ॥६९३
प्रभू पंचमुख दस पाँन, उर याद कीय ईसाँन[2] ।
उज्जल अनूपम अंग, अरू गवरजा अरधंग ॥६९४
त्रीनयन हाथ त्रसूल, छपी व्याघ्र-चर्म दकूल ।
मध कंठ-मुंडन-माल, विधु दूज भास विचाल ॥६९५
कलमलत कुंडल कांन, सिर जटाजूट समाँन ।
सिव ध्याँन धर होय सुद्ध, कल्पना त्याग कुबुद्ध ॥६९६
बनकै तुरंगनि वेख, येकंत थल अवरेख ।
हर स्तुत करत हमेस, रुख मिलन भाव रमेस ॥६९७
बीते सहस्रक वर्ष, अत करत तप ऊतकर्ष ।
दीय आयकै दरसंन्न, श्रीईम ह्वै सु प्रसंन्न ॥६९८
बोले सु सिव तिंह बार, अहो मात जग आधार ।
क्यूं करत तपस्या क्रूर, पति-त्याग सुख भरपूर ॥६९९
कीय तुरंगनि क्यूं काय, वन[3] रही वास बसाय ।
पति-भाव भूल प्रवेस, हम जपत नाँम हमेस ॥७००
नित त्रीयन कौ इह नेम, पति भजै संजुत पेम ।
अन पुरख करनौ याद, महिला नहीं मुरजाद ॥७०१

१ तरणि=सूर्य । २ शिवजी । ३ जंगल ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

श्रीविस्नु होय स्वकीय, हित केम बिसरी हीय।
सिव वचन सुनकै स्राँन, बोली सु कमला बाँन।।७०२
संग तज्यौ लैकै स्राप, वँह नहीं जाँनत ग्राप।
हरि कह्यौ ग्रस्वा होहु, मन मोह उपज्यौ मोहु।।७०३
पति कह्यौ जब पिछताय, इक पुत्र उपजहि ग्राय।
वपु-त्याग कै बड़वाय, इहाँ मिलहु मोसौं ग्राय।।७०४
श्रीविस्नु स्याँम सरीर, धर ह्रिदय बैठे धीर।
मै पतिव्रता जग-माय, किह संग भेटहु काय।।७०५
उपज्यौ सु संसय येह, दुख दहत है मोहि देह।
सिव विस्नु येक समाँन, उर जाँनकै ईसाँन।।७०६
इह ध्याँन धार्‌यौ ग्राप, कछु दोस नाँहि कदाप।
सुन इंदरा के स्वाल, कहि सिंभु होय क्रपाल।।७०७
भव[1] कह्यौ हमरौ भेद, विध नहिंन जाँनत वेद।
तुम लह्यौ कैसे तत्त, पुन इहै कहहु प्रवृत्त।।७०८
जब रमा बोली जोय, महाराज सुनोयै मोहि।
कर-कँमल ग्रासन कंथ, इक दिवस जाग इकंत।।७०९
ध्यावत सु बैठे धाँम, सज पद्म-ग्रासन स्याँम।
द्रग देख पीय सुखदात, विस्मयत पूछी वात।।७१०
मै ऊपजी महाराज, साँमंद्र बोच सुकाज।
देखे सु सबही देव, भल बूज-बूज सु भेव।।७११
गुन देख-देख गरीय, पुन वरे ग्रापही पीय।
इह लख्यौ ग्रचरज ग्राज, मो कहहु कथ महाराज।।७१२
जग करत तुमरौ जाप, उर कौन ध्यावत ग्राप।
हरी कह्यौ जब कर हेत, सजुझाय तत्व समेत।।७१३
मैं करत ध्याँन हमेस, माहेस भजत रमेस।
परीग्राय हरि हर प्रीत, द्रग देखवे के द्वीत[2]।।७१४
उर लखै हरी हर एक, साधू सोई सविवेक।
भव हमही समुझत भेद, नित परत नर्कं निखेद।।७१५

---

१ शिव। २ दो।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कहनी सुनी इह कंथ, गन ह्लदय बाँधी ग्रंथ।
सिव समन ताप सराप[1], आराधना कीय आप ।।७१६
पीय पर्मप्रीय पहिचाँन, धुरजटी ध्याई ध्याँन।
पति मिलै मोहि सुख पाय, इह संभु करहु उपाय ।।७१७
सुन लक्ष्मी की सोय, हर चले हर्षित होय।
दीय और सुभ उपदेस, मन सुद्ध होय महेस ।।७१८
पद परासक्ती पेम, नित ह्लदै धारहु नेम।
पीय-संग पैहौ पूत, करनीय इह करतूत ।।७१९
सुन कथा समन सराप, तन रमा मेटचौ ताप।
भव चले ऊठ विधु-भाल, कयलास-सिखर क्रपाल ।।७२०
तहाँ जाय लोचन-तीन, पेरचौ सु दूत प्रवीन।
कीनीं न देर क्रपाल, हर लक्ष्मी लख हाल ।।७२१

दोहा

चित्र रूप अत मति चतुर, सिंभु कह्यौ समुझाय।
कीय प्रयाँन वयकुंठ कौं, चित हरि-दरसन चाहि ।।७२२
बेग जाय वयकूंठ कौं, पहुँच्यौ हरी कै पास।
हर संदेह-हारक[2] हरख, अभय करी अरदास ।।७२३

छंद अरध हर-गीतका

श्रीकमल-लोचन साँमरे, कर-कँमल पूरन काँमरे।
गिर गदाधर गोबिंदजू, माधव मुरार मुकुंदजू ।।७२४
जग-जीव जेतक जे कहू, अग्यात नाँहिन येक हू।
इह कह्यौ सिंभु उराहना, श्री करी बहुत सराहना ।।७२५
कहा कीन तिह तकसीर कै, सात्वक सुभाव सरीर कै।
सामंद्र-सुत उच्चीस्रवा, हित पिता पख भ्राता हुवा ।।७२६
बहु दिवस मैं लख बीर कौं, सुख बढ्यौ नैंन सरीर कौं।
बोली न ताही बार मैं, बंधवं सु प्यार विचार मैं ।।७२७

१ शाप। २ सन्देशवाहक, दूत।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जान्यौं न नारी जीय कौं, हित इंदरा के हीय कौं।
भ्राता रू बंधव भाव कौं, नहीं गन्यौ जग के न्याव कौं ॥७२८
पति साथहू प्रीय पायकै, महला धरै चित मायकै।
गत सुनी नहीं हम गेह की, सती पिता-मात सनेह की ॥७२९
मैं जात वरजी मायकै, धी-भाव[1] पहुँची धायकै।
अपमाँन निज अवलोक कैं, सो जरी परबस-सोक कैं ॥७३०
बधु पाय हमहु बिजोग कौं, भूले सु तम-मन भोग कौं।
तप करचौ बहु हित तीयकै, जो हम ही जाँनत जीयकै ॥७३१
हिमवाँन पुत्री होयकै, जाया लई पुन जोयकै।
जिन दिनन कौ दुख जोयकै, हम रहत विस्मय होयकै ॥७३२
जब कहत हूँ तुम जाँनकै, मति येक तन-मन माँनकै।
संसार-रीत सदीव की, जाँनी न पद्मा जीव की ॥७३३
बढ़ स्राप दीनौं वाँम कौं, कीय नाथ अनुचित काँम कौं।
बड़वा भई बिललात है, पतिव्रता संकट-पात[2] है ॥७३४
भटकत फिरै तरु भीर पै, तमसा रु जमना-तीर पै।
पीय-भाव की प्रत पारीयै, तुम लक्षमी कौं तारीयै ॥७३५
सिव कह्यौ इह संदेस कौं, कमला सु हरन कलेस कौं।
संदेस-हारक सिंभु कौ, सिरविंदु[3] देहु विस्रंभ कौ ॥७३६
जाहूँ सू सिव पै जाँचकै, विध-जुक्त भाखूं बाँचकै।
चित रूप अरजी चिंतकै, माहेस माँन्यौ मंतकै ॥७३७
इह कहहु मोय उदंत कौं, कर विनय गवरी-कंथ कौं।
सुख लक्षमी सरसायकै, वयकूंठ देहु बसायकै ॥७३८
तीय कँमल-नैंनी ताप सौं, सोइ मोक्ष होय सराप सौं।
इस सिंभु कौं अवगाहकै, संदेस कहहु सुनायकै ॥७३९
सुन दूत के सब सासना, भर मोद हीय मैं भासना।
कीय कूंच फिर किवलास कौं, पद वंदकै हर पास कौं ॥७४०
श्रीनाथ होत सवेरकै, ऊठ चले बीच अँधेरकै।
हय-रूप धार हुलास कौं, पहुँचे सु कँमला पास कौं ॥७४१

१ पुत्री-भाव। २ संकटग्रस्त है। ३ विष्णु।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मिल परसपर अत मोद सौं, वपु विगत होय विरोध सौं।
रत दाँन दीनौ रमनिकौं, सुख पाय स्रापहु समन कौं ।।७४२
गुर्बनी अस्वा ह्वैगई, निज रूप कँमला निरनई।
कछु दिवस बिचरे कंतरा, आधाँन पायौ अंतरा ।।७४३
जनम्यौं सु सुत तिह जायगा, पुन तिही छोरचौ पायगा।
चलने लगे जब चाहिकै, पद्मा कह्यौ पिछतायकै ।।७४४
कहा हाल बाल-कँवाँरकै, निरनौ कहहु निरधारकै।
जब कह्यौ विस्नू जाहिकैं, अनुराग कौं अवगाहिकै ।।७४५
जग प्रसिध[1] सुवन जजातके, सोइ करत तप तीय साथके।
सुत-हेत धर संकल्प कौं, वपु ह्रिदय छाँड़ विकल्प कौं ।।७४६
तुव बाल देवहि ताहिकैं, वँह लहहि सुख उपजायकैं।
दंपतहु हित दरसायकै, चढ़ चले याँन चलायकै ।।७४७
कछु घटी जावत कालकै, चंपक सु आयौ चालकै।
नभ-याँन जात निहारकै, विद्याधरा तिह वारकै ।।७४८
सिसु देख उतरचौ वसुमती, चिब धाँम संग नारी छती।
सिसु लै चले सोई स्वर्ग मैं, विच जाय देवन वर्ग मैं ।।७४९
सोइ सभा मेल सुरेस कौं अरजी करी अवसेस कौं।
जब कह्यौ जिस्नु जताय कै, विस्नू सु अंस बसाय कै ।।७५०
नृप तुर्बसू हित निर्मयौ, करीयै न ताकौ कर्म यौं।
तिह ठौर लीनौं ताहि कौं, जहाँ मेल आवहु जाहि कौं ।।७५१
सुन इंद्रचंपक सासना, विद्याधरा तज वासना।
कालंद्रि[2] तमसा-कूल मैं, मेल्यौ सु सिसु तरु-मूल मैं ।।७५२
श्रीविस्नु कमला साथकै, नजदीक गये नरनाथकै।
उतरे विमान उतारकै, निज भक्ति नृपति निहारकै ।।७५३
नृप देख जंग के नाथ कौं, श्रीइंदराहू साथ कौं।
परनाँम कर-कर पाव सौं, चिब देख श्रीहरि चाव सौं ।।७५४
मन मगन ह्वै पुन पगन मैं, लोटत सु भक्ती लगन मैं।
वर्नना कर्न विचारकै, अरु जया सब्द उचारकै ।।७५५

१ प्रसिद्ध। २ यमुना।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

रुच जाँन हरी राजाँन सौं, बोले सु इंमृत-बाँन सौं।
जप करत सुवन जजात ही, सत बरख बीते साथ ही ।।७५६
हम जाँन तेरे हाल कौं, बगसीस किय निज बाल कौं।
नद संग जमुना-नीर पै, तमसा नदी की तीर पै ।।७५७
जहाँ जाय लीजहु जोयकै, हीय सौं अनंदत होयकै।
सुत हमही दीन सँभारनै, कुल-वृद्धि तेरै कारनै ।।७५८
बस जाय हम वयकूंठकै, वँहा तुमहु जावहु ऊठकै।
हरी चले याँन हकारकै, वयकूंठ मग्ग विचारकै ।।७५९
नृप बैठ रथ पै नीसरचौ, सुत-लाभ कौ हित अनुसरचौ।
नद ऊभय संग निकुंज मैं, पुन लख्यौ तरवर पुंज मैं ।।७६०
पद के अँगूठा पाँन मैं, वँह धवै[1] गहि अधुराँन मैं।
किलकै सु खिलकत केल मैं, मुलकै सु हुलकत मेल मैं ।।७६१
नृप लख्यौ अंगज नैंन सौं, बतराय अंमृत-बैंन सौं।
झुक लयौ झटकै झेलकै, मुद पाय रथ मैं मेलकै ।।७६२
आयौ सु नगर ऊछाह सौं, सुत पाय लिछमी नाह सौं।
हरखे सु पुरजन हेरकै, सुख बढचौ माँन सुमेरकै ।।७६३

दोहा

नृप तुर्बस कुल-नीयम सौं, संसकार कीय सूंन[2]।
बढनै लगौ सु बाल वय, अंग संग विन ऊन ।।७६४
मास षष्ठमै के मही, अनप्रासन कीय और।
कीय त्रवर्ष चूड़ा-क्रन, जजु विध विप्रन जोर।। ७६५
वय भय ग्यारह वर्ष की, दई जनेऊ देख।
धनुरवेद विद्या धरम, अरू दीनौं अभषेष[3] ।।७६६

छंद अरध हरगीतका

नृप भये वृद्ध निदाँन कौं, पुत्र सूँप राज-प्रधाँन कौं।
गये विपन मैं तज गेह कौं, दिब करन दंपति देह कौं।। ७६७

१ ध्यान लगाये। २ पुत्र। ३ राज्यतिलक, राज्याभिषेक।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मैनाक पर्बत गिर मथा, जहाँ करन लागे तप जथा।
केऊ दिवस बीते कारना, धावत सु गवरी-धारना ।।७६८
तन-त्यागकै दंपति तही, स्वार्गीय भये राजा सही।
हित पाय सुत जब्र हैहया, कोय पिता की ऊरध-क्रीया ।।७६६
दै विप्र लाखन दाँन कौं, धन रोहनी[1] अरु धाँन कौं।
पितु होय ऊरन पेम सौं, नय लगौ करनै नेम सौं ।।७७०
वसु राज-काज विचार मैं, द्रढ बैठ कै दरबार मैं।
सब मंत्रिजन के संग मैं, प्रज उन्नती परसंग मैं ।।७७१
नीती सुधर्म निहारकै, वट लेत अपनौं वारकै।
तसकर दुरे सब ताप सौं, बाजी सवाई बाप सौं ।।७७२
निज येक वीर नरिंद्र कौ, स्वाभाव सुद्ध सुरिंद्र कौ।
प्रज लेत भाग पिछाँनकै, जिह हेत खरचत जाँनकै ।।७७३
कर निकंटक चहु कोद कौं, महाँराज लै मन मोद कौं।
इक दिवस नृप अवकास लै, खेलन गये जन खास लै ।।७७४
कढ़ गये गंगा-कूल कौं, फल-फलद देखत फूल कौं।
बेली अनूपम बिस्तरी, उरझाय तंतन उर्झरी ।।७७५
कोमल सुहावत अंकुरा, मदमत्त गुंजत मधुकरा।
परछाँह पल्लव पर्न की, कहुँ गली नाहिँन किरन की ।।७७६
कंकोल अंब कदंब की, सोभत उदंबर सिंब की।
जामून जाल जँभेर की, कचनार भोर कनेर की ।।७७७
कीकरा मोचक कटहरा, मधु-मालती अरू मोगरा।
क्रतमाल पंक्त केलकी, चंपा रू बेल चमेल की ।।७७८
वंजुल हू मंजुल वेनुका, कुंजन मनौं पटकेनका।
पल्लव नवीनन पौंन सौं, उरझात मंजरीयाँन सौं ।।७७६
पिक सोर होत पपीहरा, कूंजत मयूर कुरंकुरा।
सरसात होम सुवासना, पुन वेद-धुन परकासना ।।७८०
मुनि पर्नसाला मंडता, आराध ईस अखंडता।
वन सघन उपवन वाटका, सोहत निकुंज सुघाटका ।।७८१

---

१ गाय।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

परवाह गंगा पावने, सुच पत्र कमल सुहावने ।
चिब लखत नृप चित चाहिकै, वँह दीप पहुँच्यौ ग्रायकै ।।७८२
नद विमल सोभा नीर की, सोगंध मंद समीर की ।
जहाँ पाय थंभे जायकै, ग्राँनंद हीय उमगाय कै ।।७८३
कमनीय देखी काँमनी, दुति-दमक माँनहु दाँमनी ।
कट-खीन जंघा-केलसी, स्रंगार-रस की बेलसी ।।७८४
दीपंत नासा दीपसी, स्रुति सुस्कली जुग सीपसी ।
ग्रँखीयाँन रुख ग्ररविंद की, चिब वदन राका चंद की ।।७८५
विथुरे सु सीरख वारहू, लट छुटी केतक लारहू ।
स्वर भीन क्रंदत स्वास कौं, ग्ररू भरत कवहुँ उसास कौं ।।७८६
नृप दुखी ताहि निहारकैं, नजदीक पहुँचे नारकै ।
विसवास दै बतरायकै, ग्ररू कही कथ्थ ऊचारकै ।।७८७
द्रढ महपती मैं देस कौ, केऊ दुष्ट हरन कलेस कौ ।
कीय निकंटक जग कारनैं, विध नीत नय विस्तारनै ।।७८८
किह करी पीड़त काँमनी, गथ कहहु कुंजर-गाँमनी ।
सुन वचन राजा सुंदरी, चित भयौ सर्प-चचुंदरी[1] ।।७८९
मैं रही मीन न मेखहू, इतकी न उतकी एकहू ।
वँह ग्ररज सुनीयैं ग्रापहू, कछु कहत करत कलापहू ।।७९०
ग्रनदेस मैं इक ग्रधपती, सुभ-रम्य नाँम सु सुधमती ।
तिह रुक्म रेखा तीय कै, सुत भयौ नाँहि सुतीय कै ।।७९१
क्रतु करचौ तिह इह कारनै, बुलवाय विप्रन बारनै ।
ग्राहूत पूरन ह्वै इतै, प्रगटी सु कंन्या तिह प्रतै ।।७९२
सुभ रूप लक्षन संजुता, लड़ थेक मनु मुक्ता-लता ।
रिख सबही बोले कर रली, इह नाँम है येकावली ।।७९३
लीय ताहि राजन लाल कौं, वय देख सिसु हित बाल कौं ।
वपु वढत ज्यूँ गुन-वृद्धनी, सरसात रूप समृद्धनी ।।७९४
लखीयै जु चंचल-लोचनी, मद कंज खंजन मोचनी ।
रद-वस्त्र[2] विद्रुम रंग के, ग्ररू स्याँम कच ऊतमंग के ।।७९५

---

१ छछुंदर । २ ग्रोठ ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कुच ताहि कंचन-कलस से, रद मनहुँ कुली दाड़म रसे।
भृगुटीहु नत भ्रूहावली, उड़ रही मनु अवली अली ।।७६६
चिव मत्त कुंजर चाल की, मति होत चकत मराल की।
स्वर कोकला स्रौंनन सुधा, तन रूप गुन जोबन त्रथा ।।७६७
कऊमार राजा कंन्यका, वँह सखी मैं हूँ अन्नंन्यका।
सुभ राजमंत्री की सुता, जसुमती नाँम सुनौ जथा ।।७६८
येकावली चित येकमैं, बरताव भाव विसेखमैं।
संग रहत उभय सदीव सौं, जुदगी न जाँनत जीव सौं ।।७६६
सोइ राजकंवर सुभाव कौं, चित करत वरनन चाव कौं।
सोगंध कमल सुहावनै, द्रग घ्राँन सुख दरसावनै ।।८००
जहाँ रमत निस-दिन जायकै, पुन रहत हित सुख पायकै।
इह बालपन सौं आज लौं, लाई न उर मैं लाज लौं ।।८०१
पितु लाड़ संजुत प्रेम सौं, नहीं हटक कीनीं नेम सौं।
तन जोबना लख ताहि कौं, संग दये सुभट सहाय कौं ।।८०२

दोहा

आई गंगा-नद इहाँ, समय प्रात सुख साज।
कूल कुंज कंजन कली, रही फूल महाराज[1] ।।८०३

छंद अर्ध हरगीतका

आई जबै येकावली, उठनै लगी भ्रमरावली।
कल्हार पंकज की कली, खसबोह चहुँ दिस कौं खिली ।।८०४
किंजल्क ऊपर कर्नका, तिह लही आभा तर्नका।
लग पौंन लहरे लेत है, द्रग द्रष्ट आँनद देत है ।।८०५
दल हरत[2] कोमल देखीयै, बहु पद्म-नाल विसेखीयै।
तरू-भीर छाया तीर पै, कोकला बोलत कीर पै ।।८०६
बहु रक्ष संग बली-बली, गहि सस्त्र बैठ गली-गली।
कँवरी सु क्रीड़ा कारनै, बढ़ चली हेत विहारनै ।।८०७
गन अछ्छरन के गाँन की,न धुन बढ़ी वाजन ध्वाँन की।
सुन कालकेत सराहना, चल आय कंवरी चाहना ।।८०८

१ मू. प्र. माहाराज। २ हरे।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बरज्यौ सु रक्षक वीरहू, भट संग दाँनव भीरहू।
तिह जुद्ध कीनौं ताहि कौं, समले न वीर सहाय कौं ।।८०६
वँह पकरकै येकावली, चाल्यौ सु असुर महाछली।
लगई ता संग लार सौं, पुत्री सु राजन प्यार सौं ।।८१०
जब मोहि पकरी जाँनकै, वँह सखी प्रीय अनुमांनकै।
पुर गयौ सो रथ प्रेरकै, घमसाँन फौजन घेरकै ।।८११
काँमार्त ह्वै हमसौं कही, सम जास कर कँवरी सही।
परनै सु हमकौं प्यार सौं, मन विकल भौ सरमार सौं ।।८१२
जब विनय-जुत कर जोरकै, बोली सु कथ्थ बहोरकै।
इह संध करोयै आपही, मुद पाय हेत मिलाप हो ।।८१३
जब कालकेत जनायकै, बोल्यौ सु बचन बनायकै।
सुन राज-कंवर सुजाँन तूं, मति कछू मेरी माँन तूँ ।।८१४
इह नई वेस अयाँनीयै, जिम अभ्र छाया जाँनीयै।
ज्यूँ दौर आवत जात है, वसु सथिर नाँहि बसात है ।।८१५
मैं कहत हूँ सोइ माँनीयै, जामैं न संसय जाँनीयै।
हित राजराँनी होइयै, वय नूंत नाँहि बिगोइयै ।।८१६
पग-दास करकै पेम सौं, खुस खेल करीगै खेम सौं।
सुन राजकँवर सयाँन सौं, बोली सु आरत-बाँन सौं ।।८१७
असुरेस अरजी आप सौं, बेटी सु माँगत बाप सौं।
जो देत तिह गृह जात है, कुल उभय की कुसलात है ।।८१८
इह रीत आद-अनाद की, महि मंडता मुरजाद की।
विप्रीत यातै बात है, सुवन स्रवन हि सुहात है ।।८१९
इक अरज मेरी औरकैं, जिह कहत हूँ करजोरकैं।
पितु प्रथम बोले पेम सौं, निज व्याह पुत्री नेम सौं ।।८२०
दुहिता सु हैहय दैहगे, लख दंपती जस लैहगे।
पितु-वचन कौ पन पारहू, सुख जनम मोर सुधारहू ।।८२१
विप्रीत करहु न बात कौं, अब छोर देहु अनाथ कौं।
सुन कालकेत सवाल कौं, पठई सु विवर[1] पताल कौं ।।८२२

---

१ तहखाना।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राखसी राखी रक्षका, भट संग दीय निस-भक्षका[1]।
कँवरी सु कारागार में, लहि संग मैं हू लार मैं ।।८२३
भोगे सु दुख के भोग कौं, अरू करत रहत उद्योग कौं।
जब सुनी बात जसोमती, पुन दयौ उत्तर महपती ।।८२४
निज काय हैहय नाँम है, करता सु पूरन काँम है।
इक मोहि संसय ऊपनौ, सखी राजकँवरी इह सनौ ।।८२५
किह रीत कारागार सौं, निकरी सु जाहि निसार सौं।
कहीयै सु कारन काज कौं, वपु छोर कै हीय व्याज कौं ।।८२६
सुन जसोमति नृप सासना, भाखी सु निज मति भासना।
तन त्रविध मेटन तापहू, जगतंब करता जापहू ।।८२७
इक सिद्ध द्वज आराधना, सिखई सु मोकौं साधना।
सुभ करन्नास समास कौं, अरू अंग-न्यास अभ्यास कौं ।।८२८
नित करत हूँ निज नेम सौं, पद मात पंकज प्रेम सौं।
बाढी सु भक्ति विसेखीयै, लहि पवन कौं बल लेखीयै ।।८२९
अब विनय सुनीयै औरहू, भयभीत सूती भौरहू।
दीय सुप्न मोहि जगदंबिका, वाचा सु देय विस्रंभका ।।८३०
सिख दतात्रय गरू साधकै, उपदेस लीन अराधकै।
संतुष्ट कीय मोहि साच सौं, वर्नना कर-कर वाच सौं ।।८३१
मैं महाविद्या मात कौं, सुमरन लहै सोइ साथ कौं।
उपदेस दीनौं जिह इतौ, मैं आवनं कीनौ मतौ ।।८३२
हीय वसूं हैहय हेत मैं, खल मार डारू खेत मैं।
वँह गंग-तट पै आयगा, जावहु तुही वँह जायगा ।।८३३
दुख कहहु जासौं दहुन कौं, श्रीलक्षमी के सुवन कौं।
सब भाँत करहि सिहाय कौं, भर प्रेम कँवरी भाव कौं ।।८३४
मैं करी अरजी मर्म की, धारना धारहु धर्म की।
करीयै विलंब न काज कौं, मोहि लाज है महाराज कौं ।।८३५
कथ सुनी जसुमति की कही, सुख प्रेम बाढ्यौ नृप सही।
संग वीर लै बहु साथ कौं, घालन सु असुरन घात कौं ।।८३६

---

१ राक्षस।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अत मिले गै-दल आयकै, च सु है-दल चाहिकै।
पैदलन आयुध पाँन मैं, बढ़ चल साँझ विहाँन मैं ॥८३७
रथ कढे मारग रूंधकै, धर व्योम बाढ़त धूँधकै।
करीयार[1] बाजत किंकनी, घरीयार-धुन जैसी घनी ॥८३८
ललकार बाढत लाग सौं, रसवीर सिंधव राग सौं।
आवाज दुंदभ ऊठकै, छिक संध अद्रिन छूटकै ॥८३९
रथ चल्यौ हैहय राजकै, घन ऊपटचौ जनु गाजकै।
सुभ सुकन साथ सयाँनकै, पुन लखे समय प्रयाँनकै ॥८४०
दध घिरत चावल दूबका, भल भरचौ जल कौ कूंभका।
सरसौं भयौ अन[2] सिद्धकै, मिल चंदनाद समृद्धकै ॥८४१
आदर्स[3] संख अलंकृता, पल मछ्छ मदरा प्रवृता।
गोरोचना मृतका गऊ, सुभ सहत गोबर फल सऊ ॥८४२
अरू देव-प्रतमा आसना, सुभ हेत फूल सिंघासना।
वीनाद भेरी बाजहू, आसीरवचन अवाजहू ॥८४३
वर वस्त्र वाहन विंजना, अंकुस अजा गज अंजना।
संपुट सरावा[4] धुज सु तै, प्रज्वलत अग्नी सुध प्रतै ॥८४४
सिवका रु चाँमर सेतहू, तांबूल छत्र सहेतहू।
अरू कलस भारी आयुधा, बंधे सु पसु-गन गुन वृधा ॥८४५
ताँबौ रू सोवृन-तारहू, अनमोल रत्न अपारहू।
पल्लव सहेत वनस्पती, नव साक दल फल निर्मती ॥८४६
ये मिले सनमुख आयकै, दरसाव मंगलदायकै।
सुभ दरस हंस सुवेखकै, द्वै सब्द बोलत देखकै ॥८४७
बक येक पग पै बैठकै, उत्कर्ष देखत ऐंठकै।
चकवाक दरसन चाहिकै, जुग लखे सारस जायकै ॥८४८
नाचत मयूर निहारकै, गृह-चटक[5] संगम गारकै।
पुन स्वर्नचूड़ प्रदक्षना, दीय आय आगै दर्सना ॥८४९
गृह-सूर लुथ-पथ गार मैं, मध गैल देखेऊ मार मैं।
अरु लख्यौ खंजन येमहू, तरू हरित ऊपर तेमहू ॥८५०

१ बक्तर। २ सिद्धान्न (रोटी आदि)। ३ दर्पण। ४ दीपक। ५ घरेलू चिड़िया।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

धुरमाल मृघ मिल धोर कौं, उतरी सु दछ्छन ओर कौं।
लोमा इहामृघ लारकै, तेऊ गये दछ्छन तारकै ॥८५१
दछ्छनह भारद्वाजहू, अत दई बैठ अवाजहू।
चहके सु फैंच[1] चकोरहू सुन दइयरी मुख सोरहू ॥८५२
धुन सिखंडक[2] कीय धारकै, गंभीर सब्द गुहारकै।
भनकार कीनौ भंरवी, स्वर पारथव मे स्वैरवी ॥८५३
द्रग लखे दछ्छन देस मैं, भूपती मंगल भेस मैं।
इतने सु वामे आयकै, साकुन्य सुभग सुभायकै ॥८५४
गन भृमर उड़कर गुंजकै, सोगंध पुस्पन संजकै।
अली जालकारक[3] औरहू, जिम कर्नकोटी जोरहू ॥८५५
फन करत फनधर फेरकै, टिट्टभहु बोलत टेरकै।
बोलत कपिंजल बाँनकै, उल्लूक गहकत आँनकै ॥८५६
अरू सरभ वाँमौ आयकै, आहार लेत अघायकै।
धुज-दंडहू के धूपरा, उड़ सैन बैठौ ऊपरा ॥८५७
अरू ढैक बोलत अग्र कौं, सुख लखे निमत समग्र कौं।
पथ देख सुखन प्रसंग कौं, उर धार अभय उमंग कौं ॥८५८
ज्यूं कही कथ्थ जसोमती, मन मोद बाढ्यो महपती।
वंदरी-सेन बनायकें, रन बढे रघुवररायकें ॥८५९
येकावली सीय येकसी, गत एक सौं दुख मैं ग्रसी।
पुर लंक ज्यूं पहुँच्यौ पुरी, घन नौवतै हैहय घुरी ॥८६०
सुन कालकेत सँभाय ज्यूं, रन रुप्यौ रांवनराय ज्यूं।
उर असुर फाटक आयकै, बल वयर-भाव बसायकै ॥८६१
लागे सु लरनै लोह कौं, सनमुःख भूप संदोह कौं।
रजपूत रुठे रार कौं, कर वीरता किलकार कौं ॥८६२
टंकार कर धनु तांनकै, सर-वृष्ट करत संधांनकै।
सत्ती असीरख सबैला, अत परी मार अपर्बला ॥८६३
केऊ मार देत कुठार की, करीयार बीच कटार की।
धकपक्क माची धंधला, अकबक्क ह्वै सारी इला ॥८६४

---

१ बुलबुल। २ मोर। ३ मकड़ी।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

झर अगनबाँनन झाल की, करतूत वाढ़ी काल की।
परताप पत्तन ऊपरा, चली चलो-चलो परजा निसचरा ।।८६५
केऊ बूँब कर-कर काँमनी, बिललात बहु बिड़रावनी।
धस सिथला बिच धायकै, छतीयाँन बाल छिपायकै ।।८६६
गढ परी भीर गली-गली, बढ़ चले बीर बली-बली।
जे जुरे छत्रिन-जात सौं, हठ सस्त्र गहि-गहि हाथ सौं ।।८६७
इत राजपुत्र उमंडकै, महि-मेर जिम पग मंडकै।
कर सधर लै कोदंड कौं, कर दाव छंडत कंड कौं ।।८६८
उड़ जात आसुर-आवली, पवमाँन जनु पत्रावली।
कहुँ रथी रथ कर[1] सौं करी, असुवार हयन अराअरी ।।८६९
पैदलन पैदल पेलकै, झट काँन संम्मुह झेलकै।
धर धूज मंड़त धूँम कौं, वायलहु मंड़त घूँम कौं ।।८७०
झुक झुंड खग्गन झारकै, मिल मुंड ऊार मारकै।
तन खंड खंडन तूटकै, अत रुंड नाचत ऊठकै ।।८७१
बलवंड के रन बावरे, अनी ऊमड़ भिरत उतावरे।
गत सिंध गाजत गल्ल सौं, भिर साँग सल्लन भल्ल सौं ।।८७२
मन जाँन छत्रिन माँनवी, दिखरात माया दाँनवी।
श्रीविस्नु लक्ष्मी[2] संभवा, डहकाय कैसै डिंभवा ।।८७३
भिर परे जुद्ध भयानका, आवाज बाजत आनका।
ऊड़ परत अंग अरीन की, कट बुथ्थ-बुथ्थन कीनकी ।।८७४
पसरी उदंबर पक्क ज्यौं, अत बुक्क सिवा अक्क ज्यों।
केऊ कालखंजन कट्टकै, इक परे येकन अट्टकै ।।८७५
छुट परी चपटल छंद की, किधूँ गाँठ आवरकंद की।
तरवार धारन तूटकै, खित परे भेजा खूटकै ।।८७६
रल भूँम पै मिलकैं रही, मटकी जु फूटी जनु मही।
चल चिंच स्रोनत छूटकै, बरखात मंडी बूठकै ।।८७७
अत मच्यौ कर्दम आयकै, मिल धूसरी धर माहिकै।
उड़ गिद्ध गहि अंत्रावली, चढ़ चंग ज्यौं चिल्लन चली ।।८७८

1 हाथी । 2 मू. प्र. लछी ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

किख कोक गहि कंकाल कौ, खैंचत खसोटत खाल कौं।
जुर जूह-जूहन जोगनी, भर खप्प रन-रत-भोगनी ।।८७६
बलबलत भूत विताल जू, खिलखिलत खेतरपाल[1] जू।
गावत सु नारद गुंजकै, महती सु तंतन मंजकै ।।८८०
मुंडमाल लेत महेसहू, निरखंत ख्याल नरेसहू।
रन राजपुत्रन रूठकै, दल असुर मारचौ दूठकै ।।८८१
जय भई हैहय जंग की, दिग-द्वार ऊपर द्रंग की।
भागे सु घायल भीत सौं, वपु-आकृती विपरीत सौं ।।८८२
पति असुर कौं परचायकै, जय कही छत्रिन जायकै।
सुन कालकेत सु जाँनकै, मरनौं जु आपन माँनकै ।।८८३
रथ चडचौ करनै रार कौं, विकराल ह्व जिह वार कौं।
धर धूज नेमी धरहरी, घन गाज जैसे घरहरी ।।८८४
टंकार दै धनु तांनकै, सर करत गुन संधाँनकै।
आयौ सु हैहय इछ्छकै, गढ ओट कौं तज गछ्छकै ।।८८५
द्रग ताहि नरपत देखकै, बढ क्रुद्ध वयर विसेखकै।
बोल्यौ सु नीत विचारकै, धनुवाँन सींजनी धारकै ।।८८६
जाँनत न छत्री-जात कौं, तुर्वसू मेरे तात कौं।
अंन्याय सनमुख आयकै, वचहै न बैर बसायकै ।।८८७
नृप रंम्य कँवरी नेम सौं, पति मोह इछ्छत प्रेम सौं।
कर हरन लायौ कंन्यका, अवलोक बीच अरंन्यका ।।८८८
तैं करी इछ्छा तीय की, जब कही कँवरी जीय की।
मो नाँम लै पितु-मात को, सिद्धान्त भाख्यौ सातुकी ।।८८६
कर रीस कारागार मैं, बंधन करी इह वार मैं।
खल मारहूँ रन-खेत मैं, चित तोहि राखहु चेत मैं ।।८६०
सुन बात असुर नरेस की, धारी, सु अहिमति द्वेस की।
क्रांतर हु वीच कृसाँनु कै, प्रजरचौ सु लागत पाँन कै ।।८६१
फनी पूँछ ऐंचत ज्यूँ फिरचौ, घन केसरी जनु घरहरचौ।
रथ देख हैहयराज कौं, छत्रीन-सूर-समाज कौं ।।८६२

---

१ भैरव, क्षेत्रपाल।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बरख्यौ सु पाँनप वारकैं, धनु-ताँन बाँनन-धारकैं ।
सुत तुर्बसू जनु सभ्भ्फयौ, गज देख मृघपत गज्जयौ ।।८६३
मृध उभय इह विध मंडकै, कर ताँन लै कोदंडकै ।
झर कंक-पत्रन झेरकै, घन जेम वरखत घेरकै ।।८६४
हथवाह सरसत हाथ की, जुर उभय आवत जात की ।
इक येक पै कर वार कौं, मंडी सु बहु विध मार कौं ।।८६५
रथ वाँम दल्छन राह कौं, वेबाह हाकत बाह कौं ।
चकरात चंचल-चाल सौं, ढिग ओट दै-दै ढाल सौं ।।८६६
तन ताक-ताक तुरंगके, सर दये दहुँ अनसंगके ।
धर गिरे स्वारथ धूज़कै, अत पीर घाव अमूझकै ।।८६७
जब विरथ ह्वैकै दोऊ जुरे, कर वार-वारन कौं करे ।
पुन अनय आसुर पेखकै, नृप गदा कर गहि लेखकै ।।८६८
समसुप्त फूकर सेस की, मनु त्रतीय आँख महेस की ।
ज्वल-सक्ति माँनहु ज्वालका, कल जीह देवी कालका ।।८६९
कऊमार-सक्ति करालकै, कर दंड माँनहु कालकै ।
मारी सु नृपत मरोर सौं, सिर कालकेत स जोर सौं ।।९००
धर गिरयौ प्राँनन धोयकै, खल आस जीय की खोयकै ।
जय भई हैहय जंग की, रन वीरता रस-रंग की ।।९०१
सुन जसोमतकँवरी सखी, महपती ह्वै कै सनमुखी ।
अरू जाय ढ़िग येकावली, मन-मोद सौं दोऊ हिल-मिली ।।९०२
दीनीं बधाई देखकै, सुत लक्षमी सविसेखकै ।
मृत कालकेत मदंध कौ, सब रीत उद्यम संध कौ ।।९०३
कँवरी सु कीन कहाव कौं, भर मोद सखी के भाव कौं ।
येकावली उमगायकैं, लीय जसोमति उर लायकैं ।।९०४
पूछी सु राजन प्रीत कौं, जिह कही संजुत जीत कौं ।
उत राजमंत्री[1] आयकै, मिल भूप भेट मनायकैं ।।९०५
अरजी सु कीनीं औरहू, निरवाह नीत निहोरहू ।
अंन्याय अघ अतताय कौं, रन हन्यौ आसुरराय कौं ।।९०६

---

१ कालकेत का मंत्री ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दै अभय राखहु दास कौं, विनती सु हमरे बास कौं।
बोल्यौ सु नृपत महाबली, इहाँ आँन दौ येकावली ।।६०७
जब चले मंत्री-जातहू, उर त्याग भय उतपातहू।
गये सबै कारागार कौं, लै पालखी रथ लार कौं ।।६०८
बैठार करकै बीनती, जुत राजकँवरी जसुमती।
सौंपी सु नरपत सुंदरी, कर कमल नैंन क्रसोदरी ।।६०९
लै चल्यौ ताकौं लार कौं, जुत मोद रम्य जुहार कौं।
कर संग उभय कुमारका, लै संग लसकर लारका ।।६१०
पुर रम्य आयौ महपती, कर अमर जगमैं कीरती।
पहुँचाय दिय कँवरी प्रतै, जसुमतो पुन आली जुतै ।।६११
नृप लखे राँनी नैंन सौं, बतराय वछ्छल[1]-वैन सौं।
पूछी सु राजन प्यार सौं, कर बोध उभय कुमार सौं ।।६१२
जब जसुमती सब जीय की, बिपदा प्रकासी बीय की।
जिम भयौ हैहय जावनौ, अरू फेर जय लै आवनौ ।।६१३
सुन राज हैहय साथ कौं, बिनती करी हित बात कौं।
सनमाँन करकै सर्भरा, निर्वाह गौरव निर्भरा ।।६१४
पुन कही राजा प्रेम सौं, खितपती हैहय खेम सौं।
इह आपके अवसाँन मैं, दुहिता सु दैहै दाँन मैं ।।६१५
कीजै सु अंगीकारना, ध्रू मेर साखी धारना।
नय बात रंम्य नरेस की, भर प्रेम मंगल भेस की ।।६१६
विधं वेद कीनौं ब्याह कौं, उर लाय अमित उछाह कौं।
परनीज हरन-पसाव[2] लै, भज राजराँनी भाव लै ।।६१७
वहु करत भोग-विलास कौं, बस नृपत अपने बास कौं।
सुख लहत दंपत साथहू, निज नेह रत रतिनाथहू ।।६१८

दोहा

केऊ दिन बीते सुख करत, भोग-जोग वहु भाय।
सुत भौ क्रमवीरज सुभग, संतति वृद्ध सवाय ।।६१९

---

१ वत्सल, स्नेहयुक्त। २ दहेज।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कार्तबीर्ज ताकौ कंवर, भयौ प्रतापी भूप।
जग्य दाँन कीय विवध जिह, आतिथ पुज्य अनूप ।।६२०
कही कथा हैहयन-कुल, सुनकै भये सुनाथ।
विस्नु रमापत हय बने, बरनन करीयै बात ।।६२१

छंद त्रोटक

सुनकै जनमेजय प्रस्न सही, करकै निरनै सुनि व्यास कही।
भ्रम मेटन कौं कथ भाखत है, उर नाँहि कछू अभिलाखत है ।।६२२
विध के सुत नारद सुद्ध-व्रती, मधुरी गति बीन लोये महती[1]।
सोइ आय गये सुभ आस्रम पै, हित लाय कृपा करकै हम पै ।।६२३
तट ब्रह्मसुता ठहरे तहवाँ, इक प्रस्न करचौ लिखकै अहवाँ।
मुनिराज असार संसार मँही, कुछु देखत हैं सुख नाँहि कँही ।।६२४
हमरी कथ भाखत हैं हमतौ, तुमरी गत जाँनत हैं तुमतौ।
सुत मात जने जब सत्यवती, गवनी सोई छोरकै गूढ-गती ।।६२५
जमी दीप सौं ऊठ चले जबही, कहुँ बैठ रहे गवने कवही।
तट ब्रह्मसुता फिरकै तितनै, अभलाख भई सुत की इतनै ।।६२६
त्रपुरार पै जाय करचौ तप कौं, वहु-भाँत कलेस दये वपु कौं।
सुकदेव से पुत्र लहे सुकवी, निह-जोन[2] भये इह बात नवी ।।६२७
जजु आदिक वेद पढाय जँही, गरूकर्म-विसारद होय गृही।
परलोक गयौ मुँहि छाँड़ पिता, वहु-पुत्र के सोक बढ़ी विपता ।।६२८
तरहेटीय त्याग सुमेर तबै, सुभ आस्रम संमृध मेल सबै।
कुरू जांगल-देस मैं आय कढ़े, मिलनै कँह मात सनेह मढे ।।६२९
सुन सांतन लैगये सत्यवती, विधवा सोई ह्वै गई सुद्धव्रती।
मम भ्रात चित्रांगद नाथ मही, रचना रजधाँनीय हाथ रही ।।६३०
तिह थोरेही काल मैं देह–तजी, उर मात के सोक बला उपजी।
बयठार विचत्रहवीरज कौं, धर राज-सिंघासन धीरज कौं ।।६३१
दुहिता सुत कासीयराज दई, जिह भीसम लायेऊ जुद्ध जई।
परनाय दई लघु भ्रात प्रतै, उर मात भयौ सुख आय इतै ।।६३२

---

१ नारद की वीणा का नाम। २ बिना योनि के।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

खय[1] रोगहु सौं जिह आयु खुटी, पुन वेदना मात हीयै प्रगटी ।
बुलवाय करचौ जब बोधन कौं, अरू भेज दये अवरोधन कौं ।।६३३
लघु भ्रात की संग करचौ ललना, मति भीसम मात हमैं मलना ।
सुत अंध भयौ धृतराष्ट सही, नृप राज के कारज जोग नही ।।६३४
जनम्यौं फिर दूसर पुत्र जितै, सुत पंडहु पंडुर रंग सु तै ।
सुत तीसर भौ सोई दासीय सौं, रमनी रत मैं सुखरासीय सौं ।।६३५
विदुरा तिह नाँम धरचौ वपु कौं, प्रगट्यौ अवतार सु पित्रप कौ ।
इन कौं लखकै सुख भौ उर मैं, पहुँचे वन कौं हथनापुर मैं ।।६३६
दुख भूल गये सुखदेवहि[2] कौ, सिसु तीनहु की लहि सेवहि कौ ।
झुकजात मती झकझोरन-सी, दहु ओर हिंडोरन डोरन-सी ।।६३७
पुन भीसम पंडु दई नृपता, विभवा सुत देख मिटी बिपता ।
तिह पंडुव व्याहीय दोय त्रीया, सुभ कुंतीय माद्रीयहू सुकीया ।।६३८
दुज पंडु-नृपाल कौं स्राप दयौ, ललना संग लै बनवास लयौ ।
सुख मैं दुख भौ इतनी सुनकैं, गहि मौंन कौं ग्याँन रहे गुनकैं ।।६३९
वनमैं नृप-पंडुव वास बस्यौ, गन आप अपुत्र प्रगाढ़ ग्रस्यौ ।
कहि कूंतीय कौं सुत कारन कौं, सुख संतति-काज सुधारन कौं ।।६४०
पति सासन कूंतीय पाय प्रीया, करकै ध्रमराज की मंत्र क्रिया ।
जग-मित्र जुधष्टर पूत जने, हीय पंडुव के जिह सोक हने ।।६४१
बुलवाय कै वायु विकोदर कौं, निज अंगज इंद्र जन्यौ नर कौं ।
जिह माद्रीय मंत्र दयौ जमकैं, सुत दोय भये इकही समकैं ।।६४२
नकुलौ सहदेव जुतै निरनैं, कुल पंडुअ, वृद्ध भये करनैं ।
पुन पंडुव स्राप भयौ प्रथमैं, सोइ भूल गयौ उर-अंतस मैं ।।६४३
मिल माद्रीय-संग इकंत मँही, तन-त्याग चल्यौ नृप वार तँही ।
सुत माद्रीय कुंतीय सौंप सती, पुन संग जरी सोई पंडु पती ।।६४४
ठहरी तिह कुंतीय ठाहर कौं, बुलवाय लये मुनी बाहर कौं ।
कर मंत्र कह्यौ तिन कुंतीय कौं, समुझाय-बुझाय सपूतिय कौं ।।६४५
पतिकै बिन साथ सहायपनै, वनवास कै बीच न वास बनै ।
इह सोच सलाह मुनी उर मैं, पहुँचाय दई हथनापुर मैं ।।६४६

१ क्षय । २ शुकदेव ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तीय पांडुअ की जुत पाँच तनै, मति भीसम राखेऊ सुद्ध मनै ।
धृतराष्ट नहीं कछु द्वेष धरचौ, सिसु जाँनकै पालन काज सरचो ।।६४७
इतनैं फिर द्रोन-अचारीय पै, धनुवेद पढ़ावन धारीय पै ।
दरजोधन आदक सौंप दहे[1], सुत पंडुव के तिह संग सहे ।।६४८
पुन कुँतीय-पुत्र जन्यौ पहिलैं, मझ पेटीय मैं अधरथ्थ मिलै ।
धुर नाँम करंन्नहु जाहि धरचौ, कपटी दुरजोधन मित्र करचौ ।।६४६
खुरली मिल खेलत ख्यालन मैं, वढ़ बैर गयौ वय बालन मैं ।
धृतराष्ट लख्यौ मति धारन मैं, अपने सुत द्वेखऊ धारन मैं ।।६५०
गृह-लाख बनायकै गूढ़-गती, सुत पंच बसायेऊ कुंति-सती ।
सुत दासीय पित्रब दीन सला, वच भाग गये बिच आग बला ।।६५१
जर आग गये इह जाँनीय मैं, महाँ सोक हीयै उनमाँनीय मैं ।
पहुँचे नृप द्रोपद के पुर मैं, समले[2] बहु भूप स्वयंबर मैं ।।६५२
नर मछ्छ के लछ्छ कौं वेधन की, नृप पौरूख माँन निखेधन की ।
कर साहस द्रोपद की कँवरी, वरबीर धनंजय ताहि वरी ।।६५३
तिह पाँचहु भ्रात समाँन तीया, पुन मात के सासन कीन प्रीया ।
सुत पंडु के जीवत स्त्रौंन सुने, हित पायकै संसय सोक हने ।।६५४
रहि आपुस सौं नहि चित्त[3] रसे, वट लेयकै इंद्रप्रहस्थ वसे ।
उपताप[4] अजीरन पाय इतै, ज्वल जिस्नु जुहारीय क्रस्न जुतै ।।६५५
मघवा वन-खांडव जार मतै, सुत पाँडुअ अर्जुन क्रस्न सुतै ।
भुय-वीच लख्यौ परताप भुजा, रुहिताच[5] निवारीय जाहि रुजा ।।६५६
कर राज निकंटक जग्य करचौ, अपने पितु पंडऊ कौं उधरचौ ।
दरवार सभा मयदाँनव की, रजवार विभौ जस केरव की ।।६५७
लखकै दुरजोधन आग लगी, ठिक ठौर तजी जिह बुद्धि ठगी ।
अभिमंत्र करे पितु अंधव कौं, बुलवाय जुधष्टर बंधव कौं ।।६५८
दुरजोधन बोलकै येक दुआ, जिह राज लयौ रच खेल जुआ ।
वन कौं अनुवछ्छर बारह कौं, ललना द्रुपदी लीय लारह सौं ।।६५६
कर गौंन गये तत[6] भ्रात कही, सुत पंडुव के इह भाँत सही ।
दुख फेर भयौ इह देखत मैं, वतीयाँ सुख नाँहि विसेकत मैं ।।६६०

१ दिये । २ सम्मिलित हुए । ३ मू०प्र० चित । ४ रोग । ५ अग्नि । ६ पाँच ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दुख के सुख सागर डूबतहू, चित सौं विष इमृत चूंबतहू।
भ्रम के वस ह्वै क्रम-भूलन मैं, भ्रम आद मिलावत धूलन मैं ।।६६१
हम कौन हैं कौन पिता हमरौ, पुन मात है कौन पिचंड[1] परौ।
सुत वंधव कौन सुजातीय मैं, रुज घेर रह्यो दिन-रातीय मैं ।।६६२
जड़ता उर सौं नहीं जावत है, दिल भौंर की नाव डुलावत है।
थिर होत न पावत थाहन कौं, रुख देख सुभासुभ राहन कौं ।।६६३
चल जाँऊ कहाँ मन चंचल तै, दिखरात न ठौर प्रपंचन तै।
ज्वर जाय ज्यूंही हमरे जीय की, हित सोच विचार कहौ हीय की ।।६६४

दोहा

वेदव्यास के सुन वचन, नारद कह्यौ निहार।
बहुबिध माया बलवती, पावत कोऊ न पार ।।६६५
जिह मोहे करतार जग, माया विस्नु महेस।
भ्रमत रहत सोइ भूल-भ्रम, सनकादिकहु सुरेस ।।६६६
हम-बीती अब कहत हम, सुनीयै परम सयाँन।
भरम भूल हित भारजा, आतुर भये अजाँन ।।६६७

छंद त्रोटक

सुनीयै कथ अंगज सत्यवती, पहलैं कछु बीत गई प्रवृती।
मुनि आय जबै परबंत[2] मिले, हम देखन भारथ खंड हले ।।६६८
तजकै सुरलोक कौं भूतल मैं, मृतलोक में आय गये पल मैं।
पुन आस्त्रव किन्नेऊ आपुस मैं, बतरायकै चित्त करे बस मैं ।।६६९
उपजै अभलाख सु इच्छ छन मैं, छिपवाय न ताहि तत्छिन मैं।
मति सौं मन सौं कर येक मतौ, छित पै बिचरै कर नाम छतौ ।।६७०
तज व्याज चले जितहू-तितहू, मुनि-आस्रम देखत पै मतिहू।
गत ग्रीषम चातुरमास गह्यौ, नृप संजय कौ पुर जाय लह्यौ ।।६७१
सनमाँन करचौ नृप जाँन समैं, गन आतिथ राख लये गृह मैं।
दमयंतीय भूपति की दुहिता, पन-पूजन राखीय ताहि पिता ।।६७२

---

१ ज्वर। २ पर्वत मुनि।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वँह सेव करै निस-वासर कौं, मति येकत जांन मुनेसुर कौं ।
करकै जप वेद कौ पाठ करें, ध्रुव-आसन ईस कौ ध्यांन धरें ।।६७३
दिन येक भई हम येहु दसा, हीय देख घनाघन कौ हुलसा ।
तन कार सँवार कै तंतन सौं, महती कर-बीन लई मन सौं ।।६७४
सुर साधत गायन साँम सरचौ, भल कर्न रसायन प्रेम भरचौ ।
सुन राजकँवारीय स्रौंनन सौं, पती आय गई निज प्राँनन सौं ।।६७५
करनै सोइ प्रीत लगी करुना, पुन सेज सँवारत पाथरना ।
हम मिष्ट-अहार पुरी हलुवा, पुन पर्बत पोलीय तेल-पुवा ।।६७६
हम दूध-दही हरखायन कौं, रिख पर्बत पाय रसायन कौं ।
रिख पर्बत देख लई रचना, चख बंक विलोकन औ वचना ।।६७७
जब पूछीय मोपँह जाँन जँही, गत राजकँवारीय कौन गही ।
मन सौं तुम आदर माँनत है, जीय सौं हम अप्रीय जाँनत है ।।६७८
कहीयै छल छोर कै कारन कौं, पन सत्य करचौ सोइ पारंन कौं ।
मिल नारद जाय इंकत मही, कथ राजकँवारीय तथ्य कही ।।६७६
पति चाहत है हम प्राँनप्रीया, हिलकै-मिलकै हरखात हीया ।
तुम कौन प्रयोजन बूझत हौ, अहंकार विकार अरूझत हौ ।।६८०
वँह चाहत है हमहूँ वन कौं, करनी निज दोख कहौ कुन कौं ।
करनी-फल भोगहु आप कीया, हित औरन सौं सितराय हीया ।।६८१
पुन पर्बत बोलेऊ सुद्धमती, छिपवाय कै वात न कीन छती ।
विन देव उठै नहीं ब्याह बनै, तुम बीन बजावहु तंत तनै ।।६८२
इतनै फल लेहु अराधन कौ, सुख राजकँवारीय साधन कौ ।
पन भूल गये तिह पातक सौं, कपि कौ मुख पावहु कातिक सौं ।।६८३
भगनी-सुत पर्बत भानज पै, हित पाय क्षमा न करी हम पै ।
हमहू तमकौ गुन आय हीयें, कुनसाय उठे बहु रीस कीयै ।।६८४
अनजाँनेऊ थोरेई औगन पै, मुंह मातुल स्राप दयौ मुन पं ।
भ्रमते रहहू तुम भूतल मैं, दिवलोक की आस तजौ दिल मैं ।।६८५
मुन पर्बत ऊठ चले मिलकै, हम रूठ रहे न गये हलकै ।
मुख-आक्र तहोय बलीमुख सी(को),सबही विध आस तजी सुख की ।।६८६
तऊ राजकुमार न प्रीत तजी, रस बीन सु तै स्वर भीन रजी ।
मुहि सेव करै हिलकै-मिलकै, चित ताहि गयौ न कहूँ चलकै ।।६८७

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

नृप संजय जाँन हीयैं-निरनौ, कँवरी उदवाह[1] रच्यौ करनौ।
बुलवायकें मंत्रीय विप्रन कौं, जन और सलाह कही जिनकौं ॥९८८
कोऊ छत्रीय राजकवार कितै, पुतरी वर हेरहु ब्याह-प्रतै।
करनीय कलाजुत सूर-कुली, बय जोर किसोर सदक्ष बली ॥९८९
गन मंत्रिन बात सुनी गरजी, अपनी मति माँन करी अरजी।
हम हेर करैं इह हायन मैं, केऊ राजकँवार कहायन मैं ॥९९०
दत देवहुगे सोऊ दायज मैं, जिनकौं करीय सब येकज मैं।
मिल रांजन मंत्रिन कीन मतौ, करनै सोइ उद्यम लाय कितौ ॥९९१
सुन राजकँवारीय बात सही, कर जोर पिता सन बात कही।
रुख पायकै आये है देव रिखी, अपनी मति किन्नीय प्रीत अखी ॥९९२
परनाय क्रितारथ होउ पिता, दमयंतीय दाँन करौ दुहिता।
कँवरी सुन बात सु मात कही, रिख बंदर के मुख रीझ रही ॥९९३
विपरीत भई मति कोन विधी, पहिचाँन परी न अधी-परधी।
कहुँ जाय लता चढ कीकरकै, पिछतावहु भिक्षुक पी[2] करकै॥९९४
वर पाँनन नागर-वेलीय कौं, कोऊ ऊँट चरावत केलीय कौं।
पहिचाँन परी हमकौं पुतरी, बकवाद करै तितरी-वितरी ॥९९५
निज पीउ करै मुनि नारद कौं, हित नाँहिन जाँनत हारद कौं।
चिब जूटजटा लटि चेपन की, वपु-उपर भस्मि विलेपन की ॥९९६
द्रग देख दसा घ्रन दायक सी, वरकौं करनै कहा प्रीत बसी।
महती गहि जावत मंगन कौं, अतथी वन आँगन अंगन कौं ॥९९७
तिंह भिक्षुक की बनकै तरुनी, फिरहै घर ही घर मैं फिरनी।
हँसहैं हमकौं जग देख हीया, पतनी बन चाहत ताहि प्रीया ॥९९८
दमयंतीय मात लखी दुचती, रुख तोरकै बात करी रुचती।
गिरजा दुहिता पुन हेमगिरी, भरता अरधंगीय प्रेमभरी ॥९९९
निहकाँम सदाँ सिव-सेवन मैं, भर मोद रही स्वर भेवन मैं।
चितते पति और न चितत है, गुन के गुन सौं मन ग्रंथत है ॥१०००
स्वर-ग्याँन मुनिंद्र महेस्वर से, रुच राग विरागीय स्रौंन रसे।
अभिलाख न भोग चहूँ उर मैं, सुख जोग लहूँ महती-स्वर मैं ॥१००१

---

१ विवाह। २ पति।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

रति रूप न रंग न चित्त रल्यौ, मन ताँन-तरंगन जाय मिल्यौ ।
जीय नाँहिन चाहत होन जुदा, मुनिराज पती मम येहु मुदा ।।१००२
सुर सप्त सौं साँम[1] सुनावत है, गहरी धुन वेद कौं गावत है ।
सम नारद स्रौंनन नाँहि सुन्यौ, गुनवाँन पनै हम स्रेष्ट गन्यौ ।।१००३
हयँ ग्राँनन किन्नर होवत है, गुन रागन मैं धुन गोवत है ।
सोई पावत ग्रादर देव–सभा, परवीनन मैं जिह नाँम प्रभा ।।१००४
मुनि सुंदर ग्राँनन सुद्धमती, कपि-ग्राकृत होय गये सुकृति ।
जग स्रेष्ट सबै विग्र जाँनत है, परवीन सदा प्रतिभाँनत है ।।१००५
भरता नहीं चाहत भूमपती, मद मच्छ्छर गर्वित मंदमती ।
स्वर लाग कुरंग भुजंग सुनें, जिह राग नहीं ग्रनुराग जिनें ।।१००६
विध विस्नु-महेस बखाँनत है, जिह नारद कौ जग जाँनत है ।
हम स्वाँम के गायन चित्त हरचौ, क्रतुहस्त चहूँ भरतार करचौ ।।१००७
सुत जाँन विरंच रिखीस्वर कौ, तज संसय के ग्रभिग्रंतर कौ ।
परनाय दई मिल मात-पिता, दमयंतीय नाँम जही दुहिता ।।१००८
जव बैठ रहे हमहू जमकै, रमनी उर–प्रीत रहे रमकै ।
पुन सेवन ग्रावत काज प्रीया, हम ग्रानन सौं सकुचात हीया ।।१००९
तऊ ग्रानँद माँनत मो तरुनी, हित सौं मति सौं चित की हरनी ।
कीय काल वितीतक केतकहू, सुसतायकै स्त्रीय सुमेतकहू ।।१०१०
मुनि पर्बत भूम रहे भ्रमते, रुच तीरथ सौं रमते-रमते ।
पुन ग्रायेऊ केतुक पेखन कौं, द्रग राजकँवारीय देखन कौं ।।१०११
रुच राजकँवारीय प्रीत रुखो, बहु सेव करै न रहै बिलखी ।
ग्रत माँन करयौ उर ग्रादर सौं, चमरी मृघ तोखेऊ चादर सौ ।।१०१२
पकवाँन खवायकै मालपुवा, लपसी पुरीया हलुग्रा लडुग्रा ।
मिलवाय विलेपीय मेवन की, तजबीज करी बहु तेवन[2] की ।।१०१३
मधु-धूलीय पूलीय मैं मिलवा, घृत संजुत तोय विना घुलवा ।
गन पाक रसायन के गुटका, बली मौठ बलाट[3]हु के बटका[4] ।।१०१४
सब रीत प्रसादन साधन की, ग्रत स्वादन ग्राद ग्रराधन की ।
पति भाँनज साँ न पिछाँन पखा, रिखी पर्बत कौ मिझनाँन रखा ।।१०१५

१ सामबेद का गायन । २ शाक ग्रादि । ३ मूंग । ४ बड़े ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

रिख पर्वतहू सुप्रसंन्न रहे, कथ मातुल हेत पिछाँन कहे।
अनजाँन दयौ हम स्राप अहो, वसुधातल तीरथ जात वहौ ।।१०१६
हमरौ पुन तोहि दयौ हित सौं, मुख सुंदर होवहु या मति सौं।
रिख की सुख रूप लखी रुख सौं, मुद पायकै बोल उठे मुख सौं ।।१०१७
सुरलोक-विहार सौं हाउ सुखी, रचना वरदाँन सौं ब्रह्मरिखी।
मिल आपु रमै दोऊ स्राप मिट्यौ, पतनी अहलाद ह्रिदै प्रगट्यौ ।।१०१८
द्रुत जाय बधाइय मात दई, करतूत मुनी परवत्त कही।
रचना कहि राँनीय राजन कौं, सुभचिंतक मंत्र समाजन कौं ।।१०१९
सब देखन आयेऊ ताहि समैं, अत आनँद पाय रहे उर मैं।
मुनि पर्वत भेट करी मिलकै, भर मोतिन-थार घने झलकै ।।१०२०
दुहिता पति जाँन दहेज दयौ, ललचाय तहाँ हम जाहि लयौ।
इह पूरब वीतीय बात इती, तुम सौं हम भासन कीन तिती ।।१०२१

दोहा

माया-वस भूले भ्रमत, सुर मुनी परम सयाँन।
पार न पायौ[1] पायहै, अहमत पाय अयाँन ।।१०२२
गर्वत ह्वै त्रय-गुनन सौं, मिथ्या पावत मोह।
सुखी न कोऊ समुझीयै, तत्व प्रकासत तोहि ।।१०२३

छंद पद्धरी

अब कहत कथा इह दुतीय और, जिह सुनीयै मुनिवर स्रवन जोर।
वयकूंठ गये इक दिन विचार, माहाराज दरस कारन मुरार ।।१०२४
स्वर-सप्त सहित धुन करत साँम, गह बीन मूर्छना ताल ग्राँम।
कमला जुत बैठे हरी क्रपाल, वर कंज नयन बाहू विसाल ।।१०२५
जब करयौ प्रस्न श्रीविस्नु जाँन, हम आवन की पहिचाँन हाँन।
दुर गई भवन पट ढाँक देह, इंदरा करयौ कहा छंद येह ।।१०२६
दूसर नायक के नहीं दूत, धारै नहीं छल-बल काँम धूत।
माया जित इंद्री जीत मोह, करकै तप जीते काँम कोह ।।१०२७

---

१ मू० प्र० पयौ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

विचरंत रहत त्रहुलोक-बीच, नर-नार विकार न ऊँच-नीच।
हम ग्रहंकार के कहे हाल, श्रीविस्नु करचौ ऐसौ सवाल ॥१०२८
जे वेता[1] मुनिजन सांख्य जोग, पुन ग्रासन ग्रादक कीय प्रीयोग।
पवमाँन जीत थिर करत पिंड, ग्रपनै सम जाँनत ब्रह्मइंड ॥१०२९
ब्रह्माद सिवादिक हम विसेस, ऐसौ न करै ग्रनुचित उदेस।
माया ग्रजेय जाँनहु मुनिंद, जेता तिह नाँहिन जती जिंद। १०३०
जब कह्यौ विस्नु सौं हाथ जौर, ग्ररजी मम सुनीयें नाथ ग्रौर।
थित माया जाकौ कवन थाँन, इह देस रहै किधु देस ग्राँन ॥१०३१
रचना जिह देखन चहत रूप, समुझाय कहहु जोती-स्वरूप।
जब कह्यौ हरी तुम चहत जाँन, ग्रह[2] संग चलहु चढ़ गरुड़-याँन ॥१०३२
ऐसै कहि कीनौं गरुड़ याद, लै संग चले हम पीठ लाद।
वन पर्बत देखत व्योम वाट, घर पत्तन ग्रादक नदी-घाट ॥१०३३
कढ़ ग्राये प्रांतर काँनकुब्ज, इक देख्यौ सरवर सहित ग्रब्ज।
निर्मल ताही मैं सु भर नीर, कारंड हंस बहु ध्वनत कीर ॥१०३४
उतरे हमहू उपकंठ[3] ग्राय, सुस्ताय उभय बैठे सुभाय।
श्रीविस्नु कह्यौ हमकौं सुजाँन, निर्मल जल करीयै रिखी न्हाँन ॥१०३५
विस्नू सुन सासन जिही वेर, हीय-हूँस वढी जल विमल देख।
मृघचर्म वीन कौं तही मेल, करनै हम लागे सवन केल ॥१०३६
निकसे डुबकी लै होय नार, भर रहे भुजंतर सतन[4] भार।
लज्जत ह्वै कीने ग्रद्ध[5] नैन, वपु चिन्न देख नहीं कढ़त वैन ॥१०३७
मृघचर्म वीन कौं लै मुरार, चढ गरुड़-पीठ चल भुजा च्यार।
ग्राभूखन तट पै देख ग्रौर, ठहरे मृघचर्मा तिही ठौर ॥१०३८
ग्राकल्प झीन ग्रंबर ग्रनूप, रुचता कर पहनत वढ्यौ रूप।
लख ग्रंग-ग्रंग सोभा लुभाय, भूले महती मृघचर्म भाय ॥१०३०
माया-बल वाढचौ इधक मोह, वँह ठौर कछू कीनौ उपोह।
पति-इछया उपजी सहित प्यार, विध-विध उर वाढचौ हित विहार ॥१०४०
नृप लख्यौ ताल ध्वज तहाँ नैन, मृघीया तट खेलत मनहु मैन।
मुख चंद विलोकी तीया मोहि, हित वात कही ग्रासक्त होय ॥१०४१

---

१ वेत्ता। २ हमारे। ३ तीर। ४ स्थन=कुच। ५ नीचे।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वचूं भृमत अकेली कोन काँम, निज मात बतावहु पिता नाँम ।
सुन बात कही मै हित सहेत, नृप मात-पिता नाँहिन निकेत ।।१०४२
तट जाँनत अथवा इही ताल, निरनौ न मोहि दूसर नृपाल ।
निरबाह करहु उर सहित नेह, अरदास हमारी सुनहु येह ।।१०४३
भृत गनन कह्यौ सू सुनत भूप, इक सिवका लाये अत अनूप ।
बैठार लई तब पकर बाह, विध वेद विचारै करचौ व्याह ।।१०४४
उर होय अनंदत रही अंत, सेवा केऊ दासी अनुसरंत ।
सुख पाय करत नित सयन संग, बस होय नृपत सोइ रचत व्यंग ।।१०४५
बानी सुखदाँनी रचत वाच, कर हाव-भाव लोचन कटाच[1] ।
उदवर्तन कर-कर अंग-अंग, मंजन चख अंजन भरत मंग ।।१०४६
रच चर्चक कुंकम भाल रेख, परसाधन विर्चत पेख-पेख ।
बीरी लै मुख मैं करत बात, दोऊ अधुरन पै लाली दिखात ।।१०४७
रुख देख मधुर हाँसी रचंत, दाड़मी कुली दिखराय दंत ।
लालित्य चरन जावक[2] लगाय, महँदी रच बुंदी कर मलाय ।।१०४८
करपूर घोर मय कासमीर, श्रीखंड विलेपन सुच सरीर ।
फूलेल तेल सोगंध फेर, वपु अगर चढावत बेर-बेर ।।१०४९
मांगल्य इक्षकर्दम मिलाय, गुरीया पुन रेसम गुन गुहाय ।
कमनीय सुमन की माल कंठ, गैंदा गुलाब बिच गंठ-गंठ ।।१०५०
चलनी कट झीने ओठ चीर, भर कंचुलका कुच कसन भीर ।
आभर्न कर्नभर्नहु अनूप, सिभ नाक नथुनीयाँ-जुत स्वरूप ।।१०५१
उर-हार मुक्ति मनी मय अरोह, स्रंखला कंठभूषा सु सोह ।
बाजू कर-कंकन पहरवीय, उर्मिका सु धारै अंगुलीय ।।१०५२
किंकनी बाँध कट कुनतकार, प्रतिधुनित सुनत पीय बढत प्यार ।
झंकार नूपरन होत झीन, बाजत मधुरी गत मनहु वींन ।।१०५३
ठुमकै पग मेलत ठौर-ठौर, भरतार रिझावत साँझ-भौर ।
कौतूहल कर-कर रचत केल, बन कोक कला स्रंगार बेल ।।१०५४
भर प्रेम प्रकासत भोग भाय, ललचाय लोल लोचन लगाय ।
सुख विलसत निस-दिन पीव संग, येकाकी माँनहु रति अनंग ।।१०५५

---

१ कटाक्ष । २ महावर ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पुन होत अकारन कोऊ प्रभाव, सविसेख सुनहु गर्भित सुभाव ।
अरू पीय लखत कहु तीय और, माँननी होत आँनन मरोर ।।१०५६
कोऊ कारन उपजत हृदय-कोप, गुन माधुर जुत तऊ करत गोप ।
अमरख[1] में राखत गुन उदार, अवगाह तीय मति अलंकार ।।१०५७
खत देत नखःछत अधुर खंड, पीरा मैं सात्वंक गहत पिंड ।
जुत राजकाज नृप दूर जात, विरहनी दसा गहि बिलबिलात ।।१०५८
बोलत कहु सौतन पीय बिसास, अनखावत हीय सौं भर उसास ।
बाढत तऊ नित-नित चित विनोद, मद पट्टपराँनी पाय मोद ।।१०५९
बागन विच जावत हित विहार, रागन अनुरागन रीझ वार ।
प्याला भर हाला सहित पीव, संधाँन मद्य सेवत सदीव ।।१०६०
जाँने नहीं वासुर निसा जात, विध वेद–वाँन की भूल बात ।
अनुवछ्छर द्वादस गये येम, पीव के साथ ह्वै विवस पेम ।।१०६१
पुन भई गुर्बनी काल पाय, ऊपज्यौ फेरकै प्रसव आय ।
संजुक्त वेद विध संसकार, कीने विचार मंगल कुमार ।।१०६२
दीय नाँम बीरवर्मा सुदेह, निरखत सिसु बाढत हृदय नेह ।
पुन भयौ सु धन्वा दुतीय पूत, अत रूप–रंग गुन मय अभूत ।।१०६३
सुत जने बीस इन आद सर्ब, गृह–गोत राज–सुख भयौ गर्ब ।
विध वेद करे तिनके विवाह, आई बधूटीयें लहि उछाह ।।१०६४
पुन होन लगे तिनके पऊत्र, अंगन[2] मैं डोलत सब इकत्र ।
किलकत मिल-मिलकै करत केल, खिल-खिलकै विरचत विवध खेल ।।१०६५
घुटनीयें चलत केऊ ललत घूम, भर पेम सुहावन लगत भूम ।
सुख माँनत मन बाढत सनेह, ललकत लोचन सौं लाभ लेह ।।१०६६
ललचाय बलइया जाहि लेत, दीठ के दिठोना भाल देत ।
माँनत मैं मन मैं महामोद, गहि हाथ खिलावत बीच गोद ।।१०६७
सुख मैं कबहूँ दुख होत संध, सीतला आध–व्याधी समंध ।
अतिसार छाँदनी दूख अंख, खाँसी ज्वर वासी होत खंख ।।१०६८
कृमी काटत केते करत कूक, रात मैं सुनत मैं जागरूक ।
जब जाँन बधूटी मात जास, पुन करत वचन पौरुख प्रकास ।।१०६९

---

१ अमर्ष । २ आँगन ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

रूखी रुख चूकी करत रार, वह जात मनावन बार-बार।
संकल्प विकल्प न चित्त संग, चढ जात हिंडोरै डोर चंग ।।१०७०
स्त्रीय-भाव भई हीय बीच संध, पुरषत्व भाव छूटचौ प्रबंध।
गम वेद स्रुती अरु ब्रह्म-ग्याँन, धारना धेय कौ हटचौ ध्याँन ।।१०७१
नही जाँनत मैं नारद–मुनीस, उनमाँनत माया नहिन ईस।
कुल जाँन कृतारथ गेह-काज, राँनी मैं पट्टप अटल–राज ।।१०७२
इतनै भय ऊठ्यौ अकसमात, पुर आय लगी सत्रुन प्रपात।
दारुन किह कारन रच्यौ द्रोह, रन होन लग्यौ घोरन–अरोह ।।१०७३
रथ हाथी रोकी आय राह, तरकन तेगन की मँडी त्राह।
कंन्नौज नगर पै अत करूर, पर सैन बढ्यौ आतंख पूर ।।१०७४
पुत्रहू लरे औरै पऊत्र, कीनीं सब सेना जत्र–कत्र।
उत्ररचौ पुन राजा भाग येक, छल-बल सौं कल[1]सौं पाव छेक ।।१०७५
खल छोर चले जब वीर खेत, संघार सैन पुत्रन समेत।
मैं गई रुदन करती मुकाँम, तहाँ मृतक आँख देखे तमाँम ।।१०७६
हा हंत वाँन कह मुक्क हीय, जुग हाथ मलावत जक्क जीय।
कर वृद्ध विप्र कौ वेख काय, श्रीरमाँनाथ आये सहाय ।।१०७७
विसवास दयौ वाचा बसेख, सोक मैं देख व्याकुल असेख।
गहि मौंन रही जब दयौ ग्याँन, सूतका सरहु तीरथ सिनाँन ।।१०७८
पुन देय तिलांजल करहु पार, कुल–पुत्रन कौ कर संसकार।
पुरषत्व तीर्थ लैगये कृपाल, तहाँ निर्मल देख्यौ नीर–ताल ।।१०७९
सूतका करन लागी सिनाँन, जहाँ डुबकी लेत ही परी जाँन।
विध सुत मैं नारद ग्याँनवंत, वपु नार भयौ कैसौ वृतंत ।।१०८०
जल सौं सिर बाहर करत जात, हरि आगे ठाढे च्यार हाथ।
बोले कहि नारद लेहु बीन, मृघचर्म त्याग अंबर मलीन ।।१०८१
हीय विस्मय ह्वैकै लख्यौ हाल, खटविंदु[2] कहा इह करचौ ख्याल।
मोहि लज्जत लख बोले मकुंद, माया के जेता महा मुनिंद ।।१०८२
बस भये जाहि कैसै वरिष्ट, आपनौ भूलकै नाम इष्ट।
जब कह्यौ हरी माया अजेव, भगवंती जाँनत आप भेव ।।१०८३

---

१ युद्ध-कला। २ विष्णु।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

हम अहंकार-बस होनहार, देख्यौ चरित्र माया दुसार।
मन विगत करचौ अहमत मुरार, उपदेस पर्म दीनौ अपार ।।१०८४
हीय दर्प त्याग भौ चर्न हेत, सुख-ग्याँन पाय आर्जव[1] सहेत।
श्री विस्नु करत नारद सराह, राजा पुन आयौ तिहीं राह ।।१०८५
नारी कौं देखी नहीं नैंन, बोल्यौ ताही छिन इही वैन।
तट आय कहाँ गई मोर तीय, जिह बिना न थिरता लहत जीय ।।१०८६
सुत मरे तऊ नहीं करत सोच, पतनी बिन षरगये-ह्रदय पोच।
हथ करी क्रीत मैं ताहि हेत, खल-दल कौं दीनी पीठ खेत ।।१०८७
छत्री ह्वै कातर करचौ चित्त, वैभव लुटाय पुन कोस वित्त।
जूझत जो वैरन बीच जंग, स्वर्ग की वधू तऊ लहत संग ।।१०८८
नीचता लह्यौ पद उभय लोक, सुंदरी बड़ोयौ नीर सोक।
कित गई कमल-नैंनी कुरंग, भरता मोहिं करकै रंग-भंग ।।१०८९
हा ! प्राँन-प्रीया तोहि करत हेर, विधु-वदन दिखावहु वेर-वेर।
लै गयौ पकर कहुँ वरुन-लोक, तिम तथा तिमंगल[2] लई तोक ।।१०९०
ब्रह्मा इह कीनौं कहा विचार, निरदई रचे जुग पुरष-नार।
मृतु येक साथ नहीं लिख्यौ मूढ, राखो नहीं कैंसै राह रूढ ।।१०९१
नारी कौं दीनौ सत्य नेह, दाहत सोइ पतिकै संग देह।
इह नेम करचौ नहीं पुरख आद, पन भूल गये लहिकै प्रमाद ।।१०९२
विलपत इम रहि-रहि वचन विंग, कहि-कहिकै वाँनी अत कुढंग।
हरि देख पुकारत हाय-हाय, उपदेस तालधुज दयौ आय ।।१०९३
सुन राजा मेरी वात स्रौंन, कौन है तीया तिह पती कौंन।
सैंवलनी तट पैं मिलत साथ, ज्यों आय पथक-जन जात-जात ।।१०९४
पुन नाव वैठकै जात पार, विछुरत नहिं लागत नैंक वार।
पंथ कौ जात सोइ फेर पूठ, आपने-आपने देस ऊठ ।।१०९५
येक कौं येक कोऊ करत याद, पुन करै याद सोई प्रमाद।
ताही प्रमाद ग्याँनी तजंत, इह निरनौ आगम-निगम अंत ।।१०९६
संजोग विजोगहु काल-साथ, है रोग-भोग सोऊ कर्म-हाथ।
भोगे तुम नारी-संग भोग, बस ईस भयौ ताही विजोग ।।१०९७

---

१ सरलता। २ मच्छ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

करनौ न सोक ताकौ कदाप, ममता उर त्यागहु हित मिलाप।
तरुनी तुम पाई ताल–तीर, निरनौ कहा पावत बीच नीर ॥१०९८
नहीं मात-पिता कौ याद नाम, गृह नाँहिन जानत कौन ग्रांम।
क्रंदत जिह कारन करत कूक, मग जावहु नारी श्रास मूक ॥१०९९
सुख जो कछु भोगहु रह्यौ सेस, इक नार गई कैसौ अँदेस।
जो भोग न रुच तौ करहु जोग, रिपु जन्म-मरन कौ मिटै रोग ॥११००
ध्रुव नाँहिन सुख-दुख धाम-धूम, घटीजंत्र[1] रचावत सदा घूम।
पुत्र कौं सौंप अथवा पऊत्र, इह राज-त्याग जावहु अनत्र ॥११०१
दुरलभ इहै पाई मनुज देह, निर्बांन ईस पद करहु नेह।
जिभ्या उपस्थ[2] सुख सबही जोंन, कल्पना जाहि की करै कोन ॥११०२
पसु-जोनी मैं होवत पसाव, भाव सौं भजहु अथवा अभाव।
बिन माँनव-तन दुरलभ विचार, सुख अभय-ग्याँन कौ संसकार ॥११०३
धर धीरज करकै समाधाँन, निभ ग्रेह नृपत जावहु निदाँन।
तीय–सोक ह्रद सौं करहु त्याग, सुख माया विरचत साँनुराग ॥१११०
सुन बात जनार्दन नृप सयाँन सो गयौ ग्रेह करके सिनाँन।
पर कर रजधाँनी निभ पऊत्र, ताहि कौं सौंप बन गयौ तत्र ॥११०५
आराधन करकै जोग अंग, साधना ग्याँन निर्बांन संग।
पायकै तत्व भव भयौ पार, सुनीयै हम बीते समाचार ॥११०६
न्रप करचौ गवन जबही निकेत, हँसने हरि लागे पाय हेत।
जब करी अरज मैं हाथ जोर, माया कौ अचरज भयौ मोर ॥११०७
बलवती-वेग जाँन्यौ विसाल, हीय तीयाभाव के लखे हाल।
सुमरन कर संसय होत सोय, मन हरख सोक-वस भयौ मोहि ॥११०८
कीय मंजन सरवर बीच काय, सब पूर्व-ग्याँन विसरे सुभाय।
पति पाय तालध्वज सहित पेम, निभ ब्रह्मग्याँन को भूल नेम ॥११०९
मन चितवत ही तन लिंग मोहि, सुध कैसै भूलौ कहहु सोय।
निज ह्रदय भयौ सोइ ग्याँन-नास, इह संसय सौं करीयै उदास ॥१११०
भोगे अनेक परकार[3] भोग, जाने न कछू जोग रू अजोग।
निरनौ नहीं कीनौ विध निखेद, येक से गने मेध रू अमेध ॥११११

---

१ रहट। २ लिंग। ३ प्रकार।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

हम नारद मुनि हीय विसर हाल, कीने वितीत केऊ सहज काल ।
इह देह पायकै होत याद, बाढत बीते दिन उर विषाद ।।१११२
कारन सोइ कहीयै रमाकंथ, गति होय ह्रदय अग्यान ग्रंथ ।
श्री विस्नु सुने नारद सवाल, दीनौ पुन उत्तर ह्वै दयाल ।।१११३
जग-जीव-जंत आदक जितेक, तन भेद विवध दीसत तितेक ।
जागर्त सुप्न सुखपति[1] जनाय, तुरीयाहु-दसा व्यापत तथाहि ।।१११४
भव-जीवन के इह च्यार भेद, नहीं करत सकत ताकौ निषेद ।
देहांतर प्रापत कहा सँदेह, याही प्रकार गति लखहु येह ।।१११५
जब सोवत निद्रा पाय जीव, सुध भूल जात तन की सदीव ।
जागत मैं सब कछु जाँन जात, इह देह हमारी गेह आथ ।।१११६
कहु सुखपति सौं चित करत काँन, सुप्न मैं होय कछु सावधाँन ।
मृतु पूर्बज देखत गेह माँहि, विवहार वारता हित वसाहि ।।१११७
सुख माँनत तैसे दुखही सथ्थ, मिल बैरी काटत पकर मथ्थ ।
जागत जब जाँनत सोइ जीव, क्रतुकर्मा अथवा भये क्लीव ।।१११८
सुप्न मैं न जानत सुप्न सुद्ध, पुन जागत जब जाँनत प्रबुद्ध ।
भ्रम कौ हीय होवत फेर भाँन, माया इह दुर्गम लेहु माँन ।।१११९
पावत नहीं हमहू सिंभु पार, चित चकृत होत जिह वदन च्यार ।
सुर नर मुनि जासौं हीय ससंक, वंदत निस-वासुर छोर वंक ।।११२०
माया अरू गुन की गति महाँन, जाकौं कोऊ नाँहिन सकत जाँन ।
गुन तीनहु सौं जग करचौ गोय, जुर थावर जंगम जीव जोय ।।११२१
संसार बिना गुन नहिंन साच, विध जुक्ति विचारहु मोर वाच ।
इह आद अंत निरनय अखंड, पिडत[2] जन बरनत धर्म पिंड ।।११२२

दोहा

मुख[3] सतगुन है हमही मँहि, सबही कहत संसार ।
रज तम हू वरत रहै, निभ्र जाँनत निरधार ।।११२३
ब्रहमा रज गुन सौं बने, समुझत सबही सयाँन ।
सत तम वरतत ताहि संग, समय-समय सुप्रमाँन ।।११२४

१ सुसुप्ति । २ पंडित । ३ मुख्य ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सिव-निर्मत तम-गुन सरस, सत रज वरतत संग।
भुवनेस्वर होवहु भलै, इन गुन सौं न असंग ॥११२५
दै नारद कौं ग्यांन द्रढ, विस्नु गये वयकूंठ।
ब्रह्मलोक नारद बहुर, वहाँ तै चालै ऊठ ॥११२६
पिता दरस कर प्रथम ही, बीती कही सु बात।
माया-ठगे मुरार मोहि, तुम किम जीती तात ॥११२७
विध सुनकै नारद वचन, बोले तबही बहोर।
हम ही बचे न सिव हरी, अहि नर सुर मुनि और ॥११२८
उतपत पालन करन अरू, संघरता जग सोय।
काल-कर्म स्वभाव कर, जाँनन कारन जोय ॥११२९
विध के सुन नारद-वचन, विसमय मेट विषाद।
वीनाँ लै कर विचरनै, लागे जुत अहलाद ॥११३०
व्यास कहन लागे बचन, जनमेजय नृप जास।
कुरुकुल जूझ्यौ कलह मैं, तजहु सोक नृप तास ॥११३१
गरभत[1] माया तीन गुन, जीवन कारन जाँन।
सांत घोर मूढहु समुझ, विवध प्रकार विधाँन ॥११३२
संभव सहज सुभाव संग, जगके जेतक जीव।
कैसै न्यारे होय कोऊ, उरझे जाल अतीव ॥११३३
तूल बिना नहीं तंतु कहु, तंतु विना पट तेम।
घट मृतका विन नहिं घटत, अनुभव जाँनहु येम ॥११३४
ब्रहमा विसन महेस वपु, न्यारे गुन सौं नाहि।
प्रीत-जुक्त अप्रीय पुन, जेह विषाद-जुत जाँहि ॥११३५
सतगुन ब्रह्मा पाय सम, सांत चित्त ह्वै सोय।
संजम धार समाध सुख, गहत ह्रदय मति गोय ॥११३६
ग्याँन-जुक्त ह्वै गूढ गति, प्रीत-जुक्त प्राँनीन।
तम गुन मूढ विषाद तिम, होत जथा मति-हीन ॥११३७
रजोगुनी जब होत रुख, घोर रूप चित घ्रीन।
प्राँनिन सौं अप्रीत पख, बरतत हेत विहीन ॥११३८

---

१ उत्पन्न करती है।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

हरी हरहु इम होत है, त्रविध-दसा लहि तंत।
सुर-ग्रासुर कौं गनहु सम, मुनिजन सिद्ध महंत ॥११३९
मनूं चतुर्दस महपती, सूरज-बंसी सोम।
गुनाधीन सबकौं गनहु सोम[1] सुभाव ग्रसोम ॥११४०
विस्व-जीव कहा वापुरे, गिनती मैं वपु गौंन।
चित माया जीतन चहै, हुयौ न कोऊ हौंन ॥११४१
ब्रह्म-परत्व मँहीं वसै, ग्रोत-प्रोत ग्रध ऊद्ध।
रमत सच्चदारूपनी, येक-मेक अविरुद्ध ॥११४२
चेष्टा प्राँनी करत चित, जग पुतरी-जालीन[2]।
गुन[3] ग्रास्रत ज्यूं करत गति, पेखहु सकल प्रवीन ॥११४३
भाव भगत सौं भगवती, जाल मिटावहि जीव।
ग्राराधन कीजै वही, सुध[4]-मति होय सदीव ॥११४४
ग्रनुभव ग्यांन प्रकास उर, मोख करत मँहमाय।
भवसागर भवनेस्वरी, नवका स्यांत्रक न्याय ॥११४५

---

१ सौम्य। २ मकड़ी। ३ तागा, डोरा-गुंण। ४ शुद्ध।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बुधसिंह चारण रचित

देवीचरित

द्वितीय भाग

सप्तम-स्कंध

दोहा

सोनकाद सौं सूतजू, कहत सुनौ दै कॉन।
कुरुपति सौं जिह विध करचौ, वेदव्यास वाख्याँन ॥१
सुनी कथा पारासरीय, सप्टम-ग्रंत सकंध।
कुरुपति पूछी पुन कथा, सूरज सोम समंध ॥२
बंस उभय विख्यात है, ग्राद भये नृप ग्रौंर।
कहहु कथा विस्तार कर, मुनिराजन कुल-मौर ॥३
हेत सहित ग्रघ-हारनी, पावन कथा प्रसिद्ध।
हम सौं मुन नारद कही, सब विध वाचा सिद्ध ॥४

छंद पद्धरी

श्रीविस्नु कमल नाभी सुथाँन, उपजे चतुरानन प्रथम ग्रॉन।
तप करचौ महादुर्गम तिनूह, ग्राराधन माया सहित ऊह ॥५
वरदाँन पाय तातै विरंच, विस्तार सिष्ट कौं काज वंच।
परगट कीय मानसि सात पुत्र, ग्रंगरा मरीची[1] पुलह ग्रत्रि ॥६
पोलस्त[2] वसश्टहु क्रतु पुनीत, जे महारिखी मद मोह जीत।
पुन उपज रोष सौं रुद्र पींन, कोरा सौं नारद प्रगट कीन ॥७
सनकाद च्यार सुत भये साथ, गिनतो मै माँनसी त्तिही गाथ।
दक्षन ग्रंगुष्ट सौं भयौ दक्ष, परजापति पदवी लहि प्रतक्ष ॥८
ग्रंगुष्ट वाँम विध सुता येक, बहु रूपवती उपजी वसेक।
तिह नाँम वीरनी[3] धरचौ तात, दूसरी ग्रसक्नी नाँम दात ॥९

---

१ मरीचि। २ पुलस्त्य। ३ वीरिणी।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

भइ दक्षप्रजापति गेह भाँम, लाबंन्य कंज लोचन ललाँम।
विध तनय रिखी नारद बहोर, इह आय उदर लीय जनम ओर ॥१०
व्यास सौं सुनी कुरुविंद्र वात, हित वचन कहे पुन जोर हाथ।
सुत वेदगर्भ[1] नारद सुभाय, अवतरे वीरनी गर्भ आय ॥११
विस्तार सहित कहीयै वृतंत, अभलाख सुनन की आद-अंत।
तन प्रथम कोन गति भयौ त्याग, लीय जन्म दूसरौ कोन लाग ॥१२
बोले पुन पारासरीय वाँन, संका नृप कारन समाधाँन।
निज आद बात सुनीयै नवीन, कमलासन सासन दक्ष कीन ॥१३
परजा कौं सिरजहु प्रजापत्त, है काज हमारौ परमहित्त।
द्रिढ सुनकै सासन कमन[2] दक्ष, पतिव्रता वीरनी तीय प्रतक्ष ॥१४
तिह गर्भ करे सुत प्रगट ताँम, निज उभय अंस हरीयस्व नाँम।
पूरे गनतीं के सहस पंच, बहु भये प्रस्न[3] तासौं विरंच ॥१५
सो लगे वढावन प्रजा साथ, बोले नारद इह देख बात।
खित कौं तुम पहिलै करहु खोज, ध्रुव स्रष्ट-काज बाँधहु धरोज ॥१६
परमाँन विना जाँनै प्रबंध, बाँधहौ स्रष्ट कौं कहाँ बंध।
हरीयस्वन[4] सुनकै वचन हेत, खोजन कौं चाले सवही खेत ॥१७
उत्तर केऊ दक्षन चले ऊठ, प्राची रू प्रतीची फेर पूठ।
सुत गये देखकै दक्ष सोच, परगये ह्रदय मै प्रथम पोच ॥१८
पुन परगट कीने फेर पूत, कीनी नारदजू पुन क्रतूत।
हरीयस्व कही जिम कही हेर, वसुधा कौं खोजहु प्रथम वेर ॥१९
स्रष्टी कौ पाछै करहु सूत, हम कह्यौ करहु तुम प्रथम हूँत।
उठ चले दक्ष के सुवन ओर, भागे दिस-विदसा सौंझ भोर ॥२०
सुत गये प्रजापत वढ्यौ सोक, रिख नारद पैं अत करचौ रोख।
दीय श्राप प्रजापति अति दुरंत, मिल पुत्रन दींनी खोट मंत ॥२१
मो त्रीया गरभ मै परहु माँन, अवतरहु फेर धर देह आँन।
पुद्‌गल[5] तज नारद श्राप पाय, अवतरे वीरनी-गर्भ आय ॥२२
करकै विचार पुन दक्ष कीन, कंन्यका साठ परगट कुलीन।
तेरह दीय कस्यपमुनी ताहि, अत रूपवती परजा उपाय ॥२३

१, २ ब्रह्मा। ३ प्रसन्न। ४ हर्यश्व आदि। ५ शरीर।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दस धर्म सताइस सोम दीन, पुन दोय भृगू मुन दोय प्रवीन।
चाहिक अरष्टनेमी जु च्यार, दीनी क्रसास्व[1] कौ दोय दार ॥२४
दुई दई अंगरा रिखी दाँन, करकै बिवाह साखी क्रर्षानु।
ऊपजे पुत्र-पौत्रहु अनेक, सुर अौर असुर माँनव विसेक ॥२५
कर वैर परसपर कलहकार, बढ राग-द्वेष अतसय विचार।
वाख्यॉन सुनहु नृप सूरवंस, पुन भये अौर राजा प्रसंस ॥२६
माँनसी पुत्र विध के मरीच, विख्यात भये रिखो जगत-वीच।
सुत कस्यप भये ताकै सुजाँन, दीय सुता त्रीयोदस दक्ष दाँन ॥२७
कऊमारि[2] त्रीया मुनि ग्रहन कीन, उपजावन स्रष्टी विध अधीन।
देवता दैत पंन्नग दिखाय, उपजे पसु-पक्षी उदर आय ॥२८
कासपी-स्रष्ट तातै कहंत, आदसौं वारता सुनहु अंत।
सुत भयौ रिखी कस्यप सुभेव, देवन मे गनीयै सूर्जदेव ॥२९
विवसाँन[3] नाम जाही विसेस, अरू तेजवाँन जाँनहु असेस।
सुत भये वैइवस्वत[4] मनु सधीर, परजा की मेटन महाँपीर ॥३०
नव पुत्र भये ताके निदाँन, इख्वाक जेष्ट काँनिष्ट अॉन।
नाभाग धृष्टि सर्याति नाम, जाँनीयै नरख्यंति[5] प्रांसु जाँम ॥३१
नृग दिष्ट करुख अरू प्रखध[6] न्याय, सुत माँनव मनु के इह सुभाय।
मनु सुतन जेष्ट इख्वाक माँन, सत पुत्र ताहि उपजे सँतान ॥३२
वड़ सवन वीच जाँनहु विकुक्ष, पुन सुनहु नवन कौ कुल प्रतक्ष।
सब सूरवीर अत सावधाँन, नय नीत विदुष जाँनन निदाँन ॥३३
संखेप सुनहु सब वंस सूर, पुहमी सु प्रतापी भये पूर।
मनु-पुत्र लघू नाभाग नाँम, जाकैहु भयौ सतसंध[7] जाँम ॥३४
ध्रष्टि कै भयौ धार्ष्टक सधीर, भय ब्रह्मकर्म-रत समर-भीरु।
सर्याति सुतन आनर्त सुद्ध, अत रूपवंत स्वाभाव ऊद्ध ॥३५
याही कै कंन्या भई येक, मुनि च्यवन दई धारै विमेक।
मुनि अंध भये जम[8] मिले आय, पुन लोचन दीने क्रपा पाय ॥३६
कुरविंद्र सुनी इह व्यास कथ्थ, वाख्याँन कहहु मुनि च्यवन वत्त।
मुनि अंध भये कैसे महंत, कीने कंन्या के नृपत कंथ ॥३७

---

१ कृशाश्व। २ कुमारी। ३ विस्वत्रान्। ४ वैवस्वत मनु। ५ नरिष्यंत।
६ प्रषध्र। ७ सत्यसन्ध। ८ अश्विनीकुमार।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जब व्यास कहन लागे सुजाँन. विधजुक्त कथा करकै वखाँन।
सर्यात नृपत व्याही सुकीय, तिह सहँस च्यार संख्या जु तीय ॥३८
इक भई सुता ताकै अनूप, सबहिन कौं प्यारी जुत सरूप।
जिह दयौ सुकंन्या नाँम जाँन, सुभ लक्षन देखैं संनिधान ॥३९
कमनीय कलेवर वय किसोर, अंतहपुर देखत जिही ओर।
सयांत नृपत राँनीन संग, देसंतर चाल्यौ छोर द्रंग ॥४०
सेना सब लीनो जिही साथ, घालत सोइ सत्रू देख घात।
निर्जनवन पहुँच्यौ सोइ नरेस, वन मै तड़ाग इक लख्यौ वेस ॥४१
माँनससरवर कै सोइ माँन, सोपाँन घाट सुंदर समाँन।
फूले सरोज विच चहू फेर, अली गुंज करत सोगंध येर ॥४२
तरू हरत सुसोभत तीर-तीर, निरमल ताही मैं भरचौ नीर।
रवि बिंब छाँह-जुत रंग-रंग, तामै अनेक ऊठत तरंग ॥४३
केंऊ कच्छ-मच्छ कर रहे केल, मुक्ता सफोट[1] सौं भेख मेल।
उर देख नृपत वाढी उमंग, सर मैं अवरोधन लऐ संग ॥४४
करनै सोइ मंजन लग्यौ केल, झुक नारिन बाँहै झेन-झेल।
कँवरी सरवर की तीर कुंज, पुस्पन के हेरत चली पुंज ॥४५
सखीयन कौं नूतन लयै संग, अत रूपवती सब गौर-अंग।
चमकत विजुरी सम प्रभा-चीर, सुच कंचन-वेली सम सरीर ॥४६
खिल-खिलत चलत मिल करत ख्याल, मंजुल-प्रसून की रचत माल।
थक बैठ गई इक देख थाँन, सखीयाँन संग ह्वै सावधाँन ॥४७
मुनि च्यवन विराजे ध्याँन माँहि, छिपवाय तरोवर सघन छाँहि।
वपु भयौ व्यमौरा[2] रूप वेख, द्रग दुइन सोइ पुन रहे देख ॥४८
जिगनूँ-सम चमकत जिही जोत, अत तेजवंत आभा उदोत।
तहाँ जाय सखी देखे जु ताहि, अचरज कँवरी सौं कह्यौ आय ॥४९
कँवरी मुनि नैनन लखी क्रांत, विसमय विचार कैसौ वृतंत।
कंटक मगाय तिछ्छन कठोर, अवलोक चलायौ चखन ओर ॥५०
सोइ फूट रोय लागत जु साल, क्रिन्या उठ भागी तातकाल।
मुनि बिथत भये पीड़ा मझार, चख-अंध विचारे दुराचार ॥५१

---

१ सीप। २ दीमक की वामी, बिमौट।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

उर सोक बढयौ ताकौ अछेह, द्रग विना दिखावत वृथा देह।
अपराध मुनी पातक उपाय, रुक गई सबन मल-मूत्र राहि ॥५२
नर-नारी बाहन-जुत नरिंद, दरसाव रोग कौ बढयौ दुंद।
बतरावत आपुस बीच वात, इह पाप भयौ कहा अनाघात ॥५३
मंत्रीगन राजा करत मंत, वरताव भयो कौनें वृतंत।
सुन राज-कँवर बोली सँभार, वेदना देख आसय विचार ॥५४
खेलन मै वनमै गई ख्याल, तुम रहे नहावत वीच ताल।
वल्मीक बिमोरी[1] लखी बैठ, पुन छिद्र-बीच ह्वै रहे पैठ ॥५५
जिगनू सी जागत जही जोत, प्रेरचौ निकास कौ प्रथम पोत।
लाग्यौ सोइ कंटक तिही लार, वहिनै कछु लाग्यौ तहाँ वार ॥५६
अरू निकरी हाहा इह अवाज, भइ जोत बंध हम चली भाज।
इह संका उपजी ह्लदय आय, अनजाँन भयौ कैसौ उपाय ॥५७
सुन वचन सुकंन्या भूप स्रौंन, गलि पूछ सघन वन करचौ गौंन।
मुनि च्यवन लखे भृगु-सुत मुकाँम, परचाय करे बहु विध प्रनाँम ॥५८
अपराध करचौ कंन्या अजाँन, मुनि क्षमा करहु मम विनय माँन।
मुनि च्यवन कह्यौ सुन महाराज, इह कंन्या कीनौ हम अकाज ॥५९
विन लोचन काया भई वृद्ध, सेवक नही औरै सिख सनिद्ध।
कंन्या हम देवहु करन काज, अपराध क्षमापन इह इलाज ॥६०
नही नटचौ न कीनौ दैन नेम, जहाँ आयौ उठकै गयौ जेम।
मंत्रिन सौं लागौ करन मंत, बृद्ध मुनि अंध सुनीयें वृतंत ॥६१
निज हेत सुकंन्या चहत नार, इह कैसै करहै अनाचार।
जावहु संकट सौं इहै जीव, पुत्री कौ अंध न करहै पीव ॥६२
हठ पकरचौ राजा दुखत होय, सुन लई सुकंन्या वात सोय।
राजा सौं बोली न्याय-रीत, निज पिता सुनहु मम वचन नीत ॥६३
अपराध करचौ मै जाय येक, ऐंसौ दुख भोगत तुम अनेक।
अपराध वन्यौ पहिलै अजाँन, लाग्यौ फल ताही लयौ लाँन ॥६४
सब भोगत है दुख सैन-संग, तुम मात-पिता हाथी तुरंग।
येकहू करचौ ऐंसौ अनर्थ, अंन्नेकहु सौं कहा होय अर्थ ॥६५

१ बीमक की वामी, विमौट।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

येक सौं होय सबहिन उबेल, मिल होहु सुखी मुनि धाँम मेल ।
दुख भुगतहु अथवा सुख सुदेह, बिच भाल लिखे सोइ अंकवेह[१] ।।६६
अपराध चढावहु नही और, नीकी विध सुनीयै पितु निहोर ।
सुन भूप चल्यौ पुत्री सलाह, रिखीराज-धाँम की लई राह ।।६७
जायकै करी विनती जहाँह, विधवेद सुकंन्या गहहु व्याह ।
सुन भये प्रसन मुनि चिवन स्राँन, दीनी असीस नरपत निदाँन ।।६८
उपताप[२] मिटचौ सब येक संग, तन सैंन सहित हाथी तुरंग ।
परनाय दई कंन्या नृपाल, कर गृहन लई मुनिवर क्रपाल ।।६९
दैने पुन लागे नृपत दहेज, सुच वस्त्र अलंकृत मंच सेज ।
नही गृहन करचौ मुनिवर निदाँन, दैने कौं जो कछू लगे दाँन ।।७०
लीय राजकँवारी चिव ललाँम, कीय मनसा पूजत्त सफल काँम ।
निज ह्लदय अनंदत ह्वै नरेस, दै कंन्या चालन लग्यौ देस ।।७१
पितु कह्यौ सुकंन्या कह्यौ पेख, वनवास प्रमाँनै चहत वेख[३] ।
मृघरोमज बलकल वसन मोहि, सब रिखी त्रीया सम देहु सोय ।।७२
सेवा पति करकै तप संजोग, जत-मत सौं साधहुँ क्रीया जोग ।
पितु मात तुमहु ह्वैहो पुनीत, कुल उभय वढावहुँ अमर क्रीत ।।७३
त्रीय अरंधुती वासष्ट तेम, जग-पावन सुनीयत नाँम जेम ।
परपाटी तिनकी गृहहुँ पंथ, गृह जाहु छोर अग्याँन ग्रंथ ।।७४
अनुसुया तीया जिम रिखो अत्र, पति-सेवा करहूँ मन पवित्र ।
सुन सुता वचन वाढचौ सनेह, गत ईस विचारत गयौ गेह ।।७५
लेखत पुत्री कौ ह्लदय लेख, द्रग नीर बहावत चल्यौ देख ।
पुत्री कौ हीय सौं तज्यौ प्यार, विधजुक्त ग्याँन चित सौं विचार ।।७६

दोहा

सब उदास ह्वै मिल सुता, राज-भवन लीय राह ।
रही सुकंन्या धाँम रिख, चित निज पति-हित चाह ।।७७
पति की सेवा प्रेम सौं, करत भये बहु काल ।
अकस्मात दिन येक कौं, तोय भरन गइ ताल ।।७८

१ विधाता । २ रोग, कष्ट । ३ वेश ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तिही ताल सूरज तनय, श्रोय बुद्धि अगार।
आयुरवेदी अमर गन, कृति अस्वनीकुमार ॥७९

छंद अर्ध हरगीतका

सर्वांग देखी सुंदरी, आनन सु राका-इंदुरी[1]।
निर्धूम दीपक नासका, रद-वस्त्र विद्रुम रासका ॥८०
कमनीय-नैन कुरंग से, भ्रूँहार अवली भृंग से।
कमनीय गोल कपोलहू, वरणपीह[2] कोकल ,बोलहू ॥८१
दुई पीन उरज दिखात है, लहि भार कटि लचकात है।
कर कमल जंघा केलसी, वपु-प्रभा कंचन वेलसी ॥८२
पद ब्रह्मवर्धन[3] पात से, पथ चलत नैक पिरात से।
वर देख वलकल वेख कै, विस्मयत भयेऊ विसेख कै ॥८३
जम[4] देवकंन्या जाँनकै, पूछी सु वात प्रमाँनकै।
कह देहु कंन्या कोनकी, हित पती-पत्नी होनकी ॥८४
वसरही क्यौं वनवास कैं, दासी न दास उदास कैं।
सुनकै सुकंन्या स्राँन सौं, बोली सु मधुरी बाँन सौं ॥८५
सरजात नृप की मै सुता, पति च्यवन नारी पतिव्रता।
मुनि अंध वृद्ध महाँमती, पुन करत सेवा प्रवृती ॥८६
चलीयै जु आस्रम चाहिकै, प्राँनेस मिलन पसावकै।
जव कह्यौ अर्कंज[5] जाँन सौं, कँवरी सु सुनीयै काँन सौं ॥८७
वैठन सुजोग विवान मै, पद चलत पथ पथराँन मै।
वपु पाट जोग ही वसन कौं, कट उरज वलकल कसन कौं ॥८८
दासी न सेवा दायका, मुनि भजत तजकै मायका।
नित भवन जोग निवास मै, वस रही काँनन वास मै ॥८९
पत अंध जीरन पायकै, सुख लहहु कहा सरसायकै।
नव जोबना हम निरखीयै, पति करन जुग महि परखीयै ॥९०
वरलेहु येक विचारकै, वय-वृद्ध अंद्ध विसारकै।
सुख-सेज लेवहु सोयकैं, हित पाय निर्भय होयकैं ॥९१

१ पूर्णिमा का चंद्र। २ पपीहा। ३ तांबा। ४, ५ अश्विनी कुमार।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सुन उठी बोल सुकंन्यका, गनीयै न मोकह गंन्यका।
सरजात दीनी सूंप कैं, रिखीराज केवल-रूप[1] कै।।६२
सेवा सु करत सुधार कौं, अह पिता-मात उधार कौं।
बाँनी अनर्थ न बोलीयै, तुल कनक उपलन तोलीयै।।६३
तुम स्राप देहुँ तपायकैं, पथ गहहुगे पछतायकै।
सुन लई तुमरी सीख कौं, नही खरे रहहु नजीक कौं।।६४
कथ सुनी कँवरी काँन सौं, सुरवैद बोल सयाँन सौं।
कहै तुमहू जैसें कीजीयै, परचाय पतिहि पतीजीयै।।६५
हम रोग हारक हेरकैं, निज लेहु न्याव निवेरकैं।
कहीयौ जु पति कौं इह कथा, जुग वैद आये सुर जथा।।६६
कर कहत नेम करार कौं, नय नीत के निरधार कौं।
लख रूप मोहि ललचायकैं, उर काँम उपज्यौ आयकैं।।६७
त्रीय करन कौं ह्वै तत्परा, भरमाय मेरे स्रुत भरा।
मोहि जाँन पतिवृत सतमई, निज ऊकत इक भाखी नई।।६८
सुन लेहु साथ सयाँन कैं, हित वचन कारक हाँन कैं।
रवि तनय हारक रोग के, जिम जाँन ओषधि जोग के।।६६
सो करत सुगं सँभाल कौं, तेऊ निकस आये ताल कौं।
अस्वन सुनाँम अनूप के, रमनीय अद्भुत रूप के।।१००
सो करत है इह सासना, पति तोर हित परकासना।
करहैं जु हम सम काय सौं, ओषधी जोग उपाय सौं।।१०१
पति वरहु पुन पहिचाँनकैं, मम सत्य वाचा माँनकैं।
छल है क अथवा चातुरी, उर सोचीयैं मुनि आतुरी।।१०२
जब कह्यौ तीय सुनि जाँनकैं, अवगाह उर अनुमाँन कैं।
सन लहहु बुद्धि सुमार कौं, कह देहु सूर-कुमार कौं।।१०३
बोले सु च्यवन विचारकैं, हित जाँन अपनौ हारकैं।
सुरवैद कौं समझायकैं, जुग धाँम लावहु जायकैं।।१०४
कह लेहु कहन करार कौं, विस्मयत त्याग विचार कौं।
चाली सुकंन्या चाहिकैं, पति-हेत सासन पायकैं।।१०५

१ जीवन मुक्त।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सुरवैद जाय समीप कौं, जहाँ कही हार-रुजीप[1] कौं।
तुम कह्यौ ग्रास्रव ताहि कौं, निरवाह करहै न्याय कौं ॥१०६
धर धीर चालहु धाँम कौं, करीयै सु उत्तंम काँम कौं।
जम वैद ग्राये जाँनकैं, मत्ति मुनी सुकंन्या माँनकैं ॥१०७
जम कह्यौ मुनि कौं जोयकैं, तुम ताल पैठहु तोयकैं।
सुन च्यवन जल मैं संचरे[2], जम संगहू पाछै जुरे ॥१०८
डुबकी सु लीनी डोहकैं, जम वैद कौं संग जोयकैं।
निकसे सु जबही नीर सौं, सम रूप होय सरीर सौं ॥१०९
त्रहु कहत बाँनी टेरकैं, हम वरहु-वरहू हेरकैं।
इक रूप त्रहु-गुन येक मैं, वाँनी सु वेख वसेक मैं ॥११०
रिखी परख नाँहिन रंच की, पाई न देव प्रपंच की।
सर्यात-नंदनी सोचकैं, पर गई मन सौं पोचकैं ॥१११
विस्वेस्वरी जग-वंदनी, -कीय ध्याँन कष्ट-निकंदनी।
वरनना कर-कर वीनती, पहिचाँन कै हित निज पती ॥११२
रज चरन कह-कह रावरी, सिरजता माया सावरी।
संकरी तूँही सरसुती, पद्मालया तू प्रवृती ॥११३
प्रीय पर्म पुर्ब प्रधाँन तूँ, ग्यानीन ग्रंतर ग्याँन तूँ।
जननी तुहीं जग-जीव की, स्वाभाव सिद्ध सदीव की ॥११४
तूँ विसद ग्रातम-तारनी, प्रज वेद-धर्म प्रचारनी।
पतिवृत धर्म प्रभाव सौं, भीनी सु पति के भाव सौं ॥११५
करतूत ग्रर्क-कुमार की, नही समुज पति निरधार की।
सुव देहु त्रपुरा-सुंदरी, दुख मिटहि जासौं दुंदरी[3] ॥११६
कर कृपा मात सुकंन्याका, उर-भक्ति जाँन ग्रन्यंनका।
सुध ग्याँन दीनी सुमृती, पहिचान लीनेऊ निज पती ॥११७
मुन च्यवन मिलकै मोद कौं, सुत ग्रर्क पाय संवोध कौं।
चाले सु ग्रासा छोरकैं, बोले सु च्यवन वहोरकैं ॥११८
पतिवृत्त सुकंन्या प्रेम सौं, निरवाह ग्रपने नेम सौं।
निज भवन बैठ निदाँन कौं, कर ग्रस्वनीसुत काँन कौं ॥११९

---

१ रोग हारक, अश्विनीकुमारों। २ घुसे। ३ द्वंद्व।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

रिख देख अपने रूप कौं, सुभ द्रष्ट जुगल सरूप कौं।
बोले सु बात बिचार कौं, उर सोच कें उपकार कौं ।।१२०
गुन करचौ मेरं गातपै, जुग[1] निरासा ह्वै जातपै।
बर माँगीये मन-वंचना, उर होय जो कछु इंछना ।।१२१
कीय तरुन जीरन-कायकें, द्रग-जोत रूप दिखायकें।
तरुनीन परन्यौ ताहि सौं, सुख लैहुँ तोर सहाय सौं ।।१२२

दोहा

ऋन दीनै विन रावरौ, अर्कज सुनहु उदंत।
ऊरन होउ न आपसौं, आद न जाँनहु अंत ।।१२३
मन-वंचत वर माँगीयै, उभय विचार अरथ्थ।
कहीयें जो कछु काँमना, मैं देवन समरथ्थ ।।१२४
मुनि पतनी-जुत महत मति, करकैं सुमत कहेव।
देहु वचन हम दुहुन कौं, लाभ फेर कछु लेव ।।१२५
सुनी सुकंन्या मुनि सुघर, कहि अस्वनी-कुमार।
निर्भय मागहु हम निकट, वाचा देत विचार ।।१२६

छंद पद्धरी

नासिक[2] तव बोले मुनि निहार, स्वर[3] गिर पै वरते समाचार।
सुन लेहु प्रथम ताकौ सिधंत, इह कहत वारता आद-अंत ।।१२७
विध करचौ जग्य ऊत्तम विधाँन, वह ठौर सबही सुर मिले आँन।
लागे सब अपनौ भाग लैंन, दाँनी विरंच जब लगे दैंन ।।१२८
बैठे हम देवन-संग वीय, कहनावत ऐसै इंद्र कीय।
तुम वैद होयकैं चहत त्याग, भूलकै न देहौं जग्य-भाग ।।१२९
यँह करचौ निरादर चले ऊठ, पंकती सुरन सौं फेर पूठ।
ओसधी[4] जग्य की तजी आस, इक कारन हम डोलत उदास ।।१३०
पुन हमही करावहु सोम-पाँन, उर नाँहि कछू अभिलाष आँन।
अर्कज की कहनी सुन अधार, मुनि च्यवन कहे इस समाचार ।।१३१

---

१ दौनो। २ अश्विनीकुमार। ३ सुमेर। ४ ओषध=सोमरस।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सर्यात नृपत सौं करहि संध, पुन करहि जग्य करनै प्रबंध।
भाग कौं दिवावहि हाथ भूप, सुख पाय लहहु दोनौं स्वरूप ।।१३२
मुन की सुन अर्कंज वात मान, अत सुखी भये विस्वास आँन।
सुख पाय सुकंन्या रिखी-संग, आस्रम जनु बैठे रति अनंग ।।१३३
विलसत सुख नाना रति-विहार, दंपत हित चित सौं मति अगार।
वीते केऊ वासुर चली वात, महपती सुकंन्या कही मात ।।१३४
अंगजा दई मुनि वृद्ध अंध, सुख सौं है अथवा दुख समंध।
साख्यात[1] देवकंन्या-स्वरूप, भोगत है कैसें भोग भूप ।।१३५
सुध्र पूछहु ताकी कर सँभार, उर आय वढी चिंता अपार।
निंद्रा नही आवत मोहि नैन, अंगजा हेत उपज्यौ अचैन ।।१३६
माता हित जैसें पिता-मोह, इतनौ किह कारन कीय उपोह।
जायकैं खबर करीयैं जरूर, पुत्री कौं देखहुँ प्रेम-पूर ।।१३७
सुनकैं रानी की कथ समग्ग, महपती चल्यौ रथ बैठ मग्ग।
मुनिराज जाय पहुँच्यौ मुकाँम, भर सुता हेत संग लयैं भाँम ।।१३८
मुनि जाय लखे मनु दुतीय मार, कमनीय सुकंन्या जुत कुमार।
अंदेस आय उपज्यौ अचैंन, वतरावत आवत नहिन वैंन ।।१३९
पुन रहे द्वार ठाढे नृपाल, विव मात-पिता जब लखी वाल।
आयकैं मिली करकैं उमंग, सुख पाय मात-पितु येक संग ।।१४०
विस्मय जुत पूछी नृपत वात, द्रग तोहि पती नाँहिन दिखात।
कहाँ गये संग तू रहत कोन, जैसी कछु वीती कहीय जोन ।।१४१
सुन सुता करचौ साच्यौ सवाल, है इही वूझीयें आप हाल।
सुन सुता जात वैठे समीप, मुनहू सौं वात पूछी महीप ।।१४२
जामात प्रथम तुम अंध जात, गृहनीन जुरा[2] अत गलत गात।
नव जोबँन कैसै भये निदाँन, वाख्याँन करहु वाचा विधाँन ।।१४३
जव कह्यौ मुनी नरपत्ति जताय, सत तोर सुता कीनी सहाय।
देवन के आये वैद दोय, मिलकै नव-जोवन करचौ मोहि ।।१४४
उपकार भयौ हमपै अनून[3], स्वभाव सिद्ध सौं अर्क-सूँन।
वरदाँन दयौ हमहू विचार, जग्योपध पावहि नृप जुहार ।।१४५

१ साक्षात्। २ वृद्धावस्था से ग्रसित। ३ अत्यधिक।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सर्जात भूप इह सुनी स्नाँन, जामातु कही मुनिराज जाँन।
उपकार करयौ जम संग आप, पुत्री निज काटयौ महापाप ॥१४६
हम सुखी भये तुम उभय हेर, वदलौ जम दीजै इही वेर।
संतुष्ट होय नृप सावधाँन, निज राजभवन आयौ निदाँन ॥१४७
मंत्रन बुलायकैं करयौ मंत, वरन्यौ मुनि दुहिता सब वृतंत।
जिग करनैं कौं कोय जतन जोर, साँमग्री करनैं वढयौ सोर ॥१४८
घृत अंन्न आद चीजैं घनेर, येकत्र करी बहु येर-येर।
जामात बुलाये सुता-जुक्त, अब करीयै जो कछु रुचै उक्त ॥१४९
मुनि च्यवन देख उर भयौ मोद, करदये निमंत्रन चहूँ कोद।
वासष्ट आद रिखी मिले वृंद, पुन मख करनैं कीनौ प्रवंध ॥१५०
जिह वेर होन कौं लग्यौ ज्याग, सूत्राँन मिले सुर साँनुराग।
पीने कौं लागे सोम-पाँन, अस्वनहू ठाढे भये आँन ॥१५१
सुरराज लखत अरू देव-साथ, हित सौं जम माड्यौ सोम हाथ।
पुन च्यवन मुनी दीय सोम-पाँन, वज्री तव वोल्यौ इहै वाँन ॥१५२
तुम वैदन कौं कहा देत त्याग, लख करयौ सोमपा बंध लाग।
बोले मुनिराजहु तिही वेर, अह वीच करत कैसौ अँधेर ॥१५३
क्रम-साखी[1] सुत अस्वनकुमार, नय विना सकत नाँहिन निकार।
मोटे उपकारी जगत-मित, पावहि नहि कैसैं देव-पंत ॥१५४
निरनै क्रर सुरपति कहहु न्याय, अरू देव रिखी-गन मिले आय।
हम अंध वृध रिखी निवल-अंग, साँमर्थ ओषधी कीय सुचंग ॥१५५
पुन जग्य ओषधी करन पाँन, जम कह्यौ हमहु उपकार जाँन।
प्रेरना करी हम नृपत पाहि, इह जग्य करयौ याही उपाय ॥१५६
राखीयैं हमारी वचन रूढ, पुरहूत होत कैसे पढ़ूढ़।
वढ बोल्यौ सुरपति सभा-वीच, नासकहु चिकत्सक महानींच ॥१५७
मल-मूत्र परीक्षक चित मलीन, घट धातु लखत नही करत घ्रीन।
सो देव-सभा कैसें समाँन, पावहैं ओसधी जग्य पाँन ॥१५८
जब मुनी अहल्या कह्यौ जार, बोलीयै नेंक आपौ विचार।
आपनी ऐंव ज नत न आप, पहिचाँन विना जम देत पाप ॥१५९

---

१ सूर्य।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ओषधी जग्य हम देत एह, दुइ वैद सुरन कौं निसंदेह।
जम दई ओसधी जग्य जाहि, तब लयौ सोमपा पाँन ताहि ॥१६०
वासव लख बोले पख[1] विसेख, तुम ब्रह्मबंधु[2] ह्वे करत तेख।
मैं विस्वरूप कौं लयौ मार, तोहू कौं मारन काज त्यार ॥१६१
इह कहत वज्र छोरयौ अभंग, परकास जास कोटक पतंग।
आवत सिर देख्यौ च्यवन अक्ष, परकास्यौ तप-बल मुनि प्रतक्ष ॥१६२
अधबीच थंभ दीनौ अकास, सुर देख रहे सब सावकास।
आहूत मंत्र पढ़ दई आग, जाही मैं करते रहे ज्याग ॥१६३
इक प्रबल पुरख उपज्यौ अखंड, चल चले देख सुर महाचंड।
मद नाँम जिही दाँनव मदंध, पर्बताकार काया प्रबंध ॥१६४
चारसौ कोस की बाँह च्यार, अत तिछ्छन भुज-कंटक[3] इभार[4]।
करकन्नह जंभ मल्लक कुदीर, सोइ सब्द करत कटकट सधीर ॥१६५
अतक्रूर दिखावत लंब ओठ, लहलहत लगावत जीह लोट।
तिह महा भयाँनक वक्रतुंड,[5] आहार करहि मनु ब्रह्मइंड ॥१६५
जगजगत दिखावत नैन जेह, आग के भरे मनु कूप एह।
कारौ तन ऊरध लाल केस, धगधगत ह्रदय विच ज्वाल ध्वेस ॥१६७
कलकलत बाँन बोलत कठोर, घहरात मनहु घन प्रलय घोर।
इंद्रहू गह्यौ कर वज्र ऊद्ध, जाही सौं करनै काज जुद्ध ॥१६८
लीनौ गहि आसुर वज्र लील, अचरज लख वासव भौ अलील।
भयभीत भये सुर गये भाग, इह ज्याग करयौ कैसौ अभाग ॥१६९
सब दिसा होत हाहंत सोर, ठहरे नही येकहु येक ठौर।
सुमरन तब कीनौ गरू सुरेस, आयकै लख्यौ मद आसुरेस ॥१७०
पुन कह्यौ इंद्र सौं वृहसपत्त, सुन लेहु हमारी वात सत्त।
मुनि च्यवन मंत्र तप-बल मिलाय, कीय प्रगटत याही असुरकाय ॥१७१
इह जाँनलेहु दाँनव अजेय, अतघोर रूप बल अप्रमेय।
मुनि चरन सरन लीजै महंत, माँनीयै हमारौ मूल मंत ॥१७२
जब इंद्र च्यवनमुनि-सरन जाय, वर्नना करन लागे वनाय।
तुम परासक्ति के भक्त तौन, कर सकै और समता जु कौन ॥ १७३

१ पक्ष। २ ब्रह्मवेत्ता। ३ नख। ४ सिंह। ५ मुख।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अब क्षमा कीजीयै विनय येह, दुइ स्वर्नवैद मख भाग देह।
तिनकौ नही करहै तिरसकार, ध्रम-रीत प्रतग्या कहत धार ।।१७४
आपकी प्रतग्या रही आज, लाचार भये हम तजी लाज।
सुनकै वज्री की वात स्राँन, दीय च्यवनमुनि तव अभयदाँन ।।१७५
कीय च्यार भाग मद दैत केर, वाँटकै दये पुन तिही वेर।
स्त्रीय, मद्य, जुआ औरै सिकार, वस गयौ च्यार ह्याँ जिही वार ।।१७६
सुर सुखी भये देखत समाँन, मुनि देख पराक्रम प्रवल माँन।
वड़वा-सुत बैठक दई बीच, सोमपा पात[१] दीय सुभ रचीस ।।१७७
पुरहूत कह्यौ देवन पुकार, कृतकृति भये अस्वनकुमार।
सबकै समाँन सुर भये सुद्ध, वाँचीयै कबहु नाहिंन विरुद्ध ।।१७८
सर्जात नृपत की कीत सेख, वसुधा पै वाढी अत वसेख।
मुनि कौ प्रभाव जाँन्यौ महाँन, परवीन सत्यवाचा प्रमाँन ।।१७९
जिग भयौ सँपूरन सुभग जोग, भूसुर सुर पायौ दाँन भोग।
द्विज देव गये सव देस-देस, निग नगर ऊठ आये नरेस ।।१८०
करनै सोइ लागौ राज-काज, रुच धाँम रहे तहाँ रिखीराज।
वसुधा प्रसिद्ध मुनि च्यवन वात, जैहै नहि केतक काल जात ।।१८१

दोहा

क्रीत नृपत सरजात की, रिख की संमृथ राह।
देव गये दिस-विदस कौं, सव ही करत सराह ।।१८२
अर्कजहू उपकार कौ, पलटौ पाय प्रसंग।
भये सोमपाई भलै, सव देवन कै संग ।।१८३

छंद उधोर

सर्जात नृपत सधीर, विख्यात जग सोइ वीर।
आनर्त सुतन उदार, भुज राज दीनौ भार ।।१८४
निज तनय रैवत नाँम, ध्रुव धारना वलधाँम।
सुस्थाँन कुस्थली[२] सोय, जिह वसाई द्रग जोय ।।१८५

---

१ पात्र। २ द्वारका।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सामुद्र-दीप समीप, मध करेऊ वास महीप ।
आँनर्त देस अनूप, भुव-राज कीनौ भूप ।।१८६
सत पुत्र भयेऊ सुभाय, जेठौ ककुद्मी जाहि ।
उपजी सु कंन्या येक, रेवत्ती सुंदर रेख ।।१८७
अत रूपवंत अनूप, भरतार ढूंढत भूप ।
केऊ लखे राज-कुलीन, पुत्री-समाँन प्रवींन ।।१८८
रैवंत-गिर कौ राज, केऊ दिन विचारचौ काज ।
आये न निजर अधीस, वर सुता विसवावीस ।।१८९
वूझनै काज विचार, चित वंच आँनन च्यार ।
तनया सु रेवति ताहि, लीनी सु संग लगाय ।।१९०
विध-लोक गये वहु वीर, सुर दिव्य धार सरीर ।
स्रुत गिरहु यग्य समेत, नद उदध दिव्य निकेत ।।१९१
गंधर्व रिख सुग्यात, विद्याधरा विख्यात ।
सिध नाग चारन सर्व, सुच वेख धार सुपर्व ।।१९२
केऊ चरत देखन कार, केऊ वरन राजकुमार ।
विध के पहूँचे वास, हीय धार-धार हुलास ।।१९३
वरनना करत विसेस, ललचाय चित लोकेस[१] ।
सुन नृपत वात सयाँन, वच व्यास के वाख्याँन ।।१९४
व्राह्मन वखानत वात, जहाँ ब्रह्म-वित द्वज-जात ।
भुवलोक-वासी भूप, सो विना व्रह्म-स्वरूप ।।१९५
विध-लोक करन विचार, लै सुताहू कौं लार ।
कैसैं गयौ कहि देह, सुन मिटै मोहि संदेह ।।१९६
संसय मिटावन संक, सुन कहेऊ व्यास निसंक ।
संबपुरी सीस सुमेर, कैलास वरुन कुबेर ।।१९७
विधलोक जम वयकूंठ, अरू इंद्रलोक अनूठ ।
जिह करी अर्जुन जात, वसु वात है विख्यात ।।१९८
वस पाँच वरख विताय, इहाँ करचौ भारथ आय ।
अरू कुतस्थादिक आद, पुन गये पाय प्रसाद ।।१९९

---

१ ।.।।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कैऊ भये दैत करूर, पहुचे सु बल कौ पूर।
जिह इंद्र-आसन जीत, सब करेऊ देव सभीत ।।२००
गये महाभिस कर गौंन, परसिद्ध वात पुराँन।
वैंकुंठ सुनीयैं वात, जहाँ देव पीड़त जात ।।२०१
वँह लोक तैं इहाँ आय, श्रीविस्नु करत सिहाय।
लेखै जु जितनै लोग, जेऊ मनुज जावन जोग ।।२०२
रिखी पुन्य आतमरूप, भल जात आवत भूप।
जिग करत जे जजुमाँन, परभाव पुंन्न प्रधाँन ।।२०३
जे स्वर्ग लायक जीव, सुख वास करत सदीव।
कीय प्रस्न पुन कुरुविंद, श्रीव्यास ग्याँन समंध ।।२०४
रेवती रेवत-राज, कीय फेर कैसैं काज।
कहीयैं कृपा कर कथ्थ, स्तुति सुनू है समरथ्थ ।।२०५
जब बादराँयन जाँन, बोले सु निर्मल वाँन।
नृप गयौ विध नीयराय, गंध्रव रहे गुन गाय ।।२०६
जुत सुता ताही जाग, रुच सुनन लागौ राग।
भये त्रप्त नाँहिन भूप, उर गाँन सुनत अनूप ।।२०७
बहु काल सौं भये बंध, सु विचार राजा संध।
कंन्याँ दिखाय कहेहु, उपदेस देवहु येहु[1] ।।२०८
हम कंन्यका-सम हेर, वर वतावहु इह वेर।
केऊ लखे नृपत-कुमार, इह कंन्यका अनुहार ।।२०९
आयौ न द्रष्टी येक, लेख्यौ जु विध कहा लेख।
कह देहु नाथ कृपाल, सुन मोर दीन सवाल ।।२१०
विध कही सुनीयै वात, नृप लखे तै निस्नात।
वँह रहे नाँहिन येक, वध कीन काल विसेक ।।२११
सुत पौत्र बंधव सोय, लखीयै न औरहु लोय।
अरू प्रगट भवे दनु-अंस, कली रूप धारै कंस ।।२१२
अठविस द्वापुर येह, छित काल कीनौ छेह।
रहि सोमवंसिन राज, सविसेख छत्रि-समाज ।।२१३

१ मू० प्र० येह।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अवतरे क्रस्नहु आय, सब सुरन करन सिहाय।
मारे सु कंस मदंध, भुव-भार टार भयंद ।।२१४
बलभद्र माधव बीर, सारूप गौर सरीर।
वँह सेख[1] कौ अवतार, भुँय कौ उतारयौ भार ।।२१५
तिह सुता देवहु तोहि, मत माँनीयै इह मोहि।
रैंवत-सुता लै राह, आयौ सु सहित उछाह ।।२१६
रैंवती दीनी राँम[2], कीय व्याह पूरन काँम।
अरू करचौ मुक्ती-आस, बद्रका-आस्रम बास ।।२१७
तहाँ गंग पावन तीर, रैंवंत त्याग सरीर।
सुरलोक गयेऊ सिधाय, तन जोग ताप तपाय ।।२१८
इह सुन्यौ नृप आख्याँन, वर व्यास सौं वाख्याँन।
संका करी पुन सोच, अवगाहि होय आलोच ।।२१९
रेवती–रेवतराज, बहु दिवस रहेऊ विराज।
जुग सत अठोतर जात, विध-लोक मै विख्यात ।।२२०
निरवाह भय किह न्याय, वयवृद्धता न वसाय।
आयुर न खूटी अंग, पुन कहहु व्यास प्रसंग ।।२२१
सुन व्यास कीय संबोध, विध-लोक मै न विरोध।
आसा पिपासा आद, वस ग्लाँनता न विखाद ।।२२२
सर्जात गये सुर-लोक, संतती होय ससोक।
कीय राखसन भख केक, पुरवासीयन जुत पेख ।।२२३
कुसथली ऊजर कीन, नहि वसे वास नवीन।
मनुहू के क्षीकत[3] नाँम, इक्ष्वाक भयेउ उदाँम[4] ।।२२४
विस्तरौ सूरज-वंस, पुहमी-पती परसंस।
उपदेस नारद आप, जिह करचौ देवी-ज्ञाप ।।२२५
सत पुत्र भये सविसेक, इधके सु येकन-येक।
बड़ नाँम ताहि विकुक्ष, दातार सूर सुदक्ष ।।२२६
इक्ष्वाक अवध-अधीस, सोइ छत्र धारै सीस।
उत्तर सु रक्षा अर्थ, सुत भेज दयेऊ समर्थ ।।२२७

१ शेष। २ बलराम। ३ छींकने पर। ४ स्वतंत्र।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

धूरे जु गनत पचास, जग-दुंद मेटचौ जास।
आपाक[1] अठतालीस, उत भेज सुतन अधीस ।।२२८
सुत दोय कारन सेय, अवगाह रखेउ अजेय।
इक्ष्वाक-सुतन अभीत, जगती करी वस जीत ।।२२९

दोहा

स्राध अष्टका करन सुभ, नृप इक्ष्वाक निहार।
सुत विकुक्ष कौं कहेउ सोइ, सुत गये काज सिकार ।।२३०
ऊत्तम पल लावहु अवस, जुत आदर मृघ जोय।
स्राँध भोग जोगही समुझ, करी विलंब न कोय ।।२३१
सस्त्र बाँध वन संचरचौ, पिता-हुकँम कौं पाय।
मृघ सूकर केऊ मारकै, भयौ थकत स्रम भाय ।।२३२
भूख लगी वनमै भ्रमत, बुद्ध भ्रमी जिह बार।
सुमरन भूल सराध कौ, ईंच्यौ कछु आहार ।।२३३

छंद हरगीतका

इक लोमकर्न[2] आहार कौं मँगवाय कै कछु मंस लै।
कहु काट-छाँट क्रपालका अलपीय तनकौ अंस लै ।।
भक्षन करचौ ज्वल भूजकै पितु निकट आय पुलायकैं।
वासष्ट प्रासन करन विध कौं लगे चित ललचायकैं ।।२३४
खरगोस कौ तन लख्यौ खंडित महाँपंडित मोह सौं।
पितु सौं कह्यौ सुत-पाप कौं दिल धारकै कछु द्रोह सौं ।।
आमख उच्चिष्ट भयौ इहै नही स्राध-जोग नरेस जू।
करतूत देखहु कँवर की इह दीजीयै उपदेस जू ।।२३५
गरू-वचन सुन कीय कोप परगट दै निकारौ देस सौं।
दूसरहु नाम ससाद दीनौ धिक्रीया क्रत ध्वेस सौं ।।
वन सघन मै सोइ लग्यौ विहरन काल काटन कारनैं।
दुख दीह भोगत महाँ दुस्तर पिता कौ पन पारनैं ।।२३६

---

१ दक्षिण। २ खरगोश।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

भये कालवस इक्ष्वाक भूपत देह छेह दुरंतरा।
पद राज लयेऊ ससाद नरपत क्लेस तजकैं कंतरा।।
परजा सु पालक नीत पथ सौं सत्रू घालक सूरमा।
जिग करे सरजू तीर-पै जिह जात विप्रन कर जमा।।२३७
ककुतस्थ नाँमा पुत्र जाकै इंद्र वाहक है वँही।
स्वर्गीय हारे समर मैं जग-जोर असुर वढ्यौ जँही।।
जिह काल सबही देव जुरकें विस्नु सौं कीय वींनती।
विस्नू करयौ उपदेस विबुधंन माँनीयें हमरी मती।।२३८
ककुतस्थ राजा अवधपुर कौ जाय जाचहु जाहि कौं।
महपती दाँनव मारकें सोई सुरन करहि सिहाय कौं।।
पुन वचन सुनकै रमापत के देव चाले देखकें।
तव आय पहुचे भूँम-तल कौं अवधपुर अवरेखकें।।२३९
पहुचे सु राजन के प्रवेसन आय संम्मुह अधपती।
बहु करयौ आदर बिनयजुत उच्चारकें मुख अस्तुती।।
कहीयै जु आगम कवन कारन भयौ मेरे भवन कौं।
वासी तिविष्टप लोक वसुधा गेह तज कीय गवन कौं।।२४०
जब और सुर बोले जँही सुन नृपत की कथ साँच सौं।
दुख देवतन कौं देत दाँनव तेख धेखहु ताच सौं।।
जब विस्नु पै हम गये जुरकें दयौ हरी उपदेसकें।
उपदेस सौं आये इहाँ सब संग पाय सुरेसकें।।२४१
महाराज वासव मित्र ह्वै सज समर करहु सिहाय कौं।
परसिद्ध भक्ति परांवका[1] उद्धर्न सरहु उपाय कौं।।
नृप कहेऊ सुरन निकाय कौं करलेहु जैसें हम कहैं।
मघवाँन वाहन होय मम दल दाँनवन कौं चढ दहैं।।२४२
सुर सबही बोले सुरपती सौं बनहु बाँहन वेखकै।
सुविचार अपनौ धर्म स्वारथ तजहु लज्या तेखकें।।
वन वृषभ ठाढे भये वृखा अवगाह हेत जु आपनौ।
सभ चढयौ भूपत समर कौं घट लायकै पौरुख घनौ।।२४३

१ गायत्री।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ककुतस्थ नाँम जु इही कारन भयौ ताही भूप कौं।
जनु प्रलय काज महेस जाजुल रोख धारचौ रूप कौं।।
पुन ककुद नाँम जु पीठ कौ ऊचार करत अरोह कौं।
ककुतस्थ चढकै कलह कारन दाँनवन रच द्रोह कौं।।२४४
अरु इंद्र-वाहन नाम इह पायौ जु चढ़कैं सुरपती।
पुर दाँनवन सौं जीत पाई पुरंजय संग्या प्रती।।
धन खोस कै लीनी धरोहर देवतन सौं दाँनवा।
दीनी जु पाछी देवतन कौं महा उरजस माँनवा।।२४५
मघवाँन सौं कर मिंत्रता आयै अजोध्या अधपती।
ककुतस्थ ताकौ वंस कहीयत पुहम कीरत प्रवृती।।
प्रथु नाँम ताकै पुत्र उत्पत विस्नु-अंस विसेखीयै।
वल पाय सोय परांवका परताप अधिक परेखीयै।।२४६
निज प्रथू-तनय विरंध नाँमा तनय चंद्र जू ताहिकैं।
जुवनास्व सुत कौ पिता जाहर भूप तेज सभायकै।।
जुवनास्व कै सामंत जाँनहु देस गौड़ दिगंत मैं।
साँमंत नगरी जिह वसाई वार जिह वरतंत मैं।।२४७
सामंत कै बृहदस्व सुत भौ जाहि कौ सुत जाँनीयै।
नृप कुवल आस्व निरंतरा महा निरंधर अनुमाँनीयै।।
मृध धुंधनाँमा असुर मारचौ धुंधमार वसुंधरा।
यँह नाँम परगट भयौ यातै धर्मराह धुरंधरा।।२४८
भय सुतन ताहि द्रढास्व भूपत प्रजा-पाल पराक्रमी।
हरीयस्व नाँमा ताहि सुत हुव जाहि राज जम्यौ जमी।।
ताकैंहु भयेउ निकुंभ नरपंति वरहनस्व विसेखीयै।
ताकेहु भयेउ कस्वास तनय जु अत प्रचंड असेखीयै।।२४९
जाकैंहु भयेउ प्रसेनजित वलवाँन वीर महावली।
सुत जोवनास्व भयेउ संभव दुज्जनन-सेना दली।।
ध्रुव भये ता सुत माँनधाता पेट पितु सौं ऊपनै।
हित कहत हूँ ताकी हकीकत सुनहु भूप सनै-सनै।।२५०
जनम्यौ न सुत जुवनास्व कें सत त्रीया परन्यौ सो सही।
वन बीच होय उदास विहरत मुनिन के आस्रम मँही।।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

इक मुनी आस्रम आयकै उस्वास लोनौ अधपती।
पूछी सु मुनि तिह नृप-प्रतै परचाय कहीयै प्रवृती ।।२५१
जब कही राजा जाहि सौं सुख नाँहि मोहिन सुतन कौं।
मुनिराज करकै इह मया जप जग्य करीयै जतन कौं।।
मुनिराज औरहु मुनिन कौं बुलवाय कैं जग विस्तरचौ।
मंत्रतहु करकै वेदमंत्रन भाँमनी-हित जल भरचौ ।।२५२
अनजाँन पन उठवायकै घट पाँन जल कीय महपती।
द्रग मुनन घट कौं ऊन देख्यौ होत प्रात मती हथी।।
पूछने लागे दुजहु प्रवृत कह्यौ नृपति हकारना।
अनजाँन कीनौ आचमन कुट वार कहीयै कारना ।।२५३
चुप होयकै मुनि गैल चालेऊ येक-येक उदास ह्वै।
नृप रहे अपनै निलय मै अरू उदर-सुत की आस ह्वै।।
दस मास पूरे भये दुख सौं जनन-वेला जाँनकै।
केऊ भये ठाढ़े मिल चिक्कचिक वेदना सुन वाँन कै ।।२५४
भल करेऊ दछ्छन कूख भेदन सुत निकार सँवारकैं।
कंधास्पति इम मंत्रनन कहि वेख कै जिह वारकैं।।
सुरपती[1] मन्धाता कहेऊ सुख मुखहु खोल्यौ माँनीयै।
यँह कह रुदेसिन दीय पीअई भूख त्रसना भाँनीयै ।।२५५
भये चक्रवरती सोइ भूपत विजय कीनी वसुमती।
कीय त्रसत जाँनै सबही तस्कर पर्मधार्मक छितपती[2] ।।
त्रसुदस्यु नाँम धरचौ तँही अत इंद्र बल अवगाहिकै।
सिसबिंदुकी कंन्या सुघर विध वेद कीनौ व्याहकैं ।।२५६
तिह नाँम बिंदुमती तीया सुत जने दोय सुजानीयै।
पुरुकुत्स औ मुचकंद परगट माहाप्रतापी माँनीयै।।
पुरुकत्स सुतन पराक्रमी अनरंन भयेऊ उदारकै।
हरीयस्व नाँमक सुत हुवौ धरमग्य धीरज धारकै ।।२५७
तिह भये अंगज नृप त्रधंन्वा अरुन सुत तिह ऊपजे।
सतवृत्त[3] ताकै सुवन भौ रुख कुटल सोई काँमी रजे।।

१ मू. प्र. सुरपति। २ मू. प्र. छत्रपती। ३ मू. प्र. सतवृत।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अघपूर दुज की त्रीया इक हर लई ताही हेरकैं।
कछु व्याह मैं जिह विघन कीनौं फल सौं मति फेरकैं ।।२५८
वँह विप्र की तीय व्याहता इह हरन कीनी हेर सौं।
दै गये काँनौ जात दुज वसुधापती जिह वेर सौं।।
कह दई वातै कँवर की सुन अरुन कीय सुत सासना।
सतवृत्त[1] दोनौ नाँम सोई तै भलै कीनौ भासना ।।२५६
कढ जाहु मेरै राज सौं कहुरे कपूत रिसायकैं।
द्रग देख मोकौं होत दुख दुज-द्रोह कौं दरसायकैं।।
सतवृत्त पितु सौं कह्यौ सुनकै कहाँ जाहूँ कोन पै।
जब अरुन बोले जाहु तुम जहाँ जातऊँ मन जोन पै ।।२६०
तीय हरी विप्रन की तुही कीय सुपच-कर्महु कारना।
रुच सुपच-जातन संग रहीयैं धार नीची धारना।।
सुन पिता सासन स्रवन सौं कढ दूर देस गयौ किंतै।
सँग डूँमड़न के रहत सतवृत वेस आयुस कौं वितै ।।२६१
धनुबाँन कंकट करै धारन विचरनै लागे वँही।
वासष्ट मति सौं देस-वाहर कढे जिह वातै कही।।
वासिष्ट ऊपर सत्तवृतहू अमित धारै आँमनौ।
दस-विदस[2] हू डोलत रहै दिखराय भेख डरावनौ ।।२६२
पितु अरुन सुत हित हरन प्राछत करन तपस्या वन कढे।
सतव्रित्त पाय अधर्म सुरपत बूँद !जल की नह वढे।।
दुरभिक्ष परेऊ दिगंत लौं वँह वार गत भय औरहू।
मुनिराज विस्वामित्र नै चाले सु निज त्रीय छोरहू ।।२६३
नद कौसकी पै जाय निर्भय करेऊ तप की कारना।
आसन लगाय अडग ह्वै ध्रुव-ध्यान धारी धारना।।
नि तीया पालन कुटम कौं असमर्थ ह्वै अकुलायकै।
मुनि-आस्रमन माँगन लगी जहाँ-तहाँ सुत-जुत जायकै ।।२६४
नव-वर्ष लग दुरभिक्ष निवहन त्रसत भय कौंसक त्रीया।
गुन डार मझलै सुत-गलै वँह गई करनै बिक्रीया।।

1 मू. प्र. सतवृत। 2. देश-विदेश।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सुन रुदन बालक सत्तवृत मग विपन जावत मै मिल्यौ ।
पूछी सु मुनि की त्रीया-प्रत कछु तोहि हीय नहि कलमल्यौ ।।२६५
कहि सुतन है इह कोन कौ दारा सु कोनै निरदई ।
चिललात बालक लैचली गल-डारकै गुन गहि रही ।।
तीय कह्यौ मै गाधेय-तरुनी सुतन मो मुनि संभवा ।
मम सहित सबही भूख मारे डुलै जित-तित्त डिंभवा ।।२६६
पति गये तपसा करन परहर हम न कीनी हेर कौं ।
सिसु वेचकै वित लेय साटै दिनन काटहुँ देर कौं ।।
इह सुनत सतवृत दया उपजी कह्यौ मुनि तीय कारना[1] ।
गुन छोरीयै गलबंध की वय बाल सहित विचारना ।।२६७
निरवाह करहै जीवका नित जो कहूँ सरधा जिती ।
आस्रम बतावहु आपनौ थिर रहहु तुम ताही थिती ।।
मुनि-त्रीया आस्रम आय मिलकै जोय लीनी जाग[2] कौं ।
इक वृक्ष की कह दीन याकौं पलल भक्षन पायकौं ।।२६८
नित आय लेवहु नेम सौं इहाँ मेल जावँहु आयकै ।
सुत सहित भोजन करहु सुकीया पर्मआँनँद पायकै ।।
कहि सत्तवृत गये कंतरा दिन-अंतरा नित देखकै ।
वाराह मृघ कौं मारवे वन लगेऊ निज पन लेखकै ।।२६९
निरवाह मुनि की त्रीया नित-प्रत मंस लावत मृघन कौं ।
सोइ बाँध जावत निकट आस्रम लाय ध्रम की लगन सौं ।।
माहारिखी विस्वामित्र के सुत पोख पावत पालना ।
मृघमंस चिक्कन भूँज मिलवत सुभग पावत सालना ।।२७०
गल-रसी डारी मात गालव कहत याही नाँम कौं ।
मुनि भये सोई सुक्रती मति करन तपसा काँम कौं ।।
सतवृत्त राजकुमार संमृथ चले कवसल छोरकै ।
हुय गये साँमल हिंसकन कै भृमत साँझहु भौरकै ।।२७१
वासष्ट-मति सौं पाय विपता जाहि कारन जाँनीयै ।
इह विप्र-जातिन आँमना परीआय रीत पिछाँनीयै ।।

---

१ मू० प्र० कारनं । २ स्थान ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पुन होय नाँहिन सतपदी स्त्री विप्र की नही ह्वै सकै ।
कुल-रीत जबलौ कंन्यका अवगाह् कै सबही अखै ।।२७२
सतपदी पहलै हरी सतवृत वेख कंन्या वालका ।
दुज-जात कौ गनीयै न दोखी न्यावतावै नालका[1] ।।
वेता सु सास्त्र वसष्टि द्वज-वर, धर्मरीत-धुरंधरा ।
राजा सुनाई नाँहि रीती पेख वात परंपरा ।।२७३
इह जाँन राजकुमार इनपै रोख कर भृमते रहे ।
वन मै न कोऊ मृत्र मिल्यौ परवस दुखद खुध्या[2] हीय-दहे ।।
वासष्ट की लख गऊ वन मै हथन कीनी हाथ सौं ।
वँह लेय आमख मुनी-आस्त्रम बंध तरू भरवाथ सौं ।।२७४
तीय मुनी कौसक ताहि कौ पुत्रन खवायौ पायकै ।
वासष्ट सुनकै आय वँह धिक्रीया दीनीय धायकै ।।
त्रीय विप्र की तै हरी तस्कर पिता क्रोध पिरायकैं ।
पुन गऊ मारी तीन पातक येकठे कीय आयकै ।।२७५
त्रय-संक तेरे भई तन सौं तोहि नाँम त्रसंक है ।
पापी पिसाच प्रभाव सौं कुल सूर कौ जु कलंक है ।।
सतवृत्त नाँम त्रसंक ह्वै सोइ उर ससंक अभाव सौं ।
अत निकट कौसक मुनी आस्त्रम भगवती हित-भाव सौं ।।२७६
तप करत अरू जप जाँन तीरथ पर्म-प्रक्रत[3] पेम सौं ।
उपदेस द्वज द्रढ धार आसन निब्बहै निज नेम सौं ।।
मनसा नवाक्षर मंत्र कौं जप कर्यौ वहु विध जोग सौं ।
जाचे सु विप्रन जोरकै कर अघ मिटावन ओघ सौं ।।२७७
कछु मोहि हवन कराइयै अब दसम अंस उछाह सौं ।
सिध होय कारज मोर सब पर्मार्थ पुन्य-प्रवाह सौं ।।
कथ कही राजकुमार कौं जन जेष्टवरन[4] जतायकै ।
गरू-स्राप सौं पैसाँच गत कौं लई अघ-पद लायकैं ।।२७८
करता बही तुम होम-कारज धोम आहुत धेय कौं ।
अधकार वेद न आपकौ स्रुत सुनन कौं अरू सेय कौं ।।

१ परम्परागत रीति । २ भूख । ३ गायत्री । ४ ब्राह्मण ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

इह राजपुत्र उदंत सुनकै अमित सोच उदासकै।
मन भयौ व्याकुल मोह निर्मत वीच मै वनवासकै ।।२७९
तब त्याग आसा आप तन की चिता भूमी छायकै।
प्रज्वलत करकै जहाँ पावक जारनै तन जायकै ।।
जिह जाप कीनौ जगत-जननी याद करकै अंतकौ।
परवेस करनै राजपुत्रहु तक्यौ जाहू तंतकौ ।।२८०
हित जाँन जननी सुजन हीय कौ दयौ दरसन द्रगन कौं।
पुन कह्यौ तिह परचायकै अब करहु टारौ अगन कौं ।।
भये पिता तेरे बृद्ध भूपत बेग तोहि बुलवायगें।
सब राजधाँनी सौंप कै जाप करन कौं वन जायगें ।।२८१
थिर होय रहहु इही थाँनक दूत आवत देखनै।
हम सत्यवाचा कहत हैं हित सत्यवृत सविसेखनै ।।
कर स्तुत तिह जय-जय कह्यौ श्री जगत-जनन सिधायगी।
परतीत लाय पवित्र ह्वं चित वेल आनँद छायगी ।।२८२

दोहा

कथा देख नारद कही, अरुन भूप सौं आय।
सत्यवृत तेरौ सुवन, भोगत दुख बहु भाय ।।२८३
दरसन श्रीदेवी दयौ, भयौ पवित्र भुवाल।
वनसौं ग्रेह बुलायकै, क्यौं नहो होत क्रपाल ।।२८४

छंद मोतीदाँम

सुनी कथ नारद की नृप स्राँन, विचारकै देवीय कौ वरदाँन।
निदाँन कौं जाँन भयौ निकलंक, तनै बुलवावन काज असंक ।।२८५
कही सब मंत्रिन कौं इह कथ्थ, सबै विध लायक है सतवृत्त।
करचौ हम सासन जास करूर, सँभार कै सीस कै ऊपर सूर ।।२८६
विपत्त मै डोलत है बनवास, इही सुत करन चित्त उदास।
बुलावहु ताहीय कौं इह वेर, करचौ निकलंकत देवीय केर ।।२८७
जोई सुत राजसिंघासन-जोग, लहै सुख राज प्रजा सब लोग।
सुने नृप वायक मंत्रिन साथ, मनावन चाल नमायकै माथ ।।२८८

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पहूँचेऊ जाय त्रसंकु के पास, अमातन साथ करो अरदास ।
बुलावत राज-पिता सुविचार, करौ अवलंब न राजकुमार ।।२८६
विचारकै देवीय कौ वरदाँन, चल्यौ संग मंत्रिन कौं पहिचाँन ।
अमातहू औधपुरी बिच आय, मनाय कै भूपत दीन मिलाय ।।२६०
पिता पग पुत्र करे परनाँम[1], लयौ उर लायकै लाल ललाँम ।
महाक्रस गात दकूल मलीन, रहे जट-जूट कसै रसरीन[2] ।।२६१
कह्यौ सुत देखकै लोचन वार, पिता पिछतायकै किन्नेऊ प्यार ।
करचौ करतव्य अजाँन करूर, दिसंतर दीन निकारौय दूर ।।२६२
क्षमा करीयै सुत मोक्हँ खूँन[3], इहै दिन फेर भई मति ऊँन ।
करी पितु वीनती राजकुमार, भरे हम औगुन के अघभार ।।२६३
खिमा कर माफ करे सुत खूँन, दया पितु राज विचारकै दून ।
इही हम माँनत है उपकार, सनातन मात-पिता सुविचार ।।२६४
मँगायकै दूसर आसन मेल, झुकायकै हाथन बाँहन झेल ।
नजीक कौं वैठक दीन नरेस, अनूपम दैन लग्यौ उपदेस ।।२६५
प्रजाकहू पालन नीत प्रमाँन, लहै वट न्याय की रीत निदाँन ।
करै नहि झूट सौं कोय कथंन्न, सदा सत सील रहै सुप्रसंन्न ।।२६६
कुमारग-गाँमीय पै कर क्रुद्ध, निवारन कारन काज निसिद्ध ।
दिवावत क्रूरन चोरन दंड, पराक्रम ताहि दिखाय प्रचंड ।।२६७
करै वस इंद्रीय कौं तज काँम, गहै नहि लोलुप ह्वै सुखग्राँम ।
सपुत्र कौं काज लहै हित सिद्ध, सुमित्रन मंत्र विचार सनिद्ध ।।२६८
अकारज कारज चित इकंत, मिलायकै गूढ़ रखै निज मंत ।
लघू जिह वैरीय कौ वड़ लेख, दहै तिह च्यार उपायन द्वेख ।।२६६
करै कोऊ भेद की वात कुमित, वँही लख आपसौं राखीये अंत[4] ।
पिछाँन कै हेरक चातुर पूर, दसू-दिस वात मँगावहि दूर ।।३००
अरिष्टहु इष्ट विचार अरथ्थ, सुकारज और अकारज सथ्थ ।
करै हित आपनौ जाँनकै काँम, विचारकै लावहि नाँहि विराँम ।।३०१
निरथ्थक-वाद तजै कर नेम, जथा कछु वात करै नय जेम ।
सधै नही वंचक दुष्टन संग, रचै नही नारन कौ वहु रंग ।।३०२

१ प्रणाम । २ रस्सियों । ३ अपराध । ४ अन्तर=दूर ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

परायन पाप जुआ मदपाँन, तजै सुख राग-तरंगन-ताँन ।
कुनारीय वारवधू कुटनीन, पराइय नार तजै परवीन ।।३०३
करै जन और निवारन कार, करायकै दंडहु कौल-करार ।
क्षिपा[1] जब च्यार घटी रहै सेस, बतावत ब्रह्म-महूरत वेस ।।३०४
नहावत लायकै ऊत्तम नीर, सुधारत अँबर स्वच्छ सरीर ।
परांबका-पूजन ध्याँन पुनीत, करै विध वेद सौं अस्तुत क्रीत ।।३०५
चढै धन-धाँनहू संतति वित्त, पदारथ च्यार लहै परवृत्त ।
गहै चरनोदकहू जुत ग्याँन, मिटै गृभवास कौ दुःख महाँन ।।३०६
जिते द्वज वेद-परायन जाहि, वसायकै आदर धाँम बुलाय ।
सुभासन ताहि करै सनमाँन, दीयै गऊ सोवृनहू अन[2] दाँन ।।३०७
दुजन्मन जाँनहुं भूमपै देव, सदा सुभदायक ताकँह सेव ।
बतायकै राज की नीत विसेख, कँवारकै भूप कर्‍यौ अभिषेक ।।३०८
गयौ तट गंग सोई तज ग्रेह, दई हित आप ऊधारन देह ।
करी संग राँनीय सेवन-काज, सबै सतवृत्त कौं सूँप समाज ।।३०९
कर्‍यौ तप-साधन त्याग कै काय, जम्यौ सोई इंद्रपुरी बिच जाय ।
जमाय कै राज त्रसंक जमीन, पराक्रम जाहि प्रचारीय पीन ।।३१०
वसष्टहु आय मिले तज वंक, तप्यौ धर छत्र नरेस त्रसंक ।
करे जिग होम जथा करतूत, सबै विध सूरज-वंस सपूत ।।३११
हितू जग पूत भयौ हरचंद, उहा सत माँनहु पूरन इंदु ।
सबै सुभ लच्छन जाहि सरीर, बिचच्छन काज महा[3]वरवीर ।।३१२
विसारद वेद की रीत विधाँन, जिही सुखदायक लायक जाँन ।
कर्‍यौ जुवराज तिही अभिषेक, दुजन्मन जोर महूरथ देख ।।३१३
धुरंधर जाय वसिष्ट के धाँम, पदांबुज कीन गरू-परनाँम ।
कही करजोरकै भूपत कथ्थ, सनातन आद गरू समरथ्थ ।।३१४
अमाँनुष-भोग सुरालय येह, दिखावहु आनँद मानुखी-देह ।
करावहु जग्य तथा जप कोय, मुनीसुर लोक वसावहु मोहि ।।३१५
डरावत मृत्यु भयंकर दोख, मृतु विन चाहत है हम मोख[4] ।
भली विध देवन भोगहि भोग, अमीरस पाँन सौं होय अरोग ।।३१६

१ रात्रि। २ अन्न। ३ मू प्र. माहा। ४ मोक्ष।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

विलंब न कीजीयै वेद विचार, अहो अभिरूप करौं उपचार ।
विचारकै उत्तर दीन वसिष्ट, इहै तुम भाखत वात अनिष्ट ।।३१७
अहो तन मांनव कर्म-अधीन, परायन पुंन्य भये परवीन ।
वसे मृतु होंयकै देवन-वास, अनांद सौं नेम इही अविनास ।।३१८
वसिष्ट की वात सुनी हीय वंक, तमोगुन पायकै बोल असंक ।
भरे रिस मो-हीय पै सोइ भाव, अजौं नहीं जांनत ताहि अभाव ।।३१९
तज्यौ अहंकार न कारन ताहि, पुरोहित और के पुज्जहि पाय ।
करावहि जिग्य हमै करतब्ब, सनांतन मांनहि ताकँह सभ्य ।।३२०
सुरालय जावहि सुक्रत साथ, विचारकै क्यांन कहौ गरू वात ।
सुनी इह भूप की वात वसिष्ट, तपायकै[1] श्राप दयौ पुन तिष्ट ।।३२१
भयौ निकलंक रह्यौ तऊ भाव, पिसाच की बुद्ध गह्यौ परभाव ।
हरी तीय विप्र करी गऊ हांन, महा अधगांमीय नीच महांन ।।३२२
भयौ जग जाहर मै मति भंड, दिखावत जोग महा जम दंड ।
चहै सुरलोक के भोग चिरत्र, इहै तन मांनव सौं अपवित्र ।।३२३
भये मृतु पै न मिलै सुख-भोग, अनेकन कांम करे अनजोग ।
पराक्रम पायकै होहु पिसाच, वसिष्ट के साच सुनौ इह वाच ।।३२४
दयौ फिर श्राप गयौ नृप दूर, धरी उर आस मिली सोइ धूर ।
गही तव फेरु वँही दुरगंध, सरीर की नासत होय सुगंध ।।३२५
सुवर्न के कुंडल मंडत स्रांन, प्रभाहथ होगये सोय पखांन ।
थई गज-चर्म ज्युही छवि थूल, धंसी सुच वास मलांनीय धूल ।।३२६
वनी तन-आक्रतहू विपरीत, भरे अघ-भार भये भयभीत ।
गये गृह कौं न करयौ वन-गांन, सरूप कौं धार पिसाच समांन ।।३२७
कुटी तट गंग महीपत कीन, दसा दुखदायक सौं भये दीन ।
सुनी हरचंदहु वात सपुत्र, तहां सव मंत्रिन भेजेऊ तत्र ।।३२८
कहे तिह जायकै भूप कथंन्न, इकंत मै बैठ भये अप्रछंन्न ।
सरापत[2] होगये और सरूप, रहे तऊ पुत्र के तीरथ-रूप ।।३२९
पधारहु औधपुरी सुत-पेम, निभावहु सासन संजुत नेम ।
संबोधन मंत्रिन कौं कर साथ, निवेदन किंन्नीय कोसलनाथ ।।३३०

१ क्रोधित होकर । २ शापित ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सुनी हरचंद की बात सलाह, इहै हीय फेर कही अवगाह।
हितू सुत मेर महा[1] हरचंद, समै इह मोर विचारीय संध ।।३३१

दोहा

गायत्रीजप–निष्ट गरू, दीनौ श्राप दुरंत।
भोग करहुँगौ भागवस, अवधपुरी सौं अंत ।।३३२
पुत्र मोर हरचंद प्रीय, करहु राज-अभिषेक।
आवहुँगौ नही मै अवध, वपु चँडाल कर वेख ।।३३३
करहु राज-कारज कुसल, सब मंत्रिन कौ साथ।
मो सुत अरू मेरे मँही, गनहु न दूसर गाथ ।।३३४

छंद त्रौटक

सुन भूप त्रसंक के सासन कौं, सब मंत्रीय थाप सिंघासन कौं।
कीय चचंक भाल कुमारह कै, भुज ताहि धरचौ रज-भारह कै ।।३३५
हरचंद कौं देख प्रजा हरखी, वरखा अवग्राह[2] मनौ वरखी।
उत भूप त्रिसंक इकंत मही, तप-साधन लागेऊ ठौर तही ।।३३६
परवीन अराधन सक्तिपरा, जप मै वपु जोग जमाय जुरा।
मुनि कौसक केतक काल मंही, तप साधकै आयेऊ धाँम तही ।।३३७
महिला जुत पुत्रन आय मिले, दोऊ ओर वियोग कौ दुःख दले।
कहनै कँह लागेऊ वीती कथा, जुत पुत्रन नारीय देख जथा ।।३३८
तप नेम करचौ पँहिले तनकौ, इतनै मँह काल परचौ अनकौ।
पराजा वस भूख पिरावन मै, खिन कंद लगे फल खावन मै ।।३४९
हम भूख विजोग बिहाल भये, नहि फूल मिले कंद मूल नये।
विभुखा[3] जब काजल-कोर वढी, चित आय अनर्थ की वात चढी ।।३४०
चलकै हमहू गये चोरीय सौं, जब जाय चंडालय जोरीय सौं।
भरकै लख हाँडीय भोजन की, पल पूरन सिद्ध प्रयोजन की ।।३४१
कवका[4] हम लेन लगे कर मै, घर कौ धनी जाग उठ्यौ घर मै।
सोइ वेल[5] कह्यौ हमसौ सुपचा, पहिचाँनहु कुक्कुर-मांस पचा ।।३४२

१ सू. प्र. माहा। २ दुर्भिक्ष। ३ विभुक्षा = भूख। ४ ग्रास = निवाला। ५ समय।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कुन हौं तुम चाहत्त भक्ष करा, पुन दोष न दीजीयैं मोहि परा ।
बच बोल उठे हम ब्राँमन हैं, भय भूख-ग्रसे मति भ्राँमन हैं ।।३४३
कछु सुक्षम धर्म की रीत कहै, गनकै हमहूँ वँह नीत गहै ।
मुनि भाखत आपतकाल मही, निरनैं जिह मेध अमेध नही ।।३४४
तन राखीयैं जाहीय ताहीय सौं, कछु दोष लगै नही काहीय सौं ।
मँडकै वरखात न मेघ मही, इहतौ हम जाँनत दोष वँही ।।३४५
मुख बोल कहे हम आप मतै, जुरकै नभ-छायेऊ मेघ जितै ।
गज-सुंड़ ज्युँही जलधार गिरी, वरखैं-वरखा चमकैं-विजुरी ।।३४६
तिह देख चंडाल कौ ग्रेंह तज्यौ, अत आनँद आय ह्रदैं उपज्यौ ।
भर मोद सबै विध भूख भगी, ललचाय सुधर्म की चाहि लगी ।।३४७
पुन पूरब राख लयौ पन[1] कौं, तिह तै नहो दोख लग्यौ तन कौं ।
हमरी गत येह भई महिला, परकास करी तुम सौं पहिला ।।३४८
तुमही कहीयैं कछु वात तीया, हित बालक सौं हहरात हीया ।
सुन वात इहै पति की सबही, तज व्याज लगी कहनैं तवहीं ।।३४९
तप कौं कर नेम गये तुम तौ, हित पुत्रन ग्रेह रही हम तौ ।
अन-काल परचौ इतनैं अरसैं, डहकाय रही विभुखा डर सैं ।।३५०
कंद-मूल मिले नँही फूल-फली, फिरती रही खोजन-काज फली ।
निरवाह कौ नाँहि लख्यौ निरनौ, सुत कौं न मिल्यौ कितहूँ सरनौ ।।३५१
गहि पुत्र कौं वेचन काज गई, रसरी गल डारकै मार रही ।
चिललावत बालक लार[2] चल्यौ, मग मै इक राजकुमार मिल्यौ ।।३५२
पुन बोल कह्यौ तुम को प्रमुदा, मोहि साच वतावहु वाच मुदा ।
सतवृत्त हमारौ है नाम सही, गँनीयै कुल छत्रीय-जात गृही ।।३५३
दुख बाल कौ देख कै आत दया, तुमकौं इह पूछत वात तया ।
छिन होय गई सीयरी छतीयाँ, वहुरैं हम ताहि कही वतीयाँ ।।३५४
रिखी कौसक की सुनीयै रमनी, गहि वालक वेचन कौं गमनी ।
तप-साधन कौं तीय छोर तनैं, सोइ चालगये न मिले सुपनैं ।।३५५
हठ पाहन सद्रस कीन हीया, सिसु वेचत काल लखै समीयाँ ।
सतवृत्त कह्यौ प्रवृती सुनकै, मत वेचहु बालक है मुनकै ।।३५६

१ प्रण । २ पीछे ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पल-भक्षन कौं हम नित्य प्रतै, तुम देवहिगे दुरभिक्ष तितै ।
विसवास जिही गृह आय वसी, दुरभिक्ष की आँच[1] नही दरसी ।।३५७
इक द्योस कुमार अहेरन[2] मै, मृघ सूकर नाँहि मिले वन मै ।
हठ पाय वसिष्ट की गाय हनी, कर क्रोध कौं श्राप दयौ कुहनी ।।३५८
धुर ताही कौ नाम त्रसंक धरचौ, कऊमार कौ रूप चंडाल करचौ ।
भर दोख फिरै भटक्यौ-भटक्यौ, सुख औधपुरी तजकै सटक्यौ ।।३५९
हमरे हित सौं अपराध हुवा, जिह दोस तै आपहु नाँहि जुवा ।
अघरूप छुरावहु औगुन कौं, गुनही पै करौ तुम ही गुन कौं ।।३६०
मुनि कौसक वात सुनी प्रमुदा, जब बोल कह्यौ हम नाँहि जुदा ।
गरूकर्म तथा तप की गत सौं, मल राज मिटावहिगे मति सौं ।।३६१
त्रीय पुत्र सँबोध चले तपसी, दुख मेटन काज त्रसंक दिसी ।
मुनिराज नरेस सौं जाय मिले, झुककै दोऊ हाथन पाँय झिले ।।३६२
दुज उत्तँम आसरीवाद दयौ, नमकै सिर भूप चढाय लयौ ।
कुसलात कौं पूछ मुनिंद्र कह्यौ, हमरे हित सौं तुम स्राप लयौ ।।३६३
अब माँगीयै जो कछु इंछत है, वरदाँन लहौ मन-वंचत है ।
कर जोर कै भूप त्रसंक कही, उरमै अभिलाख है येक इही ।।३६४
वपु माँनव सौं सुरलोक वसूँ, बहु देवन के सुख कौं विलसूँ ।
मुनिराज क्रपाल ह्वै देहु मती, समरथ्थ सहाय करौ सुक्रती ।। ३६५
जिग जाप करावहु कोय जथा, करनी जुत उत्तँम पाठ कथा ।
नृप कौसक बात सुन्यौ निरनै, क्रतु-हेत विचार लगे करनै ।।३६६
सब वस्तु मँगायकै जाहि समै, जिग[3] कारन किन्नीय सोधजमै ।
दुजजात निमंत्रन फेर दयौ, क्रतु रोकन काज वसिष्ट कह्यौ ।।३६७
भुवदेव सु मंत्रन के भरता, कोऊ आये नही जिग के करता ।
मुन कौसक जाँन वसष्ट मतौ, छुस भूपत सौं कर दीन छतौ ।।३६८
उर होय ससंक त्रसंक इतै, तपसी मुनि कौसक बोल तितै ।
मत होवहु भूप उदास मना, गृह देवन कै करीयै गवना ।।३६९
तबही जल हाथ मै लीन तही, जप मात इकाक्षरी कीन जही ।
करनी तप जाहि संकल्प करचौ, अघगाँमीय भूपत कौं उधरचौ ।।३७०

---

१ अग्नि, प्रभाव । २ शिकार । ३ यज्ञ ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

उड़ चालेऊ सोय सुरालय कौं, भर मोद सों त्याग सबै भय कौं।
पहुँच्यौ सोई जायकै इंद्रपुरी, कोउ देवन इंद्र पुकार करी ।।३७१
वपु वेख चँडाल वनावट कौ, इक आवत है जिनकौं अटकौ।
पुरहुत कह्यौ सतवृत्त-प्रतै, कलि-रूप अहो नृप जात किंतै ।।३७२
निज पत्तंन मैं कोऊ धाम नही, तुम वास करावहि जा गत ही।
तिहतै फिर जावहु भूतल मै, थित देवपुरी न रहौ थल मैं ।।३७३
इतनी कथ इंद्र मुखा उचरचौ, अवधेस त्रसंक अधो उतरचौ।
रिखी कौसक-कौसक बोल रह्यौ, वहुरैं हम भूतल आत वह्यौ ।।३७४
करीयैं अब मोर सहाय कहू, दुख दीरघ पाप की आँच दहू।
थित होहु कह्यौ रिख थंभन कौं, विच व्योम के पाय दिस्रंभन कौं ।।३७५
थिर होय रह्यौ जितही थित कौं, करनै रिखी लाग गये क्रतु कौं।
निपजावन[1] लागेऊ स्रष्ट नई, जप-जोग तथा तप-जोग जई ।।३७६
वनहै सुरलोकहु स्रष्ट वनै, मघवा कीय भूप त्रसंक मनै।
वंह उत्तँम वास वसावहिगे, पुरहूत जवै पछतावहिगे ।।३७७
मुनिराज सिधत सुन्यौ मघवा, मुनि धाँम कौं ताँम लयौ मगवा।
विनती कर इंद्र कहे वचना, रिखीराज नई न रचौ रचना ।।३७८
घट दिव्य करी नृप एह घरी, पुन वास वसावहि देवपुरी।
विसवास कै वासव नै वरजा, रिखीराज त्रसंकहु दीन रजा ।।३७९
तन होय पवित्र लयौ तवहीं, जोइ इंद्र के साथ गयौ जवहीं।
मुनि कौसकहू मुद पाय महा, रुच पायकै आपने धाँम रहा ।।३८०

दोहा

सुनी वात हरचंद-सुत, पितु भये मोहि पवित्र।
सँदेही[2] पठये सुरग, मुनिवर विसवामित्र ।।३८१
मुनिवर विसवामित्र कौं, उर समुझौ उपकार।
करत वड़ाई नित कहत, धंन्यवाद निरधार ।।३८२
पितु कौ मिटचौ कलंक पुन, गयौ इंद्र-संग ग्रेह।
होय सुखी वाढचौ हरख, नृप हरचंद निहेर ।।३८३

---

१ उत्पन्न। २ संदेह=सशरीर।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

छंद मोतीदाँम

भयौ हरचंद कै आनंद भौंन, गयौ सुरलोक पिता कर गौंन।
करै रिख कौसक की नित कीत, गवावत मंगल के पुन गीत ।।३८४
मिटी हीय छोभ[1] भयौ मन-मोद, वढ़ावत राँनीय राज विनोद।
विधोविध राचत भोग-विलास, उपज्जीय अंगज की उर आस ।।३८५
वसिष्ट कौं बूझन काज विचार, नरेस्वर धाँम गये निरधार।
निवेदन संजुत वोल नरेस, अहो गरूराज करौ उपदेस ।।३८६
विना सुत मुक्त न होय वरिष्ट, इहै हम सिद्ध करौ तुम इष्ट।
गये गरू भूल रहे निज ग्रेह, सु होवत रावरै नाँहि सँदेह ।।३८७
मिटायकै संक कह्यौ हम मंत, विचारहु जास ह्रदै वरतंत।
करावहु जो कछु उत्तँम काँम, लहूँ सुत सुंदररूप ललाँम ।।३८८
विचारकै वाँनीय वोल वसिष्ट, अराधहु यादपती[2] सुत ईष्ट।
संताँन की वृद्धिय-कारक सोय, कहै ईतीहास पुराँन सकोय ।।३८९
दहू पुरपारथ और दईव, समाँन ही जाँनीयै भूप सदीव।
अनाद सौं उद्यम आस्रत ईस, करै सिध कारज न्याय कहीस ।।३९०
सुनी गरूराज की वात सनंद, हल्यौ तप-साधन कौं हरचन्द।
वस्यौ तट गंग इकंत मैं वास, अरावन यादपती-सुत-आस ।।३९१
मिलायकै आसन पद्म महीस, अराधन लागेऊ पछ्छम-ईस[3]।
धरचौ उर-ध्याँन विसास कौं धार, परंजन[4] नाँम प्रचार-प्रचार ।।३९२
भली विध जाँनकै पुत्र कौ भाव, दयौ नृप यादपती दरसाव।
कह्यौ अवधेस कहौ कोऊ काज, विचारकै देवहिगे निरव्याज ।।३९३
जहाँ हरचंद कह्यौ कर जोर, मिटावहु ऐव[5] अपुत्र-की मोर।
इहै मम वीनती माँनहु येक, सिवाय न मागत हूँ सविवेक ।।३९४
परंजन भूप कह्यौ परचाय, तुमैं सुत देवहुगे हम ताहि।
दिवावहु मोहीय कौं वलदाँन, विचार कै जग्य की रीत विधाँन ।।३९५
सुनी कथ यादपती सुविचार, करी पुन वातहू अंगीयकार।
परंजन पाय करार प्रधाँन, दयौ सुत होवन कौं वरदाँन ।।३९६

---

१ क्षोभ। २, ३, ४, वरुण। ५ दोष।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तज्यौ तप भूप मिल्यौ निज तीय, सयब्या[1] राँनीय नाम सुकीय।
बिबै मिल किन्नेऊ भोग-बिलास, बस्यौ सुत ताहीय कैं गृभवास ।।३९७
भये दस-मास भयौ सुत भूप, उपज्जीय आँनँद आय अनूप।
वधाई के वाजन लागेऊ बाज, सबै सुख राचत राज-समाज ।।३९८
महोछव[2] होय रहे चहु-मेर, वने द्वज यादपती जिह वेर।
विलंब न कीन कह्यौ सुविचार, करयौ जिग ह्वैगये राजकुमार ।।३९९
जबै हरचंदहु भूप सुजाँन, प्रचेताय वीनती कीन प्रमाँन।
जुपै दस-द्यौस पिता सुत जोग, प्रसूतीय नारीय मास प्रयोग ।।४००
पवित्र न होय जितै प्रमुदाह, करै जिग कारन धारन काह।
सुध्रमं के जाँननहार सुग्याँन, वनै किह रीत सौं जग्य-विधाँन ।।४०१
वितै इक मास जितै पति-वार[3], सुधाँम कौं जावहु राज सिधार।
गये जब यादपती कर गौंन, भये सुख राज रहे निभ्र भौंन ।।४०२
निहारकै द्रोनदुघा नव अंग, सुवर्न मै जाहि मढायेऊ स्रंग।
ज्युही खुर तार[4] मढे दुइ जोर, करी दत विप्रन गाय करोर ।।४०३
दये तिल-पर्बतहू केऊ दाँन, परायेऊ रोहित नाँम प्रधाँन।
भयौ जब पूरन मास सुभाय, इतै फिर वर्न पहुँच्यौ आय ।।४०४
करौ जिग फेर कह्यौ नृप केर, बुलावत मोकह वेर ही वेर।
ह्रदै बहु सोक भयौ हरचंद, फस्यौ दहु ओर सौं दुःख के फंद ।।४०५
करी तऊ वीनती जोर करग्ग, विचारकै कारन कौं पसुवग्ग[5]।
जमै नही दंत जहाँ लग जोय, करै बलिदाँन पसू नही कोय ।।४०६
इहै सिसु दंतन ऊगेउ आय, नही बलिदाँन के लायक न्याय।
विचारकै सोचहु नैक बिवेक, परंजन राज दयाल प्रवेक ।।४०७
गये जब यादपती निज ग्रेह, दया कर भूपकौं आसिष देह।
विते दिन केतक औध विताय, उगे मुख दंतहु रोहित आय ।।४०८
परंजन विप्र कौ वेख प्रचार, दिखायेऊ आवत राज-दवार[6]।
जुहारकै जाचना किन्नीय ज्याग, अहो नृप पुत्र तजौ अनुराग ।।४०९
बुलावत मोही कौं बारमवार, प्रतग्या क्यों न करौ अब पार।
करी सुन बीनती भूप कृतग्य, अहो कहा यादपती भये अग्य ।।४१०

१ शैव्या। २ महोत्सव। ३ वरुण। ४ चाँदी। ५ पशुवर्ग या कोटि। ६ द्वार।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

करे नहीं दूरहु गर्भ के केस, सिसू किह रीत सौं मागत सेस।
करावहि मुंडन राजकुमार, लहौ बलिदाँन न देर लिगार ।।४११
परंजन कीन विदा परचाय, भयौ उर आँनँद भूप सुभाय।
केऊ दिन बीतत मुंडन कोन, प्रचेताय आयेऊ पौरुख पींन ।।४१२
करावहु जग्य कह्यौ कर क्रुद्ध, सबै विध बाल भयौ इह सुद्ध।
सुनायकै बोलेऊ भूप सँदेह, अजाँनही बाल भयौ सुध येह ।।४१३
त्रवर्न कौ धर्म न जाँनत तात, जमै जिह वेर सौं सुद्रही जात।
करै जबलौ न अहो बटुकर्न[1], बनै नही ब्राँमन खत्रीय-वर्न ।।४१४
कह्यौ क्रम वैस्यहु कौं करनीय, जथारथ सोच विचारहु जीय।
भयौ सिसु नाँहिन क्षत्रीय-भाव, करौ बलदाँन न जग्य कहाव ।।४१५
जनेऊ कौं धारन कारन जाँन, सिधायकै वर्न गये सुसथाँन।
बढ्यौ सिसु बीतेऊ ग्यारह वर्ष, करयौ उपनाय[2] जिही उतकर्ष ।।४१६
विचारकै आय गये तँही वर्न, करयौ नृप अंगज कौं बटुकर्न।
हुवौ जिह चित जबै हरचंद, निरंधर काज सौं औध-नरिंद ।।४१७

दोहा

कह्यौ वरुन नृप कीजीयै, जिग-सामग्री जोर।
आँनाकीनी करत अब, कर-कर बात करोर ।।४१८
राजा बोल्यौ रहँस सौं, त्यारी जग्य तमाँम।
सहँसकार[3] कछु रहेउ सुत, करन-जोग सोई काँम ।।४१९
कर्म जनेऊ दैन कीय, दया आपसौं देव।
दोख छुट्यौ बंधत्व द्रढ़, सो प्रभाव तुम सेव ।।४२०
निगम कहत उपनयन सौं, मास षष्टमै माहि।
होय समावर्तनहु हित, करन देहु सुध काय ।।४२१
दैहु पुत्र बलिदाँन मैं, करकै जग्य क्रतग्य।
ऊरन होवहु आपसौं, सुनहु देव सरबग्य ।।४२२
गये वरुन करकै गमन, सुन स्राँनन सौं संध।
भूप रह्यौ निज भवन मैं, उर उपजाय अनंद ।।४२३

---

१ यज्ञोपवीत। २ उपनयन-संस्कार = यज्ञोपवीत। ३ संस्कार।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

षष्ट मास गये खेम सौं, वीतत लगी न वार।
काज समावर्तन करन, लागेऊ ह्वै लाचार ।।४२४
आवत-जावत अवध मै, वरुन लखे केऊ वार।
पितु कौं लख्यौ उदास पुन, रोहित राजकँवार ।।४२५
पूंछन लागौ जन-प्रतै, किहु कारन कहदीन।
भागौ सुत भयभीत ह्वै, निफजी वात नवीन ।।४२६
बहुरै इत आये वरुन, जिग्य करावन जात।
वोल्यौ राजा बरुन सौं, तुमहि दोस नहि तात ।।४२७
भाग्यौ सुत मो भाग सौं, जीव छिपाय जरूर।
पाई खबर न तिह प्रतै, देस दिसंतर[1] दूर ।।४२८
कहौ आप जैसी करू, लेख करचौ लाचार।
करनी मेरे करम की, है को मेटन-हार ।।४२९
कह्यौ बरुन सुनीयै कुटल, बार बुलाय विचार।
करचौ मोर उपहास क्रम, धरम तोहि धिक्कार ।।४३०
आमय[2] ह्वै है उदर मै, पूर जलोदर पाप।
द्रोही तेरै दोष कौं, सीस चढावहु ४३१

छंद मोतीदाँम

गये कहि यादपती निज ग्रेह, दुरंतर रोग भयौ नृप-देह।
जही दुख भोगत आठहु-जाँम, नही सुख खावन कौ कछु नाँम ।।४३२
भयौ अनुवछ्छर भोगत भीत, सुनी सुत रोहित वात सचीत।
चल्यौ मिलनैकह कंतर छोर, दुजन्म के वेख पुरंदर दौर ।।४३३
मिले मग रोक दई तिह मंत, विचारहु कालही कौ वरतंत।
भरचौ पितु आपने औगुन भार, करै बलिदाँन कौं राजकुमार ।।४३४
विचारहु नीत कै साथ विवेक, विसास न रोगी कौ संग विसेक।
जिही विध राखहै आपनौ जीव, करै निज अर्थ अनर्थ कलीव[3] ।।४३५
मरै जब जावहु राज मुकाँम, धरोहर लेहु धरा धन धाँम।
सुनी दुज कतँम इंद्र सलाह, रह्यौ रुक जावन सौं घर राह ।।४३६

---

१ देश-देशान्तर। २ रोग। ३ क्लीव।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

रह्यौ वन बीच सोई पग रोप, गंही गिर-किंदर कौं मति गोप।
मनोरथ कीनेऊ फेर मिलाँन, मिले मग आय ज्युँही मघवाँन ।।४३७
विनास कौं भूप लख्यौ वरतंत, मिले कुल-प्रोहित सौं कीय मंत।
वसिष्टहु आँनीय वीतत वात, घली जजुमाँन कै ऊपर घात ।।४३८
कही गरू मंत्र विचारकैं कथ्थ, अहो नृप भूल भये असमथ्थ।
कह्यौ मनु-नीत मै पुत्रहु क्रीत, वसावहु मोलकौ दै कछु वीत[1] ।।४३९
जही बलीदाँन करौ रच ज्याग, भरोसौ राखहु आपने भाग।
गयौ सुत ताहि कौं कोन गुनाह, रखै जीय आपनौ अपनी राह ।।४४०
सुन्यौ गरू-बोध भयौ सुप्रसंन्न, कह्यौ सोई मंत्रन बोल कथंन्न।
विचारकै मंत्रिन मंत्र विसेस, दिसा-विदसाँन चले विच देस ।।४४१
अकिंचन जाहि मिल्यौ दुज येक, वसै अजिगर्त सु नाँम विसेक।
जिही सुत तीन सुनी कथ जास, पहूँचेऊ धीसक[2] ताहीकै पास ।।४४२
कह्यौ तिह तीन मै देवहु येक, दयै सत गाय अहो दुज देख।
जिही अजिगर्त कहेऊ जथाह, तुमै सुत देवहि येक तथाह ।।४४३
बड़ौ सुन-पुछ न सक्कुहि वेच, समापन काल करै जल-सेच।
सुनो लांगूल लघू सुविचार, पखै सोइ मात रखै कर प्यार ।।४४४
तनै मझलौ सुनसेफ तिकोय, वसायकै चित्त सकाय विकोय[3]।
सुने कथ मंत्रीय होय प्रसंन्न, दई सत गाय सुमोल मै दंन्न ।।४४५
लयौ सुनसेफ कौं संग लगाय, पहूँचेऊ औधपुरी सुख पाय।
करचौ त्रिम हाजर दारक क्रीत, प्रचारेऊ जग्य कौं काज पुनीत ।।४४६
सतंभ कौं बाँध दयौ सुनसेफ, थिती जिह बाँधत है पसूथेफ।
गह्यौ जव कंपन लागेऊ गात, चहूँ-दिस देखत औ चिललात ।।४४७
निसूदन-कारन दीन निदेस, उठे केऊ हिंसकहू अवसेस।
गये वध-कारन आय गिलाँन, हटे दुज-बालक देखत हाँन ।।४४८
दया-वस होय गये सब दीन, किहूँ लख बालक घात न कीन।
सभासद देख करचौ नृप स्वाल, करौ करतव्य विचारकै काल ।।४४९
सभै चुप साध रहे सुन स्राँन, उठे अजिगर्त पिता सिसु आँन।
कह्यौ सब है धनवाँन कुलीन, दरद्र मै डूब रहे हम दीन ।।४५०

१ वित्त, धन। २ मंत्रीगण। ३ बेच सकते हैं।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अहो सत गाय दिवावहु और, ततौ सुत कौ सिर डारहु तोर।
रजाबँध होय कह्यौ महाराज, करौ हित जाँनकै पूरन काज ॥४५१
लहौ तुम मांगत हौ सोइ लाभ, समापत कीजीयै जग्य सताब।
गहे जब आयुधहू अजिगर्त, सु अंगज मारन किन्नीय सर्त ॥४५२
हल्यौ निज कारज सौं कर हेत, पिसाँचकै घोर चंडालहु प्रेत।
कह्यौ तिह जायन राख सकोय, लख्यौ भयभीत भजे सब लोय ॥४५३
सभा-विच होय कुलाहल सद्द, गमागम माचीय आहि गरद्द।
सुन्यौ इह अप्रीय वाँनीय-सोर, दयानिध आयेऊ कौसक दौर ॥४५४
अहो नृप विप्रकौ बालक येह, डरावत भीत सौं धूजत देह।
दया कर छोरीयै येह दयाल, परायन नीत करौ प्रतिपाल ॥४५५
पती पुरऔध त्रसंक के पूत, कहै हम सोय करौ करतूत।
पिता तुम होगये रूप पिसाच, सोइ सुरगीय भये गृहि साच ॥४५६
विलावहि आपही की तन-व्याध, अबै सिसु देहु न दुख असाध।
इही जिग-जाचना माँगत आज, समापहु दाँनिन के सिरताज ॥४५७
कही बहु या विध कौसक कथ्थ, न माँनीय भूपत येक निरथ्थ[1]।
सबै विध कौसक बुद्ध सयाँन, गये सिसु-पास जबै कर गाँन ॥४५८
विसासकै मंत्र दयौ इकवर्न, करचौ सिसु जाप जँही सुखकर्न।
प्रगट्टेऊ यादपती सिसु-पास वढचौ जव जीवन कौ विसवास ॥४५९
सबै जन बोल उठे जय सद्द, निहंसत ढोल नगारन नद्द।
महीपत आय करचौ परनाम, करौ मन-वंचत पूरन काँम ॥४६०
छिपायकै जीव करचौ हम छद्म[2], छिमा सोइ कीजीयै जीवन सद्म।
लखै जब दाँनीय लागत लार, वनीपक[3] दोख करै न विचार ॥४६१
मिले नही पुत्र विना कहुँ मोख, दुरायकै चित्त करचौ हम दोख।
वड़प्पन राखहु आप विवेक, वसावहु नाँहि हृदै वितरेक ॥४६२
गयौ निज अंगज कोनहु गैल, सरोवर ढूँढ लये वन सैल।
मिल्यौ नही क्रीत लयौ सुत मोल, करौ जिग आपकौ पायकै कौल ॥४६३
निवाजस कीजीयै लै वलीदाँन, दिवावहु मोहि अभै-पद दाँन।
कह्यौ सुन यादपती नृप-काज, रहौ निरव्याध सदाँ माहाराज ॥४६४

---

१ व्यर्थ। २ कपट। ३ याचक।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

छुरावहु बालक बंधन छोर, तज्यौ हम द्वेष विसेकत तोर।
निरामय[1] होहु इही निरधार, अहो हरिचंद नरिंद उदार ।।४६५

दोहा

सूँनसेफ जहा थंभ सौं, छूटे बंधन छोर।
जिग्य सँपूरन करेऊ जब, सुभग भयौ जय सोर ।।४६६
जुरे सभा-विच सभ्यजन, सूँनसेफ कीय प्रस्न।
कहहु पुत्र मैं कौन कौ, साची कहहु सहिस्नु ।।४६७
सबही सभासद अत सुघर, बोले ताही बार।
अंगज है अजिगर्त कौ, निरसंसय निरधार ।।४६८
वाँमदेव बोले वचन, सुनहु सभासद साथ।
दयौ वेच अजिगर्त दुज, अरू पलटै लीय आथ[2] ।।४६९
है सुत इह हरचंद नृप, अथवा वरुन ऊबेल।
कीनी ताकौ सुत कहहु, इह सिद्धान्त अपेल ।।४७०
भयत्राता अरू अन-भरन, देत जु विद्यादाँन।
न्याय कहत अरू नीत-वित[3], सब ये पिता समाँन ।।४७१
सबही कहत सयाँन सुन, पितु अजिगर्त प्रधाँन।
कोऊ राजा कोऊ वरुन कौ, पिता कहत पहिचाँन ।। ४७२
बोले जब बासिष्ट मुनि, निरनौ करकै न्याय।
सबही वेदवित अत सुघर, इह भाखत अंन्याय ।।४७३
तज सनेह अजिगर्त सुत, वेच्यौ अर्थ वसाय।
तबही गयौ संवंध तिह, निरनै समुझहु न्याय ।।४७४
क्रीत पुत्र हरचंद कर, मारन कीनौ मंत।
तबही गयौ संबंध तिह, विखम बार वरतंत ।।४७५
करी स्तुत जप मंत्र कीय, अरू कीय वरुन ऊवार।
इष्ट स्याहि करता अवस, कहीयत विप्र-कुमार ।।४७६
मुनि हित विसवामित्र कौ, पुरखारथ अरू प्रेम।
जाही कौ सुत जाँनीयै, नाँहिन दूसर नेम ।।४७७

---

१ रोगरहित । २ अर्थ, धन । ३ नीतिवेत्ता ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वचन सुने वासष्ट के, नीत विसेसत न्याय।
बोले कोऊन बिचारकै, सभा सुजन सरसाय ।।४७८
सूंनसेफ दछ्छन सु कर, मुनि गहि विसवामित्र।
ग्रेह आपनै लै गये, प्रेम-परायन पुत्र ।।४७६
सभ्य गये रित्वक-सदन, वरुन गये निज वास।
राजा अपने ग्रेह रहे, हित चित धार हुलास ।।४८०
कथा सुनी रोहित-कँवर दूतन के मुख दूर।
पितु नृप भये निरोग पुन, प्रगट्यौ आँनँद पूर ।।४८१
निकट आय हरचंद नृप, पगन करचौ परनाँम।
सीस सूंघ पितु मिलेऊ सुत, धुन वाढी जय धाँम ।।४८२
मिल राजा सुत मंत्रि-जुत, करन लगे निज काज।
राजसूय-जिग फिर रची, मति वसिष्ट महाराज ।।४८३
होता गरू वासष्ट हुव, परसे जिनके पाव।
जिग संपूरन भयेऊ जब, पायेऊ पुज्ज-पसाव ।।४८४

छंद त्रोटक

गरू पुज्जत ह्वै सुरलोक गये, निध पाय वनायकै ठाट नये।
मुद लायकै इंदर-मंदर मैं, उत कौसक आय इकंदर मैं ।।४८५
मिलकै कथ पूछ मुनिंदरहू, सवसेख कै वेख कौ सुंनदर[1] हू।
पून कौसक पूछ वसिष्ट प्रतै, कहा पूजन पाये है येहु कितै ।।५८६
सुन बोलेऊ ताँम वसिष्ट सही, नृप काँन सुन्यौ हरचंदन ही।
जजमाँन उदार करचौ जिग[2] कौं, पुन पुज्ज कहै हमरे पग कौं ।।४८७
उनकै सम दूसर कोन इला, करता दत कौसल सूर-कला।
हुव नाँहिन है फिर होवहिगे, गुन कीरत मै जिह गोवहिगे ।।४८८
सुन कौसक बोलेऊं ताहि समै, हित वात सुनावत कोन हमैं।
हरचंद कौ वाप पिसाच हुवौ, जिनकौं लख ह्वैगयौ आप जुवौ ।।४८६
हम स्वर्ग पठायेऊ जाहीय कौं, गुन भूंल गयौ अवगाहीय कौं।
करकै करुना हम चाहि कह्यौ, दुज कौ सुत ताहि न छोर दयौ ।।४६०

---

१ सुन्दर। २ यज्ञ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पन हारगयौ कर यादपती, वँह साथहु वात करी अनृती।
अदता[1] कर छोरहि जाहि अबै, जुर जावहिगे हम जाय जबै ।।४६१
अदता न करूँ जग-वीच इला, करनी हम जोवहि पुन्यकला।
वँह आपन दाँनी वनावहिगे, जवही तुमरौ पुन जावहिगे ।।४६२
इह पैज करी हम आप मतै, सुर साखीय दै वरतैं-सरतैं।
घर ऊठ चले दोऊ ताहि घरी, पथ आप मतैं तज इंद्रपुरी ।।४६३
दिन वीत गये कैऊ देखत कैं, वचनंतर याद विसेकत कैं।
इक द्योस नरिंद अहेरन कौं, हरचंद गये मृघ हेरन कौं ।।४६४
तन सुंदर जाहि लखी तरुनी, वहु रूपवती स्वरना-वरनी[2]।
कर रोय रही सिसकारन सौं, धर[3]धोवत आँसुन-धारन सौं ।।४६५
लखकै हरचंद जही ललना, कछू देखत जास परी कलना।
करुना कर ताकह भूप कही, दुख सौं विललावत कोन दही ।। ४६६
दरसावहु मेट करू दुख सौं, रुच पाय जनाय कह्यौ रुख सौं।
हरचंद नरेस अहो हम है, गुनके करता जग कौं गम है ।।४६७
हरचंद को नांम सुन्यौ हितसौं, चतुराइ सुँनार कही चित सौं।
अरू आँसुन पोंच अँगोचन[4] सौं, मुद पाय कह्यौ दुख-मोचन सौं ।।४६८
तन कौसक साधत है तन कौं, वरीआई सौं बाँधत है वपु कौं।
करदेहु निवारन ताहि क्रीया, हहरावत है डर ताहि हीया ।।४६९
जव भूप कह्यौ हम जावत है, मुनि कौसक कौं समुझावत हैं।
तज सोच रहौ निहचिंत तीया, कर देवहि बंधन मंत्र-क्रीया ।।५००
गवन्यौ मुनि-धाँम की भूप गली, पलट्यौ दिन सीस विपत्त पिली।
तपसी मुन जाय मिले तबही, करजोर निवेदन वात कही ।।५०१
किह हेत करौ कररी करनी, अभिलाख धरौ मति उद्धरनी।
कुछ चाहत हौ हम सौं कहीयं, दुख पावत देह नही दहीयै ।।५०२
जग पीड़त होवत व्याज जँही, कौऊ काँम करै नही आज कही।
सव राज-मही इह सासन है, सोइ आप सौं कीन सँभासन है ।।५०३
मुनिराज पदारहु[5] धाँम मही, करीयै अनकूल ह्वै वात कही।
तव कौसक छोर चले तप कौं, जिह ठौर वहोर महाँजप कौं ।।५०४

---

१ न देनेवाला। २ स्वर्णवर्णी। ३ धरा, पृथ्वी। ४ अँगोछा (कपड़ा विशेष)।
५ पधारिये।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

नृपहू निज भौन गयौ नमकैं, कर जोर प्रनाँम करे नमकै ।
जनु संग वसष्टकै आग जरी, कर भूपत आय अहूत करी ।।५०५
अब कौसक रोख करचौ उर मै, इह भूप नही सुर-आसुर मै ।
करनी सुभ रोकीय कोन क्रीया, हित की नही जाँनत फूट हीया ।।५०६
तव येक निसाचर घोर तही, अनहोनी क्रीया कीय घोनी[1] वँही ।
वँह भेज दयौ फुलवारीय मैं, कर दाव रुप्यौ विच क्यारीय मैं ।।५०७
तरू तोरत दाँतन तुंडन सौं, मसलै-किसलै फल मुंडन सौं ।
खुर मारत पिंड खसोरत है, झल आँनन सौं झकझोरत है ।।५०८
कदली विदुलीतरु[2] कुंजन कौं, भुय लोट लगावत भंजन कौं ।
रखवारन आप लखी रचना, विनती कर भूप कहे वचना ।।५०९
किट[3] वाग मै आय बलाय कढ्यौ, चकचूर करै तरु रोख चढ्यौ ।
रखवारे सबै जिह घेर रहे, अततासी फिरै उमहे-उमहे ।।५१०
तऊ मारचौ मरै नही टारचौ टरै, कहीयै सोइ राज उपाव करै ।
हित वात सुनी इह हेरक की, उपवाटका अद्रीय येरक की ।।५११
भट-संग लये तिह भेरन कौं, उठ चालेऊ भूप अहेरन कौं ।
अस पै करकै असवारीयहू, धनु-बाँन रू कूँत सुधारीयहू ।।५१२
केऊ वीरन की अनोयै करकै, फुलवारीय घेर लई फिरकै ।
कर हेर वकारेऊ कुंजन मै, पहुपावल[4] के तरु पुंजन मै ।।५१३
सोइ घुर्घुर-उच्च करचौ स्वरकै, कटकाहट दंतन की करकै ।
अरू कंधर रौम उचालीय तै, निकस्यौ मनु गोलक नालीयतै ।।५१४
गिर-टौल मनौ गिर सौं गुरक्यौ, नृप आवत सूकर कौं निरख्यौ ।
कर लै धनुबाँन दयौ कररौ, चट आँनन दाब करचौ चुररौ[5] ।।५१५
किर[6] देख भयंकर रूप कुप्यौ, रन बाँन प्रहारन भूप रुप्यौ ।
सर दै जिम सूकरहू सरसै, द्रग दूर सनीड़ जु पै दरसै ।।५१६
विछरै पिचरैऊ चरै वन मै, तऊ बाँनन लाग न दैतन मै ।
भट औ रथ के भट भेरन कौं, हरचंद चल्यौ नृप हेरन कौं ।।५१७
कढ़ दूर गये माहाँ कंतर मै, अरु वीर रहे सब अंतर ।
सिर सूरज आय दुपैर-समै, भुवपालहु सूकर-लार भ्रमै ।।५१८

---

१ सूकर । २ बेंत-वृक्ष । ३ सूकर । ४ पुष्पावली । ५ चूर-चूर । ६ सूकर ।

T　CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कछु भूख लगी त्रसना कररी, भग आतप की किरनै भररी।
असहू थकगौ असवारीय कौं, वनमै न लख्यौ कहु वारीय कौं ।।५१९
नृप सोच भयौ न लयौ निरनै, सरनै न मिली कहुनी सरनै।
दरसै न कछू विदसा न दिसा, उर आय वसी भरकै अदसा ।।५२०
मन सोच रहे मुरझाय मती, सबही विध भूल भये सुमृती।
पुन चालेऊ खोजत येकपदी[1], निरखी वन ताही मै स्वच्छ नदी ।।५२१
तट तोय पिवाय तुरंगम कौं, उतरे झटकै उचरंगम[2] कौं।
जल-पाँन करचौ हरचंद जही, तरु सीतल ठाढेऊ छाह तही ।।५२२
पुर जावन के सुविचार प्रतै, उर सोच दिसा-विदसा न इतै।
पथ पूरब पच्छम नाँहि पतौ, अरु उत्तर-दच्छन भाँन इतौ ।।५२३
मन ही मन सोच रहे वनमै, द्रग भूल गये धवरै दिनमै।
तन जीरन कौसक धार तहीं, वनकै दुज आयेऊ ठौर वँही ।।५२४
कर जोर नरेस प्रनाँम करचौ, भुवदेवहु आसीर्वाद भरचौ।
पुन बूझन लागेऊ भूप प्रतै, कँहाँ राज पधारेऊ काज किते ।५२५
विसवास कौं पाय कहे वचना, रिखीराज सुनौ हमरी रचना।
वन-सूर धस्यौ फुलवारीय मै, धिक मारन की हीय धारीय में ।।५२६
भट और थके हम लार भगे, थक दौर तुरंगम आप थगे।
गम सूर नही लीय कोन गली, चित विभृम होयकै बुद्धि छली ।।५२७
गँम नाहि दिसा-विदसा गत की, हीय सोचहु वात मुनी-हित की।
हरचंद है औधपती हमहूँ, गृह-मारग भूल रहे गमहू ।।५२८
सुध मोह वतावहु येह समै, करकै परनाँम सु धाँम क्रमै।
उपकार करौ दुजराज अहो, कित मोह[3] पुरी सु विचार कहो ।।५२९

दोहा

विसवामित्र विचारकै, बोले हित-जुत बाँन।
इह तीरथ पावन अमल, सुभ दिन करहु सिनाँन ।।५३०
जो कोऊ तीरथ जायकै, करै न विधवत काज।
आतँमघाती होय वँह, मो सुनीयै महाँराज ।।५३१

---

१ गैल, पगडंडी। २ घोड़ा। ३ मेरी।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

छंद उद्धोर

सुन नृपत हरचँद स्नाँन, सुच सलल करेऊ सिनाँन ।
जल-दाँन पितरन जात, निज हाथ कीय निसनाथ ।।५३२
जिम कही विप्र जताय, विध करीय भूप बताय ।
बोले सु मुनिवर बाँन, दुज दीजीयें कछु दाँन ।।५३३
ह्वै सुफल जात्रा हेत, सुभदाय बड़न समेत ।
जब कह्यौ राजा जास, पन आपनौ परकास ।।५३४
कीस राजसूय क्रतग्य, जस कारनै हम जग्य ।
दुज साख दै कहदीन, पुन कर प्रतग्या पीन ।।५३५
मागै सु दुज कोऊ माँन, देहूँ सु वंचत दाँन ।
अभलाष जो कछु आप, करीयै न देर कदाप ।। ५३६
दत माँगीयै हम देत, हीय सोच कहीयै हेत ।
सुन कहेऊ दुज सरसाय, बहु भूपकौं विरदाय ।।५३७
वासष्ट कीनी बात, वाँनी सु जग-विख्यात ।
विख्यात सूरज-वंस, तिह बंस कौ अवतंस ।।५३८
हरचंद सौ सुध हीय, दाता न और दुतीय ।
इह साच जाँनी आज, मिल आप सौं महाराज ।।५३९
उद्रवाह[1] मो सुत आज, करीयै जु अवसर काज ।
पग धारीयै हम पौर, माहाँराज रवि-कुल-मौर ।।५४०
जब कह्यौ राजा जास, हित करहु चित्त हुलास ।
सुन वात वंसी सूर, दुज क्रत्तमी गये दूर ।।५४१
जहाँ रची माया-जाल, क्रत्तमी[2] वीतत काल ।
कीनौ सु प्रगट कुमार, किंन्या[3] सु तन-सुकमार ।।५४२
वेदी वनाय विताँन, कीय प्रज्वलतहु क्रसाँन ।
कर भावरै सिध काज, बोले सु वाँनी व्याज ।।५४३
अब दाँन-बेला येह, संकल्प करहु सुग्रेह ।
देहौ सु जैसौ दाँन, सत-गुनौ मिलहै सुथाँन ।।५४४

---

१ विवाह । २ कृत्रिम । ३ कन्या ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पुन राज-विभव प्रपंच, राखुहु न पाछै रंच।
सुत त्रीया स्वर्ग सिधाय, सुख नृपत लेहु सुभाय ।।५४५
मति फिरी राजा मंद, फस मुनीकौसक-फंद।
संकल्प दीनौ छोर, कीनौ न ह्रदय कठोर ।।५४६
झट लयौ कौसक झेल, कहि स्वस्य-स्वत्य[1] कुटेल।
दीय भोग-अरथ सुदाँन, जीय चाहि सौं जजमाँन ।।५४७
विन दक्षना सु विरथ्थ[2], इह हेत दीजै अथ्थ[3]।
भुवपती गयेऊ भुलाय, तुम लहहु जोन तुलाय ।।५४८
भूतम[4] अढाई भार, दुज देहु नृप दातार।
द्रुत कह्यौ राजा दैन, लागे सु पाछै लैन ।।५४९
भागे सु राजा भौंन, इत मिली सैन आँन।
नृप लख्यौ व्याकुल नैन, वहु विनय-जुत कहि बैन ।।५५०
नही पगन थँभे नैक, बोले न वचन विसेक।
राँनीन-संग रनवास, ऊठ गयेऊ चित्त उदास ।।५५१
मति-भ्रमत देख महीप, सुविचार बैठ समीप।
बूझी सु बात विसेस, नही उत्तर दीन नरेस ।।५५२
रहे जागते सब रात, बीती सु सोचत बात।
परभात होवत पाँन, गुनि करेऊ भैरव-गाँन ।।५५३
संध्या सु करन सुकाज, मन करचौ तब माहाराज।
मुनि आय विसवामित्र, सरबस्व हारक सत्र ।।५५४
वपु कपट धारै वेख, धूरत सु धारै धेख।
देख्यौ सु राजा द्वार, चित विकल भयेऊ विचार ।।५५५
छिब सरद पूनम-चंद, तिह गये मनु विधु-तुंद[5]।
इम होय भूप उदास, जुग हाथ जोरे जास ।।५५६
बोले सु विप्र कुवेख, अवधेस कौं अवरेख।
तज देहु वैभव तस्य, संकल्प कीय सरबस्य ।।५५७
कीय हमही सौं जिम कौल, तपनीय[6] देवहु तौल।
बोले सु भूप विचार, सब राज लेहु सँभार ।।५५८

---

१ स्वस्ति। २ व्यर्थ। ३ अर्थ, धन। ४ स्वर्ण। ५ राहु। ६ स्वर्ण।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दक्षना कारन दाँन, नहि जातरूप[1] निदाँन।
हम कहूँ आवहि हाथ, सुविसेख दैहै साथ।।५५९
अब करन जात उपाय, निस्नात मागत न्याय।
इह कहत चाले ऊठ, पुर अवध कौं दै पूठ।।५६०
सुत लये राँनी साथ, हाले सु झाटक-हाथ[2]।
पुर-त्याग लीनौ पंथ, हुव सोर जन हाहंत।।३६१
मुनि आय कौसक मग्ग, अटकाय दोनौ अग्ग।
दै दछ्छना विन दाँन, गैलै न करीयै गाँन।।५६२
नट जाहु नहि लै नाँम, तुहि लेहु राज तमाँम।
नृप कह्यौ सुनहु मुनेस, नहिं रीत वंस दिनेस।।५६३
दैकै न लेवहि दाँन, पथ भलै जावहु प्राँन।
दिन कोऊक करहू देर, हम करत है धन हेर।।५६४
प्रापत ही होत प्रमाँन, दछ्छना लीजहु दाँन।
बोले सु मुनि विग ताय, मन सोचीयै समुझाय।।५६५
परहरै अवधपतीज[3], धन मिलन की कहाँ धीज।
जैहौ सु जाही जाग[4], नृप जाँनहै निरभाग।।५६६
रिन कोऊ न दैहै राज, विन धरोहर अरू व्याज।
नाकार करनौ नीत, कहा लाभ पायै क्रीत।।५६७
हट त्यागीयै हरचंद, नाकार करहु नरिंद।
पन तजै वैभव पाय, सुख लहहु राज सुभाय।।५६८
नृप सुनी कौसक-नीत, कहा लाभ खोयै क्रीत।
जग-वीच अजसी जीव, सो जीयत मृत्यु सदीव।।५६९
रन तीर्थ मै रजपूत, इह तजत प्राँन अभूत।
वपु-त्याग क्रीत वसाय, सोइ अँमर होत सुभाय।।५७०
इह आद-रीत अमाँहित, नाकार देवहि नाँहि।
पुन धरोहर हम पास, सुन लेहु विप्र सुहास।।५७१
श्री पुत्र जौलौ साथ, इह वेच लैहौं आप।
दछ्छना दैहौ दाँन, पहिचाँन वचन-प्रमान।।५७२

१ स्वर्ण। २ हाथ झाड़कर। ३ अवध का राज्य। ४ स्थान जगह।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

लै अवध सौं सुत नार, विक्रीया करहु विचार।
जिह काज कासी जात, नहि अटकीयै निस्नात ॥५७३
जब कह्यौ अवसर जाँन, पथ करेऊ भूप प्रयाँन।
कोऊ मास कौ कर कौल, बाँधे सु वाचन बोल ॥५७४
बानारसी निज वास, पँहुचे सु गंगा-पास।
न्हाये सु निर्मल नीर, सुच धोय कीन सरीर ॥५७५
मन मै विचारत मंत, इह मास आयौ अंत।
विक्रीय कोन वसाय, राजाँ न कोऊ राय ॥५७६
इहाँ विस्वनाथ अधीस, वसवाय विसवावीस।
इह धारकै हीय-आस, वाढे सु कर विसवास ॥५७७
बाजार जावत बीच, मुनि मिले आय मलीच।
दक्षना माग्यौ दाँन, परचाय वचन-प्रमाँन ॥५७८
कीय मास जास करार, पुन भयौ सोऊ पार।
नट जाहु अवध-नरिंद, बाँधीयै अथवा बंध ॥५७९
महपती कहेऊ मुनेस, अध दिवस है अवसेस।
सुन स्रवन चुपकौं साध, गये दूर नंदन गाध[1] ॥५८०
भ्रम ऊपज्यौ हीय भूप, रुख जाँन आपत[2]-रूप।
श्री पुत्रँ कोन वसाय, द्रव मिलहिगौ किह दाय ॥५८१
पथ राजनीत-प्रबींन, तऊ धर्म जाँनत तीन।
अध्ययन जजन उचार, दत दैन मति दातार ॥५८२
अर्थना[3] कारन अर्थ, मन छत्रीयन असमर्थ।
दुज दछ्छना कह दीन, करीयै न टारौ कीन ॥५८३
दुज रनी त्यागू देह, विट क्रमू करहै वेह।
पिंड वनहि अथवा प्रेत, अघ भरन करन अहेत ॥५८४
वपु करन विक्रीय वेस, इह न्याय कौ उपदेस।
नृप विकल देख्यौ नार, बोली सु सोच विचार ॥५८५
माहाराज चिंतामाँन, गहि रहे काँय-गिलान।
तज देहु ताहि तुरंत, मन माँन करीयै मंत ॥५८६

१ विश्वामित्र। २ आप्त। ३ याचना।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पालोयै सत मत प्रीत, कल अमर करीयै क्रीत।
धन जाय तौहू धर्म, सुध भूलीयै न सुकर्म ॥५८७
जग-धर्म त्यागी जीव, सोइ प्रेत-रूप सदीव।
सत-धर्म पालन सोय, वसीयै न ताहि विगोय ॥५८८
अगनोत्र[1] औरहु याग, तत पठन-पाठन त्याग[2]।
है क्रीया जितनी हेय, व्यापार वेद विधेय[3] ॥५८९
जरहूँ असतवादी जात, कहाँ रहत है कुसलात।
पढ धर्म-सास्त्र पुराँन, निज धर्म कीय निर्वांन ॥५९०
सत कह्यौ सबकौ सार, नय-नीत लेहु निहार।
जिग करे नृपत जजात, सत येक जिह साख्यात ॥५९१
कीय राजसूय क्रतग्य, तब स्वर्ग पहुँचे तग्य।
इक वार बोल अनृत्त, सोऊ पतत भये अतसत्त ॥५९२
सत तजहु नाँहिन सोय, होनी सु रहिहै होय।
राँनी सु कहीय रहंस, पति सुनी वात प्रसंस ॥५९३
मन लैंन कौं माँहाराज, वाँनी कही जुत व्याज।
विग गयौ राज विसेस, स्त्री पुत्र थाती सेस ॥५९४
मत करत सास्त्र मनाह, स्त्री वेचनौ न सलाह।
अरू पुत्र वंस-उपाय, जो दीयौ नाँहिन जाय ॥५९५
कहि कीजीयै कहा काँम, वेला विचारै वाँम।
जब कह्यौ राँनी जाँन, वाँनी सु नीत-विधाँन ॥५९६
निज नार रति-हित नाँहि, सुत-हेत गिनहु सदाँहि।
सुत भयौ सुफल सुकाज, मुद माँनीयै माहाराज ॥५९७
स्त्री रही कारन सेव, तज देहु स्वार्थ तुमेव।
मोहि बेच अरथ मिलाय, जिह देह-धर्म न जाय ॥५९८
सुन नार की समजास[4], अत भयौ नृपत उदास।
अब कहत नारी येम, पूरव विसारचौ पेम ॥५९९
धिक्कार याही धर्म, कहा भयौ उदय कुकर्म।
बहु करत-करत बिलाप, आई सु मुरछा आप ॥६००

---

१ अग्निहोत्र। २ दान। ३ मूर्खता के। ४ जड़। ५ समझाना।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गिरपरचौ धरनी गात, बहु सोक सौं बिललात।
भूले सु तन-मन भाँन, गहि हृदय-वीच गिलाँन ॥६०१
पति-दसा देख पिराय, हा कहत राँनी हाय।
धरनी गिरी तन धूज, उर रह्यौ सास[1] अमूज ॥६०२
सुत बोल रोहित साथ, मोहि भूख लागी मात।
जहाँ देख अवसर जत्र, माँगन सु विसवामित्र ॥६०३
कर क्रोध आये क्रूर, धूम कौं मिलावन धूर।
इत देख नृपत अचेत, अत वचन कहेऊ अहेत ॥६०४
वौल्यौ न सुनकै वाँन, जल करचौ सेचन जाँन।
उवरी सु नरपत-अंख, इत परचौ मुनि-आतंख ॥६०५
भुय फेर विहवल भूप, रिख देखकै दुख-रूप।
रिखी कह्यौ सुनीयै राज, इह अवध वीतत आज ॥६०६
अब चहत दिनमनि येह, चरमाद्र[2] करनै छेह।
सत राखीयैं नृप सेख, द्रग तपत सूरज देख ॥६०७
अरू सत्य सौं उनमाँन, थिर रहत अचला थाँन।
स्वरगीय स्वर्ग सुधाँम, करता सु सत्य ही काँम ॥६०८
तुम सत्य दैहौ त्याग, जावैं ततौ हम जाग।
दैंहौ सु स्राप दुरंत, अकुलाय कै हम अंत ॥६०९
दिन जात मै नही देर, सोइ गयौ सीस सुमेर।
मुनि चले विसवामित्र, तव रह्यौ राजा तत्र ॥६१०

सोरठा

भूप भयौ भयभीत, कौसक मुनि सुनकैं कही।
इतनै वेद अधीत, वृद्ध विप्र आयौ वहै ॥६११
देख्यौ राँनी द्रष्ट, धरमसील अरु है धनी।
कहीयै अपनौ कष्ट, इहतौ धन दैहै अवस ॥६१२
सुनकै राजा स्राँन, वोल्यौ राँनी सौं बचन।
जात विप्र जजुमाँन, कैसै जाचहि दुज कहौ ॥६१३

---

१ स्वास। २ अस्ताचल।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दैनौं चाहत दाँन, लैनौ नह चाहत लयौ।
होय धरम की हाँन, मै छत्री रिव-वंस मह ॥६१४
तीन कर्म है तौन, पहलै कहदीने प्रीया।
याद करहु उर आँन, वातै करहु विवेक की ॥६१५
देवहु-देवहु दाँन, वचन न जाँनत वीनती।
दैगे-दैगे दाँन, वाँनी चित मैं वस रही ॥६१६
परजा की प्रतपाल, करकैं धन लेवन कुसल।
कै सत्रुन कर काल, भुज-बल सौं लेवहि भलै ॥६१७
राँनी बोली राज, काल प्रबल अकरन करन।
हेत विचारहु हाल, करनी सोई करीयै कुसल ॥६१८
आदर अरू अपमाँन, काल विसम सम करत है।
राजा भिक्षुक राँन, जाही कै वस जाँनीयै ॥६१९
काल भयौ प्रतकूल, दुजहू कीय यैसी दसा।
महाधरम कौ मूल, काटन लगौ[1] कुठार लै ॥६२०
राजा कह्यौ रिसाय, रसना जो देवौ रटै।
करकै टूक कढाय, कुक्कर भख दैहू करट ॥६२१
सुनकै राज-सवाल, राँनी बोली राज सौं।
करीयै जैसौ काल, वरतमाँन कै बिसतरन ॥६२२
मदरा-हित माहाराज, हेत भोग नहि द्यूत-हित।
विक्रीय कर निरव्याज, हित परमारथ देहु हम ॥६२४

दोहा

अपजस कछू न आपकौं, जस मेरौ रह जाय।
आऊं तो पतिकै अरथ, जग-कीरत ह्वै जाय ॥६२५

छंद त्रोटक

स्त्रीय की हरचंद सलाह सुनी, धन[2] लेवहु-लेवहु कीन ध्रुनी।
जन पूछन लागेऊ जात जंही, कररी कर छातीय भूप कही ॥६२६

---

१ मू०प्र० लागौ। २ स्त्री-धन।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

हम जाँनहु पाँहम जात हीया, पलटै धन बेचत प्राँन-प्रीया।
कोऊ दासीय चाहत जो करनो, तन सुंदर लेहु इहै तरुनी।।६२७
तन जीरन कौसक श्राय तही, करकै दुज वेख कौ भूप कही।
हमरै इक दासीय चाहत है, इह मोल करौ श्रवगाहत है।। ६२८
हमरै सुकमार है नार हितू, कर जाँनत हैं नही ग्रेह-क्रतू।
धन देवहिगे तिह ग्रेह-धनी, वचनंतर भाखहु वात वनी।।६२९
सुनकै हरचंद करी सहना, कछु नाँहि कही दुज सौं कहना।
दुज ताहीसौं बोलेऊ देख दसा, वित देवहु जो कछू चित्त वसा।। ६३०
जब राज कह्यौ तुम जाँनत हौ, परमारथ-हेत पिछाँनत हौ।
वकलास्त्र धरयौ जिह पै वित कौं, श्रह मोल मगाय धरौ इतकौं।।६३१
जब येक करोर मगाय जमा, समपे दम ताही कौं बोल समा।
कर साखीय दै नृप कौं कुहनी, गृह केस लई सिर की गुहनी।।६३२
जब लागेऊ जावन ऐंच जँही, सुत रोहित देखीय मात सही।
जननी-जननी कहि बोल जितै, कहनै पुन लागेऊ जात कितै।।६३३
सिसु कौं हम भूख सँतावहिगे, जननी-विन कोन जिवावहिगे।
विथुरे सिर घूंघर वारनकै, पुन लागेऊ लार पुकारनकै।।६३४
रुख रोहित की लख रोवन की, द्रग येक भई गति दोवन की।
सिसु देखत मात के श्रोठ सुके, रुख वाप लखै उर-स्वास रुके।।६३५
विललावत बोल कहै वतीयाँ, चिललावत फाट रही छतीयाँ।
पितु कौं तज मात की लार परयौ, दुज देख तनंधय द्वेख धरयौ।।६३६
मुख मोरकै लागेऊ मारन कौं, पुन लागेऊ वाल पुकारन कौं।
इक मात ही मात उचारत है, पितु-हेत बहारन-पारत[1] है।।६३७
गह मात लई परतै-गिरतै, डहकाय इतै दुजकै ड़रतै।
मुख मात कह्यौ सुत सौं मिलकै, किह कारन रोय करै किलकै।।६३८
छुटकावहु चालन छिप्रन की, वन मै गई दासीय विप्रन की।
तऊ छोरत हाथ न मात तनै, मुख पौंच करयौ केऊ वार मनै।।६३९
सुत की बहु वार करी सहनी, कीय रुद्र दुजातहु सौं कहनी।
कुटहारका कीनीय काँमन कौं, सुख देहु कहा मोहि स्वाँमन कौं।।६४०

---

१ रोते हुए चिल्लाना।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सुत मै रहिहै चित मेरौ सदा, करहूँ मन आँमत काँम कदा।
विटमावहिगी हीय सुद्ध वृती, सब जावहिगी मतहू सुमृती ।।६४१
सुत-मोल वसावहु वित्त-सटै, बिगरै न मती नहीं चित्त वटै।
सब सासन साधहु स्वाँमन कौं, करहू कहिहै सोइ काँमन कौं ।।६४२
सुन विप्रहु वात सयाँनप की, नहचै कर ओर चल्यौ नृप की।
सुत तोर चहै सिवकाइय कौं, मिल भूँब रह्यौ सोइ माइय कौं ।।६४३
परचाय कह्यौ हीय पेचन कौं, पित लै सुत चाहत वेचन कौं।
नृप विप्र कह्यौ करकै निरनै, सुतहू तुम राख लहौ सरनै ।।६४४
वित देहुगे सोय वसावहिगे, कछु नाँहिन और कहावहिगे।
दीय मोल जथारथ देख दसा, गहिकै वित-सोक मैं चित्त गृसा ।।६४५
लखकै पति-दूर खरी ललना, मम दुस्तर होय गयौ मिलना।
परनाँम करयौ निज नाथ प्रतै, छल त्याग कह्यौ सब हीन छतै ।।६४६
पति त्याग दई कहि प्राँन-प्रीया, हहरात न जात न फाट हीया।
अघ आय भयौ इह कोन उदै, जीय सौं पीयकै करदीन जुदै ।।६४७
कछु पुन्य करयौ अथवा करनी, बहु आँनन जाय नही वरनी।
दुज साखीय है दुतियो[1] दमुना, सिस सूरज होहु जवै सुमंना ।।६४८
हरचंद मिलै भरतार हमै, जग के करता सब आप जमै।
दुख सौं कहिकै मुख हाय दई, भुवपै गिर सोय अचेत भई ।।६४९
तलपात[2] लखी इह भाँत तीया, हहरात लख्यौ सिसु फूट हीया।
केऊ भूप विलाप लग्यौ करनै, विनता सुत के गुन कौं वरनै ।।६५०
सुच सुंदर सीलवती सुकीया, पिकवैनी अहो मृघनैनी प्रीया।
द्रव लैकर ताही कौं वेच दई, नर निष्टुर मो-सम और नही ।।६५१
जग रूखन रीत लख्यौ जँहीयाँ, छितपै विसतार रहै छहीयाँ[3]।
संग राखत आपनी आप सदा, तिह सौं कवहूँ नही होत जुदा ।।६५२
करतूत नही हम जात कही, जड़ जीव समाँन न बोल जहि।
प्रगटयौ तन अंगज मो पहीयाँ, बिललावत विप्र गही वँहीयाँ ।।६५३
धिक मोह धुरंधर धर्म-धृती, कपटी पर वंचक कूर कृती।
द्रव लै विनता सुत वेच दुनौ, गहिकै निज स्वारथ त्याग गनौ ।।६५४

---

१ दूसरा। २ तड़फती हुई। ३ छाया।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अवधेस करै इह सोच इतै, चख सौं सुत नारीय ताहि चितै ।
दुज रीस लगी दोऊ देख दसा, गल गालीय दै अय दंड गृसा ।।६५५
तरुनी नृप लागेऊ तारन कौं, सुत रोहित दास सुधारन कौं ।
चिललावत ताही कौं लेय चल्यौ, दुख दीरघ भूप कौ हीय दल्यौ ।।६५६
धर नाहि लख्यौ रवि धोवत मै, सिस नाँहि लखी निस सोवत मै ।
कमनीय महाँ कर कंजन की, जिह आँखन की चिव खंजन की ।।६५७
गज-गाँमन भाँमन दुःख-गसी, वन दासीय विप्र कै ग्रेह वसी ।
उतपत्त भयौ नृप-अंसन मै, पुन हंस के बंस प्रसंसन मै ।।६५८
रमनीय विलेपन अंग रचे, सिर गूंघर-वार फुलेल सिचे ।
पद कोमल कंज के पात प्रभा, सुखदायक लायक राज-सभा ।।६५९
जन दास खिलावत जाहीय कौं, सुत सोय गयौ सेवकाइय कौं ।
मुरझावत यौं मन ही मन मै, तव ताप वढ़ो नृप के तन मै ।।६६०
मुनि कौसक लै रिख-मंडल कौं, दिखराईय दीन द्रगंचल कौं ।
द्रुत माँगीय आय जिही दछना, रुख कौं लखकै नृप की रचना ।।६६१

दोहा

निमसकार कर नृप ततह, कौसक कह्यौ कृतग्य ।
खोर लेहु करकै खिमा, जमा दक्षना जग्य ।।६६२
कौसक द्रव देखरू कह्यौ, अह नह लेत असस्त[1] ।
सस्त[2] होय तौ समपीयै[3] सुनीये वाचा स्वस्त ।।६६३
कहाँ तै आयौ किंह दयौ, किह पलटै कह देहु ।
सुनै विना लैहून सो, आद-प्रतग्या येहु ।।६६४
विप्र ग्रेह तै विप्र दीय, तीय सुत वेचे ताहि ।
तीय के दीय इक कोट तिह, सुत दस कोट सिवाय ।।६६५
ग्यारह कोट गरथ कौं, कौंसक लेहु कृपाल ।
सेष रह्यो वपु मोर सो, इहै आपके हवाल ।।६६६

१ अस्वस्थ । २ स्वस्थ । ३ समर्पण करिये ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

छंद-पद्धरी

कौसक जब बोले क्रोध-धार, आयौ चौथाई अरु उधार।
ग्यारहौं करोर है निस्कग्यात, अवसेस रही सो देहु आथ ।।६६७
रैहै पन तुमरौ महाराज, अवसर पिछाँनीयै समय आज।
अब दिवस रह्यौ है घटी-आध, बाँकी न प्रतग्या होन बाध ।।६६८
इह सुनी भूप कौसक ऊदंत, उर जाँन्यौ अवसर भयौ अंत।
कोऊ मोल लेहु किंकर सुकाज, विनती इह मेरी विगत व्याज ।।६६९
स्वाँमी की करहौ परम-सेव, दुज सूर चंद साखी जु देव।
वाँनी नरपत की सुन विवेक, आयौ चंडाल डाविड़-रूप[1] येक ।।६७०
विक्रत जिह छाती लंब वार, मुंडन की माला गल-मझार।
दुरगंध जुक्त तन दिघ्घ दाँत, अरु कसी कमर लपटाँय आँत ।।६७१
टर जाहु-जाहु इह कहत टेर, फाटी कर-लाठी लीयै फेर।
बोल्यौ नरपत सौं ह्वै नजीक, सेवक मैं चाहत कर सरीक[2] ।।६७२
मुख माँग लोजीयै देत मोल, तपनीय तराजू लेहु तोल।
जब कह्यौ भूप तुम कोन जात, वित-साटै हम सेवक वसात ।।६७३
करवीर नाँम हम सुपच-काय, तन मुर्दन-क्फ्फन लेत ताहि।
इही वृती हमारी सही आद, नही मो-सम दूसर कोऊ निषाद ।।६७४
सुन राजा बोल्यौ तिही सेत, हम छत्री चाहत विप्र हेत।
ऊँत्तम की उत्तम चहत आस, अँधम कौं अधम अनायास ।।६७५
मधँम कौं मद्धम चहत मिंत, अनुचित तुम भाखत कहा उदंत।
इह सुनत सुपच बोल्यौ अधीर, वारता कहत तुम न्यायवीर ।।६७६
कोऊ लेहु कह्यौ तुम प्रथम काहि, साँमाँन[3] सब्द सबकौं सुनाय।
मै आयौ सुनकै लैन मोल, कह देहु झूट इह करचौ कौल ।।६७७
हम मिथ्यावादी जाँन हाल, चल जाँह आपने गृह चंडाल।
राजा तब बोल्यौ सुन रहंस, ऊतपत्त कुलोनन राज-अंस ।।६७८
झूटौ हम नाँहिन करत झौर[4], इक विनती मेरी सुनहु और।
सोई भूप रह्यौ मुख मै सवाल, कौसक मुनि आये तिही काल ।।६७९

---

१ कुरूप, असभ्य, भयानक। २ सम्मिलित। ३ सामान्य। ४ झगड़ा।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वोले राजा सौं देख वाँन, धन सुपच देत इह संनिधान ।
दक्षना देहु लैकै जु दाँम, कहा ऊँच-नीच सौं तुमही काँम ।।६८०
दैहै नहि तुमकौं स्राप देत, सुन लेहु वचन राजा सहेत ।
चंडाल दैहगे द्रव्य छोर, इतनौ कोऊ नाँहिन देंह ग्रौर ।।६८१
पन राख लेहु धर्म ही पिछाँन, हरचंद नही ह्वै सत्य हाँन ।
विन सत्य वसैहौ नर्क-वास, उद्धार हृदय सौं छाँड ग्रास ।।६८१
वाँनी कौसक की सुन विसेस, नमकै पग झाले मुनि नरेस ।
हम दास करहु राखहु हजूर, कब्रहूँ न वचन लोपहि करूर ।।६८२
कहहै मुनि जैसौ करहि काँम, नाकारपनै कौ छाँड नाँम ।
सुन बोले विसवामित्र सोय, हीय रुचै भलै मम दास होय ।।६८३
करहौ हम ग्रग्या भंग काज, ग्रतसय तुम ह्वै है फिर ग्रकाज ।
हित सोच लेहु हीय लाभ-हाँन, करहूँ मै नाँहिन नृपत-काँन[1] ।।६८४
सुन नृपत करचौ ग्रास्त्रव सधीर, धरकै मुन बोले तवहि धीर ।
सुनकै पुन ह्वै कै सावधाँन, मन लयौ दूसरौ जन्म माँन ।।६८४
विनती बहु कीनी वार-वार, ग्रापकौ दास गनीयैं उदार ।
सासन जो करहौ धरहु सीस, ग्रनुचर मै मेरे तुम ग्रधीस ।।६८५
कर वोल कोल द्रढ संध केक, राजा फिर बौल्यौ धर्म-रेख ।
कहदेवहु मुनिवर करै काँम, सब विध मैं जानत धर्म-स्याँम ।।६८६
कौसक तव बोले इही काज, ग्रनुचर चँडाल के होहु ग्राज ।
मुख मौंन कही सुनकै महीप, चंडाल भयौ ठाढ़ौ समीप ।।६८७
मुख माँग्यौ कौसक जितौ मोल, तेऊ दीन तराजू सुपच तोल ।
मन कनक-तार दीने मिलाय, लीनै सोई कौसक हेत लाय ।।६८८
राजा सौं बोले रिखीराज, मम ऋन सौं छूटे महाँराज ।
ग्राकास-बाँन तव भई येह, नृप भये ग्रनृरन[2] निसंदेह ।।६८६
दक्षना कही सो दयौ दाँन, पन रह्यौ सत्यवाचा प्रमाँन ।
कहि साधु-साधु स्वर्गीय कथ्थ, सुमन की वृष्ट कर येक सथ्थ ।।६९०
कौसक राजा कीय इह कहाव, भूदेव पिता-माता सुभाव ।
कहहू तुम जैसौ करहु काज, मै ग्रग्या मागत महाँराज ।।६९१

---

१ मर्यादा, राज-प्रतिष्ठा । २ ऋण-मुक्त ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बोले मुन स्वस्ती तिही बार, लीय मोल सुपस सौं जाहु लार।
कौसक इह कहकै गमन कीन, इत सुपच बंध कीनौ अधीन ।।६६२
चहकाय चल्यौ भय लाय चंड, दी मोरेन-ठौरन मार दंड।
मातंग[1] गयौ लै ग्रेह माँझ, सूरजहू अथयौ भई साँझ ।।६६३
भय ताहि दिखावन धनी-भाव[2] पहराई बेरी[3] उभय पाव।
कीनौ कारागृह बीच कैद, विध चूक परै कहा करै वैद ।।६६४
मन ही मन सोचत महाराज, एकहू नाँहि सूझत इलाज।
अन जलहू त्याग्यौ ह्वै उदास, दुरदसा बनायौ सुपच दास ।।६६५
कहाँ राँनी रोहित है कुमार, हम बंदीखाँनै परे हार।
अंगज तीय मेरी करत आस, दुखदाय छुरावहि भाव दास ।।६६६
बिच स्वपच ग्रेह मै परचौ बंध, सुत त्रीया आज छूटौ समंध।
रोहित माता सौं करहि रार, पितु मोह मिलावहु सहित प्यार ।।६६७
समझाय कहा कहिहै सवाल, हा दई भये इह कहा हाल।
मृघनैनी जांनत नही मोहि, खावदहू आपौ रहे खोय ।।६६८
दूषन हे आद सौं इही देह, सुपनै न भयौ सुख निसंदेह।
ठहरे कहाँ मंत्री-जनन ठाट, प्रोहित कहाँ मेरे राजपाट ।।७६९
गज घोरे रथ अरू पतन ग्राँम, धवरोहर जैसे इंद्र-धाँम।
सेनापति सेना सुभट संग, अत पराक्रमी संगर अभंग ।।७००
जे रहे कहाँ के कहाँ जाग, इह खोटे दिन कीनौ अभाग।
चिर सोचत बीते दिवस च्यार, निज खांन-पाँन बिन निराधार ।। ७०१
पंचमै दिवस होवत प्रभात, जीय सोच आपने सुपच जात।
बेरी पग काटी तिही वार, कर क्रुद्ध-बचन कीनौ करार ।।७०२
कर वीर-भूम[4] का काँम-काज, रखवारी दीनी सुपचराज।
लाठी जिह फाटी हाथ लीन, कर कृपा इनायत भूप कीन ।।७०३
तुम बूझै ताकौं कहहु ताँम, निज बीरबाहु भृत लेहु नाँम।
दिस दख्खन जावहु छोर द्रंग, भृत अग्या कबहु न करहु भंग ।।७०४
सुन बचन बीरबाहू सकोय, समसाँन भूमका गयेऊ सोय।
जहाँ देखी मुर्दन जाय जाग, दै रहे कितेइक मनुज दाय ।।७०५

१ चांडाल। २ स्वामित्व। ३ बेड़ी। ४ श्मशान-भूमि।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कर वाल-सिखा दुरगंध केर, फैलत नभ मारग चहूँ-फेर ।
घुट रहे जहाँ अंधार घोर, लूवत जनु पव्वय अभ्र लौर ।।७०६
केऊ मात पुकारत तात कूक, उठ रही जितहु तित ज्वाल ऊक ।
अरनसा घोरवासी जु आय, अधबरे[1] लेत मुर्दा उठाय ।।७०७
भागत केऊ भख्खन करत भूक, हुरराय सिवा मुख देत हूक ।
जहाँ पहुचे राजा तुरत जाय, हरचंद कहत मुख दई हाय ।।७०८
तहाँ रहन लगे आचार-त्याग, लैनै मुर्दन के लगे लाग[2] ।
गूदरी फटी-सी गरै गोय, हिल-मिलकै सुपचन रूप होय ।।७०९
समसाँन-भसम लागत सरीर, धोवन कौं नाँहिन मिलत धीर ।
वचजात पिंड सोई वसात, भूँखकै लगै वँह खात भात ।।७१०
अनुवछ्छर वीतौ तहाँ येक, ब्रह्माँ के दिन सौं जहाँ विसेक ।
इक दिवस भई दुरदसा और, सुत रोहित ताकौ वय किसोर ।।७११
खेलत वालन के संग ख्याल, कहु दूर गये वस पाय काल ।
कुस कोमल देख्यौ बीच कुंज, पुहमी सु उखारन लगेऊ पुंज ।।७१२
वालकन कही जब देख बात, कुसकौं क्यौं तोरत कसमसात ।
बौल्यौ तब रोहित सुघर बाँन, स्वाँमी दुजकर्मा सावधाँन ।।७१३
मै ताकौं अरपन करहु मिंत, सो ह्वै है राजी पर्म संत ।
खोदकै लयौ कुस खोज-खोज, बाँधकै चल्यौ सोइ सीस बोझ ।।७१४
घर जावत-जावत परस घाँम[3], मिल त्रखा[4] लगी ताही मुकाँम ।
भुव देय बिवोरी धरचौ भार, बढ़ चाल्यौ रोहित पीयनवार ।।७१५
जल-पाँन करचौ कछु देर जात, हेरत कुस भारी डार हाथ ।
देखते रहे सब वाल दूर, काटचौ सु भुजंगम अत करूर ।।७१६
मरगयौ कुँवर ताही मुकाँम, कुस रह्यौ लयौ सो स्याँम-काँम ।
दौरे सब वालक हाल देख, विगताय कह्यौ माता वसेख ।।७१७

दोहा

दुज की दासी दुरदसा, भई सु तेरे भाग ।
सर्प डसौ मरगौ सुवन, जाह सँभारहु जाग ।।७१८

---

१ आधे जले हुए। २ दहन-कर। ३ धूप लग जाने से। ४ तृषा = प्यास।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वज्रपात के सम बचन, सुनकै रानों स्राँन।
गिरी भूम गररायकै, परत केल जिम पाँन ।।७१९
दुज देखी ताकी दसा, जल सीच्यौ मुख जाहि।
हा सुत बोलत चेत हुव, रीस भयौ दुजराय ।।७२०
आवहि ग्रेह अलक्षमी, संध्या - रोज[1] सुनंत।
निरलज क्यौं रोवन लगी, बार असुभ वरतंत ।।७२१
मोल लई दीव दाँम मै, पती लये परखाय।
ताही की कै कै तीया, करत काँम नहि काहि ।।७२२
दासी दाँम दिवायकै, भई हमारे भाँन।
निसचै रोरव[2]-नरक मै, परहै कहत पुराँन ।।७२३
परी रोय राँनी पगन, द्वज स्वाँमो मैं दासि।
मेरौ सुत मरतक[3] भयौ, पहुचावहु तिह पास ।।७२४

छंद त्रोटक

दुज बोलेउ राँनी की देख दसा, तुमरौ चित नाँहि अजौ तरसा।
गृह-काज विगारकै जात गली, तुव पुत्र मरौ हम व्याध टली ।।७२५
जननी बन रोवत पूत जितै, अय दंड मिली नहीं मार इतै।
मोहि ढीठ न जाँनत क्रूरमती, समुझावत हूँ पर होत सती ।।७२६
दुज कौं लखकै जब हीन दया, करनै पुन लागीय ग्रेह-क्रीया।
भ्रमतै-भ्रमतै अधरात भई, दुज राँनीय कौं तब सीख दई ।।७२७
कहनावत या विध ताहि करी, घर आवहु होवत प्रात-घरी।
करहू निस भीतर दाह-क्रीया, हम सासन राखहु बीच हीया ।।७२८
छुटकी लह राँनीय ऊठ चली, गत प्राँन भयौ सुत ताहि गली।
कुस पास धरचौ इक कोरीय पै, बलमीक की ठीक बिमोरीय पै ।।७२९
मृतु रोहित पुत्र लख्यौ महि पै, जुझलायकै दौर गई जिह पै।
तन ताहि टटोरन लागत ही, वतरावत आँसुन-धार वही ।।७३०
करकै दुइ कोयन के करवा, धुलवावत मृत्यु मनौ धरवा।
कबहूँ करलै कबहूँ क्रम कै, रज पौंचत अंग रही रमकै ।।७३१

---

१ रूदन = रोना। २ रोरव = घोर। ३ मृत-तुल्य।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सिर गूंधर-बार सँवाँरत है, ध्रुव लै पुन गोद मै धारत है।
उभरे भुंह नास असेखत है, द्रग दीपसिखा-सम देखत है ।।७३२
करसौं गहि गोल कपोलन कौं, बतराँवन चाहत बोलन कौं।
दुख पायकै हाय कहै दईया, मुहि क्यौं न कहै मईया-मईया ।।७३३
लीह रीस रह्यौ कोऊ लागन सौं, भरमाय अभागनि भागन सौं।
कहि बच्छ-छ पुकारत है कबहूँ, उठकै मोहि लाग गरै अबहू ।।७३४
निस बीतत लाल निहोरन तैं, कढ नींद उठौ चख-कोरन तैं।
गृह कौं सबही तुहि मित्र गये, निरमोहीय त्याग सनेह नये ।।७३५
चलीयै सब प्रात चितारहिगे[1], मिल गैंद कौं चोटन मारहिगे।
सुनकै किलकारन होत सुखी, दुख मै फिर होवहु वछ-छ दुखी ।।७३६
करकै धमनीन गयौ कतीयाँ, छवि दाटत फाटत है छतियाँ।
उर देख किंहै उलरावहुगी, हित वातन सौं हुलरावहुगी ।।७३७
लहि अंक मै सोवत लाग तकै, जननी-जननी कीह जाग तकै।
पुसलावत आँनन पौंचन मै, अरू आँखन वार अँगोचन मै ।।७३८
पकरै दोऊ पाँनन-पाँनन कौं, डर दीठ के देत दिठोनन कौं।
ढिग[2] सौं मत जाहु ढिटाइय सौं, मुख बोल कुमार मिठाईय सौं ।।७३९
पति बेचदई निज पानन सौं, अब दासी कहावत आँनन सौं।
सब ही दुख घात न बात सही, तुहि देखत भूलत जात तही ।।७४०
पितु तोहि कँहाँ कँहाँ औधपुरी, कहाँ राज-सिघासन बाज करी।
पलका कंहाँ रेसमी पौढ़नके, अरू पाट-पटंबर ओढ़न के ।।७४१
धवरोहर त्याग परे धरमै, उड़ धूसरी छाय रही उरमै।
ढिग लागत दीमक गार, ढला, लुरकाय करोटन लेहु लला ।।७४२
पितु तेरो कहाँ अब औधपती, छतीयाँ न लगावत मोहि छती।
खुस होवत तेरे ही ख्यालन सौं, लहि अंग लगावत लालन सौं ।।७४३
करतो बहु धूंम किलोलन की, बतीयाँ तुतरी मुख बोलन की।
सुत पावन हाथ भये सीयरे, नही आवत नाथ अजौं नीयरे ।।७४४
सुत तूं जनम्यौ जिह वार सही, केऊ आय महूर्तिक येम कही।
सिसु दीरघ आयुस है सुक्रती, छत्र धार प्रचारीह राज छिती ।।७४५

१ याद करेंगे। २ पास, निकट।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गुन सूर उदार सबै गहिहै, लख मात-पिता सुखकौं लहिहै।
पतरा[1] सबही रद[2] होय परे, कुरुविंद रू कुंकम लेख करे ।।७४६
पग हाथन मैं तुहि रेख परी, केऊ मछ्छ-धुजा श्रीय बछ्छ करी।
विपरीत भई लिखनी विध की, सब आस गई रिधकी-सिधकी ।।७४७
इम रोवत डारत आँसुन कौं, उरझावत साँस उसासन कौं।
मुख-चुंबन लागीय मोहित कै, रख हाथ गरै सुत रोहित कै ।।७४८
भहराय कै सोय अचेत भई, केऊ देख परोसिन येह कही।
कुन है अधरात अहो कुटला, करनी कहा किन्नीय मंत्र कला ।।७४९
सिसु-घातनी आजलौं नाँम सुनौ, दुरभागन देखीय आँख दुनौ।
नही छोरहिगे बिनही निरनै, केऊ बार की फैल लगी करनै ।।७५०
गहि केस कलाइय पाव गला, उर पै सिसु बाँधेऊ डार इला।
बहु पीट-घसीट कै ऐंच वहे, समसाँन की भूँमीय जाय सहे ।।७५१
बुलवाय चंडालन बीचन कौं, चट सौंप दई तिह नीचन कौं।
सिसु-कोनप[3] ताहि दिखाय सही, करकै निरनै सब बात कही ।।७५२
इह बालक-घातनी है अदया, द्रुत मारहु लावहु नाँहि दया।
इतनी सुन बोल चंडाल उठे, जमराज के किंकर जेम जुटे ।।७५३
परचाय कह्यौ पुर बासिन कौं, सुनीयै सुपचाधिप सासन कौं।
त्रीय विप्रन घातीय बाल तथा, गऊ-हिंसक सुवृन-चोर गता ।।७५४
गरू नारन गाँमीय गैल ठगी, अरू आग लगावत पूर अघी।
मदपेईय लोप मृजादन कौं, सोइ द्वैख करै पुन साधुन कौं ।।७५५
इतने वधकारक है अधमी, जिह भार सौं पीड़त होत जमी।
घर जाहु नचीत[4] ह्वै येह घरी, मन माँनकै दुष्टनी राँड मरी ।।७५६
इतनी सुन होय सुखी उर मै, पुरवासीय ऊठ गये पुर मै।
चुटला गहि हाथ चंडालन नै, जुर आय सबै तीय जालन[5] नै ।।७५७
हरचंद कौं बोल कह्यौ हठ कै, सुपचाधिप दास सुनौ सटकै।
सिसुघातनी खेल खिलाय सबै, इह नार सँघारहु वार अबै ।।७५८
इतनी सुन भूपत काँप उठ्यौ, निस नारीय मारन-काज नट्यौ।
तमक्यौ तब देख चंडाल तँही, निरनै कछु जाँनत धर्म नही ।।७५९

---

१ ज्योतिष-पञ्चाङ्ग। २ रद्द, व्यर्थ। ३ शव। ४ निश्चित।
५ जाल, कपट रखने वाली।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बहु भारत पाप निवारन कौं, अब चाहत ताहि उवारन कौं।
सँमुझै नही स्वाँमीय-सासन कौं, भरनै उर लागेऊ भासन कौं ॥७६०
मिलहै दोइ दोसतै दंड महा, करहै हमरौ नही जोन कहा।
नही राँनीय जानेऊ राजन है, सुपचाँन कै दास समाजन है ॥७६१
गृह केस जबै कछु दूर गये, करकै विनती इह बात कहे।
हम पूत जरावन दौ पहलै, अब ईस दयौ दुखकौं सहलै ॥७६२
पुन मोहि प्रहारहु पापिन कौं, तन खोय कै जीतुहुँ तापन कौं।
कहि भूप दयौ करीयै करनी, विध सुक्तम वेद जही वरनी ॥७६३
सुन सासन दास लयौ सुत कौं, हहराय हीयै गनकै हित कौं।
पुन लागीय फेर पुकारन कौं, परचाय बहारन-पारन कौं ॥७६४
धर रोहित पूत धरयौ धरपै, झटकै भूप-गह्यौ झरपै।
उघरयौ मुख चंद-उजारीय मै, विकस्यौ मनु पंकज वारीय मै ॥७६५
सिर-बार लसै गुँघरारे सही, तिल-फूल सी नासका देख तही।
सित दाँत लसै अधुराँन समा, जनु विद्रुम-संपुट हीर जमा ॥७६६
भृमरावल भ्रूँह दिपै भरीयाँ, अनीयारीय पंकज आँखरीयाँ।
लख कै सिसु की चिव चित्त लुभा, प्रगटयौ हीय सात्वक देख प्रभा ॥७६७
बपु रोहित कै अनुकार वचा, रमनीय महाँ विध रूप रचा।
विललावत राँनी कही वतीयाँ, तन ताही की आँच लगी ततीयाँ ॥७६८
गस आयकै भूपत भूँम-गिरयौ, बभक्यौ हित आरत-पेम भरयौ।
हीय जाँन लई वीनता हमरी, मुँह अंगज की इह लोथ मरी ॥७६९
जब राँनीय जाँन लई जीय मै, पितु रोहित भूप इही पीय मै।
दुख सौं कहिकै मुख हाय दई, भरतार कौं देख अचेत भई ॥७७०
अवधेस सुरेस समाँन इही, महि डोलत है समसाँन मही।
तिह रूप न रंग रह्यौ तन कौ, दरसाव इही पलटै दिनकौ ॥७७१
धन मै हुय कै छत्रधारीय की, दुज-दासीय होय दुखारीय की।
सुत दास भयौ समसाँन समा, अरू राजहु जात भये अधमा ॥७७२
कित मारग लाग गई करनी, वन आवत नाँहि जथा वरनी।
अवधेसहु देख उजागर मै, सुकीया दुख बूड़ीय सागर मै ॥७७३
मुख देखत राजकँवार मरयौ, पुहमी पग हाथ पसार परयौ।
कहि रोहित-रोहित क्रंद्रत है, उठकै नही होत अनंदत है ॥७७४

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कलि देख हमै छल क्यूं करीया, हित सौं नही देत है हूँकरीया[1] ।
अहो वछ्छ[2] करी कहा देर इती, पितु तेरौ सनातन औधपती ।।७७५
विड़ रूप दिखावत वेख वन्यौ, गहि भीत लई कपि साच गन्यौ ।
वतराय रह्यौ सुख-वाँनन तै अजहूँ नही बोलत आँनन तै ।।७७६
बपु घेर लयौ कहा आय बला, लरकाई के ख्याल दिखाहु लला ।
बिव आँखन नीर लग्यौ बहनै, केऊ आरत-बात लग्यौ कहनै ।।७७७
सुखहू न भह्यौ हित सौं सुत कौ, विनता जुत राज-विभौ वित कौ ।
छिन मै इक साथहि छूट गयौ, लिखनो विधकी सुत सोक लयौ ।।७७८
हठ फाटक तूटत नाँहि हीया, कररौ हुँय जूटत कोन कीया ।
प्रीय रोहित पुत्र सु प्राँनन सौं, अब बोलत नाँहिन आँनन सौं ।।७७९
भवतव्य विचारत मोह भयौ, गत पै पति राँनीय आय गह्यौ ।
नीयराय लखी मुख नैनन सौं, वतरावन लागीय वैनन सौं ।।७८०
हम वेच दई निज हाँथन सौ, स्त्रीय पुत्रहु धर्म सनातन सौं ।
गत रावरी या विध होय गई, निज नाथ कहौ इह बात नई ।।७८१
सुत-सोक कौ हौय गयौ सपना, अहवाल विचार कहौ अपना ।
नृप वीतीय वात कह्यौ निरनौ, मन सोच विचार लयौ मरनौ ।।७८२
सुत कै विन जीवन मृतु-समा, जरहै अहु येकत होय जमा ।
छित पै रचकै इक काठ चिता, पतनी संग लै सव[3] पुत्र पिता ।।७८३
घिर वैठन लागेऊ जाहि घरी, कर जोरकै वंदना मात करी ।
जिह नाँम सताक्षीय जाहर मै, ठहरी सोई कासीय ठाहर मै ।।७८४
पंच कोस पै धाँम है मात परा, तत बृह्म-सरूपनी सो अपुरा ।
करुना कर भक्त-सहाय करी, अत आतुर चातुरता ऊधरी ।।७८५
धृमराज पुरंदर अग्र धरे, खित ताहीपै कीनेऊ आँन खरे ।
सुर आयेऊ संग जहाँ सिगरे, भलकै मुनिहू रिखि संग भिरे ।।७८६

दोहा

सब देवन कौं संग लै, आई मात उवेल ।
हरख भयो हरचंद कौं, मात सुरन लख मेल ।।७८७

---

१ वार्तालाप के समर्थन में 'हूँकारा' देना, बोलना । २ वत्स, पुत्र । ३ शव ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

छंद द्वै-अःखरी

विध विस्नू महेस विख्याता, विस्येदेव साध्यगन वाता।
लोकपाल चारन सुर लेखहु, नाग सिद्ध गंधर्ब निरेखहु ।।७८८
बड़वा-सुत आदक वृंदारक, धंन्य धंन्य कहि रिखी मुनी धारक।
विस्वामित्र नाँम बाखाँनत, जाँनलेहु जाँकौं हम जाँनत ।।७८९
विस्व-त्रई कै संग विसेसा, मैत्री करन जु चहत हमेसा।
मिस्वामित्र तिहीं कौ बाचक, समुज लेहु नृप साधन साचक ।।७९०
विस्वामित्र सहेत विसेसन, इह तुमकौं कीनौं उपदेसन।
जिह तुम ताप करचौ है जी कौं, सत्य वताय दयौ सबही कौं ।।७९१
आये संग ही रिखी अपारा, वंदन कर सुख करहु विहारा।
वोले धर्मराज तव वाँनी, सुनीयै राज-रिखी सुग्याँनी ।।७९२
तुमरी देखी हमहु तितक्षा, पुन इंद्री निगृहन[1] परीक्षा।
भये संतुष्ट सत्वगुन भासन, आर्जव संजुत धर्म अभ्यासन ।।७९३
रही धारना सव विध रूरी, येकहु वात न सही अधूरी।
इंद्रा कह्यौ सुनीयै अवधेसुर, धीर धर्म पथ महा धुरंधर ।।७९४
हे हरचंद नैक इत हेरहु, अव कोनै विध करत अवेरहु।
नारी पुत्र जुतै नरनाथा, सत्य तिहारै करेऊ सनाथा ।।७९५
जीतै जीय दुरलभ है जोई, तेई वास देत है तोई।
सोवत चिता देख रोहित सुत, इंद्र कराई वरखा अंमृत ।।७९६
मृत्यु अकाल निवारी मघवा, अवगुन दूर भये तन-अघवा।
वरखत कुसम दुंदभी वाजै, अंतरीक्ष जय होत अवाजै ।।७९७
तन सुकमार कुमार तहाँ तै, जागे सोवत चिता जहाँ तै।
नृप हरचंदहू सैव्या-नारी, सुत रोहित मिल भये सुखारी ।।७९८
अंक लगाय करत अवलोकन, धीरज धार सुखन दै धोखन[2]।
विछुरी सफरी[3] मनहु बार मै, पैठी माँनहु वारपार मै ।।७९९
माता सुत देखे सुख माँन्यौ, जीय के अभय-दाँन सुख जाँन्यौं।
राजा आनंद पूरी रंली, मनिधर मनहु गई मनि मिली ।।८००

---

१ मू० प्र० निगृन। २ ढोकन = प्रणाम। ३ मछली।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सुतहु मात-पितु देखत सरसै, पंकज मनहु सूरकर[1] परसै ।
भयौ अपूरब सुख सब भाँती, परख-परख हरकत सुरपाँती ।।८०१
राजा दिव्य-देह भई राँनी, इंद्र मनहु सोहत इंद्रांनी ।
इंद्र कह्यौ हरचंद पुन ऐसै, कीने सत्य-कर्म तुम कैसै ।।८०२
वसहु स्वर्ग मै हमहु वसावत, और जीयत जीय मनुजनआवत ।
स्त्री पुत्रहु[2] सहित पधारहु, विबुधालय महि अभय विहारहु ।।८०३
इंद्र-वचन हरचंद सुने इह, जोर करग प्रतिउत्तर दीय जिह ।
सुपच-दास मै मो वँह स्वाँमी, अग्या सिर धारत अँनुगाँमी ।।८०४
सासन जो दैहै तुम संगा, दिव्य वसैहूँ देवन-द्रंगा ।
अग्या भंग करूँ नह वाकी, तन मन कीन प्रतग्या ताकी ।।८०५
धर्मराज बोले सुन धीरै, परी विपत नृप आई पीरै ।
सुपच-वेख हम करे सरीरा, करी सुवाँर भूम करवीरा[3] ।।८०६
पुरी चंडाल वसाई प्रांतर, वँह कासी की सींव अवांतर ।
और नही सुपचाधिप येकौ, लाग लगाय मांग है लेखौ ।।८०७
चिंता तजहु सत्यपथ चातुर, इंद्रपुरी पग धारहु आतुर ।
इंद्र कह्यौ नृप करीयै ऐसै, जमराजा भाखत है जैसै ।।८०८
अरजी इंद्र करी नृप औरै, जमराजाहू कौं कर जोरै ।
अवधपुरी मम विनाँ उदासी, वाट विलोकत है जनवासी ।।८०९
ताप वसाय रहे है तन सौं, मै किम भूल जाहुगौ मन सौं ।
सुहृद-विसार वसूँ जो सुरगा, विललावहि कारन अपवरगा ।।८१०
सुजन तजैं लागै अघ संगा, पंडित कहै सुन्यौ परसंगा ।
हथ्या वृह्म गऊ स्त्री हंता, मदरा पाँन समाँन महंता ।।८११
अवधपुरी मोहि सुहृद अनेका, येकन तै अधकें है येका ।
सवही है मेरे सतसंगी, वहुते नाँम धरहि वैहरंगी ।।८१२
अपजस तिनकौ लहूँ न ऊपर, सोच विचारत सुनौ सुरेस्वर ।
स्वर्ग-नर्क है तिनके संगा, इनसौं कवहुँ न होऊँ असंगा[4] ।।८१३
सुरपत कह्यौ सुनहु अवधेस्वर, प्राँनी जिते वसत कवसलपुर ।
करनी ऊँच-नीच तिन केरी, वसै स्वर्ग कैसै इकवेरी ।।८१४

---

१ सूर्य-किरण । २ मू. प्र. पुत्र सहित स्त्री । ३ श्मशान-भूमि । ४ पृथक ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तिनकौ कहौ विचार तुरंता, नीत-निधाँन सुध्रर्म-नीयंता।
बोले नृपत विनय-जुत बाँनी, जैसी गत हमरी जीय जाँनी ।।८१५
तुम सौं सोच कहत हूँ ताही, अहमत की बातैं अवगाही।
राजा भाग लेत परजा सौं, जग्य आद पुन करत सु जासौं ।।८१६
दुख-सुख सहस नृपत संग दोऊ, करनी नृप भागी सह कोऊ।
करै जुदे हम तिनकौं कैसै, इह विचार मुख बोलत ऐसै ।।८१७
येक दिवस अथवा-क अनंता, वसहि संग सुनीयै वरतंता।
सुर इंद्राद मुनी कौसक सुन, पुन हरचंद भये सुन परसन[1] ।।८१८
आये नगर अजोध्या येहू, भूप प्रजा सौं कह्यौ जु भेऊ।
सत हरचंद नृपत के साथी, जन सुरलोक चलहु सब जाती ।।८१९
परजा भई अनंदत पूरी, राजा सत्य वात सुन रूरी।
राजा सुह्रद जिते सुखरासी, इह जग तै सब भये उदासी ।।८२०
सौंपे घर के काँम सुतन कौं, ऊँन्नत कुलकी राखहु तन कौं।
रोहित राज-सिंघासन राजा, सौंप्यौ वैभव सहित समाजा ।।८२१
राँनी संग लीयै राजेसुर, परजा सहित पधारे सुरपुर।
बाजे देव दुंदभी बाजा, सुरग वस्यौ नृप सहित समाजा ।।८२२

सुक्राचारजजी कै श्लोक कै भावार्थ की येक चौपाई समेत
पंडित महेसदत्त सुक्ल क्रत प्राचीन चौपाई

चौपाई

अहो तितक्षा केर महातम। अहो दाँन फल अहै पुरातम।।
तिह प्रभाव हरचंद नरेसा। सुरपुर गवन्यौ सहित सुरेसा ।।८२३
कहत सूत हरचंद-कथाँनक। तुम सन कहा मुनीस सुभाँनक।।
दुखी सुनत जो इह सुख पावत। सत्य कहत कछू नाँहि कहावत ।।८२४
स्वर्गार्थि सुरपुर कँह जावहि। पुत्रार्थि उत्तँम सुत पावहि।।
भार्यार्थी[2] पावहि सुभ दारा। राजार्थी नृपत्व संसारा ।।८२५
हरिश्चंद्र- सम भूपत आँना। सत्य प्रतग्य न भयेऊ जहाँना।।
उन सम कर्म कंवर के जोगू। वँही भये नहि अव कोऊ लोगू ।।८२६

---

१ प्रसन्न। १ मू० प्र० भारार्थी।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दोहा

सुन जनमेजय व्यास सौं, चिरत[1] भूप हरचंद।
सबही सभाजन हित सहित, अत चित भये अँनंद ॥८२७
मात सताक्षी कीय मया, सुमरन करत स-माँन।
इहै मात कहाँ अवतरी, जाँनी चाहत जाँन ॥८२८

छंद हरगीतका

बोले सु व्यास विचारकै माहाराज धन्य महीपती।
देबी सताक्षी सुभग-दायक सदा पूजत सुक्रती॥
देबी जु वाचक वर्न-द्वै चित सौं करै कोऊ चिंतना।
असमेध[2] फल पावै वही आबै जु ताकौं अंत ना ॥८२९
सुनीयै सताक्षी चिरत श्रवनन पाप मेटहु पिंडकै।
उर करहु भक्ती सक्ती अवचल मुक्ती उक्ती मंडकै॥
कुल भयौ इक हरनाक्ष कै सुत रुद्र कौ दुर्गम सही।
दाँनव विचक्षन महा दारुन जाँनीयै कारन जही ॥८३०
उर करेऊ जाहि विचार इह सुर कौ जु बल भूसुर सुतै।
भूसुरहू बल है वेद-भासन जग्य-कारक है जितै॥
विध वेद कौं नासै विना सुर निबल होय न साथकै।
करीयै जु नासत वेद करनी जाँन दुजवर जातकै ॥८३१
तप करचौ कुछ हित होय तत्पर अद्रराट[3] हु ऊपरै।
इक सहँस वीते अब्द बाकौं कठन गत करनी करै।
सुरजेष्ट[4] ताकौं दयौ दरसन कह्यौ लै बरदाँन कौं।
बोल्यौ सु दैत विलोक कै अवगाह कै अवसाँन कौं ॥८३२
हमकौं हु दीजै वेद-हंसग[4] विप्र जाँनत जिह विधी।
जग-वीच जेतक मंत्र-जप सुर-असुर साधत जिह सिधी॥
सव जीतकै हम ह्वै सुखी विसतारहूँ जस वसुमती।
रुच भक्ति करहूँ रावरी सतधृती दाता सुक्रती ॥८३३

---

१ चरित्र। २ अश्वमेध यज्ञ। ३ हिमाचल। ४ ब्रह्मा।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तँह तथा-अस्तु कह्यौ तही वृह्मा जु हेत विचारकै।
सत-लोक विधहु सिधायगे वरदाँन दै तिह बारकै।।
करनी जु भूले सबही दुजकुल स्नाँन संध्या सेवकी।
स्रुती-सुमृती विन होम साधन दुति घटी सब देव की।।८३४
महि-वीच हाहाकार माच्यौ मूढ भये सब माँनवी।
भूदेव बोले कहा भयौ दिखरात माया दाँनवी।।
जप-जग्य सौं सब पुष्ट निरजर[1] दीन ह्वैगये देह सौं।
सुरलोक लीनौ घेर असुरन गवन कीनौ गेह सौं।।८३५
गिर-गुहा काँनन वीच गहबर लुरखरात[2] लुके-लुके।
बलहीन ह्वै अत दीन विहरत रहत कैद रुके-रुके।।
जप बंध होम भये जमी वरखा न होवत बार की।
सलता रुकी अरु सुके सरवर, ऋषी बारह भार की।।८३६
वसु वर्ष सत रही अनावृष्टी त्रस्त स्रष्टी ह्वै तही।
जब विप्र सोच विचारकै जीय गैल हिमगिर की गही।।
परचार ध्याँन समाद[3] पूजा सक्ति आद्या साधना।
जप करत तप वपु जक्त जननी अवर गूढ़ अराधना।।८३७
माहेस्वरी महकाय तूं जग जीव अंतर जाँमनी।
अब स्याहि करीयै ईस्वरी सब विस्वहू की स्वाँमनी।।
दुख-दमन तूं सुख-भवन देवी नमन करत निहोरकै।
इह करत विनती आपसौं जग-जननि दहुँ कर जोरकै।।८३८
सुर-अरज सुनकै भूसुरन की भई सरगुन[4] भेसकै।
पुन दयेऊ दरसन होय परसन पार्बती परवेसकै।।
मनि नील सम जिह नैन निर्मल नील रंग निरंजनी।
ऊन्नत उरोज अनूप आक्रत भूख जन-गन भंजनी।।८३९
करयुक्त लीनै बाँन कमलहु पुस्प पल्लव पत्र कौं।
साकाद फल नव वस्तु सरभर त्रिप्ति[5]कारक तत्र कौं।।
नवरात लौं जल नयन सौं वरसाय चहुदिस विथ्थुरचौ।
अन्नाद ऊन्नत ओसधी त्रपी भई दुरभिख टरचौ।।८४०

---

१ देवता। २ लड़खड़ाते थे। ३ समाधि। ४ सगुण। ५ तृप्ति।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

नद बहन लागेऊ नीर निर्मल भरे सरवर सरभरा ।
बहु अंन्न निपजे भार बारह ऊँन्नती जुत उर्बरा ।
सुर और भूसुरहूँ विवध गुन लगे कीरत गावनैं ।
वर्नना कर-कर विवध-विध पद मात परसे पावनैं ।।८४१
कूटस्थ सत-चित रूप कारन नित्य तूँ निर्दोखनी ।
भुवनेस्वरी तूँ भगवती परमात्मनी जग-पोखनी ।
हम क्षुधा आतुर हेर हीय द्रग दिव्य-रूप दिखायकैं ।
सत-सहँस नैनन धार संचर वार दीय वरसायकैं ।।८४२
माता सताक्षी भूँम-मंडल नाँम कल्पत सुर नरा ।
संसार-बीज-स्वरूपनी वर बढहि कीत वसुंधरा ।
मुनि-जननि अस्तुति करी मिलकै कंद-मूल कितेकहू ।
अंन्नाद दीनी ओसधी जुत स्वाद खाद जितेकहू ।।८४३
त्रन दये पसुवन[१]-काज तब जिह पुष्टिकारक जाँनकै ।
जुर करी जीवन जाचना सोइ देय दाँन समाँन कै ।।
साकाद दीने स्वादुमय संख्या[२] जु तिह साकंभरी ।
जय-जय पुकारत कहत जस बिरदाय मात विसंभरी ।।८४४
कीरत कुलाहल अंबका कीय सिंबरा तरु सालुरी ।
दूतन कह्यौं वृत्तांत[३] दुरगम भीर दाँनव सगभरी ।
सब रथन हय गय सुभट संजुत सहँस अक्षोहन सभौ ।
घन जेम प्रलय घुमंडकैं घहराय देवन पैं गज्यौ ।।८४५
घेरे जु जहाँ तहाँ वाट घाटन सैन ठाटत सभ्भकै[४] ।
अतसय अचानक भू भयाँनक बढे आनक बज्जकै ।
हलचलीय सागर सीम लांहद बढे दैत बली-बली ।
अराय सुर-भूसुर उठे गरराय भाग गली-गली ।।८४६
मुनिगनन मैं कलवली माची कली[५] दैंत प्रकोपकै ।
समसुप्त माँनहु वार सरसत लहरनिध[६] हद लोपकैं ।
कर त्राहि कूकन लोक-लोकन थोक-थोकन थंडकै ।
गहमहे घोषन प्राँन - पोखन मात घोखन मंडकैं ।।८४७

१ पशुओं । २ संज्ञा = नाम । ३ मू. प्र. वृतांत । ४ मू. प्र. सभ्भकं । ५ पापी । ६ समुद्र ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

संबोध देवी सुरन कौं अवलंब दैन उतावरी।
पुन आप तन कीय अगन परगट समुझ माया सावरी।
चँहुं ओर फेरी चकर दै विच देव जात वचायकै।
कलकारनै बाहर कढी रमनीक-रूप रचायकै।।८४८
कर-चाप लै टंकार करकै आय असुर उमंडकै।
करखन लगे गुनवाँन वर्खन मेघ धारन मंडकै।
मूँदे सु तिह छिन भूरमंडल स्वर्न पर्नहु सरन सौं।
अवलोक सुर मुनि ह्वै अचंभत भीत असुरन भरन सौं।।८४९
निज आप तन सौं श्रीनिरंजनी रूप केऊ परगट करे।
सोइ सक्तियाँ संख्या सुनौ द्रग देखकें दाँनव डरे।
तारनी बाला और त्रपुरा काल दनुजन कालका।
मातंगी तेज अगाध मंडत जगत माँनहु ज्वालका।।८५०
भैरवी बगलामुखी भ्राजत रमा पुन अवरेखीयै।
तुलजा रू त्रपुरासुंदरी द्रग छिन्नमस्ता देखीयै।
कामाक्षी मोहनी गुह्यकाली जंभनी अत जाजुला।
दस-सहँस बाहुक और देवी केऊ वतीस भई कला।।८५१
इन छोर चवसट भई अवरै सस्त्र-अस्त्र सँचारकें।
जुध करन लागी जहाँ-तहाँ विकराल-रूप विथारकै।
संघार दनुजन करचौ संगर दिवस दस दसहु-दिसा।
वरसात कीनी जिही विध सौं रुधर भीनी पुन रसा।।८५२
दिन ग्यारहै फिर दैत दुर्गम सुही वेख सँवारकै।
छत्तीस[1] आयुध तन सझे रथ चढचौ कारन रारकै।
सब संग लीनी बची सैन्या दुष्ट-रूप डरावने।
सब सक्तीयाँ जीती सु समहर[2] उमंड लागौ आवनै।।८५३
देवी सताक्षी देख दुर्गम क्रुद्ध कीय रन करनकौं।
तरकस निकारे बाँन तिछछन धनुप सिंजा धरनकौं।
कर ताँनकै गुन कांन लौ दनु प्राँन-हारक तज दये।
विधु[3] वदन लागे अस्व वपु कौं हेरकै च्यारहु हये।।८५४

१ मू. प्र. छतीस। २ युद्ध। ३ चंद्राकार।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

इक बांन मारचौ सारथी ऊर धूजकै धरनी धुक्यौ।
समरथ्थ मथ्थह धून समहर रथ्थ पै दाँनव रुक्यौ।
पुन येक दै तोरी पताका उड़ी अंबर ऊध कौं।
वल घटचौ तोहुन हटचौ वहुरै जुटचौ देवी जुद्ध कौं।।८५५
दोऊ बाँन दै दोऊ द्रगंन मै कलिकलत बली उन्मुख[1] करचौ।
तन बाँन मारे हृदय मै तिह पिंड गिर धरनी परचौ।
निरजीव ह्वै तिह जोत निकसी मात की दुति मै मिली।
सुख भयौ भूसुर सूरन कौं ब्रहुलोक की विपदा टली।।८५६
वृहमाद देव विचारकै सिव अग्र कर आये सबै।
कर वर्नना अत जोर कर कौं जीय करी परसन[2] जबै।
संतुष्ट ह्वै सुर-भूसुरन सौं कही श्रीमुख कारना।
चिद वेद है मोहि अंग च्यारहु ध्याँन धारहु धारना।।८५७
मरजाद वेद सु भूँम-मंडल प्रजा-हेत प्रचारीयै।
वैधेय भये सब वेद बिन निज हृदय मै निरधारीयै।
उपदेस मेरौ सत्य इह जामै न संसय जांनीयै।
दुरगम सँघारचौ खेत दाँनव मोह दुर्गा माँनीयै।।८५८
दुर्गा कहौगे महादुख मै आय करहुँ उवेल कौं।
साकंभरी कहि करहु सुमरन अंन्न देहु उभेल कौं।
सुमरन सताक्षी करहु साधन वृष्ट करहूँ वार की।
सुर और भूसुर सुनहु सब निज नेम के निरधार की।।८५९
इह चिरत जो मेरौ अनूपम सुनहि कोऊ संध्या समै।
कर सिद्ध मन की काँमना अरू अंतपुर मो अनुक्रमै।
वरदांन दै सुर मनोवंचत सुभग-लोक सिधायगी।
भूसुरन कौं उर भावना द्रढ वेदमय दरसायगी।।८६०

दोहा

-सूरजवंसी सोमकुल, भूम भये जे भूप।
परासक्ति के भक्त पुन, अतही भये अनूप।।८६१

---

१ अंधा। २ प्रसन्न।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

महि पै पाय महत्व कौं, वसे स्वर्ग मै वास।
उपजे देवी-ग्रंग सौं, देवीहू के दास ।।८६२
ग्रौर जगत मैं ग्रवतरे भक्ति बिनाँ भुव-भार।
साखी इह संसार कौं, काटन सिफा[1] कुठार ।।८६३
धाँन्यार्थी ज्यूँ धाँन लै, परहर भाग पराल।
सेवै परा जु सक्ति कौं, जक्त त्याग जंजाल ।।८६४
दुग्ध वेद कौं दोहिकै, सार निकारचौ सिध।
जे जन जग मै जाँनीयै, पराभक्ति परसिद्ध ।।८६५

छंद ग्ररध हरगीतका

सव विश्व ऊपर स्वाँमनी, जग-जीव-ग्रंतरजाँमनी।
विध विस्नु रुद्र विसेखीयै, देवाध देव जु देखीयै ।।८६६
ग्रासन बनायइ माँन की, थित कोन बैठहि थाँन की।
श्रीमहादेवी ग्रनुसरे, किल पंच बृह्मासन करे ।।८६७
इन पाँच सौं ग्रधकी ग्रभै, नारायँनी जाँनहु नृभै।
महमाय मैं ग्रनुमाँनीयै, जग ग्रोत-पोत ही जाँनीयै ।।८६८
जिह सक्ति कै विन जाँनीयै, मुक्ती न कवहूँ माँनीयै।
ग्राकास कौं ग्रवगाहकै, थित सिंधु पावै थाहकै ।।८६९
भुवनेस्वरी विन भाव सौं, पुज्जै न मुक्ति पसाव सौं।
साखा जु स्वेतासित रमै, परभाव सो चहु पत रमै ।।८७०
ध्याई जु जाँनत धारना, कहै अंबका जग कारना।
ग्ररू ध्याँन जोग उपाव सौं, पुन गुननके परभाव सौं ।।८७१
देवात्म सक्ति दिखात है, बहु गूढ जाकी बात है।
सारूप जोत विसेखीयै, देवीजु देवी देखीयै ।।८७२
बहु जतन करत विचारकैं, साफल्य जन्म सुधारकैं।
लज्या जुतै भय लायकैं, ग्रत प्रेम हृदय उपायकैं ।।८७३
सुख विसयके तज संगकैं, रुच भाव सौं मन रंगकैं।
हीय रोककैं चित हेत सौं, स्वाभाव सिद्ध समेत सौं ।।८७४

१ जड़।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

माँनै जु नेष्टा[1] मायकी, जाचै सु भक्ती जाहि की।
वेदांत-सास्त्र बिचार कौं, सासन इही ततसार कौं।।८७५
सोवतहु जागत साथ मैं, बैठतहु ऊठत बात मै।
ध्यावै जु देवी ध्याँन कौं, उर धारकैं अनुँमान कौं।।८७६
वैराट-रूप विसंभरी, इह विस्वहू की ईस्वरी।
इम प्रथम कर आलोचना, रुख तिही करीयै रोचना।।८७७
रमतीत सूत्रहु रूपनी, उपदेस ग्याँन अनूपनी।
जीय जाँन [अंतरजाँमनी, साखी सरूपा स्वाँमनी।।८७८
सोपाँन-क्रम सौं साधना, उर करै नित आराधना।
जब चित्त-सुद्धी जाँनीयै, पुन ग्याँन-ध्याँन प्रमानीयैं।।८७९
सच्चदानंद सरुप की, अभलाख कर अनुरूप की।
सेवै सु बृह्म-सरूपनी, भज प्रेम जग की भूपनी।।८८०
पर सोइ उलास प्रपंचकैं, वृती[2] लीन करीयै वंचकैं।
आराधना जानौ इही, कछु और नँही जातै कही।।८८१
सूरज रू बंसी सोम के, सुगता भये नृप भोम के।
वरनी सु तिन की वारता, अरू दाँन क्रीत उदारता।।८८२
बूझन सु चाहत वूझीयै, हीय नृप कतारथ हूजीयै।
इह कही व्यास उचारकैं, बाँनी विधाँन विचारकैं।।८८३
जब करूपति करजोरकैं, बूझे सु प्रस्न बहोरकैं।
इक अरज मेरी औरहू, थिर चित्त सुनीयै[3] थोरहू।।८८४
कथ आप इह पूरव कही, श्रीपराअंबा है सही।
त्रहु-देव कौं देवी त्रहूँ, कीनी पसाव सु जिन कहूँ।।८८५
अरू आपही यैसैं कही, श्रीखीरसागर-धीसही।
गौरी-सुता सु गिरीस की, अरधंग है सोइ ईस की।।८८६
वँह मूल-देवी आद सौं, अवतरी सुद्ध उपाध सौं।
पद्मा सुता पाथोद मै, गौरी सु हिमगिर-गोद मै।।८८७
ये पुनर कैसे अवतरी, विस्नू महेस्वर जिह वरी।
कहीयै सु सबही कारना, धारै सु हीय मै धारना।।८८८

---

१ निष्ठा। २ वृत्तियों को। ३ मू. प्र. सुनी।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सुन प्रस्न कुरूपत आँन सौं, पारासरेय प्रमाँन सौं।
वारता लागे वर्ननें, कल्याँन जगकौ कर्ननै ।।८८९
श्रीपराअंबा सेव कौं, दीय सक्तीयाँ त्रहुँ-देव कौं।
स्रष्टी रची तिह साथही, वसुमती वीच विख्यातही ।।८९०
परजा वढी परमेस्वरी, अनुकंपया जुत ईस्वरी।
इक हलाहल दनु ऊपज्यौ, गहराय देवन पै गज्यौ ।।८९१
वृह्माँ सु लै वरदाँन कौं, अित जीत देवन थाँन कौं।
त्रयलोक-विजय करी तही, सुर जेर तँह कीने सही ।।८९२
कथलासहू घेरचौ करचौ, वयकूठहू नही ऊवरचौ।
काँमार[1] अरू कंटभअरी, पुन भीर तिनहूँ पै परी ।।८९३
लरनै सु लागे लाग सौं, रन-विजय के अनुराग सौं।
रमतै हायन रारकैं, ह्वै गये साठ-हजारकैं ।।८९४
जीते सु दाँनव-जात कौं, सिव-विस्नु येकै साथ कौं।
छित दाँनवन कर छेह कौं, गवने सु दोउ सुरगेह कौं। ८९५
श्रीपरा दीनी सक्तीयाँ, जिह सौं मिले सुख जुक्तीयाँ।
अभिमान कर-कर आपकौं, तिह दैन लागे ताप कौं ।।८९६
मसकरी[2] कर-कर माँन सौं, वातै बनाय विधाँन सौं।
जीते सु जिनही जोर सौं, वह समुझ औरही और सौं ।।८९७
दुर्गा रमाँ देवी दुनौ, अपमाँन सँमुझचौ आपुनौ।
मेटन सु दोउ सुर माँन कौं, धारचौ सु अंतरध्याँन कौं ।।८९८
सोइ आप रूप समायकै, विपु दिव्य गइय विलायकै।
हर हरी पहुँचे हाँन कौं, निस्तेज भयेऊ निदाँन कौं ।।८९९
सुरसहित सृष्ट समाज के, करता न काहू काज कै।
वृह्मा विचारी वारता, उर जोग-ध्याँन अधारता ।।९००
इह देवीयाँ अपमाँन सौं, गम हीन ह्वैगये ग्याँन सौं।
सब विस्व करन सनाथ कौं, करनै लगे जग काथ कौं ।।९०१
तिहुँ देव-कारज तिष्टकै, सुरजेष्ट करत समष्ट कै।
उतपत्त पालन आद कौं, बहु रहत करत विखाद कौं ।।९०२

---

१ महादेव। २ विनोद, हँसी।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

थविरहू[1] भये मति थोथ कैं, हारे सु केऊ दिन होत कैं।
सुविचार विध सुत सलसले, मन्वाँद सनकादिक मिले ।।६०३
द्रग पिता विध कौं देखकैं, वारता बूज विसेख कैं।
क्यूँ खेद-जुक्त क्रपाल जू, हमकौं जु कहोयै हाल जू ।।६०४
जब कही विध सुत जाँनकै, सब रीत परम सयाँनकै।
हित सृष्ट करता हरि-हरा, भये सक्ति-होन विसंभरा ।।६०५
मै काज करता मोरकै, इन काज करत जु औरकै।
कल परत नाहिन पलक कौं, खित पै सँभारत खलक कौं ।।६०६
तुम जतन करहू ताहि कौं, मिल भजहु श्रीमाहामाय कौं।
दै सक्तीयाँ सुर दहुँन कौं, गौरी रमाँ कर गृहन कौं ।।६०७
सांमर्थ लैकै सक्तीयां, जब काज जाँनै जुक्तीयां।
हर-हरी समलै हाल सौं, जब छुटै इह जंजाल सौं ।।६०८
हम करै तप-जप हेरकै, बन सकै नहि इह वेरकै।
परसंन कर परमेस्वरी, हित मोहि करहू हर-हरी ।।६०९
इह उकत सुन विध आपकी, जग-जननि पूजा जाप की।
विध वेद करहु विचारकैं, ध्रुव ध्यांन निस्चय धारकैं ।।६१०

दोहा

परजापत दक्षाद पुन, सनकादिक मनु संग।
करन लगे जप-तप कठन, पूजा मात प्रसंग ।।६११
वीते तिनकौं लख वरख, आराधना उपाय।
परसन ह्वै दरसन प्रगट, श्री दीनौ सुराय ।।६१२

छंद त्रोटक

करुनारस-भीनीय मात क्रपा, तिह नैनन मैं सरसात त्रपा।
कर पंकज पासहु अंकुसकै, वर मुद्रका लाय अभै वसकैं ।।६१३
त्रय-लोचन भाल विराजत है, प्रतिछंद प्रभा परकासत है।
सचदानंद विस्व-स्वरूप स्वयं, महा सुंदर संचर तेज-मयं ।।६१४

---

१ ब्रह्मा।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

नुत कौं करकै सुर पायन मै, हीय जान कृतारथ कीन हमै ।
विनती इह कीन सबै विबुधा, सुन मात कहे वच रूप सुधा ॥६१५
किह कारन मोकह याद करी, परचाय कहौ कहा भीर परी ।
इतनी सुन देव करी अरजी, गुन-हीन सबै हम है गरजी ॥६१६
पद पंकज भूलकै सेव-प्रथा, विसीया[1] रस मैं रहे भूल वृथा ।
तऊ माँत कृपा करकै त्रगुनी, सुर-भासन की अरदास सुनी ॥६१७
असमर्थ भये सिव विस्नु अजा, परभाव भई जिह पीड़ प्रजा ।
अजहू फिर काज करयौ इनकौ, मिलकै सृम माँन तज्यौ मनकौ ॥६१८
सिव विस्नू पसाव करौ सगती, जिह तै सब पीर मिटै जगती ।
सुन मात कही इह बात सही, निरनौ सिव जाँनत विस्नु नही ॥६१६
सगती लहि सृष्ट सबै सिरजा, परपूरन[2] भूम भई परजा ।
अपमाँन करचौ तज आदर ज्याँ, विलमाय गई नभ वादर ज्याँ ॥६२०
परजापत येह सुनौ प्रवती, सोइ ग्रेह-सुता तुहि होय सती ।
श्रीय होय सुता पुन सागर की, अत रूप अनूप उजागर की ॥६२१
अपमाँन करैं कबहूँ अब ना, करदेहु हरी-हर कौं कहना ।
रिभु लोकप औ सनकाद रिसी, वरदाँन कौं दै मनीदीप वसी ॥६२२
सनकादिक आद सबै सुरहू, विध कौं कथ आँन कही वरहू ।
पंचआँनन औ वयकूंठ-पती, समरथ्थ भये लहि कै सुमृती ॥६२३
करनै पुन लागेऊ कारज कौं, उर मै गहिकै अत आरज[3] कौं ।
जगमात प्रीया सोइ धूरजटी, परजापत-ग्रेह सुता प्रगटी ॥६२४
सविसेख धरचौ सोइ नाम सती, सोइ दक्ष दई सिव कौं सुक्रती ।
त्रयलोक अनंदत होय तँही, रमनी हुय है सिव-संग रही ॥६२५
पतिवृत्त-पराँयन सिंभु-प्रीया, सिवकै गृह-वास वसी सुकीया ।
बहुकाल वृतीत[4] भये बिव कौं, सुख भोगत जोग सिवा सिव कौं ॥६२६
मुनि जाय कुसारनी[5] आप मतै, सलता जंबु ईस्वरी-धाँम सुतै ।
जहाँ बैठकै बीज ही मंत्र जपा, करनी लख मात करी किरपा ॥६२७
हत देबीय फूलन-माल दई, महां सुंदर येक सुगंध मई ।
मुनि होय प्रसंन चले मन सौं, च नभ-पंथ जिही छिन सौं ॥६२८

१ विषय । २ परिपूर्ण । ३ प्रार्जव । ४ व्यतीत । ५ दुर्वासा ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

परजापत-धाँम गये प्रथमै, नीयराय सतीकँह पायन मै ।
पुहपावलि देख प्रजापतहू, चिव पायकै चाहि चढी चितहू ।।६२६
दिख माँग लई मुनिराज दई, सोइ डार चल्यौ गल-वीच सही ।
अवरोधन वीच गयौ अपनै, तन काँम की ताप लग्यौ तपनै ।।६३०
द्रुत माल उतारकै मेल दई, मदमत्त भयौ रति-खेल मई ।
सती बात सुनी रू महेस्वर मै, अप्रसंन भये अपने उर मैं ।।६३१
सती ईस की बातहू दक्ष सुनी, करनै जब वैर लग्यौ कुहनी ।
जुत रंज लख्यौ पितु कौं जबही, सती जार दयौ तनकौं सबही ।।६३२
अवतार लयौ पुन आद अजा, गिरी हैम कै ग्रेह सुता गिरजा ।
कुरविंद्र कही इह व्यास कथा, जिनसौं फिर बूझीय येह जथा ।।६३३
सती जार दयौ तन जाहि समै, कहौ कीन ऊमापत कोन क्रमै ।
कहनै पुन लागेऊ व्यास कथा, जग अंतर वीतीय बात जथा ।।६३४

दोहा

सती जरी ताही समय, कीय जग हाहाकार ।
जोग अगन की ज्वाल मै, चाहि करचौ तन छार ।।६३५
भये ससंकत[1] त्रहुँ-भुवन, सुन अरष्ट इक साथ ।
डोल रसा गिर डगमगत, पयनिध उभले पाथ ।।६३६

छंद द्वै-अख्खरी

संकर बात सुनी इह स्रांनन, परम कोप कीनौ पंचानन ।
दहकत अगन मनहु घृत डारचौ, प्रलय किधाँ विन अवध[2]प्रचारचौ ।।६३७
भद्रकालका गुन-जुत भारी, वीरभद्र प्रगटचौ जिह वारी ।
महाप्रचंड कुद्ध के मारचौ, परजापत कौं जाय प्रहारचौ ।।६३८
प्रलय करन लाग्यौ पुन पुहमी, भयौ कुलाहल सृष्टी भूमी ।
द्रुघन[3] आद सब देव डराँनै, सिव के सरनहु गये सयाँनै ।।६३९
अस्तुत करी विवध-विध आरत, अवध विना क्यूँ सृष्ट उजारत ।
संकर विनय देवतन सुन पै, गुन कीनौ येते अवगुन पै ।।६४०

---

१ सशंकित । २ अवधि = समय । ३ ब्रह्मा ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वीरभद्र कौं क्रौध विहायौ, बहुरें अपनै लोक वसायौ।
दक्षप्रजापत सौं तज दायौ[1], जोर छगल-मुख ताहि जिवायौ ।।६४१
जिग्य-कुंड देवी तन जारचौ, वह सरीर लै कंध उपारचौ[2]।
पिंड सती सौं करकै प्रीती, रोदन करत चले बहु-रीती ।।६४२
भ्रांत-चित्त ह्वै भृमते-भृमते, रेना[3] ऊपर फिरै जु रमते।
विध आदक करते रहे बाहर, बृहमइंड सौं जाय न बाहर ।।६४३
विस्नू जब तजबीज विचारी, लै धनुबाँन लगे सिव लारी।
ताक ताक काटचौ सति[4] तन कौं, जटधर खबर न पारी जिनकौं ।।६४४
इह विस्नू कीनौ हित आछै, पुन वृतंत जाँन्यौ सिव पाछै।
बोले सिंभु विमल-मति बाँनी, भई पतित जहाँ देह भवानी ।।६४५
तीरथ प्रगट भये जग तेते, उत्तँम लखहु धाँम है येते।
जप तप करहि बैठ तिह जागा, सफल होय साधन हु सभागा ।।६४६
माया-बीज इती कहि मुख सौं, दुखी भये माहेस्वर दुख सौं।
इन धाँमन मै विचरत एको, विरह सती उर-ताप विसेखो ।।६४७
धर समाध उर-ध्याँन जु धारत, सती-सती मुख नाम सँभारत।
धाँम पवित्र नाँम हीय धारहु, निरनै कर भाखन निरधारहु ।।६४८
सिद्ध-पीठ सोई सुस्थाँना, जे परगट है बीच जहाँना।
स्रवन करत जोइ नाँम सुहावन, परम पवित्र होय नर पावन ।।६४९
मुख भौ पतित प्रथम कासी मह, विसालाक्षी[5] देवी जाँनहु वँह।
जोन देस निमखारन[6] जाँनहु, लिंगधारनी[7] नाँम निदाँनहु ।।६५०
पुन प्रयाग मै ललता[8] पुनीयै, गँधमादन गिर काँमुकी गँनीयै।
दक्षन माँनस कुमदा[9] देवी, सुर नर नाग सकल जनसेवी ।।६५१
रंम्य उत्तर माँनससर राजत, विस्वकाँमनी पूर विराजत।
विसकाँमा[10] ताँही धाँ वरनत, गिर गोमंत गोमती गनीयत ।।६५२
मंदराचल पै दनुज मारनी, चिरत अँनूपम काँमचारनी[11]।
विहरत सदाँ चैत्ररथ वन मै, मदोत्कटा मदमाती मन मै ।।६५३
हथनापुर जयंती अघ हनीयत, गौरी पुर कनोज मै गनीयत।
मल्हागिरी पै रंभा माँनहु, आँमृपीठ पै येका[12] आँनहु ।।६५४

१ प्रतिहिंसा-भाव। २ ऊपर डाल लिया। ३ पृथ्वी। ४ सती। ५ विशालाक्षी। ६ निमिषारण्य। ७ लिंगधारिणी। ८ ललिता। ९ कुमुदा। १० विश्वकामा। ११ कामचारिणी। १२ एकाम्रपीठ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कीर्तमती ताही कौं कहीयत, लाभ कीरती जासौं लहीयत ।
विस्व विस्वईस्वरी[1] बराबर, पुरहूता देवी है पुसकर ।।६५५
पीठ थांन केदार पायनी, देबी तहां सन्मार्ग-दायनी ।
है मंदा-पर्बत हैंमालय, उच्च सुथाँन जाहि कौ आलय ।।६५६
तीरथ है गोकर्न तहाँही, जाँनहु भद्रकर्नका ज्याँही ।
थांनेस्वर जहां खेत्र सुथाँनी, भुवन-भूपनी मात-भवाँनी ।।६५७
बिल्वधाँम माँही विलपत्रा[2] श्रीपर्बत माध्वी सुचरित्रा ।
भद्रेस्वर मै देवी भद्रा, अखल जया बाराह सु अद्रा ।।६५८
कमलालय सुथाँन मै कमला, रुद्रकोट रुद्राँनी[3] रमला ।
कालंजर मै काली सोई, सालग्राँम महादेवी सोई ।।६५९
सिवलिंग ही जलप्रीया[4] सुहाता, महालिंग पै कपला[5] माता ।
मायकोट मुकटेस्वरी मानहु, मायापुरि कुमारि उनमांनहु ।।६६०
ललितअंबका संताँन मै लहीयै, गया मंगला पद-रज गहीयै ।
पुरषोतमपुर विमला पावन, सहस्राक्षि पुर धांम सुहावन ।।६६१
उत्पलाक्षी महमाय उदारा, सकल ताहि पूजत संसारा ।
हिरंनाक्ष मै थाँन सुहाता, महोत्पला जँह ठाँम है माता ।६६२
नदी विपासा तापै नहचल, अमोघाक्षी है मात अपरबल ।
पुंद्रवर्धन[6] मात पाड़ला, सुपार्स मैं नाराँयनि सकला ।।६६३
रुद्रसुंदरी त्रकूट पै राजत, विप्रल[7] मै विपुला हु विराजत ।
मलयाचल कल्याँनी माता, सरधाद्रा[8] त्रकवीराह[9] सुख्याता ।।६६४
चंद्रका हरीचंद्र पै छाजत, रामतीर्थ मै रमना राजत ।
जमुना मिरघावती जहाँही, कोटतीर्थं कोटवी कहाँही ।।६६५
माधववनहु सुगंधा मुनीयै, गोदावरी त्रसंध्या गँनीयै ।
गंगाद्वार रतिप्रीया गाँवत, सुभा नंदा सिवकुंड सुहावत ।।६६६
तट देवका नंदनी त्यूँही, जाँनहु द्वारका रुक्मनी ज्यूँही ।
वृंदावन मै राधा विहरत, मथरापुरी देवकी महामत ।।६६७
परमेस्वरी पाल मै प्रवीता, सोहत चित्रकूट पै सीता ।
विंध्याचल पै विंध्रवासनी, लछमा करवीर मै हुलासनी ।।६६८

---

१ विश्वेश्वरी । २ बिल्व-पत्रिका । ३ रुद्राणी । ४ जलप्रिया । ५ कपिला ।
६ पुंड्रवर्धन । ७ स्थान विशेष । ८ सह्याद्रि । ९ कावीरा ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तीर्थ विनायक ऊमीया तैसै, विस्वनाथ आरोग्या वैसै।
माहाकाल माहेस्वरी-माया, उस्न तीर्थ मै जाँनहु अभया ।।६६९
विंध्यापर्वत ज्युँही नितंबा, ऐसै माड़व-माड़वी अंबा।
सोहत माहेस्वर पुर स्वाहा, छगल येड परचंडा चाहा ।।६७०
अमरकंट चंडका उजागर, सोभत वराह्हा सोमेसुर।
पुस्करावती है प्रभात मै, देवमात सरस्वत दिखात मै ।।६७१
पै समुद्रतट पारावारा, महाभागा महालाव मझारा।
पिंगलेस्वरी पौखापाँही, कृतसौंच मै सिंघका कहाही ।।६७२
कार्तक माहे निसा जु करी, उत्पला वृत लोला अनुसरी।
संगम सोन सुभद्रा सरसत, सिधवन माँही माता सोहत ।।६७३
भरतास्रम पै कला जु भासत, अनंग लक्षमी रूप उपासत।
विस्वमुखी जालंधर वसयत, किसकंधा मै तारा कहीयत ।।६७४
देवदार वन पुष्टी-दाया, कासमीर मेधा जु कहाया।
भींमा हिमा-अद्र पै आजै, विस्वेसुर तुष्टी सु विराजै ।।६७५
अद्वी कृपाल मोचन सोहत, वरारोहन मै मात विमोहत।
धरा माँत तूं संखोधार मै, पिंडाकारक धृती प्रकार मै।। ६७६
चंद्र-भागातट कमला छाजै, सिव-धारनि मच्छोद समाजै।
वेना मै अंमृता वसाता, वद्रकास्रम उरवसी विख्याता ।।६७७
उत्तर कुरु ओसधी अँनूपा, कुसहुदीप मै कुसोदका रूपा।
हेमकूट मन्मथा कहावै, सत्यवादनी कुमद सुहावै ।।६७८
अस्वँत्थ मै राजत वंदनीया, निध कुवेर आलय मै लहीया।
गायत्री वेदन मै गावै, सिव संनिध पार्वती सुहावै ।।६७९
सुरग-लोक इंद्राँनी साजै, बृह्मा-सुख सरस्वती विराजै।
सूर्ज-बिंब मे प्रभा सुहाई, माता मही वैस्नवी माई ।।६८०
अरंधुती सतीयन मै ऐसै,, तिलौत्तमा राँमा मै तैसै।
जग-जीवन मै बृह्मकला जिम, इकसत-आठ नाँम जाँनहु इम ।।६८१
सती अंग सौं उपजी सोई, गन प्रसंग मै औरहु गई।
जजन करन लायक सव जाँनौ, पूजनहू विध वेद प्रमाँनौ ।।६८२

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

श्री देवी भागवत के तिलक करता
श्री पंडित महेसदत्त की प्राचीन चौपाई मैं महाँत्म-वर्नन
चौपाई

अष्टोतरसत नाँम भवाँनी । सुमरत सुनत जौन जग प्राँनो ।।
सबै पाप सौं मुक्त मरन मै । सौ देवी की जात सरन मै ।।६८३
इतनै पीठन मै जो कोई । जात सकल फल पावत सोई ।।
जात्रा-विध सौं पौंचत जँहवाँ । तर्पन स्राध करत जो तहवाँ ।।६८४
अह देवी की महती पूजा । विध सौं करत त्याग कै दूजा ।।
जग माता सौं करत क्षमापन । वारवार तिह चित दै आपन ।।६८५
जनमेजय सो होत कृतारथ । जो इह विध पूर्वत निज स्वारथ ।।
भक्ष भोज्य पुन विवध प्रकारा । दुजहि जिमावत सहित पियारा ।।६८६
चित्रांबर पहिराय कुमारी । अत जो पूजत जाँन दुलारी ।।
बटुकन भोजन देत तहाँई । अरु जो जीव देव तिह माँही ।।६८७
सब देवी के रूप जाहि सौं । पूजनीय सब भाँत ताहि सौं ।।
आपन करै पती-गृह काहू । क्षेत्रन मह चह लह बड़ लाहू ।।६८८
ईथा सक्ति तँह जाय मंत्र कर । पुरश्चरन करलेय भक्तवर ।।
जो देवता वसत है जहवाँ । ताहि मंत्र कर तोखहु तँहवाँ ।।६८९
वित्त साढत देवी वर-दासा । कबहु न करै ज्युही कछु आसा ।।
जो या विध देवी की जात्रा । करत प्रेम-जुत मनुज सुपात्रा ।।६९०
ताके पित्र सहस्रन कल्पा । वसत बृंह्मपुर रहित विकल्पा ।।
वह सु अंन्न देवी-पुर जावै । लहि तँहि ग्याँन भक्ति कौं पावै ।।६९१
अष्टोतरसत नाँम जाप तै । वहुत सिद्ध ह्वै छूट पात तै ।।
पुस्तक लिखत जँहाँ ये नामा । रहत तहाँ नहि मारी वामा ।।६९२
अरू सुजोग्य तहाँ नित बाढै । कवहु न तहाँ नर पर ही गाढै ।।
नमहि देव-गन तिह लख आपू । नरन केर फिर तँह कहा दापू ।।६९३
स्राध समय जो नांम ऊचारै । पितर भवाब्ध-पार ऊतारै ।।
ह्वै कै त्रप्ति परमपद पावै । पितर बहुर संसार न आवै ।।६९४
इतने मुक्ति-क्षेत्र महिपाला । छिन मह तुम सन कह्यौ कृपाला ।।
सिद्ध-पीठ ये है सव जासौं । बुद्धिमाँन तँह वसहै जासौं ।।६९५
पूछहि जो भगवती-चरित्रा । कहेउ भूप जो अतही पवित्रा ।।
अब का सुना चहत महिपाला । निज मन की कहु तज मन-जाला ।।६९६

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सोरठा

जनमेजय कर जोर, व्यास पाँहि कर बीनती ।
उमाँ तेज सोइ औरर, हिम-गिर कि मपरगट हुयौ ।।६६७
दक्ष - सुना स देह, अगन - जरी पुन अवतरी ।
अभलाखा हीय येह, कहहु व्यास गौरी कथा ।।६६८

छंद त्रोटक

कहनै पुन लागेउ व्यास कथा, जनमी गिरजा गिर गोद-जथा ।
सती त्याग करयौ तन जाहि समै, भृमते रहे सिंभु भुलाय भूमै ।।६६६
कोऊ थांनक देख इकंत कितै, उर ध्याँन मृडाँनीय धार इतै ।
लवलीन भयेऊ समाध लगी, जोय मै प्रीय आसय जोत जगी ।।१०००
मति भूल गये तनकौं मनकौं, जोय की न रही सुमृती जिनकौं ।
पर सोम पतंगहु हीन प्रभा, सु विचार मिटचौ सब देव-सभा ।।१००१
इक तारक दाँनव भौ इतनै, विध सौं तिह कीनीय येह विनै ।
मृतु औरनकै कर होय मनै, हर कौ सुत मोकँह खेत हनै ।।१००२
विधहू सुन ताहि दयौ वर कौं, घिर दैत गयौ अपनै घर कौं ।
मन सोच विचारकै सिद्धमती, सिव-कांम जरचौ जरी तीय सती ।।१००३
सिव कै सुत होय नही सपनै, उपजै निरीया तन ना अपनै ।
भय कौं तज देवन जुद्ध भिरचौ, सब जीत लये निज काज सरचौ ।।१००४
सुर भाग चले डर सौं सिगरे, दसहू-दिस कांतर वोच दुरे ।
सिव कै अरधंगीय नार सती, तन-त्याग करचौ विच आग तती ।।१००५
विरहावस ह्वै सिवहू विचरै, इक नाँम सती हुँ सती उचरै ।
अपनी न सँभाल न औरन की, ठिक जाहि न ठाहर ठौरन की ।।१००६
सबही दुचते-हुय एक समा, रिभु[1] जाय जुहारेऊ नाथ रमा ।
कर मंत सबै वरतंत कह्यौ, दनु तारक देवन साथ दह्यौ ।।१००७
कछु आप वतावहु नाथ क्रीया, प्रगटै पुन देवोय सिंभु-प्रीया ।
जनमै सुत धूरजटी तवही, सुरजात कौ दुःख मिटै सबही ।।१००८

---

१ देवता ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अरजी सुन देवन की इतनी, कर संमत येह करी कथनी ।
दुख मेटहिगी तुम देख दया, मनीदीप निवासनी मात मया ।।१००९
मिलकै तुम जाहि मनावहुगे, परताप जिही सुख पावहुगे ।
सब देव चले हरि की सुनकै, जगनाथहू संग भये जिनकै ।।१०१०
चल आयेऊ सोय हिमाँचल पै, थित देख इकंत जिही थल पै ।
करनै जप लागेऊ ध्यांन कथा, जोइ जाँनत है जिह भाँत जथा ।।१०११
केऊ द्योस अखंड करी करनी, विध वेद सौं जाहि जथा वरनी ।
नवमी मधुमास निरालीय मै, उसना[1] सुभवार उजालीय मै ।।१०१२
प्रतिबिंबत तेज महा प्रगस्यौ, असमाँन लौं भूतल आद अस्यौ ।
चहु ओर प्रभा परकास चढै, प्रतिचंद धरै नुत[2] वेद पढै ।।१०१३
दुति कोटक सूरज की दरसै, ससि कोटक सीतलता सरसै ।
जननी प्रगटी इह जोत जबै, सुर होय अचंभत देख सबै ।।१०१४
समटी सोई तेज की रास सु तै, इक सुंदर ह्वैगई नार इतै ।
नव कोमल अंग निकाइय की, जग मै नही ओपम जाहीय की ।।१०१५
सुकमार कुमारीय संचर की, सुभ षोड़स वेस समंचर की ।
फल बील कठोर उरोज फबै, समटे अँगीयान सवाँर सबै ।।१०१६
धुन किंकनी की कटि धारन मै, प्रतिबिंब परै पसवारन मै ।
विहु बाँहन बीच बँधे वजुला, कमनीय मनौ विजुला की कला ।।१०१७
मुदरी अंगुरीयन मै मनि की, करकै मनिबंधन कंकन की ।
मुगताँन की माल गलै महीयाँ, चँमकै मनि माँनक की छँहीयाँ ।।१०१८
सकुचै पुहमी पग संभन सौं, नमक कट भार नितंवन सौं ।
ख़त-नाभीय तुंद रह्यौ खुलकै, रचना विच रेख रुमावल कै ।।१०१९
विधु अष्टमी भाल विराजत हैं, रज वंदन बिंदीय राजत है ।
हिमकंदल से अधुराँन हसै, विच हीर-कनी सम दंत वसै ।।१०२०
जुर जाय जुही उरजालन की, मुचकुंद रू मालती मालन की ।
दुति आँनन चंद ज्युही दरसै, सिर क्रीट जराव जर्यौ सरसै ।।१०२१
मिल अंकुस पास अभै मुदरा,, धुर सोहत है वरहात धरा ।
चिव दीसत ज्यौं घन मै चपला, करुना-रस माँनहु सांति कला ।।१०२२

---

१ शुक्रवार । २ स्तुति ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मुख नागरवेलीय-पत्रम सैं, वपु अंसुक किंसुक-फूल वसैं।
नमकै सुर लागेऊ पायन मैं, जुरकै फिर होयकै येक जुमैं ।।१०२३
महादेवी कहै जयमात मया, दुरगा कोऊ वोलत नाँम दया।
कोऊ मात विराटनी रूप कहै, ओउंकार-सरूपनी बीज इहै ।।१०२४
कोऊ सब्द-सरूपनी कांतीकला, जगजोत सरूपनी रूप जुला।
करजोरकै वंदन देव करै, अविधा जय सद्द मुखा उचरै ।।१०२५
स्तुती वहु भाँत करी सवही, जग-मात क्रपाल भई जबही।
सुर देख प्रसंन महाँ सगती, मन उक्त करी विनती की मती ।।१०२६
जग-जीव की अंतरजाँमन तूँ, सब लोक-अलोक की स्वाँमन तूँ।
सुख-दुःख नही अप्रचंन्न सहो, अरदास करै तऊ मात अहो ।।१०२७
भृगु कौ सिख तारक नाँम भयौ, विधहू सौं जिही वरदाँन लयौ।
तन पै मोहि और न मृत्यु तकै, सिव कौ इक पुत्र संघार सकै ।।१०२८
सिव होय गये विन नार सती, पतनी विन पुत्र कहा प्रवृती।
सुर होय सुखी अनुराग सरौ, प्रगटै सिव कै सुत काज परौ ।।१०२९
इह संकट मेटहु मात अजा, परपूरन होवहि देव प्रजा।
दुर बैठ रहे डरते-डरते, केउ द्योस भये विनती करते ।।१०३०
दरसी तुव मूरत पुंज्ज दुती, सुर साथ भये सवही सुक्रती।
भगवंतीय मेट करौ भय कौं, लहिकै सु वसाय सुरालय कौं ।।१०३१
अरजी सुनकै कह मात इती, थिर सीस हिमालय जाहि थिती।
गवरी तिह नाँम सोई गिरजा, सिवकै हित काज जिही सिरजा ।।१०३२
मिलकै सुर देव महेस्वर कौं, वँह पुत्र मिटाय सकै अर[1] कौं।
हिमवाँन करै भगती हित सौं, चितवै हमहूँ मत सौं चित सौं ।।१०३३
अवतार लयौ गृह वाहीय कै, निरनौ इह साथ निकाइय कै।
मुख वात कही कर मात मया, जुरकै सुर किन्नेऊ सद्द जया ।।१०३४

दोहा

लख प्रसंन्न ललचायकै, पूछेऊ देवी प्रस्न।
जोग वेद वेदांत-जुत, सुखप्रद कहहु सहिस्नु ।।१०३५

१ वैरी।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

भक्ति-जुक्त निज भावना, विस्व-रूप वपु वेख।
होय कृतारथ देख हम, इहं अभिलाख असेख ।।१०३६

छंद उधोर

सुन वचन हिम गिर स्रांन[1], सव सुरन साथ समाँन।
इह प्रस्न सुन अनुकूल, फूले सु जिम तरु-फूल ।।१०३७
रुच जाँनकै सुरराय, पुन सुरन सौं सुख पाय।
हिमवाँन सौं कर हेत, संखेप तत्व समेत ।।१०३८
कहनै लगी सव कथ्थ, अँनुमाँन ग्याँन अरथ्थ।
हम विना जाँनहु हाल, कछु नहिन पूरवकाल ।।१०३९
आतमा-रूप अनूप, चिच्छक्ति जाँन चिद्रूप।
निज पारवृह्म ही नाँम, वँह अँनिर्देस अकाँम ।।१०४०
वामै विकार ना येक, वपु रूप सौं वितरेक।
सक्ती जु जामै सिद्ध, माया सु नाँम प्रसिद्ध ।।१०४१
सती नाहि असती सोय, जुग सौं विलक्षन जोय।
जिह अनर्वचनी जाँन, अभिरूप उर अनुमाँन ।।१०४२
सो वनी रहत सदाह, दमुना[2] सु जैसै दाह।
जिम तरन किरनन जूह, चंद्रका चंद्र समूह ।।१०४३
सम होत परगट संग, पहिचाँन लखहु प्रसंग।
वरताव प्रलय विचाल, क्रम जीव जीवन-काल ।।१०४४
वँह होत लीन अभेद, विसतार वरनंत वेद।
जिम सयन सोवत जींव, स्रम पाय तमहु सदीव ।।१०४५
वपु लीन ह्वै विवहार, सोइ लखत सव संसार।
आपनी सक्ति उद्योग, जग बीजता ह्वै जोग ।।१०४६
वह हमही है नही और, आधार वृह्म अथोर।
करता अछादन काय, दोषत्व येह दिखाय ।।१०४७
पुन जोग चेतन पेख, निमतत्व कहत निरेख।
परपंच के परनाँम, समवाय कहत सुग्याँन ।।१०४८

१ मू० प्र० स्रौंन। २ अग्नि।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

नित तिही माया नाँम, तप कहत है जुत माँम।
तँम कहै कोऊक ताहि, जड़ कहै कोऊक जाहि ॥१०४६
गुन कहै कोऊक ग्याँन, पुन कहै कोऊ परधाँन।
पृक्रती कहत परेख, बहु सक्ति कहत विसेख ॥१०५०
पुन सैइव[1] सास्त्र प्रचार, बोलत विमर्स बिचार।
ते वेद जाँनत तंत, वँह अविद्या उचरंत ॥१०५१
निगमाद विध-विध नाँम, जे कहत आठौ जाँम।
द्रग रूप जाहि दिखाय, जड़ कहत मिथ्या जाहि ॥१०५२
सम्बद्रूप अनुभव सोय, साक्षी सरूप सुगोय।
अनुभूत होवत येव, सम्वितसरी रस भेव ॥१०५३
ह्वै स्रेष्ट स्रेष्टा होत, अँनुमाँन द्रष्ट उदोत।
षट-सास्त्र दरसी खेम, नि:तत्व भाखत नेम ॥१०५४
आनंदरूप अनाद, वाख्यान करत विवाद।
मिल सर्ब लोकन माँहि, सुख प्रेम रूप सु ताहि ॥१०५५
थित जहाँ हमारी थाय, मिथ्यात लोक मिलाय।
इह जाँन कहत असंग, अप्रछंन्न मेरौ अंग ॥१०५६
सुख आत्म-ग्याँन स्वरूप, चित लखहु सिद्ध चिद्रूप।
अरू द्वैत जाल असंग, पुन लखहु सिद्ध प्रसंग ॥१०५७
स्रष्ट के पूरब सोय, आतमा-सक्ति इकोय।
मिल कर्म अकर्म मुक्त, जोइ होय माया-जुक्त ॥१०५८
संसकार पूरब संग, पुन काल कर्म प्रसंग।
अववेक तत्व अधीन, करता सु इच्छया कीन ॥१०५६
सरजता स्रष्ट सुभाय, जुत गनहु माया जाहि।
सुध आत्म-ग्याँन स्वरूप, सर्वदा सोइ सुख रूप ॥१०६०
अच्छाक्त रूप अछेह, अरू आद कारन येह।
भव-कर्म साखी-भूत, अज क्रीया आस्रय भूत ॥१०६१
गत गूढ जामै ग्याँन, सच्चदानंद समाँन।
इह आद तत्व अनूप, ह्रींकार मंत्र सरूप ॥१०६२

---

१ शैव।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

आतमा तत्व अनाद, आकास भयेऊ अबाद।
तत आतमा इह तौंन, मात्रा सु सव्द मिलौंन ।।१०६३
पुन बायु भयेऊ प्रसिद्ध, सपरस जु मात्रा सिद्ध।
तत तेज-रूप जु तेम, जलमई रस है जेम ।।१०६४
प्रथवी सुगंध प्रमाँन, इम जाँनीयै अँनुमाँन।
आकास मै गुन येक, सव्दहु गनौ सविवेक ।।१०६५
द्वै वाय गुनहु दिखाय, सव्द रू सपर्स सिवाय।
तेज मै गुन है तीन, सद स्पर्ष रूप सहीन ।।१०६६
जल-वीच च्यार जताय, रव स्पर्स रूप रसाय।
प्रथवी मँही गुन पंच, सब येकठे कीय संच ।।१०६७
रहि सव्द सपरस रूप, इम रसहु गंध अनूप।
सुक्षम सु भूतन संग, लखीयै जु देही लिंग ।।१०६८
कारन सु तौ कह दीन, सोइ वीज रूप सवीन।
जामै जु लिंगहि जाँन, उगपत्त कौ असथाँन ।।१०६८
पश्चात पंची कर्न, भूतन सथूल सुभर्न।
पाँचूँन सुनहु प्रकार, उतपत्त अरू आकार ।।१०६९
पूर्वोक्त भूत प्रधाँन, सब कहे रूप समाँन।
भल करै द्वै द्वै भाग, तिन येक येकन त्याग ।।१०७०
लै येक कौ फिर लेख, सोइ रह गयौ जू सेख।
वट च्यार-च्यार विसेस, अवधारीयै जु असेस ।।१०७१
इनतै जु इक-इक और, जासौं सु लीजै जोर।
कलपै जु पंचीकर्न, येकत्र इह ऊद्धर्न ।।१०७२
वैराट-रूप वनाय, करतार धरता काय।
इह थूल देह उपाध, ईस्वर अनूप अगाध ।।१०७३
पंचहू भून प्रविष्ट, उतपत्त इंद्री इष्ट।
मिल ग्याँन इंद्री माहि, अंतैकरन उपजाय ।।१०७४
वृति वेद च्यार विधाँन, सब कहत है सुग्याँन।
संकल्प विकलप संग, इह जाँनीयै मन अंग ।।१०७५
रचना सु निश्चय रूप, तिह बुद्धि-वल तद्रूप।
सोइ करत अँनुसंधान, चित लीजीयै पहिचाँन ।।१०७६

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

है येह हम हंकार, अंतहकर्ण अनुसार।
गुन पंचभूतहु ग्यात, रज-क्रीया-जुक्त रचात ॥१०७७
पुन कर्म इद्री पंच, परभाव वीच प्रपंच।
तिनसौं जु मिलकै तौन, प्राँनाद उपजत पौंन ॥१०७८
पुन हृदय वसत सु प्राँन, अरू गुदा वसत अपाँन।
साँमाँन नाभि सुथाँन, अरू कंठ मै उद्याँन ॥१०७९
सब अंग व्याँन सुभाय, वित्ती सु पाँचौ वाय।
दस इंद्रीयन समुदाय, विध पाँच जाँनहु वाय ॥१०८०
मन बुद्धि देहु मिलाय, इम तत्व सत्रह आय।
सुक्षमहु होत सरीर, सुख-दुःख मै जिह सीर ॥१०८१
प्रक्रत सु दोय प्रकार, सत्वातमका सुविचार।
माया सु ताही माँन, सोइ आद-रूप सुग्याँन ॥१०८२
मिस्रत सु गुन ज़िह माहि, वँह अविद्या कहि आय।
आस्रई रक्षावाँन, माया सु कहत महाँन ॥१०८३
परमातमा प्रतिछाँहि, मिल परत जाहि माहि।
वाकौं जु वरनत ईस, वँह तीन लोक अधीस ॥१०८४
स्वय आस्रइए समाँन, निज बृह्म-रूप निदाँन।
सरवग्ग करता सुद्ध, अज ईस सोइ अविरुद्ध ॥१०८५
परमातमा प्रतिबिंव, विच अविद्या सु विडंव।
जासौं सु कल्पत जीव, सुख-दुःख जनत सदीव ॥१०८६
इह जीव ईस अनाद, वँह देह तीन ऊपाध।
वपु ईस सूत्र विराट, सब स्रष्ट कौं संम्राट ॥१०८७
जीवहू त्रविधा जाँन, सब कहत है सुग्याँन।
अभिमाँनि कारन अंग, पुन प्राग कहत प्रसंग ॥१०८८
अभिमाँनि सूक्षम आहि, तेजस कहत है ताहि।
अभिमाँन स्थूल अतीव, जोइ विस्वनाँमा जीव ॥१०८९
इह जीव कौं अंनुमाँन, विष्टी सुरूप विधांन।
ईस्वर समष्टी येक, विग्याँन सहित विवेक ॥१०९०
जुत अनुग्रह जगजीव, सरजता विस्व सदीव।
जग पाप-पुंन्य सुजोग, भोगत सु नाना भोग ॥१०९१

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

करता सु ईस सु काथ, सब सक्ति मेरी साथ।
नग अधप समुजहु नेम, विन सूत्रवाँन न वेम ।।१०९२
जग सबही मोमै जाँन, पहिचाँन वेद प्रमाँन।
उच्चार करत अभेद, निरभाव जुत निरवेद ।।१०९३

दोहा

अद्रराट सौं उच्चरत, श्रीदेवी सुरराय।
जगत चराचर जीव कौं, माया सक्ति मिलाय ।।१०९४
माया जुदी न माँनीयै, मोही सौं हिमवाँन।
वरतत जन विवहार मै, विद्या आद विधाँन ।।१०९५
तत्व दिष्ट तै तत्व ही, केवल रूप कहंत।
प्राँन सहित कर्मादि पुन, सकल जगत सिरजंत ।।१०९६
माया करत प्रवेस मै, येक अनेक ऊपाध।
भिन्न-भिन्न सोइ भेद सौं, अवरल-रूप उपाध ।।१०९७

छंद भुजंगीप्रयात

उपाधी जुतै मोहु मै भेद आँनौ, मठाकास ज्यूँही घटाकास मानौ।
इको सूर आकास माँही उजासै, पदार्थ सवै ऊँच-नीचै प्रकासै ।।१०९८
गुनूँ दोष कौं नाँहि जैसै गृहीता, इही रीत सौं मोहि जाँनौ अतीता।
हितू जक्त की येकमै व्याप्तहू पै, गुन दोष कौं जीव नाँही गृहूँ पै ।।१०९९
तथा मूढ़ जो लोग वुध्याद तासौं, जथा सौं लगावै हमैं कर्म जासौं।
मनीसी इहै वात कौं नाँहि मानै, परा-आतमा कौं अकर्ता प्रमाँने ।।११००
ज्युही जीव मै ईस मै भेद जाती, गहै अग्यता सौं असाता अग्याती।
मठाकास औरै महाकास माँही, निहारै कछू भेद पै भेद नाँही ।।११०१
परंमातमा जीव ज्यूंही पिछाँनौ, जुदे येक सौं येक कौं नाँहि जाँनौ।
वहुत्वं ज्युही जीव माया विसेसं, इही रीत सौं जाँनीयै भेद ईसं ।।११०२
विसै जीव इंद्रीनहू का वखेरा, घलै वासना आयकै चाहि घेरा।
वँही जीव मै जाँन लीजै अविद्या, दुनौ दुःख औ सुःख की सोय दद्या ।।११०३
गुनं वासना भेद माया गहावै, वँही ईस मै भेद कौ भाव आवै।
अखंडं इकै रूप माया उदोतं, प्रभा जीव मै ईस मै ओतप्रोतं ।।११०४

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

विधानं ज्युही सूत्र आत्मा विराटं, घराने अनेकं सु तै घाट घाटं ।
बृहमा विसँनं ज्युही रुद्र वेता, हरी संकरी-सक्ति ब्राँह्मी सहेता ।।११०५
त्युही सूर औ चंद के बिंब तारा, किते व्योम के बीच बाँधै कतारा ।
पसू पक्षि औ जून मै पुंन्य पापी, कहूँ कौं जुदे नाँहि माँनौ कदापी ।।११०६
निपोसंक श्रीलिंग पुलिंग नाँमा, धरचौ ध्याँन मोहीसनै आदधाँमा ।
नही जाँनीयै कोय मोसौं नियारा, धरा और आकासहू वारधारा ।।११०७
निहारौ सोई बाँझकै पुत्र नाही, ससा-स्त्रंग सर्पा रजू के समाई ।
जुदे नाहि ईसाद हू जक्त-जीवा, करै भेद कौ भाव सौई कलीवा ।।११०८
अधिष्टाँन है रूप संसार येकौ, विचारै सोई आद-माया विसेकौ ।
रहंसं सुनी श्रीमुखा अद्रराटा, वतावौ कह्यौ रूप जो है विराटा ।।११०९
सुनी वात हेमाद्र की भक्ति साँनी, प्रकास्यौ जबै रूप आदू प्रधानी ।
लसै सीस जामै सही सप्त-लोका, बिवै चंद औ सूर नैनाँ विलोका ।।१११०
दिसा स्त्राँन के सोत्र जामै दिखाई, विचत्रं हीयं-वांन है प्राँन-वाई ।
जिही कौ हृदौ विस्वहू भूम जंघा, भुवर्लोक नाभी विराजै अभंगा ।।११११
उस्थाँन है जोतसं चक्र येही, महर्लोक ग्रीवा सथानं मिलेही ।
अनूपं मुखा येह जनलोक यैसै, तपोलोक है भाल की ठौर तैसै ।।१११२
दिपै वाहु इंद्रादहू लोकदेवा, भली भाँत सोतिंद्री सव्दं सभेवा ।
जिही नासका-भाग स्ववैद जाँनौ, पखै गंधहू प्राँन इंद्रो पिछाँनौ ।।१११३
जिही आँनन-जोत है अग्नि-ज्वाला, चितै रात औ दीह उन्मेख चाला ।
लसै ब्रूंह की आवली बृह्मलोका, वसै जीव निस्त्रेय जामै विसोका ।।१११४
ततं तोय जाकै विखै वीच तालू, रसग्या मृदू स्वाद जामै रसालू ।
दिपै दंत दढ्ढा जिही श्राधदेवा, अरू हास माया अनूपं अछेवा ।।१११५
निपावै सोई सृष्ट नैना निधाँना, सोई लीन उन्मेख जाही समाँना ।
लसै ऊपरी ओठहू रूप लज्या, अधो ओठ है लोभ औ मोह इज्या ।।१११६
उपाजै जिही पीठ भागं अधर्मा, सृजंता प्रजा सिस्त इंद्री सकर्मा ।
जिही सात-सामःद हू कूख जाँनौ, मढी सैल की माल मेदोज माँनौ ।।१११७
नदावरत रोमावली श्रोत नाड़ी, अवस्था त्रहूँ की गती सी अगाड़ी ।
सिरोकेस है मेघ-आछाद संध्या, मनो चंद्रमा बुद्धि विस्नू समंध्या ।।१११८
अहंकार है रुद्रहू देव औरे, अनेकं पसू-नछ्छ है श्रौंन औरै ।
पतालादि पाव जाही प्रचंडा, मडी सात ही लोक चामंड मंडा ।।१११९

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

रवी कोटकं देह की दीप्त राजै, विधू कोटकं सील आभा बिराजै ।
छबी विजुला कोट जोती चमंकै, दसू ही दिसा तेज रासी दमंकै ।।११२०
सहंसं विराजै पदं बाऊ सीसा, उचारै चहूँ वेद बाँनी असीसा ।
भये देवता देखकै भर्म भूले, हींयंकार की रूपनी रूप हू ले ।।११२१
वँही अंबका है किधौ रूप औरै, भुवँनेस्वरी कौं भजै भाव भौरै ।
नमे पाय लागे जमै होय लेखा, विराटं लख्यौ वेख नैना विसेखा ।।११२२
करी वीनती फेर जोरै करग्गै, महंमाय आदेस्वरी भाव मग्गै ।
इही रूप कौं देख भासै अचंबा, अहो माय माहेस्त्ररी आदअंबा ।।११२३
सुधारै हीयै भक्त कौं जक्त सेवी, दिखावौ हमै सुंदरी-वेख देवी ।
सुपरवा सुनी वीनती मात सारी, सुसोभा जुतै मूरती कौं सुधारी ।।११२४

सोरठा

सुनी अरज सुरराय, सब देवन की येक सम ।
दीनौ रूप दिखाय, पहलै सोई कीनौ प्रगट ।।११२५
पाशांकुस वर पाँन, और जोर मुद्रा अभय ।
अमल हास अधुराँन, वसन लाल धारै सु वपु ।।११२६

छंद भुजंगप्रयात

विचारै हीयै प्रेम सौं मात बोली, अमीरास औ हासवाँनी अमोली ।
सुनौ बात मेरी सबै स्राँन स्रोता, प्रपंचं गनै रूप मै ओत-पोता ।।११२७
वही रूप ठाढौ भयौ तोर आगै, जिही जोत आकास-पाताल जागै ।
परंमातमा आद जोगं उपाधी, उपाजै सोई जीव करतत्व आधी ।।११२८
वँही प्राप्त ह्वै कै सुधर्मा-अधर्मा, क्रीया साथ नाना करै सोय कर्मा ।
जिही सौं भृमै भूलकै बीच जोनी, डुलै सुःख औ दुःख कै ओर दोनी ।११२९
घटीजंत्र ज्यौं ऊद्धहू अद्ध घूंमै, भजै स्वर्ग भोगं कहूँ आय भूंमै ।
वसावै नही येक ठौरै विराँमा, सोई जाँनीयै मूल अग्याँन साँमा ।।११३०
जिही तै इही जीव अग्याँन जावै, उजासै सोई ग्याँन कीजै उपावै ।
विचारै हृदै-वीच साँमर्थ विद्या, असाता गृसाता नसाता अविद्या ।।११३१
जनेता अविद्या अकर्मं जवूंना, करै जाँनकै ताहि प्राँनी कवूंना ।
करै तौ अनर्थं भरै आय केते, जगावै सोई राग औ द्वेष जेते ।।२१३२

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बटोरै जिही कारनै ग्यााँन वातै, जमावै मती सत्य कैवल्य जातै।
सता ग्यांन सौं कर्म ह्वै है सहाई, गिरा सास्त्रहू वेद कै बीच गाई ।।११३३
घुलैतै खुलै भेद की हीय-ग्रंथा, सोई जाँनीयै मुक्तिहू कौ सुपंथा।
अभिप्राय है जाहि मै येकता कौ, जमै ग्रंथ मै ग्यााँन ना भाँन जाकौ ।।११३४
अँधेरा-उजेरा गनौ न्याय ऐसै, विरोधी सदाँ भाव भ्यासै वसेसै।
वनै जो कछू काँम वेदं विहीता, समै जाँन साधै स्त्रधाँहू सुभीता ।।११३५
उपावै फलीभूत सौं ह्वै उदासी, रजै चित्त की सुद्ध आँनंद रासी।
प्रवेकं सदाँ जाँनीयै ग्यााँन पाखै, रिदै नांहि अग्यांन कौ अंस राखै ।।११३६
गिरा मोर कल्यााँन काजै गनाँऊ, सुतै सिद्ध सानिद्ध जोहै सुभाऊ।
समं इंद्रयूं का निरोधं समाँना, दमं बाह्य इंद्री निरोधं दिखाना ।।११३७
सहै सीत उस्नं तितक्षा सुभावं, विरागं सबै आस त्यागै विभावं।
करै सुद्ध जेतै हीयै अंतकर्नं, विछेपं मिटै और आवर्नं भर्नं ।।११३८
ततं-ग्यााँन कौं पायकै कर्म त्यागै, सदां निश्चलं भक्तिमै सांनुरागै।
गरू बृह्मनिष्टा गहै सर्न ग्याता, सुनै वाक वेदांत कौं धार साता ।।११३९
जबै जीव कौं बृह्म कौं येक जाँनै, परारूप तद्रूप आपौं पिछाँनै।
उपाधी जुतै भेद है जीव ईसं, मिटै तौ वँही सेख है पारमीसं ।।११४०
अजं अक्रीयं आतमा रूप आदू, प्रकासै नही कोय जामै प्रमादू।
सथूलं सोई सुक्षमं रूप सारै, प्रभा आपनी सौं प्रपंचं पसारै ।।११४१
इही भेद कौं नाँहि जाँनै अग्याँनी, गहै आतमा रूप कौं सोय ग्याँनी।
वृती भावना होयकै जोग वेता, चितै अच्छूछरं तीन कौ लाय चेता ।।११४२
हकारं सथानी गनै देह ही कौं, रकारं गनै लिंग बाकी रही कौं।
इकारं गनै कारनं देह ऐसै, त्रहू की करै जोजना लेख तैसै ।।११४३
मिलै तै चतुर्थं ह्रींकार मै हूँ, समष्टी तथा व्यष्टी वैराट सै हूँ।
सँमाधीहु के काल पूर्वं समाँना, धरै धारना भावना राख ध्याँना ।।११४४
अडुगं[1] करै प्राँन औरै अपाँना, थपै नासका कै तथा मध्य थाँना।
उभै नेत्र कौं मूंदकै मोहि ओरै, धरै ध्याँन कौं धारना लाग धोरै[2] ।।११४५
विसै की निबर्ती करै त्याग वंचा[3], पसारै नही मोहि आदं प्रपंचा।
जमै आसनं वैठ येकंत जागै, ह्रदै सच्चदानंदनी साँनुरागै ।।११४६

१ स्थिर। २ निकट। ३ इच्छा।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

हकारं मिलावै रकारं सहेता, इकारं ह्रीयंकार माँही उजेता।
विचारै हीयै वाच वाचार्थ बाँनी, सबै द्वैत कौ भाव छंडै सुग्यानी ।।११४७

दोहा

रासी मो सुख रूप कौं, ध्यावै निस-दिन ध्याँन।
जोइ होत मम रूप जन, हित चित सौं हिमवाँन ।।११४८
जोग-जुक्त सौं जाँन मोहि, परमातम पहिचाँन।
नास होय संसय नही, उर भीतर अग्याँन ।।११४९

छंद द्वै-अखरी

माहेस्वरी वचन सुन माता, कीय हिमवाँन प्रस्न कुसलाता।
जोग अंग-जुत देहु जनाई, करकै मेट करै क्रपनाई ।।११५०
संम्मत-दायक जोग सुहावन, प्रकट तत्व हम हूँ ह्वै पावन।
हिमगिर प्रस्न सुनत हरखाँनो, बोली फेर अमी-रस बाँनी ।।११५१
नही जोग आकास निराला, पुन पुहमीनहि स्वर्ग पताला।
जीव-आतमा येक जतावै, विसद-लोग सोइ जोग बतावै ।।११५२
जोग विघन करता षट जाहर, वादी समुझ निकारै बाहर।
काँम क्रोध अरू लोभ कुहेता, मद मच्छर पुन मोह समेता ।।११५३
साधन जोग सुनौ स्रुत सोई, अष्ट-अंग कौं संग इकोई।
यम नियमासन प्राँनायामा, प्रत्याहार धारना प्रकाँमा ।।११५४
ध्याँन समाध जाँनीयै धेई, इष्ट जोग साधन है येई।
जिनके लक्षन लेहु जनाई, गिरा मोर सौं देत गनाई ।।११५५
यम दस नियम जाँनेव जोगू, प्रथम अहिंसा सधै प्रयोगू।
सत्य वचन आस्तेय समाँना, बृह्मचरीय अरू क्षमा विधाँना ।।११५६
धृती दयार्जव मिताहार धुर, मन तन सौउच[1] विचारत मुनिवर।
अभिमति कहत नीयम दस ऐसै, जोगकार उपयोगी जैसै। ११५७
तप संतोष दाँन आस्तिकता, तोखन देव सिधंत स्रवनता।
प्रनवादिक जप होम पुनीता, परम ममुक्षन हेत प्रवीता ।।११५८

---

१ शोच।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

आसन कहत तिनहु कै आगै, साधन कर जन होय सभागै।
चंचल मन कौं करत जु निश्चल, मोक्षदाय नाड़ी मेटत मल ।।११५९
रज तम गुन अरू हरता रोगा, जे नित प्रतहै साधन जोगा।
कुंडलनी के बोध करन कौं, हितकारी तन-ताप हरन कौं ।।११६०
लख चौरासी संख्या लेखौ, वर चौरासी ताहि विसेखौ।
च्यार कहत तिन मै पुन च्यारू, यामै संग्या कहत अगारू ।।११६१
सिद्धासन पद्मासन सोऊ, सिंघभद्र-आसन सह जोऊ।
सिद्धासन इह सुगम समाँना, महामोक्षदायक अनुमाँना ।।११६२
यौनिस्थाँन वाँम पग येड़ी, टकना थाप लगावै टेड़ी।
येड़ीहू दक्षन-पग ऐसी, ऊपर मेहनभाग[1] असेसी ।।११६३
थिर कर हृदय लगावै थोड़ी, जुगल-नैन भृगुटी-विच जोड़ी।
करकै अचल संवारै काया, मुगती लहै जीतकै माया ।।११६४
वज्रासन कोऊ नाँम वखानत, मुक्तासन याही कौं माँनत।
गुप्तासन कोऊ नाँम गँनावत, जाँनत सोइ पार भव जावत ।।११५५
यमन माँहि जिम निमत[2] अहारा, नीयम अहिंस्या ज्यूं निरधारा।
आसन पै सिद्धासन ऐसै, जोगी-जन जाँनत है जैसै ।।११६६
करै वरख द्वादस जो कोई, जोग सिद्ध पावत है जोई।
तासौं बंध पगट ह्वै तीनूं, निज अभ्यास सौं सुतै नवीनू ।।११६७
मूलवंध उड़ियाँन समेता, बंध जलंधर जाँनत वेता।
पदमासन अब कहत प्रधाँना, सब सिद्धीदायक सु प्रमाँना ।।११६८
बैठै मार पालथी बैठक, जंघाकै ऊपर पद धरजक।
पीठ पछारी हाथ पसारै, दक्षन-पद दक्षन कर डारै ।।११६९
गहै अंगुष्ट-भाग अवगाही, वाँम-पाव कर वाँम वसाई।
चिवुक बीच लगावै छाती, द्रष्ट नासका अगृ दिखाती ।।११७०
अचल होय धारै इह आसन, पाप-प्रहारन ग्याँन-प्रकासन।
कुंडलनी कौ बोधन करता, स्वास सुखमना[3] मारग सरता ।।११७१
भद्रासन अब कहत सुभेसा, माँनत जोगी आद-महेसा।
वृसन[4] तरै सीवन सौं वाँमै, वाँम पाव येड़ी विसरामै[5] ।।११७२

---

१ शिश्न, मूत्रेन्द्रिय। २ नियमित, परिमित। ३ सुषुम्ना। ४ अंडकोष। ५ विश्राम।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दच्छन माँऊ येड़ी दछ्छन, रुख सौं थाप करै थिर रछ्छन ।
पार्स्व समीप समेट जु पावन, भुजा बाँधरहि सहज सुभावन ।।११७३
रोग हरन अरू ग्याँन रसाँनी, सदाँ अभ्यास करै सुग्याँनी ।
अब सिंघासन कहत अनूपा, संसित जाकौ लखहु सरूपा ।।११७४
व्रसन तरै सीवन रख वीचै, निज येड़ी दोऊ धरैंजु नीचै ।
वाँम सवारै दछ्छन वाऊ, दछ्छन-पग वांयै मुख दाऊ ।।११७५
अष्टीचात[1] हाथ धर ऊँधै, साखाकर धारै पुन सूधै ।
बाहर मुखा जीभ कर बैठै, अगृ नासका निजर जू ऐंठै ।।११७६
मूल आद बंधन त्रय मीता, भये सिध मेटत भव भीता ।
सुखमन मारग सहज सुभाऊ, कुंडलनी कौ बोध कराऊ ।।११७७
आसन सिद्ध भये तै आगै, प्राँनायाँम सविध मति पागै ।
रेचक-पूरक कुंभक-रीती, केवल कुंभक सुलभ कहीती ।।११७८
प्राँन उदरगत नासा पुट सौं, हरवै रेचन करै जु हट सौं ।
सुंन्नमाहि निश्चल कर सोई, काया सथिर करै सह कोई ।।११७९
इह रेचक है प्राँनायाँमा, धरै धारना जोग सुधाँमा ।
वँही प्राँननासा अभिअंतर, नासा-पुट सौं पीयै निरंतर ।।११८०
कहै निरोध सु पूरक कहीयै, लाभ जोग मत जासौं लहीयै ।
रेचक अथवा पूरक रुख सौं, संजम करत प्राँन ही सुख सौं ।।११८१
अचल धारना करै जु ऐसै, कुंभक सहित लखहु गत कैसे ।
रेचक करै न कुंभक-रीती, प्राँन-पवन सौं आँन प्रतीती ।।११८२
करै निरोध नासका केवल, मन तन के मैटै जासौं मल ।
केवल कुंभक है हितकारी, सहज समाध लहै सुखसारी ।।११८३
केवल कुंभक सिद्ध करन कौं, भजै भावना प्राँन भरन कौं ।
सिद्ध भये तै जोगी सीधा, विजय पवन निहचै मन वीधा ।।११८४
ओउंकार षोड़स जप येतै, स्वास पिंगला द्वार सहेतै ।
उदर भरै कुंभक असथाँना, पुन चौसट जप करै प्रमाँना ।।११८५
इतै थंभकै फेर उतारै, सुखमन सौं पिंगला सँवारै ।
जप बत्तीस करै पुन जेतै, उतरै पवन पिंगला येतै ।।११८६

---

१ शिर ।

T. CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

रात दिवस मै याही रुख सौं, साधक साधन करै जु सुख सौं।
प्रातकाल मध्याँन जु परसिध, संध्या अरध-रात साधै सिध ॥११८७
जप ध्याँनाद रहित है जोई, कहत विगर्भ ताहि सह कोई।
करत जाहि अभ्यास कलेवर, ताहि पसींना होय तरातर ॥११८८
अधम जाँनीयै प्राँनायाँमह, जोग-पंथ-वेता जाँनत जँह।
कंप होय सोइ मध्यँम कहीयै, गोत्रा[1] त्याग उत्तँम गति गहीयै ॥११८९
साधक जोग-क्रीया जब साधै, ये विवहार नही आराधै।
निराहार वृत करै न नेम, प्रात-स्निान सरद-रित प्रेम ॥११९०
ज्वाला तपै न अतसय जागै, अत निद्रा कबहु न अनुरागै।
दुरजन-संग त्रीया-संग दोई, सीघ्र गमन मारग कौ सोई ॥११९१
कारक काया जिते कलेसा, आलस भति क्रोध अवसेसा।
वहुजन-संग न करै वारता, चंचल चित विसीयन संचरता ॥११९२
सिर पै भार धरै नही सोई, जोग सिद्ध साधक है जोई।
येते है साधन उपयोगी, जोग-जुगत सौं साधै जोगी ॥११९३
निंद्रा सुल्प[2] सुल्प-संभासन, गमन सुल्प आहार गरासन।
सरद-स्निान उस्न-जल सेती, उर अँनुकूल जाँन विध येती ॥११९४
सनै-सनै अभ्यास सास सौं, पूजत ह्वै जोगो प्रकास सौं।
करै सीघृता विनसै काया, यातै करीयै सहज उपाया ॥११९५
वायु-निरोध होय मन वस मै, दूसर नहि उपाव दस-दिस मै।
मुक्ती चाहै याही मन सौं, तौ अभ्यास करै जन तन सौं ॥११९६
गरू-मुख सौं अभ्यास गृहीता, जोग-जुगत सौं जग मै जीता।
साधक की अभ्यास साधना, ईस्वर जप पूजा अराधना ॥११९७
प्राँनायाँम करन सौं परघल, नाड़ी सुद्ध होय तन निरमल।
इड़ा चंद्रमा रूप अनूंपा, सूर पिंगला नाड़ सरूपा ॥११९८
तीन मास मै सबही तासौं, अवरहु नाड़ सुद्ध ह्वै यासौं।
तीन मास लग होय जु तत्पर, प्राँनायाँम अभ्यास करै पुर[3] ॥११९९
लघुता होय जोग चित लागै, जठरा-अगन उदर मै जागै।
नाद श्रवन हुय प्राँन निरोधन, सबही प्रकार होय मल सोधन ॥१२००

१ भूमि। २ स्वल्प। ३ शरीर।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

इह सरीर मै नाड़ असंख्या, साढे तीन लाख कहै संख्या।
पुन तिन मै दस कहत प्रधाँना, जिनके नाँम कहत इह जाँना ।।१२०१

इड़ा वाम नासा अवरेखौ, दक्षन-भाग पिंगला देखौ।
मुक्तदाय सुखमन तिह माँही, गंधारी चख वाँम गहाही ।।१२०२

हसत जीह दक्षन चख हेरहु, पूरवा दछ्छन करन प्रतेरहु।
वाँम ईसस्वनी कर्न विचारहु, अलंबुखा मुख-द्वार उचारहु ।।१२०३

लिंग-देस मै कुहू लखाँना, मूलाधार संखनी माना।
उत्तँम नाड़ी येक-येक तै, वपु उपयोगी बल विसेखतै ।।१२०४

सब नाड़ी आधार सुथाँना, मुक्तिदाय सुखमन ही माना।
मूल सुथाँन कंद तिह मुदी[1], जासौं कोऊ न नाड़ी जुदी ।।१२०५

गुदा लिंगकै वीच गिरोई, सीवन-भाग मध्य तन सोई।
नव अंगुल अंतर तर नाभी, ऊपर लिंग-देस ठिक याभी ।।१२०६

इंडाकार तँही की आकृत, व्यास च्यार अंगुल है विस्त्रत।
मध्य कंद नाड़ी सुखमना, प्रष्ट भाग मेरू उतपना ।।१२०७

सुखमन कंद सथाँन सँभारा, ऊठ गई सो चक्र अधारा।
स्वाधिष्टाँन चक्र मै सोई, जाय प्रवेस भई है जोई ।।१२०८

चक्र होय मनीपूर विचाली, चक्र अनाहित कौ पुन चाली।
कंठ चक्र मै ह्वैकै काढी, बिव साखा ताही की वाढी ।।१२०९

मिल ककाटका पछ्म मेरू, वँहाँ तै पँहुची जाय अगेरू।
बृह्मरंध मै कीन निवासा, परमज्योति मै ताहि प्रकासा ।।१२१०

पछँम मारग कहत प्रधाँना, ऊत्तँम मति ऊत्तँम अनुमाँना।
पूरब-मारग कहत प्रवींना, अग्या चक्र कूर्प[2] आधीना ।।१२११

भाल-भाग सौं बृह्मरंधृ भिल, थिरता पाय रही ताही थल।
दोऊ मारग है मुक्तीदाता, गैल पछँम माँनत है ग्याता ।।१२१२

याकौ भेद कहत कछु आगै, जोग सधै जठरानल जागै।
द्रष्ट-दोष आदहि सोउ दमनी, सब इंद्रीगन पातक समनी ।।१२१३

---

१ मुखी। २ भौंह का मध्य भाग।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दोहा

धमनी जैसे धातु के, दाभ्र[1] करै मल दूर।
प्राँनायाँम प्रभाव सौं, पाप निवारै पूर ।।१२१४
मानस वाचक मल मिटै, अभिमति भाखत येम।
तातै प्राँनायाँम त्रय, नित-प्रति करीयै नेम ।।१२१५
सोलह प्राँनायाँम सोइ, करै मास त्रय कोय।
पाप भ्रूनहथ्या प्रमुख, सबै जात मिट सोय ।।१२१६
त्रय रितु प्राँनायाँम तेउ, अभ्यासै जब ऊह।
जनमांतर अग्यात जन, मेटै पाप समूह ।।१२१७
वरस दिवस ताही सविध, साधै साधक सुद्ध।
मिटै बृह्म-हथ्याद मल, इह भाखत मति ऊद्ध ।।१२१८

छंद उद्धौर

अभ्यास प्रानाँयाँम, कलि हरन पूरन काँम।
इह साधना विन आँन, दूसर न मुक्ती-दाँन ।।१२१९
अभ्यास करत उछाह, लुघुता सु पुज्जै लाह।
जठराग्न वाढै ज्वाल, वपु मिटै रोग विसाल ।।१२२०
इंद्री चपलता आद, वल विषय होबै वाध।
कुंडली ऊरध कंद, बैठी सुखमना बंद ।।१२२१
तिह आँट साढे तीन, छूटै सु आपौ छीन।
अध-भाग नाभी येह, कुंडली-वास करेह ।।१२२२
जोगी-जनन कौं जोग, प्रति ताहि करन प्रयोग।
जाँननौ बंध जरूर, ऊर मुक्त कौ अंकूर ।।१२२३
तिह नाँम है पुन तीन, अस्थाँन तीन अधीन।
उड़ीयाँन उदर अकुंच, मध-भाग नाभी मुंच ।।१२२४
उड़ीयाँन बंध अरंभ, थिर पवन करीयै थंभ।
अरू जलंधर है येह, मध हृदय चिबुक मिलेह ।।१२२५

---

१ जलाकर।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बाँधै सु पवना बंध, सु विचार मुक्ति समंध ।
भीरै सु पारस-भाग, जाँनी गुदा की जाग ।।१२२६
आधार थंभ अपाँन, जुत सिद्ध आसन जाँन ।
कीजं सु पूरक काल, उड़ीयाँन बंधऊ माल ।।१२२७
जालंधृ कुंभक जोग, उड़ीयाँन रोचक ओघ ।
पूरक सु मूल प्रबंध, सुखमना पंथ समंध ।।१२२८
गरू मुखा करकै ग्यात, खोजना करीयै ख्यात ।
जागै सु कुंडली जेम, नित कीजीयै उर नेम ।।१२२९
ईस्वरी सक्ती आद, निज भुजंगी निर्बाध ।
मुक्ती सु दाता माँन, जुक्ती सु जोगज माँन ।।१२३०
आराधनीय अखंड, विचरंत सोइ बृहमंड ।
सुखमना करत सँचार, तन भक्त सुछ्छम तार ।।१२३१
अभ्यास प्राँनायाँम, कीजै सु याही काँम ।
धारना पावै धेय, निज आसरै निस्रेय ।।१२३२
पहलै सु प्रत्याहार, वाख्याँन करत विचार ।
सब्दाद विसीयन साथ, इंद्री करत उतपात ।।१२३३
कीजै निवारन काय, जुत दोष द्रष्टी जाहि ।
अथवा-क विषय उमंग, सुभ-असुभ पाय प्रसंग ।।१२३४
आतमा मानत येक, दुख-सुख राग न द्वेष ।
जग के चराचर जीव, सुभ रूप समुझै सीव[1] ।।१२३५
अब प्राँन के अवरोध, प्रत्यासुहार प्रबोध ।
मन और प्राँन मिलाय, रुख येक रूप रलाय ।।१२३६
जुग पग अगुष्टन जोर, थिर करै ताही ठौर ।
पुन उभय गुल्फ परेख, विस्राँम धार विसेख ।।१२३७
प्रती जंघ उभय प्रमाँन, थित करै ताही थाँन ।
चित मूल देस जु चाल, बढ ऊभय जाँनु विचाल ।।१२३८
अरु उभय प्राँन अरोह, उपरोक्त धार उपोह ।
पुन गुदा मूल परेख, वपु मध्य भाग विसेख ।।१२३९

---

१ सभी को ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मिलकै जु मेहन मूल, कर नाभकै अनुकूल।
हृद-देस मै पुन होव, गल-कूप माँही गोय ।।१२४०
विच तालु मूल वसाय, लीजै सु नास लगाय।
दोऊ नेत्र-मंडल द्वार, लै भृगुट देस लिलार ।।१२४१
पुन बृह्मरंधृ प्रवेस, द्रढ रहै ताही देस।
ठहराव करकै ठीक, अवलोक गत अंतरीक ।।१२४२
पुन ऊतरै सुख पाय, जाही जु मारग जाय।
जव तजै मूर्धा जाग, विच वसै भाग विभाग ।।१२४३
भ्रू मध्य नैन भरंत, विच नासका विचरंत।
मिलकै जु जिभ्या मूल, कंठ कूप ह्वै अनुकूल ।।१२४४
हृद-देस करकै हेत, नाभीं सुचक्र सुनेत।
मेहन सु मूल मझार, सम सीवनी तत-सार ।।१२४५
गुद-देस मै कर गाँन, अरू मूल थापै आँन।
अरू मध्य मै ठहिराय, जाँनू सु वीचै जाय ।।१२४६
चित मूल रोध चलंत, प्रति जंघ मै पसरंत।
पुन गुल्फ ऊपर पाव, अंगुष्ट उभय उपाव ।।१२४७
मन चढै उतरै मीत, प्राँनी सु प्राँन प्रतीत।
जिह जोग-वल सौं जीत, परहरी विसयन प्रीत ।।१२४८
मै जक्त-जननी माय, सब भाँत करत सहाय।
सिंदनह[1]-रूप सरीर, इंद्री सु अस्व अधीर ।।१२४९
बुद्धी सु प्रेरक बाग, मोरै सु जोरै माग[2]।
लै अधिष्ठाता लार, पहुँचाय अभिमति[3] पार ।।१२५०
ज्यूं दमन इंद्री जोग, कलि करत दूर कुजोग।
मुक्ती सु जुक्त मुकाँम, ध्रुव देत अवचल धाँम ।।१२५१
अब धारना-जुत अंग, परकास कहत प्रसंग।
अध्यातमीक अनूप, अरू आधदेवक ऊप ।।१२५२
पुन आध-भौतक पेख, विध तीन कहत विसेख।
मिल हृदय-चक्र मझार, अरू नाभ-चक्र अधार ।।१२५३

१ रथ। २ मार्ग। ३ बुद्धिमान।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कंठ-कूप जिभ्या केर, अवलोक भाग अगेर।
नासका अगृ निहार, लंबका तालू लार। १२५४
भ्रू देस मद्ध भरंत, ठिक बाँधकै ठहरंत।
अध्यातमीक जु अंग, पहिचाँनीयै परसंग ।।१२५५
अरू आधदेवक येह, महरिसी कहत मिलेह।
ससी बिंब जैसैं सूर, द्रग देखीयै ध्रुव दूर ।।१२५६
नछ्छत्र औरहू नेम, गृहमनी[1] जोत निगेम।
पुन आधभौतक पेख, द्रग लाय इकटक देख ।।१२५७
मनी रतन सालग्राँम, रिभु मूरती अभिराँम।
ठहराय मनकौं ठौर, जुग नैन-द्रष्टी जौर ।।१२५८
इह चपल चित्त अनंत, वृती विषय मैं विचरंत।
धारना कर-कर धेय, ललचाय ताही लेय ।।१२५९
तत पंचहू मैं ताहि, विध्र जुक्ति लाय वसाय।
पग सौं जु जाँनु प्रजंत, प्रथवी सु तत[2] पसरंत ।।१२६०
जाँनु सौं ऊपर जाँन, अध मर्म जल अस्थाँन।
आपान हृदय जु अंग, पावकह जाँन प्रसंग ।।१२६१
हृद भ्रुवर मध्य रहाय, वासौ सु वायु वसाय।
भ्रुव बृह्मरंधृ विभाग, आकास गनहु अलाग ।।१२६२
सुर बीजमंत्र सहेत, हीय धारणा धर हेत।
अभिरूप[3] कर अभ्यास, पिंजा सु काटत पास ।।१२६३
धारणा आस्त्रय धीर, साख्यात थंभ सँमीर।
हीय मध्य देखत हेय, इह चिमतक्रत अप्रमेय ।।१२६४
नीहार धूम निगेम, ज्वाला सु माला जेम।
खद्योग विद्रुत खेल, मनि फटिक रवि-ससी मेल ।।१२६
इह आद-रूप अनेक, द्रग हृदय परखत देख।
दस माहाँनाद जू दौर, घरराय धुन घन-घोर ।।१२६६
परतीत वृह्म पसाव, भूलंत आपौ भाव।
हीय तेज पुंज हुलास, वृती सोक होय विनास ।।१२६७

---

१ दीपक। २ तत्त्व। ३ बुद्धिमान।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जोई सुरी जग माँन, ध्यावै सु अवचल ध्याँन।
ओउंकार वाचक आद, सो जपै धार समाद ।.१२६८
इह धारणा सम आँन, मुक्ती उपावन माँन।
अव कहत ध्याँन अनूँप, रचना सु अद्भुत रूप ।।१२६९
अध मर्म सौं उपरंत, अंगुल सु दोय अगंत।
मेहन सु अंगुल मूल, इह वीच थित अनुकूल ।।१२७०
जोनी सु जाँनहुँ जाँन, सोइ उरध मुख साँमान।
अस्थाँन कंद जु येह, कुंडली वास करेह ।।१२७१
घेरै सु नाड़ी घाट, बल तीन साढे बाट।
आनन सु पुच्छ दबाय, सुख सयन करत सुभाय ।।१२७२
सुखमना विवर समंध, बाँधे सु गाढे बंध।
इह वागदेवी आद, संसार बीज सुखाद ।।१२७३
गुन तीन माता गोप, अत प्रभा चँहु-दिस ओप।
कुंडली मात निकेत, है काँम बीज सहेत ।।१२७४
वंधूक पुस्प विकास, प्रभुता सु करन प्रकास।
है चिंतनीय हँमेस, सुभ जोग द्वारा सेस ।।१२७५
परकास कोट पतंग, ससी कोट सीतल संग।
सुखमना कुंडली-सक्ति, जाँनीयै बीज संजुक्ति ।।१२७६
त्रपुराहु भैरवी ताहि, जोगी उपासत जाहि।
इहाँ बीज कौं अवगाहि, मिल क्रीया-सक्ती माहि ।।१२७७
अरू ग्याँन-सक्ती आँन, मिल येक-येक समाँन।
सो भृमन करत सरीर, स्वाभाव सिद्ध समीर ।।१२७८
सुख तेज पुंज समाँन, थित बीज जोनी थाँन।
इह पद्म इक आधार,, चिब धाँम पँखुरी च्यार ।।१२७९
वस रवसहु च्यारौ वर्ण, सोभायमाँन सुवर्ण।
लेखहु स्वयंभू लिंग, पख पाय जोग प्रसंग ।।१२८०
संम्मत दुरंडा सिद्ध, परभाव जाहि प्रसिद्ध।
कंमल सु कुलाभिध-काय, डाँकनी देवी दाय ।।१२८१
देवता गनपत देव, भल जाँनीयै तिह भेव।
जोनी सु वीचै जाय, कुंडली-वास कराय ।।१२८२

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अरू दीप्तवाँन अनंन, तहाँ काँम बीज भ्रमंत।
इह ध्याँन करत अधार, पथ जोग वारापार।।१२८३
दादुरी-वृत्ती दाय, भुँव त्याग सिद्धी भाय।
जठराग्न वाढत जौर, आरोग्यता तन और।।१२८४
पुन होत पर्म प्रवीन, उत्पत ग्याँन अहीन।
सरस्वती देवी सोय, हित पाय परसन होय।।१२८५
जप सिद्ध होवत जास, पुन तेज करत प्रकास।
सब जात दुःख सँमूह, अक्षर वढावत ऊह।।१२८६
बल पवन जुत विसवास, उर प्रवल होत अभ्यास।
तन मिटत पाप तमाँम, करता सु पूरन काँम।।१२८७
इह धाँम मूल अधार, परमात्म उपजत प्यार।
खट मास करत जु खोज, ध्रुव धारकै सु धरोज।।१२८८
सुखमना वायु सँचार, मन जीत जीतत मार।
थिर विंदु होत सुथाँन, धारना धारै ध्याँन।।१२८९
अह-लोक सिद्ध अगार, परलोक पहुँचत पार।
तिह उरध स्वाधिष्टाँन, पुन दुतीय चक्र प्रधाँन।।१२९०
खट पंखुरी जु खिलंत, अछ्छर जु खट उघरंत।
बभमय रलहु स बसेस, सोभायमाँन सुदेस।।१२९१
सब रक्तवर्ण सुभाय, मेहन सु मूल मिलाय।
सिधवाँन नाँम सरूप, राकनी देवी रूप।।१२९२
बृह्माँ सु देव वसंत, अभिरूप सब उचरंत।
इह करत ध्याँन अभ्यास, वेता सु कर विसवास।।१२९३
सिद्धान्त सास्त्र सुजाँन, गरू कर्म वाढै ग्याँन।
कट जात पातक क्रूर, परकास होवत पूर।।१२९४
अणमाद सिद्धी आद, पावत सु जोग प्रसाद।
मृतु जीतकै जग माहि, विचरंत सुःख वसाहि।।१२९५
सुखमना मारग साध, बपु होत पुन निर्व्याध।
थिर लखहु नाभी थाँन, मनीपूर चक्र समाँन।।१२९६
दस पंखुरी-जुत देस, सोभायमाँन वसेस।
दस वरन की समुदाय, लखीयै चित्त लगाय।।१२९७

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ड़ ढ ण त थ द ध न प फ देख, विसतार सहित विसेख ।
सिध रुद्र तहाँ सुविचार, लाकनी देवी लार ।।१२९८

श्रीविस्नु देव सुधाँम, करता सु पूरन काँम ।
धारै जु साधक ध्याँन, सिध लाभ होयं सुग्याँन ।।१२९९

दुख जाय ताके दूर, पहिचाँन सौं मनिपूर ।
इह पायकै उपदेस, पर काय करत प्रवेस ।।१३००

गुन ओसधी ह्वै ग्याँन, देवता दरसन दाँन ।
निध मिलत ताही नेम, इह वात नाँहि अगेम ।।१३०१

सुभ हृदय-कँमल सुथाँन, निज सोइ अनाहत नान ।
दल जिही बारह देख, बारह सु वरन विसेख ।।१३०२

क ख ग घ ङ च छ कल्याँन, ज झ न ट ठ जाँनहु जाँन ।
वँह प्राँन है आधार, सोइ वाँन लिंग सुमार ।।१३०३

सोहत पिनाकी सिद्ध, पुन काकनी परसिद्ध ।
देवी सु ताहि दिपंत, सोइ ध्याँन परम सिद्धंत ।।१३०४

अपछरा सुंदरि आय, परसै जु ताके पाय ।
हीय ग्याँन उत्पत होत, अनमाद सिद्ध उदोत ।।१३०५

त्रय-काल की सुध ताहि, सब्दहू दूर सुनाय ।
दरसाय सुक्षम द्रष्ट, उर-वीच धारै इष्ट ।।१३०६

आकास-गमनहु आद, वपु ताहि होय न वाध ।
भेटै सु अंमृत भोग, जोगनी पावै जोग ।।१३०७

खेचरी-मुद्रा ख्याल, भूचरी भ्यासै भाल ।
धारै अनाहत ध्याँन, महमान कहीयै माँन ।।१३०८

वृहमाद देव वसेस, मुद पाय गहत महेस ।
इहँ ध्याँन सम कोऊ आँन, दरसै नहै सुखदाँन ।।१३०९

पुन कंठ-थाँन प्रसिद्ध, वेखीयै चक्र विसुद्ध ।
सोहंत क्रांती स्वर्ण, परकास सोरह पर्ण ।।१३१०

सुर सोरहौ अस्थाँन, अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ
ओ औ अं अः–धरीयै जु निश्चल ध्याँन ।
छगलाँ डहै जहाँ सिद्ध, साकनी देवी प्रसिद्ध ।।१३११

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

इह अधिष्टात्री आद, जीवात्म देवत ज्याद।
धारै सु जोगी ध्याँन, गरूकर्म वाढै ग्याँन ।।१३१२
वकता सु च्यारहु वेद, निज भाव ह्वै निर्वेद।
धारना प्राँन धरंत, साँमर्थ उपजै संत ।।१३१३
समता सु पाय समीर, संघित जु होय सरीर।
सिध भाय लाय समाध, बल नाँहि उपजै व्याध ।।१३१४
अग्या सु चक्र अगेर, विच कूर्प भाग वसेर।
दुइ बीज है तिह देस, हं क्षं सु चित्त हमेस ।।१३१५
महाँ काल सिद्ध महाँन, जहाँ अधिष्टात्री जाँन।
हाकनी देवी हेर, वस रही सोय वसेर ।।१३१६
परमात्म-देव पुराँन, धारीयै नित-प्रत ध्याँन।
ठं बीज तहवाँ ठाँन, सोइ सरद-चंद समाँन ।।१३१७
चिंतना करीयै चाहि, आराधना अवगाहि।
मिल पर्म सिद्धी मूल, करता सु मति-अनुकूल ।।१३१८
अग्या महातम येह, वृख-अंक जाँनत वेह।
ऊठतहु वैठत आत, सोवतहु जागत सात ।।१३१६
तन होय जो अपवित्र, तजीयै न ध्याँनहु तत्र।
अग्या सु पंकज ऊद्ध, मिल मूल तालू मद्ध ।।१३२०
दल सहँस पद्म दिखंत, अरू कंद जहाँ उभरंत।
मिल अधोमुख तिह माग, जोनी त्रकोना जाग ।।२३२१
वँह मूल विवर अनूप, तहां सुखमना तद्रूप।
सोइ बृह्मरंधृ सुजाँन, इह कुंडली अस्थाँन ।।१३२२
सुखमना नाड़ी संध, सत्की सु होय समंध।
चित्रा सु नाड़ी च्यार, विच जाहि लेहु विचार ।।१३२३
इह ग्याँन पावत ऊह, सब जात पाप समूह।
कट जाय बंधन काय, सुख-धाँम रहत समाय ।।१३२४
मिट जात नाड़ी मैल, गत कुंडली तज गैल।
साख्यात बृह्म-समंध, पावत सु जीव प्रबंध ।।१३२५
सुखमना पंथ समीर, संचार करत सरीर।
इंगला नाड़ी येक़, पिंगला दूसर पेख ।।१३२६

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सुखमनाँ बीच सुथाँन, मती मुक्ति-दाता माँन ।
इह त्रवैनी उचरंत, सुग्यात जाँनत संत ।।१३२७
सर्बतो मुख मै स्नान, मन धोय हरत मलाँन ।
पातक वहावत पूर, दुख ताप जावत दूर ।।१३२८
मृतु-समय होवत मोख, द्रढ भाव सौं तज दोख ।
धारना धारै ध्याँन, पथ करै प्राँन पयाँन ।।१३२९
निस्त्रेय पावै नित्य, सब कहै वाचा सत्य ।
कर चेत विवर कपाल, खेचरी-मुद्रा ख्याल ।।१३३०
द्रग निरंजन कौं देख, विस्वास बढ़त विसेख ।
ध्रुव धेय मै मिल ध्याँन, मन तजै अपनौ माँन ।।१३३१
सारूप सिद्ध समाध, संकल्प साधै साध ।
लय होत ज्यूं जल लौंन, पावत न लख पहिचाँन ।।१३३२
जीय आतमा कौ जोग, परमात्म करत प्रयोग ।
इह समुझ आठौ अंग, रच रहै निर्भय रंग ।।१३३३
वरन्यौ सु जोग विधाँन, सोपाँन मुक्ति समाँन ।
सुन हिमाचल निज स्राँन, पूछचौ सु प्रस्न प्रमाँन ।।१३३४

दोहा

परासक्ति तेरी प्रभा, व्याप रही बृहमंड ।
सगुन रूप कहीयै सुलभ, उपजै भक्ति अखंड ।।१३३५
करै साधना सुगम कोऊ, सुर नर मनी सकोय ।
कहीयै श्रीमुख कारना, हमहु क्रतारथ होय ।।१३३६

छंद भुजंगप्रयात

रहंसं सुनी अंबका अद्रराटा, बताई सबै जुक्त सौं मुक्ति वाटा ।
इही रूप ठाढौ तुमारै अगारी, हृदै धारना चाहि कीजै हमारी ।।१३३७
अहूँ जक्त की भूपनी रूप आदू, परावृह्म की सक्ति हंता प्रमादू ।
सधै ध्याँन नाही कहूँ येक संगा, अराधै हीयै पाय अस्ताद अंगा ।।१३३८
जुरै ध्याँन मै मूरती नाहि जेतै, तलासै सुवेख जुतै अंग तेतै ।
द्रढं भाव सौं रूप मेरौ दिखावै, धृती धार गाढी निसा-द्योस धावै ।।१३३९

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

समावै वृती चित की मो समाँना, पराग्रंबका-रूप माँही प्रधाँना ।
प्रकासै जबै ग्याँन ग्रद्वैत पूरौ, वँही मुक्त कौ जाँन लीजै ग्रंकूरौ ।।१३४०
मतीकै सनीकर्ष जो बृह्म मैं हूँ, सतं प्राँन साखी सुधा-रूप सै हूँ ।
स्रुती-बोध कौं पाय कोडंड साधै, ग्रोउंकार कौं बाँन-रूपी ग्रराधै ।।१३४१
निहारै मनो स्रिष्ट वेधै निसाँना, सोइ ग्रातमा बृह्म जाँनौ सँधाँना ।
ततं पाँच है ग्रोत-पोतं तही मै, जथा जोग सौं प्राँन जाँनौ जँही मै ।।१३४२
सनायू लगी चक्र ग्रारा-समाँना, नियंता तिही बृह्म जाँनौ निदाँना ।
जिही कौं सदा जाँनीयै ध्याँन-जोगू, प्रचारै नही ग्रौर येकौ प्रीयोगू ।।१३४३
करै दूर ग्रग्याँन कौ ग्रंधकारा, समावै हीयै ग्रातमा संसकारा ।
छुटै भेद गृंथी मिटै छोह छद्मा, सुधा संपजै रूप ग्रानंद सद्मा ।।१३४४
कटै कर्म-पासी विलावै कलेसा, प्रकासै कला दिव्य पावै प्रवेसा ।
सुवर्नमई-कोस मै तेज सोई, दुती सूर ग्रौ चंद पुज्जै न दोई ।।१३४५
तहाँ चंचला ग्रौ ज्वला नाँहि तारा, वँही रूप ग्रद्वैत जाँनौ ग्रपारा ।
प्रभा जाहि सौं जक्त सारौ प्रकासै, वँही रूप को ध्याँन जोगी ग्रभ्यासै ।।१३४६
गनौ विश्व मै ताहि कौं स्रेष्ट ग्याता, वसू मै हीयै जाहिही कै विख्याता ।
परासक्ति कौं भक्त नीकै पिछाँनौ, जुदाई निसा-द्योस मोसौं न जाँनौ ।।१३४७
वसै संत ऐसौ जहाँ मोर वासा, सदाँ पुंन्न खेत्रं लखौ सावकासा ।
गरू-ग्याँन दीनौ इहो सार ग्राही, सँपेखौ पिता मात सोई सहाई ।।१३४८
इही बृंह्मग्याँनं कहूँ भक्ति ग्रागै, विरागी जही मध्यमा हूँ विलागै ।
इकै मुक्ति के तीन जाँनौ उपाई, गिरा वेद कै सास्त्र कै वीच गाई ।।१३४९
ग्ररथ्थं गनौ कर्म सौं जोग येको, विचारौ दुती ग्याँन जोगं विवेको ।
लखौ तीसरौ भक्ति-जोगं ललामा, करै जक्त कौं सोय उद्धार काँमा ।।१३५०
सोई ताँमसी राजसी सातुकी हू, महंमाय ग्रादेस्वरी मातुकी हू ।
प्रचारै जहाँ दंभ पीड़ा पराई, सोई ताँमसी-भक्ति जाँनौ सदाई ।।१३५१
करै काँमना कर्म सौं भक्ति कोई, सोई राजसी जाँन लीजै सकोई ।
करै भक्ति कौं मोर निरकाँमना सौं, वँही सातुकी जाँनीयै ग्रामना सौं ।।१३५२
धरै ध्याँन मोमै ज्युँही तेल-धारा, पराभक्ति मै माँनीयै वारपारा ।
चहूँ मुक्ति कौं मोर सेती न चाहै, ग्रनिछ्या जुतै सेव काजै उमाहै ।।१३५३
सबै थावरं जंगमं जीव सोई, गनै ताहि के बीच मै मोहि गोई ।
रखै ग्राप मै प्रीत ज्यों ग्रौर राखै, भजै भाव सौं वाच मिथ्या न भाखै ।।१३५४

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सँमाँना गनै चेतना रूप सारौ, नही माँनीयै भक्त मोसौ नियारौ।
सधै सेव जाको वँही मोहि सेवा, भजै भाव सेती तजै द्वैत भेवा ।।१३५५
गरू ह्वै वँही जाँनीयै सिद्ध ग्याता, महा आतमा सो पिता जेम माता।
इही सौं नही कोय सिद्धाँत औरै, जिही सौं सही चित्त की वृत्ति जोरै ।।१३५६

दोहा

देवी के उपदेस कौं, सुन हेमाचल स्राँन।
प्रस्न करचौ करजोर पुन, सब विध परम सयाँन ।।१३५७
सुर-समाज वाख्याँन सुन, भये कृतारथ भाय।
मनुज होय पावन मही, सो तत कहहु सुभाय ।।१३५८

छंद द्वै-अखरी

सुन हिमगिर की वाँनी स्राँनन, उत्तर दयौ मात निज आँनन।
जंगम-थावर जीव जहाँना, मनुज जन्म अत ऊत्तँम माँना ।।१३५६
पाय देह ताही कौं पावन, अनचल भक्ती करै उपावन।
सास्त्र सुनै मेरे सिद्धंता, प्रेमाकुल ह्वै जन्म प्रजंता ।।१३६०
कारन कौ कारन जो काया, मोहि आद पिछाँनै माया।
वृत स्रधा-जुत दाँन विसेसा, और सुनै मेरौ उपदेसा ।।१३६१
उछ्छव मेरे कहै अनूपा, भजै भाव सौं रंक रू भूपा।
मेरे थाँन अनंत मही मै, जात करै सुख मानै जी मै ।।१३६२
रूप अनंत नाँम है रूरे, पाठ करै सुमरै मति पूरे।
मो सौं भिन्न कछू नही माँनै, सुछ्छम और सथूल सँमाँनै ।।१३६३
या विध ध्याँन करै निज उर मै, पहुँचै सो मनीदीप ही पुर मै।
इधक भक्ति जो उपजै आई, सुख सौं मुक्ती होय समाई ।।१३६४
अब मेरी पूजा आराधन, समचित होय सुनहु जुत साधन।
पूजन है सोई दोय प्रकारा, अभ्यिंतर अरू वाह्य अगारा ।।१३६५
दोय प्रकार वाह्य दरसावत, वैदक तंत्रक भेद वतावत।
वैदक हूँ द्वै रीत वखाँनी, मूरत भेद जुत अँनुमाँनी ।।१३६६
वैदक लोग वद विध वैसै, तांत्रकहू तांत्रक विध तैसै।
वैदक विध सुनीयै वाख्याँना, सो सबही कौं सुगम समाँना ।।१३६७

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

द्रगन रूप मेरा तुम देखा, अनंत नैन सिर पाव असेखा।
रच मूरत ताही विध रूरी, प्रेम भक्ति करीयै उर पूरी ॥१३६८
ध्याँन अरचना विध-जुत-धारै, आँनन नाम पवित्र उचारै।
अहंकार तज माँन असाता, करै सुकर्म दाय कुसलाता ॥१३६९
हम संतुष्ट होय जिह हेरी, मात भक्त उपजै मन मेरी।
पार करहुँ भव सागर प्राँनी, सब विध सौं करकै सुग्याँनी ॥१३७०
सुभ कर्मन सोई वेद समाँना, धर्म वढावत पर्म धियाँना।
अग्या है मेरी सोई आदू, पंथ गहै नही गृंथ प्रमादू ॥१३७१
ब्राँमन खत्री वैस वनाये, वेद-कर्मरत गुन विलगाये।
तिनके हित उधार त्रपुरारी, कीने मत थापन सुभकारी ॥१३७२
सिव-सक्ती वैस्नव पुन सौरी, गनपत सुतन जाँनीयै गौरी।
त्रई वेद द्वारा है तैई, आराधना पर्म है एई ॥१३७३
काँम क्रोध तजकै अहंकारा, सहै प्राँन मोमै संचारा।
निस-दिन मेरौ रूप निहारै, निज हीय कौ अंधेर निवारै ॥१३७४
परम रूप पुन ग्याँन प्रकासै, निश्चल ह्वै संसय सब नासै।
वैदक पूजा की विध वरनी, कलुष मिटावन ऊत्तँम करनी ॥१३७५
पुन अब कहत दूसरी पूजन, जाकौं कोई जाँनत ऊत्तँम जन।
मूरति वा मंडल के माही, तरून निसापत बिंब तहाँही ॥१३७६
जल मैं बाँन लिंग मै जैसै, यंत्र महापटहू मै ऐसै।
हृदय-कमल मैं या विध हेरो, मूरत ध्याँन अधारै मेरी ॥१३७७
सगुन रूप करुना-रस साँनी, भीनी रस सृंगार भवाँनी।
पर-दुख दुखी सुखी सुख पर सौं, अत प्रसंन मुख हास अधुर सौं ॥१३७८
धारन करै अभय मुद्रा धुर, बहुर पास अंकुस औरै वर।
रुचर वेख आनंद-रूपनी, भजै ध्याँन मो विस्व भूपनी ॥१३७९
अंतर-पूजा जितै न आवै, पूजा वाह्य करै सुख पावै।
अभ्यंतर पूजा आराधन, सुफल फलै सवही मन साधन ॥१३८०
सम्वित रूप होय लय सोई, जाँनहु रहित उपाध जिकोई।
आतमतत्व साक्षनी आदू, पहिचाँनै मोहि रहत प्रमादू ॥१३८१
जोग-जुगत सौं करीयै जाहर, विच अभ्यंतर देखै बाहर।
विध ताकी मै ब्रहर वतावत, प्राँनी जिम मोही कौं पावत ॥१३८२

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तम-गुण वढै निसा मै तब ही, सयन करै जढ जंगम सबही ।
जँन मेरौ मेरै हित जागै, वृह्म-महूरथ देख विभागै ।।१३८३
सिर पै उज्जल कमल सुहावन, प्रथम ध्याँन धारै इह पावन ।
गरू कौ ध्याँन करै पुन ध्याता, करग जोर पूजै कुसलाता ।।१३८४
कुंडलनी देवी हितकारी, पावन सुमरन करै प्रचारी ।
जन ऐसौ मन भाव जनावै, सरन होय निर्वेद सुभावै ।।१३८५
करुना कर चिंतन तिह करीयै, संजम बृह्मरंध्र अनुसरीयै ।
रूप प्रकासमाँन जिह राजत, विस्त्रत मूलाधार बिराजत ।।१३८६
अंमृताय माँना सोइ ऊपा, सुखदाँनी आनंद-सरूपा ।
सुखमन मै संचार सुपंथा, गहन चक्र भेदत सोइ गृंथा ।।१३८७
सिखा-मध्य तिह ध्याँन सवारै, पुन तन-सुद्धी-रीत प्रचारै ।
सौच आद सब काम सुखारी, क्रीया समाप्त करै हितकारी ।।१३८८
विप्र होय तौ होम विधाँना, सुद्ध रीत विध वेद समाँना ।
साँमग्री मधुपर्क सँवारै, वस्तु विवेक सहेत विचारै ।।१३८९
भूत-सुद्धी मात्रहु सुभ देसा, न्यास करै जिम गरू-निदेसा ।
हृल्लेका जु मात्रका हीकै, न्यास करै वहुरै विध नीकै ।।१३९०
मूलाधार हकार मिलावै, हीय-पंकज ररंकार रहावै ।
भ्रूंह-मध्य इंकार वसेरै, ह्रीयंकार मंत्र ही इम हेरैं ।।१३९१
मस्तक न्यास जथा अनुमाँनै, मंत्र विधाँन-जुक्त रुच माँनै ।
जे जे मंत्र कहे विध जाही, तत्पर होय उचारै ताही ।।१३९२
निज जन देह आपनी जामै, पीठ कल्पना कर सुख पामै ।
वाही मैं धर्मादिक औरै, करै न्यास नही चित्त सकोरै ।।१३९३
हृदयं भोज मात ह्रीयंकारी, पाँच प्रेत आरूढ प्रकारी ।
आसन कीयै रहत जो इनके, जाहर नाँम कहत है जिनके ।।१३९४
वृह्मा विस्नु रुद्र अरु ईस्वर, गनहु सदा सिव जहाँ जक्त-गुर ।
भजै पायतर रहत भवाँनी, पंच-भूत आत्मक जे प्राँनी ।।१३९५
पंच अवस्था है सोइ प्रापत, अह चिद्रूप पिछाँनत आपत ।
सक्ति तंत्र विस्तार समाँना, वरनन कीनौ सकल विधाँना ।।१३९६
इह प्रकार कर ध्याँन अराधन, सब विध माँनसी करै जु साधन ।
श्रीदेवी हित जाप समर्पन, करै भाव-जुत भरै न कर्पन ।।१३९७

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अरघ स्थापन करै जु ऐसै, जल-पात्रा साधन पुन जैसै।
सामग्री सुध करकै सारी, तिह जल मंत्रत करै तयारी ।।१३९८
दिग बंधन लै गरू-निदेसा, हृदय पीठ वर दीठ हमेसा।
मूरत चितै भावना मेरी, हृदय चक्षु सौं अंतस हेरी ।।१३९९
पुन विद्या-जुत प्राँन-प्रतष्टा, आवाहन कौं धारै इष्टा।
आसन अर्घ पाद आचमना, सुभग रीत परचारै सबना ।।१४००
अंग-अंग पौसाक अधारै, सोगंधी आभूषन सारै।
पुस्पन की माला पहरावै, गुन पुन गिरा मोर हित गावै ।।१४०१
जंत्रस्थापन पूजा ज्याँही, भाव करै आवर्न भराँही।
प्रति-दिन वनै न यैसै पूजन, सुक्रवार करीयै सो सुभ दिन ।।१४०२
और देवता मत अनुकूला, भजै भाव सौं रहै न मूला।
अभय मात करुना-रस उसरी, प्रभुता तीन-लोक मै पसरी ।।१४०३
करै चिं तिह प्रतिकाया, मूलाधार वसै सोई माया।
पूरव कही जिही विध पूजा, देखै भाव नही कछू दूजा ।।१४०४
मूल मंत्र कौं जपै मन ही मन, तब पवित्र होवहि जन कौ तन।
स्तुत सहंस नाँम जन सुमरन, सूक्त कवच रुद्रेभिसंभासन ।।१४०५
वेद अथर्व सिरो मंत्रहु विध, सब विध हल्ले खोप निसत सिध।
लिखे मंत्र जेते कछु लेखै, पेम-जुक्त ताही कौं पेखै ।।१४०६
मो सौं दोष क्षिमापन मंगै, रूप हमारे मन तन रंगै।
नृत्य गीत मंगल विध नाना, और सुनै मेरा आख्याँना ।।१४०७
करै होम सरधा जुत हित सौं, वार-वार तोखै दत वित सौं।
विप्र-कुमारी अंन्य वरन कौं, भोजन वटुकन आद भरन कौं ।।१४०८
करै संतुष्ट विहत मति करनी, ह्रीयंकार वाँनी मल हरनी।
हल्लेखा दर्पन मै हेरौ, मध प्रतिबिंब परै नित मेरौ ।।१४०९
यासौं परै मंत्र नही औरै, कारक देखहु गृंथ करोरै।
इही मंत्र सौं मो अनुरागा, भाव भजै सोई बड़भागा ।।१४१०
जन मेरौ कोऊ या विध जाँनै, अंत बसत मोही अस्थाँनै।
अधिकारी ह्वै जाही आगै, भेद कहै जासौं दुख भागै ।।१४११
अन अधिकारी क्रर अगारी, हित की कहै न कथा हमारी।
जेष्ट पुत्र अथवा सिख-जोगू, परकासै इह पुज्ज-प्रयोगू ।।१४१२

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गोता कोउ मेरी इह गावै, पित्रवास मनीदीप ही पावै।
आप ऊधार कहा अंदेसा, सत्य-सत्य इह वाच नगेसा ।।१४१३
अंतरध्यान भई कह येती, सैलपती अरू देवन सेती।
जनमी फिर हिमगिर-गृह जाई, तब गौरी सिव-वरी जु ताही ।।१४१४
सिव-गौरी सुत भयौ सकंदा, दाँनव तारक सौं रच दुंदा।
करचौ निकंदन दुष्द कलेवर, सेनापत देवन अग्रे सुर ।।१४१५
सुरन मथ्यौ फिर जलध सकोई, जासौं रतन लये केऊ जोई।
मिली रमाँ जाही जल माही, ताकँह विस्नु वरी छिन ताही ।।१४१६
व्यास करचौ इह विध वाख्याँना, सुन्यौ भूप जनमेजय स्राँना।
गोपनीय इह कथा गनाई, जजन करै पातक कट जाई ।।१४१७
कवि 'बुध' वरनी जेम कहाँनी, भाषाँ करकै कथा भवाँनी।
सज्जन सुनकै होय सुखारी, हित पुज्जही अभलाख हमारी ।।१४१८

दोहा

सुर बोले ताही समय, हेत धन्य हिमवाँन।
अखल जगत की ईस्वरी, भई सुता तुम भाँन[1] ।।१४१९
येक ही जाके उदर मै, वसत कोट वृहमंड।
सरव-मंगला जिह सुता, अक्षर-रूप अखंड ।।१४२०
जग के जेते जीव है, थावर-जंगम थोक।
सब ध्यावत जाकी सरन, पावत जासौं पौख ।।१४२१
चातुरता जाकी चितहु, अहो जीव मति अंध।
बाल वसत ही उदर विच, पय कौ करत प्रबंध ।।१४२२
अघ-हरनी करनी अभय, वरनी जाकौं वेद।
सुता भई हिमवाँन सोइ, निरख भाव निर्वेद ।।१४२३
हिम गिर कौं धिन-धिन कहत, स्तुति करत सुपर्व।
हिमगिर करत सराहना, सुता मंगला सर्ब ।।१४२४

———

१ भवन।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बुधसिंह चारण रचित

देवीचरित

द्वितीय भाग

अष्टम-स्कंध

सोरठा

सप्तम कह्यौ सकंध, सुन नृप जनमेजय स्रवन।
पूछ्यौ वंस प्रवंध, मनुवन कौ ताही समय ।।१
मन्वंतर जिह माहि, जिह-जिह क्रम जिह जायगा।
जिही रूप सौं जाहि, किह पूजी देवी कहौ ।।२
सो वैराट-सरूप, ध्याँन प्रथम हीय धारकै।
राचूं सुक्षम रूप, हीय माही कल्याँन हित ।।३
द्वीपायन नृप देख, उत्तँम प्रस्न नरेस इह।
वरनन लगे वसेख, नाराँयन नारद कथा ।।४

छंद पद्धरी

विच हृदय रिखी नारद विचार, आये श्रीनाराँयन अगार।
स्रम कौ निवार बैठे सुधाँम, कीय नाराँयन स्तुति सुकाँम ।।५
जिम करचौ प्रस्न तुम हमहि जाँन, नाराँयन प्रति नारद निदाँन।
इह भयौ जक्त कैसै उदोत, परीयाय रीत सौ प्रथम पोत ।।६
होवत प्रतष्ट कहाँ रहत हेत, लय होत कहाँ को समट[1] लेत।
पुरषोतम कहीयै सब प्रकार, आतम-सरूप जगके अधार ।।७
कर्म के फलोदय करत कोन, जाँनी हम चाहत कथा जोन।
मन तजै भूमका-मोह माय, पूजा जप कहीयै ध्याँन पाय ।।८
उर मिटै अविद्या अंधकार, ह्वै प्रगट ग्याँन सूरज हमार।
आपकै विनाँ नही कोय और, जासौं हम पूछै हाँथ जोर ।।९

---

१ समेटना।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

प्रस्नन कौ उत्तर देहु पूरे, हित चाहि पाय लागत हजूर ।
सुर आद माँनवी सुनत स्राँन, गूढातम होय परकास ग्याँन ।।१०
पूछी मुनि नारद इह प्रकार, नाराँयन बोले हित निहार ।
जक्त कौ तत्व सुनीयै जरूर, परचाय कहै हम प्रेम-पूर ।।११
गुन माया गर्भत होत ग्यात, तृय गुन सौं जाँनहु जक्त तात ।
देवी कौं सुमरत देव-देव, भाखत हूँ ताकौं सकल भेव ।।१२
वृह्मा के सुत भये मनु विख्यात, स्वयंभू मनुँतर पति सुग्यात ।
पति सतरूपा राँनी जु पाय, बहु भये अनंदत हित वसाय ।।१३
सोइ वृह्मा लागे करन सेव, भाँमनी सहित पितु जांन भेव ।
बोले तव वेधा[1]-सुत विसास, आराधहु देवी प्रजा आस ।।१४
ईस्वरी आद माया अधीन, तुम जाँनहु नीकै गुनन तीन ।
गुन विनाँ न होवहि सृष्ट ग्यात, खोजीयै आद माया जु ख्यात ।।१५
स्वायंभू पितु कथ सुनी स्राँन, जिह अस्तुत लागे करन जाँन ।
तप करकै परसन करी ताहि, अत नमसकार कर-कर उगाहि ।।१६
देवी दीय दरसन तिही देख, वर लेहु-लेहु बोली बसेख ।
वर माँग लयौ मनु तिही वार, निरविघ्न सृष्ट करीयै निहार ।।१७
सिरजहि परजा कौं कर सहाय, विन माँत भवाँनी किम वसाय ।
स्वायंभू सुनकै हित सुधार, वरदाँन दयौ देवी विचार ।।१८
सुत वृह्मा लै वरदाँन सोय, गये बृह्म-लोक हीय ग्याँन गोय ।
मनु पाय लगे विधके मुकाँम, कीनी पुन विनती सहित काँम ।।१९
सुस्थाँन वतावहु मोहि सुखेत, हित करकै सिरजहु प्रजा हेत ।
सोचन तव लागे विध सखेद, भूमका भई जल मग्न भेद ।।२०
थल कोन वताऊँ जाहि थाँन, सुत स्रष्ट रचै जापै समाँन ।
उर-कष्ट भयौ वृह्मा असेस, देखत नासका अग्र देस ।।२१
अंगुष्ट माँन वाराह येक, पुल ताही परगट भय प्रवेक ।
वढ गये तँही वेला विसाल, वपु भयौ दिघ्घ परमाँन व्याल ।।२२
व्याल सौं सिलोचय भयौ वेख, द्रग रिखी मरीची आद देख ।
तज विस्मय जाँने जक्त-तात, व्यापक जग विस्नू अज विख्यात ।।२३

---

१ ब्रह्मा ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अस्तूति सब करनै लगे और, घरराय सव्द तव करत घोर।
जल पैठे ताही समय जाय, अत कठन रोम कंधर उठाय ।।२४
खित लागे खोजन करत खेल, परवाह जलध जल पेल-पेल।
खलचलीय सिंधु हलचलीय खीर, दलमलीय रलीय ऊपर डिंडीर ।।२५
सूंघते-सूंघते पाय सोय, जल मैं प्रथवी कौं लई जोय।
दंतन पै धरकै देव-देव, भुव लाये जलकौं पाय भेव ।।२६
निरखे वराह देवन निकाय, पढ-पढ कै अस्तुत लगे पाय।
दँनु हरंनाक्ष आयौ जु दौर, ठाढचौ मग रोकै भुजा ठौर ।।२७
जाजुल्ल भयौ तिह वेर जुद्ध, वँह गदा मार दीय धाँम ऊद्ध।
जीत कै दनुज प्रथवी जमाय, श्रीनाथ गये निज पुर सिधाय ।।२८
अवतार आद वाराह येह, निरनौ जग भाखत निसंदेह।
स्वायंभुव सुत कौं अष्ट-आँन[२], थप्पे विच भूँमी देख थाँन ।।२९
उपदेस रीत बोले उदंत, सुत स्वायंभू मनु पर्म संत।
महि महाबाहु कीजै मुकाँम, धन-धांन्य पाय इहाँ रचहु धाँम ।।३०
परजा की वृद्धी करहु पूत, कर नीत-रीत आपन क्रतूत।
वट देस काल करकै विभाग, लख न्याव निवेरौ गृहन लाग ।।३१
जग्येस-पुरस कौ करहु जाप, थिर राज जमावहु प्रजा थाप।
च्यारहौ वर्न के धर्म चार, विध अगम-निगम विचरहु विचार ।।३२
आचर्न कर्म उत्तम अनेक, विस्तार करहु परजा विवेक।
गुन के समाँन विद्या गरिष्ट, परभाव क्रीत करीयै प्रतष्ट ।।३३
सुत सुता करहु उतपत्त सोय, जिनके विवाह विध करहु जोय।
मनु-अंस-वंस राचहु मृजाद, वढ सकै नही तातै विषाद ।।३४
परधाँन पुरख कर भक्ति प्यार, सुभ रीत जन्म लेवहु सुधार।
संपंन्न जोगचरीया[३] सवंध, पद उच्च लहउ याही प्रबंध ।।३५
उपदेस सुतन दै अप्रमाँन, सुरजेष्ट गये अपने सुथाँन।
मनु रहे स्वयंभू महि मुकाँम, करनै हित लागे प्रजा काँम ।।३६
सुत भये दोय ताके सुखाद, प्रीयवृत्त अवर उत्ताँनपाद।
सुकंन्या भई त्रय-जुत सरूप, अक्रूती देवहूती अनूप ।।३७

१ फंन। २ ब्रह्मा। ३ योग-चर्या।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तीसरी प्रसूती नाँम ताहि, विध वेद करे तिनके विवाहि ।
आकूती ऋचि रिख दई आथ, दई देवहुती कर्दम दुजात ।।३८
दक्ष कौं प्रसूती दई दाँन, संताँन वढे तिनके सुथाँन ।
परजा परपूरन भई पुष्ट, तीनहूँ कंन्यका वंस तिष्ट ।।३९
आकूती ऋचि रिख उभय अंस, परमात्म अवतरे जिग[1] प्रसंस ।
कर्दमहु देवहूती कृतज्ञ, तिह उदर जन्म लीय कपल[2] तग्य ।।४०
ते सांख[3]-सास्त्र करता सुजोग, राचत जिह व्यापत नही रोग ।
प्रसूती दक्ष सौं गर्भ पाय, बहु प्रगट करी कंन्या वसाय ।।४१
जिह कंन्या सौं संताँन जान, ऊपजे मनुज सुर दनुज आँन ।
सृष्ट के वढावन-हार सोय, जोनी जिह उत्तम कहत जोय ।।४२
जिग-पुरस[4] समय इक देव जाँम, कहनै जिह उत्तँम करचौ काँम ।
स्वायंभू मनु की कीय सहाय, बहु दनुज कष्ट सौं लीय बचाय ।।४३
दीय ग्याँन मात कौं कपलदेव, भासांतर करकै बहुत भेव ।
जिह सांख्य-सास्त्र कौ ग्याँन जाँन, प्रकृती पुरख पावत प्रमाँन ।।४४
वंदना करत जिह वार-वार, अववेक मिटत उर अंधकार ।
माता कौं दैकै पर्म मोख, उठ गये पुलह आस्रम अदोख ।।४५
पद अमर भयौ प्रापत प्रतक्ष, द्रढ साध जोग कौं पर्म दक्ष ।
कपल कौ नाम जो लेत कोय, हित सहित ग्याँन हीय प्रगट होय ।।४६
वरन्यौ मनु कंन्या केर वंस, पुहमी प्रभाव जाकौ प्रसंस ।
जिह पढत सुनत अघ दूर जात, खोजीयै तँही निस-दिवस ख्यात ।।४७

दोहा

अब मनु सुत कौ वंस इह, कहत सुन्यौ जिम काँन ।
दीप और सागर दुनी, सिध विवहार समाँन ।।४८
स्वायंभू मनु के सुवन, वड़े भये प्रीयवृत्त ।
सुता विस्वकर्मा सुघर, पुत्री परजापत्त ।।४९
महाँसती परनी मुदत, रूपवती गुन रंग ।
ताके सुत दस भयेउतव, अत बलवाँन अभंग ।।५०

---

१ यज्ञ । २ कपिल मुनि । ३ सांख्य । ४ यज्ञ-पुरुष ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

छंद हरगीतका

जिह कहत नाँम जुदे-जुदे पहिचाँन लेहु परंपरा ।
विख्यात भये सोऊ जगत के विच ग्रत उदार अपंपरा ।।
ग्रगनिंध्रि[1] ग्रौरहु इध्मजिग[2] हू जग्यबाहु सुजाँनीयै ।
हुय महाँवीर हिरंनरेता परम धर्म प्रमाँनीयै ।।५१
धृतप्रष्ट स्रवन[3] धुरंधरा मेधातिथी ग्रत सुधमती ।
पुन वीत्रहोत[4] पिछाँनीयै कवि भयेऊ ग्रतसय सुकृती ।।
उरजसवती भइ कंन्यका इक सील-जुत इक सुंदरी ।
मनु सुतन त्रय लय मुक्त-मारग द्वेष तज दुख दुंदरी ।।५२
कवि सवन ग्ररू महावीर त्रहु कढ भज विरागी-भाव कौं ।
सोई ऊर्धरेता भये समरथ पाय जोग पसाव कौं ।।
इन त्याग करेउ गृहस्थ-ग्रास्रम विपन रहेउ विहार मैं ।
मनु सुतन त्रय ग्रौरहु भये मिल निपज दूसर नार मैं ।।५३
ऊत्तम रू तामस रैवतहू इह मुनंतर पत माँनीयै ।
तिनकी कथा वीती सु ताकौं जुत पुराँनन जाँनीयै ।।
इह भाँत करकै वंस उत्पत राज कीनौ सब रसा ।
ग्यारहौ ग्रर्बुद ग्रब्द गनती वीच भुव-मंडल वसा ।।५४
नीती रू विध की न्याय सौं सब प्रजा कौं कीनी सुखी ।
सूर्जास्त लख ग्रंधेर वसुमत द्रगन जन देखे दुखी ।।
इक दिवस करेऊ विचार इह रहि ध्वांत किम मोहि राज मै ।
रथ करचौ त्यारी तेज जिम रवि सकल साज समाज मै ।।५५
उत सूर घूँमत बीच ग्रंबर भूप प्रथवी भाग मै ।
ग्रंधार मेटन भयौ उद्यत लार-लार ही लाग मै ।।
वसू सात वार नरिंद्र विहरचौ विध सुनी इह बात कौं ।
सोइ रोक दीय समुझायकै सब जाँन मारग जात कौं ।।५६
रथ चक्रहू सौं बनीय रेखा सात-सागर संजुरे ।
खाली रही सोई द्वीप खित पै भीर परजा-जन भरे ।।

---

१ आग्नीध्र । २ इध्मजिह्व । ३ सवन । ४ वीतिहोत्र ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जंबू पलक्षहु सालमली जगकुसरू क्रौंच कहीजीयै ।
पुन साकदीपहु दीप पुस्कर लेख संख्या लीजीयै ।।५७
इक येक सौं दुगनौ अनुक्रम दीप की जाँनहु दसा ।
सातहौ कहत समुद्र सीमा रचे सोऊ ऊपर रसा ।।
खारोद ईखरसोद खित पै तिम सुरोद घृतोदहू ।
खीरोद-दध मंडोद लेखहु पुन सुधोद प्रवोदहू ।।५८
पुन कह्यौ जंबू-दीप प्रथम ही खार-सागर विच खिती ।
अग्निधृ नाँमक पुत्र प्रीयवृत इहाँ कीनौ अधपती ।।
तिह पार दीप पलक्ष पवृत ईखरस आवृत वही ।
जहाँ वास दीनौ ईध्मजिह्वा सुतन प्रीयवृत हित सही ।।५९
सालमली-दीप सुरोद मैं मदरा भरयौ जिह माँनीयै ।
वासौ सु दीनौ जग्यबाहू जिहीं नृप सुत जाँनीयै ।।
कुसदीप जाकै पार कढकै घृत भरयौ सागर घनौ ।
राजाँन पुत्र हिरण्यरेता गडपती ताही गनौ ।।६०
तहाँ क्रौंच-दीपहु पार ताकै पय भरयौ सम पाँनीयै ।
धृतपुष्ट प्रीयवृत सुतन कौं घर जाग ताही जाँनीयै ।।
आगै जु साकसु अंतरीपह मंडोद-दध सीमा मही ।
मेधातिथी पति जहाँ माँनहु सुतन प्रीयवृत ही सही ।।६१
पुस्करह-दीप जँही परै सुद्धोद जाँनहु सागरा ।
पति वीतहोत्र प्रमाँनीयै इहाँ नृपत सुतन उजागरा ।।
उरजसवती नृप अंगजा दीनी सु सुक्र दुजात कौं ।
जिह देवजाँनी आत्मजा रिवत प्रगट कीनी ख्यात कौं ।।६२
प्रीयवृत्त राजा आप पुत्रन दीप करहैं सादये ।
आस्रयन करकै जोग-आस्रम भूम तज निवृत भये ।।
द्रढ प्रथम जांबू-दीप की संख्या कहै जैसी सुनौ ।
इक लाख जोजन जास आसय गोल जिम पंकज गनौ ।।६३
जिम पंखुरी नवखंड जाँनहु सहँस नव-जोजन समा ।
इक येक कौ जाँनहु अनुक्रम छेह पर्वत विच छिमा ।।
दक्षन रू उत्तर खंड-द्वै आकार धनु अवरेखीयै ।
खूटा इलावृत-खंड द्वै पुन च्यार संजुत पेखीयै ।।६४

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जिह वीच सैल सुमेर जाँनहु, लाख-जोजन लेखीयै ।
आकार पंकजकर्नका इम प्रभा जाहि परेखीयै ।।
जोजन सु षोडस मूल जाकौ सीस दुगन समाँनहू ।
उत्तर इलावृत खंड के इह सैल त्रय सु प्रमाँनहू ।।६५
गिर नील स्वेत रू स्त्रंगवाँनह तीन खंड मृजाद ते ।
रंम्यक सु और हिरंनमय रह कुरूवर्ष क्रमाद ते ।।
पूरव समुद्र समुद्र पछ्छम जहाँ जाय तहाँ जुरे ।
दो-दो सहँस प्रमाँन दीरघ ऊद्ध सोहत नभ अरे ।।६६
वृत इला खंड समीप वरती उत्तरोतर क्रम इही ।
न्यूँनता जाहि दसांस निरनय साख साखा प्रति सही ।।
नद-नदी जाहि अनेक निकसत सुछ्छ नीर सुहावनी ।
तरु ताहि के तट हरित त्रन परछांह सोभा पावनी ।।६७
दक्षन इलावृत निषध-गिर द्रढ जाहि दक्षन जाँनीयै ।
हिमकूट दक्षन गिर हिमालय मृजादा इह माँनीयै ।।
पूरव समुद्र सु मिले पछ्छम ऊद्ध दो-दो सहँस ये ।
क्रम दक्षनह तिह खंड कहीयत भाग ताही सम भये ।।६८
हरी-वर्ष अरू किंपुरख हेरहु अरू भारत आदकै ।
हरी-वर्ष के क्रम सौं निहारहु मही सैल मृजादकै ।।
पिछँम इलावृत-खंड पव्वय मालवाँन मिलायकै ।
महि दिसा पूरव गंधमादन जोइ मिल्यौ है जायकै ।।६९
दोऊ मिले नील रू निषध सौं द्रढ लंब जाकी लेखीयै ।
विस्तार द्वै-द्वै सहँस बसुधा वारपार विसेखीयै ।।
इह केतुमाल भद्रास्ववर्ष जु मृजादा गिर माँनीयै ।
मंदर तथा नग मेरूमंदर पाद च्यार प्रमाँनीयै ।।७०
सोपार्स[1] कुमँद सहेत समसर रहे घेर सुमेर कौं ।
ऊंचे सु दस-दस सहँस योजन फिरे च्यारहु फेर कौं ।।
तरू च्यार जापै ताँम तिनके समुझ लेहु सयाँन सौं ।
सहकार[2] जाँमुन नीप[3] वट सम निंच कुंड निदाँन सौं ।।७१

१ सुपार्श्व । २ आम । ३ कदंब ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy .

पय-रस मधू-रस ईख-रस पुन सुद्ध जल सरभर सुतै ।
सपरस[1] करत लहि देव-सिद्धी जोग संगत ह्वै जुतै ।।
उद्याँन तापै च्यार उत्तम देव विहरत देखोयै ।
वन-नंदनह अरू चैत्ररथ वन रंम्य अत अवरेखीयै ।।७२
वैईभ्राज[2] स्रवतोभद्र[3] विरचत सुभग भूँम सुहाँवनी ।
तिहि जाग वासौ देवतन कौ पर्म महिमा पावनी ।।
अरू मंदराचल ऊपरा तरू अंब्र अत दीरघ तँही ।
फल ताहि लागत फूटकै वर नदी अरू नोदा वही ।।७३
भगवंती अरू नोदा सु भ्राजत तटं विराजत ताहि पै ।
जन तही पुज्जत जायकै काँमना सिद्ध कराय पै ।।
माया सु आद्या तुला मालिनि अँनंता पुन ईस्वरी ।
पुष्टी भनंता कांती पावन खंड दुष्ट खयकरी ।।७४
होत है तट पै तहाँ हाटक पुज्ज ताहि प्रवाह मैं ।
पूरव इलावृत-खंड प्रवसी नद सोई निरवाह मैं ।।
पसूपती-संग सु पार्बती विच देस करत विहार कौं ।
गंध्रवी ईक्षनि किंन्नरी-गन निज लीयै सखी नार कौं ।।७५
जिही अंगराग पटीर जाकी अत सुगंध उड़ात है ।
लहि पवन ही की लाग सौं जोजन सु दस-दस जात है ।।
अरू मेरुमंदर-गिर अनूँपम जंबु-तरू जापै जुरचौ ।
फल ताहि सौं रस फिसल कै उत ओर दच्छ छन ऊतरचौ ।।७६
जामनवती नद वही जासौं जाहि तट पै जाँनीयै ।
जंवादनी देवी जहाँ वसुवास करत बखाँनीयै ।।
जन देव नाग रिखी जुतै निश्चरहू पूजत नेम सौं ।
करुना सु भीनी कृपा करकै खंड राखत खेम सौं ।।७७
काँमहु-कला अरू कोकलाक्षी काँम पूजत कारुनाँ ।
कोऊ नाकमाँन्या कहत धाँन्या आद नाँम उचारना ।।
गुन विगृहाजु गभास्तनी[4] मनु पुज्जता जिह माँनीयै ।
जंबू-नदी तट पंकजा पै सूर तापस माँनीयै ।।७८

---

१ स्पर्श । २ वैभ्राज । ३ सर्वतोभद्र । ४ गर्भस्तनयुक्त ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

लागत प्रकंपन होत लेखहु जंबु-नद उत्तँम जही।
भाँमनी देवन वनत भूखन[1] सूत्रकट आदक सही।।
पर्बत सुपारस ऊपरा पादप कदंब प्रमाँनीयै।
धर निखस खोढल पाँच धारा इलावृत ऊधराँनीयै।।७९
मधुरस वहै सोई पिछंम मारग अत सुगंधम-मइ इला।
गहि पाँन करत जु देवगन करतूत वाढत सुख-कला।
धुर वसत जहाँ धारेस्वरी देवी सुजन सुखदायनी।
पूजा करत जहाँ देव पुज्या काल-रूपा कायनी।।८०
माहाँनँना कहत जु महोसाहा कर्मदा फल-कारनी।
पुन काँन कोटि प्रवर्तनी देहा कराल सु दारुनी।।
कांतार गृहनेस्वरी केवल कालअंगी कहत है।
भक्ती सु ताके भाव भजकै लाभ बंचत लहत है।।८१
नग कुमद जापै वट अनोकह साख सौं रस स्रवत है।
नद होय कै जहाँ नीसरी द्रढ दिसा उत्तर द्रवत है।।
मधु दुग्ध दध गुड़ अंन्न मिलकै वस्त्र आभूषन वहै।
जहाँ के निवासी आयकै जन लाभ वहु विध सौं लहै।।८२
मीनाक्षी देवी जहाँ मंदर पर्म सुंदर पेखीयै।
नाना प्रकार निरंजनी द्वज देव पूजा देखीयै।।
नीलांबरा रौद्रामुखी निज जाहि नीलालक जुता।
अत पुज्जया अत माँनया पुन प्रीया माँनसु प्रवृता।।८३
पुन कहत माँन प्रीयंतरा मातंग मत्त सु गाँमनी।
मंदोद मादनी मार मादनी जपत जग की जाँमनी।।
सिखी वाहना सु मयूर सोभा गर्भभू ताही गनौ।
पूजता मार सुनाँम पावन भूत जग कारन भयौ।।८४
श्रीअंबका के नाम सुमरत पाँन जल कर प्रीत सौं।
जन होत रोग न जुराभव ताप छूटत भीत सौं।।
संनिकर्ष सैल सुमेर कै सम मूल पर्वत ये गिलै।
तिह नाँम कुरग कुरंग चारुध त्रकुट वैडूरज तलै।।८५

१ भूषण।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अरू कपल-वास कुसंभ सिती अरू सिसर निखध रू सरभरे।
पुन हंस संख रू रिखभ पावन अरू विकंकत उद्धरे ।।
नाग रू कलंजर अडग नग ये रुक पतंग रुचीक हूँ।
ये घेर रहे चहुँ ओर सौं निरभय सुमेर नजीक हूँ ।।८६
पर्वत सुमेर सुभाग पूरब सहँस अष्टादस सही।
लंबे सु उत्तर ओर लेखहु सहँस द्वै ऊँच्चे सही ।।
जिह व्यास दोय सहँस जाँनहु देवकूट जु जठर द्वै ।
पवमान पछ्छम पारजातहु दिघ्घ इतने और द्वै ।।८७
करवीर अरु कैलासहू दक्षन दिसा मै देखीयै ।
उत्तर त्रसंगहू मकर ये सम इनही केस विसेखीयै ।।
ये आठ पर्वत येक से विसतार ऊँच बराबरी।
सोवर्न वीच सुमेर सोहत भिरे सृंग भराभरी ।।८८
मंडत सु ऊरध मध्य मै ब्रह्मापुरी विस्तार सौं।
दस सहँस जोजन दिपत दस-दिस भरी संपत मार सौं ।।
सोवर्नमय चहु-खूंट सरसत कोट फाटक द्वार के।
दिस-विदिस आठहु दिसा पालक पुरी जाके पार के ।।८९
पचीस सत जोजन प्रलंबत येक इन अनुमाँनीयै ।
संख्या जु ताकी कहत साची जाहि अनुक्रम जाँनीयै ।।
महादिव्य प्रथम मनोवती अमरावती अवरेखीयै ।
तेजोवती संजमनि तेऊ स्वर्न समय विसेखीयै ।।९०
क्रस्नांगना सृधावती कहि और गंधवती इही।
जाँनीयै फेर जे जसोवती जिस्नू रवीपत है जँही ।।
नद महा पावन गंग निकसी जाहि ख्यात जनात है।
अवतार वाँमन पद अगुष्टन तिही उत्पत तात है ।।९१
चालीस इंड कटाह छिद्रन पुंन्य रूप प्रवाह सौं।
उतरी सुरालय ऊपरा जल रूप धारा जाहि सौं ।।
आकास मस्तक ऊपरा हायन हजारन रहि वही।
प्रम धाँम विस्नू सोई प्रमातम जाँन ध्रुव-मंडल जँही ।।९२
उत्ताँन-पाद सु भूप अंगज विस्नु-पद सेवत वसै।
परिक्रमा देवत सप्तरिखि प्रत लोक जिह आवृत लसै ।।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

महमा सु गंगा जाँनकै मुन जटा धारन कीय जही।
रहि तहाँ गंगा सीस रिखीयन बहुत दिवसन सौं वही ।।९३
मुनि धाँम सौं पुन चंद्र-मंडल चंद्र-मंडल सौं चली।
सुरजेष्ट-लोक सु संचरी उमगाय कै पुन ऊझली ।।
ह्वै च्यार धारा सीस हिमगिर नाँम इह च्यारहु नदी।
निमनगा सीता अलकनंदा चक्षुभद्रा पथ छिदी ।।९४
सीता सु विध के लोक सौं पर्बत सु केसर पै परी।
मस्तक सु गंधनमाद सौं भद्रा सु मंडल मै भरी ।।
मह चली पूरब दिसा मारग मिली खारोदिक मँही।
सुरसरी सुरगन सेवता जान्हवी भाखत है जँही ।।९५
नग मालवानह नीसरी दूसरी धारा दौरकै।
बढ केतुमालहु वर्ष मै सोइ चक्षु नाँम सजोरकै ।।
पाथोद पछ्छम माँहि प्रवसी अत प्रवाह उझेलकै।
नीसरी तीजी अलकनंदा मेर दक्षन मेलकै ।।९६
आरण्य सीम उलंघकै आई सु हिमगिर ऊपरी।
हिमकूट सौं पुन पतित ह्वैकै भरतखंड ही मै भरी ।।
द्रुत मिली सोय समुद्र दछ्छन सलल पावन सुरसरी।
पग परत ताके पंथ मै ह्वै रूप जावत हर-हरी ।।९७
अस्नान कर जल आचमन माँनवी मेटत म्लाँन कौं।
महिमा वखाँनत जाहि सुर मुनि नित्य लहि निर्वाँन कौं ।।
भई चतुर्थ धारा सुभद्रा है सृंगवाँन सिधायकै।
भद्रास्ववर्ष मही मिली वहती हुई विचवायकै ।।९८
उत्तर समुद्र सु मिली उज्जल मात गंगा मोद सौं।
उतरी सु मेटन ओघ-अघ कौं कर क्रपा चहु कोद सौं ।।
जिह नाम गंगा जाप सौं नर रूप होवत निर्जरा।
खित जिही भारत-खंड की वरनै सु महमा मुनिवरा ।।९९

दोहा

निकस मेर सौं नद-नदी, मिली समंदर माहि।
दीप कहे परबत सुद्रिढ, भूम-भाग सब भाय ।।१००

T　CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कर्म क्षेत्र भारथ कहत, सब दीपन सिरमौर।
सुभ करनी पावत सुरग, ध्रुव करनी मत घोर ।।१०१
अंन्य दीप है आठहू, सुर पुर जिम सुखदाय।
बल सहस्र हसती बसत, जन ताही थित जाय ।।१०२
सु रत करत नारीन संग, पौरख घटत न पिंड।
विहरत सुख विलसत विवध, आयु समाँन अखंड ।।१०३
त्रेताजुग सम तिनह की, पौरख आयु सपूर।
उन खंडँन मै रहत इम, दोख-भाव जन दूर ।।१०४

छंद उधोर

महिमंड खंडन माहि, देवेस रहत दिपाय।
वर्णाना मंत्र विसेस, अरू करत जन उपदेस ।।१०५
हित मात तत्पर होय, पूजा सु करत प्रतोय।
नव-खंड मै वन नीर, सोगंध वहत समीर ।।१०६
पर्वत सु पाँतन पाँत, अत भरे सर उपरांत।
फूले सु पंकज फेर, उड़ भृमर करत अँधेर ।।१०७
कारंड हंस चकोर, मन मुदित नाचत मोर।
क्रीड़ा जु करत किलोल, बोलत सु मधुरे बोल ।।१०८
वस देवगन जहाँ वास, हित करत नार हुलास।
धुर अष्ट-खंडन धाँम, श्रीविस्नु मूरत स्याँम ।।१०९
पूजा सु देवी पाय, वस रहे गुन विलगाय।
खित जहाँ इलावृत-खंड, महाँदेव वासौ मंड ।।११०
इक पुरख रूप ही आप, दूजौ न पुरख कदाप।
श्रीभवाँनी के संग, रच रहे ताहो रंग ।।१११
जहाँ और कोऊ नर जाय, स्त्री होत सहज सुभाय।
इह कीय भवाँनी आद, महि इलावृत मुरजाद ।।११२
सहचरी नार सरुंध, संग रहत सेव समंध।
देवेस श्रीमहादेव, संकर हखन कर सेव ।।११३
इछ्छा सु कर जन अंग, सुख जाचना सरवंग।
चौथी सु मूरत चारु, वपु महाँदेव विचार ।।११४

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ताँमसी भाखत ताहि, कारन सु वृह्माकाय ।
महाँदेव ध्याँन सुमंत्र, तत-रूप जाँनहु तंत्र ।।११५

मंत्रः—'ओं नमो भगवते महा पुरुषाय सर्वगुणसंख्यानायानन्तायाव्यक्ताय नमः' इति ।

इह करत ध्याँन उमंग, पुन कहत सोइ परसंग ।
जप करन तुमही जोग, ईसवर-रूप अरोग ।।११६
इह पाद-पंकज आप, तुम सरन मेटन ताप ।
ऐंस्वरीय पूरन अंग, पुन-परायन पर-संग ।।११७
भावत सु भक्ति-भाव, प्रगटत सु भूत पसाव ।
संसार भासत सोय, हित आपही सौं होय ।।११८
आपही समेटत येह, गत गूढ सों होय गेह ।
जिही द्रष्ट माया जाल, कर्मन सु गुन त्रय-काल ।।११९
वृतीयाँ करकै वेख, द्रग सकत नाँहिन देख ।
नही लिखत होत लिगार, वितरेक करत विचार १२०
हम येह जाँनत हाल, जीते सु क्रुद्ध जवाल ।
आतमा जीतन आस, विच करत हीय विसवास १२१
जाँननौ चहत जरूर, पर्म प्रीत तुमही पूर ।
संसार इह थित सोय, जन्मनौ-मरनौ जोय ।।१२२
माँनत जु तुमकौं मूल, अज वेद मति अनकूल ।
सीरख सु आप सहंस, पुहमी सु धार प्रसंस ।।१२३
आधार सक्ती आप, थिर रहे थाँनक थाप ।
वंदना करत विसेस, दायका सृष्टी देस ।।१२४
अज भये उतपत आद, मय ग्याँन गुन मुरजाद ।
हम ऊपजे तिह हूँत, सुर असुर बंधे सूत ।।१२५
इंद्रीनगन उपजाय, उर रहे गति उरझाय ।
सृष्टी करत हम सोय, हित अनुग्रह तुम होय ।।१२६
कीय कर्म गृंथी केर, गुंन मई मोहत गेर ।
परवेस अरू प्रस्थाँन, जाँनत न येयहु जाँन ।।१२७
आपकौं धोक अनंत, संखर्हखन वित संत ।
वृत इला खंड वसेस, मुद सेव करत महेस ।।१२८

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पुन लखहु इह परमाँन, भद्रास्ववर्ष विधाँन।
सुत धर्म करत जु सेव, भद्रहसृवा जुत भेव ॥१२९
हरी-मूर्ती जहाँ हयग्रीव, जन प्रजा पालत जीव।
जिह उपासत इह जाप, प्राँनी सु मेटत पाप ॥१३०

मंत्र—ओं नमो भगवते धर्मायात्म विशोधनाय नमः। इति

जप करत इह मन जीत, पुन ध्याँन आँन प्रतीत।
आस्चरीय जग मै येह, वारता विरचत वेह ॥१३१
भगवाँन-चरत विचित्र, इह जीव मृत्यु अमित्र।
मृत्यू न मारत मौत, छादवी धोवत छौत ॥१३२
फिर कुकर्मन की फास, बँध करत जग मै बास।
हीय नाँहि सोचत हाल, करतूत ऐसी काल ॥१३३
सुत पिता दग्ध सरीर, निज हाथ सेचत नीर।
इछ्या सु जीवन आप, उर चाह करत अमाप ॥१३४
रावरी माया रीत, प्राँनीन लखत प्रतीत।
आस्चरीय यातै और, देख्यौ न मन की दौर ॥१३५
अध्यात्म पठत अपार, कवि कहत बाँध करार।
जापै न समुजत जीव, दुस्तर प्रभाव दईव ॥१३६
जग झूँट साँचौ जान, गहि रहे इह अग्याँन।
पुन आप रचत प्रपंच, रुख नाँहि जाँनत रंच ॥१३७
अहि निसाकार अनंत, सब ही पुकारत संत।
उतपत्त पालन आद, महि रची जग-मुरजाद ॥१३८
सब जोग तुमही स्याँम, ध्रुव ठौर जीवन धाँम।
सब वस्तु कारन सेख, वाँनी विचार विसेख ॥१३९
भृगु-सिख्ख पायौ भेद, विध हरन कीनौ वेद।
सब रसातल मै जाय, तुम जीत आँने ताहि ॥१४०
वँह दये विध कौं आँन, विख्यात जग वाख्याँन।
नम नमो मायानाथ, हित अहित तुमही हाथ ॥१४१
संकल्प सत्य सदीव, हरी हयानन हयग्रीव।
भद्रहस्रवस भद्रास, हयसीर्ख सेव सुहास ॥१४२

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

संसिद्ध करत सु सेव, द्रढ भक्ति देवन देव।
तुम देत हौ जन तात, निरवाह पद निस्नाथ ।।१४३

दोहा

पढत इहै इतीहास पुन, सुनत सुनावत सोय।
पाप छूटकै मुक्त पद, लहत सयानै लोय ।।१४४
खंड सुनहु हरी-वर्ष की, कथा अनूंपम काँन।
सेवक रत प्रहलाद सुभ, नारसिंघ भगवाँन ।।१४५

मंत्रः— ओं नमो भगवते नरसिंहाय नमस्तेजस्तेजसे आविराविर्भव वज्रद्रंष्ट्र-
कर्मा शयाँन रंन्धय रंन्धय तमो ग्रस ग्रस ओं स्वाहा अभय-
मात्मनिं भूयिष्ठाय ओं क्षौं ।।

इह मंत्र कौं प्रहलादजी जपते और नीचै लिखी हुई
रीत सौं ध्याँन करते हैं। इति

कवत

स्वस्ति होउ खलभी, प्रसंन्न होउ बुद्धि सम,
परसपर प्राँनी कल्याँन ध्यावै मनक।
मेरी अन्य जननी की भक्ती विन काँमना सौं,
होय भगवाँन पद-पंकज सौं सनकै ।।
संग त्याग भव जन असंग होय रहूँ सुखी,
संग जो मिलै तौ मिलै सदा हरीजन कै।
दारा पुत्र बंधु-वर्ग चाहत न वंचाचित,
आतमा मै रहूँ रत सरन असरन कै ।।१४६
आतम के ग्याँनी प्राँन वृती मै संतुष्ट होय,
सोइ अल्पकाल वीच सिद्ध होय जाता है।
ग्रेह मैं सनेह कीयै वैभव मै विकल्प होत,
चित्त नाँ थिरावत है यैसी तौ असाता है ।।
विक्रम त्रिविक्रम कौं सुनकै सुखद आँन,
अक्रम मिटत ओघ सुक्रम सुहाता है।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

विस्नू विन भावना सौं होय न सहिस्नु संत,
आद-अंत व्यापक अनंत जगत्राता है ।।१४७
माँनसी मिटत मल, जाही की उपासना सौं,
जात खल दूर काँम-क्रोध आद जाँनीयै ।
गेह पुत्र दारा सुख वासना विसय वीच,
बंधे जे अग्याँनी अभमाँनी उर आँनीयै ।।
आस्रय ज्याँ मीन जल प्राँनिन कौं आतमा है,
ऐसे हरि भूलकै महत्व मीत माँनीयै ।
दैतराज दैतन कौं ऐसें उपदेस देत,
पूरन प्रभाव नरसिंघ पहिचाँनीयै ।।१४८

दोहा

पाप-रूप हस्ती प्रवल, करन निसूदन काज ।
सेवत श्रीनरसिंघ कौं, रात-दिवस दनुराज ।।१४९

छंद द्वै-अख्खरी

इह प्रकार जाँनहु अधिकारी, केतुमालवर्ष हु सुखकारी ।
प्रदुमन श्रीभगवाँन प्रधाँना, काँम-रूप करता कल्याँना ।।१५०
वसत जहाँ-तँह केर निवासी, रचत सेव ताकी सुखरासी ।
सँमद-सुता तिह खंड-स्वाँमनी, भजत रँमा तिह ग्रेह भाँमनी ।।१५१
जपत मंत्र तिह देत जनाई, गिरा जेम नाँराँयन गाई ।
मंत्रः—ओं ह्रीं ह्लीं ह्रूं ओं नमो भगवते हृषीकेशाय सर्बगुण विशेषै विलक्षितात्मने आकूतीनां चित्तीनां चेतसां विशेषाणांचाधिपतये षोड़शकलायच्छंदोमयायान्नमयायामृतमयाय सर्वमयाय सहसे ओजसे बलाय कान्ताय कांमाय नमस्ते उभयत्र भूतात्-इति
जपकै मंत्र ध्याँन कर जासू, पर्म भक्त इह करत प्रकासू ।।१५२
अनस्त्रीगन तुम करत अराधन, सुख चाहत अनपति रति साधन ।
बात अजुक्त इहै विभचारी, है नाँहिन रुच कबहु हमारी ।।१५३
पालन करत वढावत प्रीती, पति तुमही हरि मोह प्रतीती ।
आतम-लाभ परै नहीं औरै, जाकौं त्याग-भावना जोरै ।।१५४

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

आप त्याग धावत जो अन कौं, महाँ कलेस वढावत मन कौं।
करकै जाचत तऊ काँमना, आप देत सुख इही आँमना ।।१५५
गूढ रहत सबही मन गोई, देखत भाव-अभावहू दोई।
भोग देत नही विना भाव सौं, इच्छ्छत सुख मिलत न अभाव सौं ।।१५६
त्रप्ति होत नही लहत ताप कौं, अच्चुत भूलत सोइ आप कौं।
विध महेस सुर मोही वंचत, ऐसै ही नर-नार जु इंचत ।।१५७
आप विमुख ह्वै करम ऊपावत, पै मोकौं सुपनै नही पावत।
वसत हृदय-विच मोहि विसंभर, घट जिन वसत जहाँ मेरौ घर ।।१५८
जाँनत इह सिद्धाँत न जौलौ, ते जीवन सुख लहत न तौलौ।
भक्तन सिर पंकज कर भेटत, महाँ ताप तिनके अघ मेटत ।।१५९
सोई कर धारहु मेरै सिर, वक्कस्थल[1]-विच देहु वास वर।
माया कर चेष्टा जग माँही, रात-दिवस हरी-संग रहाँही ।।१६०
इह अभिलाख सदा मोहि आरत, राखहु निज चरनन भक्ती-रत।
काँमरूप भगवाँन निकाई, सेवा लिछमी करत सदाई ।।१६१

दोहा

खित-विच रंम्यक खंड मै, मच्छ-रूप भगवाँन।
वँहाँ मनु करत उपासना, निज मति नीत-निधाँन ।।१६२

मत्र:—ओं नमों मुख्यतमाय नमः सत्वाय प्रांणायौजसे बलाय
महामत्स्याय नमः ।। इति

छंद ह्वै-अक्खरी

आप लोक पालन जु अदिष्टी, वाहर-भीतर सृष्टि वरष्टी।
विचरत रचत तुमहु जग-वीचै, सव जीवन कौं जीवन सीचै ।।१६३
बाजीगर जिम पुतरी वाँधै, नाँच करावत गुन कौं नाधै।
विस्व सदा करकै वस-वरती, तुमही करत निवृत परवरती ।।१६४
भक्ती त्याग आपकौ भेवा, दनुज मनुज पंन्नग अरू देवा।
पीड़त ह्वै मत्सर जुर प्राँनी, इह जग-बीच घने अग्याँनी ।।१६५

---

१ बक्षस्थल।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

देख परत जेतौ जग-द्रष्टी, सबही आप सँवारत सृष्टी।
लोकपाल जाँनत नहि लेखौ, बल माया इह आप विसेखौ ।।१६६
प्रलय काल मै सागर-पाँनी, वढचौ सबै इह विस्व विलाँनी।
पुन तुमही धरनी प्रगटाई, विवध ओसधी बीच वसाई ।।१६७
हमही जुत जग-जीव हजारन, कीने थाप, आप भव कारन।
आपही नाथ पराक्रम आदू, पैहै हम किम गृसे प्रमादू ।।१६८
अस्तुत कर मनुराज उपासत, मत्स-रूप भगवाँन महामत।
सुमरत पाठ करत जन सोई, संपत पावत मुगत सकोई ।।१६९

दोहा

मानत वर्ष हिरण्य मय, कूर्म-रूप करतार।
जिह सेवत है अर्जमा, पित्रवती परचार ।।१७०

मंत्रः—ओं नमो भगवते अकूपाराय सर्वसत्त्वगुणविशेषणाय नोपलक्षित स्थानाय नमो वर्ष्मणे नमो भूम्ने नमोऽवस्थानाय नमस्ते—इति

इह जप करकै ध्याँन करत इह, जाँन लेहु सब भाँत रीत जिह।
प्रथम आप माया परकासत, अर्थ-रूप बहु-रूप उजासत ।।१७१
रूपन है जेऊ रूप रतेई कारन मिथ्या-रूप कितेई।
गनना ताकी कौंन गनावै, जग सोई असथित-रूप जनावै ।।१७२
कूरम नमसकार तुमको रै, इंडज अद्भुत स्वेदज औरै।
जीव जरायुज थिर चर जेते, सुर रिखी भूतहु पित्र सहेते ।।१७३
अद्रीय सैल नदी धर अंवर, और नव-ग्रह नखत अडंबर।
दीप समंद तुमहि सब देवा, सुमत देहु सुमरन बस सेवा ।।१७४

दोहा

विनवत आद वराह कौं, प्रथवी जोरत पाँन।
खेम हेत कुरु-खंड मै, सब विध सुनहु सुजाँन ।।१७५

मंत्रः—ओं नमो भगवते मंत्रतत्त्वलिंगाय यज्ञक्रतवे महाध्वरावयवाय महा-वराहाय नमः कर्मशुक्लाय त्रियुगाय नमस्ते—इति

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

छंद द्वं-अख्खरी

करत ध्याँन इह विध सौं कहीयै, लाभ धरा मन-वंचत लहीयै।
निपुन देह इंद्री निज मन सौं, पंडत मथन करत लहि पन सौं ।।१७५
काठ मथन कर अग्नी काढत, विसन त्याग आतम सुख वाढत।
द्रव्य क्रीया अरू विसय जु देवा, इंद्रीगन व्यापार अजेवा।।१७६
हेतु अयन तन ईस काल हुव, धरता करता अहंकार ध्रुव।
क्रम माया गुन कारज करकै, वस्तु रूप आतम लख वरकै।।१७७
हिरंण्याक्ष दाँनव के हेता, आँनी जल सौं मोहि अनंता।
नमसकार तुमकौं बहु नाँमी, श्रीवाराह विश्व के स्वाँमी।।१७८

दोहा

खंड येम किम पुरख मै, राजत सीता-राँम।
करत सेव हँनुमंत कपि, सुखद-रूप घनस्याँम।।१७९

मंत्रः—ओं नमो भगवते उत्तमश्लोकाय नमः—इति। आर्यलक्षण शीलवृताय नमः, उपशिक्षितात्मने उपासित लोकाय नमस्साधुवादनिकर्षणाय नमो ब्रह्मण्यदेवाय महापुरुषाय महाभागाय नमः—इति।

छंद द्वं-अख्खरी

येक रूप वेदांत अभ्यासै, परसिध तत्व सोय परकासै।
अनुभवं सौं आतम अविनासी, रहित गुनन संतन सुखरासी।।१८०
प्रापत जोग सु सीलन पूरौ, दुरमति अहंकार सौं दूरौ।
वृह्म-रूप श्रीराँम विसारद, सेस महेस वखाँनत सारद।।१८१
जग सिक्षा हित जनम लयौ जिन, गुन ताके विचार लीजै गिन।
पुरी अजोध्या सुरग पठाई, सदगत दीनी जन सुखदाई।।१८२
प्रगट करी कीरत जग-पावन, निगम रीत अघ ओघ नसावन।
पंकज-नयन राँम-पद प्रीती, पूजा हँनुमत करत प्रतीती।।१८३

दोहा

नाँराँयन नारद कहत, भारथ-खंड सभेव।
तुम पूजा मेरी करत, दास-भाव हम देव।।१८४

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मंत्रः—ओं नमो भगवते उपशमशीलायोपरतात्माय नमो किञ्चन वित्ताय ऋषिऋषभाय नरनारायणाय परमहंस परमगुरवे आत्मारामाधिपतये नमो नमः—इति ।

छंद द्वै-अक्खरी

सबही इह दीसत संसारा, नाँरायन करता निरधारा ।
बंधत नहि ताही मै बंधन, देहक क्षुधा पिपासा इंधन ।।१८५
गुन अवगुन देखत सब ग्याता, दूखत द्रष्ट न होय दिखाता ।
जोग-निपुन तुमही जोगेस्वर, हिरणगर्भ लौ आद हरी हर ।।१८६
वृह्माँ कही विवध विध बाँनी, निरगुन तुम दाता निरबाँनी ।
भक्ति जुक्ति चित करै भावना, देह मलिन सौं धरै दावना ।।१८७
पंडत सोइ सोई परवीना, अष्ट प्रकार जोग आधीना ।
मिटै वासना जैसै मन की, चितै सरब तेरे चरनन की ।।१८८
देहु अधोक्षज इह मति देवा, सुमरन करूँ आपकी सेवा ।
नारद सौं प्रसंन्न नारायन, कहनै लगे भरथ-खंड कारन ।।१८९
करम-भूँमका इही कृतारथ, भूमंडल मै खंड जु भारथ ।
परवत सलिता परम पवित्रा, चित लगाय सु सुनहु चरत्रा ।।१९०
स्नान करत जल-पाँन करत सम, तीन ताप मेटत हीय कौ तम ।
माँनव जे जनमत जिह माँही, सातुक राजस, ताँमस साँही ।।१९१
कर्म करत जैसी कछु करनी, वेद विहत अविहत जो वरनी ।
देव होत माँनव समुदाई, जीव नारकी किते जनाई ।।१९२
नाना विध के जीव निदाँना, विलसत नानां भोग विधाँना ।
जिह प्रधाँनता सब कोई जानत, वेद-वाद मुनि देव वखाँनत ।।१९३
आठ निकट उपदीप है औरै, जाही के उपजोगी जोरै ।
स्वर्णप्रस्थ आवर्तन रमणक, चंद्रसुक[1] मंदर अरू रमणक ।।१९४
पाँचजंन्य सिंघल वा लंका, सँमज नाम मेटहु हीय-संका ।
वरन्यौ जंबु-दीप बिसतारा, नाँरायन नारद निरधारा ।।१९५

---

१ चंद्रशुक्र ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दोहा

नाँराँयन नारद कह्यौ, नव खंडँन कौ नेम।
पूजा सुमरन मंत्र पुन, जाँनत है जन जेम ।।१६६
पलक्षाद[1] खट दीप पुन, वरनन करत विसेस।
घिरे सँमंदर घेर मै, दीपत सबही देस ।।१६७

छंद पद्धरी

दीपन मै उत्तँम जंबु-दीप, सोहै सुमेर आवृत समीप।
पूरत सु लाख जोजन प्रमाँन, विस्तार ताहि जाँनहु विधाँन ।।१६८
वीत्यौ सु खार सामद्र वार, पुन दीप पलक्षहु जिही पार।
तामै पलक्ष कौ वृक्ष तेम, है दीर्घ सोई आकार हेम ।।१६६
सुत इध्मजिह्व प्रीयवृत सोय, साख्यात अग्न के रूप सोय।
वस रहे जहाँ निस्संक वास, ताहीने अधपति गनहु तास ।।२००
आपने दीप के भाग और, ठहराय दये सुत सात ठौर।
गहि जोग-क्रीया नृप आत्मग्याँन, धारन कीय कारन ईस ध्याँन ।।२०१
सुत सात-खंड मै वसत सोय, इह नाँम ताहि जाँनहु अगोय।
सिव वयस भद्र सातहु सुखेम, अंमृतहू अभय अधपती येम ।।२०२
सात ही नदी निकसत सजोर, अरुणा नृमणा[2] अंगरसी और।
सावंत्री सुप्रभातिका सुद्ध, क्षित्तंभर[3] सत्तंभरा[4] रुद्ध ।।२०३
गिर सात जहाँ ही कहत गोत, इह दीप माँहि दीरघ उदोत।
मनीकूल इंद्रही कूट मंड, पुन इंद्रसेन जाँनहु प्रचंड ।।२०४
जोती-समाँन सोपनं जाँन, हिरनाष्टा पर्बत अत महाँन।
गिर मेघमाल तहँवाँ गहीर, भूरुह[5] की तापै भरी भीर ।।२०५
जल-सपरस नदियन कहत जास, तन मिटत तीनही ताप त्रास।
जहाँ ब्राँमन हंस पतंग जात, वासौ उर्धायन[6] जहाँ वसात ।।२०६
हत्यांग[7] च्यार येऊ वर्न होय, जन तहाँ वसत है खंड जोय।
आयुस सहस्र हायन अखीर, विध वेद त्रई निरवहत वीर ।।२०७

---

१ प्लक्षद्वीप आदि। २ नृम्णा। ३ क्षतंभरा। ४ सतंभरा। ५ वृक्ष। ६ ऊर्ध्वायन। सत्यांग

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सूरज-आराधना करत साथ, श्रीविस्नु-मूर्त पूजा सनाथ।
पाँचही दीप जे पलक्षाद,[1] आयुस बल बुद्धी अप्रमाद ।।२०८
विक्रम सबही कौं अत विचत्र, परभाव वीरीय आतम पवित्र।
आवर्त ईखरस-उदध आप, थिर करी दीप मुरजाद थाप ।।२०९
तिह पार साल्मली-दीप तेम, आवृत मदरादध भरयौ येम।
सालमली वृक्ष जामै समाँन, पूरन पलक्षही के प्रमाँन ।।२१०
रहत है गरूड़ जहाँ पक्षराज, धर जग्यवाहु[2] राजाधिराज।
प्रीयवृत सुतन येऊ प्रचंड, खित प्रजापाल है तिही खंड ।।२११
सात ही पुत्र ताके समाँन, दीय भाग धरा कौं वाँट दाँन।
ताके सुनांम जाँनहु तमाँम, महि-खंड जिते जाहर मुकाँम ।।२१२
सुरोचत[3] सौम सरमनै सोय, अरू देववर्ष[4] जाँनहु अगोय।
पुन पारभद्र याही प्रमाँन, अप्पायन[5]-वर्ष जु जाँन आँन ।।२१३
अतग्याँन[6]-सहित सातहुं अखंड, मिल पर्बत सातहु नदी मंड।
पर्बत संख्या कहि प्रथम पोत, इह खंड करत न्यारे उदोत ।।२१४
सिल्लोचय स्वर[7] अरू सत्यस्रंग,[8] अरू बाँमदेव कुंदहु उतंग।
कोऊमंद[9] पुस्पवर्षहु कहंत, पुन गनहु सहँसस्रुत[10] दध प्रजंत ।।२१५
नदी जहाँ प्रथम अनुमती नाँम, लेखीयै सिनावाली ललाँम।
सरसुती कूह रजनी कहाय, नंदा जल निर्मल जन नहाय ।।२१६
वृहाँमन आद वर्णन विसेस, स्रुतधर वीरजधर धर सुवेस।
विसुंदर[11] ईखूंधर विचार, चल रीत नीत ये वर्न च्यार ।।२१७
सोममय मूरती विस्नू स्याँम, जाही उपासना आठ जाँम।
दध मदरा सौं दुगनौ घृतोद, कुसदीप बीच मै चहूँ कोद ।।२१८
कुसवृक्ष जहाँ करता प्रकास, जाँनीयै प्रभा सौं प्रभा जास।
सुत प्रीयवृत के परम संत, राजा हिरंण्यरेता रहंत ।।२१९
सुत तातहु कौं जिह दई सीम, निःकंटक राज की सात नीम।
अधपती खंड के नाँम येह, वसु वसूदाँन द्रढरूच वसेह ।।२२०
अरू नाभगुप्त जाँनहु अजेव, द्रढ स्तुतवृत अरू नाँमदेव।
विभुक्ती[12] जुतै वासौ वसाय, छित दीप कुसहु मै रहे छाय ।।२२१

१ प्लक्ष आदि। २ यज्ञबाहु। ३ सुरोचन। ४ देववर्षक। ५ आप्यायन। ६ विज्ञात। ७ सरस। ८ शतशृंग। ९ कुमुद। १० सहस्रश्रुति। ११ वसुंधर। १२ विविक्त।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गिर सात सातहू नदी ग्यात, खित-सीमा लेवहु समुज ख्यांत ।
चक्र नग जाँनीयै चतुरसृंग, अरू कपल चित्रकूटक ऊतंग ।।२२२
.देवानिक ऊरधरूमा देख, पुन द्रवन गिरी लहीयै परेख ।
सैवलनी तामै गनहु सात, रसकुल्या मधुकुल्या रहात ।।२२३
जाँनीयै मित्रविंदा जरूर, पुन स्रुतविंदाहू सलल पूर ।
आपगा देवगर्भा जु और, जल वहत घृतच्युता बीच जोर ।।२२४
जाँनीयै मंत्रमालका[1] जेम, आँनंद सहत जन रहत येम ।
विप्रन के जाँनहु च्यार वर्न, अभियुक्त कुसल कोविद उधर्न ।।२२५
जुत कुलक जाँनीयै च्यार जात, परमेस विस्नु पूरन पुजात ।
साख्यात अग्नही के सरूप, आनंदकंद सोभा अनूप ।।२२६
आगै घृतोद के लखहु येम, जिह क्रौंचदीप है नाँम जेम ।
कुसदीपहु सौं दुगनौ कहंत, आवृत खीरोदिक आद-अंत ।।२२७
नग अडग जहाँ है क्रौंच नाम, धरतीय कहावत क्रौंच धाँम ।
प्रीयवृत सुतन घृतप्रष्ट पूर, सोई वास करत नृप-वंस पूर ।।२२८
अंगज भये ताकै सात येम, जिह वाँट खंड दीय सात जेम ।
नाँम सौं पुत्रके खंड नाँम, बोलत है परजा विन विराँम ।।२२९
पुत्र कौं राज दै ग्याँन पाय, श्रीविस्नु-लोक कौं गये सिधाय ।
तिनके पुत्रनके नाँम तौंन, भूपती देस निज वसत भौंन ।।२३०
आँम अरू मधूरुह कहत येम, जाँनीयै मेघहूप्रष्ट[2] जेम ।
सुधामक फेर आजिष्ट सोय, लोहितारनह[3] जाँनौ सुलोय ।।२३१
पुन वनसपती[4] जाँनहु प्रमाँन, पर्वत अरू सलता इह प्रधाँन ।
गिर सुक्र[5] नांम कहीयत गनाय, वैवर्द्धमांन भोजन[6] वसाय ।।२३२
उपवरहन कहोयत गोत्र आँन, जहाँ लेहु नंद-नंदत सुजांन ।
सर्बतोभद्र जाही सहेत, खित नदी सात है सात खेत ।।२३३
अभया रू अमृतओघा[7] जु आद, आरीयका तीर्थवंती अगाध ।
वृतोरूपवती सुक्ला विसेस, अरू पवित्रवती है नद असेस ।।२३४
जहाँ आँमनाद है वर्न जाँन, पय पावत जाही करत पांन ।
जलमय सोइ ईस्वर करत जाप, आराधन साधन मंत्र आप ।।२३५

---

१ मंदमालिका । २ मेघपृष्ठ । ३ लोहितार्ण । ४ वनस्पति । ६ भोजन नामक पर्वत । ७ अमृतोघा ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

आप: पुरुवीर्या: स्थ—पुनंतीर्भूर्भुवः स्वरः ।
तान: पुनीताऽमीवघ्नीः स्पृशतामात्मना भवः ।।

छंद पद्धरी

दध खीरोदक पर साक-देस, बत्तीस-लक्ष जोजन विसेस ।
जिह दीप माँहि तरू साक जाँम, निज साक-दीप तिह कहत नाँम ।।२३६
दध मंडोदक आवर्त-दीप, मेधातिथ प्रीयवृत-सुत महीप ।
दीय सात सुतन कौं सात देस, वरनत तिह आख्या खंड वेस ।।२३७
पुरोजव भृतोजव[1] पवहमाँन, धुम्रानिक चितरथ संनिधाँन ।
वहुरूप विस्वध्रक जहाँ वहोर, ठहराय दये नृप सात ठौर ।।२३८
मरजाद सिलोचय सात मेल, अरू सात नदी अंमृत उभेल ।
ईसाँन सिखर उरुस्रंग येक, बलभद्र रू सतकेसर बसेक ।।२३९
पुन सहँस स्रोत्र कहु देवपाल, महाँसन की विरचत सयल-माल ।
नदीयन मै अनघा सुभग नीर, गँनीयै आयुरदा पुनं गहीर ।।२४०
अरू उभय-सपृष्टी नदी और, जहाँ अपराजित पंचपदी जोर ।
स्रुतीसहँस[2] निजधृती सोत, इह वर्न विप्र आदन उदोत ।।२४१
सतवृत रितुवृत[3] ही विसेस, दाँनुवृत[4] अनुवृत वसत देस ।
भगवाँन वायु की करत भक्ति, जप प्राँनायाँम ही सहित जुक्ति ।।२४२
रज तम कौ लागत नाँहि रंग, सत वाढत जासौं येक संग ।
तन कौं नही व्यापत तीन ताप, जिह हेत करत इह सदाँ जाप ।।२४३

मंत्र:—अन्तः प्रविश्य भूतानि यो बिभर्त्यात्मकेतुभिः अन्तर्यामीश्वरः
साक्षात्पातु नो यद्वशे इदम् ।। इति ।।

छंद पद्धरी

इह साक-दीप सौं दुगन अत्र, पुस्करह-दीप जाँनहु पवित्र ।
सुद्धोदक-दध कै वीच सोय, जहाँ पुस्कर फूले लेहु जोय ।।२४४
छद सिखा अग्न दुति रहे छाय, जगमगत प्रभा जाही जनाय ।
श्रीवृह्माँजू कौ इक सुथाँन, जिह लोकन के करता सुजाँन ।।२४५

---

१ मनः पूर्वज । २ सहस्र स्रोत । ३ ऋतुव्रत । ४ दानव्रत ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गन जहाँ माँनसोतर[1] गिरंद, विसतार अयुत ऊरध विलंद।
दिस च्यार वसे सिर च्यार द्रंग, इंद्रादि आद जाँनहु अभंग ।।२४६
जिह ऊपर सूरज-चाल जाँन, मेर की प्रदक्षन करत माँन।
समंछर[2] चक्र ताही समीह, देवन कौं गनीयत रात दीह ।।२४७
ऊत्तर अरू दछ्छन अथन येम, जाँनीयै प्रमाँनहु काल जेम।
प्रीयवृत्त सुतन परताप पूर, जहाँ वीतहोत्र वासौ जरूर ।।२४८
द्वै पुत्र भये जिनके दुरूह, जिह खंड भाग द्वै करे जूह।
जिह वाँट दये आसन जमाय, रमनक अरू धातकि उभय राय ।।२४६
ह्वै गये सरन हरी वीतहोत्र, प्रथमी सु देय पुत्रन पअोत्र।
परजा सुकर्म जहाँ की पुनीत, इक वृह्मरूप ध्यावत अधीत ।।२५०

मंत्र:—यत्तत्कर्ममयं लिंगं ब्रह्मलिंगं जनोऽर्चयेत्।
एकांतमद्वयं शांतं तस्मै भगवते नमः ।। इति

छंद पद्धरी

सुद्धोदकहू पै पारसीम, नगं लोकालोक निरंधृ[3] नीम।
लोक रू अलोक के मध्य लेख, वट हेत भाग जाँनहु विसेख ।।२५१
मेरू रु माँनसोतर मझार, सोवर्न-भूँम जाँनहु सँवार।
समरूप गनहु दर्पन समाँन, येको न वृक्ष जामै उगाँन ।।२५२
ओसधी जहाँ नही अंन्न आद, माँनवी वसत कोऊ न मृघाद।
देवन कौ वासौ सबही देस, अन[4] प्राँनी कोऊ न जहाँ असेस ।२५३
परवत जो लोकालोक प्रंत, वासौ अलोक-लोकहु वसंत।
लेखत इम लोकालोक नाँम, ध्रुव तीन-लोक विच रच्यौ धाँम ।।२५४
ईस्वर की रचना अत अभूत, विरच्यौ इह पर्बत बाँध ब्यूँत।
जिह सूर-किरन नही पार जात, ध्रुव-आदक जोती धगधगात ।।२५५
इह पार रहत सूरज-उजास, भूगोल लेहु परमाँन भास।
पःचास-कोट जोजन प्रमाँन, नग लोकालोकहु धर निदाँन ।।२५६
चतुरांस इही नग गनहु छोन, कीय रक्षक दिग्गज चहूँ कोन।
दिग्गजहु रिखभ अरु पुस्पदंत, वांमन अपराजित जहाँ वसंत ।।२५७

---

१ मानसोत्तर। २ संवत्सर। ३ सूर्य। ४ अन्य।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सोइ रक्षक है लोकन समस्त, है माया ईस्वर रचत हस्त।
परमेस्वर लोकालोक पास, सोई अष्ट-सिद्धि जुत सावकास ।।२५८
विष्वक्रसेनादिक[1] प्रभू विसेख, परवेष्टत आयुध पुञ्ज पेख।
कल्याँन-अरथ रहि चहूँ कोद, माया निज विरचत पाय मोद ।।२५६
संसार करत पालन समर्थ, आपनी विभूती पाय अर्थ।
इह पर्बत-पार न जाय और, जोग की विना सिद्धी सजोर ।।२६०
श्रीक्रस्न सिखंडी गये साथ, गुरू-पुत्र-हेत सोई प्रगट गाथ।
द्वावाभूमी[2] की करत दौर, भाँनहु भूमत गत साँझ-भौर ।।२६१
पचीस कोट जोजन प्रमाँन, जिह अंतर कौं तुम लेहु जाँन।
प्रापत सूरज ही मध्य पिंड, याही कौं कहीयत नाँम इंड ।।२६२
सो होत अचेतन मृतु-समंध, वैराज पुरखहू रूप विंध।
ये ही प्रवेस करता सु इंड, ताही सौं उचरत मारतंड ।।२६३
उतपत जिनहू की हिरन इंड, ये हिरनगर्भ जाँनहु अखंड।
सूरज कर विदिसा-दिसा संध, पावत सु कालवेता प्रबंध ।।२६४
इनही सौं भ्यासत है अकास, अपवर्ग स्वर्ग नाना अवास।
देवता दैत पंन्नग दिखाय, जढ जंगम जढ जाहर जनाय ।।२६५
सवही के लोचन गनहु सूर, दिष्टा उपदिष्टा निकट दूर।
इनकी उपासना थपी आद, जोग की रीत औरै जपाद ।।२६६
भूमंडल भाख्यो सवै भेव, दँनु माँनव वासी जहाँ देव।
गँनीयत प्रमाँन याही खगोल, पुस्कर की दुस्कर महा पोल ।।२६७
दाँना इक जैसै दोय दाल, भूगोल जितौ खगोल-भाल।
अंतर कौं कहीयत अंतरीक्ष, परकास करत सूरज प्रतक्ष ।।२६८

दोहा

उतराँयन गत मंद अत, दःखन सत्वर दौर।
मोटौ-छोटौ इह मुदै, तमी दिवस कौ तौर ।।२६९
तुला मेख सूरज तुलै, सम सुथाँन दहु संध।
दिवस-रात सम होत दहु, पंडित लखत प्रबंध ।।२७०

---

१ विष्वक्सेनादि आठ सिद्ध। २ द्यावाभूमि।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पाँचहु रास वृषाद पुन, वाढत दिवस वसेख ।
वृश्चकाद छिनदा बढत, द्रगनन लीजै देख ।।२७१

छंद उधोर

श्री सूर उत्तम चाल, वरनत सु बुद्धि विसाल ।
गत सीघ्र मंद गिनंत, मध्यम सु जाँनहु मित ।।२७२
परभाव त्रय परकार, गृहहु के त्रय आगार ।
मध जारईव[1] कौं माँन, सोई कहत मध्य सुथाँन ।।२७३
उतराध ऐरावत्त, प्रथ नाँम है परवृत्त ।
दिक जाँन दख्खन देस, वैस्नाँहनर[2] सुविसेस ।।२७४
सुसथाँन तीन समाँन, पुन वीथीयन परधाँन ।
अस्वनी भरनी और, जाँनीयै क्रतका जोर ।।२७५
निज नाँगवीथी नाँम, धुर कहत है मतिधाँम ।
रोहनी मृगसर रेख, आद्रा सु नखत असेख ।।२७६
वीथी सु गज वाख्याँन, सब कहत है सुग्याँन ।
पुनरवसू पुख्ख परेख, श्लेखा जु जाँनहु सेख ।।२७७
ऐरावती उर आँन, वीथी सु इह वाख्याँन ।
त्रहु वीथीयन गत तेह, उत्तराध मारग येह ।।२७८
नःछ्छत्र मघाहु निरेख, पूर्वा सु फल्गुनी पेख ।
उतरा सु फल्गुनी और, जिह आर्षभी मग जोर ।।२७९
हस्तहू चित्रा होय, गोवीथी स्वातहु गोय ।
पुन विसाखा पहिचाँन, अनुरधा जेष्टा आँन ।।२८०
जारदगृवी[3] इह जाँन, वीथी सु कहत विधाँन ।
मध्यम सु मारग मित्र, परमाँन जोतस-पत्र ।। २८१
पुन मूल नखत परेख, पूर्वाहुषाढा पेख ।
उतराहुषाढा आँन, वीथी सु अज वाखाँन ।।२८२
स्रवनहु धँनेष्टा सिद्ध, सतमिखा नखत सनिद्ध ।
मृघ-वीथका इह माँन, जोतसी जाँनत जाँन ।।२८३

१ जारद्गव (?) । २ वैश्वानर । ३ जारद्गवी ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पूर्वा सु भाद्रपदेह, उत्तराभाद्रपद येह ।
रेवती नखत रहंत, वैस्वानरी वरतंत ।।२८४
इह तीन वीथी ग्राद, दिनकरह मग दिखनाद[1] ।
विच ध्रुवा सूरज वास, रथ बँधी कोटी रास ।।२८५
उतराद मै जुग ग्रौर, ग्रक्ष के वीच ग्रथोर ।
पवना सु बाँधी पास, खैचंत सक्ति खास ।।२८६
रोहँण[2] सु बीच रहंत, गत मंद सूर गहंत ।
जिह वीच मंडल जात, रह जाय छोटी रात ।।२८७
दिन होत वृद्धी दौर, उतराव सूरज ग्रौर ।
दिन जात है दिखनाव, पेरना वायु पसाव ।।२८८
ग्रवसेहनऊ[3] ग्राखंत, परवेस ताही प्रंत ।
रवि चलत वाहर रेख, वढ सीघ्र चाल वसेख ।।२८९
ग्रह[4] होत है लघु येम, तमसनी दीरघ तेम ।
समता सु विखुवत संग, पथ गहत जवही पतंग ।।२९०
सब रात-दिवस समाँन, सम भूत जाहि सुथाँन ।
करकै जु ध्रुवकै कायु, वल पास ग्रौरै बायु ।।२९१
खैगोल-मंडल खीच, विचरंत सूरज वीच ।
ध्रुव वायु छूटत धोर[5], कढजात मंडल कोर ।।२९२
बाहर सु जात विसेस, दिस उतर-दखन दिनेस ।
गत सूर वरनी गैल, सम सर सुमेरू सैल ।।२९३
मँड पूर्व पुरि मघवाँन, ग्रमरावती ग्रस्थाँन ।
जमपुरी दख्खन जोय, संजँमनि नाँमा सोय ।।२९४
पछ्छम सु वरुन प्रधाँम, निश्लोचनी जिह नाँम ।
पुर सोम की पहिचाँन, उत्तर विभावरी ग्राँन ।।२९५
खित वसत भारथ-खंड, मरजाद जोतस मंड ।
रवि उदय कहत सुराह, मघवाँन-नगरी माह ।।२९६
मध्याँन जमपुरी-मध्य, पुरी वरुन साँभ प्रसिद्ध ।
रवि सोमपुरि ग्रधरात, पुरहूतपुरि परभात ।।२९७

१ दक्षिण । २ रोहण=चढाव । ३ ग्रवरोहण । ४ दिन । ५ धारा ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पुरहूतपुरीय पतंग, आवत सु जवही उमंग।
जमपुरी उदय जनाय, वँह जँमपुरी जब आय।।२९८
पुरी परजन परभात, जासौं सु आगै जात।
पुरि सोम होवत प्रात, अमरावती पुन आत।।२९९
सोइ वसत सीस सुमेर, घर देव द्रंगन घेर।
मध्याँन कै सम मित्र, तहाँ वसत दीसत तत्र।।३००
करत सु प्रदक्षन केर, सवताँ नगेस सुमेर।
दिस-विदिस सूरज देव, अह करत फिरत अजेव।।३०१
प्रथमा उदय कौं प्रात, लहि ओट साँझ लखात।
रव उदय अस्तन रूप, भव-कर्म साखी भूप।।३०२
जहाँ लखत उदय जनाय, अनलखै निस अधकाय।
दिन-रात कौ सब दौर, आकास-प्रथवी और।।३०३

दोहा

रवि-मंडल नीचै रहत, जोजन अयुत जहाँह।
सूर चंद की येक सम, रोकत है मग राह[1]।।३०४

छंद पद्धरी

जोजन सहंस-दस बिंब जाँन, सूरज प्रमाँन जाँनहु समान।
बारह-सहंस है चंद्र-बिंब, परकास करत जोती प्रलंब।।३०५
जोजन सहंस-तेरह जरूर, करता आछादन राह क्रूर।
दूर सौं ढकत विधु सूरदेव, अंधार घोर रूपी अजेव।।३०६
जब सूर-चंद सामीप जात, हरिचक्र प्रेर ताही हटात।
जन कहत गृहन ताकौं जनाय, दुति हरन चंद सूरज दिखाय।।३०७
जोजन सहंस-दस तरै जास, विद्याधर चारन सिद्ध वास।
इतने ही अंतर गनहु और, ठहरे पिसाचहू भूत ठौर।।३०८
राक्षसहू जिक्ष जहाँ प्रेतराज, सब येक-रूप गनीयत समाज।
लेखीयै तरै तिह भूरलोक, थित पंखी-गनकै रहत थोक।।३०९

---

१ राहु।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

हंसाद गरुड़ सारस रहंत, अंतर येते पै धरा-अंत।
तिह तरै सात है विवर तेम, जोजन दस-दस कौ वीच जेम ॥३१०
चौड़े अरू लंबे इते चौक, लग अतल-वितल आदक सु लोक।
सुख जहाँ स्वर्ग ही के समाँन, वरतै न जहाँ साँझहु विहाँन ॥३११
दाँनव अरू पंन्नग जहाँ द्रंग, सुख वास बसत आनंद संग।
ऐस्वर्ज सकल विध जहाँ औज, है वापी कूंप तड़ाग हौज ॥३१२
वन उपवन वीथी हित विहार, वाढत सुगंध सीतल-वयार।
तरू तरल सरल मंजरत-माल, मणीवक पर गुंजत भ्रमर-माल ॥३१३
पत्तन मय दाँनव रचत पूर द्रग दीख परत तहाँ निकट दूर।
मिंदर केऊ सुंदर ठये मंड, झुक रहे झरोखन झुंड-झुंड ॥३१४
जगमगत जात नग मनि जहूर, परकास करत चहु-दिसा पूर।
आदीत-किरन विन जहाँ उजास, रगमगत नगन-प्रतिबिंब रास ॥३१५
ओसधी रसाँयन जुत अँनेक, अंन्नाद भक्ष भोजन असेख।
नही जरा मरन व्याधी जनाय, कवहूँ नही व्यापै मरन काय ॥३१६
दुरगंध स्वेद जिनकै न देह, उच्छाह प्रकासी थाँन येह।
श्रीविस्नु सुदर्सन-चक्र सोय, हित आकर्सन परवेस होय ॥३१७
पतनी दैतन की माहि पेट, झरजात गर्भ ताही झपेट।
वाढत नही तातै दैत-वंस, प्रभू देवन के स्याहिक प्रसंस ॥३१८
पुन प्रथम बिंब अत लहि प्रधाँन, जाकौ प्रमाँन इह लेहु जाँन।
मय-सुतन वसत जहाँ बल-मदंध, छिन्नू माया के रचत छंद ॥३१९
साधना-अरथ हितकार सोय, लेकै कोऊ धारन करत लोय।
बलकै बल की सुन लेहु बात, जो मुखा-जंभाई लेत जात ॥३२०
तीय-झुंड प्रगट ह्वै तातकाल, बहू रूपवती मोहनी बाल।
पुश्चली स्वैरनी त्रय प्रकार, काँमनी काँम-हित करत कार ॥३२१
येकंत पुरख कौं पाय येह, दुरबलहू पुष्टी करत देह।
रस हाटक भोजन दै रसाल, वृद्धि काम करत ज्वाला विसाल ॥३२२
नित रमन करत तासौं निसंक, आसन परभासन लाय अंक।
कर-कर कटाक्ष अवलोक नाद, विल्लासी अलापहू विभ्रमाद ॥३२३
मन-तन कौं मोहित करत मंद, बल बाढत बाधा वाढ विंद।
भासत नहि ताकौं सौंज-भोर, ज्याँ-ज्याँ मनोज कौं गाढ जोर ॥३२४

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

होवत वलिष्ट हस्ती हजार, मद-ग्रंध कंध परभाव मार ।
सिध ईस्वर ग्रापै माँन सोय, हीय ग्रहंकार सौं विवस होय ।।३२५
इह प्रथम विवर जाँनहु उदंत, दूसरौ वितल नाँमा वदंत ।
भूतल कै नीचै विवर भाग, सिव ग्राद भवाँनी साँनुराग ।।३२६
वस रहे भोग हित जहाँ वास, पार्षद ग्रनेक जिह ग्रासपास ।
जिस नाँम हाटकेस्वर जपंत, विध स्रष्ट सबै तासौं वढंत ।।३२७
विरचत विहार नाना विधाँन, देवी कौं देवत भोग दाँन ।
बीरज-प्रवाह वाढत वसेस, हल नही हिरन वरना हमेस ।।३२८
हाटकी नाँम है तिही हेत, रँमन सौं भवाँनी गिरत रेत ।
पवन सौं प्रज्वलत ग्रगन पूर, सोइ पाँन करत ताकौं समूर ।।३२९
थूकै सोइ हाटक वनत थाट, केऊ दाँनव लावत काट-काट ।
स्रंगार वनावत त्रीया सोय, हाटक स्ववर्न कौ नाँम होय ।।३३०
वितल कै तरैं है सुतल वास, वीरोचन ग्रंगज वलि निवास ।
प्रीय इंद्र करन कौं मेट पाप, थिर करचौ सुतल में वास थाप ।।३३१
प्रभू ग्राप भये तिह द्वारपाल, कर क्रपा रहत वरसात-काल ।
जहाँ की विभूत वरनी न जाय, वयकूँठपती वासौ वसाय ।।३३२
तर सुतल तलातल विवर त्याँहि, मय त्रपुर पती दनु वसत माँहि ।
सिव जीते ताही त्रपुर साथ, नित वास दयौ तव क्रपानाथ ।।३३३
ग्रतसय मायात्री वसत ग्रौर, जिह ठौर दाँनवन घोर जोर ।
तिह तरैं माहातल विवर तेम, जहाँ वसत नाँगगन वास जेम ।।३३४
येकन-येकन के सिर ग्रनेक, वपु येकन-येकन तै विसेक ।
जिनके प्रधाँन इह नाँम जाँन, पुन कुहक ग्रौर तक्षक प्रमाँन ।।३३५
कालोय सुखेन ग्रतसय करुर, जिह गरुड़पक्षि दुसमन जरूर ।
लैकै कुंटब तिह वसत लाग, सौहिर्दन[1] बंधव साँनुराग ।।३३६
है विवर रसातल तिही हेट, थट रहे दाँनवन थाट-थेट ।
नीवात कवच ग्रादक निदाँन, पुर हिरन निवासी जहाँ प्रधाँन ।।३३७
कालेय नाँम है प्रवल-काय, जहाँ वसे जोर ग्रपनौ जमाय ।
देवन सौं सोइ करत द्वेख, बलसाली जाली ग्रत बिसेख ।।३३८

---

१ सुहृद ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

श्रीविस्नुसंक कौं माँन सोय, करसकै नही अपराध कोय।
पाताल विवर तिह तरैं पेख, वस रहे नागहू जहाँ वसेख ।।३३९
मुख वास वासकी संख माँन, अरू कुलक स्वेत महाँ संख आँन।
धृतराष्ट धनंजय महाधूत, कंबलास्वतर परबल अतूत ।।३४०
देवोपदेह दिकर्ण दूठ, क्रोधी अत उगलत कालकूट।
सिर पंचसप्त फनिधर प्रसंस, सत मस्तक कोऊक फनि सहंस ।।३४१
पाताल मनन[1] की क्रंत पाय, जगमगत जोत द्रग मग जनाय।
नही तिमर जहाँ निस-दिवस नेम, इह विवर वसत है नाग येम ।३४२
इह ठौरहु तैं आगै अनंत, हज्जार तीस जोजन रहंत।
श्रीविस्नु-कला ताँमसी सोय, कर्षणहू ताकौं कहत कोय ।।३४३
लछमन संकर्षन जन्म लेत, हरीकै संग अवतार हेत।
मस्तक सहंस जाही महंत, इक सीस धरी धरनी अनंत ।।३४४
सोहत सोई सर सौं कन समाँन, आधार स्रष्टि बल अप्रमाँन।
करता संघार जग प्रलय-काल, जिनके मुख विख की बढत ज्वाल ।३४५
भ्रूँह के मध्य सौं रुद्र भीम, येकादस प्रगटत बल असीम।
त्रयनेत्र हाथ लीनै त्रसूल, बिकराल ज्वाल माला वधूल ।।३४६
औधकौं पाय जग करत अंत, ऐसे सँमर्थ स्वाँमी अनंत।
वैस्नव-जन वंदत वार-वार, वर्नना करत आसय विचार ।।३४७
श्रीनाग-कुमारी अत-सरूप, आभूषन पहरैं अत-अनूप।
अत सुंदर जाके सकल अंग, राचत सुगंध अनुलेप रंग ।।३४८
आसका चहत नाँही अनंत, सेवा प्रसाद उर अँनुसरंत।
सुखदायक देवन के सदीव, जढ जंगम पालत जगत-जीव ।।३४९
सुर सिद्ध असुर कर उग्र सेव, भक्ती कौ पावत जोग-भेव।
विद्याधर गंधृव मुनि विचार, अस्तूत करत करुना उचार ।।३५०
पारषद करत पूजा पुनीत, कर जोर विवध विध गाय क्रीत।
प्रथमी की जड़ मैं जहाँ पोल, तहाँ वसत अनत सिर धरा तोल ।।३५१
धर रही सकल सोइ स्रष्ट धार, चर-अचर जीव जे खाँन च्यार।
आधार सवन कौ प्रभू अनंत, सेवत हित मुक्ती पर्म संत ।।३५२

---

१ मणियों। २ शेशनाग। ३ संहार।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जोग की जुक्ति वरनी जिनूंह, अग्यांन विनासत बढंत ऊह।
भूगोल कह्यौ खैगोल-भेव, दिस-विदिस ग्यांन हित वृंह्मदेव ।।३५३

दोहा

श्रीनारांयन-वचन सुन, नारद ग्यांन-निधांन।
अरज करी औरहु अवर, जांनन हेत जहांन ।।३५४

सवही इकसे जीव सम, भिन्न-भिन्न कीय भौंन।
ताकौ कारन कहहु तुम, मन की मिटै मलांन ।।३५५

नारांयन नारद कही, विध-जुत सुनकैं वात।
कहन लगे कल्यांन-हित, कथा सहित कुसलात ।।३५६

प्रथक-प्रथक कहै करम पुन, स्नधा प्रथक है सोय।
सुख-दुख भोगत विसम सम, हीय की वंचा होय ।।३५७

सरधा सातुंक होत सुख, राजस सरधा रोर।
तांमस सरधा मूढता, करत सुभाव कठोर ।।३५८

जैसी सरधा होय जुत, जैसी फलै जु जीव।
करता जग विध-विध करम, दाता येक दईव ।।३५९

केऊ विहत अविहत करम, वरनन कीने वेद।
जाही कौ मत जांनकै, नही गहत निर्वेद ।।३६०

विद्या मन मांनी विवध, पथ केऊ करत प्रचार।
करत सुमत-सत सौं करम, अनुचित चित आचार ।।३६१

गत अनेक ताकी गनहु, कहत सुनौ दै कांन।
सुभ करमन अरू असुभ की, गत जुत भाखत ग्यांन ।।३६२

अतल विवर के ऊपरै, दख्खन-दिसा जु दूर।
अगनी ख्याता वसत वँहां, पित्रपती वल पूर ।।३६३

अपने-अपने अंस की, वंस विचारत वात।
करत आस सुभ करम की, जासौं पूजत जात ।।३६४

स्राध समर्पत करत सुभ, दिल सुध आसिख देत।
देत स्राप कुकरम दुरत, पाय खेद गन प्रेत ।।३६५

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

छंद भुजंगी प्रयात

वसै दक्ष नासापती और वासा, तिही ठौर सौं कर्म देखै तमासा ।
जिते जक्त के जोव को उक्त जाँनै, पठै दूत कौं गुप्त आपौ पिछाँनै ।।३६६
पठावै सोई स्वर्ग पुन्यातमा कौं, जतायौ सबै रीत सौं भेद जाकौ ।
पठावै केऊ नर्क कौं जीव पापो, करै न्याव सौं भूल नाही कदापी ।।३६७
धरै दंड कौं ईस की धारना सौं, करै भाव कौं भाव की कारना सौं ।
करै कर्म जैसौ सरै दंड काला, जनावै जही दोष की रोष ज्वाला ।।३६८
वसै काज वाही जहाँ तत्व-वेता, सबै आपही आप सौं सावचेता ।
जिही कुर्कु भेजे जहाँ लेय जावै, दीयै दंडहू चंड आदेस दावै ।।३६९
जिही नर्क के ठौर दें हौं जनाई, विधाता अधर्मीन काजै बनाई ।
उचारै केऊ नर्क है येक वीसा, अठाईस केऊ गनावै अनोसा ।।३७०
उभै रीत सौं जाँन लीजै अगाधा, बसावै अधर्मीन कौं लेख बाधा ।
इकै अंधता मिस्रता मिस्र औरै, महाँ रोरवा रोरवाहू मरोरै ।।३७१
कुँभोपाक औ कालसूत्रं कुरूपा, असीपत्र आरण्यहू अंधकूपा ।
मुखा सूकरा मै क्रमीहू मिलाई, डसै डंसहू मंस जासौं डराई ।।३७२
कसै मूरती तप्त औ लाग काँटा, उगाहै तरू सालमली वाढ आँटा ।
नदी वैतरंन्नी दुखारी लँघावै, दगावाज पूयोद माँही डुबावै ।।३७३
करै प्राँन कौं रोध विसमन्त काया, ललाभक्ष औ सारमेयाद लाया ।
अयापाँन है आरवीनर्क औरै, जहाँ है रखी गंन्न भोजंन्न जोरै ।।३७४
तथा खारहू कर्दमा है तहाँही, सूलो-प्रति औ दंदसूका समाँही ।
विटं है अधारा अपर्जा वृतंनं, कहै और सूचीमुखाहू कथंनं ।।३७५
वखाँनै इहै नर्कहू आठ-वीसा, इही घाट बाधं कहै कोइ कोसा ।
जनावै कथा-वीच विस्तार जाकौं, पठावै जहाँ ईस पापी प्रजा कौं ।।३७६
इहै मूल कर्मं लखौ वात येती, सिधावै केऊ नर्क मै पाप सेती ।
परायौ हरै वित्त औ नार प्रारी, गृहै पुत्र भूजाय आपौ गवारी ।।३७७
रचै दंड जापै इही धर्म राजा, करै ताड़ना रीत नाना अकाजा ।
मुरछ्छा गहै मारही सौं मिलोता, गिरै मिस्रहू नर्क मै खाय गोता ।।३७८
करै और की नार सौं भोग कोऊ, दगावाज पत्नी-पती भूल दोऊ ।
मुकाँमं पठै अंधता मिस्र माही, केऊ दुःख भोगै महाँकल्प त्याँही ।।३७९

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

फटै सीस जाकौ उभै-आँख फूटै, केऊ काल लौं किंकरा मृत्यु कूटै ।
जथाँ नाँम ताही तथाँ नर्क जाँनौ, करै पाप के ताप सौं जीव काँनौ ।।३८०
परायौ गहै वित्त जो पारपंथी, घुलै आततार्ई हीयैं लोभ-ग्रंथी ।
दीयै और कौं भीत आपौ दिखावै, कुटंबीन कौं पोख नीकौ कहावै ।।३८१
प्रचारै महामोह हू सौं प्रपंचा, विचारै न कल्याँन कौ हेत वंचा ।
गिरै रोरवं नर्क मैं सौ अग्याँनी, हजाराँ वसै जाहि मैं लेलहानी ।।३८२
डसै फूंक सौ ऊक ज्वाला डराई, चहूँ ओर सौं क्रूर रूरू चलाई ।
पसू मारकै मास खावै पकावै, दया कौं तजै जीभ के स्वाद दावै ।।३८३
घलै किंकरा धर्मराजाँन घेरा, दिरावै कुंभीपाक मैं दुष्ट डेरा ।
तिही मैं भरे तेल के कुंड ताते, जँहो पै जलै ऊबलै जीव जाते ।।३८४
सँघारै पसू रोम की जोर संख्या, खवावै तिते वर्ष लौं घोर खंख्या ।
करै जो पिता-मात सौं द्रोह कोऊ, सबै रीत सौं दुःख जाँनौ सकोऊ ।।३८५
सोई नर्क-वासौ वसै काल-सूत्रा, कसै अग्न ताती सरीरं कुपूत्रा ।
सिरावै नही कल्प लौ जीव सोई, खुधा औ पिपासा भरै जन्म खोई ।।३८६
कोऊ पंथ पाखंड चालै कुगाँमी, सँबोधै अग्याँनी वनै आप स्वाँमी ।
असीपत्र आरंण्य मैं जाय ऊभै, चलावै तहाँ पाव मैं धार चूभै ।।३८७
तरू-पत्र जामै परे धार तीखा, वहै वार ही वार आसार वीखा ।
करै किंकरा मार दंडा क्रतंता, हलै सब्द ऊचारकै हाय हंता ।।३८८
घने थाकने पै तही पै घसीटै, परै अद्ध ऊद्धं तऊ दुष्ट पीटै ।
इही नर्क कौ नाँहि नै आद-अंता, भयंकार हंकार पापी भरंता ।।३८९
कोऊ होय राजा तथा राज-काँमी, सँतावै प्रजा कौं विना न्याय स्वाँमी ।
मृजादा मिटावै गरू विप्र मोटी, खिती पै प्रचारै कोऊ वात खोटी ।।३९०
मुखा सूकरा नर्क मै वास मंडै, खलै तेल के जंत्र ज्याँ देह खंडै ।
फिरै तामही वार ही वार फेरा, घुटै जास ही ना उठै लाग घेरा ।।३९१
केऊ वीच ह्वै चूर्न संपूर्न काया, महाँ ईस की देखीयै घोर माया ।
मदाभीरु उत्कून जूंका जु मारै, वहै जीवनं देह दूजी अधारै ।।३९२
करी ईस निरवाँनहू जाहि काया, दुखीहू भये पै तजै सोय दाया ।
करै वास जो नर्क मै अंधकूपा, वसै जंतु जामै अनेकं विरूपा ।।३९३
केऊ सर्प वीछू जिनै डंस काटै, घनी खटपदी और उद्दंस घाटै ।
महाभीरु चैटंत रोलंव मख्खी, भरैं कर्नकीटी पदं माँस-भख्खी ।।३९४

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जोई अंन्न खावै विना पाँच जग्यं, अधौ खै क्रमी कुंड मै सोय अग्यं ।
क्रमी दाटकै-चाटकै दुष्ट काया, रमै छादवी फाटकै मंस राया ।।३९५
करै स्वर्न-चोरी विना आप्त काला, जरावै अयं पिंड सौं आग ज्वाला ।
अगंम्पार मै पुर्ख नारी उभै सो, चपेटै सथूना तपाई चुभै सो ।।३९६
नही होन देवै कहूँ हाथ न्यारे, भरै येक ही साथ मै वाथ भारे ।
चड़े दुःख सौं कूक पारै वहारै, त्युही दंड सौं किंकरा मृतु तारै ।।३९७
पसू जात नारी करै भोग पापी, मिटावै महाँ काँम वाधा मिलापी ।
तरू साल्मली पै चढावै तही कौं, जटे कंटकं लोह ताते जँही कौं ।।३९८
चढै-ऊतरै वार-वारं छिनंगी, तपावै घसीटै जहो ठौर तंगी ।
महाँवेदना छेदना सौं मरोरं, करै दीन वाँनी डराँनी करोरै ।।३९९
वनै भूप कोऊक पाखंडवर्ती, अरू राज-मंत्री भरै सो अनर्थी ।
नदी वैत्रनी माँज सोई नहावै, विचै मूत्र विष्टान लोहू वहावै ।।४००
संभोगं करै विप्र जो नार सूद्री, वसावै तथा ग्रेह मै वुद्धि क्षुद्री ।
करै सुच्च आचार कौं नष्ट काँमी, हथै नेम निर्लाज सोई हराँमी ।।४०१
सोई वैत्रनी धार माँही समावै, खखारं सोई मूत्र विष्टा जु खावै ।
तथा विप्र छत्रीन औ वैस तेऊ, गधा औ कुता पालकै वीच ग्रेऊ ।।४०२
खिलै जो सिकारं पसू मार खावै, वसै नर्क जाही निसाँना वनावै ।
जमराज के वीर तीरं जमावै, जवै और ठौरै कहाँ भाग जावै ।।४०३
छिदै भाल तीखी भिदै जाहि छाती, घलै वार ही वार आसार घाती ।
इही काँम कौ जाँनीयै दंड ऐसौ, कमाई भरोसै भरै सोक रैसौ ।।४०४
करै दंभ सौ जिग्य मारै पसू कौं, वितर्न दई विप्र लेवै वसू कौं ।
परै नर्क वैसस्य मै सोय प्राँनी, अयं मुद्गरं डंड पावै अग्याँनी ।।४०५
करै काँमनी सौं जबै काँम-क्रीड़ा, वनै निष्टुरं त्याग आचार व्रीड़ा ।
पलोटै मुखा काँमही कौं पीवावै, जोई नर्क मै काँम के कुंड जावै ।।४०६
पीयै काँम सोई महाँ घोर पापी, सहै वेदना अंग केऊ सँतापी ।
दगावाज यो ग्राम मै आग देवै, लुटेरा वनै और कौ वित्त लेवै ।।४०७
सोई सारमेयादनं नर्क साधै, वहाँ पिंड कौं स्वाँन काटै असाधै ।
महाँ वेदना सौं कही अंग मोरै, तहाँ मृत्यु के किंकरा हाड़ तोरै ।।४०८
भरै झूट साखी कोऊ पाप-भंडा, दियै मृत्यु के किंकरा सार डंडा ।
अवीचाख्य जो नर्क सृंगा उतंगा, उतारै-चढावै-गुड़ावै अलंगा ।।४०९

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पुनीतं त्रवनं सुधा सोम पेई, तजै धर्म हाला पोयै जाँन तेई ।
सोई नारकी घोर माँही समावै, पियालै तही लोह तातौ पीयावै ।।४१०

करै ग्याँन कौ माँन विद्याक हाँनी, गनै आपकौं श्रेष्ट औरें अग्याँनी ।
वसै क्षार-कर्दम माही वसेरा, घलै जातना भोग-भोगै घनेरा ।।४११

बलीदाँन देवै पसू माँनवी कौं, भवाँनी तथा भैरवा भैरबी कौं ।
पुरी प्रेत की प्रेत सोई पहूँचै, लगै आय पासै जँहो प्रेत लूँचै ।।४१२

खिलै ताल दै-दै जिही माँस खावै, गहै आँत ताँतै ज्युँही गीत गावै ।
विना कोय अप्राध प्राँनी विनासै, गृहै सस्त्र सौं बाँध सूली गृहासै ।।४१३

तपै नारकी प्राँत मै आतताई, विधै लोह के कंटकं सौं विधाई ।
छिदै माँस अग्नेय की चिछ छूटै, घनी उज्जली चिल्ल औ गृद्ध घूटै ।।४१४

भखै स्वाँन सृगालहू माँस भेजा, कढै काकहू आँख फारै करेजा ।
करै आप के पाप कौं याद कर्मा, छिकै ठौरही ठौर सौं रोम चर्मा ।।४१५

करै क्रूर स्वाभाव सौं रोख कोई, डरावै घने दीन सौं होय द्रोही ।
सोई नर्क-वासौ वसै दंदसूकं, फसै तै डसै ज्वाल-सी मार फूकं ।।४१६

धकेलै कोऊ कूँप मै मार धक्का, रखै किंदरा मै कोऊ जीव रुक्का ।
वसै अंधही कूँप मै सोय वासा, असंगी प्रसंगीन सौं ह्वै उदासा ।।४१७

अमर्ष करै द्वार आतिथ्य आँयै, जथा-जोग सौं भोग नाँही जिमाऐ ।
परै नर्क माही सोई क्रूर प्राँनी, करै खंख काया जँही अंख काँनी ।।४१८

करै दर्ब कौ गर्ब काजै कँमाई, त्रसै दोन कौं सीस डारै तवाई ।
दुखी देखकै नां कहूँ दाँन देवै, सोई जीव सूची मुखा नर्क सेवै ।।४१९

गनाये इते नर्क औ नर्क-गाँमी, महाँ पाप पापीन थप्पे मुकाँमी ।
कुकर्म करै जाँनकै जीव काँनौ, सबै रीत सौं ताहि जाँनौ सयाँनौ ।।४२०

दोहा

दुरत-करम सौं नरक-दिस, जावत जीव जरूर ।
आराधन श्रीईस्वरी, दोष गमावत दूर ।।४२१

जाही कौ अनुक्रम जुतै, वरनत कर विस्तार ।
साधन आराधन सुलभ, सुखदायक संसार ।।४२२

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

छंद द्वै-अख्खरी

पूजै देवी निस-दिन प्राँनी, मिटै दुरत-कृत पाप मलाँनी ।
वरनत मै ताकौ विसतारा, सुनीयै हित नारद संसारा ।।४२३
प्रथम दिवस प्रतीपदा पुनीता, पूजन घृत सौं करै प्रवीता ।
करै वरत सुद्धी-जुत काया, अथवा विप्र देय वृत आया ।।४२४
मिटै रोग ताके तन माँही, रुज ही कटै नही दुःख रहाँही ।
दूज सरकरा पूज सो दीजै, लाग पाय दुज आसिष लीजै ।।४२५
दीरघ आयुस दीयै जु देवी, सुखदायक जीवन कौं सेवी ।
त्रतीया पय पूजै ताहो सौं, विप्र दाँन दीजै वाही सौं ।।४२६
देवी प्रस्न होय छूटै दुख, संपत बढै और नाना सुख ।
पुवा चौथ देवै अरु पूजै, वहै विघन सौं नहिन अरूझै ।।४२७
कँदली-फल पंचम सिवकाई, विप्र देय वाढै निपुनाई ।
मधु षष्टी पूजै द्वज माँनै, होय कांतीजुत दुख की हाँनै ।।४२८
सातम गुड़ देवी संतोखै, त्रसै सोक विप्रन कौं तोखै ।
अष्टम दिन नरीयर आराधै, अर्पत दुज अव मिटै उपाधै ।।४२९
लाँवी नवमी पूजन लावै, जाही विध सौं विप्र जिमावै ।
देवी उभय-लोक सुखदाता, माँन पाँन राखै जग-माता ।।४३०
दसमी दिन पूजै जो देवी, काले तिल सौं रहै न केवी ।
दाँन करै विप्रन सुखदावै, जम की त्रास मिटै अघ जावै ।।४३१
श्रीअंबा येकादसि सेवै, दसं सौं विप्र दाँन ही देवै ।
पुन देवी के होय पियारा, सकती लोक लहै सुखसारा ।।४३२
चूरा द्वादसी पूज चढावै, विप्र देय संतती बढावै ।
चतुरदसी नैंवेदै सतुवा, करै दाँन सिव ह्वै कृत-कृतवा ।।४३३
पूरनमासी खीर पकावै, श्रीअंबा नैइबेद चढावै ।
अँमावसी इम ही आराधै, सबही पुनीत साधना साधै ।।४३४
मिटै अमंगल फलै मनोरथ, तहाँ-तहाँ वरनी पूजा तिथ ।
होम करै इधकौ सुख हेतू, सागर भव माँही सुख सेतू ।।४३५
सूरजवार खीर सौं सेवै, दूध चंद्र नैइवेद जु देवै ।
केला मंगल बुध नैनूँ कर, वृसपत लाल खाँड जाँनहु वर ।।४३६

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सुक्र ऊजली सक्कर सेती, सनीवार कौं घृत-रस हेती ।
वरत करै देवै ब्रांमन कौं, सेव प्रसाद जगत स्वांमन कौं ।।४३७
जीवन भुगत मुगत-पद जावै, नारांयन नारद समुजावै ।
सत्ताईस नखत की सेवा, भाखत श्रीनारांयन भेवा ।।४३८
अस्वनी घृत भरनी तिल येऊ, कृतका मैं सरकरा करेऊ ।
दध रोहिन नखत्र मैं देवै, मृगसर दूध मलाई मेवै ।।४३९
आद्रा दूध मलाई आछै, पुनर्वसू लडुवा दै पाछै ।
पुख्ख तार फैनी कौं परूसै, सक्कर कौं अश्लेषा सरसै ।।४४०
मघा नखत मै पापर मेलै, पूर्वा फाल्गुनि कसरा पेलै ।
ऊतरा फाल्गुनि घेवर येहू, हस्त नखत मै वटुका देहू ।।४४१
चित्रा मांझ खजूरा चावै, स्वात-नखत रस पूर्न सुहावै ।
मधू विसाखा मै पुन मेलै, अनुराधा मै सूरन येलै ।।४४२
जेष्टा मै गुड़ ऐंसै जाँनौ, मूल नखत मै चूरा मानौ ।
पूर्वाषाड़ा मुनका पूरा, षाड़ा ऊतरा नखत खजूरा ।।४४३
सरवन रसहु धनेष्टा चारक, सत ताकी पुवा सु विचारक ।
पूर्वा भाद्रपदा नैंनूँ पुन, उत्रा भाद्रपदा मोदक अन ।।४४४
मातु-लिंग है रेवति मांही, अंबा-पूजन इह अवगाँही ।
जोग सताइस है इम जाँनौ, महा प्रसाद नाम अनुमाँनौ ।।४४५
गुड़ मधु घृत पय दध कौं गहीयै, तक्र पूप नैनू लै तँहीयै ।
ककड़ी कुमड़ा लडुआ कटहर, केलाफल जाँमुन आँमन कर ।।४४६
तिल नारंगी दाड़म तैसै, वेर आँवला खीरहु वैसैं ।
चूरा चना रू नरीयर चाहै, ऐसै जाँम-फला अवगाहै ।।४४७
सुभग कसेरू जैसै सूरन, पूजै देवी विध परपूरन ।
जोग अगारी करन जनावत, गनती एकादसहु गनावत ।।४४८
प्रथम कसार पूजना करीयै, अरू मंडक फैनी अनुसरीयै ।
मोदक वट-पत्रन कौं मेलै, लडुवा घेवर तिल कौं लेलै ।।४४९
दध घृत मधु नैइबेद दिवावै, पूजन सौं देवी सुख पावै ।
देवी पूज विप्र दत देवै, लाभ सु जन मन-वंचत लेवै ।।४५०
पूजन और विधाँन प्रकासत, भाँन ग्याँनमय-जीय-हीय भ्यासत ।
चैत सुक्ल त्रतीया हित चित सौं, महुवा पूजन करीयै मति सौं ।।४५१

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सब मासन मैं इह विध सेवै, देवी मन-वंचत फल देवै ।
गुड़ वैसाख जेठ मधु गहीयें, पुन असाड़ मैं नेनूँ पईयै ।।४५२
सावन दध भादव सरकरा, आसुन मास खीर अनुसरा ।
फिर कातिक पय अगहन फनी, दुज कौं पूजा करकें देंनी ।।४५३
पूस मास दध कूर्चका पाई, माघ गऊ-घृत और मलाई ।
फागुन मैं नरीयर के फल कौं, वारह मास कही इह बल कौं ।।४५४
नाम अनुक्रम है इह निरनौ, वारह मास पूज मैं वरनौ ।
नाँम मंगला वैस्नवि निर्मल, माया काल निसा मेटत मल ।।४५५
महा दुरतया पुन महामाया, मातंगी कालीय मिलाया ।
कमलवासनी सिवा कहावै, ध्याँन सहँस चरना कौ ध्यावै ।।४५६
सर्वमंगला-रूपनि सेवा, भलीभाँत भाखत इह भेवा ।
द्वादस नाँम रूप सुख-दाता, महमा जाँन लेहु जग-माता ।।४५७
कर पूजा सतोत्र पुन करीयै, नाँम धेय सुमरन निस्तरीयै ।
पंकज-नेत्रा मात पुनीता, जगधात्री केऊ दुष्टन-जीता ।।४५८
माहेस्वरी ईस्वरी माया, देवी महाँ सुजन सुखदाया ।
महाँ मंगला मूरति माँनी, भय पर माया हरन भुमाँनी ।।४५९
पर मारग दायन परमेसी, उतपत परजा करन असेसी ।
परंब्रह्म-रूपा परमातम, अखल-जगत जीवन की आतम ।।४६०
महोनता[1] मनसिनी[2] मदमाती, धेया मुनिजन ध्याँन धराती ।
मारतंड सहचारनी माँनत, जगतंबा लोकेस्वरी जाँनत ।।४६१
प्रलयांबुद संनिभा प्रमाँनी, करन सदा मंगल कल्याँनी ।
पूजन दाँनव देव प्रचारत, श्रीअंबा कौ नाँम सँभारत ।।४६२
महाँमोह-हरनी माहामाया, जम-भगनी आद्या जगजाया ।
नमो-नमो दायक निर्वांनी, सुरन-समाज मुनी रिखी माँनी ।।४६३
महाँमंत्र गंम्या उर माँही, जन सुमरत मेटत दुख ज्याँही ।
कैथा नीब आँब्र तरू काँही, बट बेरी निज वास वसाही ।।४६४
पढ सतोत्र देवी कर पूजन, सुख पावै त्रय-वरन सहू जन ।
वरत करत मणीदीप वसावै, जाके जनम मरन मिट जावै ।।४६५

———

१ महोन्नता । २ मनस्विनी ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बुधसिंह चारण रचित

देवीचरित

द्वितीय भाग

नवम-स्कंध

श्री गँणेसजीया नमः श्रीदेवी-चरत्रे भासा नवमौ स्कंध प्रारंभ—

दोहा

नारांयन नारद कहत, प्रक्रत पाँच प्रकार ।
वरनत स्रष्ट विधाँन सौं, नाँम सुनहु निरधार ।।१
दुरगा राधा इंदरा, महाँ सरस्वती माँन ।
सावंत्री जाँनत सकल, वेता स्रष्ट विधाँन ।।२
कही धरम जैसी कथा, मोही सौं निज मत्त ।
गुन उतपत पूजा गहन, चित सुध काज चिरत्त ।।३
प्रः प्रकृष्ट वाची प्रथम, क्रती इह सृष्ट कहंत ।
सृष्ट प्रक्रष्टा समुभीयें, सव्द विचारहु संत ।।४
अग्रेस्वर देवी वँही, प्रक्रत नाँम पुनीत ।
अखल जगत की ईस्वरी, परगट लखहु प्रतीत ।।५
प्रः प्रक्रष्ट सतगुन प्रतै, क्रः रजगुन कहीयंत ।
तँम-गुन ती जाँनहु तँही, त्रयगुन प्रक्रती तंत ।।६
त्रयगुन धारन करत तव, सृष्ट रचत है सोय ।
प्रक्रत कहत परधाँन प्रत, जाँनहु प्रक्रत जोय ।।७
प्रः सव्द है वाची प्रथम, क्रः ती सृष्ट के काज ।
विद्यमाँन प्रथम ही विसव, सोइ प्रक्रत सिरताज ।।८

छंद पद्धरी

वरनत अव देवी सव विधाँन, प्रक्रती रूप माया प्रधाँन ।
जोग सौं परम आतम जिकोय, सृष्टी-विधाँन के हेत सोय ।।९

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

रचना नारीस्वर वने रूप, जोइ अरधनार अरु पुरख जूप ।
श्रीक्रस्नचंद्र है पुरख सोय, जिह वाँम-अंग प्रक्रती जोय ।।१०
श्रीरूप गनहु प्रक्रती-संग, वृंह्म कौ रूप जामैं न विंग ।
अग्नि के सग जिम दाह येक, विव होय नही जाँनहु बिवेक ।।११
यातै जोगी जन-हित ऊधार, नर रूप-भेद जाँनत न नार ।
इक वृह्म-रूप माँनत अखंड, परकास करत वृहमंड पिंड ।।१२
परमातम अग्या क्रस्न पाय, ईस्वरी मूल प्रक्रती आय ।
उतपत्त पाँच परकार येह, निरमाँन भई सोई निसंदेह ।।१३
भक्तन के ऊपर भक्त भाय, माता गँनेस की महँमाय ।
सिव की सोई प्यारी भई सक्ति, जो दुरगा नाँमी मात जक्ति ।।१४
विस्नू की माया अत वलिष्ट, सोइ वृह्मरूपनी मत सपष्ट ।
वृहमाद देव मनु राज-वंस, पूजन कौं लागे मति प्रसंस ।।१५
सिव-रूप सनातनि प्रजा-साथ, निरवाह करन अंन्नाथनाथ ।
धर्म की धारना पुंन्य धाँम, जस-मंगलदाता आठ जाँम ।।१६
सुख मोख हरख-दायक सदीव, जातना मिटावन भक्त जीव ।
सरनागत वछ्छल सावकास, दीनन कौं निवहत जाँन दास ।।१७
तेज की अधिष्टात्री त्युहीज, बर्जंत विषाद विध सृष्ट-बीज ।
सक्ती-स्वरूप सिद्धी समूह, अंतह परकासक ग्याँन ऊह ।।१८
ईस्वरी सिद्ध बुद्धी अनाद, पिपासा छुधा छाया प्रमाद ।
अलसई दया निंद्रा अनूप, सहनता जात सुंमृति-सरूप ।।१९
इछ्या अरु सांती भ्रांत और, थित राजत माया ठौर-ठौर ।
चेतना तुष्ट पुष्टी जु छाहि, धारना सक्ति सोभा धराहि ।।२०
लक्षमी वंदना करत लोय, श्रीक्रस्नचंद्र की सक्ति सोय ।
पाँचमै आद दुर्गा पुनीत, प्यारी सिव सिव सौं पर्म प्रोत ।।२१
अवतार लक्षमी सुनहु येह, सुध सतगुन-रूपी निसंदेह ।
श्रीक्रस्नचंद्र संपत-सरूप, अरु परमेस्वर सक्ती अनूप ।।२२
ताहि की अधिष्टात्री जु तेम, निग्रह इंद्री कौं करन नेम ।
सांता-सुभाव कांता-समान, सुसीला सर्वमंगला स्याँम ।।२३
रुज काँम लोभ अरू मोह रोख, मद अहंकार सौं सदा मोख ।
अनुरक्त भक्त-जन सौं उदार, पति क्रस्नचंद्र सौं पर्म प्यार ।।२४

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पतिवृता सबन स्त्रीय की प्रवेक, अच्युता प्राँन के तुल्य[1] येक ।
प्राँनेस प्रेम की पात्र पोत, अत करता प्रीय आसय उदोत ।।२५
सब धान्य-रूपनी संग स्याँम, लक्षमी महाँ सोभा ललाँम ।
वयकूंठ मही जिह सदाँ वास, नित स्वर्ग-स्वर्ग लछ्छी निवास ।।२६
भज राज-लक्षमी राज-भौंन, माँनव गृह लछ्छी ग्रेह मौंन ।
सब वस्तु माँहि सोभा सरूप, पुनवाँन पुरस मै प्रति रूप ।।२७
वाँनज्य-रूपनी जात वैस, हैं कलह-रूप पापिन हमेस ।
द्रढ दया रूपनी दीन दास, पावन प्रवीन करता प्रकास ।।२८
वंदना करन पूजा विधाँन, लक्षमी चरित इह विध निदाँन ।
उतपत्त लक्षमी कही आद, माँनीयै जगत-रूपी मृजाद ।।२९
सरस्वती सुनहु उतपत्त साच, विद्या रु ग्याँन कौं रचत वाच ।
श्रीक्रस्नचंद्र बुद्धी-सरूप, उर अधिष्टाँन देवी अनूप ।।३०
कविता प्रतिभा मेधा कहंत, सुमृती दैन वाली सुमंत ।
नाना प्रकार सिद्धंत न्याय, भेद कौं खोल भासंत भाय ।।३१
बाख्याकी बोधक सोइ वात, संदेह भंज रंजन सुहात ।
करनीय विचारन ग्रंथकार, स्वर सप्त गाँन संधाँन सार ।।३२
पुन विसय ग्याँन वाँनी प्रभाव, सृष्ट की मूल जीवन सुभाव ।
अनुवाद वाद अपवाद आद, परमत्त तत्त हंता प्रमाद ।।३३
पुस्तक अरु वींना ग्रहन पाँन, स्वांता सुभाव सीला-समाँन ।
भीनी सतगुन सौं ग्याँन भाय, सम कमल स्वेत आभा सुभाय ।।३४
चंद्रमा कुंद-सम कुमद चीर, पुन स्वेत विलेपन तन पटीर ।
कर स्वेत रतन-माला करंत, जय क्रस्न-क्रस्नहू कौं जपंत ।।३५
जिह विना जाँनीयै विप्र-जात, गूंगा जिम अंधा मृतक गात ।
तप कौ फल पावत तपी तपाय, सरसुती अराधन जग-सहाय ।।३६
धुर सावंत्री चौथी सुधाँम, निज गायत्री है जिही नाँम ।
वेद है च्यारहू च्यार वर्न, भज सध्यावंदन मंत्र भर्न ।।३७
माता तंत्रन की तिही माँन, खत्री विप्रन की धर्म-खाँन ।
जप रूप तपस्वनी तेज जोत, अभिसंसकार-रूपी उदोत ।।३८

---

१ मू. प्र. त्युल ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अतसय पवित्र सोई वृह्म ओक, सुस्थाँन निवासनी विगत सोक ।
नित वेदगर्भ प्यारी निदाँन, परसन जिह तीरथ चहत पाँन ।।३९
सुध फटक-मनी सम तिह सरीर, निर्मल सुभाव जिम गंग-नीर ।
रमतीत पर्म आनंद-रूप, उल्लास हास सतगुन अनूप ।।४०
परवृह्म सनातनि प्रेम-पूर, दोख सौं सदाँ सोइ रहत दूर ।
पद मोक्ष दैन सौं पर्मप्रीत, तेजोमय कारन गुनातीत ।।४१
जीव की अधिष्टाता जरूर, देवता दोष सौं रहत दूर ।
पाय की धूर चाहत पवित्र, जग चरत करत है तत्र-जत्र ।।४२

दोहा

प्यारी राधा पाँचमी, क्रस्नचंद्र अनुकूल ।
पंच सोइ प्राँनाँधि पुन, माया देवी मूल ।।४३

छंद भुजंगीप्रयात

वही क्रस्न की है सदाँ वाँम-अंगी, रमै क्रस्न के संग मै प्रीत रंगी ।
सोई सुंदरी कंद आनंद सोहै, मती क्रस्न की नेह के फंद मोहै ।।४४
जुतै गोरवं और सोभाग्य-जुक्ता, मुखा पाँन बीरी गलै-हार-मुक्ता ।
सदाँ क्रस्न की अर्ध अंगी समाँना, प्रभा दिव्य सोवर्न-वेली समाँना ।।४५
करै क्रस्न के संग ही रास-क्रीडा, सोई अभ्र औ दामनी ज्यूं सनीड़ा ।
सुखी रास के वास जाही सुथाँना, जिही रास के मंडलं मंड जाँना ।।४६
गऊ-लोक अग्रेस्वरी गोपका मै, प्रकासै प्रकासं विहारं प्रभा मै ।
हृदै हर्ष संतोष औ मंदहासी, रजै कोकला-कंठ आँनंद-रासी ।।४७
निराकार निर्लेप आकार न्यारी, मनोहार साकार रीझै मुरारी ।
रहै नाँहि जामै न हंकार रेहा, सदाँ आपने भक्त सांता सनेहा ।।४८
सुरंद्रादि देखी नही ध्याँन सेती, करी धारना ध्याँन वृंह्माद केती ।
जरै अग्न मै डारनै सौं न जोई, सजै भीन आछाद पौसाख सोई ।।५९
अलंकार नाना वनै दिव्य-अंगा, प्रभा चंद्रमा कोट दीपै पतंगा ।
हरी-भक्त कौं संपदा देन हारी, दया-जुक्त वृषभाँन ही की दुलारी ।।५०
मही औतरी कल्प वाराह माँही, जमी वीच वृंदावनं है जहाँही ।
पदं पंकजं कीन ताहि प्रवीता, जंही संत वंदै वही जन्म जीता ।।५१

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सोई क्रस्न के संग देखी सबैही, वृजं-मंडलं वास कीनौ जबैही।
विराजी सदाँ क्रस्न के हीय वीचै, सनेहं सुधाधार आँनंद सींचै ।।५२
इही राधका पाँचमी सक्ति आदू, परा-रूप जामै नवादं प्रमादू ।
प्रती विश्व मै स्त्रीय जेती प्रनाली, वयं-जोवनं सोभनं वृद्ध-वाली ।।५३
कोऊ प्रक्रती अंस कोऊ कला है, छती अंस कोऊ कला की छला है।
दिपै देवीयाँ पाँच जो आद दुर्गा, विसेसं इही जाँनीयै आद वर्गा ।।५४
तेई पूर्न अवतार है प्रक्रती कौ, गनै उत्पती औ मती सौं गती कौं।
केऊ अंस परधाँन पुरखं कहाई, सोऊ जक्त की सक्ति जाँनौ सहाई ।।५५
गती दैन कौं प्रवती मात गंगा, तेई ऊतरी तोय-रूपी तरंगा।
उपज्जी सोई विस्नु के अंग ही सौं, सु सोभा नदी नाल के संग ही सौं ।।५६
अघी के अघी जारनै ईंधना कौं, बहिर्जोत-रूपी कटै बंधना कौं।
सुखं पूर्वकं स्नाँन कीनै सपरसं, करै मोक्ष कोटाबधीहू कुपुर्सं ।।५७
लखौ जाहि सोपाँन गोलोक ही की, अकर्मीन हू जीवधारा अभी की।
परं तीर्थ जेतेक कर्ता पवित्रा, पवनं प्रवाहा मनौ पाप-पत्रा ।।५८
महेसं जटा मै मनौ मुक्तीमाला, भरै सोभनं लोभनं चंद्रमाला।
सोइ स्वर्ग सौं भर्थ-खंडं समाई, प्रभाचंद्र दुग्धं सितं कंज पाई ।।५९
तपस्या फलीभूत देती तपी कौं, जुपै जोग की जुक्त मुक्ती जपी कौं।
अहंकार सौं वर्जतं सुद्ध-अंगा, ततं मूरती सप्त गंगा तरंगा ।।६०
प्रीया नित्य नाराँयनं प्रेम-पूरी, धरै ध्याँन जोगिंद्रहू सीस धूरी।
वनै विस्नु की काँमनी जेम वृंदा, करै भाव सौं सेव आँनंदकंदा ।।६१
अलंकार विस्नू भरै ताहि अंगा, सु सोभै सदा कंठ-माला प्रसंगा।
रिखीकेस के चर्न की सर्न राजी, वरा आँननी दिव्य धाँमं विराजी ।।६२
तपस्यादि संकल्प सेवा तही कौं, जनं भाव वाढै अराधै जँही कौं।
सबै पुस्प की सार है भूत सोई, गरै विस्नु राखै सदाँ दाँम गोई ।। ६३
करै दर्सनं पर्सनं पाप काटै, सुकर्मी लहै मोक्ष कौं सेव साटै।
कलू-काल मै वंदना ताहि की तैं, जरै पाप के ताप कौ जन्म जोतै ।।६४
प्रथी चर्न सौं धर्न होवै पुनीता, उपासै जही वेदहू के अधीता।
वसैहै जँही धाँम मै मात वृंदा, छलै भक्त ना मोह के छोह छंदा ।।६५
वसैहै सबै तीर्थहू-थाँन वासा, परं-धाँमहू काँम मुक्ती-प्रकासा।
विना धारना जाहि के जन्म वीते, रहे मंगलं मोक्ष सौं सोय रीते ।।६६

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

करै सेव जाकी सोई सिद्ध काया, मिलै सदगती त्याग कै मोह-माया।
वही कर्म-भूमी विचालै उपज्जी, रहै कल्पवृछं समा सोय रज्जी ।।६७
उपासै जहाँ के निवासी अपारा, पदार्थं लहै च्यारहू वारपारा।
माहात्मं सुनौ और देवी मनंसा, वही औतरी कस्प[1]-पुत्री सु अंसा ।।६८
प्रधाँनंस सै जाहिनै देह पाई, सोई संकरं सिख्ख दीनी सिखाई।
माहाँ ग्याँन भीनी सदाँ सिद्ध-मंता, वँही भग्गनी[2] नागराजा अनंता ।।६९
सदाँ नाँग नागेस्वरी जाहि सेवं, लगै पाय कौं संपदा सु:ख लेवै।
चढी नाग के पीठ मै म्हाँग चालै, पुजै नाग के लोक मै नाग पालै ।।७०
भरै नाग के भूषनं अंग भारी, पुलै नाग केते अगारी-पछारी।
सुखी जोगनी नाग पै सैन सोवै, गहै जोग के भाव कौं ग्याँन गोवै ।।७१
सदा वैस्नवं भक्त ही की सहाई, माहाँ संत सेवै महंमाय माई।
तपस्या करी देव वर्ष त्रंलक्षं, अजं अच्युतं वृह्म जोई अलक्षं ।।७२
इहै मंत्र की स्वाँमनी सिद्ध अंगा, पुनीतं जहो जाँन लीजै प्रसंगा।
जिही जाप सौं जोग की जुक्त जाँनै, मुनी जाहि की उक्त सौं मुक्त माँनै ।।७३
जँही वृह्म के तेज सौं जोत जागै, भ्रमं भूल अंधार अग्याँन भागै।
रहै वृह्म की भावना चाह रंगी, उपासै सदाँ ग्याँन ध्याँनी असंगी ।।७४
उपज्जी सोई क्रम्न कै तेज अंसा, वढायौ जरत्कार कौ जाहि वंसा।
मुनी आसतीकं जने जाहि माता, खिती-मंडलं ताहि विख्यात ख्याता ।।७५
खिती पै सुनौ ख्यात कौं मात षष्ठी, सबै वाल कौं पालना मै सपष्टी।
दया-भाव सौं पुत्र-पुत्राद देवं, सुखी बाल राखै पदं ताहि सेवै ।।७६
माहा सिद्ध जाँनौ सोई जक्त-माता, अराधै सिसु-काज मेटै असाता।
छटौ अंस है प्रक्रती-रूप छाया, धरा मै जही नाँम षष्टी धराया ।।७७
प्रसूता त्रीया षष्टमै दीह पूजै, सिसू के सुखी-काज ताही सहूजै।
वदै जन्म के दीह सौं मास बारै, इही मात ही पूजना को अधारै ।।७८
छटै दीह कौं पूजना भूल छंडै, माहा पुज्जई को समै दीह मंडै।
वदयौ वंस चाहै कहूँ धर्मवादी, परा पुज्ज कीनै मिटावै प्रमादी ।।७९
प्रकास्यौ मुनी पिंडता सार पंथा, कहूँ भूल सौं नाहि लीजै कुपंथा।
प्रधाँनंस देवी उपज्जी प्रधाँना, थिरा नीर आकास थप्पै सुथाँना ।।८०

---

१ कश्यप। २ भगिनी।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

चवै ताहि कौ नाँम मांगल्य चंडी, अराधै सु मांगल्य देवै अखंडी ।
सोई विस्व-मांगल्य-दाता सहाई, दिनावार अंगारकं[1] पुज्ज दाई ।।८१
करै संतती वृद्ध संतुष्ट कीनै, करै संपदा वृद्धहू सेव कीनै ।
दयौ सुंभ-निःसुंभ कौ दंड दुर्गा, बढे दाँनवी सैन मैं दैत वर्गा ।।८२
उपज्जी जबै भाल देबी अनादू, वही देवता मेटनै कौं विषादू ।
करचौ रूप ताही समै घोर काली, मिटाये सबै दाँनवा ज्वाल माली ।।८३
कह्यौ नाम संसार कालीय क्रस्ना, रटै क्रस्न कौ नाँम ही क्रस्न रसना ।
सदा क्रस्न की भावना मै सचेता, वदै क्रस्न कौ रूप ही तत्व-वेता ।।८४
सोई क्रस्न वर्नं भई साधना सौं, अखंडी हृदै क्रस्न आराधना सौं ।
पदार्थं लहै च्यार पूजा पसावं, भजै भक्ति-जुक्तं भरै ऊक्त भावं ।।८५
धरै ध्यान वृह्मा:द रुद्राद ध्यानी, मुनिंद्राद इंद्रादहू देव माँनी ।
मनू-वंस मै पुज्ज है सोय माता, उपासै सु ग्याता नसाता असाता ।।८६
प्रधाँनंस सौं मात प्रथी उपज्जी, सबै सृष्ट कौं धारना धार सज्जी ।
उपावै सदाँ ओखधी अंन्न आदू, सुधा-रूपहू कंद मेवा सवादू ।।८७
निपावै सोई गर्भ-रत्न नाना, सुवर्नादहू की रसाँनी समाँना ।
धरा पालने कौं प्रजा देह धारी, सता सक्त की जक्त-काजै सुधारी ।।८८
जमी थावरं जंगमं जीव जागा, समी होयकै विस्व धारै सभागा ।
छिमा-रूप सोई चहूँ ओर छाई, वसू की नही कोन जाँनै वड़ाई ।।८९
इला तैं वड़ी मात है कोन औरै, जही सौं नही भावना कोन जोरैं ।
अराधै नही सोय जाँनौ अग्याता, कुकर्मा क्रतघ्नी कुपुत्रं कुसाता ।।९०
अवत्तार है प्रक्रती के अनेका, बड़े येक सौं येक जाँनौ विसेका ।
स्त्रीया अग्न की है जँही नाँम स्वाहा, नमै देव आहूतँही के निभाहा ।।९१
ज्युही जग्य की दक्षना स्त्रीय जाँनौ, माहाकर्म की सो फलीभूत माँनौ ।
सुधा पित्र की स्त्रीय जाँनौ सदाई, मुनी औ मनूँ-वंस की पुज्ज माई ।।९२
लयै नाँम सौं पित्रहू कव्य लेवै, भली-भाँत सौं पिंडत जाँन भेवै ।
स्त्रीया वायु की जाँनीयै नाँम स्वस्ती, नही नाँम लीनै सबै काँम नस्ती ।।९३
पसूं पाँन[2] की जाँनीयै स्त्रीय पुष्टी, दया जाहि की ह्वै विना जीव दुष्टी ।
इही रीत सौं स्त्रीय तुष्टी अनंता,[3] अराधै विनाँ होय स्रष्टी असंता ।।९४

---

१ मंगल । २ परशुपाणि, गणेश । ३ अनन्त देव ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

स्त्रीया येम संपत्ति ईसाँन साजा, रिसायै तँही होत है रंक राजा ।
धृतो है कपलदेव की धारना सौं, कही ग्याँन कै हेत ही कारना सौं ।।९५
सती सत्य पत्नी सता मैं समाई, जँही मुक्त की हेत दाता जताई ।
दया मोह पत्नी गनौ दीन दाँनी, सोई विस्व के जीव ही मै समाँनी ।।९६
प्रतष्टा गनौ पुन्य पत्नी प्रवीता, जिही धारना सौं सबै जक्त जीता ।
कहो कीरती स्त्रीय[1] जाही सुकर्मा, धरै धारना सौं वढै प्रोत धर्मा ।।९७
कीया है स्त्रीया प्रीय उद्योग ही की, भरै भावना हेत है भोग ही की ।
मिली है अधर्मं स्त्रीया जेम मिथ्या, तेई पाप भोगै तजै साच तथ्या ।।९८
भली-भाँत पोखै सदाँ दंभा भ्राता, उपज्जै अधर्मं पती कौं असाता ।
उभै वैन भाई मिले येक येका, वसे है कली जीव माही विसेका ।।९९
स्त्रीया सांति लज्या गनौ सील ही की, उभैई समी धार जाँनौ अमी की ।
स्त्रीया ग्याँनकं तीन जाँनौ सदाई, मती और मेधा धृतीहू समाई ।।१००
स्त्रीया मूरतो धर्म की है समाँना, परंमातमा आतमा ही प्रमाँना ।
कला रुद्र कालाग्न की नींदकंता, जिही जोग आछान्न है जीवजंता ।।१०१
त्रीया काल जाँनौ त्रसंध्या तुलाई, रहै रात औ दीह माँही रलाई ।
पिपासा खुधा[2] लोभ को प्राँन-प्यारी, नही है पती सौं उभैहू निआरी ।।१०२
प्रभा दाहिका तेजही की प्रीया है, करंता उभै काँम जासौं कीया है ।
ज्वरं है प्रज्वारं करै मृत्यु जातै, जरा मृत्यु है काल की जात नातै ।।१०३
दयुही कंन्यका नींद की प्रीत तंद्रा, उभै सुःख कौं नार दीनी उंपिद्रा ।
स्त्रधा भक्ति वैराग की सावधाँनी, विनै नार निर्वानं दाँनी बखाँनी ।।१०४
अदित्ती सु माता गनौ आद तेई, भई साकरं मातहू सौर भेई ।
भली है दिती दैत की मात भद्रू, कही सर्प जातीन की मात कद्रू ।।१०५
वनी गरुड़ की मात जैसै विनंता, दनूं दाँनवी की विचारौ दुरंता ।
कला प्रक्रती कस्प की नार केई, जनेत्रा गनौ स्त्रष्ट के जीव जेई ।।१०६
कला है अनेका उदै प्रक्रती की, मुदै नाँम संख्या गनावै मती की ।
त्रीया चंद्र की रोहनी संग तैसै, जुँही सूर संग्या रही संग जैसै ।।१०७
मनू सत्तरूपा सची इंद्र मोहै, सुराचार्ज के संग तारा सु सोहै ।
मिली संग वासष्ट कै अक्षमाला, अहिल्या ज्युही गोतमं संग आला ।।१०८

---

१ पत्नी । २ क्षुधा ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अनूसूइया नार ज्यू ग्रेह अत्री, पतीवृत्त के धर्म माँही पवत्री ।
हुई कर्दमंभार ज्यों देवहूती, प्रजा के पती ग्रेह ज्युँही प्रसूती ।।१०९
कही पित्र की माँनसी जेम कन्या, हिमंवान की मेनका सोक हंन्या ।
मुनींद्रा अगस्ती धरै लोप मुद्रा, सबैही नदी नाँर जाँनौ समुद्रा ।।११०
वनी श्रीद की श्रीय ज्यूँ वर्न-वर्ना, अराधै ज्युही ईस-नारी अपर्ना[1] ।
वली-नार विंध्यावली कौं वखाँनी, रजै ज्यूं नली[2] दम्मयंतीय राँनी ।।१११
वसूदेव कै देवकी ग्रेह बैसी, जसोदा ज्युँही नंद कै नार जैसी ।
ज्युँही अंध राजाँन[3] गंधार जाई, वरी द्रोपदी पंडु पंचूँन भाई ।।११२
हरीचंद्र की नार सैव्या हितैसी, ज्युँही नार वृषभाँन साध्वीय जैसी ।
पतीलंक मंदोदरी नार पाई, कुसिल्या घरे दासरथ्थं कहाई ।।११३
किरीटी सुभद्रा कुरू कैरवीहू, रही वारूनी पेयकैं रैवतीहू ।
रजै क्रस्न कै आठहू पट्टराँनी, वड़ी सत्यभाँमा कालंद्री वखाँनी ।।११४
ज्युँही लछमना जाँमवंती जनाई, जितीनग्न वी मित्रवृंदा जताई ।
कही येम भद्रा तथा रुक्मनी कौं, धिजायौ जँही द्वारका के धनी कौं ।।११५
सीया राँम कै ज्यूँ प्रीया साधना मैं, अरू रोहिनी नंद आराधना मैं ।
परसरामहू रेनुका मात पाई, वसी विंध पै जाय श्रीक्रस्न बाई ।।११६
कहै जोजनागंध ही जेम काली, सुता वाँन ऊखा सखीहू सँभाली ।
मुदै चित्रलेखा प्रभा भाँनुमंती, हितू और मायावती सोक-हंती ।।११७
कला प्रक्रती की अनेका कही है, रुखाली सबैं ग्राँम खैड़ा रही है ।
खिती मै विराजी हितू भर्थ-खंडा, प्रजा कौं सबै पोख दाता प्रचंडा ।।११८
जिती नार संसार के वीच जाँनौ, परा प्रक्रती अंस ही सौं प्रमाँनौ ।
बिना आदरै सौं भरै दुःख बाधा, अलंकार औ वस्त्र कीजै अराधा ।।११९
पतीवृत्त औं ब्राँमनी पुत्रवंती, सदाँ सेवकै काज जाँनौ सुमंती ।
जिमावें अलंकार औ वस्त्र जोरैं, इही प्रक्रती पुज्ज जाँनौ अथोरै ।।१२०
कवारी करै पुज्ज जो बालकंन्या, वँही प्रक्रती भक्त जाँनौ अनंन्या ।
त्रीया है जु संसार मै भाँत तीनू, प्रकारा कहै तीन रीती प्रवीनू ।।१२१
मिली ऊतमं मध्यमं अध्यमाई, जिही सौं सदाँ तीन रीती जनाई ।
सती पत्तवृत्ता सुसीला सुभावा, भजै आपने ही पती प्रीत-भावा ।।१२२

---

१ पार्वती । २ नल । ३ धृतराष्ट्र ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

प्रनासै नही वंस न्ही की प्रनाली, निकाई जुतै उत्तमा है निराली।
कला प्रकृती सत्तहू की कहावै, उभै लोक आँनंदहू कौं उपावै ।।१२३
भजै है रजो-भोग की भावना सौं, चितं मध्यमं जांनीयै चावना सौं।
कुल्लटा कुलघ्नी दगावाज केती, सुपुर्खं कुपुर्खं भजै भोग सेती ।।१२४
तमो अंस सें ऊपजी प्रकृती कै, गनौ सो अधँमं न चाहै गृही कै।
भर्थ-खंड कौं जांनीयै पुंन्य-भूँमी, घनी देवीयाँ देव की स्याहि घूँमी ।।१२५
दयौ दुर्ग ता दंडहू नाँम दुर्गा, वढी पुज्ज संसार मै देव-वर्गा।
सुसेवो तही वैस राजा सुरथ्थं, उपाये जँही हेत च्यारू अरथ्थं ।।१२६
पती लंक कौं मारनै राँम पूजी, जिही स्याहि सौं राखसी-सैन जूजी।
वँही औतरी दक्ष के ग्रेह आई, सती नाँम सौं सेव देवं सहाई ।।१२७
पती निंदना कौं पिता ग्रेह पेखी, बरी जग्यकै कुंड मै सो विसेकी।
गिरी हेम पुत्री भई सोय गिर्जा, तिही देवता-जात कौं सोक तर्जा ।।१२८
तिही गर्भ मे ऊपजे तारकारी, माहाँ तेज औतार सागें मुरारी।
भये क्रस्न औतार हेरंब भ्राता, खिती देव अग्रेस मै जास ख्याता ।।१२९
नृपं मंगलं पायकै पूज लछुछी, अराधी तिही देवता रीत अछछी।
जिही माँनवी पूजकै नित्य जाचै, नटी पुत्तरी की ज्युही अग्र नाचै ।।१३०
सावंत्री ज्युही कास्प पती सुथाँना, नृपालं करी सेवता रीत नाना।
मुनी देवता माँनवी पुज्ज मंडी, अराधं तँही रूप ध्यावै अखंडी ।।१३१
अरू सरस्वती कौं वृहंमा उपासी, प्रधाँनं परा-रूप सृष्टी प्रकासी।
करी क्रस्नहू सेव ज्याँ राधका की, परंधाँम गोलोक रासी प्रभा की ।।१३२
रच्यौ पूर्नभा रासहू देवि राधा, विहारी हीयै की करी भेट वाधा।
परंमातमा क्रस्न की प्राँन-प्यारी, माहा मोद सौं संग लीनै मुरारी ।।१३३

सोरठा

पुन हरी अग्या पाय, गो-गन गोपी गोपका।
पूजे राधा पाय, धूप पुस्प कर धारना ।।१३४
भूतल मै भूपाल, जिग करता जेते भये।
करी पुज्ज तिहु काल, मंगलदायक मोदमय ।।१३५
संकर वृहमा सेव, कीनी मंगल कारनै।
दुज मुनि माँनी देव, क्रस्न-भक्ति अवचल करन ।।१३६

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

प्रकृत-रूप प्रधाँन, श्रीराधा कौं समुझीयै ।
गोबिंद कै गुनगाँन, करत रहत हित कारना ।।१३७
प्रकृत पाँच परकार, कला अंस तिनकी कही ।
वरनत पूज विचार, जनम चिरत मंत्रहू जिते ।।१३८
श्रीनाराँयन सोय, वरनन लागे वारता ।
हरखत नारद होय, सुनवैं लोग समुझनैं ।।१३९

छंद भुजंगप्रयात

ज्युंही आतमा काल आकास जाँनौ, प्रकासै दिसा विस्व गोला प्रमाँनौ ।
ज्युंही है इही कृस्न गोलोक जैसै, तिही कै तरै धांम बैकुंठ तेसै ।।१४०
ज्युंही प्रकृती नित्य जाँनौ प्रधाँना, सोई वृह्म-लीला दिखै सात्रधाँना ।
जमै अग्न मै सक्ति है जारने की, प्रभा चंद्र ज्यूं कंज पासारनै की ।।१४१
प्रकासं ज्युंही सूर मैं ओतप्रोतं, युंही प्रकृती वृह्म माँही उदोतं ।
करै ना विना स्वर्न कै स्वर्नकारा, अलंकार जो कुड़लादं अपारा ।।१४२
कुलाली[1] विना मृत्यका कुंभ कैसे, विना प्रकृती आतमा सृष्ट वैसे ।
सोई प्रकृती जाँनीयै वृह्म-सत्ती, वनावै इही विस्व की रूप व्यक्ती ।।१४३
सकारं सुरं सोय ऐस्वर्ज साची, वनैहै कती[2] सब्द प्राकंम[3] वाची ।
सोई दैन वाली गनौ रूप सक्ती, प्रकासै मिली वृह्म कै वीच प्रक्ती ।।१४४
समृधी वलं संपती कीत सोई, जनावै ज्युंही जीवकौं ग्याँन जोई ।
इतेकौ कहै है भगं नाम आदू, महाँ भगवती नाँम जाँनौ मृजादू ।।१४५
सकत्ती[4] सोई भगवती है समाई, कला रूप भगवाँन जासौं कहाई ।
स्वयंछ्या निराकार साकार सोई, गहै ध्याँन जोगिंद्रहू हीय गोई ।।१४६
परंमातमा वृह्म सो वारपारा, निपावै वही स्रष्ट मैं स्रष्ट न्यारा ।
अरू वैस्नवारूप ऐसै उपासी, रजा येक ही कृस्न जो तेज-रासी ।।१४७
नही है कही मे सदा है न्यायारा, परंतेज है वृह्म सृष्टी पीयारा ।
कला कारनं-कारनं ताहि केरी, सु सोभा जुतै नित्य संध्या सवेरी ।।१४८
किसोरं अवस्था मनोहार-काया, मनो सांत हंकार व्यापै न माया ।
वपू सुंदरं स्यामँ जो मेघवर्नं, छटा ज्यूं पटा अंग राजीव चर्नं ।।१४९

---

१ कुम्हार । २ अनेक । पराक्रम । ३ शक्ति ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

चढ सीस कोटीर[1] कै मोर-चंदा, मिली स्यॉंमहू केस पाटी मुकंदा ।
मुखा मंद-हासी प्रभा चंद्रमा-सी, कँनी हीर दंतावलो की प्रकासी ।।१५०
कला दीप निर्धूमहू नासका की, प्रवाली रदंवख पाली प्रभा की ।
प्रभा कंज की पंखुरी नैन पैंना, वजावै गहै वाँसुरी हाथ वैना ।।१५१
मढी कंठ मै मालती फूल-माला, मरै रत्न ग्राभूषनं विंदु-भाला ।
सदा जुक्त ऐस्वर्ज सक्ती समाना, प्रभू-भक्ति ग्राधार मुक्ती प्रधाँना ।।१५२
सुतंत्रं सबै मंगलं-रूप साखी, रजा मै जिही रिद्ध ग्रौ सिद्ध राखी ।
जरा मृत्यु व्याधी नहीं सोक जामैं, भचक्रं निदेसा ससी सूर भ्रामैं ।।१५३
जिही नैन उनमेख मै कल्प जाता, बिलावै वसू स्रष्ट ग्रौरै विधाता ।
बिलोकै कृपा-द्रष्ट स्रष्टी वनंता, जगै थावरं जंगमं जीव-जंता ।।१५४
जती दाँनवा देवता नाँहि जाँनै, मती ईस वेधा थिती रूप माँनै ।
कृषं सव्द जो भक्ति वाची कहीजे, नकारं जिही दास कौ वाच लीजे ।।१५५
दया भक्ति कौं भाव जो दास देवै, सदाँ कस्न हीं कस्न कौं रूप सेवै ।
जिही कस्न के नाँम कौं सिद्ध जाँनौ, मती ग्रौ थिती के पती जाहि माँनौ ।।१५६
चिच्छक्ती परंमेस माया छती है, थई स्रष्ट की ग्राद जामै थिती है ।
वँही सन्मुखा स्रष्ट की तिष्ट वंछया, उपज्जी जवै ईस्वरी ग्राद इछया ।।१५७
इकै रूप सौं दोय ह्वै रूप ग्राया, महाँ सुंदरी ह्वै गई रूप माया ।
सोई वाँम के अंग कौं रूप सारौ, वपु दक्षनं पुर्ष-रूपी विचारौ ।।१५८
जिही काँमनी कौं लखी काँम-जुक्ता, उपज्जी हीये पुर्षहू ग्राय उक्ता ।
निहारी ज्युंही नैन वाढी निकाई, लता सौंत स्रंगार मानौ लुभाई ।।१५६
भजै कस्न कौं कस्न ही भाव भौरी, चितै पूर्नमा चंद जैसै चकोरी ।
प्रवेनी वनी पीठ पाछै प्रलंबा, थकी नागनी ऐंठ सोवर्न-थंभा ।।१६०
परी केस की सीस पै केसपाटी, वनाई मनौ काँम ग्राराँम-वाटी ।
भली रेख सिंदूर जामै भरी है, गिरी नील पै वृह्मपुत्री गिरी है ।।१६१
वनै चंद्र-से भाल मै लाल बैंदी, दिपै नंद के नंद ग्राँनंद दैंदी ।
भरे स्यांमता रंग राजै भुँहारा, ग्रली ग्रावली पंख माँनौ उभारा ।।१६२
मुखा कंज ग्रौ खंजनं नैन मीना, कली कुंद-सी दंत की पंत कीना ।
प्रभा ज्यों प्रवाली उभै ग्रोठ पाई, लजै नाग-वेली न वीरी ललाई ।।१६३

---

१ मुकुट ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कपोलं लसै गोल आदर्स कैसे, रसं हास स्रंगार सोभा भरे-से ।
तरै चिबुका है कली क़ंज तैसी, मढी स्याँमता काँम मौंनौम वैसी ।।१६४
कसै है निबोरी गरै कंबु कंठी, अनूपं हरी पोत की लाग अंटी ।
तनी अंगका हीय मैं वाँध तंगी, रुपे है उरोजा मनौ नागरंगी ।।१६५
रही तुंदका ऊपरै रोम राजी, वढी वेल स्रंगार मानौ विराजी ।
कटी खीन राजै मनौ केहरी की, तटी किंकनी वेहरी तेहरी की ।।१६६
गुनी गोयकै वंध त्यों गाघरी कौं, जमै पाट पै ठाट वाँनौ जरी कौं ।
निकाई जुतै निस्तुला द्वै-नितंबा, बिगोबै प्रभा वर्तुला चंद्र-बिंबा ।।१६७
लसै गोर जंघा अरोमा लली की, करी सुंड गोली मनौ कंदली की ।
सु सोभै प्रभा पिंडुरी मै सँवारी, तछा जंत्रकं काँम माँनौ उतारी ।।१६८
छुटचौ घेर चौफेर कौं चालनीकौ, जरी की किनारी भरी जालनीकौ ।
निनादं वजै झींन तौं नूपरीकौ, अटी चनंकी गूंथका ऊपरीकौ ।।१६९
भरै आँगनै पैंड त्यों नेह भीनो, झनंकै ज्युंही जेहरी राग झीनी ।
पदं-पंकजं पाव-साखा पसारी, कली चंप की जाँन बाँधी किनारी ।।१७०
ठटे वीछीया गूघरी की ठमंकै, दुती अंकुसं काँम हीरा दमंकै ।
द्रुतं हाल मैं लालनै चाल दीठी, मुरै पैतरा माट ढोरै मजीठी ।।१७१
क्रीया ताँन की कर्न लागी किसोरी, जुतै प्रीत सौं हाथ सौं हाथ जोरी ।
विहूँ वाँह की सोह वाढी वहूँटा, छिके डोर मोती मनी गुछ्छ छूटा ।।१७२
प्रकासै कलाई महीं गोल पूरी, चुरावै प्रभा विज्जुरी चंद चूरी ।
मनी-दीप वाढै ज्युंही मूदरी मै, छटा ज्यूँ चमंकै दुती चूंदरी मै ।।१७३
सुहासं सुवासं वढी त्यों सुगंधी, रसा मै दसू ही दिसा ठौर रूँधी ।
सखीहू मिली आयकै संग सारी, महाँ मोद सौं रंग भीजै मुरारी ।।१७४
मृदंगा ज्युँही ताल वींना मिलाई, इतै वाँसरी हाथ लीनी कँनाई ।
विनोदं वढचौ वाजना वाजनेई, थगी राधका जू लगी तात थेई ।।१७५
सखीहू सखीकै लखी येक संगा, तहाँ गाँन की ताँन वाढी तरंगा ।
लगे काँनहू पाँनसौं लाडलीकै, फवै ज्यूं पना संग मुक्ता-फलीकै ।।१७६
विहारी वढी विस्वकी वाँदनी की, चहू ओर आभा चढी चाँदनी की ।
मिल्यौ वाँसरी-नाद वींना मृदंगा, घुटी अर्कजा सरस्वती जेम गंगा ।।१७७
छऊँ राग औ रागनीहू छतीसै, विहारं वढचौ कैसकी की वृतीसै ।
त्रिवै राधका और राधा विहारी, सखी गोपकाहू रखी संग सारी ।।१७८

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

महां मोद सौं रास हल्लीस मंड्यौ, थतेथी-थतेथी जहाँ सोर थंड्यो ।
गरै नेह भीनी भरै कंठ गावै, ललो कोकुलाहू पपीहा लजावै ।।१७६
जुतै हासकं लासकै रास जोरै, मुरै वैन त्यूँ नैन की सैन मौरै ।
झुकै अंग तैसै वढै पोत झांई, दुती तप्त सोवर्न जैसे दिखाई ।।१८०
ठिलै त्याँ मिलै नेवरी की ठमंकै, दीयै ताल के हाथ चूरी दमंकै ।
कला हीय वाढै कसी कंचुला कौं, चलै चंचला ज्यूं पलौ अंचला कौं ।।१८१
निकाई भरी नागरी नागरी मै, घल्यौ रास कौ घेरहू गाघरी मै ।
अलंकार कौ पूर वाढ्यौ उजाला, मिली त्यूं रसा मै निसा दीप-माला ।।१८२
रतँनं-रतँनं विचै क्रस्न रासी, प्रभा मूरती- मूरती-सी प्रकासो ।
वसै राधका हीय जैसै विहारी, भर्यौ गोपकाहू हीयै मोद भारी ।।१८३
फिरै चक्र आलात ज्यूँ वक्र फेरी, घलै घूँमरी दाव की पाव घेरी ।
चलै अग्र सौं अग्र कौं पैंड चाली, वढै येक सौं येक नैना विसाली ।।१८४
मुरै किंकनी स्रौंन झंकार मंडै, तनंकै तरंकं कनं ताल तंडै ।
लहंगा ज्युँही लोच लावै लली कौ, करै लालहू चाल वागौ कली कौ ।।१८५
झमंका वजै जांझरी जेहरी का, गरै गीत गावै भरी गेहरी का ।
विधे तार-मुक्ता गरै गोय बंधा, चलै हार मुक्तावली लौ चछंदा ।१८६
जगै हीर वैडूर्ज की जग्ग-जग्गी, दिपै मानकं राँनकं दुग्ग-दुग्गी ।
डुलै हाथ बाँहै मनो चंप-डारी, त्युंही नैन की सैन कौं जोर तारी ।।१८७
किसोरी उभै रास राचै कनाई, छटा ज्यूं चमंकै घटा घोर छाई ।
समै ताहि स्त्रंगार वाढी स्थाई, उभै सातुकं भाव आठौ उपाई ।।१८८
सखी ही लखी क्रस्न राधा सतंभा, थिरी भू दसी ह्वैगई स्वर्न-थंभा ।
पसीन्यौ छूट्यौ राधका क्रस्न प्यारी, सबै अंग ज्याँ मुक्तवेली सँवाँरी ।।१८९
निहारी सु रोमांच सौं धार नीचै, सुधा जाँन सृंगार कौ वाग सीचै ।
नटै पै रटै आँननं बोल नाँई, मिल्यौ सो रहै काँप कै जीभ माँही ।।१९०
बही कंज से नैन आँनंद वारी, विहारं थके राधकाहू विहारी ।
वही अंग सौं छूटकै दूर व्रीडा, सखीहू सबै संग त्यागौ सनीड़ा ।।१९१
विहारी हीयै ऊपजो काँम-बाधा, रही चित्र की पुत्तरी होय राधा ।
द्रुतं दौरकै रास की ठौर दूरी, रची गोपकाहू तहाँ सेझ रूरी । १९२
रही पास जाही समै अंतरंगी, प्रीया राधका क्रस्न नीकै प्रसंगी ।
ढिगा दूर लागी द्रगा ढाँकने कौं, झुकी ओट लैलै लगी झाँकने कौं ।।१९३

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

लली राधका लालहू ग्रंक लाई, लता पीत मानौ तमालं लुभाई।
पसारी तहाँ पीठ लैकै प्रजंका, सिधाई उभै ग्रोर सौं छोर संका ।।१६४
लगे भोग भीने सुखं सेज लूटै, तनी कंचुकी डोर त्याँ हार तूटै।
करी रास-क्रीड़ा ज्युंही काँम-क्रीड़ा, वखानै ततौ ऊपजै चित्त व्रीड़ा ।।१६५
विहाई जितै रात सारी विधाता, दयौ लाडली कौं रती दाँन दाता।
भई राधका गुर्बनी प्रेम-भीनी, खिपा ह्वैगई कल्प की स्वल्प खीनी ।।१६६
तज्यौ रास ज्यौं भोग-विल्लास त्यागे, रुची पायकै क्रस्न[1]हू साँनुरागे।
विवै राधका रूप ग्रौरैं विहारो, रच्यौ रास ताकी कही वात सारी ।।१६७

सोरठा

गर्व थप्यौ गोविंद, जीय सुभ वेला जाँनकै।
उभय भये ग्राँनंद, येक चित्त मुख येककौं ।।१६८
विछुरे लेत वयार, इत-उत डोलत ग्राँगनै।
लगी गोपका लार, केऊ राधा कोऊ क्रस्नकै ।।१६९

छंद पद्धरी

रासेस क्रस्न राच्यौ जु रास, कीनौ सोई वर्नन सावकास।
रति दाँन दयौ राधा रमाय, जुक्त सौं गर्भ ताकै जमाय ।।२००
श्रीक्रस्न राधका करचौ संग, ग्रालिंगन मानहु रति ग्रनंग।
खेल मैं भई नहि लखी खेद, समता सौं रमता छुटचौ स्वेद ।।२०१
स्त्री लैनै लागी ऊर्ध-स्वास, पुन भयौ पवन तातै प्रकास।
जल तत्व वढचौ सोइ स्वेद जात, दि-सविदस वढचौ ग्रतसय दिखात ।।२०३
वन गयौ भूत ग्राधार वाय, सब प्राँनिनकौ जीवन सुभाय।
वामांग वायु सें भई वाँम, संग वायु रही सोई धार स्याँम ।।२०४
पाँचहू जने ताही सपूत, ग्रापाँन[2] पाँन व्याँनहु ग्रभूत।
साँमाँन ग्रौर उद्यान[3] सोय, गत गूढ रहत प्राँनीन गोय ।।२०५
ग्रध प्राँन पंचहू भये ग्रौर, ठहरे प्राँनिन मैं ठौर-ठौर।
समुदाय रहै देही सुथाँन, जीवन के जीवन मूल जाँन ।।२०६

---

१ मू. प्र. कंसेस। २ ग्रपान। ३ उदान।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

स्रम जल सौं ह्वै जल प्रवल संग, अधदेव प्रकृत सौं वरुन अंग।
तन वाँम ऊपजी वरुन ताँम, वरुनाँनी ताही भई वाँम ।।२०७
संभोग विवस्था कही सोय, जल-माल लेहु उतपत्त जोय।
गर्भ की कहत अव्र गूढ गाथ, सवही जग करता पुन सुनाथ ।।२०८
चिच्छक्ति सक्त श्रीकृस्नचंद, वहु तेज दीप्त सौं जुक्त विंद।
सत मन्वंतर लग विंदु सोय, गुर्वनी राधका रख्यौ गोय ।।२०९
सो कृस्नचंद्र कै रही संग, प्रीत की रीत ही के प्रसंग।
पश्चात करचौ इक प्रगट पूत, अष्टापद रंगत तन अभूत ।।२१०
अत तेजवंत श्रीकृस्न-अंस, होवत प्रकास जनु कोट हंस।
राधका झल्यौ नही तेज रास, भयभीत भयौ चित जास भ्यास ।।२११
विथुरचौ निज देख्यौ स्वेद वार, विदसन दिसा-विच वारपार।
ताही मै त्यागन करचौ ताहि, हुय सब्द असंभव हाय-हाय ।।२१२
उर-कोप करचौ श्रीकृस्न आप, श्रीराधाजू कौं दयौ स्राप।
तुम कोपसील निष्ठुर त्रीयाह, पुत्रकौं तज्यौ मम जल-प्रवाह ।।२१३
अव होवहि नहि तुम पुत्र और, कीजीयै जतन जोपै करोर।
अरु ह्वै है नारी तोर-अंस, वाढै न जाहि सौं देव-वंस ।।२१४
रहिहै नव-जोवन नित सरीर, प्रसवता कवहु व्यापै न पीर।
निज पत्नी सौं इह कह्यौ नेम, पत्नी सौं उपज्यौ फेर प्रेम ।।२१५
संवोध दयौ वहु विध सँतष, राख्यौ नही उर मैं कछू रोष।
पत्नी प्रसंन्न हुय करचौ प्यार, वपु उपज्यौ सातुक जिही वार ।।२१६
देवीकै जिभ्या अग्र देस, वपु सुक्ल उपज देवी सुवेस।
धारै सुक्लांवर धरै धीर, सोगंध अंग सरसत समीर ।।२१७
हित वींना पुस्तक लीयै हाथ, गुन-ग्याँन गिरा मय कथत गाथ।
केऊ रतन सेतके अलंकार, जाँझर पग-वाजत झनंकार ।।२१८
राधका रसन सौं प्रगट रूप, वँह कंन्या तिह जाँनहु अनूप।
वामांग राधका येक वाँम, लक्षमी उपज सोभा ललाँम ।।२१९
राधका अंग दक्षन रहीज, रमनीय कृस्न-मुख रही रीज।
द्वै रूप करे श्रीकृस्न देख, वर द्वभुज च्यार-भुजहू वसेख ।।२२०
द्वै भुजा अंग दक्षन दिखाय, भुज च्यार वाँम तब भये सुभाय।
बोले जब द्वै भुज उर-विचार, मननी राधका प्रति मुरार ।।२२१

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

संग मोही रहीयै साँनकूल, मेरे अंतह की प्रेम-मूल ।
सरस्वती लक्षमी जुत सयाँन, माहाराज द्वभुज की वात माँन ।।२२२
श्रीनाराँयन कौ गह्यौ संग, वयकूठ गई जामै न विंग ।
राधका रूप सौं उभय रूप, उपजै न पुत्र तातै अनूप ।।२२३
पारषद भये पुन अप्रमाँन, नाराँयन तनहू सौं निदाँन ।
श्रीनाराँयन के रूप सोय, हिल-मिलकै रहीयत संग होय ।।२२४
लक्षमी अंग सौं चिब ललाँम, विस्तरी धाँम वयकूठ वाँम ।
सम रमा ताहि जाँनहु सुवेस, दासका रमा माँनहु सुदेस ।।२२५
गोलोकनाथ के उपज गात, केऊ गोप भये जुत करामात ।
श्रीक्रस्नचंद ही कै समाँन, सुंदर सरूप चित सावधाँन ।।२२६
उतपत्त रोम-रोमहु अनेक, परभाव पर्म पावन प्रवेक ।
ऊपजी गोपका किती आय, निज अंग राधका तीय निकाय ।।२२७
गोपन के परगट भई ग्रेह, श्रीक्रस्नचंद्र भानी सनेह ।
सब राधाराँनी करत सेव, मिल-मिलकै हित चित अवसमेव ।।२२८
नवजोवन सोई रहत नार, अभिराँम धार तन-अलंकार ।
परसूत होत नही जिनही पीर, सुंदर सरूप विरचत सरीर ।। २२९
वपु क्रस्न राधका भये विभाग, सक्ती दुर्गा प्रगटी सभाग ।
क्रस्न ही देव ताके क्रपाल, क्रस्न कौ ध्याँन व्रहु करत काल ।।२३०
विस्नू की माया सोई वलिष्ट, संसार वीज-रूपी सपष्ट ।
नाराँयनी ताकौ कहत नाँम, करतूत हुतै जग करत काँम ।।२३१
ईसाँनी ईस्वरी रूप आद, मंडता वेद पावन मृजाद ।
श्रीक्रस्नचंद्र बुद्धी सु ग्याँन, जाहि की अधिष्टात्री सुजाँन ।।२३२
देवीयाँ जिती जग मै दिपंत, प्रक्रती मूल माया प्रजंत ।
सावर्न-रूप आभा सरीर, चमकंत बीजुली जेम चीर ।।२३३
मुख मंद-हास अधुराँन माहि, द्रग सांत रूप करुना दिखाय ।
आभूषन नाना धरै अंग, परकास चंद्र कोटक पतंग ।।२३४
भुज सहँस-वीच आयुधन भीर, सुर स्याहिक दायक सुच सरीर ।
निज भाल-वीच तिह तीन नैन, वण्पीह कोकला मधुर वैन ।।२३५
जेतो है सुभगा त्रीया-जात, मोहित है ताकी करामात ।
दुज ताही की ऐस्वर्ज देत, सुख सदन क्रीत मंगल समेत ।।२३६

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

श्रीक्रस्न समर्पत भक्ति साच, वैस्नवी-वैस्नवी कहत वाच।
महमाय मुमुक्षन देत मोख, सुख चाहत ताकौं सुख सँतोख ।।२३७
स्वर्ग मै स्वर्ग लछ्छी सम्माँन, गृह-लछ्छी सोई ग्रेह माँन।
तपसीयन माँझ तप रूप तेज, महपती माँझ सोभा मगेज ।।२३८
अग्न मैं दाह छिव प्रभा येम, अरु कँमलचंद्र सोभा जु येम।
श्रीक्रस्नचद्र की पर्म सक्त, आतम परमातम रूप उक्त ।।२३९
माँनत है जगहू सक्ति माँन, विन सक्ति जीयनहू मृतु विधाँन।
संसार वृक्ष की बीज सक्त, विन सक्त होत ज़गहू विरक्त ।।२४०
अस्थित फल बुद्धी रूप आद, प्राँनी सुख पावत तिह प्रसाद।
जिह खुधा पिपासा दया जाँन, निंद्रा अरु तंद्रा क्षमा माँन ।।२४१
लज्जा अरू सांती धृती लेख, पुन पुष्टी तुष्टी भ्रांति पेख।
भगवती दसहु-दिस रही भ्राज, करता जग-जीवन सफल काज ।।२४२
थित भई क्रस्न आगै जु थाँन, वर्नना करन लागी विधाँन। -
हित पाय क्रस्न सु प्रस्न होय, सिंघासन रत्तन जटत सोय ।।२४३
मेल्यौ सु आप हाथन मुरार, विध आये करता तिही वार।
विस्नु की नाभ के कमल वीच, ऊपजे सोय वेला अभीच ।।२४४
अस्तुती क्रस्न की करी आय, संग सावत्री लीनै सुभाय।
राधेस भये तव दोय रूप, इक स्याम गौर दूसर अनूप ।।२४५
गोपीपत स्याँमहु रहे गात, दक्षनह अग सोई दिखात।
वाँम के भये पुन वाँमदेव, अज अलख सिंभु सिव सोई अभेव ।।२४६
सम फटक जास आभा सरीर, भूखन की लीनै संग भीर।
पट्टस पुन लीनै सूलपाँन, सित भस्म स्वेत अंबर समाँन ।।२४७
अरू अजन व्याघ्र की चर्म और, भासत प्रदीप्त जनु तरुन भौर।
सिर जटाजूट सुरसरीय संग, राजीव नयन जहि लाल रंग ।। ४८
छिब देत भाल-विच बालचंद, मुसकात कमल मुख मद-मंद।
गल नील गरल की रेख गोय, मनि-माल सनहु बाँधी समोय ।।२४९
कीनै सर्पन के अलंकार, उर लसत मुंड-माला उदार।
निज वदन पाँच प्रत तीन नैन, आधार जोग के सिद्ध ऐन ।।२५०
निर्वांन-रूप मंगल-निधाँन, जग कारन तारन माहा जाँन।
मन सोक रहित अरू सुद्ध मंत, श्रीक्रस्नचंद्र के पर्म संत ।।२५१

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सिंघासन थप्पेऊ संनिधाँन, दीनी सिव दुर्गा तिही दाँन।
सोइ पतीवृता सिव करत सेव, देवन के देवन वाँमदेव ।।२५२
सिव की सोई प्यारी भई सक्त, जन जाँन उपासत मात जक्त।
सिव सिवा नाम कल्याँन साथ, ईस्वरी ईस अंनाथ-नाथ ।।२५३

दोहा

वालक त्यागौ तन विमल, श्रीराधा सुत सोय।
आयु विधाता लग वँही, तहाँ रह्यौ विच तोय ।।२५४
भाग दोय ताके भये, बालक के अध बिंब।
बालक इक उपजे बहुर, अदभुत-रूप अचंब ।।२५५
सोभा तिह रवि कोट सम, दीप्त माँन जहि देह।
जननी विन अवलंब जोइ, क्रंदत साद करेह ।।२५६

छंद पद्धरी

वैंराट महा जाँनहु विख्यात, वँह क्रंदत कोऊ जैसैं अनाथ।
आस्रत जिह केते वृहमइंड, पावत प्रमाँन नही कोऊक पिंड ।।२५७
श्रीक्रस्नचंद्र ही सौं सुभाय, तेजमै सोरहौं भाग ताहि।
भव विस्वाँ का आधारभूत, अरू महाविस्नु मायक अभूत ।।२५८
इक रोम वीच जाके अनेक, विस्व कौ वास जाँनहु विसेख।
गनती विस्वन की नही गनाय, सुर आद विरंचनहू सुभाय ।।२५९
प्रति वृहमइंड विध विस्नु पेख, द्रग सूर-चंद लौ देव देख।
विध और लोक पाताल वास, वृहमंड इही पावत विकास ।।२६०
वृहमंड-वीच सिव हरीं विरंच, रहत है सदा नही भेद रंच।
वैकुंठ तिही वाहर विसेख, सवही सौं न्यारौ रहत सेख ।।२६१
पचास कोट जोजन परेह, गोलोक क्रस्न कौ पर्म ग्रेह।
स्वारूप नित्य अरू सत्य सोय, कल जाँनत है तिह भक्त कोय ।।२६२
इह जाँनहु संग्या वृहमइंड, खिती आद दीप दध नऊ खंड।
उपदीप और पर्बत अनाद, वाख्याँन करत कवि निर्विवाद ।।२६३
लेखहु ऊपर तिह भूरलोक, ऊर्ध है ताहिकै भ्रुवर ओक।
सुरलोक और जाँनहु सुथाँन, जिह ऊपर कौं तप लोक जाँन ।।२६४

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जाही के ऊपर लखहु जोय, सत लोक वृह्मह् लोक सोय।
इक-इक सौं इधके सबही येह, सुखदायक लायक निसंदेह ॥२६५
पर विनस जात है प्रलय पाय, जल के बुद-बुद ज्यौं गनहु जाहि।
वैकूँठ और गोलोक वास, बिव नही होत कवहूँ बिनास ॥२६६
बालक विराट की सुनहु बात, वरनत ताही की जग-विख्यात।
ऊपर सोई देखत रहे आप, सहनता जुक्त लीनै सँताप ॥२६७
ऊपर कौं सुंन्य ही सुंन्य येक, विदसाँन-दिसा पावत बिवेक।
चिंता कौं प्रापत भयौ चित्त, अह नित्य है क अथवा अनित्त ॥२६८
इह ग्याँन भयौ उर उदित आय, श्रीक्रस्न क्रपाही सौं सुभाय।
करनै पुन लागे ध्याँन क्रस्न, सु भक्त हृदय वाढी सहिस्नु ॥२६९
पुन भक्ति जोग ही के पसाय, द्वै भुजा क्रस्न दीय दरस आय।
सुंदर स्वरूप बालक सँपेख, वाढी उर-करुना अत विसेख ॥२७०
वरदाँन दयौ सिसु तिही वार, व्यापै न खुधा त्रसना विकार।
सुत मो-समाँन ह्वै हौ सुग्याँन, आधारभूत धर आसमाँन ॥२७१
वृहमंड करहि केऊ रोमवास, अवचल हुय रहिहौ अनायास।
निस्काँम रहहु निर्भय निदाँन, विन जरा मरन सुस्थिर विधाँन ॥२७२
पुन रोग-सोक व्यापै न पीर, सुस्थाँन सदा अवचल सरीर।
किहि क्रस्न-क्रस्न त्रय वार काँन, दीनौ षट अक्षर मंत्र दाँन ॥२७३
पुन बोले सिसु सौं क्रपा पाय, वरदाँन लेहु जो चित वसाय।
बालक विराट सुन वचन बाप, इह विनती कीनी हेत आप ॥२७४
सुतकौ जब लग इह रहै सरीर, ध्याँऊँ पितु चरनन धार धीर।
भक्ती अनंन्य कौ पाय भेव, समता विस्तारहुँ क्रस्न सेव ॥२७५
अभलाख इही नही दुतीय और, जाचना करत नित हाथ जोर।
आपही सनातन रूप आद, वर्जंता मोह-माया विषाद ॥२७६
जीवन के व्यापक वृह्म-जोत, इह जगत होत तुमसौं उदोत।
करीयै प्रसाद पितुवर क्रपाल, चाहत कछू और न चित्त चाल ॥२७७
सुन मधुर वचन बोले जु स्याँम, ध्रुव रहहु पुत्र विस्राँम धाँम।
वृहमंड असंखहु जाय वीत, जम मृतुकाल सौं रहहु जीत ॥२७८
विनसै केऊ उपजै लघु विराट, घरहै केऊ वृहमाइंड घाट।
विस्नू पुन होवहि वार-वार, कालाग्न रुद्र संघार कार ॥२७९

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

उपजहि केऊ विनसहि इह अनंत, अंगज तुम कबहून होय अंत ।
अरू देत तुमहि वरदाँन और, मत गत सौं सुनीयैं वचन मोर ।। ८०
जब करहौ मेरौ ध्याँन जाप, वँह ठौर दरस मैं दैहु आप ।
मम हृदय वीच तुहि वसत माय, पुन दरसन तुमहू लेहु पाय ।।२८१
इतनी कहि चाले क्रस्न ओक, वहराय सोक सुतकौं बिलोक ।
उपजे विरंच सिव क्रस्न अंग, वँह रूप उभै जाँनहु अभंग ।।२८२
वँह वार मिले निज लोक आय, सासन तिन हूँ कौं दीय सुनाय ।
तुम स्रष्ट वनावन होऊ त्यार, महासुत विराट रोमन मँझार ।।२८३
केऊ लघु विराट ह्वै है मुकाँम, धारक प्रतिपारक स्रष्टि धाम ।
उन क्षुद्र विराटन केर अंस, प्रतिनाभ कमन उपजहु प्रसंस ।।२८४
उतपत्त होयकै स्रष्टि आद, मति वेद स्रष्ट बाँधहु मृजाद ।
बाचा सुन तबही हर विरंच, उठ चले जाँन कारज उदंच ।।२८५
श्रीक्रस्न रहे सुख पद समाय, ललना जुत पलना अंक लाय ।
इत महाविराट रोमन अगार, वैराट भये लघु वीच वार ।।२८६
बपु नवजोबन सब स्याँम वर्न, चिब कँमल विराजत हाथ चर्न ।
पौढे सोइ ओढैं वसन पीत, जलसाई जल विच मोह जीत ।।२८७
जगनाथ जनार्दन नाँम जास, पावत जग जाही सौं प्रकास ।
नाभी मैं उपजे कमलनाल, विध आय ऊपजे तिह विचाल ।।२८८
कमलोदय ताकौं जग कहंत, संग्या तिह जाँनहु इह सिधंत ।
निरनय्र कौं खोजत पद्मनाल, ब्रहु भ्रमत रहे ताहीं बिचाल ।।२८९
पायौ न अंत ताकौ प्रमाँन, उर चिंता वाढी अप्रमाँन ।
ऊपजे जाहि थल गये आय, श्रीक्रस्न करहु मेरी सहाय ।।२९०
कर-कर सुमरन कौं लगे काज, विनती वहु कीनी छोर व्याज ।
वैराट क्षुद्र जल-विच वसाय, जलसाई विस्नू लखे जाहि ।।२९१
उपजे विचगोलक वृह्मड, पौढे समेट जल-वीच पिंड ।
पुन महाविराट के दरस पाय, श्रीक्रस्नचंद्र देखे सुभाय ।।२९२
गोलोक लख्यौ नित क्रस्न-गेह, दुति इधक गोपका-गोप देह ।
सित दीप निवासी विस्नु संग, उपजे विराट लघु वाँम अंग ।।२९३
भुज च्यार लक्षमी सहित भाँम, स्रष्टी पालनकौं स्रष्ट स्याँम ।
तिनकी सहायता लहि तुरंत, विध स्रष्ट करन लागे वृतंत ।।२९४

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सनकाद मांनसी-पुत्र साथ, निपजाये प्रथम ही लोकनाथ।
रुद्र की कला ग्यारह रचंत, ग्यारहौं रुद्र संख्या गनत ।।२९५
उपजे लिलाट विध सोऊ आय, संख्या पुरांन भाखत सुभाय।
वरनन इह कीनी सकल बात, खित नभ जल प्रथ्थी तत्व ख्यात ।।२९६

दोहा

नाभी क्षुद्र विराट निज, पंकज ऊपर पात।
स्वर्ग मृत्यु पाताल सव, तवही रचे जग-तात ।।२९७
जीव चराचर जगत के, वसत वीच वृहमंड।
लघु विराट वपु लेखीयै, येकही रूप अखंड ।।२९८
विध हरो सिव तहाँ वसत है, वृहंमइंड प्रतिवास।
महाविराट रोमन मही, खुद्र विराटहु खास ।।२९९
क्रस्न कीरतन कौं कह्यौ, नारांयन कर नेम।
मुनि नारद के हृदय मह, प्रभु सौं वाढयौ पेम ।।३००
नारांयन कहने लगे, पूजा प्रक्रत प्रसंग।
रहत सोइ सुख रूप सौं, सदाँ क्रस्न के संग ।।३०१

छंद उद्धोर

प्रक्रती पांच प्रधांन, सोइ स्रष्ट काल-समांन।
पूजनै जोग प्रसिद्ध, स्वाभाव सहजै सिद्ध ।।३०२
गनपती माता ग्यांन, जिह नांम दुर्गा जांन।
अरू राधका अरधंग, श्रीक्रस्न गनीयत संग ।।.०३
लक्षमी सरस्वत लेख, सावंत्रि पुन सबिसेख।
इन कला पाँचन आंन, प्रगटी सु जग परमांन ।।३०४
सुन लेहु नांम सुभाय, सुर-काज करत सहाय।
गन कालका धर गंग, सृष्टी सु रूप सुचंग ।।३०५
मङ्गला चंडी मात, तुलसी सु मनसा तात।
निद्रा सुधा निज नाम, वर अगन स्वाहा वांम ।।३०६
पुन दक्षना परभाव, सारूप सिद्ध सुभाव।
इन चिरत कहत उदंत, सुन लेहु नारद संत ।।३०७

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पुन जीव कर्म-विपाक, मुन लेहु ताकी साख।
दुर्गा सु राधा दोय, सुन लेहु चिरत सकोय।।३०८
सरसुती देवी सुद्ध, बल देत जीवन बुद्ध।
राधका मुख सौं रूप, तन प्रगट भई तद्रूप।।३०९
काँमुकी ह्वै कै क्रस्न, पति चाहि कीनेऊ प्रस्न।
जब क्रस्न सुनकै जाहि, सिद्धंत कहेऊ सुनाय।।३१०
मोहि संग राधा मान, पुन अधिष्टात्री प्राँन।
जो तजी नाहिन जाय, सो रही हृदय समाय।।३११
वैकुंठ-वासी विस्नु, सुग्रेह नार सहिस्नु।
इंदरा चित्त उदार, उर-क्रोध जित अहंकार।।३१२
पति करहु हरि कर पेम, निरवाह है रति-नेम।
इंदरा मिलकै आप, सुख सरहु छोर सँताप।।३१३
जग जीव माता जाँन, गुन गाय है हित ग्याँन।
पंचमी माघ पुनीत, पख सुकल लाय प्रतीत।।३१४
स्रष्टो सु करहै सेव, अहि मनुज देव-अदेव।
पुज्जहै तेरे पाय, हित बोध हीय हरकाय।।३१५
विद्या सु लहिहै विवेक, प्रक्रती जाँन प्रवेक।
वर दयौ क्रस्न विचार, पूजा सु कीय परचार।।३१६
सिव विस्नु विध अरु सेस, सनकाद आद मुनेस।
पूजे सु मति हित पाय, सुर मनुज चित सरसाय।।३१७
पूजा विधाँन प्रकार, अब कहत जुत आचार।
पंचमी माघ पवित्र, सुक्ला दिनाँ सरवत्र।।३१८
दिन पूर्व आस्रव दक्ष, पन करै सत्य प्रतक्ष।
रहिकै जितंद्री रात, पूजै सुजन परभात।।३१९
कर स्नाँन कौं नितकर्म, धारना धारै धर्म।
सात्रोक्त तंत्रक सार, घट थपै ऊपर गार।।३२०
प्रथमह सु गनपत पूज, बिध वेद विप्रन बूज।
पूजै सु सरसुत पाय, निज हाथ सीस नमाय।।३२१
धारना करकै ध्याँन, घट वाङ्च पै लहि ग्याँन।
परकार षोडस पूज, सुच करै रीत सहूज।।३२२

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

नैइवेद करकै नेम, पुन धरह ग्रंतह पेम ।
नवनीत पय दध नीक, तिल सेत मोदक तीख ।।३२३
रस ऊख सहित रसाँन, सर्करा-ग्राद समाँन ।
ग्रक्षत सुक्ल ग्रनूप, पुन सर्करा-जुत पूप ।।३२४
पिष्टका मोदक पूर, गोधूँम जव घृत घूर ।
निज केलफल नालेर, बेल के फल ग्ररू बेर ।।३२५
पुन कंद लै हरि-पर्न, बित धरै कछु सित बर्न ।
सित गंध-लेपन साध, ग्ररू पुस्प स्वेत ग्रराध ।।३२६
ग्ररू सुक्ल ग्रंबर ग्राँन, धारै सु इह विध ध्याँन ।
सोगंध माला सेत, सितहार रत्न सहेत ।।३२७
वहु ग्रलंक्रत सित वर्न, चिव धाँम दुई कर चर्न ।
पुस्तक रू बींना पाँन, मनहरत मुख मुसकाँन ।।३२८
सिव वृह्म ग्ररू सनकाद, विध लहत ग्रक्षर वाद ।
वंदना करत विधाँन, धारै सु उरमै ध्याँन ।।३२९
ग्रस्तूत कवच ग्रनेक, साधना कर सविवेक ।
ग्ररू मूल मंत्र ग्रधार, ग्रठ वरन करत उचार ।।३३०

मंत्रः—श्रीं ह्रीं सरस्वत्यै स्वाहा—इति ।

इह मंत्र पर्म ग्रनूप, स्वर कलपवृक्ष सरूप ।
साधना करत समाँन, धारै सु ग्रवचल ध्याँन ।।३३१
जप च्यार लक्ष जपंत, सिध लहै ग्रवरल संत ।
वर्नना कवच विधाँन, पुन कहे वीच पुराँन ।।३३२
जोइ साधना के जोग, लहि सिद्ध ग्याँनी लोग ।
मुनि ग्रादकौ इह मंत, सरस्वती स्तुती सुमरंत ।।३३३

दोहा

श्रीदेवी इह सरस्वती, वैकुंठ कीनौ वास ।
कलह हौन के कारनै, ग्रत चित भई उदास ।।३३४
सब नारद संखेप सौं, इह सुनीयै इतीहास ।
कलुष नसावन सुख करन, संका होय विनास ।।३३५

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

हरि की ये त्रय त्रीय हुई, लिछमी सरसुति लार ।
गंगाहू तैसै गनौ, पति के संजुत प्यार ।।३३६
वसत धाँम वयकूठ मै, कलह भई मति क्रूर ।
वरनत सोई विस्तार कर, दोप करन जग दूर ।।३३७

छंद अरध-हरगीतका

इक समय गंगा आयकैं, परसे सु पतिकै पायकैं ।
भई काँम की मनभावना, मुख मंद-गत मुसकावना ।।३३८
विस्नू विलोकी वाँम कौं, कछु हेत द्रष्टी काँम कौं ।
मुख रहे चितवत मोह कौं, कीय सरस्वती लख कोह कौं ।।३३९
लक्षमी देखी लाग सौं, सुख नाथ भरीय सुहाग सौं ।
समजास कीय वहु सरस्वती, माँनी न मत तौंहू मती ।।३४०
भर क्रोधकैं कंपत भई, गहि क्रुद्ध मति की मति गई ।
बोली सु विस्नु विलोककै, रिस आँसुवन कौं रोककै ।।३४१
घरमिष्ट पति की धारना, कछु कहत हूँ सुख-कारना ।
सम प्रीत राखत स्त्रीय मै, त्रय होय भलहु दुतीय मै ।।३४२
मत विसम सम रति मेल है, खलपती के इह खेल है ।
जाँनी गदाधर जीय को, करतूत पति करनीय को ।।३४३
लक्षमी गंग लुभायकै, चित इधक राखत चाहिकै ।
हमसौं न राखत हेतकै, द्रग देखतै दुख देतकै ।।३४४
मन रमा गंगा हिलमिल्यौ, चित हमहु देखत चलचल्यौ ।
तुम इधक देखत ताहिकै, पख दुहन कै इक पायकै ।।३४५
येऊ मुभामन है उभै, चित संग नित मेरौ चुभै ।
इम करचौ वहुविध आँमना, सरस्वती धारै सामना ।।३४६
श्रीविस्नू देखी सरस्वती, उर-रीस वाढी उंन्नती ।
उठ चले हरि अकुलायकै, जुर सभा-मंडप जायकै ।।३४७
हरि दयौ टारौ हेरकै, वढ सरस्वती तिह वेरकै ।
विसतार कीनौ वाद कौं, मत तजी तीय मरजाद कौं ।।३४८
जव रमा विच मै जायकै, ठाढी भई ठहरायकै ।
द्रग सरस्वती तिह देखकै, बोली सु रीस विसेखकै ।।३४९

T　CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अधबीच हमरे आयकै, थंभी सु जढ-मति थायकै।
जड-रूप होहु जमा-जमी, नद तथा तरु हुय लक्षमी ।।३५०
सरस्वती दीनौ स्राप कौं, पख पाय गंगा पाप कौं।
गंगा सु मन गल्याँन सौं, गमहीन ह्वैगई ग्याँन सौं ।।३५१
इह रीत वचनन उच्चरी, कल लक्षमी स्रापत करी।
नद होहु तुमही नीर की, पापीन गृहता पीर की ।।३५२
अघ-अघी छोरहि आँनकै, सम सलल करत सिनाँनकै।
सुन बचन गंगा सरस्वती, बोली सु इह विध प्रवृती ।।३५३
गंगा सु जावहु गैल कौं, मनुजनन हरनै मैल कौं।
अघ गृहन करहू और के, केउ अकृति जनन कठोर के ।।३५४
नद होहु मो जिम नीर की, सुरसरी सलल सरीर की।
इम स्राप दै इक येक कौं, विनता सुभाव विसेख कौं ।।३५५
श्रीविस्नु आय सुधाँम कौं, वच कहे तीनहु बाँम कौं।
वस होनहार विचारीयै, गिल्ला न देवहु गारीयै ।।३५६
इह कलह-फल लहि आपकौं, सब सहन करहु सराप कौं।
कमला कला-जुत कारना, पुहमी सु लोकप धारना ।।३५७
नृप धर्म धुज गृह नीत सौं, पुत्री सु होवहु प्रीत सौं।
वृष तत्व पाय विसेखकै, लहि स्राप कौ फल लेखकै ।।३५८
पति संखचूड़हु पायकै, मम अंस अंक मिलायकै।
भाँमनी मोही भेटहौ, महाकलह कौ दुख मेटहौ ।।३५९
इक कला नद ह्वै हौ इला, नाँमी सु पद्मा निर्मला।
पापीन पाप प्रहारकै, वसुमती जस विस्तारकै ।।३६०
मिलहौ सु मोही मोद सौं, बहु हेत चेत विनोद सौं।
इम लक्षमी कही औरकै, बोली सु गंग बहोरकै ।।३६१
भुंय जाहु स्रापत भारती, सब भरथ-खंड सुधारती।
तन भगीरथ नृप ताप सौं, ऊधार चावहि आपसौं ।।३६२
पुरखाँन मेटहै पाप कौं, जग करहि गंगा जाप कौं।
जव कहहि सब भागीरथी, परमार्थ हित परमारथी ।।३६३
सामुद्र मोहि सरूप है, भजमाँन सर नद भूप है।
बर करहु जिह बारीस कौं, रुख त्यागीयै दुख रीस कौं ।।३६४

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सरस्वतो गंगा दुई सुनौ, उपदेस देत उराहनौ।
त्रय भ्रात भृत त्रय तीय तहाँ, जुत कलह है देखहु जहाँ ।।३६५
इह जाँन कहत जु आपकौं, सहीयै न फेर सँतापकौं।
वस वृह्मलोक विहारनी, तुम होहु जग की तारनी ।।३६६
पति वेदगर्भा पेम सौं, नित होहु पत्नी नेम सौं।
सिवलोक वसहू सुरसरी, हम भेद नाँहित हर-हरी ।।३६७
रहिहै जु मो-संग ही रमा, छल दंभ रहित लीयै छिमा।
पन वचन मेरौ पारीयै, वयकूंठ धाँम विसारीयै ।।३६८
सरस्वती गंगा कथ सुनी, परचाय श्रीविस्नू पुनी।
मिल त्रहू मन मुरझायकै, लक्षमी हीय लपटायकै ।।३६९
बहु करत सोक विलाप कौं, अहमती निंदत आप कौं।
कर जोर श्रीविस्नू कही, हम कलह सौं गत इह हुई ।।३७०
अब छिमा कर अपराध कौं, अंत पै हरहु उपाध कौं।
उर चहत है हम येछना, वृद आप करहु विवेचना ।।३७१
मिट स्राप हँम तुमसौं मिलै, भल करहु करतै अनभलै।
इह आपही की आँमना, कीजीयै पूरन काँमना ।।३७२
सुन वचन ऐसे सातुकी, पत्नी न जानी पातुकी।
सतगुनी विस्नू सितसभा, पुहमीन परगट तिह प्रभा ।।३७३
बोले सु वचन विचार कौं, निज तीयन के निस्तार कौं।
सुन लक्षमी मम सासना, तुम कलह सहीयै त्रासना ।।३७४
इक कला होवहु आपगा, प्रानींन लीलहु पापगा।
इक कला तुलसी अवतरौ, वर संखचूड़ही कौं वरौ ।।३७५
सरस्वती वृह्म सुथाँन कौं, भल जाय विरचहु भान कौं।
इक कला नद ह्वै है इला, कवि संग मै आधी कला ।।३७६
सिव-सीस वसहै सुरसरी, कल जीव कौं पावन करी।
सिव जटा सीस प्रसंगकै, गुन वढहि केते गंगकै ।।३७७
जिह कला जहाँ-तहाँ जागहै, उर हमहि सौं अनुरागहै।
कर साथ मम पूरन कला, निज धाँम वसहै निस्चला ।।३७८
इल वीच कलजुग आयहै, वसू धर्म कौं विचलायहै।
हुय वर्ष पाँच हजार कौं, ऐहौ सु धाँम उधार कौं ।।३७९

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पुन लक्षमी कीय प्रस्न कौं, बल्लभा प्यारी विस्न कौं।
हम त्रहु नद तरु होयहै, खित पातकी अघ खोयहै ।।३८०
मल गहहि जुत मंदाकिनी, जल रूप सौं तीनहु जनी।
अपवृत्त ह्वैकै अंग मै, सु बसहिहि किम हरी संग मै ।।३८१
उद्धार-कारक आँमना, कहीयै जु पूरन काँमना।
जब विस्नु बोले जाहि सौं, अभिमती उर अवगाहि सौं ।।३८२
सुन इंदरा कथ सरस्वती, गंगा जुतै पावन गती।
अघ-अघी छोरहि आयकै, पुन रहैंगे सुख पायकै ।।३८३
आसीस लगहै आप कौं, जग करहि तुमरे जाप कौं।
सुन वैस्नवा जस सुक्रती, पतिवृता नारी प्रक्रती ।।३८४
तेइ आयहै तव तीर कौं, भर संतजन की भीर कौं।
पग तीर वैठ पखारकै, धर धोयहै चित्त धारकै ।।३८५
अरु विस्नु नाँम उचार सौं, वपु करहि मंजन वार सौं।
द्रुत हरहि तुमरे दोष कौं, मिल सोइ देहै मौख कौं ।।३८६
मम भक्त की महमा महा, कछु मोहि सन जावत कहा।
अघ मेट तुमही उधारहै, कल वीच करत करारहै ।।३८७

दोहा

सरस्वत गंगा स्त्राप सौं, आप कला सौं आय।
भरथ-खंड मै भारथी, सलता भई सुभाय ।।३८८
सरस्वतदेवी स्त्राप सौं, गंगाहू कर गाँन।
भरथ-खंड भागीरथी, नद सोई भई निदाँन ।।३८९
पद्मा-नद पद्मावती, भरथ खंड विच भाग।
विस्नू प्यारी अत विमल, रहत भरी अनुराग ।।३९०

छंद त्रोटक

कल हायन पाँच हजार कढै, वसुधा-विच पाप-प्रवाह वढै।
बहु तीरथ आद वृंदावनकै, पतनी त्रहु संग लऐ पनकै ।।३९१
मिलहौ हम सौं तुम सुद्धमती, सत संगीय संग घने सुक्रती।
वयकूंठ के धाँम विहारहुगे, तनहू जन के बहु तारहुगे ।।३९२

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कल हायन की गनती करतै, पंच दूंन हजार जिही प्रवृतै ।
गिलका सिल सालगराँम गनौ, द्रढ भाव जुतै सिव सक्ति दुनौ[1] ।।३६३
जगनाथहु लौं सब जावहिगे, पुहमी नहो देव पुजावहिगे ।
वृत तर्पन स्राध रू वेद-विधी, सुभ-कर्म हरी-जस की समृधी ।।३६४
सत सास्त्र नही रहिहै-स कथा, वरनास्रम जाँनहै धर्म वृथा ।
भुँय पै मदपेईय मास-भखी, छल दंभ विथारहि क्रूर चखी ।।३६५
सठ हिंसक होवहै लोग सबै, जग सौं उठजावही देव जबै ।
मिट जातीय-भेद गहै महिला, कुल ऊँच गनै नही नीच कुला ।।३६६
पितु देय न थातीय पुत्रन कौं, कुपती जिम ग्रेह कलित्रन कौं ।
अपनौ-अपनौ वित आप भतै, विलसै सुत नारीय हू वरतै ।।३६७
करहै विनता कुलटा की क्रीया, सनमाँन न पावहिगी सुकीया ।
पति संक नही पहिचाँनहिगी, मन माँनै जहाँ रति माँनहिगी ।।३६८
करहै नरहू विपरीत क्रीया, करनीन सनेह जु पै सुकीया ।
गनका तिन सौं अधकी गनहै, मग लाज विहीन जिही मनहै ।।३६९
कुल की मरजाद न भायन की, सिसुनी भगनी न सगायन की ।
तज जोनीय मात की और त्रीया, करहै सवही पसूजात क्रीया ।।४००
विन कर्म त्रवर्न विचार विना, घट-बीच उपज्जहि धर्म घ्रना ।
करकै मन माँनीय हू करनी, अपनी मति माँनहि उद्धरनी ।।४०१
तजहै उपवीत दुजातमहू, अवलोक न ग्रंथन आतमहू ।
तज सधन-बंधन जाप त्रई, मत धारहि सास्त्र मलेछ मई ।।४०२
पढनै विन वेद पुराँनन कौ, गम भूल भयै उर ग्याँनन कौं ।
करहै कोऊ दाँन कदाचित पै, हर वात करै जस के हित पै ।।४०३
दुहिता वित लै दुज देवहिगे, सोई खाय विखै सुख सेवहिगे ।
उठ जावहिग जन आस्तिकता, नित फैल वढावहि नास्तिकता ।।४०४
नृप होवहि नीत विना अनई, कुमती पर पीड़ प्रजा करई ।
हरनै छित के वित हेरन मै, सुध राखहि साँझ-सवेरन मै ।।३०५
जड़ जीव दया न मया जिनकै, धृमकौं तज लोभ लगे धनकै ।
परजा हुय पीड़त काल परै, मुरझावत आँतन भूख मरै ।।४०६

१ दोनों ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वरखै वरखा नहि वारहू की, सस वारहभार सुधारह की।
तरू सुस्क भये फल-फूल तजै, अचला नही घास-त्रना उपजै ।।४०७

वसहै नही गायकहू वजुला, कवरी किन ह्वै पीयरी कजला।
सलता सर सूक रहै समकै, जिह पूरकै धूर रही जमकै ।।४०८

रमनी नर होवहि पापरता, गुन सत्य-विहीन रू पुंन्नगता।
मरजादहु वेद कौ वाद मिटै, प्रभु विप्र जसू गृह मै प्रगटै ।।४०९

सुच भूँम जहाँ पुर संभल की, करहै हरी रूप जवे कलकी।
सठ धूत मलेछ सँवार सबै, जगती अघ टारहि भार जबै ।।४१०

अस की करकै असवारीय कौं, खल खग्गन लाय खवारीय कौं।
कछु कालकै अंतर मेट कली, थित सुछ्छ सुधारहि भूम-थली ।।४११

जल कौं वरसायकै बोर जमी, उभलै फिर सागर की उरमी।
जल ही जल होवहि पूर जमा, सविता तप बारह येक समा ।।४१२

करहै जल सोखन सूर-कला, अपवित्रता मेटहि नाँम इला।
अप दोख मिटावहि अंतर कौं, निपजाहुव होय निरंतर कौ ।।४१३
जमहै तरु अंकुर बीच जमी, सरहू सलता हुय नीर समी।
वढहै तरु-वेलीय वीचन मैं, वहु फूल-फलीन वगीचन मै ।।४१४

अनहू त्रन आदक ओषध की, रचना वनहै सिधकी-रिधकी।
अवलोकन तै फिर मात अजा, परपूरन वाढहिगी परजा ।।४१५

कल-काल के अंत मैं सत्य-कला, अपटंतर जागहिगी अचला।
धरमिष्ट धुरंधर वेदधृती, समी गर्भ प्रचार करै सुमृती ।।४१६

जिग सोम रू होम की पाय जथा, करहै ऋतु-कर्म पुराँन कथा।
तत रूपीय धर्म त्रवर्नन कौ, केऊ उत्तम कारज करनन को ।।४१७

क्रम ही क्रम सौं जग बोध करा, वसुधा निज सोध करै विपरा।
पुन खत्रीय खेल प्रचारहिगे, नृप-नीतहु कौं निस्तारहिगे ।।४१८
क्रति बैसन सूद्रन की करनी, धनहू अनहू उपजै धरनी।
सुख संपत होवहि जाहि समै, कोऊ पाप के मारग नाँहि क्रमै ।।४१९

विनता सब होय पतीवरता, करनी पति सौं कुल की करता।
रितु-गाँमीय ह्वै पतिहू रमता, सुत और सुता जुत ह्वै समता ।।४२०

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दोहा

सतजुग मै अधरम सकल, वसुधा जात विलाय ।
च्यार पाय धरमहु चलत, वरतत काल विहाय ।।४२१
त्रेता मै तिह तीन पद, द्वापुर माही दोय ।
इक कलजुग के अंत मै, हथ ह्वं लोप सु होय ।।४२२

छंद द्वं-अख्खरी

काल सरूप लगे पुन कहनै, नारांयन नारद-प्रत निरन ।
सात वार तिथियाँ पुन सोरै, बारह मास विचार बहौरै ।।४२३
रितु षट पक्ष दोय ह्वै रूरे, पुन तहाँ अयन दाय है पूरे ।
पहर च्यार कौ इक दिन पेखौ, लेवहु इतौ रात कौ लेखौ ।।४२४
तीस दिवस कौ मास तुलावै, वरस मास बारह विगतावै ।
संम्मत्सर परिवत्सर सोई, कहै पंचधा भेद सकोई ।।४२५
मनुज-लोक इक हायन माँही, देवन के इक रात दिखाई ।
मनजन त्रय सत साठ जुगंतर, इक जुग सुरन होत इह अंतर ।।४२६
देवन-जुग इकहंतर दावै, येक मनंतर काल उपावै ।
येक मुनंतरहू के अंतर, करत राज मघवा कालंतर ।।४२७
मघवा आयुस येक मुनंतर, करत प्रमाँन इही कलपंतर ।
इह प्रकार इंद्रहु अठविंसत, विध के रात दिवस मै विनसत ।।४२८
इक सत आठ वरख विध आयू, प्रलय होत प्राकृत परजायू ।
प्रथमी मै जल ही जल पसरै, अंतरीक्षहू तै बहु उसरै ।।४२९
वृहमा विसन सिंभु मुनि वृंदा, सब हो वृह्मलय होत समंधा ।
प्रकृत वृह्म रूप मै पैठत, आप-आप आकर्षन ऐंठत ।।४३०
प्राकृत कलप कहत इह पाई, विध के मरन प्रजंत बसाई ।
देवी येक निमेष द्रगनकै, जुत वृहमंड नास ह्वै जनकै ।।४३१
उपजत है उनमेषइ सारा, विनसत उपजत वारमवारा ।
जाकी गत कोऊ नहीं जाँनै, आप-आपनी मति अनुमानै ।।४३२
मूल प्रकृती सोई माहामाया, करत विस्नु वृह्मादिक काया ।
विवध भाँत गुन तन विलगाये, येक-येक सौं येक उपाये ।।४३३

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पांच प्रक्रत सोई उपजावत, प्रथक-प्रथक सक्ती-वल पावत।
इही राधका सक्ति उपासी, नग सत स्रंग की होय निवासी।।४३४
करे हजार वरख सुर केरा, सरस सु वपु-तप साँज-सवेरा।
प्रक्रत मूल हुई तव परसन, दयौ आय राधा कौं दरसन।।४३५
चंद्रकला राधा चित्र छीनी, भई सनेह सांतरस-भीनो।
क्रस्न दये वर हित-चित कीले, रूप सच्चदानंद रसीले।।४३६
लाय अंक लीनी लपटाई, करकै पन वर दयौ कनाई।
अवचल रहौ मोर उर-अंतर, विछुर न हो कबही बहुरंतर।।४३७
इह कह क्रस्न लई अपनाई, करी सपत्नी ताहि कनाई।
हिमगिरपै अपने तन हीता, साध्यौ तप दुरगा सप्रबीता।।४३८
वरख सहँस देवन के बीतैं, पायौ बर सु मूल प्रक्रती तैं।
भई पुज्ज जग-मात भवाँनी, सुर नर नाग सकल सुखदाँनी।।४३९
गँधमादन पर्बत पै गिरा, सुरके लाख बरख अनुसरा।
तप कर मूल प्रक्रत सौं ताही, माता पुज्ज भई जग-माही।।४४०
सतजुग लग लिछमी तप साधा, ऊत्तँम पुस्कर-धाँम अबाधा।
मूल प्रक्रत वर लै मन मान्यौ, जग-संपत दैंनौ तिह जाँन्यौ।।४४१
मलयाचल सावंत्री माँनी, साठ हजार वरख तप साँनी।
मूल प्रक्रत ही सौं वर मिलकै, आपन रूप भई अवचलकै।।४४२
सौ मन्वंतर सिव-तप साध्यौ, अलख-रूप प्रक्रती आराध्यौ।
जिह प्रसाद ह्वै कै मृत्युंजय, भव विचरत है त्याग काल-भय।।४४३
सत मन्वंतर विस्नू इक सम, साधन कीय अत तप वपु संजम।
जुगत विस्व प्रतिपालन जाँनी, प्रक्रत मूल सेती परमाँनी।।४४४
अज तप करकै स्रष्ट उपाई, गृंथन वेद पुरांनन गाई।
दस मन्वंतर लग अत-दारुन, क्रस्न करचौ तप अपनै कारन।।४४५
परमवास गोलोक ही पायौ, संजुत गोपी-गोप सुहायौ।
मूल प्रक्रत-आराधन मेका, और देव भये पुज्ज अनेका।।४४६

दोहा

पसरत ही प्राक्रत प्रलय, जलकौ वाढचौ जोर।
बूड़ी सबै बसुंधरा, अतल-वितल चहु ओर।।४४७

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पुन कैसे परगट भई, विस्व वनावत बेर।
बिच कैसै परजा वसी, घर ग्रांमन कौं घेर ।।४४८
नाराँयन नारद कहत, सुनीयै परम सयाँन।
जिह प्रकार प्रगटत जमी, वेला पाय विधाँन ।।४४६
मधुकैटभ के मेद सौं, वसुधा पाई वृद्ध।
धर प्रवाह है नित्य धुर, परजा धाँम प्रसिद्ध ।।४५०
पुस्कर मै हमहूँ प्रतै, कही धर्म इह कथ्थ।
सो इतीहास प्रमाँन स्रुति, तुमहु सुनावत तथ्थ ।।४५१

छंद मौतीदाँम

प्रथी ग्रनु जाँनहु नित्य प्रवाह, मिलै केऊ वार प्रलै जल माह।
करै जब स्रष्टि इही करतार, वसू प्रगटावत वारहि-वार ।।४५२
वन्यौ मन ग्राद सौं रूप विराट, वढचौ सोइ रोमन छिद्रन वाट।
करचौ तहाँ उत्पत पंचीय कर्न, भई वसु थापत लोकन भर्न ।।४५३
विराट के रोम विखै वृहमंड़, उपज्जत ठौरही-ठौर ग्रखंड़।
सुधारत सागरहू धर संग, ग्रनूपम क़ंतर स्रंग उतंग ।।४५४
चंद्रादिक ग्रादक हू ग्रह-चाल, विरंचन संकर विस्नु विचाल।
विसंभर संकर-लोक विरंच, पतालकै ग्राद लौ स्वर्ग प्रपंच ।।४५५
जहाँ-तहाँ दीसत विंव जितेक, तहाँ-तहाँ भूम विभाग तितेक।
प्रलै-जल लीन करी पुहमीन, तहाँ रहि ऊपर फेर तिरीन ।।४५६
विसंभर होयकै रूप वराह, उधारीय ताहि हृदै ग्रवगाह।
निरंतर भूँम ग्रधिष्टा नार, वराह सौं राचत संग विहार ।।४५७
इला हरि रूपही की ग्ररधंग, विचार मै नाँहिन है कछु विंग।
निपायेऊ ग्रंगज मंगल नाँम, वसू इह ग्राद वराह की वाँम ।।४५८
वखाँनत ताहीय कौ वरतंत, पुहंमीय ग्राद रू ग्रंत प्रजंत।
विनै विध किन्नीय पाय विचार, वराह कौ रूप धसे विच वार ।।४५६
धरा कँह ढूढतकै धर धंख, हथ्यौ तव दाँनवहू हर नंख।
सुधारीय भूँम समंद समंझ, कुलीनस ऊपर ज्यूँ दल कंज ।।४६०
वनायेऊ तामह विस्व विरंच, प्रकासत ताहीय सौं परपंच।
ग्रधिष्टत देवीय ताही की ग्राद, ग्रनोग्रन राचत रूप उपाध ।।४६१

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सोई पुन काँमुकी ह्वै हरि-संग, उपायकै खेलीये खेल अनंग ।
विते सुर हायन येक विहार, मिले सुख संग गह्यौ तन मार ।।४६२
मुरछछत होय गई छित मंड, छके रत खेल दई हरी छंड ।
पतीवृत नार गनी जुत प्यार, करी तिह पूजन अंगीयकार ।।४६३
धरचौ उर ध्याँन सुगंधीय धूप, अमोलख पुस्प चढाय अनूप ।
विलेपन नागज औ नइवेद, वसुंधर पूजन की विध वेद ।।४६४
वराह नै फेर दयौ वरदाँन, विचारकै विस्व अधार विधाँन ।
निसा मिल पूजहिगे नर-नार, प्रजा जुत वाढहिगे परवार ।।४६५
लहै धाँन-धाँनहू वृद्धीय लोय, करै नह विग्रह चालहू कोय ।
सुरालय ग्रेह अरंभ सु माग, तथा कोऊ वापीय कूप तड़ाग ।।४६६
सुरासुर पुज्जहि गंध्रव सिद्ध, नरेस्वर लाभ लहै नव-निद्ध ।
करैं नह मूढ कोऊ इह काँम, धरा तज देवहू ताही कौ धाँम ।।४६७
दरद्रीय होय भूमें दस देस, लहै नही संपत कौ सुख ल्हेस ।
वराह की वात धराह विचार, करचौ वरदाँनहू अंगीयकार ।।४६८
वराह सौं वोल कही धर वात, सँभारहु स्त्रष्ट कौं आप सु हाथ ।
करै मुहि ऊपर ये कोऊ काँम, नही तिह राखहुगी जहाँ नाम ।।४६९
सिवा-सिव मूरत सालगराँम, दीया मनी-माँनकहू जप दाँम ।
जनेऊअ पुस्कर-पुस्प जमाय, कपूर रु चंदन धूप कमाय ।।४७०
जुतै तुलसीदल पूजन-जंत्र, कपूरहु संख सुवर्न इकंत्र ।
इतो विन आसन मेलहि अग्य, सहूँ नही भार हरी सरवग्य ।।४७१
नछत्रहु रौद्रीय आद मै नेम, अत्री अपवित्र रहूँ गत येम ।
करै कोऊ भूल न पूजन-काज, अधोगत जावहि होय अकाज ।।४७२
नही मोहि दोख लगावहु नाथ, हरी इह वीनती जोरकै हाथ ।
वराह जू पायकै अंग विराँम, धरा सुन वात गये निज धाँम ।।४७३
जन्यौ पुन मंगल पूत जमीन, पवित्रहू तेज कौ पुंज प्रवीन ।
पुजी धर आद वराह परंम, वसुंधर पुज्जीय फेर वृहंम ।।४७४
सवै धर पुज्जीय देव-समाज, मनु मनुवंसिन के माहाराज ।
जमी समी पूजनकै जप-जंत्र, माहाँमुनी जाँनत है दुज मंत्र ।।४७५
मही इह माँनीयै विस्व की मात, जमायकै पालत जीवन जात ।
अधारह तत्वन की जुत आप, थिरा थिरकी न विसंभर थाप ।।४७६

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दोहा

क्षेत्र पुंन्यदायक खिती, भरथ-खंड सब भंत।
नारांयन नारद-प्रतै, वरनन लगे वृतंत।।४७७
जनमेजय नृप व्यासजू, वरनी जाकी वात।
सोनकाद सौं सूतहू, खित की वरनत ख्यात।।४७८

छंद भुजंगप्रयात

भरे पुन्यहू पापहू भूमका पै, जिही सुक्रती अक्रती लेत जापै।
सुनौ ताही आख्यांन कौं जो सुहावै, दुखी औ सुखी स्वर्ग औ नर्क दावै।।४७९
खिती विप्रकौं देत जो पुन्य-खातैं, करै जोर संख्या जिही रेनुका तैं।
सुखी होयकै वर्ष येते सुहासा, वसै धांम वैकूंठ कैलास-वासा।।४८०
दयै ग्रांम की भूम मैं धांन-दांना, सु पै अग्रनी होय बांधै सुथांना।
तरै आपहू आपनै गोत तारै, वसै सो मनीदीप दोखं विसारै।।४८१
जमी दत्त दीनी हरै ह्वै उदासा, वसै सूर-चंदा जितै नर्क-वासा।
दरद्री तही वंस के होय दोखी, माहा पातकी होय होवै प्रमोखी।।४८२
धरा गोचरा कौ हरै सीम धोरै, बसै नर्क मैं आपनौ बंस बोरै।
तड़ागा गऊ गोट वा भूम तेती, खिली मै निपावै सोई नाज खेती।।४८३
असी-पत्र नर्कै वसै सो अग्यांनी, प्रमेष्टी वितै दीह जौलौ प्रमांनी।
सरं कूप वापी खनावै सु स्वांमी, निकारै विनां पिंड कागार नांमी।।४८४
पसू ज्यां नहावै पीयै जांहि पांनी, परै नर्क कै कीच कै वीच प्रांनी।
करै बीर्ज कौ त्याग येकंत कांमी, गनौ ताहि प्रांनीन कौं नर्क-गांमी।।४८५
भिगोवै जिते रेनुका भूमका के, जमै रोरवा नर्क मैं प्रांन जाके।
इकै पाय आदं जही आदरा कौ, खंनै कूप वापो तथा खादरा कौ।।४८६
उदक्या पिछांनै नही भूम-अंगी, क्रमी दंस नर्कं परै सो कुसंगी।
तलाई हरै और कौ कूप तापै, जमावै तरू वाग के आप जापै।।४८७
थपै वंस परजंत लौ बांध थाती, घुलै सप्त कुंडा विचै नर्क घाती।
वृहंमा दिवसं जवै ही वितीतै, नही छूट सक्कै सोई नारकी तै।।४८८
खनै और के ताल पै खात काहू, नही पिंड देवै तही नाथ काहू।
क्रीया स्राध की जो करै है कुकर्मा, भजै नर्क मै जायकै भीत भर्मा।।४८९

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

महो ऊपरै जो दसाकर्ष मेलै, झरै नैन अंधा फिरै काठ झेलै।
थपै भू विना आसनं संख थोड़ी, कली दूसरै जन्म मैं होय कोड़ी ।।४९०
मही पै धरै स्वर्नहू हीर-मोती, जँही अंत पै आँख की जाय जोती।
विना आसनं मूरती सिभु वाँमा, धरै भूंम पै लिंग विस्राँम धाँमा ।।४९१
सतं सोय मन्वंतरं कष्ट सेवै, दई ताहि कौं नारकी वासदेवैं।
सिला सालग्राँमं रिचा जंत्र संखं, पुजै चंदनं पुस्तका फूल पंखं ।।४९२
कपूरं गऊरोचनं कासमीरा, जपै जाप रुद्राक्ष-माला जँजीरा।
जटादर्भ वृंदादलं कज्जला कौं, गुहो जो जनेऊ न धारै गला कौं ।।४९३
विना आसनं जो वसू पै वसावै, जोई पातकी नारकी जीव जावै।
सधै होमना भोम पै दुग्ध सीचै, वसै अंत कौं अधमी नर्क वीचै ।।४९४
गृहं चंद्रमा सूर कौं राह ग्रासा, उदै होय भूकंप उल्का अयासा।
खनै भूंम पै कूप औ नीम खाई, जोई जीव वासौ करै नर्क जाई ।।४९५
कछू भूमका की सुनी जो कहाँनी, प्रभाका सुनै मुक्ति ह्वै जाय प्राँनी।
भवँनं वनै जाही सौं भूँम भाखै, रही कस्यपी कास्यपं स्याहि राखै ।।४९६
चलै नाँ अञ्चलाहू चलाई, भरै विस्व विस्वंभरा की भलाई।
नही अंत जाप्नौं कहै है अनंता, प्रथू-कंन्यका कौ प्रथंमी प्रजंता ।।४९७
धरा पुन्य औ पाप की धारनाँ कौं, कही ग्याँन-अग्याँन की कारनाँ कौं।
पढै जो सुनै मोक्ष कौ पंथ पावै, अहंकार कौं नाहि प्राँनी उपावै ।।४९८

दोहा

धरा कथा सुन धारना, आद वराह उदंत।
पूछै नाराँयन प्रतै, श्रीमुनि नारद संत ।।४९९
सरस्वती के स्राप सौं, गंगा कीनो गाँन।
आई भारथ-खंड इल, वरनहु सकल विधाँन ।।५००

छंद द्वै-अक्खरी

नाराँयन नहचल निर्वाँनी, कहनै लागे गंग-कहाँनी।
नारद श्रवन करन कौं लागे, उर अदभूत चिरत अनुरागे ।।५०१
सलता विस्नु-सरूपनी सोई, कहत विस्नुपदि ताहि सकोई।
किह जुग म विनती किह कीनी, भरथ-खंड आई हित भीनी ।।५०२

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पुंन्य-दायका पाप-प्रनासन, देत च्यार फल अपने दासन।
कहीयै सब याही की कथा, जासौं होय विस्व-गति जथा।।५०३
जब नारांयँन अंतरजाँमी, सब जग-जीवन के हित स्वाँमी।
नारद सौं बोले जुत नीती, विगत स्रवन करीयै जोई बीती।।५०४
भयौ सगर नृप सूरजवंसी, पुंन्य भाग मैं सोय प्रसंसी।
बैदर्भी राँनी तिह व्याही, सैव्या दूसर नार सुहाही।।५०५
जिह बैसव्या पहिलै जायौ, सुत असमंजस नाँम सुहायौ।
वैदरभी सुत हेत विचारचौ, धूरजटी पै तिह तप धारचौ।।५०६
गर्भ रह्यौ तिह कृपा गिरीसा, दुहिता सुत जनमत नही दीसा।
वरख येक सत जबही बीतैं, राँनी विनय कीन हर हीतैं।।५०७
परचौ उदर बाहर पल[1] पिंडा, मिलै न आकृत रूंडहु-मुंडा।
रोदन करन लगी जब राँनी, विप्र वेख कर सिव विग्यांनी।।५०८
काट-काट कै पिंड सकोई, साठ हजार खंड कीय सोई।
पुत्र भये अवइव[2] तन पूरे, साठ हजार तेज बल सूरे।।५०९
पुत्रन कौ बल सगर पायकैं, जग्य करन सोई लग्यौ जायकैं।
अस्वमेध कौ जब अस छोरचौ, छल कर तँही इंद्र नैं चोरचौ।।५१०
कपलमुनी की वीच किंदरा, अस कौं बाँध्यौ जाय अंदरा।
तिह सुत लागे ढूढन ताही, जाय जगाये कपल जहाँही।।५११
भसम भये देखत सब भाई, उबरचौ नही येकहू आई।
सगर भयौ सुत सौक सुनंता वँह वन गयौ राज-तज अंता।।५१२
रह्यौ येक सुत सैव्या राँनी, असमंजस नृप भये अगवाँनी।
दुरगत जिह भ्रातन की देखी, लावन पावन गंगा लेखी।।५१३
तप लख[3] वरख करत तन त्याग्यौ, अंसुमाँन तिह सुत अनुराग्यौ।
लाख वरख तप तिह वपु लायौ, पै कहुँ गंग पतौ नही पायौ।।५१४
भयौ नृपत तिह सुत भागीरथ, पुन लागौ तप करन पुंन्य-पथ।
वैस्नव-मत्त सोई विग्याँनी, धरा नगर त्यागी रजधाँनी।।५१५
पुन श्रीकृस्न भये उर परसन[4], दयौ आय भागीरथ दरसन।
कोट सूर की प्रभा कनाई,[5] मंद-मंद अधुरन मुसकाई।।५१६

१ मांस। २ अवयव। ३ लक्ष, लाख। ४ प्रसन्न। ५ कन्हाई=कृष्ण।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मुरली की धुन करत मनोहर, वय किसोर माधव गोपीवर।
भगत-वचल[1] सुंदर तन भीनै, भुगा वस्न[2] पीतांबर भीनै ।।५१७
विजुरी-सम तिह प्रभा विराजत, लाख काँम की दुति लख लाजत।
रतन जटत सिर मुकट रहाँही, मोर-पंख राजत तिह माँही ।।५१८
मोहत उर तुलसी की माला, वंकु-भृगुट अरु नैन विसाला।
आसपास मुख छुटी जु अलकैं, झाँई बीच कपोलन झलकैं ।।५१९
द्वै-भुज मनहु चंपकी डारैं, सुवरन मनि केयूर सँवारैं।
पुन मनिबंधन कंकन पहरै, चिव साँमन दाँमन की चहरै ।।५२०
सुक्षम हाथ अँगुली की सोभा, चंपक-कली अली मन छोभा।
पद-पंकज हीरक-नख पंती, दुति ताकी दीसत दमकंती ।।५२१
साखी जीव राधका स्वाँमी, जग सबही के अंतरजाँमी।
परं प्रकृत सोई भक्त पियारा, निरगुन-सगुन रूप तै न्यारा ।।५२२
द्वै-भुज रूप भगीरथ देख्यौ, विस्मय टरचौ अनंद वसेख्यौ।
कर परनाँम स्तुति तिह कीनी, भक्त-प्रवाह सांतिरस-भीनी ।।५२३
उर की जाँन नृपत की इछ्या, पुन वर दीनौ ताहि प्रतछ्या।
वंस-उधारन तोहि वडेरा, तोह चहत गंगा मत तेरा ।।५२४
सलता हुय चालहि- तुहि-संगा, गिरा उचारत गंगा-गंगा।
इह कहकै गंगा कथ आखी, सरसुति स्राप दयौ हम साखी ।।५२५
कै भागारथ-संग भरथ-खंड मै (कै), चली जाहु तन इही छंडकै।
सलता ह्वै तुम तुरत सिधारहु, तोय धोय नृपकौ कुल तारहु ।।५२६
सीतल पवन तोहि लागत सम, कुल भागीरथ मिटहि दुरतक्रम।
मोहि पारषद ह्वै निज मंदर, सबही आय बसहि तन सुंदर ।।५२७
पवन लगन सौं होय पुनीता, जग के जीव जायगे जीता।
दरसन तै होवत फल दूनौ, स्वर्सन तै होवत अघ सूनौ ।।५२८
मौसल करै स्नाँन तो माँही, जनम-जनम के पातक जाँही।
कर संकल्प सिनाँन सो कीजै, कोटसेस फल नही कहीजै ।।५२९
सिव विध विस्नु न कहनै समरथ, पै मुनी कहा वरनै परमारथ।
मूसल ज्यूं डुबकी जल मारै, वरनत फल ताकौ विसतारै ।।५३०

१ भक्त वत्सल। २ वसन=वस्त्र।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

करत भसम अघ जनम-जनम के, पयसु ँनि गंगा प्रनम-प्रनम के ।
विधवत स्नान तीस गुन वाधू, सूर सक्राँत स्नान कह साधू ।।५३१
सव संक्रांत जेम सविसेखौ, दिवस अमावस इह विध देखौ ।
काती मास पूर्नमा केरौ, येक-येक सौं फल अधकेरौ ।।५३२
अक्षय नवमी तासौं इधकी, सुख पुन दाता रिधकी-सिधकी ।
माघ सुक्ल सप्तमी महाँना, भीस्म अष्टमी पु ंन्य भराँना ।।५३३
असोकाष्टमी-फल अधकेरौ, कहत राँमनवमी हू केरौ ।
नवरात्री थापन दिन नीकौ, दुगन दसहरा है दसमी कौ ।।५३४
परव वारुनी तासौं पावन, माहाँ वारुनी पाप मिटावन ।
इंदु गृहन सौं सूरज इधकौ, वहुत पु ंन्यदायक बिध-बिध कौ ।।५३५
अर्धोदय सूरज अधकाई, सो फलदायक होत सदाई ।
क्रस्न करचौ या रीत कथन कौं, पावन गंगा भूम पतन कौं ।।५३६
इह गंगा तव वात उचारी, मेरी अरजी सुनहु मुरारी ।
इह मोहि हीयै अँदेसौ आवत, जाहि मिटावहु पुन मै जावत ।।५३७
पुहमी विच उपजत बहु-प्राँनी, पाप धोय है मेरे पाँनी ।
मेटहि कवन इही अघ मेरौ, घबरावत दीय नाथ घनेरौ ।।५३८
दूसर बात सुनहु इह देवा, भली-भाँत जाँनत तीय भेवा ।
पति-विन सु ंन्य रहै नही पतनी, ऋतु होवहि तऊ कहै कुक्रतनी ।।५३९
यातै कहहु जतन कोऊ ऐंसौ, जाहर दोष लगै नही जैसौ ।
इल पै रहकै कव मै ऐहूँ, प्रभू तेरौ दरसन पुन पैहूँ ।।५४०
इनकी कहीयै सुखद उपाई, जासौं उर-संसय मिट जाई ।
विनय सहित गंगा सुन वाँनी, कही क्रस्न पुन सत्य कहाँनी ।।५४१
जैहौ भरथ-खंड मै जेही, द्रवत-रूप तुम ह्वै हौ देही ।
विरह मोर व्याकुल ह्वै वहिहै गहर गँभीर समुद कर गहिहै ।।५४२
संगम कर तुम होहु सुखारी, पति तेरौ करहै हित प्यारी ।
नाराँयन इह नाँम निपाही, मेरौ रूप रहत ता माँही ।।५४३
येक रूप जाँनहु तुम यातै, जग मै दोस लगै नही जातै ।
लछमी-रूप तु ँही है ललना, चितवत मोहि सदाँ मग चलना ।।५४४
पाँच हजार वरष कलि पाछै, इही रूप मिलहौ तन आछै ।
मेरे गृह वैकूंठ मिलैही, भरथ-खंड सौं ऊठ भलैही ।।५४५

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

स्राप सरस्वती रहै सोऊ, इह वाचा मैं कहत अगोऊ।
पाप त्यागहै तो मह पापी, करहु न संसय ताहि कदापो ।।५४६
भक्त मूल प्रकृत वहु भारथ, पुरख-रूप वेता परमारथ।
पाव पखारहि जल मै पैठत, बिघन दूर करहै तट बैठत ।।५४७
होय पवित्र वहहु हिल-मिलकैं, कहा करहै कोऊ पापी कलिकै।
गंगा गंगा नाँम गिरा सौं, जाय पुलाय अधम अघ जासौ ।।५४८
ध्याँन रूप तोहि गंगा धारं, तरै आप अपनौ कुल तारै।
मृतक हाड़हू परै जु माही, जनम-जनम पातक मिट जाही ।।५४९
भागीरथी सुनहु इह भेवा, देवी-लोक वसहि हुय देवा।
विस्नुपदी कहि विस्नू-विस्नू, सो त्यागहि तन कोय सहिस्नू ।।५५०
रतन-विमाँन बैठकै रूरे, परम-रूप भेटहि पद पूरे।
प्रवर-पारषद होवहि प्राँनी, बाचा इह हम साच बखाँनी ।।५५१
वृह्मकल्प लौ केउ जुग वीतै, तेऊ फिरै नही फेर तँही तै।
ग्याँन करहि तेरौ जल-गंगा, पाँन करहि कहु ध्याँन प्रसंगा ।।५५२
वसहि सोय वैकूँठहि-वासा, वँहाँ तै कबहु न होय उदासा।
गत अग्याँनी इह विध गाई, ग्याँनी की का कहै गुराई ।।५५३
चित सुध ह्वै नईवेद चढावै, खाय आपहू और खवावै।
जो फल होय जाहि कौं जैसौ, तोय पीयै गंगा-फल तैसौ ।५५४
मूल प्रकृत सेवै मम मूरत, पुज्य चढाय नाँम मुख पूरत।
वहै धाँम है पावन वैसौ, तेरौ तट गंगा है तैसौ ।।५५५
जीवन मुक्त मोर-जन जैसै, तोहि सिनाँन-जुक्त फल तैसै।
गंगा इतनी वात गनाई, जाँनहु सत्य-सत्य कर जाई ।।५५६
भागीरथ सौं पुन हरि भाख्यौ, उर गंगा हित तोहि अभलाख्यौ।
पूजन करीयै भक्ति परायन, गावहु स्तुत कीरती गायन ।।५५७
गवन करहि भूतल मै गंगा, पापी तारहि तोय प्रसंगा।
अंतरध्याँन भये कहि येती, श्रीहरीहू अपने मुख सेती ।।५५८

दोहा

नृप भागीरथ ग्याँन-निध, सुन हरी कौ उपदेस।
पूजा ध्याँन प्रचारनै, वंचत काज विसेस ।।५५९

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वेद कही जैसी विधी, पूजा कौ परभाव।
पंच देवता कौं प्रथम, पूजन कीनी पाय ।।५६०
विघन नास हित गजवदन, रवि निरोगता रीत।
पावक सिद्धी हेत पुन, पद्मा प्रभू हरि प्रीत ।।५६१
ग्याँन हेत गवरीस की, मुगती दुरगा-मात।
इतने सुभ बाँचत अरथ, तौ इह पूजत तात ।।५६२
अपनौ जो चाहत अरथ, उभय-लोक की आस।
पूजन कीजै निगम पथ, दीन-भाव हुय दास ।।५६३

छंद भुजंगप्रयात

सबै देवता पूजकै ध्यॉन साध्यौ, अजोनी माहाँ गंगदेवी अराध्यौ।
सधी जाहि साखोक्त की रीत सारी, प्रभा-मूरती स्वेत वर्नं पसारी ।।५६४
लसै अंसुकं स्वेत झीनै निकाई, लजै पंकजं स्वेत जाकै लखाई।
जरै नाँहि सो अग्न मै जारने सौं, धरै ना मलाँनी सदाँ धारने सौं ।।५६५
मनी चंद्र हीरा अलंकार मोती, जगै चाँदनी पूर्नमा जेम जोती।
हसै आननं मंदही-मंद हासी, प्रभा स्वेत दंतावली की प्रकासी ।।५६६
रमाँनाथ प्यारी सदाँ सांत-रूपा, उरं मालती-माल धारै अनूपा।
कसी स्वेत मुक्ता-मई सीस केसी, बिनै चंदनं बंदनं भाल बेसी ।।५६७
भरे द्वै-कपोलं सुतै हास भीनै, कपूरं जुतै केसरं चित्र कीनै।
लसै कुंद रूपक्क की ओठ लाली, परे कुंडलं-मंडलं कर्नपाली ।।५६८
जगै नासका दीप की जोत जैसी, तुलै कंज सै नैन द्वै भौह तैसी।
उभै नाँगरंगी मनौ द्वै उरोजा, दिपै कंचुकी वाहरी चंद दोजा ।।५६९
कटी भाग लागी उभै जंघ केरी, प्रकासै मनौ कंदली गर्भ पेरी।
विवै नूपरं पाय झंकार बाजै, रतँनं-जरी पाभुरी पाय राजै ।।५७०
प्रभा चर्नं वर्नै मती कोन पूरी, धरै ध्याँन जोगिंद्रहू सीस धूरी।
सची उर्बसी देव इंद्राद सेवै, खुलै केसरं चंदनं धूप खेवै ।।५७१
परागं भरे पारजाती प्रसूँना, लसै जावकं रंग जैसै सलूना।
ममोक्षी अलीवृंद हू को मलिंदा, वृवै मुक्तकी उक्त पादारविंदा ।।५७२
पदार्थं लहै च्यारहू पुञ्ज प्राँनी, गरू-ग्याँन की गम्म पावै सुग्याँनी।
भजै संत-सामाज कौं भाव भक्ती, स्रधा सौच वाढै क्षमा जुक्त सक्ती ।।५७३

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जपै जक्त विस्नूपदी नाँम जाही, ततं देत विस्नू-पदं भक्त ताही ।
अधर्मी करै काँम कोऊ अनारी, तिहो तारने की प्रतग्या तिहाँरी ।।५७४
दया-जुक्त पापीन कौं मुक्तदैनी, नमो कारना स्वर्गहू की निसैनी ।
करचौ ध्याँन राजा तथाँ पुज्ज कीनी, प्रचारं कहे षोडसं जे प्रवीनो ।।५७५
यथा आसनं पादकौ देय अर्घा, सिनानं जलं निर्मलं जो सवर्गा ।
अनूलेपना चंदनादं अनूपा, धुँआँ काकतुंडं तथा यक्ष धूपा ।।५७६
दसाकर्ष नैवेद्य तांबूल देवै, सुपै निर्मलं नीर कौं पाय सेवै ।
सवै अंग मै फेर पौसाख सज्यें रतँनं सुबर्न अलंकार रज्जे ।।५७७
माहातेल सोगंध के फूलमाला, सुची आचमनीया सु सेज्या संभाला ।
प्रनाँमं करचौ भूपनें सेव पाछै, अस्तुती करी जोरकै दोय आछें ।।५७८
हितू हूजीयै जीव उद्धार हेतू, सदाँ मात तूँ पुंन्य की धर्मसेतू ।
रहै सिंभु संगीत सौं नित्य राजी, विभू वृह्म-रूपी जटामै विराजी ।।५७९
उपज्जी अहो राधका क्रस्न-अंगा, नमो मात गंगा नमो मात गंगा ।
उपज्जी समा स्रष्टकै आद आई, सता क्रस्न गोलोक माँही समाई ।।५८०
सँनीकर्ष संभू सुधामं समंगा, नमो मात गंगा नमो मात गंगा ।
प्रथा जन्मकी कार्तकी पूर्नमा कौं, रमावै सखी रास राधा रमाँ कौं ।।५८१
उहासं उजासं प्रकासं उमंगा, नमो मात गंगा नमो मात गंगा ।
जमै जोजनं कोट चौरी[1] जहू तै, गुना लक्ष लंबी गनाई गृहूँ तै ।।५८२
समावृत्त गोलोक माँही सुचंगा, नमो मात गंगा नमो मात गंगा ।
जुतै व्यास छै लक्षहू जोजनाई, तही चौगुनी लेखीयै दीर्घताई ।।५८३
दिखावै सही लोक वैकूंठ द्रंगा, नमो मात गंगा नमो मात गंगा ।
लखावै जहाँ व्यासहू तीस लाखा, सिधावै तहाँ चौगुनी होय साखा ।।५८४
अजं ईसकै लोक आवृःत अंगा, नमो मात गंगा नमो मात गंगा ।
चली लाखहू जोजनं होय चौरी, धृवै सतगुनी होयकै धार-धौरी ।।५८५
प्रभा पूर धूलोक मै नीर पंगा, नमो मात गंगा नमो मात गंगा ।
लखं जोजनं पूर विस्तार लावै, गुना पंच विस्तीर्न धारा गनावै ।।५८६
कला उज्जला लोक याँनी कुरंगा, नमो मात गंगा नमो मात गंगा ।
सहंसं सठं जोजनं व्यास सेती, वढी दसगुनी धार वारं वहेती ।।५८७

---

१ चौड़ी ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

प्रकासै प्रभा लोक-माँही पतंगा, नमो मात गंगा नमो मात गंगा ।
इकै जोजनं लाख विस्तार येतौ, जुतै पंचधा दीर्घता राह जेतौ ।।५८८
तपो-लोक मै तोय-रूपी तरंगा, नमो मात गंगा नमो मात गंगा ।
सहंसं इकै जोजनं व्यास सारौ, बढै दसगुनी लंब जाही विचारौ ।।५८६
सदा आवृता नीर जनलोक संगा, नमो मात गंगा नमो मात गंगा ।
दसं लक्षहू जोजना व्यास दीसा, सिधावैं गुनी पंच धारा समीसा ।।५६०
महर्लोक की भूँमका ऊत्तमंगा, नमो मात गंगा नमो मात गंगा ।
मिलै जोजनं व्यास साहंस मेका, वहै सतगुनी दीर्घ ह्वैकै त्रिसेका ।।५६१
चढी वास कैलासकै सीस चंगा, नमो मात गंगा नमो मात गंगा ।
सतं जोजनं ताहि विस्तार सीमा, सुपै दसगुनी माग जागास सीमा ।।५६२
विचै इंद्रकै लोक वेगं विहंगा, नमो मात गंगा नमो मात गंगा ।
दसं जोजनं वेगवंती दिखाई, वहै दस गुनी होयकै वेगवाई ।।५६३
पतालं वढी पाय पानी प्रसंगा, नमो मात गंगा नमो मात गंगा ।
इकै कोस चौरी वही जाय आगै, भजै दर्सनै-पर्सनै पाप भागै ।।५६४
वही भर्थ-खंडं विचै वारधारा, मिली जाय सामंद्र-सीमा मझारा ।
सिखा ऊतरी तोरकैं मेर स्त्रंगा, नमो मात गंगा नमो मात गंगा ।।५६५

दोहा

सतजुग मै जल खीर-सम, तेता मै ससि ताछ ।
द्वापुर मै चंदन सद्रस, कलजुग निर्मल काच ।।५६६
जल-रूपी कलजुग जँही, प्रथमी तल पानीय ।
स्वर्गलोक मै दूध-सम, वदलत रूप न बीय ।।५६७
कनका जल सपरस करत, पातक जावत पिंड ।
अधम उधारन गंग अब, वीच तुँही वृहमंड ।।५६८

छंद पद्धरी

गंगा सुन अस्तुत चली गैल, सव वाटन-घाटन लाँघ सैल ।
हिमगिर उतंग के स्त्रंग होय, सलता वन उतरी भूम सोय ।।५६६
लैगयौ भगीरथ भूप लार, छित सगर जहाँ सुत भये छार ।
पौन के लगत गंगा पसाव, भये दिव्य-रूप भक्ती प्रभाव ।।६००

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वैकूँठ गये सब दिव्य-वेस, कीय तबही पारषद रिखीकेस ।
भागीरथही के भक्त भाय, महि-मंडल उतरी गंगमाय ।।६०१
भागीरथी जु इह नांम भेव, दुज मुनिवर भाखत मनुज देव ।
तिह त्रपथ-गाँमनी कहत तोय, सुन लीजै मोसौं कथा सोय ।।६०२
पूर्नमा जन्महू कौ प्रकार, सुन लेवहु नारद समाचार ।
नाँराँयन करकै अभय नेम, जस वरनन लागे सुधा जेम ।।६०३
कार्तकी पूर्नमा सावकास, राधका-क्रस्न राच्यौ सु रास ।
पूजा कीय राधा पाय प्रीत, करनै सुर लागे जहीं क्रीत ।।६०४
रिखी करन लगे तिह स्तुती रास, सुर सभा बैठ तहाँ सावकास ।
वींना लीय सरस्वती तिहीं बेर, ताँन-जुत गाँन कीय टेर-टेर ।।२०५
दीय रत्नहार सुरजेष्ट दाँन, मनि दई सिंभु इक मोद माँन ।
कौस्तुभ मुनि दीनी रीझ क्रस्न, पुन राधा अनुमत होय प्रस्न ।।६०६
मनि-माल राधका दीय अमोल, वच अमृत-सरूपी बोल-बोल ।
मोतिन नाराँयन दई माल, लागी तिह अंतर मनी लाल ।।६०७
लक्षमी दये कुंडल निदाँन, कीय तँही बेर स्रंगार काँन ।
भगवती मूल प्रक्रत सुभाय, ईस्वरी मात दुर्गा जु आय ।।६०८
इसाँनी नाराँयनि इतेक, वृह्म की भक्ति दीनौ विवेक ।
धर्म मै दई बुद्धी जु धर्म, मांनव उर देवन खुले मर्म ।।६०९
सुद्धांसुक दीने अग्नि सेख, द्वै-नूपुर दीने वायु देख ।
पुन प्रेरत वृह्मा सूलपांन, गायौउ उलास सौं रास गाँन ।।६१०
क्रस्न के सुनत संगीत केर, विबुधन भई मुर्छा जिही वेर ।
इतने मै जागे लहि सुख अनूप, राधका क्रस्न नही लख्यौ रूप ।।६११
जल लख्यौ रास-मंडल जमीन, दुख सौं भये गोपी देव दीन ।
विध करे ध्याँन कौं तिही वार, पायौ विवेक सबही प्रकार ।।६१२
सलल कौ धरचौ दंपत सरूप, राधका क्रस्न भये तीर्थ-रूप ।
अज त्याग ध्याँन कौ अवसमेव, भाख्यौ देवन सौं इही भेव ।।६१३
उर समुझ भये सुरगन उदास, अभलाख करी पुन दरस आस ।
वर्नना करन लागे वसेस, मिल देव सबही आदक महेस ।।६१४
आकास भई तव गिरा येह, निर्लेप उभय हम निसंदेह ।
हम सक्ति भक्त उद्धार हेत, दुई देह धारकै दरस देत ।।६१५

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

देखे तुम चाहत द्रगन दोय, हित भाव भजहु निस्कपट होय।
विध कहहु सिंभु कौं इही वात, खित प्रगट करै निज मंत्र ख्यात ।।६१६
वेद कौ अरथ वैस्नव वताय, पावै हमरौ पद जिह पसाय।
तत पाय तंत्र स्वातक तुरंत, सास्रोक्त परांयन परम संत ।।६१७
पूजाद ध्यांन अस्तुत सप्रेम, नित गुप्त राखकै सधै नेम।
पापी जो रहिहै विमुख प्रीत, निज प्रभुता हित संसार नीत ।।६१८
माया की स्रष्टी रहै मंड, आवाद दिखावहि वृह्मइंड।
पंचधा करहु वृह्मन प्रचार, स्वर्गहू भूँमवासी सुमार ।।६१९
द्रढ भक्ति देखकै देहु दाँन, गोलोक लहै कोऊ पुरस ग्यांन।
सवहिन स्रद्धा नही होय संग, अदभूत सातुकी भक्ति अंग ।।६२०
सिव करै प्रतग्या विच समाज, अवलोकन दैहूँ दरस आज।
विध कह्यौ सिंभु सौं तिही वेर, तुम सुनत कहा कहै गिरा टेर ।।६२१
जल भये राधका क्रस्न जोग, संकल्प गिराकै कीय संजोग।
द्रढ करी प्रतग्या सिव दयाल, हीय क्रस्न राधका जाँन हाल ।।६२२
अग्या सिव धारी सिर उमंम, श्रीक्रस्न-राधका प्रगट संग।
रमनै फिर लागे उभय रास, हीय देवन कै वाढचौ हुलास ।।६२३
सिव करी प्रतग्या जल-संजोग, लहि जल-सँकल्प सब करत लोग।
इह करै जु मिथ्या आँमनाय, जीव सोइ नर्ककै वीच जाय ।।६२४
राधका-क्रस्न भये सलल-रूप, सोइ गंगा कौं जाँनहु सरूप।
गोलोक भई इम प्रगट गंग, तत रूप तोय पावन तरंग ।।६२५

दोहा

नारांयन कहने लगे, नारद कथा नवीन।
गूढ जथा सुन गंग की, पावहि मोक्ष प्रवीन ।।६२६
गंगा की गोलोक मै, उतपत वरनी आद।
गंगा राधा ग्रेह मै, बहु विध वढचौ बिषाद ।।६२७

छंद उद्धोर

गोलोक-उपजी गंग, वँह राधका के अंग।
वपु रूपवंत वसेख, सोभायमाँन सुवेख ।।६२८

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जल अधिष्टात्री जाहि, कहीयै जु उपमा काहि।
अहुँ-लोक मै नही तीय, बढ करै समता वीय ।।६२९
नव-जोवना तन नार, सज रतन वेश्व स्रँगार।
मुख सरद रितु के माँन, मध्याँन कंज समाँन ।।६३०
अधुराँन रूप अमंद, मुसकात मंदही मंद।
सोवर्न तप्त सरीर, चँमकंत आभा चीर ।।६३१
आभा-स वढत उहास, पूर्नमा चंद्र-प्रकास।
वैनी-स चिक्कन वार, लहलहत कंधर-लार ।।६३२
अत कठन पीन उरोज, मुखस्तन छाप मनोज।
कट खीन ग्रीवाँ कंबु, निस्तुलाकार नितंबु ।।६३३
जंघा सु कँदली जाँन, प्रतिजंघ गोल प्रमाँन।
पद-जुगल कमल-प्रकार, अंगुरी रूप अगार ।।६३४
सुच पायमूल सुरंग, राचे सु जावक रंग।
नूपरन पायल-नाद, उर भरत रति अहलाद ।।६३५
करपूर चंदन काय, रज अंगराग रचाय।
भ्राजत सु वैंदी भाल, मिल हृदय मालति-माल ।।६३६
गहमहत धूली-गंध, सरसात अंग सुगंध।
येकंत हरि अवगाह, उर वढेऊ रमन उछाह ।।६३७
सुख चहत नूतन संग, अकुलाय बाँन अनंग।
कर हाव-भाव कटाच, नैनन सु राचत नाच ।।६३८
श्रीक्रस्न देखत सोह, मन गंग उपज्यौ मोह।
गंगा सु हरि जिम ग्रेह, इत वन्यौ अवसर येह ।।६३९
हरि गंग के सुन हाल, चढ रीस राधा चाल।
आई सु ताही ऐन, निज गरल घूरत नैन ।।६४०
सखी तीस कोटक संग, वच कहत अमरख विंग।
राधका देखत रोष, श्रीक्रस्न धार सँतोष ।।६४१
आसन सु बैठे येक, वच कहन लगे विवेक।
गन आप पार्षद गोप, अत सभा वाढी ओप ।।६४२
गंगा सु कंपत गात, वर्नंना बोलत वात।
कहि राधका सुन क्रस्न, प्रभु भये यासौं प्रस्न ।।६४३

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

है कोन इह का हाल, ललचाय देखत लाल।
जाँनत न मोही जाँन, प्रीय अधिष्टात्री प्राँन ।।६४४
ताही ततिछन त्याग, अनुसरत रति अनुराग।
अत कुटल काँमी आप, क्यूँ करत विवध कलाप ।।६४५
धकधकी मेटहु धांख, उघरी न अबलौं आँख।
चल जाहु ह्याँतै छैल, गोलोक की तज गैल ।।६४६
श्रीखंडवन मै स्याँम, विरजा करी तुम वाँम।
आई सु मै जब ऊठ, प्रतकूल दैगये पूठ ।।६४७
धुर भये अंतरध्याँन, मुद छोरकै मन माँन।
विरजा सु ताही बेर, नद भई खेल निवेर ।।६४८
तुम तिहीं नद के तीर, धारी न उर मै धीर।
बहु करत रहेउ विलाप, जाही सु विरजा जाप ।।६४९
कहा भयौ तासौं क्रस्न, समुझाय कहहु सहिस्नु।
सिंध जोगनी सु विचार, नीर सौं ह्वैकै नार ।।६५०
कीनी सु तिह रति केल, झट गर्भ लीनौ झेल।
जन सात पुत्र जरूर, पन राख दीनौ पूर ।।६५१
दध अधिष्टाता देव, भये सोय जाँनत भेव।
चंपक सु वन मै चाल, गये रूप धार गवाल ।।६५२
सोभा सु गोपी संग, अत रचे खेल अनंग।
हम आय पहुँची हेर, दुर गये टारौ देर ।।६५३
सोभा सु त्याग सुदेह, गई चंद्र-मंडल ग्रेह।
द्रग लखत सबही दूर, प्रतिबिंब वाह्यौ पूर ।।६५४
वँह तेज कौं तुम आप, बाँटे सु करत विलाप।
कछु रतन मनि गन केर, वर स्वर्न कौं तिह वेर ।।६५५
नव-जोबना मुख नार, कछु कंज पुस्पन क्यार।
अधिपतन कौं कुछ अंस, वर तपोनिध दुज-वंस ।।६५६
तरु फली कौ कुछ त्याग, वर पत्र किस्लय वाग।
निज तेज परिपक नाज, कछु दये दुग्ध सकाज ।।६५७
पुन प्रभा गोपी पेम, अरुझाय लहेउ अखेम।
मम बाल सुनत समाँन, कर गये आँनाकाँन ।।६५८

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तन प्रभा गोपी त्याग, लीय सूर्ज-मंडल लाग।
तिह गह्यौ तन कौ तेज, मो-सौं न भये मुहमेज ।।६५६
वपु करत फिरेउ विभाग, जिह तेज अन-अन जाग।
तव अगन कौं दीय तेज, भट सिंघ-तन दीय भेज ।।६६०
नृप दयेऊ देव निकाय, कछु विस्नु-भक्तन काय।
कुल नाग मुनिवर केर, दीय दुजन कीय नहि देर ।।६६१
तपसीयन सुभगा तीय, दत जससीयन कौं दीय।
मिल रास-मंडिल माँहि, विहरे सु गहि-गहि बाँहि ।।६६२
सांती सु गोपी-संग, उत रचे खेल अनंग।
देखे सु जब मै दीठ, धस गये कुंजन धीठ ।।६६३
सांती सु त्याग सरीर, भई लीन तुम उर भीर।
हीय अधिक वाढी हूँक, क्रंदत रहे कर कूक ।।६६४
वृह्मा दये गुन वंट, कछु हँमहि बाँध्यौ कंठ।
इंदरा दीनौ आप, जग तुमहि करता जाप ।।६६५
सक्ती उपासक साथ, निज तपसीयन कौं नाथ।
धरमिष्ट औरें धर्म, को नहिन जाँनत कर्म ।।६६६
गये क्षमा गोपी गेह, दै लेप चंदन देह।
नव करचौ संगम नार, सेझ्या प्रसून सुधार ।।६६७
सुख पाय होय निसंक, पौढे रहे परजंक।
वस होय नींद विहाल, लपटाय सूते लाल ।।६६८
तिह ठौर मै ततकाल, मुरली लई वनमाल।
लीय रतन-कुंडल लार, अरू पीत-वसन उतार ।।६६६
भय लाज मेरे भाय, कारे भये कदराय।
तहाँ क्षमा देही त्याग, भयभीत ह्वैगई भाग ।।६७०
भस गई वीच धराह, सिध जोगनी तपसाह।
तिह गुनन भाग तुमेव, दीय वाँट देवन-देव ।।६७१
श्रीविस्नु वैस्नव साथ, हितु धार्मिकौं के हाथ।
तपसीयन देवन त्याग, पुन पिंडतन गुन पाग ।।६७२
दीय धर्मराजा दाँन, जगजीव दुर्बल जाँन।
सुरजात दीनेऊ सोय, राजीव-लोचन रोय ।। ६७३

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कहा सुने चाहत काँन, विसरे न अपनी वाँन।
निज मोहि राधा-नाँम, सो नही जाँनत स्याँम ।।६७४
प्राँनेस्वरी तुम प्राँन, मेरौ न राखत माँन।
मै रखी जिम मुरजाद, वढ चले तुम तौ वाद ।।६७५
सुख लीजीयै रति-संग, इह गंग खरीय उमंग।
बोली सु विध-विध बाँन, रद दाबकै अधुराँन ।।६७६
दलमलत बाढ्यौ द्रोह, कलमलत हीय कीय कोह।
भहरायकै भ्रू भंज, कर नैन हल्लक कंज ।।६७७
सिध जोगनी सद्रूप, राधका देखत रूप।
गंगा सु पाय गिलाँन, धार्‍यौ सु अंतरध्याँन ।।६७८
गलताँन ह्वै कै गात, जवनीय ह्वैगई जात।
लीय राधका तिह लार, वसुमती पीवन वार ।।६७९
तव गंग उपजी त्राहि, जल अधिष्टात्री जाहि।
श्रीक्रस्न जाँन सहाय, सो गई चरन समाय ।।६८०
राधका करकै रीस, विच नदी अरु वारीस।
जोई सु जिह-तिह जाग, वैकुँठ स्वर्ग-विभाग ।।६८१
गोलोक वेधा गेह, भूगोल भीत भरेह।
जल करेऊ सोखन जाहि, कीय आचमन सव काहि ।।६८२
जल-जंतु जेतक जात, पैठे सु कीच पिरात।
अपलासका चँहु ओर, जहाँ-तहाँ वाढ्यौ जोर ।।६८३
कुल-जीव कोटन-कोट, उर-कंठ सूकत ओठ।
त्रहुलोक उपजी त्रास, पाँनीय बाढी प्यास ।।६८४
मिल कमन विस्नु-महेस, समवर्ति मघवा सेस।
रवि चंद मनु मुनिराज, सिध तपी आद समाज ।।६८५
गोलोक गये कर गौंन, भज क्रस्न ही के भौंन।
भाख्यौ सु सबही भेद, निज भाव लहि निर्वेद ।।६८६
श्रीक्रस्न आद सरूप, रमतीत साखी रूप।
द्रग दुखी देखे देव, भाख्यौ सु तिन सौं भेव ।।६८७
तु त्रषा उपजी त्रास, आये सु जल की आस।
जल अधिष्टात्री जाहि, तिन दई राधा त्राहि ।।६८८

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

है सरन मेरी हाल, जीय-जाँन राधा जाल ।
तुम प्रस्न करहू ताहि, प्रगटै सु गंगा पाहि ।।६८९
तिहु-लोक मिटहै त्रास, विध आद करहु विसास ।
गत गूढ कहीय गुपाल, सुरवृंद सुनत सवाल ।।६९०
कर स्तुत राधा केर, विनती करी बहु वेर ।
विध आद देव विचार, सब तत्व भाख्यौ सार ।।६९१
ऊपजी गंग उदार, विच रास-मंडल वार ।
दूसर न तुमसौं देह, रिस करत अनुचित रेह ।।६९२
जल अधिष्टात्री जाँन, दीजीयै निर्भय दाँन ।
ब्रहुलोक उपजत त्रास, वर देहु सवन विसास ।।६९३
सुन विनय राधा स्रौंन, मुख लही सुख रुख मौंन ।
विसवास कर सुरवृंद, उर चाहि पाय अनंद ।।६९४
श्रीक्रस्न के गये सर्न, वर्नना करत सुवर्न ।
प्रभु चर्न सौं प्रगटाय, दीनी सु गंग दिखाय ।।६९५
पुन देव राधा-पास, लैगये धार हुलास ।
राधा सु छोरी रीस, सु प्रस्नं गंगा सीस ।।६९६
ह्वै दयौ मंत्र सहेत, सो गंग लयेऊ सचेत ।
पुन कह्यौ गंगा पेख, वर विस्नु वरहु सुवेख ।।६९७
वच राधका तिह-वार, कीय गंग अंगीकार ।
सोइ क्रस्न लखत समग्र, अंगुष्ट निकसी अग्र ।।६९८
वपु अधिष्टात्री वार, धुर द्रवत ह्वै जलधार ।
अज कमंडल मै आप, पुन लयेउ मोचन पाप ।।६९९
अध-चंदकै आकार, सिर धरेऊ संभु सुधार ।
पूजकै राधा पाय, सुरसरीय गईय सिधाय ।।७००
वयकूँठ कीनौ वास, हीय वढ्यौ विस्नु हुलास ।
वीती सु तामै वार, राधा रू गंगा रार ।।७०१
विध-लोक लौ वृहमंड, भये कल्प पाय विभंड ।
विध करी स्रष्ट नवीन, प्रवृत सु कहत प्रवीन ।।७०२

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दोहा

रमा गिरा गंगा रही, वृंदा चौथी वाँम।
जथाँ-जोग वरनत जही, तुलसी-कथा तमाँम ।।७०३
विस्नू प्यारी वल्लभा, वपु पायौ वृख तत्व।
क्यूँ राँवन पीड़त करी, ताही कहीयै तत्व ।।७०४

छंद पद्धरी

सुन नारद मुन की प्रस्न स्राँन, बोले नाराँयन विमल-वाँन।
ग्रत कीर्तवाँन वैस्नव ग्रनूँप, भये प्रथम दक्ष सावर्न भूप ।।७०५
मनु ताहीयकै कुल मै महाँन, ग्रवतरे वृह्म सावनं ग्राँन।
धरमिष्ट ग्रौर वैस्नव सधीर, विख्यात भयौ मनुवंस वीर ।।७०६
पुन ता मनुही के वंस पूर, सुत भयौ धर्म सावर्न सूर।
ग्रवतंस वंस ताके ग्रभूत, पुन भये रुद्र सावर्न पूत ।।७०७
ऊपजे इंद्र सावर्न ग्राय, सुत याही मनु हू के सुभाय।
सब विस्नु-उपासक भये सुद्ध, बिग्याँन-ग्याँन भक्ती प्रवुद्ध ।।७०८
वृष ध्वज्ज भयौ तिह सुत बलिष्ट, ईसाँन उपासी पर्म इष्ट।
करता जग पूरन सकल काँम, धुर्जटी विराजे तँही धाँम ।।७०९
विवुधन के त्रय-जुग गये वीत, पुत्र सौं इधक हर पाय प्रीत।
ग्रनदेव विस्नु ग्रादक ग्रभेव, सरस्वती लक्षमी तजी सेव ।।७१०
माघ की पंचमी तिथ महाँन, भारथी न पूजी लखी भाँन।
रवि दयौ स्राप ताकौं रिसाय, जग नष्ट होहु मति भृष्ट जाय ।।७११
सिव कथा सुनी रवि दयौ स्राप, उठ चले सूल लै रीस ग्राप।
ग्रावत त्रसूलपाँनी ग्रभंग, प्रलयाग्न-रूप देखे पतंग ।।७१२
भागकै गये ग्रगवाँन भाँन[1] सरनै कस्यप पितु संनिधाँन।
सुत कौं लै कस्यप ग्राप साथ, निज सरनौ लीनौ लोकनाथ ।।७१३
विध सिवहू सौं देख्यौ विरोध, बैकूँठ चले विसराय बोध।
रिख कस्यप कस्यप-सुत विरंच, विस्नु सौं मिले निज काज वंच ।।७१४
पद-पंकज पूजे प्रथम-पोत, हित ताहीय के जन ग्रभय होत।
पुन सूर-कथा ग्ररू सूलपाँन, सब कही होयकै सावधाँन ।।८१५

१ सूर्य।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

हरि अभय दयौ अहु दुखत हैर, बैठाये आसन तिहीं बेर।
संबोध करयौ संतोष साथ, निज आँनन सौं श्रीरमाँनाथ ।।७१६
इतने मैं आये आप ईस, रवि ऊपर धारे माहाँ रीस।
श्रीपत अत कीनौ समाँधाँन, भव चरनन लागे ऊठ भाँन ।।७१७
वर्नना करी कस्यप विसेस, परचाय विरंचन पुज्ज पेस।
सिव क्रोध तज्यौ लहि समाँधाँन, बोले विस्नू सौं विमल-बाँन ।।७१८
वृषध्वज्ज मोहि है भक्त वेस, काटीयै सूर स्रापही कलेस।
कर श्रवन कथा सिव रिषीकेस, मुसकाय कह्यौ सुनीयै महेस ।।७१९
वैकूँठ आवतै लगी वार, नहि काल विचारयौ निराधार।
मोहि लोक-वीच अधघरी माँहि, जुग भूँम-लोक इकईस जाँहि ।।७२०
वस काल भयौ वृषधुज वसेख, सुत रथधुज सोउ न रह्यौ सेख।
रथध्वज के द्वै-सुत करत राज, धरमधुज कुसधुज भूधिराज ।।७२१
संपदा नष्ट ह्वै कष्ट-संग, अत नीत-निपुन जुत भक्ति-अंग।
लक्षमी करत तपसा ललाँम, तिह ग्रेह लहिह अवतार ताँम ।।७२२
वैभव जुत ह्वैहै राज वृद्ध, संपदा वढावह सकल सिद्ध।
निज-लोक सिधावहु गवरनाथ, सूरज लेजावहु कमन[1] साथ ।।७२३
कर विदा देव अहु हरि कृपाल, कीय भवन गवन निज तातकाल।
धरमध्वज कुसधुज नृप सधीर, वसुधा विख्यात भये महाँवीर ।।७२४
पूजन पुन लागे रमा पाय, संपदा वढी तातै सिवाय।
परवार वढयौ पउत्राद[2] पूत, सब मंत्री कुल उपजे सपूत ।।७२५
कुसधुज की पतिवृत तीय कुलीन, अभिधा मालावति नृप-अधीन।
आधाँनवती सोइ भई आय, सुभ गृह-नछत्र वेला सुभाय ।।७२६
सु कंन्यना ग्याँन-जुक्त, सूतका ग्रेह सौं पर्म सक्त।
धुन वेद सुनत स्रुत उठी धाय, कहि वेदमती दुज मुनि निकाय ।।७२७
उठ चली कंन्यका तुरत येह, सिसुपन मै सोई निसंदेह।
वन तप-हित चाली तँहो वेर, पितु-मात मनै कीय सखी प्रेर ।।७२८
रोकी न रुकी काहू रहंस, अभलाख हरी उर रमाँ अंस।
सर पुस्कर मै निर्जन सुथाँन, धारना जोग सौं धरयौ ध्याँन ।।७२९

---

१ ब्रह्मा। २ पौत्रादि।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

इक मन्वंतर तप करयौ अंग, तन जरा आय नही करयौ तंग ।
कंन्या नव-जोबन रही काय, परभाव तपस्या तेज पाय ।।७३०
नभ गिरा भई तिह हित निदाँन, पति मिलहि हरी वाचा प्रमाँन ।
जनमांतर ह्वै है हित जरूर, पद-पंकज राचहु प्रेम पूर ।।७३१
सुन हरख वढयौ कंन्या सिवाय, पहुँची सु गंधमादन पुलाय ।
सिखरी पै निर्जन लख सुथाँन, बैठी तप करनै हरी विधाँन ।।७३२
केतक दिन वीते वन निकेत, हरी चरन-कमल मै लाय हेत ।
पुन भ्रमन करत राँवन पुलाय, बन ताही आयौ मति बिलाय ।।७३३
आस्त्रम कंन्या कौ लख अनूप, भव तत्व पाय गये लंक-भूप ।
जुत धर्म जाहि आतिःथ जोय, हित करयौ सबै विध समुख होय ।।७३४
पायकै कन्यका काय पोख, दुष्ट के हृदय मै बढयौ दोख ।
तिह रूप-दोष कै सील-त्याग, लीय पकर हाथ रति-हेत लाग ।।७३५
रिस करकै कंन्या कह्यौ रोय, हा दुष्ट सथंभर रहहु होय ।
जड-रूप भयौ सो तँही जाग, मंडै पग जाय न भाग-भाग ।।७३६
आराधी मन सौं प्रक्रत आद, वपु त्यागौ जड़ता कौ विषाद ।
चाल्यौ तव आस्त्रम करत छेह, कंन्या तव बोली रिस करेह ।।७३७
घर तोहि आयकै रचहु घात, निज कुटम सहित करहू निपात ।
मुह धर्म विगारयौ तै मदंध, वपु छियौ काँम के बाँन विंध ।।७३८
फल ताकौ मिलहै दिवस फेर, वन त्याग जाहु तुम इही वेर ।
तन त्यागौ इतनी कहि तुरंत, नृप-सुता वेदमति प्रभू निमंत ।।७३९
कालंतर कंन्या जनम केर, हुइ रावन कौ विद्वेष हेरं ।
पति राँमचंद्र हरि-रूप पाय, सुख विलसे बहु-विध रति सुभाय ।।७४०
अवध मै रहे बहु दिवस आप, अरू दंपत-संपत लहि अमाप ।
पितु-वचँन पालनै के प्रसंग, सीय लखन राँम गये विपन संग ।।७४१
डंडकारण्य मै दखन-देस, विद्वेस वढयौ निश्चर वसेस ।
आये तिह अवसर पर अभेव, दुज-रूप धारकै अगन देव ।।७४२
कथ राँम सुनहु इह कठन काल, वीतैंगौ तुम सौं वन विचाल ।
भेज्यौ देवन मिल इही भाव, दिन फिरत न लागै दई दाव ।।७४३
जाँनकी देहु हम लीयै जाय, पुन तुमही देहौं काल पाय ।
सीय छाया-रूपी राँम-संग, इह राखस कुल मारहु अभंग ।।७४४

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सुन अगन देव की वात स्राँन, माहाराज रहे मुख धार मौंन।
वतराय कह्यौ सीता वसेख, पितु जनक जेम इह अगन पेख ।।७४५
कल विथत होय उर उठ्यौ काँप, सीता पावक कौं दई सौंप।
जोग-बल सीया ह्वै ज्वाल-माल, वपु लीन करचौ पावक विचाल ।।७४६
पावक दीय माया-बल प्रसंग, सीय छाया-रूपी रही संग।
नही वात जताई लखन नाथ, सीता माया को रखी साथ ।।७४७
विद्वेस राखसन सुन विचार, चल आयौ राँवन दुराचार।
छल-वल सौं सीता हरी छाँहि, मेली सु जायकै लंक माँहि ।।७४८
श्रीरामचंद्र कपि-सैन साथ, निर्मूल करचौ कुल लंकनाथ।
सीता पुन दीनी अगन साख, रघुवीर सत्य श्री लई राख ।।७४६
श्री माया-रूपी सीया सोय, हित वचन कहे चित दुखत होय।
ह्वै है अब मेरौ कहा हाल, कछु जतन वतावहु तातकाल ।।७५०
श्रीराँमचंद्र अरू अगन संग, इह वात कही तासौं उमंग।
तप करन जाहु पुस्कर-तड़ाग, पुंन्य की भूमका रहहु पाग ।।७५१
हरषाय तपोबल सुवस होय, स्वर्ग की लक्षमी भई सोय।
त्रय-लक्ष देव हायन विताय, अवतरी द्रोपदी-रूप आय ।।७५२
पति पाँच भये ताकौ प्रसंग, सुनहौ मुनि नारद येक संग।
तप कीनौ पुस्कर सीया ताहि, ऊपजी काँम बाधा उमाहि ।।७५३
पत देहु-देहु इम वार पाँच, वाचा मुख बोली पती वाँच।
संकर दयाल ह्वैकै सुभाव, पति पाँच पंडु कीने पसाव ।।७५४
इह वेदमतो आख्याँन ऊद्ध, सत-सत सोइ भाख्यौ हृदय सुद्ध।
इतनौ चरित्र कर गई आप, पद्मा मै मिल गई मेट पाप ।।७५५

सोरठा

अब तुलसी आख्याँन, जाही कौं वरनत जथा।
करता जग कल्याँन, करता सुख मंगल-करन ।।७५६
नृप धरमध्वज नार, मधुर-भासनी माधवी।
पतिवरता जुत प्यार, साँनुकूल पतहू सदा ।।७५७
गँदमादन गिरराज, हिल-मिल गये विहार-हित।
सँग लै सखी-समाज, काँम-केल लागे करन ।।७५८

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

छंद मौतीदाँम

मनोहर चंदन वाग मुकाँम, वसे हित काँम लयै सँग वाँम ।
विधोविध राचत भोग विहार, नही दिन-रात लख्यौ निरधार ।।७५९
महा-रत खेल भये उनमत्त, समापत ह्वैगये वछ्छर सत्त ।
भई तीय गर्भवती तहाँ भूप, उपज्जेऊ आँनद आय अतूप ।।७६०
वढे सुख-संपत आय विसेस, निरंतर आयेऊ देस नरेस ।
धरै रही गर्भ सोई निज-धाँम, विते सत वछ्छर भूप की वाँम ।।७६१
नवै-निध वाढीय भूप निकेत, सुखी परवार प्रजाँन समेत ।
वसी जहाँ आय रमा गृभवास, प्रभा तहाँ क्यौं नही होय प्रकास ।।७६२
महूरथ मंगलदायक माँहि, जनंमीय भूप सुता गृह जाहि ।
वढ्यौ वपु-रूप वढी जिम वेस, कहै तिह ओपम कोन कवेस ।।७६३
अनूंपम आँनन पूरन इंदु, उभै चख आस्वन के अरविंदु ।
प्रभा तिह ओठन रंग प्रवाल, वनै अधचंद सु भाल विसाल ।।७६४
वनै बहु पात जटा सिर वार, सचिक्कन स्याँम बँधे सटकार ।
बनै रद पंत अँनार के बीज, वरारक वाँनक ज्यूँ दुति बीज ।।७६५
निकाइय दीपसिखा जिम नक्र, वुहारन रूप प्रकासत वक्र ।
धरै कुछ उन्नत चोलीय ढाक, छिपे मनु आय उभै चक-वाक ।।७६६
मिली त्रवली सु तिही मध्र मेल, वढी जनु आय स्रंगार की वेल ।
सुसोभत गर्भ अगार समाँन, निरंतर नाभीय रूप निपाँन ।।७६७
खग्यौ वँघ चालनी को कट छीन, नितंबन बाढत सोह नवीन ।
ज्युँही जुग जंघन-पिंडुरी जोर, गताकच कोमल रंगत गोर ।।७६८
उभै पद-पंकज की उनहार, चुरावत आँगरीयै चित चारु ।
प्रभा तलपाय हथेरीय पाँन, जमै रंग स्वछ्छ उदंबर जाँन ।।७६९
जिही तन ग्रीषम सीतल जाँन, सदाँ हिमकाल मैं उस्न समाँन ।
अनूपम गात सबै चिव ऐन, निकाइय वाढत देखत नैन ।।७७०
तुलै जही औरन जोर न तीय, तिही वतरात कहै तुलसीय ।
सोई तुलसी अत बुद्धि सयाँन, धरयौ उर बद्रीयनाथ कौ ध्याँन ।।७७१
पँहूँचीय जायकै धाँम पुनीत, पती पुरसोतम लायकै प्रीत ।
पंचागन ग्रीषम अंग तपाय, ज्युहीं हिम सैन करै जेलजाय ।।७७२

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सहै जल-धार वृषा-ऋत सोय, करै चित कायरता नही कोय ।
सध्यौ तप वर्ष जु वीस सहंस, रही इक धारन ध्याँन रहंस ।।७७३
इतै फल-फूलन कीन अहार, कसोदरी ह्वैगई राजकँवार ।
तज्यौ फल-फूल अहारही ताहि, अहार सु पत्र तरू अवगाहि ।।७७४
विते लख तीस इही गत वर्ष, करचौ तप धारनह्वै उतकर्ष ।
तज्यौ सु अहार करचौ तन-ताप, प्रभंजन भक्षन के परताप ।।७७५
विते दस चौक सहस्रक वर्ष, पितामह तापही की गत पर्खं ।
विलोकीय राजसुता तप वृद्ध, सिधायकै आयेऊ ताहि सनिद्ध ।।७७६

दोहा

हंस चढे आये हरष, विध विलोक पग वंद ।
तुलसी विध देखी तहाँ, चिव दुतीया जनु चंद ।।७७७
बोले तुलसी सौं बहुर, वृहमा करत विचार ।
कठन तपस्या कौं करत, वर माँगहु इह वार ।।७७८

छंद पद्धरी

बोली सु तबै तुलसी विचार, सुनीयै जग-करता समाचार ।
आपतै दुरी नही वात येक, पति क्रस्नचंद्र चाहत प्रवेक ।।७७९
गोलोक-वीच गोपी-गुपाल, क्रस्न की किंकरी तिहूँ-काल ।
उतपत्त क्रस्न के अंस-अंग, सेवा मै क्रस्नही रहत संग ।।७८०
इक दिवस रास-मंडल अगार, प्रभु पकर लई मो सहित प्यार ।
उर लाय खेल खेले अनंग, सुख भयौ क्रस्न सौं पाय संग ।।७८१
मुर्छतह्वै सूती रास-माँहि, राधका माँननी लखी राहि ।
गोविंद करचौ तिह देख गौंन, मै करग-जोर मुख गही मौंन ।।७८२
राधका स्राप दीनौ रिसाय, जोनी सु माँनवी लहहु जाय ।
सो अंगीक्रत कीनौ सराप, इह वात कही गोविंद आप ।।७८३
कछु सोच करहु तुलसी न कोय, सुन लेहु मोर सिद्धंत सोय ।
भुज च्यार विस्नु सौं करहु भेट, मिलहै पति रहहौ भीत मेट ।।७८४
खित आय ऊपजी भरथ-खंड अज, तासौं कीनौ तप अखंड ।
पति मोहि विस्नु करीयै पसाव, और न कोऊ मेरै हित उपाव ।।७८५

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वृह्मा जव बोले विमल-वाँन, जीय तेरे हित की कहत जाँन ।
गोलोक माँहि गत भई गूढ, मन तोही जाँनत नहिन मूढ ।।७८६
काँमातुर ह्लै कै तुमही काय, चीत्यौ सु सुदामा गोप चाहि ।
वँह क्रस्न-अंस है नहिन श्रौर, राधा सौं स्रापत वय-किसोर ।।७८७
जल-वोच ऊपज्यौ समर जात, खित मै है तेरी समर-ख्यात ।
पति करकै भजहू सहित प्यार, करीयैं विलंब नाँहिन कुमार ।।७८८
वँह संखचूड़ है नाँम श्राय, मिलहै तोही सौं मन-मिलाय ।
सुन वाचा मेरी इही साच, रति माँनहु ताहि रंग राच ।।७८९
इह पूर्ब-जन्म श्राख्याँन श्राद, वरन्यौ तुलसी सौं निर्बिषाद ।
बोली वृह्मा सौं जुत बिवेक, इतनै पै मेरी श्ररज येक ।।७९०
दुइ भुजा चतुरभुज नहिन दोय, करहू नही हीय मै सोच कोय ।
राधा ह्वै परसन सोय रीत, करीयैं पसाव जग श्रमरक्रीत ।।७९१
जव षोड़स श्रक्षर मंत्र-जुक्त, श्रज दीनौ तुलसी हृदय उक्त ।
पूजा स्तोत्र श्ररु कवच पाठ, उर पुरस्चरन मेटन उचाट ।।७९२
इह मंत्र राधका परम ऊद्ध, कबही न तोहि सौं करहि क्रुद्ध ।
जाही राधाकौ करहु जाप, सुप्रस्न होय मेटहि सँताप ।।७९३
सुन वृह्मा के इह वचन स्राँन, तप त्याग तपोवन रही तौंन ।
सुख विलसन लागी निज सरीर, पुन काँमदेव की वढी पीर ।।७९४
वपु जोर वढचौ तप सौं विकार, कलपत मन विलपत तन कुमार ।
पुन सखी करत लेपन पटीर, निर्मल सुगंध कुमकुमा नीर ।।७९५
श्राग की श्रांच ज्यूँ लगत श्रंग, श्रकुलाय प्राँन बाँनन श्रनंग ।
गहिकै पुलकावलि कबहुँ गात, वतरावत श्रावत नहिन वात ।।७९६
कवहू फुरकावत नयन कोर, उत्सक है देखत चँहूँ-श्रोर ।
मन विभ्रम वाढत श्रधिक मोह, कबहूँ सखीयन पै करत कोह ।।७९७
ललचाय चित्त उस्वास लेत, देखत इक टक ह्वै द्रगन देत ।
पीयराई वाढत श्ररू प्रस्वेद, भूखन सौं दूषन गहत भेद ।।७९८
गारी सम लागत मधुर गाँन, सोगंध पुस्प कंटक समाँन ।
चित चाहि वढी पति-हित श्रछेह, दुख काँम दहत श्रत जिही देह ।।७९९
इत संखचूड़ दाँवन उदार, विध करी प्रेरना तिहीं वार ।
बद्री श्रास्रम की लई बाट, वँह गयौ तरेटी श्रद्रराट ।।८००

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तुलसी कौं देखी वन तहींज, बपु सोभा माँनहु चंद्र बीज।
तुलसी दनु विंद्र ही लख्यौ तेम, पुन उभय हीय सौं वढयौ प्रेम ।।८०१
समता वय इक सम सुच सरीर, भये व्याकुल अतसय जराभीर।
विध अंतरजाँमी तिहीं वार, मिल आय दरस दीय वन मझार ।।८०२
आपने वचन को देख ओर, बोले सु सुखद बाचा बहोर।
सम प्रीत येक की येक संग, उछवाह करहु धारै उमंग ।।८०३
सावंत्री जैसै मो सु तीय, पति क्रस्न राधका पर्म प्रीय।
विस्नू कै लक्षमी जेम वाँम, वाराह जेम धरनी विस्राँम ।।८०४
अनसुया जेम है नारि अत्र, काँमकै रती जैसै कलित्र।
वासिष्ट अरुंधती ज्युही वाँम, निज रुद्र ग्रेह पार्बती नाँम ।।८०५
तारा सु वृहसपति जेम तीय, रवि प्रभा चंद्र-गृह रोहिनीय।
गँनीयै सतरूपा मनूँ ग्रेह, स्वाहा सु छागरथ[1] सौं सनेह ।।८०६
नल दमयंती सचि सक्र नार, काँमनी देवसेना कुमार।
हेरंब[2] पुष्टि ध्रम मूर्ति हेत, कस्यपकै अदती ज्यूँ निकेत ।।८०७
जिम देवहुती करदम दुजात, गोतंम अहिल्या जेम ग्यात।
कल ऐसै करहू अमर-क्रीत, पति नार परसपर भजहु प्रीत ।।८०८
वृह्मा कहि स्वस्ती गये वाट, इह रहे तरेटी अद्रराट।
वाचा परमेष्टी उर विचार, अरु संखचूड़ तुलसी उदार ।।८०६
गंधर्व व्याह कर भये गैल, सुखदायक देखत विपन सैल।
रति माँनत जहाँ-तहाँ रहत रात, पुन वागन वन विहरत प्रभात ।।८१०
क्रीडा मिल दंपत करत केक, वतराय तर्क हासी विसेक।
हाथन मै कबहूँ गहत हाथ, गल बाँह डार नीयराय गात ।।८११
रच अंब्रर झीने वेख रंग, आभूषन नाना पहर अंग।
नित नूतन वाढत हृदय नेह, दंपत मन येकै दोय देह ।।८१२
आलंगन चुंबन करत अंग, अह-निसा ख्याल खेलत अनंग।
तव वसन दोय दीय पती ताहि, जीत कै परंजन लये जाहि ।।८१३
छाया रवि-पत्नी लये छोर, जिह बजुला दीनेऊ येक जोर।
सिस-पत्नी रोहिनी लये सोय, दीने दत कुंडल कनक दोय ।।८१४

---

१ अग्नि। २ गणेश।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

त्रीय अग्नि नाम स्वाहा सतोल, मंजीर दये सो दीय अमोल।
कर-बलय मूंदरी दई केक, आँनकै विस्वकर्मा असेक ।।८१५
स्रंगार और अंगन सँवार, पत्नी सौं बोले सहित प्यार।
मृघनैनो जाँनहु दास मोहि, तुलसी तीय कासूँ कहू तोहि ।।८१६
तुलसी-सी नरपत पाय तीय, बिहरन सोई लागे विपन बीय।
वन पारजात आदक विसेस, देखत गिर चाले देस-देस ।।८१७
नद सरवर देखत कुंज नाल, खेलन अनंग के उभय ख्याल।
करकै विहार आये मुकाँम, धवरोहर राजा पर्म धाँम ।।८१८
विलसन सुख लागे अत विचत्र, जुग मन्वंतर लग रहे जत्र।
पुहमीन वढचौ राजा-प्रताप, थित सीमा सागर करी थाप ।।८१९
सुर-असुर जीत लीने सकोय, कर सकै जाहि समता न कोय।
अधकार लयौ सब देव आद, माँनी जग-हाँनी कीय मृजाद ।।८२०
भिक्षुक हुय चाले त्याग भोंन, गिर किंदर कीनौ विपन गोंन।
पुन जाय विरंचन कीय पुकार, सुरलोक खोस लीनौ सुरार ।।८२१
हम दुखत भये लख लेहु हाल, द्रुत स्याहिक रहु करता दयाल।
जातना पाय सुर घटचौ जोर, अब डोलत जित-तित चहूँ-ओर ।।८२२
इह संखचूड़ दाँनव अजीत, भय मेट सुरन करीयै अभीत।
विनती देवन की सुनत वेर, हंसग उठ चाले सिंभु हेर ।।८२३
पँहुँचे अष्टापद गिर पुनीत, असुरेस सबै वरनी अनीत।
वरन्यौ देवन कौ दुख विसेस, मन सोचन लागे तव महेस ।।८२४
बैकूँठ गये श्रीविस्नु-पास, अनेक लखे ऊँचे अवास।
जहाँ जरा मृत्यु सौं रहित जीव, सुख पाय वसत वासौ सदीव ।।८२५
अवलोके पार्षदगन अनंत, श्रीविस्नु रमाँ के पर्म संत।
जय विस्नु-विस्नु कौ जपत जाप, प्राँनी पुनीत सब रहित पाप ।।८२६
द्रग देत जहाँ-तहाँ निकट दूर, पत्तन की सोभा लखत पूर।
निज भवन लख्यौ हरि कौ निवास, पार्षद केऊ डोलत आस-पास ।।८२७
सब स्याँम-वरन सुंदर सरीर, धारें पीतांबर महाधीर।
सारूप मुक्त वारे सुवेस, रमनीय-रूप मनु रिखीकेस ।।८२८
आभूषन रत्नन सभै अंग, अरू गदा संख लीनै अभंग।
भुज च्यार जिनहु के दिव्य भेस, वरमाला धारै उर वसेस ।।८२९

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

देवन सहेत विध माहाँदेव, भाख्यौ आगम कौ सकल भेव।
पुन सुनकै बोले द्वारपाल, कीजीयै गमन आगै कृपाल ।।८३०
इम सोरह कक्षा कौं उलंघ, सुर जाय पहूँचे पौर सिंघ।
हरि-सभा जाय पहुँचे हजूर, प्रभु देखे नैनन प्रेम-पूर ।।८३१
जहाँ देव रिषी पार्षद जितेक, येकतै मनोहर रूप येक।
स्वारूप विस्नु ही के समाँन, सुख सभा विराजे सावधाँन ।।८३२
दुतीया के विधु जिम सभा दौर, जहाँ बैठे पार्षद जाँनु जोर।
वँह सभा करत वर्नन अगार, सावर्न रत्न-मंडित सँवार ।।८३३
सोपाँन अनूँपम अत सुघाट, विध-विध रत्नन की वनी वाट।
वज्र मै अजर अतसय विचत्र, तड़ता जनु चमकत जत्र-तत्र ।।८३४
मनि-मालन लालन-लरी मेल, झालरी मुक्तमय रही झेल।
नाना प्रकार रेखा निमंद्ध, सोवर्न सँवारी संद्ध-संद्ध ।।८३५
दीसत विलंद चँहुधाँ दिवार, केऊ रतन जरे विच मुकरकार।
झलमलत झालरी झुंड-झुंड, मुक्तन की माला जुक्त मंड ।।८३६
कोटी मिल कोटी चहूँ-कूट, छाजन मनी-आभा रही छूट।
उतरंग कपाटन लगे और, जाली सु दिवाली जोर-जोर ।।८३७
चित्राँम पूतरी वनी चारु, अरुनोपल नीलम चिब अँगार।
सूरज मनि चंद्रोपल समीप, दग-दगत जोत मनु जुरे दीप ।।८३८
मनिमय विनर्द के रही मंड, खिच रहे वीच केऊ हीर-खंड।
लक्षी पुस्पपन की लार-लार, हीरन कुंजन की लगी हार ।।८३९
अवलोकन चख ऊँचे अवास, परकास करत दुति आसपास।
दीसत विचित्र चँहुधाँ दिगंत, कोटन सूरज की मनहु कंत ।।८४०
जहाँ माला पुस्पपन पारजात, पुन पल्लव चंदन बधे पात।
वंदन-माला की बँधी वेल, केऊ हरी रंग की वनी केल ।।८४१
कसतूरी कुंकुँम रंग केक, ऊठत सुगंध जोजन अनेक।
गंध्रव किंन्नर जहाँ रहे गाय, अच्छरीं नट तवहू आय-आय ।।८४२
वींना तंतन की ताल विंग, मधुरी-धुन वाजत कहु मृदंग।
विस्नु की सभा देखी विचत्र, चक रहे देव-जनु लिखे चित्र ।।८४३
सिंघासन लीनै रमाँ साथ, निज भवन विराजे कृपानाथ।
इम पार्षद विच सोहत उपिंदु, उड़गन मैं जैसै वसत इंदु ।।८४४

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सिर क्रीट-मुकट धारै समाँन, कुंडल मक्राक्रत उभय काँन ।
माला वैजंतो कंठ-माहि, बजुला अनूँप बाँधै जु बाहि ।।८४५
वपु पीतवसन विजुरी विकास, कर-कँमल विराजत सावकास ।
पद-पंकज लिछमी भरत पेम, निरवाह पतीवृत धर्म नेम ।।८४६
मुनि मन भृमरावलि गहि मलिंद, उर अमित भक्ति पावत अनंद ।
जन च्यार पदारथ लहत जाँन, खंडन अघ सुखप्रद धर्म-खाँन ।।८४७
एंसे प्रभु देखे सुर उदास, पुन-पुन विसास बुलवाय पास ।
जब करी स्तुति जिन हाथ जोर, बिध अरु महेस बोले बहोर ।।८४८
इक संखचूड दाँनव अभंग, सब देवन जीते येक संग ।
भिक्षुक जिम डोलत त्याग भौंन, प्रभु स्याहि करहु सारंगपाँन ।।८४९

दोहा

श्रीविस्नूँ अरजी सुनी, सबही देवन साथ ।
कहँन लगे इतीहास कछु, निज मुख पद्मानाथ ।।८५०
बीती जो कछु वारता, विच गोलोक वसेक ।
वरनत सोइ विस्तार कर, वचन सुनहु सविवेक ।।८५१

छंद त्रोटक

गत गूढ भई गऊलोक गनौ, सब देवन की समुदाय सुनौ ।
ग्रह-मंडल रास के वोच गये, निज नैनन देखत ख्याल नये ।।८५२
बिरजा-संग खेल बिहारनमै, इकठे रहे कुंज अगारनमै ।
गम पायकै राधका आय गई, विरजा सलता हुय नीर वही ।।८५३
भय सौं हम अंतरध्याँन भये, गृह गोप सुदाँमा के बैठ गये ।
गृह ताही मै राधका आय गई, सखीयाँ इक लाख लै संग सई ।।८५४
केऊ वात कही हम सौं कररी, धर धीरजकै मुख मौन धरी ।
केऊ वात सुदाँमाहू गोप कही, रमनी तऊ राधका रीस रही ।।८५५
सखीयाँ गहि बाहर कीन सभा, कहि गोप सुदाँमा कौं वात कुभा ।
दुचती हुय राधका स्राप दयौ, भुँय पै सोइ दाँनव रूप भयौ ।।८५६
क्षन आध जितै गऊलोक खपै, तब लौं भुँव पै संखचूड़ तपै ।
वसु येक मुनंतर वीतहिगे, जितनै स्वर आसुर जीतहिगे ।।८५७

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पुन आवहिगौ हम लोक प्रतै, जुर जावहु देवन सैन जुतै ।
बल जोग मै मायक है वहुरै, धमनी हम कौंच कौ बंध धरै ।।८५८
हम हूँ दुज ह्वै तुमरे हित कौं, छल ताहि निवारहिगे छत कौं ।
सिव सूल इहै तुम लेहू सही, जिह कौं तुम मारहु खेत जँही ।।८५६
तुलसी पतिवृत है ताहि तीया, सुभ सीलवती सुमती सुकीया ।
छल है हम ताहि कौं होय छता, गुन दाँनव के जव होय गता ।।८६०
सब तत्व कह्यौ तुमहूँ नै सुनौ, गृह आपने-आपने कौं गँवनौ ।
जुरहै सिव दाँनव सौं जबही, तुम देवहू आय मिलौ तबही ।।८६१
कहिकै इह देव विदा करकै, बसे आपने धाँम रमावरकै ।
सिव ऊठ चले सब देव समा, सुर-कारज कौं हुयकै ससमा ।।८६२
चंदभागा के तीर गये चलकै, बिसवास दै देवन कौ अलकै ।
वट-पेढ अनूँपम छाँह बसे, कल कारन कौं जट-जूट कसे ।।८६३
संखचूड़ पै भेजेऊ दूत सही, कररी गत ताही नै वात कही ।
स्वर भाग लये तुम आसुर नै, मुरझायकै देव लगे मरनै ।।८६४
विध कौं सिव कौं लहि संग वहे, करुनाकर विस्नु सौं वाच कहे ।
सरनागत विस्नु सनातन के, जगतीमँह देवन जातन के ।।८६५
जगनाथ जनार्दन हेत जँही, त्रपुरार कौं दीन त्रसूल तँही ।
सिवलै सोऊ आयेऊ संगर कौं, दल लै केऊ संग मै डिंगर कौं ।।८६६
कहुँ स्याँम उपाय सौं संध करौ, मंडकै नत संगर वीच मरौ ।
कहीयै रुच होय सो ठीक कथा, जिही रीतकहूँ सिव जाय जथा ।।८६७
कररी सुन दूतहु की कहनी, दँनुविंद्र कौं रीस लगी दहनी ।
पुन वात कही तिही दूत प्रतै, हम आवहिगे परभातहुतै ।।८६८
अवलंवत दूत चल्यौ उठकै, सिव पै सोइ आय गयौ सटकै ।
सिव सौं वरतंत कह्यौ सगरौ, प्रभू दाँनव ऐंहै भयै पगरौ ।।८६६
करहै रनकौं निसचै करकै, डहकावहु नाथ नही डरकै ।
गन सिंभु विदा कीय व्योम गली, सुन दूत हकीकत कौं सगली ।।८७०
द्रुत जाय कह्यौ तिन देवन कौं, भव के दनुविंद्र के भेवन कौं ।
सिखीवाँहन आदिक वात सुनी, चँहु ओर सौं बोलकै सैन चुनी ।।८७१
पद वंदन कीन महेस पिता, गँन वीरहभद्र सु संग गता ।
मिलकै स्वर नंदीय काल महाँ, अरु अक्ष विसाल सु भद्र अहा ।।८७२

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तहाँ पिंगल नैन रु बाँन तिते, उड़ आये विकंपन वीर इते ।
वहु विक्रत और विरूप बली, मनी भद्र रू वास्कल सैन मिली ।।८७३
कपलाक्ष रू दीरघ द्रंष्ट किते, जुर तांमर-लोचन आदि जिते ।
विकटा कलि कंटहू भद्र वढे, कलजोह कुटी चर आय कढे ।।८७४
उनमत्त बली रन स्लाघी इतै, दुरगंम्म रू दुर्जय दौर द्रुतै ।
अठ भैरँव रौद्रहू बंध अनी, ठिक बारह रुद्रन पैज ठनी ।।८७५
वसु आठहू आय मिले बहुरै, धरवज्र मिले कर वज्र धरै ।
रवि बारह तेज जुतै रसमी, जुर अग्नि वढायकै ज्वाल जमी ।।८७६
सुरवार्धक हू बडवासुतकै, तहाँ आय कुवेर मिले तितकै ।
नल कूबड़ और जयंत निरे, जमराज परंजन आय जुरे ।।८७७
सनी आय प्रभंजन बोल समा, जहाँ मंगलहू बुध होय जमा ।
दल आय इसाँन के देवन कौ, लरकै रिपु सौं जय लेवन कौ ।।८७८
विषमायुध आयेऊ वीर बलो, उगृद्रंष्ट हु की प्रतना उभली ।
चल कोटरा आयेऊ उग्रचंडा, पुन कैटभी रूप धरै प्रचंडा ।।८७९
भद्रकाली भयंकरी अष्टभुजी, सब आयुध आपनै हाथ सजी ।
नृत आरभटी वृत मै निपुना, उग्र बावन वीर संगी अपना ।।८८०
बपु अंसुक लाल ही माल वनी, जिह संग मै खप्पर लै जुगनी ।
जिहि लंबीय जोजन जीह जुतै, कर पद्म गदा खग चर्म कतै ।।८८१
धनुँबाँन लयें तिरसूल धृता, चिव देत है ताही पै ब्योम छता ।
संख चक्र गदा अरु पद्म सजै, गहरावत माँनहु मेघ गजै ।।८८२
सगती अरु मूसल वज्र सही, मिल मुग्दर प्रासिक हाथ्र मही ।
वरुनास्त्र रू वैस्नव अस्त्र वनै, अग्नास्त्र करै वसमै अपनै ।।८८३
वृहमास्त्र नरायन-अस्त्र वनै, गरुड़ास्त्रहु आदक कोन गनै ।
परजंन्य रु गंध्रव अस्त्र प्रतै, कर पासु पतास्त्र लऐं क्रम तै ।।८८४
जभनास्त्र महेस्वर अस्त्र जुरे, भगवंती भुजा दिब अस्त्र भरे ।
कुसमांड रु भूत विताल किते, त्रय कोट सु जोगनी संग तितै ।।८८५
सभकै त्रय कोटहू सांकनीयै, डहकावत येतेहू डाँकनीयै ।
ब्रमराकस और पिसाच-वृती, जुर आयेऊ केतक साथ जती ।।८८६
सिव हाजर कीन सकंध सबै, त्रपुरार खुसी भये देख तबै ।
तुलसी संखचूड़ तीया तब ही, स्रवना इह वात सुनी सब ही ।।८८७

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दोहा

जुध करनै कौं सुर जुरे, सुनी जु तुलसी स्राँन।
धर-धर लागी धूजनै, हित जाँनी पति हाँन ।।८८५
पति बुलायकै आप पँहि, बोली वचन विचार।
अबला के अहबात की, सब विध करहु सँभार ।।८८६
विध करता इह विस्व के, पालत विस्नु प्रमाँन।
सिव करता संघार के, पलटे सकल प्रधाँन ।।८९०
स्याँम करहु पति समुझकै, देवन सौं तज द्वेष।
अमर होय अहवात अह, विधवत काल विसेष ।।८९१

छंद त्रोटक

पति वात सुनी निज प्राँन-प्रीया, समुझाँवन लाग तँही सुकीया।
सुख-दुःख बँधे सव काल समा, वरतै वस काल समा-विसमा।।८९२
तरु कालकौं पायकै ऊगत है, परवाल सिखा जर पूगत है।
फिर फूलत लागत है फलहू, दिखरावत छाँह मिले दलहू ।।८९३
बस पायकै काल बहोरन सौं, झरजावत पौंन जझोरन सौं।
विनसै इह विस्वहू फेर वनै, सब कालही की करतूत सुनै ।।८९४
विध काल सौं विस्व वनावत है, हरि काल सौं पालन पावत है।
सिव ताहि सँघारत काल सता, वस कालही सौं प्रवृता-निवृता ।।८९५
प्रकृती परमातम-रूप परे, केऊ कालकै आस्रत ख्याल करै।
जन सौं जनहू उपजावत है, जन कौं जन पालत जावत है ।।८९६
जन कौं जन नासत होय जमा, इह कालही की गँनीयै उपमा।
वस सासन जास वयार वहै, दमुना जिह सासन ज्वाल दहै ।।८९७
वरसावत इंद्र रसा वरखा, पय सागर जेम बँधे परखा।
ससी धारत है जिम सीतलता, कवहूँ हुय पूरन ह्वै कमता ।।८९८
विचरै जगहू हुय काल बली, मृतु मारत जीवन काल बली।
भरता कौं जँही समुझौ भरता, करता कौं जँही गँनीयै करता ।।८९९
पुन पालनवारे कौ पालन है, जमहू कौं सोऊ जमजालन है।
जिह के सरनै मरजावन मैं, कहा वात कहै कदरावन मैं ।।९००

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तुम कोन अहो हम कोन त्रीया, कर संग लयौ जुत कर्म क्रीया।
वस भागकै देह मिलै बिछुरै, कोउ मूरख याही कौ सोच करै ।।६०१
पर सोक तजै सोइ पंडित है, उर जाही कै ग्याँन अखंडत है।
वतरावत ग्याँनमई वतींयाँ, रमनी-संग वीत गई रतीयाँ ।।६०२
मन जाँनकै वृंह्म-महूरथ कौं, रन कारन त्यार करयौ रथ कौं।
सुत सौंपकै राज-सिंघासन कौं, दल मंत्रिन दासीय-दासन कौं ।।६०३
रजधाँनी विभौ दीय काज रसा, उठ चाल्यौ प्रभात ही के अरसा।
संग है दल पैदल सैन सज्यौ, गहरायकै देवन सीस गज्यौ ।।६०४
चल अग्रकौं रत्न-विमाँन चढयौ, वरखा-रित वद्दर जेम वढयौ।
विच मारग व्योम लग्यौ वहनै, गृह-राह मनौ रवि कौं गृहनै ।।६०५
अँनि बाँध खरे रहे देव इतै, जुर जूहन-जूह-समूह जितै।
बिब ओर तै सस्त्र लगे बहनै, दनु देवन सैन लगे दहनै ।।६०६
कल-भार परयौ नही जात कह्यौ, रव मारहु-मारहु होय रह्यौ।
सर येक प्रहारत येक सहै, विच खेत बकारत देव वहै ।।६०७
स्रबला केउ मारत सालन सौं, भट केक परोवत भालन सौं।
कर दाव किते सकती रुकती, छुरका जमदाढ़ प्रहार छती ।।६०८
केउ देत प्रहार कुठारन की, धक चाल करै खग-धारन की।
लर वैर अनाद के लेवन कौ, दल जूझत देव-अदेवन कौ ।।६०९
दनुँविद्रहु सैनद कारत है, हर सैन इतै हलकारत है।
वृष रु परवा सौं जुरे जु वृषा, बहु अस्त्रन-सस्त्र करी वरषा ।।६१०
रवि सौं विप्रचित्त अरयौ रनकै, जय चाह उमाह उभै जनकै।
बिधु दंभ जुरे संग लै बल कौं, कालकेस्वर काल रुपे कल कौं ।।६११
गवकर्न हुतासन टेक गही, जुर कालही के यक श्रीद जंही।
मिल वार्धकदेव जहाँ मय सौं, भिर भृत्यु भयंकरहू भय सौं ।।६१२
जम सौं रन आय सँघार जुरे, इत वर्न विकंकन खेत अरे।
जहाँ चंचल वात जुरे जुध कौं, वहुरै वृतगर्ब मिले बुध कौं ।।६१३
समले रगताक्षहू संग सनी, वंसू और सुवर्च सौं रार वनी।
अरू रत्नहसार जयंत अरै, बड़बासुत दीपत सौं बहुरे ।।६१४
नलकूबर धूंमर सौं निहसै, धर साहस धर्म धुरंधर सै।
इत मंगल और उपाक्ष अरे, भट भाँन सुभाकर जुद्ध भिरे ।।६१५

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पुन काँम जुरे रन पीठर सौं, क्रम वारह आदित जू कर सौं।
पुन ग्यारह रुद्र प्रकारन सौं, गँम पाय भयंकर ग्यारन सौं ।।६१६
उग्रचंड जुरे माहाँमारी इतै, पुन तंडु अदेवन जूह प्रतै।
जुध घोर करचौ सुर होय जमा, असुरायन जोर बढे अधमा ।।६१७
दल देवन कौं बहु मार दई, बढ दाँनव साथ भये विजई।
सुर भाज चले अपयाँन समाँ, जितहू तित होय न कोय जमा ।।६१८
ऋतकासुत जुद्ध मैं उद्ध ऋती, पग माँड खरे रहे सैनपती।
जुरकै सुरहू मुर संग जबै, सिखी-वाँहन कौ बल पाय सबै ।।६१६
सिखी-वाँहनकै गन हू सिगरे, कल कौं सिखी-वाँहन संग करे।
दनुँविंद्र की सैन मिटाय दई, भर खप्पर जुगन संग भई ।।६२०
जर तूट गई दनुँ जालीय की, किलकार मची जहाँ कालीय की।
केऊ तुंडन खंडन मार कुकै, झर मुंडन झुंडन-झुंड झुकै ।।६२१
घट घायल ह्वै नट घूंमत है, लरनै इक कौं इक लूंमत है।
खल देख स्कंध कौं खेत खरे, भट दंभ विकर्नहू आय भिरे ।।६२२
महाँमारी सकत्त जबै मुरकी, घहरायकै दाँनव पै घुरकी।
माहाँमारी सकंध उभै मिलकै, बहु दाँनव मार चली बलकै ।।६२३
सुर होय सुखी वरखे सुमना, बहु गंध्रव गावत बारँगना।
दनुविंद्र सुन्यौ रव देवन कौ, अनकारज होत अदेवन कौ ।।६२४
बढ आय विमाँन पै वीर-वली, द्रढ वाँनन सौं सुर-सैन दली।
कर तै धनुँ काँनन लौं करखै, बरखा-रितु मेघ ज्युहीं बरखै ।।६२५
दीय मार कठोर सु घोर दसा, बल बाढेऊ जोर दिसा-विदसा।
पर कूक अचूक पलायन की, पहिचाँन न आप परायन की ।।६२६
चँहु ओरन बाँनहू बाँन छये, भुंय अंबर माँनहु येक भये।
सुर आदिक और नँदीस्वरकै, डहकाय रहे सबही डरकै ।।६२७
षट-आँनन दीसत खेत खरे, दल देवन ताही की लार दुरे।
दनुँविंद्र षड़ानँन देख तँही, वढ आयेऊ काल विसेक तँही ।।६२८
तरु लै गिर लागेऊ ताड़न कौं, अरू दीरघ स्रंग उखाड़न कौं।
बहु मार दई फिर बाँनन की, परतीत मिटी स्वर प्राँनन की ।।६२६
कऊमार पै घोर अँधार करचौ, उठ मेघ मनौ गिर पै उलरचौ।
दनुँविंद्र सकंदकै बाँन दयौ, लगते सम चाप कौं काट लयौ ।।६३०

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कैऊ बाँहन देवन चूर करे, पुहमी रथ घोटक तूट परे।
सिखी-वाँहन बाँहन कौं सरसै, पँखवा पर पीर करचौ परसै ।।६३१
सविसेख सकंद लखे सुरमै, इक सक्ति भृमाय दई उरमै।
लगतै सम कोह मै मोह लयौ, भर येक महूरथ चेत भयौ ।।६३२
कऊमार झलाझल क्रुद्ध करचौ, धनु दत्त रमाँपति हाथ धरचौ।
बहु अस्त्र तजे केऊ बाँनन कौं, असुरेस भजे अवसाँनन कौं ।।६३३
तरु पव्वय डारेऊ सीस तितै, जिन आवत टारेऊ पार जितै।
अगनास्त्र तज्यौ दनुँविंद्र इतै, क्रतकासुत देख लयौ क्रमतै ।।६३४
सरमेघ तज्यौ तिह देख समा, ज्वल सीतल ह्वै इल-वीच जमा।
दनुविंद्रकै विछ्छन बाँन दये, गिर चाप निषंगहू तूट गये ।।६३५
रथ सारथि खूटकै लीन रसा, दल भागेऊ देख दिसा-विदसा।
क्रतकासुत सक्ति लई करमै, असुरेस कौं ताक दई उरमै ।।६३६
मुरछा लहिकै परजाय मही, रनकी तनकी न सँभार रही।
लहिकै पुन चेत कौं चाप लयौ, निज सारथि लायेऊ रथ्थ नयौ ।।६३७
तिह पै चढ लाखन तीर तजे, इत सौं उत अंबर मै उरझै।
सर स्वर्न पँखारन रूप सिरा, किरनै मनु दीसत भासकरा ।।६३८
क्रतकासुत रोक रहे क्रम कौं, परचंड दिखाय पराक्रम कौं।
असुरेस लई कर सक्ति इतै, कल-जुक्त जमाय तजी कर तै ।।६३९
अतजोर कुमारहु पै उसरी, प्रलयाग्न मनौ चहुँधाँ पसरी।
सकती जिम लागीय काल सिछा, माहाँसेन कौं आय गई मुरछा ।।६४०
माहाँकाली चली लहि गोद मँही, त्रयनेत्र ससींम गई तबही।
सिव सौंप चली फिर जुद्ध सजी, गलकौं भर केहर-नाद गजी ।।६४१
गनहू सिवके केऊ साथ गये, जुरकै रन कौं दनुवीर जये।
बलसाली जहाँ माहाँकाली बढे, केऊ गंधृव किन्नर आय कढे ।।६४२
कल वावन वीर मिले किलकै, मधुपाँन करचौ तिनसौं मिलकै।
सभ कोटवी डाकन-साकन की, हलकार वढी गन-हाकन की ।।६४३
केऊ नाचत खप्पर लै करमै, भरकै रस तेज पीयै भरमै
केऊ भूत-वितालहू ख्याल करै, जम जालन-तालन ताल जुरै ।।६४४
भख लै केऊ चख्खत भेजन कौं, केऊ तोरत कोर कलेजन कौं।
बहु खावत फिफ्फर बुक्कन कौं, टटकोरत आमख टुक्कन कौं ।।६४५

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सुर-जोर बढचौ असुरायन सौं, सभ्र कालीय पाय सहायन सौं।
दनुविंद्र की सैन भई दुचती, मग सूरन के रुख सौं मुचती ।।६४६
रिव कालीय तेज तपाय रह्यौ, दसहूदिस आतप जात दह्यौ।
जहाँ आय गयौ दनुँविंद्र जई, हिमकै गिर की मनु आड़ हुई ।।६४७
तहाँ कालीय लै अगनास्त्र तज्यौ, लखकै रवि ग्रीषम कौ लरज्यौ।
दनुँविंद्र लख्यौ प्रलयाग्न दसा, मुदरास्त्र चलायकै ताहि मुसा ।।६४८
माहाँकाली तज्यौ वरुनास्त्र मतै, गहि गंध्रव अस्त्र सौं कीन गतै।
तव काली महेस्वर अस्त्र तज्यौ, वर वैस्नव-अस्त्रहु सौं वरज्यौ ।।६४६
झट काली नारॉयन अस्त्र झिल्यौ, घटकौं रिपु ताककै ताहि घल्यौ।
रथ तै उतरचौ दनुँविंद्र रसा, द्रग देखत ताही कौं घोर दसा ।।६५०
कर-जोर उभै परनाँम करचौ, हथ-जोरीय सौं तिह तेज हरचौ।
वृह्मास्त्र तज्यौ तब काली बला, झुक वृंह्म ही अस्त्र सौं ताहि झिला ।।६५१
दिव-अस्त्र कौं कालीय छोर दयौ, लहिकै दिब-अस्त्र कौं झेल लयौ।
सगती इक कालीय दिघ्घ सजी, तन कौं दनुँकौं तिह ताक तजी ।।६५२
कीय खंडन मारकै कंडन कौं, मुहमेज भयौ रन-मंडन कौं।
लख कालीय पासुपतास्त्र लयौ, चहुँ ओर झलाझल तेज छयौ ।।६५३
अवसाँन दयौ नभ बाँन इही, मत अस्त्र प्रहारहु खेत मही।
जब अस्त्र तज्यौ नहि काली जँही, रसवीर छई पग रोप रही ।।६५४

दोहा

कसै रहत हरी-कवच कौं, दाँनव ईस दुरंत।
पतिवृत नही विगरै प्रीया, इतनै होय न अंत ।।६५५
वृह्मा कौ वरदाँन वर, काली सुनीयँ कथ्थ।
इही अस्त्र सौं अधम इह, होवही निसचै हथ्थ ।।६५६

छंद द्वै-अख्खरी

काली नभ-बाँनी सुन कहनी, दनुँ भक्षन लागी जनु दहनी।
पासुपतास्त्र नही कीय प्रेरन, घट दाँनव केऊ लागी घेरन ।।६५७
खल पकरत ताही कौं खावत, चखनी करत फिरत रद चावत।
खूटन लागी फौज खलन की, जीह लपक मनु सिखा जुलन की ।।६५८

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

संखचूड़ काली-कथ सुनकै, चल्यौ सुभट ठट आगै चुनकै ।
लीलन कौ दौरी तिह लारी, इतनै भाग्यौ दनुज अगारी ।।६५६
आय सु तीक्षन फिरचौ जु आड़ै, गिर सुमेर जैसै पग गाड़ै ।
दिव्य अस्त्र काली कै दीनौ, काली कै घट पीड़त कीनौ ।।६६०
काली खड़ग लयौ कर कैसौ, ज्वाल-रूप दावानल जैसौ ।
पती दनुजकै सीस प्रहारचौ, ताही दिव्य-अस्त्र सौं टारचौ ।।६६१
काली ग्रहन करन खल काया, मुख गिर-किंदर कीय महमाया ।
मायक दाँनव कीय तन मोटा, खाय सकी नह पकर खसोटा ।।६६२
मुक्का येक दयौ उर-माँही, घूंम अचेत भयौ तिह घाँही ।
पाव पकर नभ-अंतर प्रेरचौ, हटचौ नही रन देवी हेरचौ ।।६६३
कीनी खुदा पीड़ जब काली, जाय भक्ष कीय दाँनव जाली ।
पँहुची जाय तुरत सिव पाँही, जुध की वरनी कथा जहाँही ।।६६४
सिव सुनकै उर भये सुखारी, संगर हित गन सैन सँवारी ।
पासुपतास्त्र गह्यौ सिव पाँनन, ऊठ चले रनकै अगवाँनन ।।६६५
रतन-विमाँन बैठ तव राजा, सनमुख आयेऊ जोर समाजा ।
जन-जन गन दैतन सम जूझत, येक-येक सौं येक अरूझत ।।६६६
राजा अरु संकर रन रूठे, जाजुल काल उभय जनु जूटे ।
अनुवच्छर वीते सत येका, असुर मरे तिह ठौर अनेका ।।६६७
राजा सिवहू जूझत रहे, विमुहा ह्वै नही येकहु वहे ।
ठहरे स्रमत होय निज ठाहर, बीरासन कै गये न बाहर ।।६६८
वृद्ध विप्र कौ वेख वनायै, वँह अवसर श्रीविस्नू आयै ।
जाचन्या कीनी नृप जाँही, माँगहु विप्र होय मन-माँही ।।६६९
दरद मिटै इह कवच दीजीयै, लाभ सुजस कौं भूप लीजीयै ।
माँग्यौ सोइ दीनौ माहाराजा, विप्र दई आसिष जुत ब्याजा ।।६७०
भूप-रूप कर श्रीभगवाँना, पहर कवच तन करेऊ पयाँना ।
तुलसी पतिवृत नार तहाँही, जाय मिले रनवास जहाँही ।।६७१
भोग-विलास करचौ सुख भीनौ, छल-बल हरि तुलसी नही चीनौ ।
पतिवृत खंडत होत प्रीया कौ, थित रन असुरपती-बल थाकौ ।।६७२
अवसर जाँन सिंभु अविनासी, पावक सिखा तेज परकासी ।
मारतंड ग्रीषम-रितु माँनौ, सारभूत सब सस्त्र समाँनौ ।।६७३

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मारचौ असुर सूल उर-माँही, विषधर सरप जेम विलगाँही ।
तन रथ सहित लगत ही तूटौ, विखरत अवइव प्रांन विछूटौ ।।६७४
गोप सुदाँमा-रूप लही गत, पँहुच्यौ सोइ गोलोक-पंथ प्रत ।
राधाकृस्न चरन सुख-रासी, अभय लह्यौं सरनै अविनासी ।।६७५
संखचूड़ के हाड़ समाँना, भये संख भुँव उदध भराँना ।
पूजन देवन हेत पवित्रा, संखोदक लेवत सरबत्रा ।।६७६
वसत संख जहाँ तीरथ वासा, पाप विलावत पुंन्य प्रकासा ।
सेवालय तज सब्द सुनावत, जातै सकल अमंगल जावत ।।६७७
वसत लक्षमी निश्चल वासा, वँह तै कबहु न होय उदासा ।
श्रीविस्नू जहाँ रहत सहाई, वसत जहाँ-जहाँ संख वसाई ।।६७८
संख-सब्द स्त्री सूद्र सुनावै, जहाँतै रमाँ रूठकै जावैं ।
इह प्रमाँन जाँनहु इतिहाँसा, मृखाँ रती नहि येकहु मासा ।।६७९
दाँनव मरचौ सबहि मिल देवन, सिव को कीनी पूजा सेवन ।
आप-आपकौ लहि अधिकारा, सबही लोकन सबहि सिधारा ।।६८०
सिव कयलास गये सुस्थाँना, सब्द करत जय जयत समाँना ।
गुन गावत किन्नर गंध्रव-गन, माहाँ रिखी भये देव मुदित मन ।।६८१
संखचूड़ इतीहास सुनायौ, परममुनी नारद सुख पायौ ।
तुलसी कौ आख्याँन तहाँही, पूछचौ मुनि नाँराँयन पाँही ।।६८२
श्रीदामोदर कपट-सरूपा, भये विप्र जाच्यौ तव भूपा ।
दयौ भूप जो कवच दाँन मैं, तन सवार लीय तँही त्राँन मैं ।।६८३
संखचूड़ कौ वेख सवाँरचौ, धनुष-बाँन विजई कर धारचौ ।
निहसत भेरी और नगारा, पहुचे राजभवन परकारा ।।६८४
बंदीजन लागे बिरदांवन, गायन मंगल लगी सु गावन ।
तुलसी पतिवृत नार तबैही, साझ्यौ तन स्रंगार सबैही ।।६८५
निज जाँन मिली नाराँयन, परम प्रीत की रीत परायन ।।★
जुद्ध-कथा पूछी क्षिन जासौं, तब हरि वात कही इह तासौं ।
मैं अजेय सिव जाँनै मनमैं, रीत स्याँम की कीनी रनमैं ।।६८६

★ मूल ग्रन्थ में दो ही चरण हैं ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

देवन भाग दयौ देवन कौं, खित मै लई राज खेवन कौं।
तुम तीय कह्यौ करी मै तैसी, कथा फेर पूछत हौ कैसौ ॥९८७
रमनी तोहि देखी सुखरासी, उरकी-मुरकी सबै उदासी।
पकर बाँह लीनी परजंका, सु रत करन लागे तज संका ॥९८८
कपट-वेख की करकै काया, रिषीकेस रति खेल रचाया।
उठे रमन करकै हरि आतुर, चित विचार तुलसी मति चातुर ॥९८९
इह तौ दगावाज कोई औरें, भोग करचौ मै रही जु भौरें।
कुहना करी निकृत रत-काँमी, सठ मेरौ इह नही जु स्वाँमी ॥९९०
पूछन लागी परम प्रवीनी, छल-बाजी कीनी हम चीनी।
आपौ करहु प्रकास अनारी, नहि जाँनत मै पतिवृत नारी ॥९९१
रिस-वस देखी तुलसी राँनी, प्रगट रूप कीय सारंग-पाँनी।
नील-जलद तन पंकज नैंना, बिमल-हास मुख इंमृत बैंना ॥९९२
जब जाँनी तुलसी विस्नू जीय, पती रमाँ नाँहिन मेरे पीय।
मुरछत आय परी धर-माँही, पतिदेवत मत गयौ पलाँही ॥९९३
चेत पाय हरि कौ मुख चितवत, प्रभू विगारचौ मेरौ पतिवृत।
अकुलावत बोली पुन ऐंसै, तुमरौ हीय पाँहिन है तैंसै ॥९९४
पाहन ह्वैकै जगत पुजावहु, प्रभू कपट कौ इह फल पावहु।
मेरौ पति छल-कर तुम मारचौ, वंचक ह्वै पतिवरत विगारचौ ॥९९५
करचौ परायै हेत कुकर्मा, धिक-धिक नीत तुमारौ धरमा।
इतनी कहिकै रुदन उचारचौ, धर धीरज प्रभू सातक धारचौ ॥९९६
तुलसी के इह वचन सुने तव, करुनानिध इम बोले केसव।
जोग-जुगत तै मोर करचौ जप, तुम हित संखचूड़ कीनौ तप ॥९९७
भोगी संखचूड़ तोहि भाँमिन, करनी-फल लीनौ सब काँमिन।
अब हम दरस दीयौ तुम आई, भूँड़ देहु मत कहहु भलाई ॥९९८
दिव्य-देह धर हम सुख दीजै, लिछमी ज्युँही लाभ तुम लीजै।
पुहमी भरत-खंड इह पावन, नदी होउ तुम पाप नसावन ॥९९९
गिलका नाँम जगत जस गावहि, अरथ धरम अरु काँम उपावहि।
इह तन केस होय तरु ऊगहि, पूजा-हित तुलसी-दल पूगहि ॥१०००
देवन कौं चढहै सुख-दाँनी, पवित्र माँन पुज्जहि जग-प्राँनी।
वसहै देव जहाँ तुम वासा, करहै तीरथ सबही प्रकासा ॥१००१

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

स्वर्ग मृत्यु पाताल सहेता, गऊलोक वैंकूँठ गृहेता।
थपहै जहाँ तिहारौ थाँना, नित वसहै जहाँ पद-निर्बांना ।।१००२
विरजा नदी-तीर तुम वसहू, जँमुना-तट पै लोर्जं जसहू।
मंडल रास वृंद्रावन-माँही, चंदनवन माधववन छाँही ।।१००३
केतकवन मालतीवन कुंदन, वसहु मल्लका वन जग-वंदन।
पुन्य भूँमका जहाँ पवित्रा, सुवस वसहु तुलसी सरवत्रा ।१००४
जहाँ पत्र गिरहै तोहि जाई, वँहा वसहि सब तीरथ ग्राई।
तुलसी-दल लैहै जल तामै, ग्रत ग्रभिसेख पीयै ग्ररु पामै ।।१००५
दुजन दयौ जनु जिग मै दाँना, सब तीरथ मनु करचौ सिनाँना।
जिग मै दीक्षत भयौ जु जोई, तुलसी हरि कौं चाढत तोई ।।१००६
कारतक मास विचार कारना, धरै हरी की पुज्ज धारना।
तुलसीदल चाढै हित तरनै, विगत ताहिं फल हीं की वरनै ।।१००७
दस सहस्त्र दुजकौं गऊ देवै, लाभ पुंन्यकौ सोइ जन लेवै।
मरन-समय दल मुख मै मेलै, प्राँनी ग्रसह पापकौं पेलै ।।५००८
वसत लोक वयकूँठ विचाला, काल-चाल नही करै कराला।
नित्य पीयै जो तुलसी-नीरा, ग्रनँत जिग्य फल लहै ग्रपीरा ।।१००६
कर तुलसी लै मंजन कीजै, वास जाय वैंकूँठ वसीजै।
तुलसी-माला धरै जु तनमै, विचरै ग्राम तथा कोऊ वनमै ।।१०१०
पैंडं-पैडं जिग कौ फल पावै, जनम-जनम के ग्रघ मिट जावै।
तुलसी निकट कोऊ ग्रतताई, सपथ करै मिथ्या सरसाई ।।१०११
वृंह्म दिवस लग नर्क वसावै, विदुष वात यह सत्य बतावै।
करै प्रतग्या जो जन कोय, तुलसी-दल लै करमै तोय ।।१०१२
पालै नही नर्क जो परै, सूर-चंद जौलौं दुख सरै।
पूरनमा रू ग्रभास पवित्रा, वरतै जब संक्राँत विचत्रा ।।१०१३
द्वादसी ग्ररु रविवार दिखावै, ग्रंग लगाय तेल कौं ग्रावै।
संध्या रात दुफैर समाँना, सुच विन कीनै तथा सिनाँना ।।१०१४
तुलसी-दल कोऊ मंजर तोरै, बूढै नरक ग्राप कुल बोरै।
धीरज सौं कहु रहै धरेई, त्रय निस है पवित्र दल तेई ।।१०१५
स्राध वरत ग्रथवा-क सिनाँना, करै सुक्रत ग्रथवा-क कराँना।
उत्तम फल पावै ग्रधिकारी, विस्नु कहत तुलसीहु विचारी ।।१०१६

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तरवर अधिष्टात्रि है तूँही, जग मै कल्पवृक्ष कै ज्यूँही।
काँमी पूरन करन काँमना, इह तुलसी की परम आँमना ।।१०१७

दोहा

लेव वास गोलोक मै, क्रस्न-संग अनुकूल।
सुख विहार करहू सदा, भवकौ संसय भूल ।।१०१८
अधिष्टात्री गल आपगा, गलका रहहै गात।
मोहि रूप सौं उदध मिल, खित विस्तारहि ख्यात ।।१०१९

छंद द्वै-अख्खरी

हम ही भरथ-खंड तुम हेतू, सालग्राँम होय सुख सेतू।
तट तेरै रहिहै विच तोई, ग्राँवाँ मै अपनौ तन गोई ।।१०२०
सालग्राँम जपहि संसारा, पूजन कर उतरहि भव-पारा।
कोटन क्रमी धारकै काया, द्रष्टा तीक्षन-रूप दिखाया ।।१०२१
आयुध-जुत मूरत ह्वै ऐहै, लाखन संत पुञ्ज हित लैहै।
रूप कहत तिह मूरत रूरौ, पुंन्य-प्रवाह वढहि जग पूरौ ।।१०२२
जुदी-जुदी ताकी सब जाती, वरनत फल अरु गुन-विख्याती।
येक छिद्र ह्वै मूरत आई, च्यार चक्र जामै परछाई ।।१०२३
जामै मेघवरन दुति जागै, सो लिछमी नाराँयन-सागै।
मालाकार छिन्न जिह माँही, निसचै कर होवै कहु नाँही ।।१०२४
छिद्र दोय अर चक्र च्यार है, वँह रघुवर मूरत उदार है।
ह्रस्व-रूप ह्वै चक्र होत है, वँह वाँमन मूरत उदोत है ।।१०२५
चक्र दोय अत लघु प्रतिछाया, रस्व रूप वनमाल रचाया।
श्रीधर रूप विचारहु सोई, हितू गृहस्थन जनके होई ।।१०२६
दोय चक्र निस्तुल दामोदर, माला रहत सु रूप मनोहर।
लगे वाँन कौ चिन्न लीयैही, वाँन रु तरकस चिन्न बसैही ।।१०२७
कहत राँम रणं तिह प्रतिकाया, दीरघ लघू न रूप दिखाया।
सात चक्र की मूरत सोई, हित जुत छत्र विभूषत होई ।।१०२८
रुचर राज राजेस्वर-रूप, भवन-वीच पूजै जिह भूप।
स्थूल-रूप नव-चक्र सहेता, वपुं अनंत भाखत ततवेता ।।१०२९

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अरथ धरम अरु कांम उपावै, पूजा करै मोक्ष-फल पावै।
चक्राकार चक्र दोय छाजै, विच मै गोपद चिन्न विराजै ।।१०३०
चिन्न लक्षमी ह्वै प्रतिछंदा, मधुसूदन तिह कहत मुनिंदा।
कहत सुदर्सन जिह सह कोऊ, जाँनत हरि-पूजा कौं जोऊ ।।१०३१
येक चक्र ह्वै गुप्त अकारा, नाँम गदाधर है निरधारा।
दोय चक्र वँह मुख रुख देखौ, वरनत तिह हयग्रीव विसेखौ ।।१०३२
विस्रत मुख ह्वै चक्र विराजै, रूप भयाँनक नरसिंघ राजै।
जिह सेवैं वैराग जगावै, पुन विराग-सौं मुक्ती पावै ।।१०३३
वनमाला को चिन्न विसेखै, लिखमीपति नरसिंघ जिह लेखै।
सो गृहस्थकैं लायक सेवा, भाखत है नरसिंघ सभेवा ।।१०३४
द्वार स्थाँन चक्र है दोई, समस-रूप लिछमी जुत सोई।
वासुदेव प्रतिकाय विचारैं, अत सुखदायक संत उचारैं ।।१०३५
सुक्षम चक्र छिद्र-जुत सोई, जिह प्रद्युम्न कहत है जोई।
प्रतिमा-रूप चक्र-द्वै पैसैं, येक-येक सौं लगे जु ऐसैं ।।१०३६
पीठ वड़ी संकर्षन पेखौ, लायक पुज्ज गृहस्थ न लेखौ।
पीनवरन वृति सोभन पूरे, रूप वहीं है अनुरध रूरे ।।१०३७
छत्राकार होय प्रति छाया, मिलै पुज्ज-सौं राजहु माया।
पूजै गोल लक्षमी पावत, भेद असुभ जामै कछु भाखत ।।१०३८
हाँन लढी आकार जु होवै, सुई लरीया सौं मृतु हुय सोवै।
मुख कराल सौं दारद मेला, भूरी करै हाँनकै भेला ।।१०३९
फटे चक्र सौं व्याधी फेरा, घट फूटै तै मरतक घेरा।
वृत अरु तास प्रतिष्टा-विधी, स्राध देव-पूजन की सिधी ।।१०४०
सालग्राँम निकट धर साधन, उत्तम जाँनहु सफल अराधन।
पूजा सालगराँम प्रचारै, स्नाँन करचौ मनु तीरथ सारै ।।१०४१
अभिभृत स्नाँन करचौ जिग आई, तप वृत तीरथ संजमताई।
वेद करचौ जनु पाठ विचारा, सेवा सालगराँम सँभारा ।।१०४२
चरनोदक जन लेत चढाही, जोवन-मुक्ति जाँनीयै जाही।
विवध रीत पावत फल वाँचा, सपरस सौं तीरथ फल साँचा ।।१०४३
अंत अवस्था मोक्ष उपासी, वैकूँठपुर को हुवै जु वासी।
हरिकौ दास होय जहाँ विहरै, ठाहर तँहीं अचल हुय ठहरै ।।१०४४

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गोहिथ्या आदिक अघ गावै, वृम हथ्यादिक दुरत विलावै।
प्रथवी पद-रज होय पुनीता, जग मैं आय जनम जन जीता ।।१०४५
चरनोदिक की सुनै जु चरचा, अनँतदेव कीनी जनु अरचा।
पित्र तरै ताकौ परवारा, प्रभू-पद भेटै वारनपारा ।।१०४६
सपथ करै धर सालगराँमा, वाचा मिथ्या आँन विराँमा।
परै नरक अभिअंतर प्राँनी, कहत वेदवित सत्य कहाँनी ।।१०४७
कौल करै पुन कोऊ कैसौ, जाकौं नही निभावै जैसौ।
परै नर्क मै सोऊ प्राँनी, कहत वेद इह सत्य कहाँनी ।।१०४८
सालगराँम चढे दल सोई, करै वियोग भूलकै कोई।
वाँमा कौ तिह होय विछोहा, मिटै नही भ्रम ताही मोहा ।।१०४९
करै विजोग संख दल केरा, फिरै नारकी भीतर फेरा।
हींन भार जासौं पुन होवै, वार-वार तन पाय विगोवै ।।१०५०
सालगराँम संख दल तुलसी, हिल-मिल राखत तिह प्रति हुलसी।
सो ग्याँनी जानहु संसारा, नाँहिन संसय है निरधारा ।।१०५१
संख तुलसीदल सालगराँमा, येक ठौर राखत अभिराँमा।
परपाटी है आद पुनीता, संत वखाँनत ख्यात सुमीता ।।१०५२
इह कहि हरि चाले निज ओका, धरचौ दूर तुलसी उर धोका।
हरिकै लोक गई हरकाती, दिव्य देह कौ रूप दिखाती ।।१०५३
निश्चल हुई च्यार हरि-नारी, पद्मा सरस्वति गंगा प्यारी।
ऐसै ही तुलसी अरधंगा, प्रीत-रीत जासौं परसंगा ।।१०५४
तुलसी है गलका नद तेई, माँहीं सालगराँम मिलेई।
तट पै पंतवरन है तनके, घने सरन मै वरन जु घनके ।।१०५५
सालग्राँम तुलसी की सेवा, भल प्रकार भाखत मुनि भेवा।
ध्याँन धारना जिह विध धरीयै, अस्तुत सास्त्र-उकत उच्चारीयै ।।१०५६
वृंदा वसत सु वृंदावन मै, सुखद मंजरी पात सघन मै।
वृदावन को महमा वरनी, कलुष नसावन मंगल करनी ।।१०५७

दोहा

सुन तुलसी आख्याँन सब, कालकर्क दै काँन।
कीय नाराँयन कारनै, प्रस्न जोर जुग पाँन ।।१०५८

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सावंत्री आख्याँन सुभ, वरनहु सकल वृतंत।
इह कैसी विध अवतरी, माता वेद महंत ।।१०५९

छंद पद्धरी

नाराँयन नारद प्रति निहार, वरनन सावंत्री कीय विचार।
पूजा कीय वृह्मा प्रथम-पोत, उर भयौ ग्याँन तातै उद्बोत ।।१०६०
पुन वेदन गन पुज्जे सु पाव, पंडित समूह पायेऊ पसाव।
पुन भरथ-खंड मे नृप पुनीत, अस्वापति पूजी मति अधीत ।।१०६१
वारता सुनहु ताको विसेस, द्रढमती पती सोइ मद्र-देस।
राँनी सु मालती तँही राज, लावंन्य पतीव्रत लऐ लाज ।।१०६२
विस्नूकै लिछमी जेम वाँम, करता पति के मति सुभग काँम।
संताँन भयौ ताकै न सुद्ध, वासिष्ट वुलायेऊ रिखी प्रवुद्ध ।।१०६३
भाख्यौ सु मर्म की वात भेव, माहाँ रिखी दई मति अवसमेव।
जपनै गायत्री लगी जाप, तन-मन सौं साधन करत ताप ।।१०६४
केतक दिन वीते करत कष्ट, अभिलखत भयौ नही सिद्ध इष्ट।
वँह रानी चाली ग्रेह ऊठ, पनकौं तज वनकौं देय पूठ ।।१०६५
दु:खत राँनी कौं नृपत देख, विसवास दयौ ताही विसेख।
सुत के हित तप कौं लग्यौ सोय, गायत्री जप कौं हृदय गोय ।।१०६६
पुस्करारण्य पावन पुनीत, जहौं वैठौ इंद्री मोह जीत।
सत वछ्छर वीते तँह समाँन, धारचौ गायत्री अचल ध्याँन ।।१०६७
आकास भई तव गिरा ऊद्ध, सुनीयै नृप वाचा ग्याँन सुद्ध।
दस लाख करहु जप जुक्त दाय, मिलहै सावंत्री महंमाय ।।१०६८
मुन पारासर ताही सुकाँम, धर धीरज आये राज-धाँम।
पूजा मुनि कीनी नृप तपाय, तत गायत्री पूछ्यौ जु ताहि ।।१०६९
उपदेस दयौ मुनि नृपत येह, साधन गायत्री निसंदेह।
जप गायत्री इक जपै जाप, पुद्गल इक दिन के मिटै पाप ।।१०७०
दस वार जपै दिन-रात दोख, मिट जाय जीव के पाय मोख।
सत वार जपै इक मास सुद्ध, इक सहँस वरख गत मिलै उद्ध ।।१०७१
लक्ष जपै इक जन्म अंग, भव-तरै पाप ह्वै जाय भंग।
पुन जपै लक्ष दस पाय पोख, दूसरै जम्म के जाय दोख ।।१०७२

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सौ लक्ष जपै जौ क्रीया सुद्ध, बहु-जन्म-पाप मेटै प्रबुद्ध ।
दस कोट जपै अघ जाय दूर, जाती दुज पावै गति जरूर ।।१०७३
मणी-फटक कमल सित बीजमाल, वसु तीरथ देवालय विचाल ।
दल कमल तथा चल दलहु देख, विध-जुक्त मेल तापै विसेख ।।१०७४
लहि गोरोचन तापै लगाय, जप गायत्री हीय मैं जगाय ।
लै पंचगव्य अरु गंगनीर, छिरकै तिह ऊपर तथा छीर ।।१०७५
सोगंध पुस्प कर संसकार, माला कौं भेलै कर मभार ।
जप गायत्री कौ करै जाप, पुद्गल के तासौं जाय पाप ।।१०७६
माला कौ नाँहिन मिलै मेल, झट दक्षन कर कौं उर्ध भेल ।
आकार फनी-फन अंगुरीय, गाढी मिलाय राखै गरीय ।।१०७७
सावंत्री साखा पेढ साज, करनै जप लागै प्रथम काज ।
दक्षनावर्त तर्जनी दाय, साधै अनुक्रम सौं जप सुभाय ।।१०७८
जप करै लाख दस बैठ जाग, रुज काँम लोभ मिट जाय राग ।
त्रय-जन्म पाप ह्वै दूर जाहि, दरसन सावंत्री के दिखाहि ।।१०७९
आराधन करीयै तुमहु येम, नित संध्या-वंदन धार नेम ।
क्रम ऊष मधंदिन संधकाल, ततवेता सोई भाखत त्रकाल ।।१०८०
संध्या नहो साधत विप्र सोय, सूद्र सौं नीच जाँनहु सकोय ।
संध्या सौं ब्राँमन होत सुद्ध, पंडता ताहि जाँनहु प्रसिद्ध ।।१०८१
पद-रज सौं होवत धर पवित्र, सब रीत ताहि गँनीयै सपुत्र ।
महरिसी ताहि कौं लेहु माँन, मिट जाय अंग पातक महाँन ।।१०८२
जीवत हु मुक्ति तिह गनहु जीव, संध्या त्रकाल साधक सदीव ।
संध्या त्रकाल नही करत सेव, द्वज पित्र न पूजा लहत देव ।।१०८३
प्रकृती मूल पूजा न पेम, जोई दुज अजगर सर्प जेम ।
विध विस्नु मंत्र संध्या विहींन, है इग्यारस के वरत हीन । १०८४
हरि के प्रसाद नही करत हेत, नैइवेद विना हीं ग्रास लेत ।
हलकारा ह्वै कै करत हेर, सूद्राँन्न खाय जो पाव सेर ।।१०८५
मुरदा लैजावत विच-मसाँन, सूद्रीपति होवत संनिधाँन ।
करत जोर सोई सूद्र केर, हित जग्य करावत सूद्र हेर ।।१०८६
लेखनी कमाई करत लाग, खल करत नोकरी बाँध खाग ।
कंन्या कौं विक्रीय करत कोय, स्त्री विधवा कौ अन खाय सोय ।।१०८७

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

हीन जो पुत्र कोऊ नार होय, रजसुला जाच लेवत रसोय।
कुट्टन-पन जोई करत काज, वित दैकै लेवत फेर ब्याज ।।१०८८
विद्या की विक्रीय चरत वैन, सूर्योदय-वेला करत सैन।
देवी विन दीनै बलीदाँन, मछरी पल खावत मोद माँन ।।१०८९
द्विज वेद-विहृत जाँनहु न देख, पारिंद्र सर्प-रूपी परेख।
राजा पारासर मुनीराज, उपदेस दयौ मेटन अकाज ।।१०९०
सावंत्री सुनकै तत्व सार, विध-जुक्त करी सेवा विचार।
वरदाँन दरस दीय तँही वेर, अग्याँन मिटचौ राजा अँधेर ।।१०९१
नारद गायत्री सुन्यौ नेम, पूछ्यौ नाराँयन प्रस्न पेम।
गायत्री पूजा कहहु गूढ, पावै गत जत सौं मति पढ़ूढ ।।१०९२
मिल सुक्ल त्रयोदसी जेष्ट मास, अथवा भूतिष्टा अनायास।
आरंभ करै उतपत उधार, पुन वर्ष चतुर्दस लगै पार ।।१०९३
नैवेद चढावै फल निकाय, चवदै प्रकार के चित्त चाह।
पुन करै पुज्ज षोड़स प्रचार, सब रीत वेद-विध संसकार ।।१०९४
गनपती पूज गौरी गिरीस, आदीत अगन अरु रमाईस।
आवाहन घटकौ थाप इष्ट, ततवेता धारै ध्याँन तिष्ट ।।१०९५
इह सावत्री कौ ध्याँन आद, वरन्यौ प्रवुद्धजन निर्बखाद।
मध्यान्दिन साखा कह्यौ माँहि, अस्तूत पुज्ज विध मंत्र आँहि ।।१०९६
सावंत्री सोवृन रंग सुद्ध, परकास कोट सूरज प्रसिद्ध।
करता रत्नन के अलंकार, मुसकाँन मंद अधुरन मझार ।।१०९७
सुद्धांसुक पहरै सुच सरीर, धारना अनुगृह धरै धीर।
सुखदाता मुक्ती सांत स्रूप, अनुमाद सिद्धदायक अनूप ।।१०९८
तत संपत-दायक जत्र-तत्र, वेद की अधिष्टात्री विचत्र।
खटसास्त्र-रूपनी जँही ख्यात, महँमाय अजोनी वेदमात ।।१०९९
धावै इह करकै अचल ध्याँन, नैइवेद चढावै संनिधाँन।
धर धीरज सिरपै हाथ धार, मन-वृती लगावै घट मझार ।।११००
पूजा षोड़स विध अत पुनीत, रचना तिह वरनी प्रथम रीत।
करकै पुन कीजै नमसकार, सब मूलमंत्र-जुत संसकार ।।११०१
करकै स्तोत्र कौ पाठ क्रत्त, विप्र कौं दछ्छना देय वित्त।
इह मंत्र पढै हीय कर उछाह, श्री ह्रीं क्लीं सावंत्री सुहाह ।।११०२

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अष्टाक्षर जाँनहु जाप येह, निगमागम भाखत निसंदेह।
माहादेवी सावंत्री जु मात, गोलोक प्रगट भौ जबही गात।।११०३
श्रीक्रस्न सनातन रूप स्याँम, विध हू की होवन कह्यौ वाँम।
आई न वृंह्म के लोक ऐन, वर्नना क्रस्न कीय विमल-वैन।।११०४

मूल श्लोक

सच्चदानंद रूपे त्वं, मूल प्रक्रत रूपिनी।
हिरंण्यगर्भे रूपे त्वं, प्रसंन्ना भव सुंदरी।।१
तेज स्वरूपे परमे, परमाँनंद रूपिनी।
द्विजातीनां जाति रूपे, प्रसंन्ना भव सुंदरी।।२
नित्ये नित्य प्रिये देवि, नित्यानंद स्वरूपिनी।
सर्बमंगल रूपे च, प्रसंन्ना भव सुंदरी।।३
सर्व्व स्वरूपे विप्राँणां, मंत्र सारे परात्परे।
सुखदे मोक्षदे देवि, प्रसंन्ना भव सुंदरी।।४
विप्र पापे धमदा हाय, ज्वलदग्नि सिखोपमे।
वृह्मतेज प्रदे देवि, प्रसंन्ना भव सुंदरी।।५
कायेन मनसा वाचा, यत्पापं कुरुते नर।
तत्त्वत्स्मरन मात्रेन, भस्मी भूतं भविस्पती।।६

—इति मूल स्तोत्र

दोहा

करी स्तुत इह श्रीकिसन, सावंत्री सुन स्राँन।
वृह्मलोक वृह्मा विनय, भई सुसोभत भौंन।।११०५
सावंत्री सोइ मात सुभ, अस्वापति अवरेख।
पूजा कर दरसन परस, लीय मन-वंचत लेख।।११०६
याद करहि आख्याँन कौं, संध्या-काल सदीव।
महा घोर पातिक मिटै, जाय मुक्त कौं जीव।।११०७

छंद पद्धरी

सावंत्री ह्वै कै साँनुकूल, मूरती सनातन प्रक्रत मूल।
दरसन दै परसन करयौ देख, वरदाँन लेहु राजा विसेख।।११०८

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दंपत अभिलाखा चहत दोय, हित राँनी कौ मम सुता होय ।
चाहत तुम अंगज होय चारु, परवार वंस-वृद्धी प्रकारु ।।११०९
सिध कारज ह्वै है उभय साच, वरदाँन इँही मम सत्य-वाच ।
सावंत्री कहिकै गिरा सुद्ध, वँह वृह्मलोक कौं गई उद्ध ।।१११०
राजा पुन आयौ राज-थाँन, मिल राँनी सौं हीय-मोद माँन ।
सुख-विलसन लागे उभय संग, राजा अरु राँनी प्रीत रंग ।।११११
भई गर्भवती तव राज-भाँम, निज ग्रेह ताहि मालती नाँम ।
ऊपजी प्रथम कंन्या अनूप, सुखदायक सावंत्री सरूप ।।१११२
लछ्छन सुभ सावंत्रहि लेख, दोय सावंत्रीहू नाँम देख ।
दुति वढी चद्रमा जेम दोज, उर कढे जवही उंन्नत उरोज ।।१११३
व्याही तिह राजा सत्यवाँन, जिह दुमतसेन कौ पुत्र जाँन ।
लैगयौ आपने ग्रेह लार, पत्नी-पति वाढ्यौ इधक प्यार ।।१११४
इक वर्ष रहे सुख सौं अगार, हित-अहित हुवौ वस होनहार ।
भेज्यौ वन ताही कँवर भूप, अत लावन कौं फल दल अनूप ।।१११५
लै सावंत्री कौं गयौ लार, मिल विहरत दंपत वन मझार ।
फल लैन चढयौ अथवाक फूल, भुँवरुँह साखा सौं पर्‍यौ भूल ।।१११६
तूटगौ अंग ताकौ तँहींज, छूटगौ प्राँन मन गयौ छीज ।
अंगुष्ट प्रमाँनै मूर्ति येक, वपु ताही सौं निकसी विसेक ।।१११७
जमराज गयौ लै पुरी जास, तव सावंत्री हीय भई त्रास ।
लीनी जमराजा तँही लार, पतिव्रता आप पति-पाय प्यार ।।१११८
सो गई धर्मराजा समीप, दगदगत तेज जनु सिखा दीप ।
जमराजा दीनौ देख जाव, स्वयं ग्रेह जाय पहुँचहु सताव ।।१११९
पपु माँनव तुव जौलौं वितै-न, हम लोक-बीच अधकार है-न ।
पति मर्‍यौ तोर इह अवध पाय, पीछौ न मिलै कोऊ उपाय ।।११२०
वस कर्मही के जोग रू विजोग, भोगै सु कर्म सौं जीव भोग ।
अमरत्व कर्म ही के अधार, सरजता कर्म माँनव सँसार ।।११२१
उरधोगत कर्म ही देत आय, अधगती कर्म ही के उपाय ।
तातै भृम त्यागहु हृदय तीय, दरसत उपाय नाँहिन दुतीय ।।११२२
जव सावंत्री कर उभय जोर, बोली सुधर्म वाचा वहोर ।
है कर्म कहा कहीयै हजूर, कोउ सोम सुधा है कोऊ करूर ।।११२३

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

होत है निमत किह लाय हेत, देही है कोनै कोन देत।
करता कर्मन कौ कहौ कोन, ग्याँन है कोन इह सिथर गोंन ।।११२४
पुन बुद्धि कहा प्राँनीन प्राँन, इंद्री समूह को देव ग्राँन।
है भोग कोन ग्ररु करन हार, संसार कोन करता सँघार ।।११२५
जगनाथ कोन इह क्षुद्र जीव, सुख-दुख ग्रनुसरता जो सदीव।
सुन सावंत्री की प्रस्न स्राँन, जमराजा उत्तर दयौ जाँन ।।११२६
वेद मै धर्म जो कह्यौ वेस, है कर्म जिही ग्रास्रत हमेस।
जिह वेद विहत सुभ-कर्म जाँन, है निषध वेद सोइ कार्क हाँन ।।११२७
है देव सेव संकल्पहीन, उत्तम करनी ग्रातम ग्रधीन।
निर्मूल कर्म कौं करत नास, पुन होत भक्ति जासौं प्रकास ।।११२८
भक्ती सौं उपजै वृह्म-भाव, ग्रहमती होय कर्मन ग्रभाव।
निर्लिप्त रूप ह्वै निराकार, प्राँनी भवसागर होय पार ।।११२९
पुन भक्ति सोइ ह्वै द्वै-प्रकार, सरगुन इक निर्गुन तत्व-सार।
चित वैस्नव सरगुन चहत चेत, हरि-रूप प्रदा सौं जाहि हेत ।।११३०
निर्वांन वृह्म-वित चहत नित्त, ग्रातम-विन सवही है ग्रनित्त।
पर्मातम सवही सौं परेह, ग्ररु कर्मबीज-रूपी ग्रछेह ।।११३१
फल देत कर्म कौ सोई फेर, हित कर्म-सरूपी जिही हेर।
जव निकस जात पै इही जोव, सो परी रहत बाकी सदीव ।।११३२
द्रग गोचर ताकौं कहत देह, उतपत्त तत्त है पंच येह।
रचना स्रष्टी विध सूत्र-रूप, सब भाखत है ग्रापत सरूप ।।११३३
करता कर्मन कौ जोव क्लीव, सुख-दुख कौं भोगत जो सदोव।
जिह अंतरजाँमी मध्यजीव, सरवग्य ग्रातमा रूप सीव ।।११३४
भोग कौं करावत सोई भाँन, साखी-सरूप प्रेरक समाँन।
भाखत सु सुभासुभ विभव भोग, जग निस्क्रत मुक्ती कहत जोग ।।११३५
सत-ग्रसत कर्म नाना-सरूप, भेद कौ बीज है ग्याँन भूप।
नाना प्रकार विसयन निदाँन, जाही विभाग करता सुजाँन ।।११३६
जिह भेद बीजहू कह्यौ जात, बुद्धी विवेचना सहित बात।
बेद मै कहत है ग्याँन बीज, करता विचार जाही कहीज ।।११३७
प्राँनी बल-रूपी कहत प्राँन, वायु के भेद मै जिह वखाँन।
इंद्रीयाँ माँहि जो प्रवर ग्राद, वर्नंत है ईस्वर निर्विषाद ।।११३८

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कर्मन प्रेरक कौं मन कहंत, चेसटा रहत ह्वैकै चलंत।
चख कर्न नासका तुचा चाहि, जिभ्या-जुत पाँचू गनहु जाहि ।।११३९
इंद्री प्रैरक है देह येह, लेजावत जित-तित विसय लेह।
कर्म कौं करावत चाह काँम, मिंत्रहू रूप सत्रू मुकाँम ।।११४०
सुख-दुःख होत है जाहि संग, प्राँनी भुक्ता है निह प्रसंग।
रिव पवन धरा वृहमाद-रूप, इंद्रीन देवता इह अनूप ।।११४१
देही रू प्राँनधारक दुतीय, जाही कौं सबही कहत जीय।
व्यापक है निर्गुन-रूप वृह्म, प्रकृत सौं परे परमात्म प्रर्म ।।११०२
जमराजा दीने इते जाव, सुन सावंत्री प्रस्नन सताब।
तुम ग्रेह जाहु इम कह्यौ ताहि, समवरती पतिवरता सराहि ।।११४२

दोहा

बोले जमराजा वहुर, सावंत्री सुन स्राँन।
पूछे तैं जितनै प्रसन, दीय हम उत्तर दाँन ।।११४४
लोट जाहु घर कौं लली, गहहु हीया मैं ग्याँन।
मति भतिधारै माँनुखी, सुकृत करहु सयाँन ।।११४५

छंद द्वै-अक्खरी

समवरती सुन कथा सयाँनो, बोली पुन सावंत्री वानी।
पति-विन सकल सुंन्य परिवारा, राखै कवन मोर रखवारा ।।११४६
तुम जैसे ग्याँनीन त्यागकै, भव-विच जाँऊ कहाँ भागकै।
को अकृत को सुकृत कहीयै, नाना-जोन माहि निरवहीयै ।।११४७
स्वर्ग कोन कर्मन तैं साधै, वसै नर्क मैं किह क्रम वाधै।
मुक्ति कोन कर्मन कै माँही, गरू-भक्ति किह कर्म गहाँही ।।११४८
रहै कोन कर्मन तन रोगी, जाँनै जुगत कोन क्रम जोगी।
जीव होत किम दीरघजीवी, अल्प-आयु किम होत असीवी ।।११४९
अंध पंगुला अवगुन आदू, प्राँनी कैसै गहत प्रमादू।
हिंसक चोर कोन अघ होवै, सुख मैं कवन कर्म सौं सोवै ।।११५०
दुखी होत पुन कोन दोख सौं, मन राचत नही कबहु मोख सौं।
कोन कर्म की उक्त कहाँही, विस्नु-लोक गोलोक वसाँही ।।११५१

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पुन वृहमत्व होत किम प्रापत, तप सेवत कैसै तन तापत ।
किते प्रकार नारकी कहीयत, सब अव-जुक्त ताड़ना सहीयत ।।११५२
किते काल जहाँ रहत कृतघनी, समवरती मं चाहत सुनी ।
व्याध-आध कौ कवन वृतंता, कहहु जगत हित नाथ कृतंता ।।११५३
कथा सुनी सावंत्री केरी, बोले धर्मराज तिह वेरी ।
कर्मविपाक कथा सुख-करनी, वेदन मै वेधा सोइ वरनी ११५४
कहत सोय तोही मै कंन्या, उपजै जासौं ग्याँन अनंन्या ।
सनकादिक आदक सुग्याँनी, जैसो मै तेरी मति जाँनी ।।११५५
करी प्रकट सावंत्री कला, भव चाहत सावंत्री भला ।
लिखमी जू विस्नू-उर लागी, सची इंद्र ग्रह जेम सभागी ।।११५६
भव अरधंग्या जेम भवाँनी, रवि कै ज्यूँ संग्या है राँनी ।
चंद्र-ग्रेह रोहिन त्रिव छाई, मदन जेम रति मती मिलाई ।।११५७
अदिंति जेम कस्यप अनुरागी. जैसै स्वाहा सुचि संग जागी ।
सुधा पित्र पति जोर सुहाई, गोतम संग अहिल्या गाई ।।११५८
देवसैन का स्वाँमी दो है, वरुनाँनी जिम वरुन विमोहै ।
निवसत जग्य दक्षना नारी, प्रथमी ज्यूँ वाराह कौं प्यारी ।।११५९
सत्यवाँन सौं करकै संगा, यैसै ही होवहु अरधंगा ।
त्रीयन माँहि ह्वै नाँम तुमारौ, ह्वैहै इह वरदाँन हमारौ ।।११६०
इतनै ही पैहै मति औरं, कहै देहु कहा चित्त सकोरै ।
वर कछु चाहत और वसेखी, देत तोहि अवचल मति देखी ।।११६१
समवरती सुन वचन सुधा-सम, जाब दयौ सुनीयै राजा जम ।
सावंत्री जाँनहु ध्रम सेतू, अभिलाखा नही चहत अहेतू ।।११६२
जातै लाभ होय जग-जीवा, दरसावहु सोइ वात दईवा ।
मोहि भलौ ह्वै पाछै माँगत, ताही कौं सुनलेहु कहत तत ।।११६३
सत्यवाँन पति मोहि सहाई, जाही संग वसू मै जाई ।
सुत सत ह्वै दीर्घायु समाँना, वढै जगत परवार विधाँना ।।११६४
इक सत भ्राता होय उदारा, पिता अधिक वाढै परवारा ।
अंध सुसर कै नेत्र अनूपा, भोम मिलै छूटी सोइ भूपा ।।११६५
पति-संग अंत अवस्था पाँऊँ, वास जाय वयकूंठ वसाँऊँ ।
लक्ष वरष पाछै इह लीजै, कछू वारता और गहीजै ।।११६६

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कर्मविपाक कथा सुख-करनी, वेदन मै जैसी कुछ वरनी ।
वरतत है जाही समवरती, ताहि कहहु जग डूबत तरती ।।११६७
जीव सकल ताही गत जाँनै, विस्व अखल संबाद बखाँनै ।
सुनी चहत मै आप सुनावौ, मेरे मनकौ भरम मिटावौ ।।११६८
सुन जमराजा कथा सुहावन, पढनै लगे जगत-हित पावन ।
हित अभिलाषा सफल जु ह्वैहै, लाभ सकल सबही विध लैहै ।।११६९
कर्मविपाक कहँत हू करनी, निगम प्रमाँन जीव निस्तरनी ।
कर्म सुभासुभ जो कछु करता, भरथ-खंड मै प्राँनी भरता ।।११७०
पुंन्य-क्षेत्र है इहीं पुनींता, भोगत भोग हरख अरु भीता ।
सुर आसुर गंधर्ब निसाचर, कर्मन के अधिकारी किंकर ।।११७१
पसु आदिक नही पुंन्य न पापी, थिरा मृजाद विरंचन थापी ।
माँनव कर्म करत सोई माँनै, जग के करम सुभासुभ जाँनै ।।११७२
लागत कर्म मनुज तन लारै, तेई जीव डुवोवै तारै ।
करै सुभासुभ जब नही करनी, वँहीं भक्ति पावै ऊधरनी ।।११७३
सुभ कर्मन सौं स्वर्ग सिधावै, जीव असुभ सौं नर्क न जावै ।
भ्रमत रहै ज्यूँ उपजै भर्मा, करै असुभ-सुभ प्राँनी कर्मा ।।११७४
तातै सकल कर्म कौं त्यागै, येक भक्ति सौं चित अँनुरागै ।
दोय भाँत भक्ती गत दैनी, निज पद विस्तूलोक-निसैनी ।।११७५
सगुन-निगुन दोई वृह्म-सरूपा, काढत भर्म मोह सौं कूँपा ।
दुखी-सुखी कर्मनकै दावै, निश्चल भक्ती कर्म नसावै ।।११७६
भ्रमत कर्म सौं जे मति भौरै, जगंनाथ-पद प्रीत न जोरै ।
पंगुल अंध होत है प्राँनो, जिन हरि-भक्ति हृदय नहि जाँनी ।।११७७
वर्नंत ताहि विसेख वृतंता, अघ अरु अनघ आद तै अंता ।
सुभतै सिद्ध असुभ अनसिद्धा, प्राँनी भोगत भोग प्रसिद्धा ।।११७८
अल्पायू दीर्घायू अ पत, पुंन्य पाप सौं होवत प्रापत ।
वरनत ताकौ भेद विधाँनी, सावंत्री सुनलेहु सयाँनी ।।११७९

दोहा

संमृति कही पुराँन स्रुति, गुप्त रहंस सौं गाथ ।
भरथ-खंड की भूँम विच, सब माँनव लहि साथ ।।११८०

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

छंद द्वं-अख्खरी

दुरलभ इहै माँनुखी देही, जामै जेष्ट-वरन है जेही ।
जेष्ट-वरन मै उत्तँम जाँनौ, ब्रंह्मनिष्ट धरमिष्ट वखाँनौ ।।११८१
होत विप्र द्वै-भाँत हमेसा, इक सकाँम निस्काँम असेसा ।
पूजा-पाठ सकाँम प्रचारत, निस्काँमी भक्ती निस्तारत ।।११८२
करत भोग क्रम होत सकाँमो, कर्म उपद्रव विन निस्काँमो ।
देह त्याग जावत हरि-द्वारै, विच जोई गोलोक विहारै ।।११८३
द्वभुज क्रस्न कौ दरस दिखावै, जन्म-मरन जासौं मिट जावै ।
वैस्नव होय सकाँम विसेसा, प्रभू बैकूँठ लहै परवेसा ।।११८४
कर्म छीन ह्वै जवही कलेवर, प्रगटै भरथ-खंड दुज परवर ।
काल पाय निस्काँम भक्ति कर, होत मुक्ति अनुँकंपा हरिहर ।।११८५
जे सकाँम द्वज जग मै जेता, विना भक्ति ह्वै नही ततवेता ।
तीरथ मै दुज करै जु तपकौं, वृह्मलोक जावै तज वपुकौं ।।११८६
धर्म-निरत जे विप्र धुरंधर, वसत सत्य लोह ही मै मुनिवर ।
धर्म-जुक्त द्वज सूरज ध्यावै, वास विकर्तन लोक वसावै ।।११८७
मूल प्रक्रत निस्काँम मनावै, जो निश्चय मनोदीप ही जावै ।
फिरै नही जग जन्मही फेरा, घलै न ताकौं पातक घेरा ।।११८८
निरत धर्म सिव-भक्त निरंतर, ध्यावै सक्ति गनेस धीर-धर ।
वसै जीव सिव-लोक वसेरा, उपजै नही अग्याँन अँधेरा ।।११८९
अंन्य देव द्वज कोऊ आराधै, सवही रीत धर्म निज साधै ।
जिही देवकै लोकही जावै, वँहाँतै भरथ-खंड मे आवै ।।११९०
करै भक्ती दुज हरि निस्काँमी, जाहि निवाजै अंतरजाँमी ।
आवागमन मिटाय उधारै, वल भक्तीकौ सुजन बिचारै ।।११९१
विप्र आपनौ धर्म विसारै, भूतादिक की सेव सँवारै ।
भ्रष्टाचार उपावै उर भ्रम, काँमो होय करै जो कुक्रम ।।११९२
तामस भाव भरै वहुतेरा, नर्क परै नही होत निवेरा ।
जेष्टवरन की कथा जनाई, गूढ गिरा वेदन मै गाई ।।११९३
खत्री आद वर्न की ख्याती, सावंत्री सुनलेहु सुहाती ।
अपने वर्न धर्म-अनुकूला, करै कर्म नहि ह्वै प्रतिकूला ।।११९४

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सुख के भोगी होत सदाई, न्याय इही है इह निपुनाई ।
कंन्या देत सुजाती काजै, सोभा-जुक्त अलंकृत साजै ।।११९५
वसै जु चंद्र-लोक मं वासा, पुंन्य वहुत दिन होय प्रकासा ।
कंन्या जो देवै निस्काँमा, धारै विस्नु-लोक मैं धाँमा ।।११९६
गो-घृताद चाँदी गंगेवा, सुक्लांबर दै दुज कर सेवा ।
विधु-मंडल मै वास वसावै, येक मुनंतर सुख उपजावै ।।११९७
सुंदर गाय विप्र दै सोई, जावै सूर्ज-लोक कौं जोई ।
दस हजार हायन वँह दाँनी, पावै सुख दुर्लभ वहु प्राँनी ।।११९८
देत धरा विप्रन कौं दाता, वास देत सित दीप विधाता ।
विस्नु रमाँपति जहाँ के वासी, पर्ममुक्ति दै ग्याँन-प्रकासी ।।११९९
धाँम विप्रकौ दै कोऊ धनी, विवध भाँत सामग्री वनी ।
रन कनका जेता गृह रेहा, स्वर्ग वसै लग वर्ष सनेहा ।।१२००
देव-अरथ जाही गृह देवै, सोई लोक जाय सुर सेवै ।
रज कनकन वरखन की रीती, परम वसै लावै जुत प्रीती ।।१२०१
देव दुजन कौं जो दत देवै, लाभ चौगुनौ तातै लेवै ।
भूँम देस सतगुन फल भाख्यौ, देस दाँन इह दुगन जु दाख्यौ ।।१२०२
ततवेता दत देत तड़ागा, जन-जन लोक मिलावत जागा ।
भूँम रेनुका जिते भराई, वरख इते सुख वास वसाई ।।१२०३
वापी दीयै इतौ सुख विलसत, हित ताही सौं सुक्रत हुलसत ।
कंन्या होय सोय सुकुलींना, पती जोय सुकुलीन प्रवीना ।।१२०४
दस गुन फल वापी सौं दीनै, परंपरा इह कहत प्रवीनै ।
अलंकार जुत देत जु यातै, ताकौ फल दूनौ है तातै ।।१२०५
दाँन ज्युँही सर-खोदन दाई, तैसै ही वापी कूँप तलाई ।
औरहू कों लै संम्मत ऐसै, पंकोधार करै विच पैसै ।।१२०६
यातै फल इक-इक इधकाई, दाँन खुदावन ज्यूँ सुखदाई ।
पिप्पल तरु लगाय कै पूजै, सत्य-लोक कौं जात सहूजै ।।१२०७
पुस्प-वाटका सब जन परतै, बैठै सुख छाया सौं वरतै ।
येक अयुत जुग ध्रुव आगारा, प्राँनी वसै सहित परिवारा ।।१२०८
करै विमाँन विस्नु अरपन कौं, जात मिलै बैकुंठही जन कौं ।
देत पालखी विस्नु दाँन मै, वरतै अधफल सोऊ विमाँन मैं ।।१२०९

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मिंदर दीयै हींडोरा माँहीं, वास रमापत लोक वसाँहीं ।
सौ मन्वंतर लग सुख सेवै, दया छिमा श्रीविस्नू देवै ।।१२१०
सड़क बनाय करै ध्रमसाला, विवध वृक्ष विस्तार विसाला ।
स्वर्ग जाय सोई सुग्यांनी, वेद पुरांनन कथा वखांनी ।।१२११
वरतमाँन देही दै वरतै, सो आगै पावत इह सरतै ।
भलौ करै जग देत भलाई, अनभल करै दोष उपजाई ।।१२१२
काहू कौ अनभलौ न करीयै, दोष उपावै तातै ड़रीयै ।
पुंन्य करै सुरलोक पठावै, उतरै भरथ-खंड मै आवै ।।१२१३
कर्म-भूंमका भारथ केरी, तप जप संजम विध वहुतेरी ।
कही वेद सुभकरनी कीजै, लाभ जन्म माँनव कौ लीजै ।।१२१४

दोहा

विप्र क्षत्रीयादिक वरन, वैस्य सूद्रहू वर्न ।
अपनी करनी आप तै, अँनुमत गत उधर्न ।।१२१५
तपी जपी आदिक तिते, स्वर्ग वसत पुन साध ।
ब्राँमन-पद पावत विरल, अत वलवाँन अगाध ।।१२१६
सावंत्री आख्याँन सुन, पूछचौ धर्म प्रसंग ।
कथादाँन विस्तार कर, अनुक्रम कहहु उमंग ।।१२१७

छंद भुजंगीप्रयात

सावंत्रीक हू धर्मराजा सुनाई, कथा दाँन की सुद्ध जामै कमाई ।
जँही साधकै माँनवी स्वर्ग जावै, करै दाँन है जोन रीती करावै ।।१२१८
सदा अंन्न दै विप्र कौं पुंन्य-साटै, अनाकेकना जोर संख्या अघाटै ।
वसैहै जिते वर्ष कैलास-वासा, वड़े हर्ष सौं भोग भोगै विलासा ।।१२१९
माहाँदाँन है अंन्न कौ दाँन माँही, नटै आतिथं देखकै कोय नाँहि ।
सुपात्रं-कुपात्रं परीक्षा न साधै, अतिथ्थं सदा दाँन अंन्नं अराधै ।।१२२०
विभूखा लगै दीन कौं जाहि बेरी, सुबेला वँही नित्य संध्या-सवेरी ।
कमी नाँहि कीजै जथा-सक्ति कोई, हितू अंन्न के दाँन सौं पुंन्य होई ।।१२२१
दीयै आसनं देव भूदेवता कौं, सु संध्या ऊपावे मुनी सेव ताकौं ।
वसै विस्नुके लोक मै जीव वासा, परा-ग्याँन कौ तत्व पावै प्रकासा ।।१२२२

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दुजन्मा गऊ दूझती दाँन देवै, सुरो मासमा विस्नु कौ लोक सेवै ।
दीयै पुंन्य दीहं लीयै पुन्य दूनौ, गऊ तीर्थ मै दैन सौं सप्त-गूनौ ।।१२२३
गऊ-दाँन देवै दुजं तीर गंगा, प्रमाँनं नही पुंन्यही के प्रसंगा ।
धृवै विप्र कौं दाँन मै ग्राँन धोरी, सोई चंद्र-लोकं वसै लोक सौरी ।।१२२४
दीयै विप्र छत्ता सुपेतं दकूला, करै वर्न लोकं गृही साँनुकूला ।
दुजं धोवतीहू अंगोछा जु देवै, सुखी ह्वै सोई वायुकौ लोक सेवै ।।१२२५
सुवस्त्रं दीयै विप्र कौं सालग्राँमा, धरै विस्नु सालोक मै दिव्य धाँमा ।
जितै चंद्रमा सूर की जोत जागै, इतै पै कहूँ नाहिनै जाय आगै ।।१२२६
समापै कोऊ विप्र कौं दिव्य सैनं, वँही चंद्र-लोकं वसै दिव्य ऐनं ।
दसाकर्ष कौं विप्र मेलै दुआरा, मिलै अग्न के लोक वासौ मझारा ।।१२२७
करी दाँन देवै कोऊ विप्र काजै, बिड़ोजा अर्धं आसनं पै बिराजै ।
वृवै विप्र कौं दाँन माँही वछेरा, वसै वर्न के लोक-माँही वसेरा ।।१२२८
प्रनाली इही पुन्य है पालकी तै, जोई विप्र कौं दाँन मै देय जीतै ।
बड़ी बाटका दाँन जो देय विप्रा, चले वायु के लोक कौं छाय छिप्रा ।।१२२९
वसै येक मन्वंतरं सुःख वासा, वँहाँ तै कहूँ नाँहि होवै उदासा ।
पसावं करै विप्र कौं चौंर पंखा, उपासै सुखं वायु-लोकं असंखा ।।१२३०
रतनं अनं लैन औ दैनवारा, दोऊ जायकै विस्नु सेवै दुवारा ।
प्रभू-नाम लेवै सोई लाय प्रीती, जोई दीर्घ जीवै रहै मृत्यु जीती ।।१२३१
माहाँ पूर्नमा पाछली रात-माँही, जपै ईस कौ नाँम डोलै जहाँही ।
सुखी ह्वै इही लोक मुक्ती सिधावै, प्रभा पायकै वास बैकूंठ पावै ।।१२३२
इकै सप्त-मन्वंतरं ह्वै अभीता, प्रभू नाँम की जाहि वाढै प्रतीता ।
दऐ उत्तरा फाल्गुनी लाभ दूनो, इहीं साधना सौं नही जाय ऊँनौ ।।१२३३
तिला दाँन देवै विप्र कहूँ विप्र ताँही, महेसं वसै मिंदरा जाय माहि ।
कनूँका जिते वर्ष संख्या कराई, अमोघं सुखी भोग भोगै उपाई ।।१२३४
तिला ताम्र के पात मै देत ताकौं, जतायौ जही द्वैगुनौ पुन्य जाकौं ।
अलंकार-जुक्ता त्रीया दाँन आपै, वसै स्वर्ग मै वेदना नाँहि व्यापै ।।१२३५
करै अछ्छरी भोग ह्वै दिव्य काया, मिलै गंधृवी खेल की फेर माया ।
वितावै घने दीह वासौ वसाई, मिटै औतरै आप भूलोक माँही ।।१२३६
मिलै सुंदरी नार से जन्म मिंता, चुरावै नही चित्त कौ कोय चिंता ।
विधाँनं तिही सुंदरी औ वखाँन्यौ, जथा सक्त सौं वित्त कौं दैन जाँन्यौ ।।१२३७

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

करै विप्र जो कोय खोटे कुकर्मा, भ्रमै नर्क के भौंन मै ग्राँन भर्मा ।
फली दाँन देवै तथाँ विप्र फूलं, माहाँ कंद मेवा जथाँ मिष्ट मूलं ।।१२३८
विथा भूलकै होय सो स्वर्गवासी, रमै सुंदरी संग ग्राँनंदरासी ।
वहू दीह सौं भर्थ-खंडं वसावै, सपुत्रं सपत्नी सुखी ह्वै समावै ।।१२३९
दुजा उत्तमं धाँम कौं दाँनं देवै, सतं जोय मन्वंतरं स्वर्ग सेवै ।
जुतै ग्रंन्य साखा जमी देत जोई, सुवासा करै वास वैकूंठ सोई ।।१२४०
इला ग्रौतरै भर्थहू खंड ग्राई, जमी कौ पती ह्वै किते जन्म जाई ।
जोई ग्राँम कौ दाँन देवै दुजाती, वितै लक्ष मन्वंतरं ज्यू वसाती ।।१२४१
जितै वास वैकूंठ-माँही जमावै, सुखी होयकै भूँम-माँही समावै ।
माहाराज होवै घने जन्म मेला, इला देस के देस भोगै ग्रकेला ।।१२४२
नदी ग्रौ तड़ागा जुतै कूँप्र नाली, वसू उर्वरा सीम जोवै वचाली ।
तरू वाटका होय सो ग्राँम तेई, दुजन्माक हूँ पुंन्य मै दाँन देई ।।१२४३
दसं-लाखहू इंद्र वीतं दिढ़ाई, वसै वास कैलास सोभा वढ़ाई ।
सतं ग्राँम दै विप्र कौ देस सोई, जमी उर्वरा ग्रंन्य की देख जोई ।।१२४४
वसै कोट मन्वंतरं लोक विस्नू, सुखी होयकै भोग भोगै सहिस्नू ।
घने काल मै भर्थ-खंडं घिरावै, प्रजा जंबु के दीप कौ राज पावै ।।१२४५
वितै जन्महू कोट जौलौं विराजा, धरा कौ जोई होय राजाधिराजा ।
दतं जोय सर्वस्य जो विप्र देवै, सुखी होयकै चौगुनौ लाभ सेवै ।।१२४६
दीयै दाँन मै विप्र कौं जंबु-दीपा, मिलै सौगुनौ लाभ जाही महीपा ।
करै जो तपस्या सहै कष्ट काया, माहाँ दाँन देवै दुजा जोर माया ।।१२४७
वनोवास ठाँनै तथा तीर्थ-वासा, इते पुंन्य सौं अंत होवै उदासा ।
परंव्रह्म की भक्ति जौलौं न पावै, सुखी होय निर्बांन नाँही समावै ।।१२४८
परंव्रह्म विद्यापरा ग्रोतपोती, जमै थावरं-जंगमं रूप जोती ।
मनीदीप वासौ तथा जोत मेला, इहीं वास निर्वांन जाँनौ ग्रकेला ।।१२४९
करै जो तुला-दाँन कौं मास काती, थपै सुदरं मिंदरं वीच थाती ।
परंधाँम वासौ हरी-भक्ति पावै, गरू-भक्ति सौं मुक्ति उक्ती गहावै ।।१२५०
नहावै रवौ कै उदै गंग-नीरा, धसै धार मै धारना धार धीरा ।
जुगं साठ हज्जार वीतै जहाँलौ, तजै वास वैकूंठ नाँही तहाँलौ ।।१२५१
करै गंग के नीर सौं सुछ्छ काया, मिलै सद्गती जीव व्यापै न माया ।
जितै मींन सौं सूरजं कर्क जावै, पिपासा लगै जीव कौं नीर पावै ।।१२५२

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मिलै पुंन्य सौं वास कैलास-माँही, विधाता वितै दीह जौलौं वसाहो ।
समापै दुजं मास वैसाख सत्तू, नँही मै अ्रनूँ होय जेता इकत्तू ।।१२५३
जिते वर्ष कैलास के वास जाई, वसै मुक्ति मै जीव उत्ती वताई ।
माहाँवृत्त जो क्रस्न जन्माष्टमी कौ, निहारौ ज्युँही नित्य रामाँनमी कौं ।।१२५४
करै तै मिटै जीव के पाप केता वसै वास बैकूँठ मै तत्तवेता ।
सिवारात कै व्रत्त कौ तत्त साधै, अनावै सिवं बलिपत्रं अराधै ।।१२५५
वढै वंस विद्या प्रजा भूँम वित्तं, मिलै अंत पै कैलास मित्तं ।
मधूमास माँही तथा मास माघा, सपुज्जा करै सिंभु वृत्तं सलाघा ।।१२५६
तथा मास माघा अध मास ताँई, इतीहू वनै नाँद संदहि आई ।
करै गात कौं मंजनं सुद्ध काया, मिलै सद्गती संपती राजमाया ।।१२५७
जोई अंत कैलास मै जीव जावै, परा-मात गौरी-पती दर्स पावै ।
नवैरात मैक्कार कौ व्रत्त नेवै, सक्कती करै व्रत्त औ पाय सेवै ।।१२५८
वली वस्त वृस्नी सुखंग्दीय बाधै, अहा दंसभी रूक कीनं अराधै ।
दुजं होय तौ मिष्ट नैवेद्य देई, लुलाई[1] खरेपी[2] पुरी संग लेई ।।१२५९
चढ़ावै करै रीत नाना उछाहा, गवावै सु मांगल्य के गीत गाहा ।
वसू-राज वाढै अरू वंस-वृद्धी, समो पुज्ज सौं होय नौनिद्ध सिद्धी ।।१२६०
वसै सात मन्वंतरं स्वर्ग वासा, दया भक्ति सौं सक्ति कौ होय दासा ।
हृदै सुद्ध सुक्लाष्टमी प्राप्त होई, करै पक्ष कौं वृत्त लच्छी सकोई ।।१२६१
प्रपुज्जै रमा मात सौरे प्रचारा, प्रभा संगती पाय नाना-प्रकारा ।
वसै होयकै सोय वैकूँठवासी, अजा इंदरा मात ह्वै कै उपासी ।।१२६२
गँनै पूर्नमा कातकी गोप-गोपी, जुतै मंडलं रास मंडै सु जोपी ।
परंमातमा राधका क्रस्न पूजै, दिखावै नही भावकौं आँन दूजै ।।१२६३
गहै राधका क्रस्न कौ मंत्र ग्याता, वितै कल्प के काल औरै विधाता ।
वसै वास गोलोक जौलौ विग्याँनी, पराभक्ति श्रीक्रस्न की पाय प्राँनी ।।१२६४
करै वृत्त येकादसी सुक्ल क्रस्ना, तँही जीव कौं नाँहि व्यापं जु त्रस्ना ।
मिलै भक्ति-जुक्ती असक्ती मिटावै, जरा मृत्यु कौं जीत वैकूँठ जावै ।।१२६५
सुनासीर पालै प्रजा भूँम सद्दा, भजै द्वादसी सुक्ल कौ मास भद्दा ।
करै पुज्ज जासौं मिटै विघ्न केई, जमै इंद्रकै लोक मै वास जेई ।।१२६६

---

१ लपसी । २ खीर ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

रवीवार संक्राँत सप्ता रहाई, सधै सूर आराधना कौं सदाँई ।
भखै खीर पूरी हवखाँन्न भातै, जमै सूर के लोक कौं जाय जातै ।।१२६७
ज्युँही क्रस्न चातुर्दसी मास जेष्टा, सावंत्री करै पूज कौं भक्ति स्रेष्टा ।
लहै सात मन्वंतरं वृह्म-लोका, वसै ग्याँन कौं पाय ह्वै कै विसोका ।।१२६८
माहामास की सुक्ल ही पंचमी कौं, भजै पुज्ज लावै सदा भारथी कौं ।
कला-वुद्धि बुद्धी महा है कविंदा, चवै उक्त की जुक्त अस्लोक छंदा ।।१२६९
सुवर्नं तथा गाय देवै सदाई, जई होय पै दीर्घजीवी जदाई ।
अँनूँ स्वर्न के गाय के रोम येता, जमै वास गोलोक मै वर्ष जेता ।।१२७०
जिमावै दुजं नित्य मिष्टाँन्न जोई, सरीरं दुजं रोम-संख्या समोई ।
धरा-वीच विद्वाँन होवै धनेसा, वढै आयुषा क्रीत वाढै वसेसा ।।१२७१
हरी धाँम मै अंत पै वास होई, सुखी होय विस्नू करै सेव सोई ।
जपै क्षेत नारायँनं विस्नु जापं, प्रनासै जँही जीव के कोट पापं ।।१२७२
जपै नाँम कोटं जहो बैठ जागा, रहै है हरी-रूप मै साँनुरागा ।
पराभक्ति सौं मुक्ति साजोत पावै, जरा मृत्यु के दुःख सौं छूट जावै ।।१२७३
प्रचारै सदाँ ईस की पार्थ पूजा, सही रेनुका के अनूँका सहूजा ।
समाकै समाँना वसै लोक सीवा, जरा मृत्यु कौ सोक पावै न जीवा ।।१२७४
सिला सालग्राँमं करै सेव सोई, धरै सीस पीवै तँही नीर धोई ।
जँही जीउ कौं जीवनं मुक्ति जाँनौ, प्रभू धाँम कौ अंत पावै प्रयाँनौ ।।१२७५
तपस्या करै वृत्त जो होय त्यागी, वसै जाय वैकूँठ वासौ विरागी ।
परै विग ताँहू माहाराज पावै, सुखी होय श्रीमाँन भक्ती समावै ।।१२७६
प्रभू-हेत जो देय प्रथ्थी-प्रकंमा, करै तीरथं स्नाँन जो सुद्ध क्रंमा ।
भ्रमै ताँहि जन्मांतरं भूम भागी, सदाँ वास स्वर्गीय होवै सभागी ।।१२७७
माहाँजग्य कोऊ करै अस्वमेधा, नही है कहूँ कर्म जामै निसेधा ।
पती भूँम अर्धासनं इंद्र पावै, रहै नाँम जौलौ सुरालै रहावै ।।१२७८
जिही सौं बड़ी राजसू-जिग्य जाँनौ, मिलै चौगुनौ लाभ जातै प्रमाँनौ ।
जँही तै बड़ौ अंबका जग्य जोई, करचौ विस्नु विद्वाँन जाँनै सकोई ।।१२७९
त्रपुर्मारने कौं करचौ है त्रनेता, जँहो कारना सौं भये सत्रुजेता ।
करचौ दक्ष भूल्यौ कछू कारना कौं, धरी ईस नैं रीस की धारना कौं ।।१२८०
विधुस्यौ उमा विघ्न सौं ताहि वेरी, करी विप्र-जातीन वाधा करेरी ।
दुराराध नंदीगनं श्राप दीनौ, नंदीसांहु तै विप्रहू स्राप लीनौ ।।१२८१

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तथापी मिले धर्म औ कस्प त्याँही, जुरे मेख कर्दम कपिल्ला जहाँही ।
स्वयंभूमनू पुत्र ताही समेता, प्रीयावृत्त है नाँम जाही प्रवेता ।।१२८२
सनंतंकुमारं ध्रुवं और संभूं सुधा-भोग भागीय लाये ससंभू ।
परा-अंबकाकौ करचौ जग्य पूरौ, रह्यौ भूँम-माँही जँही नाँम रूरौ ।।१२८३
सहंसं इकै राजसू-जग्य सौंनौ, महंमाय के जग्य कौ येक माँनौ ।
क्रतूकाज कर्ता चिरंजीव काया, मिलै जीवनं-मुक्ति व्यापै न माया ।।१२८४
पदं विस्नु पावै परंमात माई, सरीरं वढै तेज तातै सवाई ।
दिपै देव-जाती मँही विस्नुदेवा, सदाँ नारदं वैस्नवी जाँन सेवा ।।१३८५
ज्युँही सास्त्र मै वेदवर्नं दुजाती, खिती-तीर्थं माँही ज्युँही गंग-ख्याती ।
पवित्राँ मँही जेम है सूलपाँनो, वृतं माँहि येकादसी ज्यूँ वखाँनी ।।१२८६
विचारै तरू फूल मैं फूल-वृंदा, छिपा तारका मै प्रभा जेम चंदा ।
विहंगावली माँहि ज्यूँ वैनतेई, प्रक्रती तीया राधाका ज्यू परेई ।।१२८७
गर्ता ज्यूँ मनं इंद्रिया सीघ्रगाँमी, गनौ ज्यू प्रभा के पती हंसगाँमी ।
खिती-खंड वृदावनं भर्थ-खंडा, पढै पंडता भारथी ज्यूँ प्रचंडा ।।१२८८
ज्युँही लक्ष्मी श्रीय सोभाग-जुक्ता, अजा आद दुर्गापती वृत्त उक्ता ।
ज्युँही अंवका जग्य मै जग्य जाँनौ, मुगत्तीप्रदा पुज्य सा पुज्य माँनौ ।।१२८९

दोहा

करे सुक्रत जेते कथा, है फलदायक हेत ।
सुख भुगतै खय होत सव, आखर दाव अप्रेत ।।१२९०
परामात-पूजन परम, करत मुक्त कल्याँन ।
जन्म-मृतु -दुख जीवकौ, जावै निश्चय जाँन ।।१२९१
देवी सम कोऊ देवता, है नही होवन हार ।
वड़े लघू अरु सस विसम, वपु-माया विस्तार ।।१२९२
सुनहु कथा देवी स्रवन, ध्यावहु देवी-ध्याँन ।
देवी सिमरन करहु द्रढ, गावहु देवी-गाँन ।।११९३
कर्मविपाक जु मै कह्यौ, सुन्यौ वछ्छ तै स्राँन ।
सावंत्री जावहु सुभग, भरता कौ लै भौंन ।।१२९४
बोली सावंत्री वहुर, धरम समुख धर धीर ।
देवी-सम नही दूसरौ, पाप मिटाँवन पीर ।।१२९५

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

भजै सक्ति किह भाव सौं, निज उधार कर नेम ।
असुभ-कर्म कोनै अवर, जथा प्रकासहु जेम ।।१२९६

छंद पद्धरी

पुस्करारंण्य पावन पवित्र, माहा करी अराधन धर्म-मित्र ।
समवर्ती पायौ सुत सरूप, भये दक्षन दिस के पाल भूप ।।१२९७
सबके तुम साखी रूप सिद्ध, परभाव समन नाँमी प्रसिद्ध ।
वस करचौ काल प्राँनीन वीच, मिल कर्म-जोग सौं देत मीच ।।१२९८
पापींन सुद्धि के हेत प्राँन, परचंड डंड कौं धरत पाँन ।
विस्व कौं चलावत न्याय वाट, संजँमनी नगरी संमृराट ।।१२९९
माहाँ चंड-चंड दासन समेत, चितगुपत लेखीयैं धरत चेत ।
तपनिष्ट व्रह्म-निष्टा तुमेव, भवजीव कर्म कौ लहत भेव ।।१३००
फल पाय पुंन्य नही चरत फेर, जग अतताई कौं करत जेर ।
समवर्ती सब विध सावधाँन, सुख-दुःख पुंन्य पातक सुजाँन ।।१३०१
सरवग्य आतमा रमाँ साध, अघ मेट हरत तिनकी उपाध ।
पुंन्यातम हू सौं परम प्रीत, नय-रीत प्रकासत धर्म-नीत ।।१३०२
दोषीजन अपनौ पाप दीख, मेलत सुनर्क नही देत मोख ।
पाप की प्रनाली पती प्रेत, सब रीत सु जावहु धर्म सेत ।।१३०३
है नर्क किते अरु कहा हाल, जासौं सब धूजत जीव-जाल ।
सावंत्री सुनकै वचन स्राँन, जुत विनय प्राँनीयन हेत जाँन ।।१३०४
सावंत्री करकै वहु सराह, अवगाह वचन बोले उछाह ।
ये मंत्र काँन मै दयौ आप, प्राँनी कौ हरता सकल पाप ।।१२०५
सावंत्री सुनकै भई सुनाथ, हित अपन्यौ जाँन्यौ जोर हाथ ।
पूछ्यौ वृतंत जाही प्रमाँन, जमराजा कहने लगे जाँन ।।१३०६
सुभ-कर्म करत जो जीव सुद्ध, वँह जावत सोई लोक ऊद्ध ।
वाख्याँन प्रथम कीनौ विचार, सुन लये सकल विध समाचार ।।१३०७
अब कहत नर्क की कथा और, जावत जे प्राँनी पाप जौर ।
पूरे सु छयासी कुंड पाप, ताड़न बहुजीवन भरत ताप ।।१३०८
धारना सुनहु जिह नाँम धेय, इक अग्नकुंड ज्वल अप्रमेय ।
अरु तप्त भयाँनक खारयेम, जुत मूत्रा मल अरु स्लेख्य जेम ।।१३०९

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गरँकुंड नेत्र मल वसा ग्यात, सुक्रहू कुंड लोहू समात।
मलगात ग्राँसुवा कर्नमैल, निज मज्जा पल लोमकन खंल ।।१३१०
केस के कुंड ग्रसिताम्र केह, चुर्म के कुंड ग्रय नही छेह।
तप्तहू सुरा कंटक जु तीख, विषकुंड तप्त-तेलहु वसीख ।।१३११
क्रमी क्रूँत पूय ग्ररु सर्पकुंड, मसका रु दंस त्याँ गरल मंड।
वज्रा सु द्रंष्ट वृश्चक विसेख, सर सूक खड़ग गोलही ग्रसेख ।।१३१२
काका मथाँन ग्ररु नक्र-कुंड, चक्राक्रत वज्रा वीज चंड।
पाखाँन तप्त तिछ्छन पखाँन, मसि लाला चूरन कुंड माँन ।।१३१३
कूरम वक्राक्रत ज्वाल-कुंड, भस्मक तनदग्धा भरथ-भंड।
सूचका तप्त ग्रसिपत्र सोय, मुख सूची क्षुरधारा मिलोय ।।१३१४
गोकामुख नक्रामुख गनंत, गजदंस गोमुखा विच गृहंत।
कुंभीहुपाक ग्ररु सूत्रकाल, कुंडा मच्छोदय ग्रत कराल ।।१३१५
क्रमीकुंत कवा ग्ररु तुंद कुंड, ग्ररु पासुभोज्य जाँनहु ग्रखंड।
पासहु सवेष्ट पुन सूल प्रोत, उल्का रु प्रकंपन है उदोत ।।१३१६
करवेधन ताड़न अंधकूप, जालंध्र देहचूरन सजूप।
सोखन रु दलन कख सूर्प-संग, धूमाँध ज्वाल ग्राँनन कुढंग ।।१३१७
जाँनीयै नाँगनेष्टन जरूर, कुंड है छयासी माहाँ क्रूर।
करता सु पाप प्राँनी कलेस, दूतन रखवारी सहित देस ।।१३१८
जाँनहु दूतन के नाँम जास, तन पापीजन कौं देत त्रास।
है हस्तदंड ग्ररु पासहस्त, मदमत्त भयंकर माहामस्त ।।१३१९
है गदाहस्त पुन सक्त हाथ, करता खड्गाहथ क्रूर काथ।
जाँनहु ग्रत दारुन तपो-जुक्त, गुन दयाहीन निर्वाय गुप्त ।।१३२०
तेजस निसंक जे तांम्रनैन, ग्रत जोग-जुक्त ग्ररु सिद्ध ऐन।
जिह दीर्घनींद ग्रावत नजीक, ठाहर की तनकी लहत ठीक ।।१३२१
अंन्यथा त्रासँ नही करत येक, धरता पापीजन देख-धेक।
सिवसक्ति गजानन दास सूर, द्रग देख वैस्नवन रहत दूर ।।१३२२
पुन्यातम ऊपर करत प्रेम, निस्तारन जोगीजनन नेम।
ग्रघ गुप्त प्रगट देखत ग्रनेक, प्राँनीन खवर मै ग्रत प्रवेक ।।१३२३
देखत द्रग जैसौ देत दंड, कोय करता जातै नर्क-कुंड।
वरनन कीय ताके नाँम वोच, मेलत है जीवन लाय मीच ।।१३२४

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तिह हेत कहत अवगुन तितेक, अभमाँनी साँनी येक-येक।
पापीजन अपने पाय पाप, सदगती छोर भोगत सँताप ।।१३२५

दोहा

जे हरि सेवा करत जन, वात कहत अविरुद्ध।
नरक भीत पावत नही, सूरा जोगी सिद्ध ।।१३२६

छंद भुजंगीप्रयात

कृतघ्नी कुवादी कलेसा करंता, भृतं भ्रात गोती न भीतं भरंता।
वसू वित्त विद्या कहै माँन वाँनी, परै वंन्हि के कुंड मै सोय प्राँनी ।।१३२७
जरै रोम जेता समा आग ज्वाला, पसू होय छूटै जबै पूछवाला।
दुखी भूख विप्रा नही अंन्य देवै, पिपासा जुतै नाँहिनै नीर पेवै ।।१३२८
करै वास प्राँनी सोई तप्त-कुंडा, छुटै नर्क पंछी हुवै तांमृचुंडा।
अमा स्राध संक्रांत कौ पर्व आवै, रवीवार कौं वस्त्र सावू रचावै ।।१३२९
परै खार के कुंड मै सोय प्राँनी, मिलै पट्टके तंतु वर्ष मलाँनी।
जोई होय निर्नेजका सात-जन्मा, पनाँली प्रसूता गहै भोग प्रन्मा ।।१३३०
कोऊ वेद निंदा करै सास्त्र केरी, हसै मूल प्रक्रती क्रीया दोस हेरी।
सिवा सिंभु विस्नू नही देव सेवा, भजै भारथी भाव विद्याँ न भेवा ।।१३३१
भयंकार नर्कै परै होय भीता, रहै वीच कल्पांत आनंद रीता।
जेहीं छूट जावै मिलै सर्प-जोनी, चलै पेट कौं घींसता वीच छोनी ।।१३३२
वृती विप्र की आपनी औ विराँनी, हरै लेत तासौं घनी होय हाँनी।
वसै साठ हज्जार वर्षं विसेखा, माहाँकुंडऊ चार नामीन मेखा ।।१३३३
क्रमी होय विष्टा मिलै छूट काया, खपै ऊपजै मैल भोगै-क खाया।
ताड़ागा लहै खोसकै मूत्र त्यागै, भिजै रैनुका के कनाके विभागै ।।१३३४
वसै मूत्र के नर्क वर्षं वसेरा, घुलै आसही पास कौं मूत्र घेरा।
प्रछूटै जबै होयगौ वैल पोठी, खरावी परै पीठ की लाग खोटी ।।१३३५
भखै मिष्ट त्यागै सगा गोत भ्राता, परै कुंड खैखार माँहो पुलाता।
मिटै पै जमै प्रेत की जोन माँही, भखै मैलही मैल जामै भराँही ।।१३३६
गरू मात भ्राता पिता आप ग्याता, अरू पुत्र कंन्या पती को अनाता।
करै पालना नाँहि गर कुंड पाँही, जहाँ तीक्षनं भक्षनं पाय जाँही ।।१३३७

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वितै सत्त वर्षं जहाँहो वसाँही, मिलै छूटकै भूत की जून माँही ।
तकै दीन कौं देखकै द्रष्ट तेखी, वसावै नही अन्न पित्रं वसेखी ।।१३३८
लगै वृह्म-हथ्यादिकं पाप लारै, पुलै दूख का कुंड-माँही पधारै ।
जहाँ दुःख भोगै माहाँ क्लेस-जुक्ता, अधो भूत-जोनी भजै भीत उक्ता ।।१३३९
दुजं दाँन संकल्प कै नांहि देवै, सोई जीव पापी वसा कुंड सेवै ।
प्रमूकै जवै गिर्गटा-जोन पावै, मनुख्खं भये तै दरिद्रं मिलावै ।।१३४०
कोऊ होय काँमातुरं काँमनीकौं, मुखा छौरकै अंग पावै मनीकौं ।
परै सुक्र के कुंडमै सोय प्राँनी, छुटै पै क्रमी जोन पावै छलाँनी ।।१३४१
गरू विप्रकौं मार लोहू गिरावै, परै रक्त के कुंड मै रक्त पावै ।
वसै येकसौ नर्ष तातै विछूटा, भ्रगै सात-जन्मा लगै व्याघ्र भूटा ।।१३४२
गुनी जुक्त भक्ती हरी-गाँन गावैं, भिदै नाँ हृदा तर्क हासी भरावै ।
निवेसै सोऊ नीर चक्षू निपाँना, समा सत्त भोगै प्रपीरा-समाँना ।।१३४३
जहाँ तै छुटै होय चंडाल-जाती, सुपै तीन जन्मांत होवै सुजाती ।
करै धूर्तता सो परै मैल-कुंडा, भरै सत्य वर्षं लगै भीत भंडा ।।१३४४
कुकर्मी छुटै होयकै संकुकर्ना, भ्रमै तींन जन्मं लहै भार भर्ना ।
हलूलै करै येड़ कौं छेड़ हासी, विटंकर्न कुडं सतं वर्ष वासी ।।१३४५
हुवै सात जन्मं लगै अंग हींना, प्रकासै हृदै-ग्याँन पाछै प्रावीना ।
करै जीव-हिंसा हितू पोख काया, मजा-कुंड वासौ वसै छौर माया ।।१३४६
वसै लाख वर्षं लगैही वसेरा, फिरै छूटकै जन्म वाराह फेरा ।
सुसा येन की मीन की जोन साधै, वहू मास-भक्षी तँही देह बाधै ।।१३४७
करै पालना आपनी सोय कंन्या, लीयै वित्त कौं व्याह साधै लगंन्या ।
जिते रोम कंन्या मही होय जागा, इते नारकी-कुंड भोगै अभागा ।।१३४८
लदै माँस ताकौ रहै पीठ-लारी, गिरै रक्त तातै करंकैं गुजारो ।
कहूँ भार सौं पीठ फेरै कुभंडा, दीयै दूत मेरे तिहीं लौह-डंडा ।।१३४९
वसेरा तँहाँ साठ हज्जार वर्षा, परचौ सो रहै कंन्यका मैल पर्खा ।
करै नारकी भोगकै छूटकारा, मिलै जोन जीवंतकी के मझारा ।।१३५०
पछा रीत ही सूकरी-जोन पावै, जलोका मही सात ही जन्म जावै ।
मिलै सातही जोन संफाल मुर्गा, वसै सातही जन्म लौं काक-वर्गा ।।१३५१
व्रतं वा सुरं स्राध खौरी बनावैं, नखी रोमकी नारकी मैं निपावै ।
करै भक्ष रोमा नखा त्याग कीना, माहादुःख का भोग भोगै मलीना ।।१३५२

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वसै रोम संख्या तँहाँही वसेरा, घटै चित्र के दीह जौलौं घनेरा।
परै वार तै पार्थिका-लिंग पूजै, वँही केस के कुंड-माँही ग्रुजै ।।१३५३
जिते मृतुका रेनुका वर्ष जाई, विचै नारकी-कुंड वासौ वसाई।
मिटैतै सोई जोन पावै मलिछ्छा, ग्रधर्मी ग्रघी ग्रापनो होय इछ्छा ।।१३५४
मँडे विस्नुपादं गया धाँम-माँही, नरा पित्र जो पिंड कौं देत नाही।
सरीरं जिते रोमं के वर्ष संख्या, खपै ग्रस्थि के कुंडमै पाय खँख्या ।।१३५५
दरिद्री हुवै छूटकै जास दीना, हुवै कै तथाँ लंघड़ा पाव-हींना।
प्रीया गर्भवंती खटं मास पाछै, रमै सेज ताकी रहै रंग राचै ।।१३५६
प्रतप्ता सोई तांम्र के कुंड प्राँनी, सतं वर्ष जोऊ वितावै समाँनी।
विस्वस्ता ग्रवी नार जो होय वंध्या, रसोई करी खायकै अन्न रंध्या ।।१३५७
तपाये हुये लोह के कुंड तामै, भरै भीत तापै परै देह भ्रामै।
मिलै काक की जोन निर्नेज काई, पवित्रं हुवै सात ही जन्म पाई ।।१३७८
छुऐं देवता वस्तु कौं चर्म छूई, करै वास जो चर्म की वीच कूई।
निमंता करै सूद्र कौ खाय नाजै, सुरा तप्त के कुंड वासौ समाजै ।।१३५९
हटै तै पुरोधा सोई सूद्र होवै, खवावै खपै सूद्र कौ ग्रंन्न खोवै।
समा सत्तपै जाहि की होय सुद्धी, कला-ग्याँन वाढै मिटावै कुबुद्धी ।।१३६०
वदै ग्रंन्नदाता कहूँ दुष्ट-वाँनी, परै कंटका कुंडमै सोय प्राँनी।
दीयै दूत मेरे तँही चंड डंडा, पुनर्भूत कै ग्रस्व होहै प्रचंडा ।।१३६१
पुलावै तँही ताजना मारपीटी, घले रथ्थ-जोता तथा पै घसीटी।
वितै सात जन्माँत मै भारवाही, सुखी होय जो ईस होवै सहाही ।।१३६२
माहाँपातकी क्षवेड़ दै जीव मारै, सहंसं समा क्षवेड़-कुंडा सँवारै।
करै छेह कौं देह ह्वैजाय कुष्टी, पुनर्सात जन्मांत तै पाय पुष्टी ।।१३६३
ग्रनड्वान लादै तथा ग्रंन्न डही, थकै पै दीयै डंड की मार थूही।
तपावै तँही तेलकै कुंड तातै, जुगं च्यार वासौ करै जीव जातै ।।१३६४
जितै वैल की देहमै रोम जाँनौ, मिलै वैल की जोन ही सत्य माँनौ।
पसूकै करै दाघ कौं चिंन्न प्राँनै, वसेखै तही ग्रापनौ ग्रौ विराँनै ।।१३६५
सहंसा दसं कूँत के कुंड सेवै, दलै कूँत सौं ताड़ना दूत देवै।
ग्रधर्मी दुजंन्मा भखै मास ग्राहा, करै काँन नैवेद्य विस्नू कुराहा ।।१३६६
जिते देहमै रोम है विप्रजाती, क्रमी-कुंड माँही समावै कुपाती।
मलेछ्छा हुवै छूटकै दुष्ट मोटा, खुदा जाँमनी दै करै काँम खोटा ।।१३६७

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

करै स्राध औ जग्य सूद्रं करावै, द्वजं होयकै फूँक मुर्दा दहावै ।
परै पीप के कुंडमै उंड प्राँनी, पिलै दूत के डंड चंडा पखाँनी ।।१३६८
रजा छूट कारैं हुवै दाद रोगी, भ्रमै दुष्ट-जोनी मँही पाप भोगी ।
करै दंड सौं मृत्यु दिकर्न कारा, वड़े पंकजं सीस पै चिन्नवारा ।।१३६९
जिहीं हिंसकं देहमै रोम जेतें, अही-कुंड माँही परैं वर्ष येते ।
तरैं सर्प काटै परैं डंड तापै, करै ताड़ना दूत मेरे कहापै ।।१३७०
निकारैं जवै जोन पावै निकाँमी, हुवै साप सौं मृत्यु जाही हराँमी ।
मदाभीरु जूँका तथा लीख मारै, उदंसा अहा माँनवीकै अधारै ।।१३७१
जोइ दंसका कुंडमै नर्क जावै, खराबी परै दंसका जूक खावै ।
हथै जीव जेता समा दुःख होवै, सुखी होयकै नींद मै नाँहि सोवै ।।१३७२
हुवै छूटकारा जवै अंग-हीना, मिलै म्लेछजातीन-माँही मलीना ।
मधूमक्षका जो मधू-काज मारै, वधै जीव संख्या समा कौं विचारै ।।१३७३
परै गर्लकै कुंडमै सर्ल पापी, करै भक्ष मक्षी न छूटै कदापी ।
अनायास है विप्रजाती अदंडा, करै दंड तापै नरेसा कुभंडा ।।१३७४
दलै वज्रदंष्टा जँही कुंड द्वेखी, खलै दूत मेरे भरै भीत खेखी ।
वसैं अंगमै रोम जेता सवर्पा, अली डंक मारैं उभारै अमर्षा ।।१३७५
जवै छूट जावै हुवै सूद्र-जाती, रहै व्याध-जुक्तं सोई दीह-राती ।
जुता सस्त्र विप्रा करै जीवकाई, सधै नाँ त्रसंध्या वृती सेवकाई ।।१३७६
धरै सूल पै पाव औ खड्ग-धारा, परचौ-सो रहै कुंडमै वारपारा ।
प्रजा गुप्त आगार मै बंध पारै, विवेकं जुतै न्याव नाँही विचारै ।।१३७७
करै गोल-कुंडा मँही वंध क्रूरं, भयंकार अंधार जामै भ्रपूरं ।
भयंकार ही कोट जामै भराई, डसै तीक्षनं द्रंष्ट जासौं डराई ।।१३७८
माहाँपातकी कच्छ औ मच्छ मारै, भखै मास ताकौ चखै पेट भारै ।
खता नक्र के कुंडमै चक्र खाई, त्रसै मक्र ताकौं तजे वक्रताई ।।१३७९
करै वास वर्षं जिते मच्छ काँटा, वऊ गाहै इते जीवहू ताहि आँटाँ ।
छुटै मैडका मच्छ की जोन छत्ता, वड़े कष्ट सौं नष्ट होवै विपत्ता ।।१३८०
पराई तीया की लखै तुंद पेडू, उरोजा मुखा देखकै ह्वै उचेडू ।
करै काक-कुंडा मही वास कासा, तँही आँख काका कखे लेत मासा ।।१३८१
दयै चाँच की चोट के वीच दोला, रहै आसपासै जिही काकरोला ।
वसै रोम संख्या जहाँही विरुद्धी, सुपै कोट जन्मांतर होय सुद्धी ।।१३८२

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

करै औरकी नार सौं भोग काँमी, न जाँनै कहा दंड दै ईस नाँमी।
दुजा देवता स्वर्न चौरैं दगा सौं, सुजाती तथा और भाई सगा सौं ।।१३८३

क्रमी-कुंड मंथाँन का अंग काटै, छुधा लाग मै वटिका जीह चाटै।
खुटैपै सरापी करै खाय खोटा, तपावै तथा स्वर्न का भर्न तोटा ।।१३८४

सिलासार रीरी जथा वंग सीसा, विदुस्नीय ताँबा चुरावै व सीसा।
परै बीजली वज्र के कुंड प्राँनी, समा अंग के रोम वर्षा समाँनी ।।१३८५
रसाँनी चुरावै दुजा घीय-रूपा, करै वास पाखाँन के नर्क कूपा।
घने दीह छूटै जँही नर्क घेरा, फिरै स्वेत कुष्टी भयौ जन्म फेरा ।।१३८६

छली पुस्चली नार होवै चिनाला, लहै अन्न वृत्ती परै कुंड लाला।
ज्युही म्लेछ-सेवा करै वर्नजेष्टा, कमाई करै लेखनीकै कलिष्टा ।।१३८७

मसी-कुंडमै पैठ भोगै मलाँनी, घसीटै पसू क्रस्न ह्वै तेल घाँनी।
इला होयकै तालकौ वृछ्छ ऊगै, पछारी सुजाती मही जीव पूगै ।।१३८८

अनाजा हरै विप्र के आसना कौं, सुवस्त्रं भरै मेटकै सासना कौं।
करै वास सौ वर्ष लौ चूर्न-कुंडा, मिलै जोन मीढा महाँ संड-मुंडा ।।१३८९

कपी तांम्रचूड़ा मिलै केक काया, मनुख्खं भये त्याग दै संग माया।
हरै विप्र कौ वित्त जो देत हाँनी, परै चक्र आकार के कुंड प्राँनी ।।१३९०
तऊ तीन जन्मं लगै होय तेली, उपावै कहू पावला औ अधेली।
दुजन्मा हनै कूर्म कौं मास दावै, गहै कूर्म के कुंड-माँही गिरावै ।।१३९१

मिलै जोन घोनी पसू पछ्छ मुर्गा, अनारी छुटै पै भखी होय उर्गा।
पीयै तालकै खालमै गाय पाँनी, चरै माल मै चार चौकै अचाँनी ।।१३९२

करै वास सोइ मही वक्र-कुंडा, छुटै सत्त वर्षं तँही नर्क चंडा।
घटं रोग होवै तँही पक्षघाती, छई रोग होवै छिकै जोग छाती ।।१३९३

तिला-तेल भूदेव औ देत ताकै, चुरावै धरावै न देवै छुपाकै।
करै वास ज्वाला तथाँ भस्म-कुंडा, दझै ज्वाल-माला मिलै मार डंडा ।।१३९४

छुटै जोन पावै सोई मूस मच्छी, पवित्रं हुवै जोव सौं वर्ष पच्छी।
सँनेहं जु ग़ोसीर्ष आदं समस्तू, विराँनी कोऊ लेय सोगंध वस्तु ।।१३९५

गहै अंग मैं रोम जेतै द्रुगंधी, समा छूटकै फेर पावै सुगंधी।
धरै येन ह्वै नाभ मै गंधधूली, भ्रमै अट्टवी वासमै भर्म भूली ।।१३९६

T　CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दोहा

छल बल हिंसा करत छिति, हरन करत मति हाँन ।
वसत तप्त सूत्री विचै, नरक-निवास निदाँन ।।१३९७
भसम होत नही दुख भरत, अरध-दग्ध ह्वै अंग ।
सात मुनंतर लग सोई, वसत न जामै विंग ।।१३९८
कीट होय छूटत कहूँ, साठ सहंस मीयंत ।
लहि सु जोन दारद लहत, बहु दिन लग बिचरंत ।।१३९९

छंद पद्धरी

ह्वै दयाहीन लै खड्ग हाथ, आहार हेत पसुवन अनाथ ।
धन हेत तथा मारत धनीन, असिपत्र नर्क भोगत अहीन ।।१४००
इक व्रांह्म-दिवस लग रहत आप, तनमै अरु मनमै भरत ताप ।
जो करत वृह्महथ्या जरूर, पुन इही नर्कमै वास पूर ।।१४०१
सत मन्वंतर लग रहत सोय, हथ्या-वस दौरत चपल होय ।
मिल दूत डंड की देत मार, कर कूक उठत हाहंतकार ।।१४०२
जव छुटत होत मंथाँन जीव, सौ जन्म होत स्रंगाल सींव ।
सूकर अरु मुर्गा होत सोय, कूकर की काया लहत कोय ।।१४०३
घंटा अरु झालर सुनत घोर, सनमुख परमातम करत सोर ।
जोनी सुभ पावत जवही जीव, अथवाँक होय भैसा अतीव ।।१४०४
वन ग्राँम जरावत पाप वृद्ध, खुरधार नर्क पावत निखद्ध ।
ह्वै छिन्न-भिन्न खुरधार हूँत, तत सौं लोहू की छुटत तूँत ।।१४०५
वहुवर्ष होत तिह नर्क-बास, तन-मन सौं भोगत माहाँत्रास ।
सोई गलत कुष्ट है जन्म सात, जन्मै पुन पाछै सुद्ध जात ।।१४०६
सुर भूसुर निंदा करत सोय, जो भरत पराये काँन जोय ।
वरनन पर दूखन करत वात, सूची मुख कुंडा विच समात ।।१४०७
जुग च्यार वसत तामै जरूर, कृतघनी होत वीछू करूर ।
काकोदर होवत फेर कीट, फिर मनुज व्याध जुत होत फीट ।।१४०८
चोरी की संधी करत चोर, बाछड़ी भैंस भेड़ी वहोर ।
गोमुखा कुंठ मै करत गाँन, पुन दूत डंड मारत पखाँन ।।१४०९

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जुग तीन वसत ताही जगाह, छूटकै भेड़ होवत छगाह ।
जव मनुज होत कहु कर्म जोग, दारद्र-रोग भारत उद्योग ।।१४१०
साँमाँन वस्तु कौं चोर सोंय, जम दूत डंड तिह देत जोय ।
गौ वैल करी हय हनत गात, दरखत कौं काटत चुरी दात ।।१४११
गजदंस नर्कमै करत गाँन, भर पूरन दुख भोगत भयाँन ।
जुग तीन माँहि तिह छुटत जाग, गजदंत लगावत करत गाघ ।।१४१२
गज बैल होय हय म्लेछ ग्यात, फिर सुद्ध जात जोनी फिरात ।
पाँनी न देत प्यासे पसूँन, क्रमी-कुंड गोमुखा रहत कूँन ।।१४१३
मनवंतर अंतर होय मुक्त, जिह मिलत ग्रेह नही गाय-जुक्त ।
दारद्री अंतज होय दींन, परहार करत इह पाप पींन ।।१४१४
गो विप्र करत हथ्या गँवाँर, स्त्री तथा भूँनहथ्या सँवाँर ।
जाचक कौं मारत रचत जाल, खेलत सु अगंम्या भोग व्याल ।।१४१५
परत सो नरक विच कुंभिपाक, ताड़ना करत जमदूत ताक ।
क्षन-मात्र अगन मैं तपत खाल, कंटक-विच अटकत किते काल ।।१४१६
तांम्रं के कुंड-विच तप्ततेल, ठहरावत तामैं ठेल-ठेल ।
वीतत जव चवदा इंद्र वार, छूटत सोई ह्वैकै देह-छार ।।१४१७
ग्रीध की जोन पावत गलार, सँन सट हजार ह्वै काक स्यार ।
सूकर काकोदर जन्म सात, मल क्रमी होत तन कलमलात ।।१४१८
पुन बैल होय तन मनुज पाय, कोढी दरिद्र जुत लहत काय ।
गत ऊरध पावत सुद्ध ग्याँन, पातक मिटाय सत लहत प्राँन ।।१४१९
गायत्री सुनकै पाप-गाथ, हरि सौं पुन बोली जोर हाथ ।
सास्त्रोक्त विप्र-हथ्या समाँन, गोहथ्या भाखहु सकल ग्याँन ।।१५२०
नारी सु अगम्या कोन नेम, जाहीकौ वरनन करहु जेम ।
संध्या विहीन है कोन सेष, वरनीयै अदीक्षत कोन वेष ।।१४२१
लख दीर्थ दाँन के लेन वार, को ग्राँम अयाजी करनकार ।
कोनसे विप्र देवल कहात, सूद्र के रसोईदार स्वात ।।१४२२
परमत्त पती सूद्री पिग्रार, सब वरनन लक्षन करहु सार ।
जमराजा सुन येते जवाब, सव ऊतर दैंन लागे सताब ।।१४२३
श्रीक्रस्न क्रस्न की मूर्ति स्याँम, भव लिंग-भेद भव भवा भाँम ।
सुभ देव देव-मूरत समाँन, भाँन की प्रभा भिद बिंव भाँन ।।१४२४

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गनपती देव माता गनेस, पुन इष्ट देव अरू गरू प्रमेस।
पितु-मात भक्त वैस्नव अप्रीत, अरु विप्रवरन वेदन अधीत ।।१४२५
गलका सिल धोवन नीर गंग, विप्र के चरनदक जाँन विंग।
नइवेद विस्नु संकर नटंत, रमत क्रस्न भेदही रटंत ।।१४२६
सक्ति के भक्त अरू सास्त्र सक्त, इनमैं जो ठाँनत दोष उक्त।
वेद मैं लिखत पित्रन-विधाँन, करता विधाँन सूँ आँन-काँन ।।१४२७
भूतन कौं पूजत देव-भाव, विस्नु के मंत्र भेदही विभाव।
वैस्नवन विस्नु पूजा-विहीन, प्रकृती ब्रह्म माया प्रवीन ।।१४२८
जन्माष्टम राँमानवम जोय, सिवरात वरत नही करत सोय।
भोजन येकादसि दिन भखंत, रविवार वरत नांहिन रहंत ।।१४२९
आदरा-नखत के चरन आद, प्रथमी कौं खोदत वस प्रमाद।
सोउचाद सलल धर देत सींच, नही गनत बड़ेरन-लाज नीच ।।१४३०
पतिव्रता नार नही करत प्रेम, नही पुत्र सुता पालन सुनेम।
हरिहर की पूजा नहिन हेत, पुन जीवत देही गनहु प्रेत ।।१४४१
लागत तिह हथ्या ब्रह्म लार, वरनत सास्त्रनमैं इह विचार।
गोहथ्या सुनीयै सास्त्र ग्याँन, सब ग्रंथनमैं वरन्यौ समाँन ।।१४३२
हिंसक जो करत गो-प्राँन-हाँन, नही दंड देत रोकत निदाँन।
गो-विप्र मध्य ह्वै चलत गैल, वपु असवारी गो करत वैल ।।१४३३
देत जो गऊकै विप्र दंड, ख्यावत गाय ऊछिष्ट-खंड।
अरोही वैल कौं देत अंन्न, अथवा तिह लेवत अपरछिन्न ।।१४३४
क्रतु सूद्रीपति कौं करत काज, अथवा-क लेत तासौं अनाज।
अगन कौं समेटत पाव ओट, चढ गाय वैल पग देत चोट ।।१४३५
पस्चात सवन धोवै न पाय, जो देवालय मैं चल्यौ जाय।
भोजन पद ओदे विन भखंत, ओदे पग सोवत सोउं असंत ।।१४३६
सूर्जोदय भोजन भखत स्वाद, वंध्या तीय विधवा जुत विषाद।
कुटनी सु हाथ भोजन करंत, संध्याओपासन नही सरंत ।।१४३७
प.नी पत राखत नहिन प्यार, गिल्ला विवाद कर देत गार।
पुत्र जो करत गो-घात पाप, विध नहिन करावत सुद्ध वाप ।।१४३८
पुर के नजीक बैठक पसून, जोतकै अंन्न खावत जवूँन।
भूमी तड़ाग के मध्य भाग, जोतकै खेत की करत जाग ।।१४३९

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

प्राचीन किला किंदरा पोल, खेती निपजावत खोल-खोल।
सुर ऊपद्रव भगहल गऊ सँताप, वामै नही रक्षा करत आप ।।१४४०
प्राँनी कोउ अथवा देव-पिंड, मिल करत न पूजा दंभ-मंड।
अभ्यागत देखत हुय उदास, वँह पूरन नाँहिन करत आस ।।१४४१
देवता गरू सौं करत द्वेख, वंदना नही दुजवर विसेख।
परनाँम करत पै दुज प्रवेक, हित आसिक नही देवत हरेक ।।१४४२
दुज विद्यार्थि नही देत दाँन, सास्त्रोक्त गऊ-हथ्या समाँन।
जानकै न कीजै इह जरूर, पिंड कौं लगावत पाप पूर ।।१४४३

दोहा

अपनी व्याही असतरी, परने पति तीय प्यार।
पर व्याही पति पार के, नरहु अगंम्या नार ।।१४४४
वरनत तिह दूषन विवध, भिन्न-भिन्न बहु भाँत।
नरक परत जे नार-नर, खेल मेल कर खाँत ।।१४४५

छंद द्वै-अखरी

वरनत ताकी रीत विसेकत, द्रग सौं कछु जैंसी हम देखत।
सावंत्री सुनलेहु सयाँनी, जमराजा की सत्य जबाँनी ।।१४४६
विप्रन कौं सूद्रन की वाँमा, सूद्रन विप्रन नार सकाँमा।
अत अगंम्य इह रीत अनादू, वरन्यौ सुमृत वेद मै वादू ।।१४४७
विप्र होय सूद्रन की वाँमा, सुख भोगै रति होय सकाँमा।
सूद्रहू विप्र त्रीया सुख साजैं, सौ दुज-हथ्या पाप समाजै ।।१४४८
उभयपक्ष नारी अघ येहू, बहु तन देखत नरक बसेहू।
कुंभीपाक-कुंड अधकारी, नरहू कहा-कहा कोऊ नारी ।।१४४९
सूद्री भोग करै दुज सोई, कहत नाँम वृषली पति कोई।
सो जाँनहु चंडाल-समाँना, पिंड लेत नहि पित्र प्रधाँना ।।१४५०
कोट जन्म लग तपसा कीनी, होवहि कला जाहि की हीनी।
सुरा-पाँन पीवत दुज सोऊ, मुद्रांकित ह्वै छाप मिलोऊ ।।१४५१
गँनीयै तिह वृषली पति ग्याती, छल अरु छदम भरी तिह छाती।
कुंभीपाक परत विच-कुंडा, दूत देत ताकौं ज डंडा ।।१४५२

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वरनन कीनौ प्रथम विधाँन, सो दुख भुगतै ताहि समाँना ।
वरनत नाँम अगंम्या वाँमा, सुख तजीयै नर-नार सकाँमा ।।१४५३
पत्नी गरू पत्नी अधपत की, कंन्या कुल होवत पुन कितकी ।
माता-सम सौतेली माता, सुत-नारो अरू बहन सुग्याता ।।१४५४
सासू पतिवृत नार सगर्भा, उपजन नहि जाकै कोऊ अर्भा ।
भ्राता लघू वड़े की भाँमन, काकाहू आजा की काँमन ।।१४५५
माँमी अरु नाँनीहू मौसी, पुन कोउ जाती नार परोसी ।
मौसी-सुता सुता माँमी की, सुता ज्युँही है गरु स्वाँमी की ।।१४५६
भुवा-सुता सुता भ्राता को, द्वज की सुता अंन्नदाता की ।
सिख की सुता तथा सिखनेई, जाँनहु नार अगंम्या जई ।।१४५७
इनसौं रमन करत अग्याँनी, गाँमी मात्र कहत विग्याँनी ।
दुज सत हथ्या लागत देही, वेदहू कहे निषेद वड़ेही ।।१४५८
संध्या नाँहन करत साधना, इष्टदेवहू की अराधना ।
करत सु विप्र पवित्र कारना, विध निषेदहू कौ विचारना ।।१४५९
सिव देवी विस्नू अरु सूरज, द्वै-मातुर नही लेत मंत्र दुज ।
जाकौ नाँम अदीक्षत जानहु, महाँअधम ताही कौं माँनहु ।।१४६०
जल गंगाकौ वहत जहाँही, तातै च्यार हाथ तट ताँही ।
क्षेत कहत नारायन खितपै, थित मृतु होय जाय हरि थितपै ।।१४६१
बारानसी क्षेत है वदरी, गंगासागर जहाँ गत गुदरी ।
पुस्कर हरिहर क्षेत प्रभासा, काँमरूप हरिद्वार प्रकासा ।।१४६२
धाँम जहाँ केदार धरामै, तट सरस्वत के पुर है तामै ।
गोदावरी वृंदावन घेरा, कोसकी रोध त्रवैंनी केरा ।।१४६३
परबत आद हिमंचल पाँही, जाती विप्र वसत है जाँही ।
दाँन लेत जजुमाँन-दुवारा, नरक वसत है वास नियारा ।।१४६४
जिग्य करावत सूद्रहिं जोई, सेवा करत सूद्र की सोई ।
जाँन ग्राँम याजीव तीयूजन, पिंडा देवल करत सु पूजन ।।१४६५
सूद्रपाक जो करत सदाई, सूपकार जाँनहु सरसाई ।
संध्या पूजन नाँहिन साधन, उर हरि-रूप भक्ति आराधन ।।१४६६
जाँनहु और मनुज दुज जाती, पाँवर पतित-रूप परमाती ।
व्रिषली पति गत प्रथम वखाँनी, परत नरक मै ये सब प्राँनी ।।१४६७

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

करे कर्म कौ नास न कैसे, जिह भोगे विन छुटै न जैसें ।
सुधकर मनतै अंकुर सूधा, अकरम-अंकुर ऊगत ऊँधा ।।१४६८
सावंत्री पतिवरत सयाँनी करहु स्रवन जमराज-कहाँनी ।
अंन्न पुश्चली खावत येता, जासौं भोग करत नर जेता ।।१४६९
कालसूत्र के परत सुकुंडा, वास वरख सत वसत विभंडा ।
नारी रीत कहत हूँ नीती, पँहचानहु मन लाय प्रतीती ।।१४७०
पविव्रता इक पति सौं प्रीती, भोगत कुलटा दुई पति भीती ।
तीन पती धर्षिन है तीया, पुन पति च्यार पुस्चली प्रोया ।।१४७१
पंचम पति षष्टम रति पावत, कलमै वेस्या नार कहावत ।
सप्तम अष्टम पती सनेहू, ललना तिह पुंगी गन लेहू ।।१४७२
इह गनती सौं पति है आगै, सो तौ महावेस्या है सागै ।
कहू जात कै छुवै जु काया, राखत नर्क वीच जमराया ।।१४७३
विप्र जात पुश्चली वाँम कौं, करै धर्षिनी भूल काँम कौं ।
पुश्चली पुंगी नार अपाँवन, वेस्या महाँवेस्या वतराँवन ।।१४७४
करत वास मत्सोदक कुंडा, भोगत दुख ताहीमै भंडा ।
गहै वरख सत कुलटागाँमी, वर्ष च्यारसै धर्षिनी वाँमी ।।१४७५
षटसत वर्ष पुश्चली खेला, अठसत पुंगी नार अकेला ।
वर्ष हजार सु गाँमी वेस्या, महावेस्या इक अयुत मलेस्या ।।१४७६
जब छूटै ऐसी गत जावै, वरतमाँन के काल वितावै ।
कुलटागाँमी तीतर काया, धर्षिनी कागा-देह धराया ।।१४७७
कुलटागाँमी कारा कागा, भिड़िया वेस्या रमत अभागा ।
महा वेस्यागाँमी किर मैला, सुपच ग्रेह मैं रहै सकैला ।।१४७८
सात-सात जन्मांतर साधै, उत्तम जोनी नीठ अराधै ।
चंद-सूर विधुतुंद की छाया, गृहन निसा-दिन होय गृहाया ।।१४७९
भोजन करै मनुज कोऊ भूखा, कनका जितनोई बँधै कलूखा ।
वरख इते अरितुंद वसेरा, तँहा कष्ट भुगतै बहुतेरा ।।१४८०
दुख सौं छुटै मनुज ह्वै देही, गिरै दाँत गठीया हुय ग्रेही ।
कंन्या दैन कहै येकन कौं, जाहि समर्पै दूसर जन कौं ।।१४८१
धूर-कुंड मै खावत धक्का, फिर-फिर मारत धूरही फक्का ।
सत हायन सौं छूटत सोई, करै स्याहि ताकी नही कोई ।।१४८२

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

द्रव्य लेत कंन्या कौं देई, जाय पांसुवेष्टन जीय जेई।
सेझ्या वाँन ऊपरै सोवत, रात-दिवस समीयां सत रोवत ।।१४८३
पार्थव सिव की करै न पूजन, सूल प्रोत सत-वर्ष सरूझन।
पुन ह्वै कूकर होवत पंडा, पूजन कर कछु छूटत पिंडा ।।१४८४
विप्र डरावत भयकर वाँनी, परै प्रकंपन नर्कही प्राँनी।
कोपवती तीय कलहकारनी, दुख देवत निज पती-दारुनी ।।१४८५
उल्मुख-कुंड परत अततार्इ, मुह फूंकत जमदूत मिलाई।
पुन वैधव्य लहत विधवापन, ताहो दुख छूटत वहु दिन तन ।।१४८६
वाँमनी होय सूद्र सुख विल त, पसू-क्रीया हू करत छोर पत।
अंधकूप मै वसत अनारनि, जल मलीन पीवत सोई जारनि ।।१४८७
वृह्मं-दिवस लग होत वसेरी, काया मिलत कागली केरी।
सूकरी होवत फेर स्रँगाली, कर-कर वोलत कूक कराली ।।१४८८
वेस्या परत कुंड वेधनमै, ताड़न दंड पुंगिका तनमै।
महाँवेस्या जलरंध्र मझारा, देह चून विच कुटला दारा ।।१४८९
स्वैरनी दलन-कुंड मै सोवत, धर्षिनी सोखन-कुंड तन धोवत।
पीप मूत्र विष्टा भख पावत, जार नार नर्कन सब जावत ।।१४९०
मनवंतर लग रहत मिलाई, क्रमी होय छूटत कठनाई।
विप्र और भोगत विप्राँनी, खत्री अन खेलत खत्राँनी ।।१४९१
वैस्य और वैस्याँनी वाँमा, सूद्र और सूद्री जु सकाँमा।
अन पतनी अन भोगत येते, जातक खाय कुंडमै जेते ।।१४९२
तपत सलल मै देह तपावत, पुन ताही तातौ जल पावत।
सत-वर्षनमै छूटत सोई, जावत नीच-गती कौं जोई ।।१४९३
खत्री वयस सूद्र की ख्याती, जो तीय भोगत व्राँमनी जाती।
सूर्प अकार कुंडमै सोवत, वपु ताकौ जमदूत विगोवत ।।१४९४
मूत्र तपत पीवत ता माँही, जब लग इंद्र चतुर्दस जाँही।
सूकर खसी जन्म ले सातू, पुन ता-पाछै होय निपातू ।।१४९५
कर-तुलसी लै सौगन करै, साच प्रतग्या नही अनुसरै।
अथवा जल गंगा लै आचन, सालग्राँम मूर्ति विन साचन ।।१४९६
दहिना हाथ हाथ पै देवै, वचन फरै ताकौं नही वेवै।
देवालय मै खाय दुहाई, करै तही सौं कुल-पतराई ।।१४९७

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ब्राँमन अगन छूयकै विसरै, करै मित्तताई मै कसरै।
कृतघंनि पाय करै कुटलाई, घात करै विस्वास घनाई ।।१४९८
झूटी साखी दै कोउ झगरै, वस ह्वै लोभ सोइ मति विगरै।
ज्वालामुखी नर्क मै जावै, वार इंद्र चवदा हि वितावै ।।१४९९
तपै तेज ज्वालानल ताती, छिकै अंगारन कनका छाती।
तुलसी सपरस करता तेई, पावत जात चंडाल पछेई ।।१५००
गंगाजल पन तजै अग्याँनी, सात-जन्म ह्वै म्लेछ-समाँनी।
सालग्राँम पतित क्रमी सोऊ, जन्म सात भुगतै दुखजोऊ ।।१५०१
मूरत देव छुवै पन मेटै, भवन विप्र क्रमी जोनी भेटै।
दहनै हाथ वचन की देता, सात-जन्म ह्वै सर्प सहेता ।।१५०२
वसत देव कौं मिथ्यावादी, पंडा देवल होत प्रमादी।
विप्र अगन छुव मिथ्या बोलत, द्वपीअरि ह्वैकै वनमै डोलत ।।१५०३
बपु माँनव होवत पै वहरा, गूँगा होय न बोलत गहरा।
भाँमन वंस-हीन हुय भ्राता, सात-जन्म मै पावत साता ।।१५०४
द्रोही मित्रन कुल ह्वै देही, व्याघ्रीनस कृतघनी बड़ेही।
घाती जो विस्वास वघेरा, डेडर झूटी साख दखेरा ।।१५०५
वरन-वरन की सब विध वरनो, क्रीया-विहींन जिनहुँ की करनी।
नरक ज्वालमुख केर निवासी, आतम-आँनद रहत उदासी ।।१५०६
वेद वाक्य मे नहो विसवासा, अरू नही करत वरत उपवासा।
आपत वचन सुनत अनखावत, जे धुँम्राध नर्क मै जावत ।।१५०७
धस-धसकै घूटत मुख धुंवाँ, मलिन वेख तन जीवत मुवाँ।
इकसत वर्ष छूटकै आवत, जल-जंतू जोनीमै जावत ।।१५०८
हरि देवत कर विप्रन हासी, पुरखा सहित गहै जम-पासी।
परत कुंड धूम्राध पलाई, वरख च्यारसौ लहि विपुलाई ।।१५०९
जब छूटत होवत क्रमि जाती, पक्षी नाना-जोन पछाती।
जड़ तरु होय पसू-तन जावत, पाप छुटै माँनव-तन पावत ।।१५१०
जोतसि विप्र चिक्कचक जीवी, लाख लूंण्य उपजावत नीवी।
लोह तेल वेचत रस लाखा, अधिक करत माया अभिलाखा ।।१५११
नर्क नागवेष्टन मे निवसत, रोम प्रमाँन वरख दुख विहरत।
पक्षी ह्वै माँनव-तन पावत, जोतसी पिंडत वैद वनजावत ।।१५१२

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गोप चमार होय रंगरेजा, वनत कोसटा कोली वेजा।
सुद्र होत जन्मांतर सोई, कही कथा जाँनत सह कोई ।।१५१३
वड़े-वड़े जो नरक वखाँनै, परमातँम छोटे पहिचाँनै।
जमराजा मै तऊ न जाँनत, मन सावंत्री तूँ कहा माँनत ।।१५१४
वछ्छ करहु हरीगुन विसवासा, अक्रम की छाँड़हु उर-आसा।
परपीड़ा पातिक पहिचाँनौ, जिह अपनी काया सौ जाँनौ ।।१५१५
सुखहू अपनी काया-संगा, पुंन्य-पाप कौ लखहु प्रसंगा।
इह सिद्धांत सबन कौ येका, विरला जन कोऊ लहत विवेका ।।१५१६
पाप-पुंन्य वरनी परपाटी, घिरत-फिरत कर्मन की घाटी।
अकरम-सुकरम कहे जु येते, जाँन लेहु तत वेता जेते ।।१५१७

दोहा

सुन जमराजा सौं श्रवन, नाना-नरक निवास।
वोली सावंत्री वचन, अत चित होय उदास ।।१५१८
जीवन दीसत जगत मै, करै न येते काँम।
भरै नरकही नरक-भय, संज मनीपुर स्याँम ।।१५१९
कलि जीवन छेदन करै, ऐसे पातक अंग।
जाँनत हौ तौ कहहु जिह, प्रांनी हेत प्रसंग ।।१५२०
कुंड न देखै नर्क के, जनम-मरन मिट जाय।
कुंड वने आकार किह, परत सो कोन पुलाय ।।१५२१
जवही मरन ह्वै जीव कौ, दगध होत इह देह।
भखत स्वांन सृंगाल भख, अथवा किरमू येह ।।१५२२
दुख भोगत किह देह सौं, जाही कै संग जीव।
करम असुभ कैसे कठन, संगी रहत सदीव ।।१५२३

छंद मौतीदाँम

नारांयन नारद सौं जुत नीत, उदंत कौं भाखत ग्यांन अधीत।
सावंत्री और क्रतंत सवाल, हितेसीय जीवन के सव हाल ।।१५२४
कहे जिह रीत सौं वात कहंत, विधोविध मंगल के विरतंत।
वखांनत वेदनमै इह वात, पुराँनन सुमृत औ पंचरात ।।१५२५

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कहै सत साम्रहू केर कथ्थंन, जनायेऊ पातक मेट जत्तंन।
उपासना देवत पंच अनाद, विनासत जीवन पाप विषाद ।।१५२६
जरा मृत्यु जन्म संतापहू जाय, मुगत्तीय मंगलदाय मिलाय।
करै तिह कालहू चाल न कोय, जुरै जम जालहू टाल न जोय ।।१५२७
सदाँ फलदायक सिद्ध सरूप, अमंगल कर्म कुठार अनूँप।
भगत्तीय-भाव मुगत्त भँडार, अभै अवनासीय सुद्ध अगार ।।१५२८
जँही पंचदेव कौ पूजन जोग, रँमापत सिंभु हरै मल रोग।
परा महामाय रबी गँनपत्त, विचारहु जेम इग्यारस वृत्त ।।१५२९
करै हरि-वंदना तीनहु काल, गहै रिव ईस के मंत्र गुपाल।
विनायक मंत्र सकत्तीय वाँम, करै कोऊ भूल प्रमाद कौं काम ।।१५३०
लगै नहि ताही कौं दोस लिगार, सदाँ पंचदेव कौ पूजन सार।
लखै नही संज मनीपुर लाग, रखै पंचदेवन सौं अनुराग ।।१५३१
कहै अब देहीय की करतूत, दिवावत मार तँही जमदूत।
इहै पंच-तत्त कौ पूतरा येक, दहावत जो कछु आवत देख ।।१५३२
गनौ सोइ क्रत्रम-रूपीय गात, खसोटत स्वाँन स्रँगालहु खात।
जिही तज नीसरकै जीय जाय; रहै पुन सूक्षम सेष रचाय ।।१५३३
पुलावत होय अंगुष्ट प्रमांन, मिलावत पापहु पुंन्य मिलांन।
जरै नही आग गरै जल जोग, कटै नही सस्त्रन नास कुरोग ।।१५३४
परै सोई नारकी-कुंड प्रधाँन, उचारत ताहीय कौ उनमाँन।
वने वृत पूंनम के विधु वेख, डरावत जीव भयंकर देख ।।१५३५
कोऊ अधकोस हू कोस के कुंड, इती अध-वीच विचारहुँ ऊंड।
तपे पथराँन सौं बंध तमाँम, जगै ज्वल तामह आठहु जाँम ।।१५३६
विनास न होवत कोनहु वेर, घरे तिह ईस विसंभर घेर।
अघीजन देवन कौं दुख अंग, संकीरन धाँम वने जिह संग ।।१५३७
तहां इक कुंडहू ज्वाल तपंत, अंगारन झारन सौं उसरंत।
सिखा तिह ऊरध जात समाँन, किनारन देख उठै कदराँन ।।१५३८
जहाँ जमदूत रुखारीय जात, पट्टकत पापिन ताप पिरात।
महाँदुख पाय उठावत मुंड, दिवावत ऊपर सौं अय दंड ।।१५३९
तरै जब जावत ताप तपंत, भयंकर हारव सोय भरंत।
खरोदक कुंड भरयौ विच-खार, परै विच पापिन कौ परिवार ।।१५४०

T　CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तपैं तिह वीच अनेकन ताप, अगाधहु कीचड़ वोवत आप ।
असंखहु काक करै तहाँ ओट, चलै तव चाँचन मारत चोट ।।१५४१
रुके मुख-स्वास सुके अधुराँन, पुकारत पापीय प्रीड़त प्राँन ।
मलीनस और जहाँ मल-कुंड, झँझोरत पापिन कौं क्रमी-झुंड ।।१५४२
गहै मल नाक मही दुरगंध, धरै तन मैल भरै दुख धंध ।
जहाँ इक मूत्रकौ कुंड जरूर, भरयौ स्रव कीटन सौं भरपूर ।।१५४३
सलेखम-कुंड सलेखम संग, सलेखम कीट जुतै सरवंग ।
महागर-कुंड भरयौ गर मध्य, सहै तँह पापीय भोग सनध्य ।।१५४४
भरे विष काटत भींम-भुजंग, अघीजन चाटत फाटत अंग ।
कली कल कीचर दूप का कुंड, प्रपूरत तापिन पापिन-पिंड ।।१५४५
वसा रस-कुंड वसा रस वात, अघीजन डारत होत उदास ।
कसारकै आकृत बीरज-कुंड, भखै जहाँ पापीय होवत भंड ।।१५४६
जहाँ फिर लोहुव-कुंड जवूंन, धृवै धर धार कपै सिर धूँन ।
जिहीं विच आँसुन कौ जल जात, अकारह दीरघका अर वात ।।१५४७
सरीर के धोवन कुंड असुद्ध, रह्यौ सोई पातकी जीवन रुद्ध ।
भरयौ क्रमी कीटन सौं भरपूर, कलेसीय जावत जीव करूर ।।१५४८
मिल्यौ कुंड जाही सौं कर्नकौ मैल, गहै अततािईय ताही की गैल ।
सुपै अर वात हू अस्थि सनेह, गहै केउ पातकी घातकी गेह ।।१५४९
समीप ही माँस कौ येक सँकेत, परे बहु-पापीय रूप परेत ।
भखै बहु माँस ही माँस कौ भोग, जुरैं बहु माँस कौं माँस ही जोग ।।१५५०
सुताकँह बेचत ह्वै सोई संग, पती जत हिंसक ही परसंग ।
नखी-कुंड केसहु कुंड नजीक, सलोमस हाड़न कुंड सरीक ।।१५५१
इहै अर वात हू च्यार इकंत, वड़े लघु येक प्रमाँन वृतंत ।
प्रतप्तहु तांम्र कौ कुंड परेख, वनी प्रतिकाय सु तांम्र विसेख ।।१५५२
अघी चपटावत लावत ओघ, महाँदुख पावत ताव अमोघ ।
अंगारन झारन लोह अगार, अकारहु निस्तुल भीत अपार ।।१५५३
घरी प्रतिकाय अनेकन घाट, अघी लपटावत अंग उचाट ।
भयंकर मेरेही किंकर भेट, फलंगन मार लगावत फेट ।।१५५४
सुरा-कुंड चर्महु-कुंड समाँन, वने दोऊ वापीय येक विधाँन ।
जिहीं विच दुःख अनेकन जात, घलै अय दंडन की जम घात ।।१५५५

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

निपाँनहू आक्रत कंटक नर्क, कसै जमदूर अघी उतकर्ष ।
तपे तरु सैमर कंटक तीख, परोवत पापिन-अंग परेख ।।१५५६
खसोटत टेढहु-मेढहु खाल, वहै जम दंड तँही विकराल ।
प्रकंपत पावन हाथ पसार, कट्टकत कंटक लागत लार ।।१५५७
विषोदक-कुंड भरचौ विष वार, झगै गर तक्षक-सो विष झार ।
करैं तिंह पापीय पाँन कितेक, महा कटु बोलत हाय मरेक ।।१५५८
प्रतप्तहु तेल भरचौ उदपाँन, प्रपोटन छोटन मोट उफाँन ।
परै विच पापीय अंतर पैठ, उकालतै ऊपर आवत ऐठ ।।१५५९
दएँ अय दंडन कौं जमदूत, पिता कोऊ मात पुकारत पूत ।
सकुंतहु-कुंड है जाहि ससींम, भरे तहाँ कूँत सतिछ्छन भींम ।।१५६०
फसै विच खालरी होवत फाँक, उघारत मोच अट्टकत आँख ।
कुसादय-आक्रत है क्रमी-कुंड, महाँ विकराल जँही रद मंड ।।१५६१
सपाटन काटन जात सरीर, पुकारत पापीय आरत पीर ।
जहाँ अहि-कुंड विसालहु जाग, निरंतर वीच भयंकर नाग ।।१५६२
जरावत पापिन कौं विषज्वाल, खसोटत आँतन दाँतन खाल ।
फनालीय फूँकन की लहि फेट, लगावत वक्र भयाँनक लेट ।।१५६३
मसा-कुंड वीच मसाँन समूह, ज्यँुही कुंड दंसक दंसन जूह ।
भरी मधुमख्खीय गर्ल गँभीर, सँकीरन आक्रत कुंड सधीर ।।१५६४
विरोधीय डारत हाथन वाँध, समेटकै पावन आँगुरी साँध ।
भयंकर सद्द रहे भननाय, गहै रसतेज अघी गँननाय ।।१५६५
खँनै कँहु अंग मरोरकै खाज, सँभारत मारत दूत-सँमाज ।
करै दुई वृश्चक वज्रहु कुंड, मँडे जिह आक्रत वापीय मंड ।।१५६६
जथा जिह नाँम तथा दुख जोग, लहै तहाँ वेदना पातकी लोग ।
मिलै जहाँ वृश्चक डंकन मार, असंखन लागत जेम अँगार ।।१५६७
छिदै तन छादवी वज्र चलंत, घटा जिम भादवी सद्द घुरंत ।
अगै सर-कुंड सु सूल अगार, धकै खग-कुंडहु तिछ्छन धार ।।१५६८
भयंकर दीरघका जिह भाँत, परोवत पापीय पाँतन पाँत ।
गंभीरह ह्रस्व निपाँन सुगोल, बहू फल तप्त भरचौ जल बोल ।।१५६९
भरचौ अंधकार महीं भरपूर, करैं तहाँ पातकी वास करूर ।
निरालय नीर भरचौ विच नक्र, विरूप ही वापीय आक्रत वक्र ।।१५७०

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

उरावत खावत पातकी दंत, पलोटत पूछ सिखा झर पंत।
करोरन वायस कुंडमै काग, लगावत चाँचन चोटन लाग ।।१५७१
खँखारव वक्षर पापीय खात, पिपासत मेहन नीर पिवान।
लघू अरवात मँथाँनन लाग, मँथाँनहु कीट भरे दुख माग ।।१५७२
महाँलघू च्यारसौ हाथकै मैल, झट्टकत दूत अघी-जन झेल।
इतौ कुंड बीज वन्यौ अंगवार, वसै जहाँ बीज ही कीट विकार ।।१५७३
वड़ौ कुंड तप्त पखाँन विसेस, दुरंतर तीक्ष पखाँनहु देस।
वड़ौ इक कोस वन्यौ अधवोच, करचौ मुख लारन कौ भर कीच ।।१५७४
मसीकुंड सत्त धनंक प्रमाँन, प्रतप्तत पव्वय जेम पखाँन।
खटी रस पूरन चूरन कुंड, मडी इक कोस मै जाही की मंड ।।१५७५
कुलाल की चाक के आकृत कुंड, मही कर पत्रक सोरह मंड।
भ्रमै जहाँ पातकी होवत भेट, फरावत चाँबरी कौं फरफेट ।।१५७६
वन्यौ जहाँ कुंडहू वक्र स वक्र, निरे सिल जेम खपाटीय नक्र।
किते विच क्रूरम क्रूरमकुंड, झँझोरत पातकी झुंडन-झुड़ ।।१५७७
ज्वलाकुंड कोसमै आग की ज्वाल, विगोवत पापिन कौं विकराल।
करचौ इक कोसमे मस्म कौ कुंड, भरचौ सोई राख सौं पातकी भंड ।।१५७८
वन्यौ इक दग्ध जहाँ अरवात, जरै विच पापीय आवत जात।
प्रसारन जोजन येक प्रमाँन, महाँ सोई दारुन कारन माँन ।।१५७९
सुचीमुख-कुंड भयाँनक सोय, पलावत सूचीय पाव परोय।
वन्यौ इक जोजन कै विसतार, धरै असिपत्र सु तिछछन धार ।।१५८०
जुरे जहाँ ताड़ के पत्र जितेक, अकारन तिछ्छन येकतै येक।
कुमारग कर्कर है अध-कोस, भगावत जावत दूत भरोस ।।१५८१
खसोटत कुंड जँहाँ खुरसाँन, पूरौ सोई येक सौं चाप प्रमाँन।
गोकामुख क्रूपकै आकृत गोल, परी धँनु वीस जिहीं विच पोल ।।१५८२
गोकामुख कीट सु काटत गात, विकूँनका चाटत त्याँ विललात।
नक्रामुख आकृत नर्क निकेत, दिखांईय जंभक मल्लक देत ।।१५८३
चँहू-दिस सोरह-सोरह चाप, परै जिह जोग करे सोइ पाप।
जहाँ गजदंसक कुंड जु दौज, हजारन दंतस तिछ्छन हौज ।।१५८४
विसालय कुंभीयपाक विसेख, पुरो इक जोजन ज्याँ परवेख।
ऊँडौ इक लाख सु मुष्ट अछेह, गुफा केऊ वीच संकीरन ग्रेह ।।१५८५

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

केऊ विच तांम्र के तेल के कुंड, तरै विच लोह की तप्त तरंड ।
भयंकर काल के चक्र भ्रमाय, खिसै जिह पापीय टक्कर खाय ।।१५८६

अमूभत केतक वीच अँधेर, भुलावत भल्लन सौं भटभेर ।
जँहाँ क्रमी केक भयंकर जात, खसोटत खालरी खेंचत खात ।।१५८७

मँडै जमदूतहू मूसल-मार, परै सिर मुद्गर-मार अपार ।
पुलं जव मारग पावत पाय, अचेतन होय परै अकुलाय ।।१५८८

कोऊ तिह कालही सूत्र कहंत, घँने विच पापीय जीव घिरंत ।
पुकारत नर्कमै नर्क-प्रधाँन, निपाँन सु कुंभीयपाक निधाँन ।।१५८९

मच्छोदक छाँनवै हाथ की मंड, चहूँ-दिस तप्त भरयौ जल चंड ।
तिही कोऊ नाँम कहै अवटोद, करै अघी वास जहाँ चँहु-कोद ।।१५९०

सबै तिह च्यारसै हाथ की सींम, भरे जल-जंतु अनंतन भींम ।
जरादिक रोग भरे जल जोग, लहै तिह नर्कमै जावत लोग ।।१५९१

जहाँ क्रमी कंतुक कुंड जगाह, वँही अरितुंदक है अवगाह ।
सोई रुज-कारक मर्मसथाँन, पिरावत पातकी लोगन प्राँन ।।१५९२

वन्यौ तिह च्यारसै हाथकौ व्यास, अमूँभत होवत चित्त उदास ।
कठोर सु पांसुव भक्षन-कुंड, इला वसु च्थारसै हाथ की ऊंड ।।१५९३

पूरौ इक कोसकौ वेष्टन पास, फिरावत पातकी तामह फास ।
सतिछ्छन सूलीय प्रोत समाँन, इहै असी हाथही कै अनुमाँन ।।१५९४

प्रकंपन कुंड सु ठंड प्रधाँन, पूरौ अधकोस कौ जाहि प्रमाँन ।
वँन्यौ उलका-मुख कुंड विरूप, करयौ असी हाथ कौ आकृत कूँप ।।१५९५

अँधारह कुंड भरयौ अँधीयार, सबै तिह च्यारसै हाथ सुमार ।
जहाँ इक सोखन कुंड जबूँन, कँहै तिह च्यारसौ मर्द की कूँन ।।१५९६

कलोकख कुंडमै चर्मक खाय, परैं विच पातकी जीव पलाय ।
लगं तिह च्यारसौ हाथ की लंब, अपावन वीच भरयौ जिही अंबु ।।१५९७

चँहूँ-दिस अष्ट रू हाथ चलीस, सोई प्रसफोटन रूप सरीर ।
ज्वलामुख कुंडमै जागत ज्वाल, वड़ौ असी हाथकौ ऊँड विचाल ।।१५९८

धुँम्राधृ हू कुंडमै धूँम धुकाय, सोई अर्धवापीय सौं सरसाय ।
विलेसय वेष्टन सौं धनु व्याध, निरंतर नारकी-कुंड निवास ।।१५९९

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दोहा

कथा पाप नर्कन कही, सुन सावंत्री स्रांन।
पांच देव पूजन प्रभा, जाँनी उत्तम जांन ।।१६००
जँमराजा सौं प्रस्न जव, करचौ उभय कर जोर।
मै तीय जाती ग्रग्य मति, बाला वेस वहोर ।।१६०१
इतनी तौ जाँनत अवस, सकल वात कौ सार।
देही इह पितु-मात दत, उभय-पक्ष उपगार ।।१६०२
पालन हित तऊ मात पख, प्यार अधिक अरु पोख।
भक्ती माता कौ भजन, दरसत है निर्दोख ।।१६०३
प्रथम मात-पूजन प्रथा, सकल कहहु समुझाय।
अधम पुरखहू उद्धरै, जर सौं पातक जाय ।।१६०४
सूक्षम रूपहु ग्याँन सव, समुझावहु ततसार।
हूँ मेरैं निरवाह-हित, वाँचत ग्याँन विचार ।।१६०५
पिता इधक जग-जीव प्रत, पितु तैं मात पुनींत।
मात इधक गरू माँनीयै, उत्तँम ग्याँन अधीत ।।१६०६
मोकौं गरू तुमही मिले, समवरती सुग्याँन।
पूजन माता कौ प्रथम, वरनहु सकल विधाँन ।।१६०७

छंद पद्धरी

सावंत्री सुनकै समाचार, बोले सु धर्मराजा विचार।
वरदाँन प्रथम दीनौ वसेस, अभिलाख पूर्न ह्वैहै असेस ।।१६०८
परतीत सक्ति की भक्ति पाय, सुख-लाभ लहहु सब विध सुभाय।
गुन कीर्तन दैवी चहत ग्यात, कल्याँन हेत हित करामात ।।१६०९
वर्नना मात कीर्तन विभाग, नहि कहन सकत जिह सेसनाग।
मुख पाँच सिंभु वर्नना मात, कहने की नाँहिन करामात ।।१६१०
वेदहू च्यार मुख सौं विरंच, सव देवी गुन नही करत संच।
संसार पालना करत सोय, गुन देवी हरि नही सकै गोय ।।१६११
माया अगाध है चिरत मात, षट-आँनन जाँनत नहिन ख्यात।
गरू जोगिंद्रन के श्रीगँनेस, वाँनी नहीं जानत गुन विसेस ।।१६१२

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

नही सनत्कुमार सनातनाद, विरचत देवी कौ नही विवाद।
रवि कपल मरीचादिक रहंस, प्रभुता न मात जाँनत प्रसंस ।।१६१३
देवी पद-पंकज वंद देव, सिव वृह्मा विस्नू करत सेव।
भक्ती कौं लहिकै सक्ति भाव, प्रगटत सहजै ही गुन प्रभाव ।।१६१४
निर्वेद भाव विन भक्ति नेम, पद-पंकज मात न भरत पेम।
जगमै सुर-असुर जिते जीव, सबहिन सौं अधके विध सदीव ।।१६१५
ग्याँनी गनेस तिनसौं गरीय, कह्योयैं सिव तिनसौं कारनीय।
श्रीक्रस्न रास-मंडल सुथाँन, गोलोक-वीच सिव कह्यौ ग्याँन ।।१६१६
सिव कह्यौ धर्म सौं धर्म सोय, जगचक्षु दयौ सोई धर्म जोय।
हमरे पितु हमसौं कह्यौ हाल, वन रह्यौ आद सौं हीय विचाल ।।१६१७
जमपद हम पाछै लयौ जास, वँह समय हमय विचरत उदास।
गहि रहे आज लौं ग्याँन गूढ, परकास करत तुहि मति पडूढ ।।१६१८
भगवतो चरित जाँनै न भेव, देवी अदेव देवाध देव।
आकास प्रमाँनन लहत आप, मुरजाद कहाँ लग कहा माप ।।१५१९
जीवकौं न जाँनत जीव जेम, नरहू सुरहू नही गहत नेम।
माया वसिष्ट पर्मात्म मूल, कारन के कारन साँनुकूल ।।१६२०
सर्बाद्य सर्ववेता सरूप, अनवद्य अखंडत मति अनूँप।
निरलिप्त निरंजन निराकार, विभु-रूप निरामय र्निविकार ।।१६२१
माया वसिष्ट प्रक्रत मिलाप, उतपंन्न आपसौं करत आप।
उपजत जिह प्राक्रत कहत एह, द्रग गोचर जेती होत देह ।।१६२२
परमातम प्रक्रती ओत-प्रोत, ज्वल सक्त न न्यारी ज्वाल-जोत।
माया पर्मातम सक्ति माँन, भाँन की प्रभा जिम संग भाँन ।।१६२३
है सोय अरूपा रूप होय, सुख देत भाव भक्तिन सकोय।
गोपाल सुंदरी प्रगट ग्यात, ऊतपंन्न रूप कीय अक्रसमात ।।१६२४
कमनीय मेघसम स्याँम काय, पीतांबर आभा तड़त पाय।
मुसकात मनोहर मंद-मंद, चिब देत वदन जँनु सरद-चंद ।।१६२५
कंदर्प कोट वपु वय किसौर, भ्राजत चख जैसै कमल भौर।
आभूषन नाना पहर अंग, सिंघासन राधा वसत संग ।।१६२६

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गोपीगन निरखत चिब गुपाल, विरजेसु रास-मंडल विचाल।
कस्तूरी कुंकम सम करेह, भाल मैं समालंभन[1] भरेह ।।१६२७
मालती माल चंमक मिलाय, मंजर तुलसी के मिले माहि।
वक्षस्थल कौस्तुकमनि वसंत, लरि मुक्ता-माला तर लसंत ।।१६२८
कैयूर भुजा कंकन कलाच, अभिरांम मूंदरी साखआच।
द्वै-भुजा सुसोभत चंप-डार, नूंपर पद वाजत झनंकार ।।१६२९
ध्यावत सु क्रस्न कौ भक्त ध्यांन, श्रीक्रस्न पर्म भक्ती सुजांन।
सासन सु क्रस्न विध जग स्रंजत, श्रीविस्नु पालना अनुसरंत ।।१६३०
कालाग्न रुद्र संघार-कार, वस जास सीघ्रगांमी वयार।
सिव मृत्युंजय भये क्रपा साध, रवि तपत ताप तिन ही अराध ।।१६३१
वरखा वरखावत वृखा वार, छागर्थं[2] पदारथ करत छार।
सीतलता धारत जल सवाद, दिगपाल करत रक्षा दिगाद ।।१६३२
गृह-गमन करत है सीस गोम, भय लाय ओसधी भरत भोम।
कुसरास वायु धारत करंत, कुसहू कूरम कौ अनुक्रमंत ।।१६३३
कूरम अनंत की धरत काय, प्रथवी अनंत ध्रुव वास पाय।
सागर नग धारत प्रथी सीस, सोइ क्षमा-रूप प्रथवी सरीस ।।१६३४
जंन्मत है प्रांनी वीच जास, वस काल होत तापै विनास।
जुग इकहंतर जब देव जात, निपजाय इंद्र होवत निपात ।।१६३५
ऊपजत खपत अठविंस इंद्र, अह-निसा होत वेधा अतिंद्र।
तीनसै साठ दिन रात तेम, निरनै परिवछ्छर इहीं नेम ।।१६३६
ऊंमर परिवछ्छर सत्त येक, वृह्मा कों जांनत जुत विवेक।
उघरत है हरि की जबही अंख, उपजत अज प्रांनीगन असंख ।।१६३७
मींचत चख हौवत जगत मीच, विध आद होत लय प्रलय-वीच।
प्राक्रतक प्रलय जगजीव पाय, श्रीक्रस्न नाभ जावत समाय ।।१६३८
विस्नू जो खीर-सागर विचाल, बैकूंठ चतुर्भुज उर विसाल।
श्रीक्रस्न वांम पारस समाय, ग्यारमौं रूप संकर गहाय ।।१६३९
माया हरि दुर्गा महंमाय, सक्तियाँ जाय तामै समाय।
विच क्रस्न बुद्धि दुर्गा वसंत, उरमै सकंध ह्वै विलय अंत ।।१६४०

---

१ तिलक। २ अग्नि।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बाहु मै गनपती करत वास, अग्र स्वर गन के अनायास।
सक्तीयाँ लक्ष्मी अंस सोय. हित पाय लक्ष्मी लीन होय ।।१६४१
लक्ष्मी राधका होत लीन, पुन गोपीसुर विनता प्रवीन।
प्राँन की अधीस्वरी क्रस्न प्राँन, सोइ होत लीन प्राँनहि सुथाँन ।।१६४२
सावंत्री सास्त्रहु वेद सोय, हीय वीच सरस्वती लीन होय।
सरस्वती क्रस्न की जहि संग, पुन अस्थिर होवत लहि प्रसंग ।।१६४३
गोलोक-निवासी सकल गोप, रोमनमै आपौ रहत रोप।
प्राँनींन प्राँन श्रीक्रस्न प्राँन, थित होत पवन सब थाँन-थाँन ।।१६४४
उदराग्न क्रस्न मै अगन आय, थित होत सीमट इक रूप थाय।
जलमाल होत लय अग्र जीह, दरसत नही जौलौं रात-दीह ।।१६४५
वैस्नव पद-पंकज सरन वास, नित रहत सुखी अवचल निवास।
वैराट महाँवैराट वीच, निवसत सब दीसत ऊँच-नींच ।।१६४६
वैराट महा निज वपु विचाल, क्रस्नमै होत लय जीत काल।
रोमन के छिद्रन क्रस्न-रूप, जहाँ-तहाँ विस्व भर रही जूप ।।१६४७
उनमीलन नैनन क्रस्न आप, सब सृष्ट विलावत लहि सँताप।
जब नैन उघारत क्रस्न जोय, संसार होत परगट सकोय ।।१६४८
श्रीक्रस्न सँवारत पलक साथ, निज सृष्ट वनावत लोकनाथ।
वीतत सत वछछर विध वसेस, इह नेम समय जाँनहु असेस ।।१६४९
विध सृष्ट प्रलय की इहीं वात, खिती-मंडल परगट रही ख्यात।
श्रीक्रस्न मूल प्रक्रत समाय, सो परासक्ति जाँनहु सुभाय ।।१६५०
पर-पुरख वृह्म मै ओतपोत, अद्वैत-रूप होवत उदोत।
तिह मूल प्रक्रत के गुन तितेक, येक सौ अधक पुन गनहु येक ।।१६५१
च्यारहू मुक्ति है नाँम च्यार, वरनत प्रकार च्यारहु विचार।
सालोकदायनी प्रथम सिद्ध, सारूपदाय दूजी सनिद्ध ।।१६५२
सामीपदाय तीजी सँभार, निर्वांनदाय चौथी निहार।
उर करत भक्त सेवा उछाह, च्यारहू मुक्त नही करत चाह ।।१६५३
सेवना रहित है मुक्त सोय, हित पाव भक्त नही जुक्त होय।
भक्ती रू मुक्त है इही भेद, वरनत भक्ती कौं इधक वेद ।।१६५४
नि:सेख कहत खंडन निदाँन, सो सुन लीजै हुय सावधाँन।
कोने जो कर्मन जिते काय, जो भोगै विन नही छूट जाय ।।१६५५

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

विभु ईस्वर सेवा करत बाध, अंतपै जीव मेटत उपाध।
गहि सारभूत इह वछ्छ ग्याँन, ध्रुव ईस्वर सेवा धरहु ध्यांन ।।१६५६
निर्विघ्न इहै उर गहहु नेम, परमातम सेवा आँन पेम।
निज पति लै जावहु निज निवास, हे वछ्छे हीय धारै हुलास ।।१६५७
सतवाँन जीवकै गह्यौ संग, उठ सावंत्री चाली उमंग।
जव जमराजा इह कह्यौ जास, उठ वछ्छे निज जावहु अवास ।।१६५८
सावंत्री पति लै आप संग, अपने गृह आई हीय उमंग।
पति पिता माय कै लगी पाय, आसिक लीय अपने ग्रेह आय ।।१६५९
सुख लाख वरख भोग्यौ सु देह, निज पति सौं वाढयौ इधक नेह।
सत पुत्र जने पतिवृत्त साध, ईस्वर की भक्ती हीय अराध ।।१६६०
वेदन की माता सोई वखाँन, धारै चरित्र उर पुंन्य धाँम।
करमन विपाक की कथा कर्म, धारना वढावत जथा-धर्म ।।१६६१

दोहा

चित सुध सावंत्री-चरित, कथा सुनै जो काँन।
धन वाढै वाढै धरम, उर मेटै अग्याँन ।।१६६२
वृत ताकौ चवधा वरख, करै भक्ति जुत कोय।
जेष्ट चतुर्दसी सुक्ल जब, हित क्रम वाटी होय ।।१६६३

छंद द्वै-अख्खरी

सावंत्री कौ चिरत सुहावन, नारद सौं भाख्यौ नाराँयन।
मूल प्रकृत गायत्री माता, दीय उपदेस समन गुन दाता ।।१६६४
सो आख्याँन प्रगट भयौ सारै, अकरम सुकरम मति अनुसारै।
नाराँयन पूछ्यौ पुन नारद, विवध लक्षमी चिरत विसारद ।।१६६५
किह पूजी जिह प्रथम कारना, ध्यान आकार-प्रकार धारना।
कीतर्न गुन ताके सब कहीयै, लाभ सकल जग तासौं लहीयै ।।१६६६
बोले जब नाराँयन बाँनी, मुनीयै मुनि नारद सुग्याँनी।
करयौ रास गोलोक कनाई[1] आद सृष्ट हित जिह अंगनाई ।।१६६७

१ कृष्ण।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वाँम अंस सौं उपजी वाँमा, इक देवो जिह वपु अभिराँमा।
द्वादस वरख तिही वय दीपत, जिह भुख सरद-चंद-दुति जीपत ।।१६६८
चंपक वरन जिही प्रतिछाया, नैन कमल मध्याँन निकाया।
मंद-मंद मुसकात मनोहर, निरख-निरख मुख क्रस्न निरंतर ।।१६६९
प्रभु की इछया जिह पहचाँनी, दोय सरूप रचे सुखदाँनी।
रमाँ नाँम वपु वाँम रचाई, राधा दक्षन-अंग रहाई ।।१६७०
क्रस्न-सरूप दोय जब कीने, भुजा च्यार द्वै-भुज रंग भीने।
राधा द्वभुज-रूप संग रही, च्यारभुजा लिछमी जब चही ।।१६७१
सवही जग लिछमी दीय सोभा, लखत जिही सुर नर मुन लोभा।
राधा-हरि गोलोक रहाई, गोपी-गोपन संग गहाई ।।१६७२
च्यारभुजा वैकूँठ गये चल, बहुत पारषद साथ गह्यौ बल।
द्वभुज च्यारभुज रूप दुनोई, सम ऐंस्वर्ज जाँनीयै सोई ।।१६७३
रमाँ चतुर्भुज की महाँराँनी, पोखत सुख सौं सुर-नर प्राँनी।
प्रभू चतुर्भुज जग-प्रतपालत, लिछमी ज्युँही जगतमै लालत ।।१७७४
स्वर्ग माँहि जाही की संपत, ज्युँही पताल नाग जस जंपत।
राज-लक्षमी पोखत राजा, सुवस वसत ग्रेहीन समाजा ।।१६७५
गऊवर्ग मै सुरभी गावत, ज्याग दक्षना संग जनावत।
सोभा विधु-मंडलमै सोई, जोत प्रभा रवि-मंडल जोई ।।१६७६
जल-थल पुस्पवाटका जेते, तार हाटका भूखन तेते।
रतन अनूँपम दुति जिह रूरी, प्रभुता जहाँ लक्षमी पूरी ।।१६७७
मेघ नवीन नखत की माला, वसत लक्षमी-रूप विचाला।
वसत जहाँ नहि लिखमी वासा, वँह थाँनक्र नित रहत उदासा ।।१६७८
महालक्षमी है हरि-माया, हित कर पूजी जिह हरिराया।
गृह वयकूँठ खीरसागर गृहि, लिछमी-पूजा आप संग लहि ।।१६७९
विध पूजो निज धाँम विचाला, भावजुक्त पूजी विधुभाला।
स्वायंभू मनु आदक सारे, अपने-अपने गृह अवधारे ।।१६८०
रिखी मुनी पूजत माहाराजा, किंन्नर गंध्रव पूरन काजा।
सुर नर जाकी करत जु सेवा, भोगत सुख संपत लहि भेवा ।।१६८१
अष्टमि सुक्ला भाद्रव आवै, पूजन तथा पक्ष प्रति पावै।
पोस चैत्र भादव जु पुनीता, पूजत लिछमी मात प्रवीता ।।१३८२

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वर्ष-अंत संक्रांत जु वरतै, करै सुमंगल पूजा करतै।
नृप केदार जहीं पूजी नल, बहुर सुवल उत्ताँनपाद वल ।।१६८३
नील इंद्र कस्यप नृप नाँमी, कर्दम प्रीयवृत सूर्ज संकाँमी।
जम कुवेर पूजा जिह जाँनी, महालक्षमी वरुनहु माँनी ।।१६८४
अगन चंद तिह करैं जु आसा, प्रभा वढै अरु वढै प्रकासा।
देवी जग ऐस्वर्जही दाता, महालक्षमी सब जग-माता ।।१६८५
स्रवन सुनहु तिह चिरत सुहावन, परम पवित्र करन जग पावन।
इंद्र महावन मैं येकंतर, करत विहार रहे विच कंतर ।।१६८६
विस्नुपुरी सौं मुनि दुरवासा, विच आये जहाँ इदर-वासा।
जावत थे कैलास जहाँ तैं, करी भेट मिल इंद्र कहाँ तै ।।१६८७
लाख मंडली लिख तिह लारा, मघवा अटके विपन मझारा।
इंद्र प्रनाँम कर्यौ मुनि आगैं, लीय आसिख मुनि पायन लागैं ।।१६८८
दुरवासा राजी हुय देखा, विस्नु दयौ दीय फूल विसेखा।
पारजात कौ पुस्प पवित्रा, ताकौं इंद्र लयौ कर तत्रा ।।१६८९
इंद्र मदोनमत्त अभिमाँनी, प्रभुता प्रभु की नहीं पिछाँनी।
हाथी सिर धर दीनौ हाथन, जाकौ भयौ अकारज जातन ।।१६९०
तेज वढयौ हाथी गुन तातैं, विस्नु-समाँन भयौ विख्यातैं।
तजकै इंद्र गयौ भज तेऊ, वीच सघन वनवास वहेऊ ।।१६९१
तेजह सत लख त्रसत भयौ तन, विगत मसत सोई वसत रहे वन।
कोप मुनी दुर्वासा कीनौ, देवपती कौं स्राप जु दीनौ ।।१६९२
मूढमती मघवा अभिमाँनी, जगंनाथ प्रभुता नही जाँनी।
हरिप्रसाद तै दीनौ हस्ती, मन-प्रमाद गहि लीनौ मस्ती ।।१६९३
घाली तै अपनी मति घातन, हरि-प्रसाद कौं त्याग्यौ हाथन।
जाँनत नहि महिमाँ तूँ जाकी, बुद्ध गई कछु रही न बाँकी ।।१६९४
हरि-प्रसाद की सुनहु हकीकत, ताकौ मै वरनत सबही तत।
गहै नही नइवेद अग्याँनी, होय वृह्म-हथ्या वित-हाँनी ।।१६९५
बुद्धि नष्ट ह्वै जात वहोरी, करै जतन जो रीत करोरी।
लै नैइवेद विस्नुपद लागै, भीत पाप दारिद तिह भागै ।।१६९६
पुरखा सत ताके गत पावै, जाकी सकल वेदना जावै।
जीवन-मुक्ति होय चिरजीवा, सुख पावत धन धाँन सदीवा ।।१६९७

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पूजत विस्नु होत तन-पावन, सपरस पावन करत सुहावन।
धारत तीरथ तिह पद-धूरी, महाँपवित्र जाँन सुख मूरी ।।१६८९
प्रथवी तिंह पद होत पुनीता, जावत विस्नुपुरी जन जीता।
अंन्न भखत पुश्चली अनारी, निसंतान विधवा गृह-नारी ।।१६९९
कुट्टन वाँम काँमुकी केरा, होवत दूत लगावत हेरा।
कंन्या वेचत अपनी कोई, सूद्रन स्राध करावत सोई ।।१७००
भोग विस्नु विन अन जोई भख्खत, चढचौ लिंग सिव भोजन चख्खत।
सुद्रन जिग्य करावत सोऊ, कुल दुज अंन्न खावत जो कोऊ ।।१७०१
पंडा का अन कोऊ पावत, खल कृतघ्नी कौ अनहू खावत।
विप्र होयकै लादत वैलन, गृही वेद-विध चलत न गैलन ।।१७०२
वृषली पतकौ अंन्न विगोवत भड़ुवाहू कौ अंन्न जु भोगत।
मंत्रदाय गरू कौं नही मानै, मित्र सुजन उपगार न साँनै ।।१७०३
गुर्बनी-गमन अगंम्यागाँमी, होत सनांतन धनी हराँमी।
मुरदा फूकत विप्र मसाँनन, साखो दै झूंटे अवसाँनन ।।१७०४
इनके अंन्न भखत अपवित्रा, सासन वेद अघी सरबत्रा।
पै हरि कौ नैईवेद जु पावै, विगत पाप हुय ताप विलावै ।।१७०५

दोहा

जाँन अजाँनहु भखत जो, परमेस्वर-परसाद।
कंटत जीव के दुख किते, पातक मिटत प्रमाद ।।१७०६
बोले दुरवासा वचन, इंद्र सुनहु अग्याँन।
तो कौं तज विस्नू तीया, पदमा करिह प्रयाँन ।।१७०७

छंद मौतीदाँम

कुसारनि वोल उठे कर कोह, दुरंतर आँन हृदै-विच द्रोह।
महाँ मतिमंद अहो मघवाँन, करी परसाद महाप्रभु काँन ।।१७०८
बुलायकै लीन विपत्त बलाय, रमाँ रम जावहि ग्रेह रिसाय।
भ्रमौ तुम लेत दसहु-दिस भीख, इला-विच क्यौ न क्रमौ अंतरीख ।।१७०९
हमै जन जाँनत ना हरिराय, निरंतर चालत मारग न्याय।
करै कोऊ आप मतै करनीन, लहै फलै जैसोइ लीन अलीन ।।१७१०

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सुकर्म न देख अकर्मन साच, विचारकै बोलत है मुख वाच ।
लगै हम नाहिन पाप लिगार, अहो उठ जावत रुद्र अगार ।।१७११
सुने मुनिराज के बायक स्रौंन, मुखा सुरराज गही कछु मौंन ।
कहे मुनिराज कौं फेर कथंन्न, जनावहु मोही कौं येक जतंन्न ।।१७१२
कटै विपता इह केतक काल, कछू तत-ग्यॉन कौं देहु क्रपाल ।
जहाँ मुनिराज कह्यौ सुन जास, अघो[1] ! मघवाँन न होउ उदास ।।१७१३
गहौ उर-अंतर आतम-ग्यॉन, विचारहु ताहीकौं साँझ विहॉन ।
जरा मृतु जन्म मिलै क्रम-जोग, भ्रमै जन जोनीय भोगत भोग ।।१७१४
मिलै जब संपत होत मदंध, विखै सुख-सेवन बाँधत बंध ।
इही अँधियार गनौ हीय अंख, उठावत कल्पना-जाल असंख ।।१७१५
जुरै नही मुक्तिकौ मारग जीव, सुखी कहुँ होत दुखी तज सीव ।
विहव्वल होय फिरै बिललात, विसारकै तत्त की सत्त की वात ।।१७१६
विखै सुख दोय प्रकार विचार, सुझावत ताहीकौ सार असार ।
पढे तऊ चित्त न ह्वै उपराँम, करै केऊ धंधन बंधन कॉम ।।१७१७
इहै जन राजसी मॉनहु अग्य, बिवेचना जाँनत है सरबग्य ।
विन सास्त्र न वेद पुरॉन, गहै नही सार असारहु ग्यॉन ।।१६१८
करै मन मॉनत जो कछु काज, सँपेखत नाँहि अकाज सुकाज ।
तमोगुनि जाँनहु ताही कौ तात, विचारहु सत्य हीयै-विच वात ।।१७१९
उभै षट कार सु सास्त्र अनंत, प्रवर्त के हेत निवर्त प्रजंत ।
गनावत ताहीय की गत गूढ, मिलै विखीया-रस होवत मूढ ।।१७२०
प्रसंन्नता प्रॉनी अजाँनीया पाहि, चहै मन-मॉनीय राह चलाहि ।
अली मकरंदकै लोभ अमूँझ, गहै मृतु पंकज मुंदत गूँझ ।।१७२१
प्रवर्त फे मारग लोभ कौं पाय, जरा मृतु प्रापत होवत जाय ।
कोऊ जन ऊँचि करै करनीन, लहै सत संगत ह्वै चित-लीन ।।१७२२
निवर्तकौ मारग लेत निहार, पहूँचत जो भवसागर-पार ।
अनेकन माँहि गनौ कोऊ येक, विषै तज पावत तत्त विवेक ।।१७२३
पुरंदर ग्यॉन गह्यौ मुनि पास, उठे वनवास सौं होय उदास ।
निहाँरीय आय पुरी निज नैन, अमंगल भोत भरे सब ऐंन ।।१७२४

---

[1] अहो, हे ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सुरालय लूटत दैत सहेव, डरावत भागत जावत देव ।
अरंण्य के जीव वसे केऊ आय, दिबांधक बोलत भीत दिखाय ।।१७२५
पुरंदर देख चल्यौ वन-पथ्थ, उदासीय छाय तजी सव अथ्थ ।
वसे कैऊ दीह महावन-वास, अँनूपम संपत की तज आस ।।१७२६
तहाँ चल आयेऊ गंग की तीर, निहारेऊ वीच खरे गरू नीर ।
धरै उर-अंतर वृंह्म कौ ध्यांन, निरंतर ग्याँनकै हेत निदाँन ।।१७२७
रह्यौ सुसताय जहाँ सुरराज, करै हीय चिंतना आपने काज ।
तजे गरू ध्याँन गये कढ तीर, नहायकै गंग के पावन नीर ।।१७२८
पुरंदर चित्र सिखंडज पाय, गहे पुन वेदना भाव गनाय ।
वखाँनेऊ स्राप कुसारनि वात, गई जिम संपत किन्नीय ग्यात ।।१७२९
भयौ अमरावती पत्तँन भंग, वखाँनींय जाँनीय जो कछु विंग ।
वृहस्पती ताहीय जाग विराज, संबोधन दैन लगे सुरराज ।।१७३०
विपत्त मैं धीरज कौ विसवास, अहो सुरराज न होउ उदास ।
फिरै रथ जेम रथांगहु फेर, घिरै तल-ऊपर पूठीय घेर ।।१७३१
ज्युँही सुख-दुःख हु आवत जात, विपत्त मै धीर नही विचलात ।
खिती मह उत्तम भारथ-खंड, मृतू तन कर्म अकर्मन मंड ।।१७३२
सुभासुभ काँम करै सोइ संग, अँनेकहु जन्मन भोगत अंग ।
कही इह वेद मै वात किसंन, सुनी विध होय जँही सुप्रसंन ।।१७३३
चलै जिम देह के साथही छाँहि, निरंतर न्यारीय होवत नाँहि ।
ज्युही क्रम चालत संगही जीव, सुभासुभ भोगत अंग सदीव ।।१७३४
भवंतर काल के देसकै भेद, सुपात्रहु सुःख कुपात्रहु खेद ।
प्रतै दिन देवत जो कछु पाय, भजै नित-कर्मन मै भरमाय ।।१७३५
जही फल काल सौं देस सौं जाँन, प्रकासत सास्त्रहु वेद-पुराँन ।
कुटंवीय[1] नाज निपावत क्यार, कँमाइय आस्नत लाभ करार ।।१७३६
विचारहु देसकौ भेद वसेस, इहै अभिरूपन कौ उपदेस ।
सुपात्रन दाँन कुपात्रन साथ, हितू जिह जाँनहु हाथ कौ हाथ ।।१७३७
जनावत कालकौ भेद जरूर, प्रकासत ताहि प्रसंगन पूर ।
दयै सम दीह मै जो कछु दाँन, मिलै सम ताहीय कौ फल माँन ।।१७३८

१ किसान ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अमावस पूरनमासीय आद, सक्रंतहु पुन्यतिथी सरवाद ।
मिलै तिह कोट-गुनौ सनमाँन, गनौ जिम सूरज चंद्र ग्रहाँन ।।१७३९
अखै नम तीज अखै अभिरांम, करै पुन होवत पूरन कांम ।
सिनांनहु दाँन गनौ पख सोय, कहै फल साखीय वेद सकोय ।।१७४०
जिते तन-धारक जीव जनाव, पितामह तिष्टत स्रष्ट पसाव ।
वनावत कर्म सौं काय वसेस, कहै विच वेद-पुराँन कवेस ।।१७४१
कुलालीय कुंभ उतारत केक, वनावत चक्र सौं दंड वसेक ।
ज्युही जग जाँनहु जीवन-जाल, कमाईकै कर्मन-आस्रत काल ।।१७०२
सोई वस ईसकै काल सदीव, जुगंतर आद उपाजत जीव ।
भजौ हीय-वीच निरंतर भाव, इतै पर कीजीयै फेर उपाव ।।१७४३
सँबोधन इंद्र करचौ लहि साथ, हले विध-लोक दिसी गृह हाथ ।
सबै सुर आय मिले तिह संग, वखाँनीयै ब्रह्मसभा-विच विंग ।।१७४४

दोहा

कर आदर करता कह्यौ, सुनहु वात सुरराज ।
तत पुत्रक मेरे तुमही, रिख वृसपत गुरुराज ।।१७४५
है मातामह दक्ष हितु, अदिति मात साध्वीय ।
परमभक्त कस्यप पिता, जाँनहु अपने जीय ।।१७४६
पिता पितामह मात-पख, अथवा गरू-पख आय ।
गुन-अवगुन वंसज गहत, निगम कहत इह न्याय ।।१७४७

छंद त्रोटक

परपाटी उभै पख की परतै, सुरराज सुनाय कही सरतै ।
हरि वेमुख होय गये हीयरा, जग-कारन भूल गये जीयरा ।१७४८
जढ-जंगम दीसत जीव जिते, इक व्यापक विस्नु अधार इते ।
जिन जोतही सौं सब जागत है, लहिकै क्रम कें भ्रम लागत है ।।१७४९
जिह जावतही तन जावत है, परतीत विना दुख पावत है ।
सव देहीय इंद्रीय की समुदा, जिनहू के विखै रस-भाव जुदा ।।१७५०
हम ईस कहै गहि भाव हितू, करता जग जाँन सुभाव क्रतू ।
सब प्राँन सरूपीय संकर है, वँह जीवन के निज अंकुर है ।।१७५१

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

प्रभु विस्नु की आतम है प्रक्रती, दुरगा बुध-रूपीय सक्ति दुती ।
कहीयै तिह नीदहु आदकला, वरतै वहुरै सकला विकला ।।१७५२
परमातम कौ प्रतिबिंब परै, जल डूवत जीवन आग जरै ।
भव-भोग सरूप सरीर भरा, विच स्वर्ग पताल धरा विचरा ।।१७५३
परआतम जावत देह परै, क्रम ग्याँनहू इंद्रीय संग करै ।
प्रतना जिम चालत संग पती, थिर होत जहाँ पत्वेक थिती ।।१७५४
हम सिंभु विराटहु भक्त हरी, कबहूँ न प्रसाद सौं काँन करी ।
मघवा तुम भूल गये मनमैं, तम लोचन छाय गयौ तनमैं ।।१७५५
हरिकौ परसाद दयौ हसती, मद-मोह कौं पाय गही मसती ।
अहंकार करचौ अपराध इतौ, छलकै बल होय अकाज छतौ ।।१७५६
गज ऊपर फूल धरचौ गहिकै, वन-वीच गयौ विमुहा वहिकै ।
पहिलै सुर ताहि कौं पूजहिगे, सविवेक सबै तत सूझहींगे ।।१७५७
लिछमी हरि की अरधंग लखौ, पर त्याग करचौ तुम जाहि पखौ ।
वयकूँठ सिधायकै सोय वसी, हरि के चरनांबुज मैं हुलसी ।।१७५८
गुरहू सुरहू हम संग गहौ, करुनानिध कौ वरतंत कहौ ।
कछु होय प्रसंन्न सलाह कहै, गन देवन चित्त मिलाय गहै ।।१७५९
करहै हित की सवही करनी, अभलाख फलै वित उधरनी ।
विध वात विचारकै देव वहे, गवने हरि-पत्तन वाट गहे ।।१७६०
मिल विस्नु कह्यौ सब देव मतौ, छल इंद्र भयौ सब कीन छतौ ।
जब देख जनार्दन देव जुरे, सुख-संपतहीन भये सगरे ।।१७६१
कहनै हरि लागेउ नीत कथा, जगनाथ की भक्त की रीत जथा ।
सुनीयै सब देवन साथ सही, अवसाँन है हाथकौ हाथ इही ।।१७६२
धुन संखन होवत जाहि धरा, तुलसीन सपल्लव पेढ तरा ।
गन विप्र जिमावत नाँहि गृही, नित सालगराँम की पुज्ज नही ।।१७६३
हरि-भक्तन निंदत नाँम हरी, विमुहाई गीयारस कौ वृतरी ।
जन्माष्टम राँमनमीं न जुरै, भख भोजन सौं सोउ पेट भरै ।।१७६४
जप मोरहु वेचकै लेत जमा, अरु फूकत जो मुर्दा अधमा ।
वित लेवत वेच सुता विपथी, अन आदर देत नही अतिथी ।।१७६५
पति पुस्चली होवत जो पुरखा, करता नही पापिन सौं कुरखा ।
दुज सूद्र करावत स्राद दसा, नित मादक-चीज कौ लेत नसा ।।१७६६

T　　CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कहूँ सूद्र रसोईय विप्र करै, वृखपै चढकै मगमै विहरै।
ज हिंसक क्रूर गहै न दया, जिग सूद्र करावत हेत जया ।।१७६७
विधवा अन खावत निंद वृती, नख खोदत भूँम अना निक्रती।
लिप भूँम केऊ पुन लावत है, वपु आपने हाथ वजावत है ।।१७६८
सूर्जोदय-वेलाय सोय रहै, लपकै भरपेट अहार लहै।
कोऊ मैथुन हू पुन दीह करै, नित साध तथा दुज कौं निदरै ।।१७६९
कर हासीय व्याज-सौं खेल कला, वपु सोवत नंग-धड़ंग बला।
कच तेल लगायन स्नाँन करै, विन मंत्र गरू गृहमै विचरै ।।१७७०
कुल हिंसक के गृह-सौं कमला, चल जावत ज्याँ तजकै चपला।
विपरीत जिती करनी वरनी, तहाँ नाँहि रहै निज मो तरुनी ।।१७७१
जहाँ कीरत ऋस्न की होत जथा, ऋतु कारज नीत पुराँन-कथा।
धुन झालर संख रू वेद-धुनी, मुद पावत छावत आय मुनी ।।१७७२
तुलसी-तरु सालगराँम तहाँ, जन पुज्ज प्रचारत ध्याँन जहाँ।
सिवलिंग की पूजन पूज सिवा, दुज आतिथ की जोऊ लेत दवा ।।१७७३
रिद्ध-सिद्ध वढावत वैठ रमाँ, जहाँ संपतहू सुख होत जमा।
हित पायकै देवन साथ हरी, कमला मत की बहु वात करी ।।१७७४
कँमलापति फेर कह्यौ कमला, कछु देवन कौं तुम देहु कला।
सुख सागर खीर की होय सुता, विबुधालय मेट करौ विपता ।।१७७५
हरि की रुच पाय रमाँ हरखी, प्रभु की परतीत अखी परखी।
पुन विस्नु कह्यौ सुरजेष्ट प्रतै, मथ खीर कौं काढहु आप मतै ।।१७७६
ऋभु जात कौं जोरकै देहुँ रमा, सुख पावहि होय सबै ससमा।
हित चाहि चले सुर-संग हरी, करतूत रमा वित पाय करी ।।१७७७
तट सागर खीर गये तबही, समले सुर-कारज कौं सबही।
मथ दंड करच मंदराचल कौं, कलसी कर कच्छप की किलकौं ।।१७७८
रसरी गहि सेस निबंध रही, मथनै दध लागेऊ हैत मही।
दिन अंतर पाय धनंतर से, निकरे पटु वैद निरंतर से ।।१७७९
सुख-रूप सुधा अस ऊँचस्रवा, निकरे केऊ रत्नहु और नवा।
जगस्वेत सुदर्सन चक्र गनौ, सरसाय रमा सुरराय सुनौ ।।१७८०
जलसाई जनार्दन देख जुरे, कमला विमला निज कंथ करे।
हरि-संग रमा लखकै हरखे, विबुधावली फूल घने वरखे ।।१७८१

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दोहा

दंपत मिल देवन दई, संपत सुख सरसाय।
दुरवासा रिखी स्राप दुख, मोचन कीनौ माय।।१७८२
दैतन-सौं लर देवता, संपत पाय समाज।
कछु दिन अंतर जुद्ध कर, राज लयौ सुरराज।।१७८३
पुन षोड़स परकार सौं, पूजे देवन पाय।
मात लक्षमी मोदमय, सुरग वसी सुरराय।।१७८४
ध्यांँन कीरतन धारना, मूल मंत्र तिह मूल।
ध्यावै तिह वाढै धरम, करमन के अनकूल।।१७८५

मंत्रः—श्री ह्रीं क्लीं मैङ्कमल वासिन्यै स्वाहा—इति।

जप कीनौ दस लक्ष जिह, उदध खीर तट इंद्र।
सपत पाये सुर सकल, ध्याये ध्यांँन धनिंद्र।।१७८६
दक्षप्रजापत भक्त द्रढ, मनु सावर्न महाँन।
नृप मंगल प्रीयवृत निपुन, ध्यावत लिछमी ध्यांँन।।१७८७
पदउतांँन केदार पुन, रमा-भक्त भये राज।
जगमै वरतत जाहि की, ये परपाटी आज।।१७८८
इहै रमाँ आख्यांँन कौं, पढँ गुनँ सुख पाय।
दुख दरिद्र सब दूर ह्वै, संपत वढँ सिवाय।।१७८९

छंद द्वै-अख्खरी

नारायन-सौं सुन मुनि नारद, विवध लक्षमी-चिरत विसारद।
स्वाहा स्वधा दक्षणा सकतीं, परमातम की कहीयत प्रक्रती।।१७९०
इनकौ चिरत वखांँनहु औरैं, जासौं भक्ति-भावना जोरै।
बोले जब नारांँयन बाँनी, सुनीयैं नारद वात सयांँनी।।१७९१
स्रष्ट आद मैं वन्यौ जु स्वर्गा, वाढयौ वंस देवतन-वर्गा।
अवलंबत भये हेत अहारा, विध के लोक गये तिह वारा।।१७९२
वेदगर्भ-सौं करी जु विनती, ग्रसत छुधा दुख की कर गिनती।
विध सोचन लागे तिह वेला, ईस ध्यांँन कौं धार अकेला।।१७९३

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पराप्रक्रत कीय ध्याँन पछारी, निजर परी इक सुंदर नारी ।
स्याँम-वरन ताको दुति सोहै, मंद-हास अधुरन मन मोहै ।।१७९४
जिह व्रह्मा हित की गत जाँनी, बोली उचत मनोहर-वाँनी ।
कारज होय सुतौ सव कहीयै, लखकै लाभ जथारथ लहीयै ।।१७९५
स्वाहा के सुन वचन सयाँने, जव बोले आतमभू जाँने ।
दमुना सक्ति होहु तुम दाहा, सव दुज जपहि नाँम तुव स्वाहा ।।१७९६
जिग मैं आहुत दैहै जेती, अंतरभूत करहु तुम येती ।
देवनकौं देवहु सुखदाँनी, जिह-जिह नाँम कहै तिह जाँनी ।।१७९६
माँनव देव सवहि मिल माँनहि, विप्र नाँम जिग-थली वखाँनहि ।
मानहु सत्य वचन इह मेरा, तातै अगन करहु पति तेरा ।।१७९८
इह सुन स्वाहा गही उदासी, पर्म प्रीत श्रीक्रस्न प्रकासी ।
क्रस्न विना सव जग भ्रम-कूपा, इह तन भरम-रूप अनुरूपा ।।१७९९
सेवा क्रस्न करहुँ सुखदाई, विध नाँहिन करीयै वरीयाई ।
इह कहिकै चाली वन-अंतर, वपु तप करन हेत वहुरंतर ।।१८००
ध्याँन क्रस्न उर धरी धारना, क्रस्न नाँम जपि भक्ति कारना ।
वन मै लाख वरख जिह वीता, प्रभु दरसन दीय आय पुनीता ।।१८०१
कमल-नयन मुख देख कँनाई, उपज्यौ मोह काँम उर आई ।
स्वाहा देख क्रस्न मुसकाँने, जीय को गूढ भावना जाँने ।।१८०२
विधना कही प्रथम तुम वाचा, सासन करहु सबै विध साचा ।
देवनकौ मेटहु दुख-दारद, वसुधा-कीरत लेहु विसारद ।।१८०३
सक्ति दाहका होय हुतासन, आहूती झेलहु अनुसासन ।
देवनकौं देवन सुखदाई, दुरवलता जावै दुखदाई ।।१८०२
है सुरकारज सोई हमारा, नहि मै देव-जात सौं न्यारा ।
करी रूप सौं काँम-काँमना, वँह मै दैहूँ सत्य आँमना ।।१८०५
विच अवतार कल्प वाराहा, सुवप संवार लेहुँ मै स्वाहा ।
नग्न जिती व हुय नारी, करहु काँम-क्रीड़ा सुखकारी ।।१८०६
कला-रूप सौं होय काँमनी, भोग भरहु निज-रूप भाँमनी ।
क्रस्न दयौ वर तिह विच कंतर, अंतरध्याँन भये वहुरंतर ।।१८०७
आये अष्टस्रवन तिह अवसर, वचन कहे स्वाहा वरीयै वर ।
अग्नदेव करीयै पति अपना, काज सधै उर छुटै कलपना ।।१८०८

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

विध के स्वाहा वचन विचारा, वरचौ अगन कौं ताही वारा।
वेद-विधाँन करचौ उदवाहा, अतकीनौ मिल सुरन उछाहा ।।१८०६
जुरी अगन स्वाहा की जोरी, वढी परसपर प्रीत वहोरी।
भोग-विलास करन सुख भीने, नेह परसपर वढत नवीने ।।१८१०
वीते सतवत्सर सुख विलसत, हेतमई दंपत चित हुलसत।
स्वाहा गर्भ रह्यौ सरसाई, द्वादस वरख विते सुखदाई ।।१८११
तीन पुत्र कीय उतपत ताही, दक्षनाग्न स्वाभाव दहाही।
दूजौ गारहपत्य दहेऊ, आदहवनीय तीसरौ येउ ।।१८१२
ब्राँमन क्षत्री होम-विधाँना, जपत नाँम स्वाहा जिग जाँना।
सिद्ध मंत्र जुत लेत जु स्वाहा, निगम कहत सोई होत निवाहा ।।१८१३
स्वाहाहीन फलत नही सोऊ, कोट उपाव करै जो कोऊ।
जिम विषहीन सर्प की जाती, जैसै वेदही हीन दुजाती ।।१८१४
पति-सेवा विन पत्नी पेखौ, द्रुम-साखा विन जिह विध देखौ।
विन विद्या नर दीसत विगरे, स्वाहा विनाँ मंत्र इम सिगरे ।।१०१५
स्वाहा नाँम लेय दुज सबही, जिग्य हवन होवत है जवही।
पोख-दाय अरू मोख-प्रदाँनी, माता सुरन नरन जग-माँनी ।।१८१६
पूजन तही अगन कीय पाँनन, अस्तुत ध्याँन मंत्र अवसाँनन।
सव सिद्धीदायक है सोऊ, भलो-भाँत जाँनहु निज भेऊ ।।१८१७

मंत्र:—ओं ह्रीं श्रीं वँन्हीजायायै देव्यै स्वाहा—इति।

मूल मंत्र जप करै महाँना, मिलै अभिष्ट सही मनमाँना।
नाँम तँही षोड़स कौ निरनै, कहत विचार जाप कौ करनै ।।१८१८
स्वाहा वन्हि प्रीया है सोई, जाया वन्हि कहत है जोई।
कहत तिही संतोखकारनी, सक्ती क्रीया-गति ध्रुवा सुधारनी ।।१८१९
कालदात्री परिपाक हू करी, संसार सार रूपा अनुसरी।
दाह्िका दहन क्षमा सुखदाई, जीवन-रूपा नाँम जनाई ।।१८२०
घोर संसार तारनी घेरा, विवुध पोख कारनी बहुतेरा।
सोरह नाँम मात है स्वाहा, पढै तँही दुख हटै प्रवाहा ।।१८२१
होवत नाँहि कहूँ अंग-हींना, पुन सुभकर मन लहत प्रवींना।
लहत भारज़ा सुत सुख़ ल़ाहा, सुमरन करै नेम सौं स्वाहा ।।१८२२

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दोहा

स्वाहा कौ आख्याँन सब, वरनन करचौ वसेस ।
कहत सुधा आख्याँन कँह, आद-अंत अवसेस ।।१८२३

छंद द्वं-अख्खरी

आद सृष्ट ब्रह्मा उपजाई, सात पित्र उपजे समुदाई ।
च्यार रूप धारक प्रतिछंदा, पुन तेजोमय तीन प्रबंदा ।।१८२४
तिनके नाँम कहतहू तेते, कव्य वाड़नल आदक केते ।
और सोम जम नाँम अरियमा, अगनी ध्वाता जाँन अनुक्रमा ।।१८२५
वही रखत सोमपा बरनत, पित्र गनन की संख्या परिनत ।
ब्रह्मा इन हित स्राध-विधाँना, नित अहार हित कीय निरबाँना ।।१८२६
स्नाँन रू तर्पन स्राध साधना, अरु देवनहु की अराधना ।
तीनहु संध्या अंतक तेऊ, आँनकै होत समापत येऊ ।।१८२७
संध उपासन स्राध सदाई, तर्पन बलिहुदाँन तदाई ।
वैस्यदेव धुनि वेद विहूँना, सो अजगर जिम दुजहीय सूना ।।१८२८
सेवा हरि की करै न सोई, जाँनहु दुज सूतक रत जोई ।
पित्र हेत कर स्राध प्रमिष्टी, सिरजन पालन लगे सु सृष्टी ।।१८२९
स्राध करन कौं लागे सवही, त्रप्त पित्रगन भये न तबही ।
जब विधपै पुन गये जु जुरकै, करी वींनतो जोरै करकै ।।१८३०
भाग जथारथ मिलै न भोजन, परकासहु कछु सिद्ध प्रयोजन ।
पित्रन की सुन वात पिछाँनी, वेद-गर्भ सव विध विग्याँनी ।।१८३१
इक कन्याँ माँनसी उपजाई, सुधानाँम सुंदर सुखदाई ।
पित्रनकौं दीनी परमेष्टी, पालन काज करनकौं पुष्टी ।।१८३२
जहाँ उपदेस करचौ दुज जाती, स्वाहा देवन इष्ट सुग्याती ।
जपत जिग्य मैं नाँम ही जैसै, इहै सुधा हित पित्रन ऐंसै ।।१८३३
कारज पित्र करहुगे कोई, जाके मंत्र पठहुहै जोई ।
सुधानाँम उच्चारहु संगा, पाती पावही पित्र प्रसंगा ।।१८३४
पिंड जलादिक देवहु पित्रन, सो समाँन मिलहै सरवत्रन ।
विध के वचन सुने जब विप्रन, तव पित्रन हित लगे जु तर्पन ।।१८३५

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सुधानाँम जप-जपकैं सारे, पिंड देत निज हात पसारे।
पित्र देवता दुज परिवारा, मुनि मनु आदक स्रष्ट मझारा ।।१८३६
पूजन सुधा करत अत पावन, निगम साख इह कलुख नसावन।
स्राध-दिनन रितु सरद समाँना, मघा नखत संजोग मिलाँना ।।१८३७
सुधा पूजकै करै सराधा, बिगत दरिद्र होय दुख बाधा।
ध्याँन धारना इह विध धारै, विध कंन्या वपु रूप विचारै ।।१८३८
सांतरूप पित्रन सुखदाई, सुधा-सुधा रूपी सरसाई।
वनै न या विध ध्याँन वसेसा, सालग्राँम करै अवसेसा ।।१८३९
मंगल-घट थापै अथवा मिल, जा माँही पूरन भरकै मिल।
मूल-मंत्र जाही जप मंडै, अनुभव वृत्ती धार अखंडै ।।१८४०
मंत्रः—ओं ह्रीं श्रीं क्लीं स्वधा देव्यै स्वाहा—इति।
नमै पाय अस्तुत कर नेहा, वार-वार तनुया कह वेहा।
पाप छूट जिग कौ फल पावै, विघन अनेकन जाहि विलावै ।।१८४१
जपै त्रसंध्या नाँम सु जाही, सदाँ रहै गन पित्र सहाही।
संध्याकाल नाँम सुमरीजै, करग जोर पुन वंदन कीजै ।।१८४२

दोहा

सुधा कह्यौ आख्याँन सब, पित्रन हेत पुनीत।
देवी वरनत दक्षना, पुंन्यदाय स प्रवीत ।।१८४३

छंद पद्धरी

आख्याँन दक्षना सुनहु येह, दुज पूजत है नित निसंदेह।
गोलोक-वीच गोपी-गुपाल, सुसीला नाँम नैना-विसाल ।।१८४४
सो सखी राधका रहत संग, अत रूपवती अभिराँम अंग।
रासेस क्रस्न तिह प्रीत राच, इक वेला पकरयौ ऐंच-आच ।।१८४५
बैठारी जंघा उद्ध वाँम, कछु उपधी बाधा चित्त काँम।
राधका देख वँह छिन रिसाय, अमरख उर नैना वढ्यौ आय ।।१८४६
हरि भाग चले भयभीत होय, किहु जाय दुरे जाँनै न कोय।
गोपीहु सुसीला आद गात, धूजनकौं लागे धर-धरात ।।१८४७
सब गोपी चलकै येक साथ, हिल मिली-राधका जोर हाथ।
त्रयकोट गोप आये तहींज, पद राधा-वंदन कीय पतीज ।।१८४८

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राधका उतारी महारीस, सखी गोप नमाये पगन सीस।
चितवन जब लागी क्रस्न चाहि, तहाँ नही लखे प्राँनेस ताहि ।।१८४६
वस विरह भई व्याकुल वसेस, हित करहु करत जैसे हमेस।
कीजीयै आपकी विरद काँन, माँननी राखीयै प्रीया माँन ।।१८५०
प्रीय करत भरन-पोखन प्रीयाहि, जग कहत नाँम भरतार जाहि।
पति-नाँम पालना करत प्यार, स्वामी सरीर रक्षा सुधार ।।१८५१
काँम कौं देत है नाम कंत, सुख देत नाँम बंधू स्रजंत।
प्रेम के प्रदाँनी नाँम पीय, तिह रमन नाँम रति देत तीय ।।१८५२
ऐंस्वर्ज देत जिह कहत ईस, नायक तुम मेरे सुख-निधीस।
विरहातुर राधा भई वाँम, निज क्रस्न-क्रस्न मुख लेत नाँम ।।१८५३
निकरी सु सुसीला ह्वै निरास, अत क्रस्नचंद्र हित लहि उसास।
तव विस्नु चतुरभुज चिते ताहि, सो गई विस्नु ही मै समाहि ।।१८५४
जिग करन लगे इत देवजात, तेऊ सफल होत नही सुनहु तात।
विध-लोक गये पूछन विचार, वीनती करी बहु वार-वार ।।१८५५
मेटन देवन कौ दुख महाँन, धारचौ सु पितामह विस्नु-ध्याँन।
विस्नू वर दीनौ विध विसेस, काटहु देवन कौ सव कलेस ।।१८५६
जव विस्नु लक्षमी कछुक जोत, अंग सौं करी न्यारी उदोत।
तिह नाँम दक्षना सुभग तीय, जिग हेत दई विध जाँन जीय ।।१८७
विध जिग सौं कीनौ तँहाँ न्याह, उर देवन कै वाडचौ उछाह।
निज कमलमुखी लहि जिग्य नार, बहु करन लगे तासौं विहार ।।१८५८
सुर वछ्छर वीते येक सत्त, दक्षना जिग्य दीय गर्भ दत्त।
द्वादस अनुवछ्छर विते देव, ऊपज्यौ कर्मफल सुत अजेव ।।१८५६
जव कर्म होत परिपूर्न जीव, सम कर्मन फल पावत सदीव।
दीनौ सु कर्मफल जवही देव, संतुष्ट पुष्ट भये कर्म सेव ।।१८६०
दक्षना दुजन कौं देत दाँन, सुख पावत फल कर्मन समाँन।
ततकाल कर्मके अंत ताहि, जजमाँन देत फल इधक जाहि ।।१८६१
द्वै-घटी कर्म पस्चात देत, है दुगनी दैनै माँझ हेत।
दिन रात कवहु करीयै न देर, विप्रन कौं दीजै तँही वेर ।।१८६२
विन दयै दक्षना कर्म वेस, नहि फलत वेदवाँनी निदेस।
वित दैन कहत देत न बहोर, चंडाल दुजन्मा गनहु चोर ।।१८६३

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अपवित्र दरिद्री होत आप, श्रीमहाँलक्षमी देत स्राप।
पित्री नही लेवत सलल पिंड, आँमना स्रुती सुमृती अखंड ।।१८६४
जिग आद दक्षना बिना जाँन, बलि राजभोग लेवत बिधाँन।
वरदाँन दयौ बावन विसेस, है भाग पती दाँनव हमेस ।।१८६५
करीयै न दक्षना विना कर्म, धनवाँन पुरस कौ इही धर्म।
जिग करी दक्षना पुज्ज जाहि, वर्नना ध्याँन प्रीती वसाहि ।।१८६६
वरन्यौ वेदन मैं तिह विधाँन, सब करत सु ग्याता सावधाँन।
जिग मैं सब ताकौ करंत जाप, पावत सदगत कौं तिह प्रताप ।।१८६७
राजसूजिग्य जो कोऊ रचंत, अरू बाजपेय आदक अनंत।
नरमेध तथा गोमेध नाम, ऋतु अस्वमेध है सुभग काँम ।।१८६८
विस्नू-जिग लांगल-जिग विधाँन, जिग वैरमर्द जाँनहु सुजाँन।
अंन्न-जिग यसस्कर धनँद और, वसूदाँन-जग्य पूरत बहोर ।।१८६९
फलदाँन जग्य गजमेध फेर, ऋतु लोह-जग्य सोवर्न केर।
जिग रत्न तांम्र जाँनहु जरूर, पुन रुद्र-जिग्य सिव-जग्य पूर ।।१८७०
बंधूक सक्र-जिग वारुनेय, कँहु कुंड जिग्य है कारनेय।
सुचि-जग्य धर्म-जिग स्रेष्ट सोय, सब पातक मोचन जग्य सोय ।।१८७१
जाँनहु ब्रह्माँनी कर्म ज्याग, भद्रक-जिग जोनी-जिग सभाग।
जप-ज्याग सबन सौं इधक जाँन, विच हृदय देस ताकौ विधाँन ।।१८७२
आरंभ करत जिग जबही आद, वर्नना दक्षना करत वाद।
जिह ध्याँन तथा इह मंत्र जाप, पापीजन मोचन करत पाप ।।१८७३

ध्याँन

लक्ष्मी दक्षां ससम्भूताः न दक्षनाङ्कमला कलाम्।
सर्ब कर्म सु दक्षाञ्चः फलदां सर्ब कर्म्मनाम् ।।१
विष्णोस्सक्ति रूपाञ्चः पूजिताम्वन्दिता सुभाम्।
सुद्धिदां सुद्धिरूपाञ्चः सुसीलां सुभदांम्मजे ।।२

मूलमंत्र सौं पूजा करै—षोड़सोपचार इह मूल मंत्र—

श्रों श्रीं ल्कीं ह्रीं दक्षनायै स्वा—इति

धीमंत दक्षना करत ध्याँन, पढ मंत्र पूज साधन प्रमाँन।
सुत नार लहत परवार सुद्ध, वाढत न बैर कुल सौं विरुद्ध ।।१८६४

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

चित मै कोऊ विद्या करत चाह, परवींन-बुद्धि बुद्धी प्रवाह।
धन पावत निर्धन करत ध्याँन, नृप भूँमहींन भूँमी निदाँन ।।१८७५

दोहा

संकट मै सुमरन करत, पावत आनँद पोख।
सुनै दक्षरणा कथ स्रवन, दूर गमावत दोष ।।१८७६
अवषष्टी आख्याँन कौं, कहत सुनहु दै काँन।
प्रकृत अंस षष्टम परा, सिसुन सवँन सुखदाँन ।।१८७७
सोई त्रीया सकंध[1] की, सिसुन सहायक सोय।
नार सूतका न्हाँन कर, जाही पूजत जोय ।।१८७८

छंद द्वै-अखरी

स्वायंभू मनु भये सुग्याता, तिह अंगज प्रीयवृत नृप ताता।
परने मालिनी नार पुनीती, प्रीत-रीत वाढी परतीती ।।१८७९
बालक भयौ न बहु दिन वीतै, कस्यप आये रिखी कहीतै।
जिग करायकै खीर दई जह, ताकौ राँनी खाय लई तँह ।।१८८०
भई गुर्बनी नृपत भाँमनी, दुति वाढी वपु मनहु दाँमनी।
वरख विते द्वादस जिह वेला, उपज्यौ अंगज आय अकेला ।।१८८१
प्राँन रहित ताही कौ पिंडा, आँखन देखत होय उच्छंडा।
खेदन करन लगी जब राँनी, महाँ उदासी मन मै माँनी ।।१८८२
सुनी वारता नरपत सोई, हरि की करनी सोई गत होई।
मृतक पुत्र लै चलौ मसाँना, करत रुदन दिह मुख कुमलाँना ।।१८८३
सुतन मृतक तन भूंम सुआयौ, इतै विमाँन उतर नभ आयौ।
इक देवी तामै अवरेखी, वपु सुंदरता सहित विसेखी ।।१८८४
अस्तुत करी नृपत ह्वै आरत, कह्यौ दीन मुहि करयौ कृतारथ।
पूजा कर लाग्यौ तिह पूछन, तुमहौ कवन सु कहहु ततछिन ।।१८८५
सुन देवी नृप की कथ स्राँनन, बिभवत लागी वात वखाँनन।
कंन्या माँनसी मै विधकेरी, मति निर्मल है निस-दिन मेरी ।।१८८६
भई सकंध-ग्रेह मै भाँमन, कहत जगत तिनही की काँमन।
प्रकृती षष्टम अंस प्रमाँनी, नाँम कहत षष्टी निर्बाँनी ।।१८८८

[1] कार्तिकेय।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

देत अपुत्रन सुत वित दारा, है नित-प्रत इह नेम हमारा।
इह कहि बालक लयौ उठाई, मुख सौं बोली बात मिठाई ।।१८८८
सरजीवत कीनौ सुख साजा, रह्यौ अचंभित ह्वै जब राजा।
जिह अस्तुत कीनी करजोरी, बोली देवी वचन बहोरी ।।१८८९
मनु स्वायंभू सुत तुम मानी, धरा त्रलोकपती रजधानी।
वंस वधावहु लै सुत वीरा, परजा की मेटहु पर-पीरा ।।१८९०
इह कहि बालक दयौ अधपती, नृप दुख की सब भई निवृती।
सुन देवी की वात सहू जन, परजाहू नृप लागी पूजन ।।१८९१
ग्रेह सूतका ऊठत गोरी, जिह देवी पूजत कर जोरी।
भूलै दिवस छटै किहु भेवी, दिन इकीस मै पूजै देवी ।।१८९२
अंन्न प्रासना दिन सुभ-अवसर, बालक हित वंचत ताही वर।
ध्याँन विधाँन धारना धावन, परजा पावन करत अपावन ।।१८९३
चंपक वरन तिही प्रतिछंदा, आँनन नैंन रूप अरविंदा।
षोड़स-विध पूजा तिह षष्टी, स्रष्टी पूजत ताहि समष्टी ।। १८९४
मूल-मंत्र कौ जप तिह मंडै, छुटै ताप ताही रुज छंडै।
सुक्ल षष्टमी पूजा साधन, बाँझ करै सोई ह्वै निरबाधन ।।१८९५
घट-थापन कर स्रधा घनेरी, वट पूजै अथवा तिह वेरी।
सालगराँम सिला सुखदाई, सेव करै संपत सरसाई ।।१८९६
अथवा चित्र लिखै विच आलय, कुंकम चर्चति पाय कृपालय।
पढै मंत्र सोइ लिखत प्रवीना, होवहि सबै आप दुख हीना ।।१८९७

मंत्रः—ओं ह्रीं षष्टी देव्यै स्वाहा—

स्तोत्र मूल श्लोक

नमो देव्यै महादेव्यै सिद्धै सांत्यै नमोनमः।
सुभायै देवसैना षष्टो देव्यै नमोनमः ।।१
वरदायैं पुत्रदायैं धनदायै नमोनमः।
सुखदायै मोक्षदायै षष्टी देव्यै नमोनमः ।।२
स्रष्टौ षष्टांस रूपायै सिद्धायैं च नमोनमः।
मायायै सिद्ध योगिन्यै षष्टी देव्यै नमोनमः ।।३

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सारायै सारदायै च परादेव्यै नमो नमः ।
ब्रह्माधिष्ठात्रिदेव्यै च षष्ठीदेव्यै नमो नमः ।।४
कल्याणदायै कल्याण्यै फलदायै च कर्मणाम् ।
प्रत्यक्षायै स्वभक्तानां षष्ठीदेव्यै नमो नमः ।।५
पूज्यायै स्कंधकान्तायै सर्वेषां सर्वकर्म्मसु ।
देवरक्षणकारिण्यै षष्ठीदेव्यै नमो नमः ।।६
शुद्धसत्वस्वरूपायै वंदितायै नृणां सदा ।
हिंसाक्रोधवर्जितायै षष्ठीदेव्यै नमो नमः ।।७
धनं देहि प्रियां देहि पुत्रन्देहि सुरेश्वरी ।
मानं देहि जयं देहि द्विषो जहि ममेश्वरी ।।८
धर्मं देहि यशो देहि षष्ठीदेव्यै नमो नमः ।
देहि भूमिम्प्रजान्देहि विद्यां देहि सुपूजिते ।।९
कल्याणञ्च जयं देहि षष्ठीदेव्यै नमो नमः ।
इति देवीञ्च संस्तूय लेभे पुत्रम्प्रियव्रतः ।।१०

छंद द्वै-अक्षरी

प्रीयवृत राजा पर्म पुनीता, जिह देवी पूजी जग-जीता ।
पुत्र जीयौ अरु सब सुख पायौ, अभय वसाय आप गृह आयौ ।।१८९८
इह षष्टीदेवी आख्यांना, परगट कीयौ सु वीच पुरांना ।
सुनै येक वत्सर लग सोऊ, करै पाठ प्रीती जुत कोऊ ।।१८९९
असुत लहै सुत गुनी उदारा, पुत ताही वाढै परवारा ।
सुत जो रोगी होय सरीरा, पढै मास-भर छुटै सु पीरा ।।१९००
षष्टीदेवी है सुख-खांनी, विधवत जाकी कथा वखांनी ।
अब मंगल चंडी आख्यांना, वरनत ताकौ सकल विधांना ।।१९०१
मंगल चंडी करता मंगल, अघ मेटत अरु सकल अमंगल ।
मंगल रूप सदाँ महमाया, कली चंपक वरनी जिह काया ।।१९०२
मंगल गृह-पूजा जिह मांनी, भव दुख मेटन सोइ भवांनी ।
ईस्वरी दुर्गा प्रक्रत अनादू, मूरत भेद तँही मरजादू ।।१९०३
त्रपुर मारनै हित त्रपुरारी, उदित भये विन ही असवारी ।
संकट आय परचौ रन सूली, हित चित सौं जाही मति हूली ।।१९०४

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

विध विस्नू उपदेस वतायौ, वँह सुमरन सिंभू उर आयौ।
अस्तुत करी विहत आराधन, सुभग मंत्र पूजा जुत साधन ।।१६०५
दुर्गा भेद-रूप दीय दरसन, पुन सिंभू कीनी बहु परसन।
बोली तव सिंभू सौं वाँनी, भय त्यागहु मैं कहत भवाँनी ।।१६०६
तुम वाहन ह्वै है हरि तेई, जेर करहु दनुजात अजेई।
भय कौं त्याग जुद्ध कौं भिरीयैं, लेहु जीत उठकै अब लरीयैं ।।१६०७
वृषभ-रूप हरि भये सिववाहन, सुर-नर लागे सकल सराहन।
सक्ती ह्वै सिव-सक्ति समाई, अस्त्र दये विस्नू अधिकाई ।।१६०८
सिव दाँनव कौं खेत सँघारे, अत संकट सौं देव उवारे।
वरखे सुमन हरख उर वाढ्यौ, चंदन केसर बहु सिर चाढ्यौ ।।१६०९
सिव कीनी देवी सिवकाई, सोड़स-विध पूजा सरसाई।
मूल मंत्र जप हीय सौं मंड्यौ, खल असुरन छल बल कौ खंड्यौ ।।१६१०

मंत्रः—ओं ह्रीं क्लीं सर्व पूज्यै देवी मंगल चण्डिके हुम्फट स्वाहा—इति।

वरन इकीस मंत्र वरदायक, लाख जपै दस भक्ती लायक।
सिद्ध होय संपत सरसावै, पाप विलाय अटल पद पावै ।।१६११
ध्याँन करै हीय मै मतिधीरा, सुस्थिर जोवन सहित सरीरा।
विद्रुम ओठ लयै मुख वीरा, हसन दसन दमकत जनु हीरा ।।१६१२
चंपक स्वेत वरन पतिछंदा, आँनन नैन मनहु अरविंदा।
अरथ धरम सुख मोक्ष उपावै, मंगल चंडी मात मनावै ।।१६१३

महादेव उवाच— **मूल स्तोत्र**

रक्ष-रक्ष जगन्मातर्देवि मंगलचण्डिके।
हारिके विपदां राशेर्हर्षमंगलकारिके ।।१
हर्षमंगलदक्षे च हर्षमंगलदायके।
शुभे मंगलदक्षे च शुभे मंगलचण्डिके ।।२
मंगले मंगलार्हे च सर्वमंगलमंगले।
सताम्मंगलदे देवि सर्वेषाम्मंगलालये ।।३
पूज्ये मंगलवारे च मंगलाभीष्टदेवते।
पूज्ये मंगलभूपस्य मनुवंशस्य सन्ततम् ।।४

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मंगलाधिष्ठात्रिदेवी मंगलानाञ्च मंगले ।
संसारमंगलाधारे मोक्षमंगलदायनि ।।५
सारे च मंगलाधारे पारगे सर्वकर्म्मणाम् ।
प्रतिमंगलवारे च पूज्ये मंगलसुखप्रदे ।।६

प्रति मंगल वासुर कर पूजन, सुख मंगल सुभ लहत सहूजन ।
सिव पूजी तिह प्रथम सदाई, मंगल गृह पूजी महमाई ।।१६१४
मंगल इक राजा तिह माँनी, जग की त्रीया पुज्य कीय जाँनी ।
नर-जाती पुज्जन निरवाही, महंमाय सुखदायक माहो ।।१६१५

दोहा

मंगलदेवी मंगला, जो पुज्जहि कर जाप ।
जाय अमंगल जातना, पुदगल के सब पाप ।।१६१६
नाराँयन नारद कहत, मनसादेवी मंत ।
करता जग ताकी कला, सदाँ वखाँनत संत ।।१६१७

छंद उद्धोर

आख्याँन मनसा येह, सब सुनहु आँन सनेह ।
भइ कसप ही के भाँन[1], माँनसी कंन्या माँन ।।१६१८
निरवाह मनसा नाँम, तिह हेत कहत तमाँम ।
परमात्म मनसा पेम, निज मनही साधत नेम ।।१६१६
रमतीत आतँम-रूप, सिध जोगनी सद्रूप ।
वैस्नवी सत्य विसेख, सो गनहु भगनी सेख ।।१६२०
जुग तीन कृस्न ही जाप, तन करचौ ताही ताप ।
दीय जर्तकार दयाल, हीय जाँनकै पति हाल ।।१६२१
कीय प्रथम पूजा कृस्न, पन पालकै हुय प्रस्न ।
प्रथमी सु स्वर्ग पताल, पूजी सु हित प्रतपाल ।।१६२२
निज जगद गौरी नाँम, कहीयै जु पूरन काँम ।
गहि हीयै सिवकौ ग्याँन, सैवी सु कहत सुजाँन ।।१६२३

---

१ भवन ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

भरपूर विस्नू भक्त, सत नाँम वैस्नवि सक्त।
जन्मेज कीय जप ज्याग, निर्भय उबारे नाग ।।१६२४
नागेस्वरी तिह नाँम, जग कहत आठौ जाँम।
मिट जात विख ही हमेस, विखहरी नाँम विसेस ।।१६२५
उपदेस सिध जिह ईस, सिध जोगनी धर सीस।
पुन सरस विद्या पाय, संजीवनी सु वसाय ।।१६२६
नित ग्याँन-जुक्ता नाँम, अघ हरन सोइ अभिराँम।
मुनि आसतीक जु मात, खित प्रगट कीनी ख्यात ।।१६२७
पति जर्तकार प्रीयाह, जग हितू जाँनहु जाह।
नित भजै द्वादस नाँम, कलि सिद्ध ह्वै तिह काँम ।।१६२८

द्वादशनामश्लोका:

जरत्कारुजरद्गौरी मनसा सिद्धियोगिनी।
वैष्णवी नागभगनी शैवी नागेश्वरी तथा ।।१
जरत्कारप्रियास्तीकमाता विषहरेति च।
महाज्ञानयुता चैव सा देवी विश्वपूजिता ।।२ इति ।।

इह भजै नाँम उमंग, भय तजै भींम भुजंग।
नित पठन करत निदाँन, करजात विषधर काँन ।।१६२९
जप लाख दसही जपंत, सोइ सिद्ध होवत संत।
विष कोउ न व्यापत भीत, अरु होत ग्याँन अधीत ।।१६३०
धारै सु देवी ध्याँन, वपु स्वेत चंपक वाँन।
बहु अलंकृत विस्तार, अंबर सु झीन अधार ।।१६३१
उपवीत नाग अनूप, सुभ सांत गौर सरूप।
सब अधिष्टात्री सिद्ध, पावन प्रभाव प्रसिद्ध ।।१६३२
कर ध्याँन मति अनकूल, मिल मंत्र साधै मूल।
पूजा करै जुत पेम, नित धारकै उर-नेम ।।१६३३

मंत्र:—ओं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं मनसादेव्यै स्वाहा—इति।

इह मंत्र परम उचार, सुमरै सु होत सुधार।
जप पाँच लाख जपंत, सिध जोग पावत संत ।।१६३४

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सक्रांत गर्भित सिद्ध, अह पंचमी अविरुद्ध ।
पूजै सु इह तिथ पाय, जन महाँ संकट जाय ।।१६३५
आख्याँन ताकौ येह, सुनीयै जु निस्संदेह ।
वीती सु आगै वात, तिह सुनहु चित दै तात ।।१६३६
इह भूँम तल मै आय, बहु वढी नाग-वलाय ।
सव मनुज जीव सुजात, भयभीत ह्वै भहरात ।।१६३७
गहि कसप सरन गृहीत, निरवाह हीय नयनोत ।
मुनि अत दयाल मिलेह, गवने पितामह ग्रेह ।।१६३८
भाख्यौ पितामह भेव, सविखाद मनुज सहेव ।
जब मंत्र विषहर जाँन, दोनौ सु मनुजन दाँन ।।१६३६
पुन प्रगट करीय प्रवेक, माँनसी कंन्या मेक ।
मुनि सुता जग की मात, वसुधा भई विख्यात ।।१६४०
कढ गई सोई किवलास, निज रही सिंभु-निवास ।
सत वरख रहि सविसेस, उर गह्यौ सिव उपदेस ।।१६४१
जप क्रस्नकौ लहि जास, पुन करयौ ग्यान-प्रकास ।
जप अष्ट-अक्षर जाँन, धारयौ सु अवचल ध्याँन ।।१६४२
पुस्करारंण्य पवित्र, तहाँ चाल आई तत्र ।
जुग तीन रहि तिह जाग, अत क्रस्न कर अनुराग ।।१६४३
दीय क्रस्न दरसन देख, सुख वढयौ उर सविसेख ।
पाई सु क्रस्न पसाव, भल पूजना जुत भाव ।।१६४४
सिव करी मनसा सेव, भज इंद्रहू लहि भेव ।
सुर मनुज नाग सवीन, कउमारि पूजा कीन ।।१६४५
पूजा त्रलोकी पाय, सुख पिता दीय सरसाय ।
पितु क्रपा कर-कर प्यार, वर करन करेऊ विचार ।।१६४६
मुनि जरत्कारहि माँन, दीय ताहि कंन्या दाँन ।
पति पायकै परसिद्ध, सिध जोगनी भई सिद्ध ।।१६४७
पति करत सेवा पाय, सुख परसपर सरसाय ।
तप करत कबहुक त्याग, जप करत कबहुक ज्याग ।।१६४८
वीती सु वहुदिन वार, महा विपन रहत मझार ।
तन वड्यौ आलस ताप, जगदीस करता जाप ।।१६४६

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वट छाँह बैठ विचार, मृघचर्म समन सुमार।
तीय जंघ धर उतमंग, पौढे सु नीद प्रसंग ।।१६५०
दिन छेह कीनौ देख, वेला सु संध विसेख।
पति सदा मत कौं पाय, जप करन काज जगाय ।।१६५१
मुनि लख्यौ मनसा मंत, अकुलाय बोले अंत।
भमन ि निंद्रा भंग, कीय काँम येह कुढंग ।।१६५२
पतिवरत त्याग्यौ पंथ, कुसमय जगाय सु कंथ।
पति क्रोध जुक्त परेख, द्रुति कह्यौ मनसा देख ।।१६५३
जप करन संध्या जान, हित करी निंद्रा-हाँन।
निज आप पत्नी नाथ, सुभ करत विचरत साथ ।।१६५४
नित आप संध्या-नेम, परिवृह्म सौं उर पेम।
मै सोचकैं इह मंत, ततकाल साधन तंत ।।१६५५
रिस करहु अथवा राग, भल अनहुभल वस भाग।
करजोर कहत कृपाल, हित अहित जानत हाल ।।१६५६
भख भूख करता भंग, अथवा-क मैथुन अंग।
जिम देत नींद जगाय, जो नर्क प्राँनी जाय ।।१६५७
अपराध कीनौ आप, पुन गनहु अथवा पाप।
सुन रिखी वायक स्रोंन, मुख गही कछु दिन मौंन ।।१६५८
मनसा सु मन मुरझाय, रिखी सकी नाँहि रिझाय।
जब करचौ विध हरि जाप, अरु पिता कस्यप आप ।।१६५६
आये सु तीनहु याद, महि मंडता मुरजाद।
समजास कीनी संग, कल वात देख कुढंग ।।१६६०
रिखी मिटचौ नाँहिन रोख, दुहु ओर वाढयौ दोख।
मत त्याग देख मुनेस, इह करचौ त्रहु उपदेस ।।१६६१
सुत विना त्यागै स्त्रीय, पातकी होवत पीय।
उपजायकै सुत येक, तुम रखहु तुमरी टेक ।।१६६२
विध कसप हरि की वात, उर धरी मति अवदात।
मनसा सु करकै मेल, झुक लई नाभी झेल ।।१६६३
पढ मंत्र करेऊ प्रीयोग, जम गर्भ उपज्यौ जोग।
तब चले मुनिवर त्याग, उर छोरकै अनुराग ।।१६६४

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वन करचौ पुस्कर वास, उर होय पर्म उदास।
मनसाहु पति मति माँन, गृही सिभु कोनौ गाँन ।।१९६५
कयलास-वास करेह, निज ग्याँन गरू-मुख लेह।
सिव-चरन सरन सँभार, बहु लेत ग्याँन विचार ।।१९६६
गौरीहु देवत ग्याँन, जिह सुताकै सम जाँन।
वैजनन समय विधाँन, जब परचौ गवरी जाँन ।।१९६७
वपु जतन कीन विचार, येकंत वीच अगार।
सुत भयौ परगट सिद्ध, पितु जरत्कार प्रसिद्ध ।।१९६८
गरू-भक्ति मनसा ग्याँन, सिखनी सु कर सनमाँन।
निज सुता जिम कर नेम, पुन करयौ वहुविध पेम ।।१९६९
सिखनी सु सुत सुविचार, अरु करचौ सुभ आचार।
निज आसतीक सुनाँम, जहाँ धरचौ मनसा जाँम ।।१९७०
बहुग्याँन दै विसवास, द्रढ जाँन संकर-दास।
वहुरै पढाये वेद, निज भक्ति जुत निर्वेद ।।१९७१
मुनि आसतीक महाँन, धर पारवृह्म ही ध्याँन।
गये पिता-पै कर गाँन, पुस्करारंण्य प्रधाँन ।।१९७२
त्रयलक्ष हायन ताप, जगदीस कीनौ जाप।
सिव आयकै संकेत, हीय मात मिल कीय हेत ।।१९७३
सुत मातु दहुँ इक संग, पितु मिलन पाय प्रसंग।
आये सु कस्यप यैन, लख धर्म दरसन लैन ।।१९७४
मिल अदित अरू दिती मात, कस्यप लही कुसलात।
सुख सुता कीय सनमाँन, जग-पोखनी जीय जाँन ।।१९७५
जनमेज कीनौ ज्याग, पितु वैर हित रिस पाग।
कुल नाग होमन-काज, रुख द्रोह सौं महाराज ।।१९७६
भय पाय तक्षक भाग, लीय इंद्र सरनौ लाग।
जब इंद्रहू जीय जाँन, ग्रह कस्यप कोनौ गाँन ।।१९७७
विष हरी कहेऊ वृतंत, सब नाग तेरे संत।
इह वार करहु उधार, छित होत अहि कुल छार ।।१९७८
जहाँ दयौ मनसा जाँन, सुत दये संग सयाँन।
जब आसतीकहु जांय, सबभाँत नृप समुझाय ।।१९७९

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ऋतु बंध कीनौ काज, सुख नाग दीय सुरराज।
जव इंद्र पूजी जास, कीय क्रीत जग-परकास ।।१६८०
तिह मंत्र और स्तोत्र, इह कहत जागा अत्र।
जग हेत कारक जीव, सुभ पाठ हेत सदीव ।।१६८१

मंत्रः—ओों ह्रीं श्रीं मनसादेव्यै स्वाहा—इति।

पुरंदर उवाच— **मनसास्तोत्रम्**

देवि त्वां स्तोतुमिच्छामि साध्वीनाम्प्रवरां वराम्।
परात्परां च परमान्न हि स्तोतुं क्षमोधुना ।।१
स्तोत्राणां लक्षणंवेदे स्वभावाख्यानतत्परा।
न क्षमः प्रकृतेर्वक्तुं गुणानां गणनान्तव ।।२
शुद्धसत्वस्वरूपाङ्कोकोपहिंसाविवर्जिताम्।
न च शक्तो मुनिस्तेन त्यक्तुंयाञ्चा कृता यतः ।।३
त्वम्मया पूजिता साध्वी जननी च यथादितिः।
दयारूपा च भगनी क्षमारूपा यथा प्रसू ।।४
त्वया मे रक्षिताः प्राणाः पुत्रदारास्सुरेश्वरी।
अहङ्करोमि त्वत्पूजाम्प्रीतिति वर्द्धतां सदा ।।५
नित्या यद्यपि पूज्या त्वं सर्वत्र जगदम्बिके।
तथापि तव पूजां च वर्द्धयामि सुरेश्वरी ।।६
ये त्वामाषाढसंक्रान्त्याम्पूजयिष्यन्ति भक्तितः।
पंचम्याम्मनसा रिक्तायाम्मासान्ते वा दिने दिने ।।७
पुत्रपौत्रादयस्तेषां वर्द्धन्ते च धनानि वै।
यशस्विनः कीर्तिमन्तो विद्यावन्तो गुणान्विताः ।।८
ये त्वान्न पूजयिष्यन्ति निन्दन्त्यज्ञानतो जनाः।
लक्ष्मीहीना भविष्यन्ति तेषां नागभयं सदा ।।९
त्वं स्वयं सर्वलक्ष्मीश्च वैकुंठे कमलालया।
नारायणांशो भगवान् जरत्कारुर्मुनीश्वरः ।।१०
तपसा तेजसा त्वां च मनसा ससृजे पिता।
अस्माकं रक्षणायैव तेन त्वाम्मनसाभिधा ।।११

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मनसादेवी सत्या त्वं स्वात्मना सिद्धयोगिनी ।
तेन त्वां मनसा देवी पूजिता वन्दिता भव ॥१२

ये भक्त्या मनसा वाचा पूजयत्न्यहर्निशम् ।
तेन त्वां मनसा देवीम्प्रवदन्ति मनीषिणः ॥१३

सत्यस्वरूपा देवीत्वं शस्वत्सत्यनिषेवणात् ।
यो हि त्वाम्भावयेन्नित्यं स त्वाम्प्राप्नोति तत्परः ॥१४ इति ॥

अस्तुति मनसा येह, गये इंद्र करकै ग्रेह ।
जिह भ्रात मनसा जाँन, द्रढं दई आसिष दाँन ॥१९८२

सुत सहित पितु-गृह सोय, सुख पाय रहींय सकोय ।
गोलोक सुरभी ग्यात, देवी सु जग सुख दात ॥१९८३

तिह दुग्ध पायौ ताय, दीय ग्याँन गूढ दिढाय ।
पूजा सु जग मै पाय, सो गई स्वर्ग सिधाय ॥१९८४

दोहा

इह स्तोत्र उर-धारकै, पाठ करे लख पंच ।
विष इंमृत सम होत वपु, रहै न अहि भय रंच ॥१९८५
नारद प्रति नारायँनहि, गाई मनसा गाथ ।
सोनकादि सुन सूत सौं, सवही भये सुनाथ ॥१९८६
सुरभीकौ आख्याँन सुभ, सुनवे लायक सोय ।
नारायँन नारद प्रतै, गुननै लागे गोय ॥१९८७

छंद पद्धरी

वृंदावनहू की सुनहु वात, रम रहे राधका-क्रस्न रात ।
पय-पाँन करन श्रीक्रस्न पेम, निज याद दई खुध्या सु नेम ॥१९८८
वपु वाँम-पार्स सौं तिही वार, परगट कीय सुरभी सहित प्यार ।
जिह वार सुदाँमा गोप जाँन, पय दोहि करायौ क्रस्न पाँन ॥१९८९
दुग्ध कौ पात्र श्रीक्रस्न दैन, लागे सु सुदाँमा लगे लैन ।
गिर गयौ भयौ सोइ ताल गोल, उदपाँन जेम आक्रत अमोल ॥१९९०

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सत जोजनकै परमाँन सोय, गोलोक विराजत प्रभा गोय।
तिह खीर-सरोवर नाँम ताल, विचरत तट गोपीं गोप-वाल ।।१९९१
सुरभी रोमन सौं गऊ साथ, निज प्रगट करयौ गोलोकनाथ।
गोपन कौं दीनी वाँट गाय, परिपूरन ह्वैगये दुग्ध पाय ।।१९९२
वछरी-वछरन की भई वृद्ध, संसार वढी तासौं समृद्ध।
जग की उपकारक गऊ-जात, खित कोन न जाँनत तँही ख्यात ।।१९९३
जन प्रजा ईस्वरी मात जाँन, दध-दूध और घृत देत दाँन।
पुष्टी सुर पावत जिग पसाव, सम कलपवृक्ष सातुक सुभाव ।।१९९४
कउमार भारवाही करंन्न, उपजावत वारह भार अंन्न।
दत विप्रन कौं कोऊ गऊ देत, हरिलोक-वास पावत सहेत ।।१९९५
अहलोक तरत परलोक आद, बहु नर्क-ताप मेटत विषाद।
पूजे सुरभी के प्रथम पाय, श्रीक्रस्नचंद्र राधा सुभाय ।।१९९६
पूजा कीय सुर नर मुनि पुनींत, करजोर उचारत विवध क्रीत।
क्वांर की सुक्ल प्रतिपदा केर, वसुधा सब पूजत प्रात वेर ।।१९९७
भक्ती-जुत सुरभी भजन-भाव, सो मंत्र षड़ाक्षर सुभ सुभाव।
इक लक्ष जपै सिध होत आद, मत जुजरवेद बाँधी मृजाद ।।१९९८

मंत्रः—ओं सुरभ्यै नमः—इति।

ध्याँन

लक्ष्मीस्वरूपाम्परमां　　राधासहचरीम्पराम्।
गवांमधिष्टात्रिदेवीङ्गां, वामाद्याङ्गवां प्रसूम् ।।१
पवित्ररूपाम्पूताञ्च भक्तानां सर्वकामदाम्।
यया पूतं सर्वविश्वन्तान्देवीं सुरभिम्भजे ।।२ इति ।।

वाराहकल्प की सुनहु वात, वरती सोई जगमैं है विख्यात।
इक वार विस्नु माया अधार, सुरभी हरलीनौ दूध सार ।।१९९९
सुर विकल भयै मघवा समेत, हिल-मिलकै वृहमा कह्यौ हेत।
विध सुरभी कौ पूजा विधाँन, मघवाहु वतायौ सुर मिलाँन ।।२०००
सुरराज वतायौ सुर-समाज, कीय सुरभी माता सफल काज।
सुरराज पूज कीय सुरन साथ, हित पाय स्तुत इह जोर हाथ ।।२००१

T　CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

इंद्र उवाच— सुरभिस्तोत्र : मूल

नमो देव्यै महादेव्यै सुरभ्यै च नमो नमः ।
गवाम्बीजस्वरूपायै नमस्ते जगदम्बिके ।।१
नमो राधाप्रियायै च पद्मांशायै नमो नमः ।
नमः कृष्ण प्रियायै च गवाम्मात्रे नमो नमः ।।२
कल्पवृक्षस्वरूपायै सर्वेषां सततम्परम् ।
क्षीरदायै धनदायै बुद्धिदायै नमो नमः ।।३
शुभदायै सुभद्रायै गोप्रदायै नमो नमः ।
यशोदायै कीर्त्तिदायै धर्मदायै नमो नमः ।।४

छंद पद्धरी

सुरभा सुन अस्तुत सुनासीर, खादन स्वादन कीय प्रगट खीर ।
गोलोक सिधाई सुभग गात, मनुजन देवन की आद-मात ।।२००२
स्वर्गीय गये मघवा सिधाय, जुर वसे स्वर्ग सुस्थाँन जाय ।
भूतल मै जितनी गऊ भेस, वढ दूध दैन लागी वसेस ।।२००३
जग करन लगे जिग होम जाप, पुष्टी जन वाढी जिह प्रताप ।
भये सुखी च्यारहू वर्न भोज, उर देवनहू के वढचौ ओज ।।२००४
दाँनव खल लागै दैन दंड, अमरन प्रताप वाढचौ अखंड ।
इह सुरभी की महिमा उपार, मति जाँन तकै राधा मुरार ।।२००५
सुरभी हरी सेवा अनुसरंत, राधका हेत साथे रहंत ।
आख्याँन सुनै सुरभी उचार, परिवार वढै गो वढै प्यार ।।२००६
धन-धाँन वढै सनमाँन धर्म, क्रतुकाज सफल निस्त्रेय कर्म ।
धारै सुरभी कौ हृदय ध्याँन, सब तीर्थन मै मनु करचौ स्नाँन ।।२००७
नाराँयन भाखत अवर नेम, जुग राधा दुर्गा-रूप जेम ।
संसार करत परगट सकोय, जढ-जंगम उतपत आद जोय ।।२००८
अब राधाकौ आख्याँन ऊद्ध, संम्वत वेदन की सुनहु सुद्ध ।
जाके मंत्रन कौ जपै जाप, ताके मिट जावत तीन ताप ।।२००९

मंत्र षडक्षर—श्रीराधायै स्वाहा इति ।

द्वितीय सप्ताक्षर—ह्रीं श्रीं राधायै स्वाहा—इति ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दोऊ मंत्र सुखद अरु मुक्तिदाय, भक्तन कौं चिंतामणी भाय।
उपदेस मूल देवी अराध, श्रीक्रस्न लयौ गोलोक साध ॥२०१०
विस्नु कौं दयौ क्रस्न ही वताय, वृह्मा विस्नू सौं लीय वसाय।
वैराट क्रस्न दीय दुतीय वार, धर्महु विराट सौं लयौ धार ॥२०११
धर्म हूँ दयौ हमकौं धरोज, उर-धारचौ त्यूँही वढ्यौ ओज।
जातै हम निसदिन करत जाप, पढ रिखी कहीजत इह प्रताप ॥२०१२
राधका जाप विन क्रस्न-रूप, उर नाँहि प्रकासत गति अनूँप।
चाहत कोऊ वैस्नव क्रस्न चित्त, निस्चय सौं राधा भजै नित्त ॥२०१३
है प्राँन अधीस्वरी क्रस्न हेत, श्रीराधाक्रस्न ही मुक्ति सेत।
नवमै-सकंद्ध मै मंत्र-न्यास, उपदेस वतायौ मुक्ति-आस ॥२०१४
नाराँयन है रिखी आद नेम, जिह मंत्र है देवी देव जेम।
अरु गायत्री है छंद-ऊक्ति, ओं वीजं भुवनेस्वरी सक्ति ॥२०१५
सब मंत्रन मै है इही सार, इक मूल मंत्र जाकै अधार।
षड़अंग-न्यास अभ्यास खेल, मंत्र है जिही सौं तँही मेल ॥२०१६
आराधन राधा रीत येह, श्रीक्रस्नचंद्र भींनी सनेह।
धारै ताही कौ हृदय ध्याँन, सित चंपक तन आभास माँन ॥२०१७
चिब आँनन लोचन सरद-चंद, मुसकावत अधुरन मंद-मंद।
दीपत दुत जामै स्वेत-दंत, परकास मनहु कँनी वज्र-पंत ॥२०१८
उर-वीच कठन उंन्नतं उरोज, सुकमार खीन-कट पद-सरोज।
आभूषन रत्नन सझत अंग, ऊद्यत अनूप आभा अनंग ॥२०१९
पवसाक नवीनहु झींन-पाट, जर-तार किनारी जगमगाट।
वहु गोपी सोहत संग वाल, वैठी सु रास-मंडल विचाल ॥२०२०
सरसत रस वरसत सुच सुहास, रासेस क्रस्न की प्रेम-रास।
वीरी प्रवाल ओठनं विचाल, मालती विराजत कंठ-माल ॥२०२१
भक्तन कै ऊपर सांत-भाव, परमेष्टी पूजत सिंभु-पाव।
धारीयै इही विध हृदय ध्याँन, मुक्त की निसेनी रूप माँन ॥२०२२
थित अष्टहु दलकौ जंत्र थाप, अथवा सिल सालग्राँम आप।
अथवा घट पूजा करै येम, षोड़स प्रकार सौं लहै खेम ॥२०२३
परवार राधका करै पूज, सनमाँन नाँम लैलै सहूज।
अगनी इसाँन नैरत्य एम, जाँनीयै दिसा वायव्य जेम ॥२०२४

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

च्यारहू कून मैं पूज चाहि, मध्य मैं अंग पूजा मिलाहि।
अष्टदल जंत्र के भाग अग्र, सुविचार करैं देवी समग्र।।२०२५
दक्षनावर्त की रीत देख, सक्तीयाँ आठ पूजै सवेख।
कल्पना प्रथम राधा करेह, आँनन दिस पछ्छम अनुसरेह।।२०२६
जाही तै पूजा प्रथम ज्ञाँन, आरंभ पिछम सौं करैं आँन।
मालावति पिछ्छम दिस मुकाँम, वायव्य मालवी वसत वाँम।।२०२७
दिस उत्तर रत्नमाला दिपंत, ईसाँन सुसीला अनुसरंत।
सिसकला दिसा पूरब समाय, आग्नेय पारजाता सु आय।।२०२८
पारावती दक्षन दिसा पेख, प्रीयकारनी नैरत दीस परेख।
सक्तीयाँ और ब्राँह्मी सहेत, सेवैं वाहिर कौं पुन्न्य सेत।।२०२९
दिकपालन पूजै दिसा देख, विध-जुक्त मुक्तिदायक विसेख।
वज्राद सस्त्र देवी विचार, पूजना करैं आठौ प्रचार।।२०३०
सावर्न रीत पूजा सभेव, इह विध सौं जाँनहु अवसमेव।
निज पाठ राधका सहँस नाँम, करीयै पूजन सौं सफल काँम।।२०३१
जप मूल-मंत्र करीयै जरूर, दुख पातक जावै सवही दूर।
उछ्छव राधा कौ अनुसरंत, कातकी पूर्नमासी कहंत।।२०३२
विस्नु के तुल्य गोलोक-वास, रास की ईस्वरी लखत रास।
गोलोक-वासनी सदा ग्यात, तेऊ सुता भई वृषभाँन तात।।२०३३
पुहमी वृज-मंडल कीय पवित्र, तिह राधा वरनन जत्र-तत्र।
वृषभाँन दुलारी रहत वास, वृंद्रावन-भूँमी हित विलास।।२०३४

नारायँन उवाच—

श्रीराधा स्तोत्र मूल श्लोक

नमस्ते परमेशानि राजमण्डलवासिनी।
रासेश्वरि नमस्तेस्तु कृष्णप्राणाधिकप्रिये।।१
नमस्त्रैलोक्यजननि प्रसीद करुणार्णवे।
ब्रह्मविष्ण्वादिभिर्द्देवैर्वन्द्यमानपदाम्बुजे ।।२
नमः सरस्वतीरूपे नमस्सावित्रि शाङ्करि।
गंगा पद्मावतीरूपे षष्ठी मंगलचंण्डिके।।३
मनसे तुलसीरूपे नमो लक्ष्मीस्वरूपिणी।
नमो दुर्गे भगवति नमस्ते ब्रह्मरूपिणी।।४

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मूलप्रकृतिरूपान्त्वाम्भजामः करुणार्णवाम् ।
संसारसागरादस्मांदुद्धराम्व दयां कुरु ।।५

इति श्रीराधास्तोत्रम्

दोहा

करै राधका याद कोऊ, तबै स्तोत्र त्रकाल ।
गोत वढै धन-धाँन गो, वाढै श्रायु विसाल ।।२०३५
वास वसै गोलोक-विच, श्रंत श्रवस्था श्राप ।
जग इंमृत सम जाँनीयै, जीयननि राधका जाप ।।२०३६
नाराँयन निरनय निगम, करकै भाखत कथ्थ ।
श्रवन करत नारद समुझ, सतवादी समरथ्थ ।।२०३७
कहत श्रबै दुर्गा-कथा, मंत्र-विधाँन समेत ।
सुखदायक जाही स्रवन, है जन कारक हेत ।।२०३८

छंद द्वं-श्रख्खरी

जग करता दुरगा जगजननी, हर की सक्ती विपता-हननी ।
श्रधिष्टात्री बुधि अंतरयाँमनी, सव जीवन की है नित स्वाँमनी ।।२०३९
वैस्नव सैव सदाँ कर वंदन, दूर करत पातक दुख दुंदन ।
मूल-प्रकृत थित स्रष्ट महाँना, मंत्र नवक्षर सब जन माँना ।।२०४०

मंत्रः—ऐं ह्रीं ल्कीं चामुंडायै विच्चे—इति ।

उत्तम मंत्र जाँनीयै येही, ऋषी वृह्मा हरी ईस रहेही ।
गायत्री उष्णिक जुत गावै, छंद श्रनुष्टप तिह छिब छावै ।।२०४१
माहाकाली माहालिछमी माँनौ, सरस्वति महाँ देवता साँनौ ।
रक्तदंतका दुरगा रूरी, भ्रामीर बीज जाँन भरपूरी ।।२०४२
भज नंदा साकंभरि भीमा, सक्ती तीन जाँनीयै ससींमा ।
धर्म-श्रर्थ हित काँम मुक्ति धर, कर विनयोग विहत साधन कर ।।२०४३
न्यास करै जाकौ इह निरनै, सिरमैं ऋसीयन ह्वैकैं सरनै ।
मुख मैं छंद देव हीय माँही, सून वाँम त्रय-सक्ति समाँही ।।२०४४
दछ्छन स्तन बीज त्रय दीजै, कल्पना मंत्र भाग त्रय कीजै ।
बीज तीन चामुंडा विच्चे, स्वाहा षट हुम् षट फट सिच्चे ।।२०४५

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

षडंन्यास गरु-मुख लहि खेलै, मस्तक सिखा नेत्र स्रुत मेलै।
गुदा-द्वार जुत मंत्र गढाई, विधजुत वृती ध्याँन वढाई ।।२०४६
रूप वतावत देवी रूरौ, प्रति तंत्रकन कह्यौ जू पूरौ।
मूरत उर देवी की मंडै, आयुध येते धार अखंडै ।।२०४७
सुभग खड्ग अरु चक्र सबला, बाँण चाप परिघा अतबला।
सूल भुसंडी सिर अरु संख, अंग स्याँम अरु त्रय जुत अंख ।।२०४८
दस मुख पाव विराजत दसहू, आभूषन धारैं उरजसहू।
ध्याँन कालका वृहमा ध्यावत, विधजुत सोय सरूप वतावत ।।२०४९
मधुकैटभ संघारनि माता, क्लीं सरूपनी मति कुसलाता।
मंडत कमल गलै-विच माला, वसत करग मै परसु विसाला ।।२०५०
गदा वज्र सर पद्म चाप गहि, कुंडी दंड खड्ग सक्ती कहि।
ढाल कमल घंटा कर धारै, सुरा-पात्र फिर सूल सँवारै ।।२०५१
पास सुदर्सन है जिह पाही, •रक्त कमल आरूढ रहाही।
ह्रींयं वीज-रूपिणि ह्रींकारी, महिषासुर कौं मारन वारी ।।२०५२
महाँलक्षमी जग की माता, सुमरन ध्याँन करत सुग्याता।
धारै घंटा सूल संख-धुन, परतख मुसल सुदर्सन धनु पुन ।।२०५३
बाँन पद्म धारै विधुवदनी, कुंद वरन सुंभादिक कदनी।
बीज-मंत्र ये रूप वसाता, माहाँ सरसुती जग की माता ।।२०५४
ध्याँन करै नितप्रत उर धारन, सच्चदानंदनि रूप सुधारन।
दुर्गा आद प्रकृती देवी, सुर नर सकल मुननगन सेवी ।।२०५५
जंत्र पूज विध ताही जाँनत, विधवत जाकौ भेद वखाँनत।
प्रथम त्रकोन कोन षट पूरत, चतुर्विंस दल कमल की सूरत ।।२०५६
अष्ट कमल-दल ध्याँन अराधै, सालग्राँम तथा सिल साधै।
जंत्रराज अथवा घट जाँनौ, महंमाय प्रतिमा इम माँनौ ।।२०५७
कंकर नदी नर्बदा केरा, सूर्ज-बिंब कौ रूप सवेरा।
हित चित सौं अपनी मति हेरी, करै भावना देवी केरी ।।२०५८
पूजा करै होय जन पावन, नितप्रत काया कलुख नसावन।
जया आद सक्ती फिर जैसै, आराधना पीठ पै ऐसै ।।२०५९
देवी अग्र कोन कौं देखै, सरसुती वृह्मा पूज सँपेखै।
नैरत लिछमी-हरी निवासा, वायव सिव-पारबती वासा ।।२०६०

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

देवी सिंघ दिसा कर दहनै, महषासुर वाँमै कर महनै।
पुन षट-कोन करै इम पूजा, देखै भाव नही कोऊ दूजा ।।२०६१
अँनुक्रम सौं नंदजा अराधै, सक्ती रक्तदंतका साधै।
साकंभरि दुरगा कर साधन, इम भीमा आमरि आराधन ।।२०६२
आठ-कूँन मै अनुक्रम ऐसौ, जाही कौं वरनत हूँ जैसौ।
ब्राँह्मी माहेस्वरी कँवारी, वैस्नवी वाराही सु विचारी ।।२०६३
नरसिंघी इंद्री निरनीती, पद चामुंडा करीयै प्रीती।
पुन चौइस पत्र परपूरन, उचत पूज कर होवै ऊरन ।।२०६४
व्रिस्नूमाया चेतना बुद्धी, नींद क्षुधा छाया जु निरुद्धी।
परा तथा त्रस्ना क्षान्ती पुन, जाती लज्या सांति स्रधा जन ।।२०६५
कांति लक्षमी धृती वृत्ति कहि, स्रुती सुमृती दया तुष्टी सहि।
पुष्टी माता भ्राँति पिछाँनौ, इन सबही की पूजा आँनौ ।।२०६६
बाहर ताहि गँणेस बहोरी, छेत्रपाल हित पूज छहोरी।
बटुक जोगनी पूजा बहुरै, बज्री वज्र लीयै कर व्रिहरै ।।२०६७
पूजा मै दुर्गा प्रीतर्था, अर्पन षोड़स-विध सौं अर्था।
अर्पन कर राजो उपहारा, मंत्र नवार्णव जपै मझारा ।।२०६८
अस्तुति सप्तसती पुन उचरै, विजय पाय भूमंडल विचरै।
अर्थ धर्म अरु काँम उपावै, जीवन भुगत मुगत पद जावै ।।२०६९
नारायन कहि नार्द निहारा, नवम-सकंध्र कह्यौ निरधारा।
पढै सुनै सोई होय पुनीता, जाँनहु सोय जंन्म कौं जीता ।।२०७०
भवतारन श्रीमात भवाँनी, व्रह्मा विसन महेस वखाँनी।
दुर्गा आद प्रक्रती देवी, सुर संकट जाही विध सेवी ।।२०७१
मनूँ चतुर्दस सुर-समुदाई, सब जोगीजन कीय सिवकाई।
पंच प्रक्रत की वाख्या पूरत, सब अवतार कला कीह सूरत ।।२०७२
गावहि सो पावहि जन ग्याँना, सत्य-सत्य इह सत्य समाँना।
गुनै पढै जो कोऊ इह गाथा, सुखी होय अरु होय सुनाथा ।।२०७३
नवरात्री मै सुनै जु निरनै, श्रीजगजननी जावत सरनै।
जनम-मरन छूटै जंजाला, कलुख नही व्यापै कलिकाला ।।२०७४
सकुन परीक्षा यामै साची, ऋखी मुनी जामै मति राची।
ताकी रीत कहत हूँ तैसी, जाही बात विचारहु जैसी ।।२०७५

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कंन्या जो सुच होय कंवारी, अथवो वटुक बुलाय अगारी।
स्नाँन कराय सुवेख सँवारै, पूजा-पुस्तक सुद्धि प्रवारै ।।२०७४
स्वर्न देय कर ताहि सिलाका, कहै छोर लहि बुद्धि कलाका।
परै जहाँ अध्याय परेखै, दोहा छंद भावकौं देखै ।।२०७५
सुभ वा असुभ विचारै सोई, जाही मै कारन ह्वै जोई।
नारायन कहि नारद निरनौ, व्यासदेव देख्यौ जिह वरनौ ।।२०७६

———

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बुधसिंह चारण रचित

देवीचरित

दशम-स्कंध

दोहा

नारायन नारद कह्यौ, दसम भाग उपदेस।
सूत सोनकादिकन कौं, वरनत कथा विसेस।।१
जोइ मन्वंतर रूप जिह, मिस्रत चरित महाँन।
कहत पूज आकार कौं, जाँनहु देवी जाँन।।२

छंद पद्धरी

नाराँयन वरनत निसंदेह, अभिराँम कथा सुनलेहु येह।
हरि नाभ कमल विध प्रगट होय, सबही विसतारी सृष्टि सोय।।३
आनन[1] स्वायंभू मनू आद, परगट जिहं कीनौ तज प्रमाद।
सतरूपा राँनी तिही साथ, निज सृष्टि हेत दीय लोकनाथ।।४
उपदेस दयौ दंपत अनूप, भक्ती तुम देवी करहु भूप।
सुन वचन पितामह मनु सयाँन, भारजा संग लै त्याग भाँन[2]।।५
तेऊ खीर-समुद की जाय तीर, ध्यावन कौं देवी लगे धीर।
मृतका की मूरत सुभग मंड, अवसेस करन लागे अखंड।।६
जहाँ मंत्र-वागभव करचौ जाप, तन सौं दोऊ लागे करन ताप।
हठ जीत स्वास कौं निराहार, पुन काँम-क्रोध आसा प्रहार।।७
इक पाव रहे ठाढे अखंड, मूरत देवी की हृदय मंड।
धारचौ सत वत्सर लाग ध्याँन, जब देवी दरसन दयौ जाँन।।८
वनंना करी राजा विचार, पुन देवी उपज्यौ भक्ति प्यार।
वर माँग कह्यौ राजा विसेस, उरमै नही राखहु कछु अँदेस।।९

---

१ मुख। २ भवन=आवास-गृह।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मुख राजा बोल्यौ सुनहु माय, संतती वढावहु सुख सुभाय।
ग्रंतमैं मुक्ति कौं देहु ग्राप, तँन सौं मम छूटै त्रहूँ ताप ।।१०
देवी बर दैकै चली देस, विंध्याचल पर्बत पै विसेस।
रोक्यौ सु प्रथम जिह सूर राह, थिर कीय ग्रगस्त मुनि तप ग्रथाह ।।११
सोनकादिकन मिल कह्यौ सूत, ग्राख्याँन सुनावहु इह ग्रभूत।
जब सूत कहन लागे जनाय, गिर बिंध्याचल कौ बल गनाय ।।१२
पर्वत विंध्याचल ग्रत पवित्र, तरु जापै सोहत जत्र-तत्र।
जापै मृग खगकौ वास जाँन, ग्रफछरा देव ता रहत ग्राँन ।।१३
ग्रागे मुनि नारद तँहीं उद्ध, पूजा जिह कीनी गिर प्रबुद्ध।
सतकार पाय बैठे सुथाँन, बोल्यौ विंध्याचल विमल बाँन ।।१४
कहाँतै मुनि ग्राये कहहु काज, मम वात सुनावहु माहाराज।
जलबालक दीनौ मुनि जब्राब, सुनलेहु बात मेरी सताब ।।१५
ग्राये सुमेर सौं इहाँ ऊठ, पर्बत लख गर्वत फेर पूठ।
पारवती कंन्या जन्म पाय, माँनत पवित्र सिवकौं मनाय ।।१६
भये ससुर सिंभु के उग्र-भाग, जहाँ-तहाँ देवन के होत ज्याग।
गिर निखध गंधमादन गरिष्ट, ग्रष्टापद जाही नील इष्ट ।।१७
परवार वसत बहु ग्रास-पास, निध करत रत्न जामै निवास।
सूरज नछ्छत्र जाही सुमार, सिर घूंमत जिह वंदत सँसार ।।१८
ग्रभिमाँन वढचौ ताकौं ग्रखंड, महि ऊपर माँडी सथिर मंड।
याही तै माँनत स्रेष्ट ग्राप, उर माँन भयौ जातै ग्रमाप ।।१९
माँनी तज हम तौ चले माग, विंध्याचल देखन तुहि विभाग।
इह कहकै केऊ दिन रहे ऊद्ध, पुन वृह्मलोक चाले प्रबुद्ध ।।२०
गवने जव नारद पिता-ग्रेह, छल-बल जलबालक करत छेह।
जलवालक हिमचल इधक जाँन, उपज्यौ ग्रंदेसौ हृदय ग्राँन ।।२१
हिमगिर कौं जीतन वढी हाँम, करनै मन-वंचत सिद्ध काँम।
विंध्याचल करकै इह विचार, तहाँ हिमगिर जीतन भयौ त्यार ।।२२
घूंमत नछ्छत्र गृह सीस घेर, इन रोक करहु तापै ग्रँधेर।
ग्राकास मग्ग वाढचौ ग्रपार, कीय सूर रोककै ग्रंधकार ।।२३

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सब लोकपाल लौ प्रजा-साथ, उद्यम-विहीन हुयगे अनाथ।
जम वरुन इंद्र पोलस्त[१] जाय, सतधृती[२] करी विनती सुभाव ।।२४
विध संग लये सब देव-वृंद, चल गये सिंभु-पै छोर छंद।
सिव आगै करकै विध समेत, निज विस्नू के पँहुचे निकेत ।।२५
विस्नू कौं भाख्यौ सब वृतंत, उतपात विंध कौ आद अंत।
जब रमाँनाथ हू समय जाँन, सब देवन कीनौ समाधाँन ।।२६
देवन उपोह कर हरी देख, वेदना कहन लागे वसेख।
विंध्याचल रचना कीय विचत्र, मारग कौं रोक्यौ जाहि मित्र[३] ।।२७
संध्याविहींन दुज रहत सर्ब, सब निर्बल हुय बैठे सुपर्ब।
मेटहु संकट कौं माहाराज, वीनती करत इह छोर व्याज ।।२८
सुन विनय हरी बोले सुभाय, निज वात सुनहु तुम सुर निकाय।
पुन मुनि अगस्त के जाहु पास, वस रह्यौ विसाला पुरी[४] वास ।।२९
वँह समय पाय करहै उपाय, भगवती-उपासक भक्ति भाय।
पावन अगस्त मुनिवर प्रबुद्ध, सो करहि तुमारौ काज सिद्ध ।।३०
प्रारथना करहू जाय पास, जीय माँझ भरोसौ राख जास।
सुनकै श्रीविस्नू समाँचार, कासी चल आये जुत करार ।।३१
मुनि सौं प्रनाँम कर कह्यौ मंत, विंध्याचल जू कौ छल वृतंत।
वातापि पचावन तिहि वेर, उठ चले जगत मेटन अँधेर ।।३२
स्री लोपामुद्रा लई साथ, नमकै पद वंदे विस्वनाथ।
करकै पुन वंदन कालराज[५], संबोध देय मुनिवर समाज ।।३३
साखी गँनेस की पूज्य साध, अरु देवी दुर्गा जप अराध।
दक्षन-दिस चाले लखत देस, भर रह्यौ अँधारौ भींम भेस ।।३४
पुन चलकै ताके गये पास, उत्सेध[६]-स्रंग चूंमत अकास।
विंध्याचल देखे मुनि वरिष्ट, उर भयौ नंम्र निज जाँन इष्ट ।।३५
कीनी सु दंडवत तिही काल, कर सीस-धार कुंभज कृपाल।
आसिष दे बोले रिखी एम, निरवाह करहु तुम कहत नेम ।।३६
जौलौ फिर आवै इहाँ जाग, मम सुलभ उतारहु समुझ माग।
उठकै नन वाढहु फेर ऊद्ध, पर्बत पुनीत सब विध प्रबुद्ध ।।३७

१ कुबेर। २ ब्रह्मा। ३ सूर्य। ४ काशी। ५ कालभैरव। ६ ऊँचा।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

विंध्याचल दक्षन करचौ वास, श्रीसैल नगर मै सावकास।
मलकार्जुन तीरथ महादेव, सुख पाय सुधारत रहे सेव ।।३८
ध्रुव मलयाचल पै रच्यौ धाँम, कासी आवन कौ तज्यौ काँम।
कीनौ अगस्त इह ऊद्ध काज, सुख दीनौ भूसुर सुर-समाज ।।३९

दोहा

स्वायंभू मनु की सकल, उतपत भाखी आद।
मुनि अगस्त पुन विंध मत, वरनन कीय संवाद ।।४०
सुनै गुनै सौ होय सुख, पावै ग्याँन प्रतीत।
धन वाढै वाढै धरम, जुद्ध भूप ह्वै जीत ।।४१

छंद पद्धरी

मनु सुतन भये मंडन मृजाद, प्रीयवृत्त अवर उत्ताँनपाद।
इह उभय पराक्रम अप्रमेव, श्रीदेवी करता पर्म सेव ।।४२
पुन स्वारोचिष मनु भये प्रतिष्ट, उर देवी साध्यौ ध्याँन इष्ट।
जमुना के तट-पै जही जाय, जप करन लगे आसन जमाय ।।४३
वीते सु वर्ष द्वादस वसेस, दुति देह वही वढी माँनहु दिनेस।
तँहाँ देवी दरसन दयौ ताहि, जब स्तुति करी कर जोर जाहि ।।४४
तारनी[1] सक्ति दीय राज तास, पुहमी प्रसिद्ध वाढचौ प्रकास।
भय मन्वंतर कौ सोई भूप, रुचि धर्म सुधारत आप्त-रूप ।।४५
भोगे जिह सुख सौं राजभोग, पद-मुक्ति होत करकै प्रीयोग।
वयकुँठ गयौ तज पुँहम-वास, अंत-पै जक्त ह्वैकै उदास ।।४६
पुन भये मनूँ प्रीयवृत्त पूत, उत्तँम नामा सोइ अत अभूत।
श्रीगंगा-तट पै गये सोय, जप करचौ वागभव मंत्र जोय ।।४७
त्रय वर्ष विताये करत ताप, अंबा दीय दरसन आय आप।
मनु भये वसुमती के महाँन, संतती बुद्धि वाढो समाँन ।।४८
सुख राज भोगकै गये स्वर्ग, वसुमती त्यागकै बंधुवर्ग।
प्रीयवृत्त पुत्र तामस पुनीत, जोई भये मनूँ सब सत्रुजीत ।।४९

---

१ तारिणी।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

नर्बदा-कूल दक्षन निदाँन, जप बीज-मंत्र क्लीं करचौ जाँन।
कीय सुमरन देवो पुस्पकाल, आराध वृत्त आस्त्रन उजाल ।।५०
कर स्तुत निकंटक राज कीन, दस पुत्र अंबिका ताहि दीन।
तिह राज-भोग तन करचो त्याग, भगवती-लोक पँहुच्यौ सभाग ।।५१
प्रीयवृत्त-पुत्र रैवत प्रतिष्ट, यमुना-तट देवी साध इष्ट।
सो भये मनू बहुरैं सधीर, परजा की मेटत रहे पीर ।।५२
स्वर्गकौं गये सोई सिधाय, वसुमती वीच कीरत वसाय।
मनुवन की भाखी कथा मूल, श्रीदेवी सेवक साँनुकूल ।।५३
खिति षष्टम मनु की सुनहु ख्यात, वर अंग[1]सुतन चाक्षुक विख्यात।
सेवक देवी के सावधाँन, मुनि पुलह करचौ जाही मिलाँन ।।५४
सरनागत ह्वैकै कह्यौ साच, विध-जुक्त विचारहु मोर वाच।
सब विध सौं पाँऊँ राजश्रीय, द्रढ भक्ति वढै देवी दुतीय ।।५५
संतती लहूँ वसुधा सिवाय, परमातम परसूँ मोक्ष पाय।
सुन पुलह मुनी नृप समाचार, वोले हित चित सौं मति विचार ।।५६
आराधन देवी करहु आप, पैहौ मन-वंछत तिह प्रताप।
जप जिही वागभव[2] लहहु जाँन, सब विध सौं ह्वैकै सावधाँन ।।५७
मुनि करचौ जही उपदेश मंत, उठ विरजा[3]-तट चाले इकंत।
जप करन लगे तप तँही जाग, वीते सु वर्ष द्वादस विराग ।।५८
देवी दीय दरसन ह्वै दयाल, वर माँगहु बोली भुज विसाल।
सुन चाक्षुक देवी वचन स्राँन, जव बोल्यौ राजा समय जाँन ।।५९
वर दीजै देवी उर-विचार, अंतर की जाँमनि जन-अधार।
अहलोक सधै परलोक आद, महि-मंडल विलसूँ जुत मृजाद ।।६०
अभिलाखा उपजी इही आय, तुव जाप जप्यौ मैं तन तपाय।
जव देवी चाक्षुक भक्त जाँन, दीय मन्वंतर लग राज-दाँन ।।६१
मनु सोई भये षष्टम महीप, देसांतर जीते सकल दीप।
कीय राज अडग लहि पुत्र केक, येकतै पराक्रम अधक येक ।।६२
सुख राजभोग करकै सुभाय, परलोक गयौ पद-मुक्ति पाय।
बैवस्वत मनु सप्तम विख्यात, स्वाँमी मन्वंतर भये सुग्यात ।।६३

---

१ राजा अंग। २ वाग्भव। ३ विरजा नदी।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

देवी प्रसाद सौं अ्रत दयाल, करता प्रभाव वरताव काल।
सावर्न[1] होयगे मनूँ सेख, वरताव काल आदक विसेख ।।६४
पति भये मनंतर सोइ प्रसिद्ध, सब्र राज लीया लैकै समृद्ध।
तिह करनी कीनी तन-तपाय, पुनि देवी सौं वरदाँन पाय ।।६५
सो कहत सबै आख्याँन सार, सुनीयै रिखी नारद समाँचार।
स्वारोचित मन्वंतर मँह सुभाय, ऊपजे येक नृप सुरथ आय ।।६६
चैत्रांसी[2] जाकी सुद्ध चाल, भये कोलापुर नगरी भुवाल।
दाँनी सोई पुज्यक विप्र देव, अरु सत्रुन सौं रन मै अजेव ।।६७
भावी वलिष्ट तै पलट भाग, पौऊत्र ध्रुव कौ रीस पाग।
नृप नंद आय घेरचौ सुनग्र, संग सेना लैकै भट समग्र ।।६८
जाजुल्य भयौ केऊ दिवस जुद्ध, वाढचौ सु उभय ओरन विरुद्ध।
नृप भयौ पराजित सुरथ नाँम, बदलकै मंत्रि-दल भयौ वाँम ।।६९
राजा तव भागौ छोर राज, आपनौ जाँन सब विध अकाज।
वनमै सोइ विचरन लग्यौ वीर, धारी येकाकी नही धीर ।।७०
मिल मेधारिख सौं कह्यौ मंत, भय सोक-ग्रस्त वन मै भ्रमंत।
छुट गयौ राज नही मिटी चाह, दमुना झल जैसी रहत दाह ।।७१
उर मोर सिरावै सोऊ उपाय, विध-जुक्ति उक्ति-दीजै वताय।
ऋखीराज कह्यौ सुन सुरथराज, करीयै हित देवी सुक्रत काज ।।७२
सुभदायक मायक जिह सरूप, भल-रीत सुनहु जिह चिरत भूप।
संसार लीन ह्वै समासुप्त, करता है ताही काल कुप्त ।।७३
जगनाथ जनार्दन जगत-जीव, सवहीय समेट सोवत सदीव।
ताँमसी-सक्ति कौ वढत तौर, मिल अंग प्रमीला सुरन-मौर ।।७४
सोये नागाधिप पीठ सैन, निर्भय हुय तहवाँ मूँद नैन।
मल काँन गिरचौ तव उदध माँहि, नाराँयन ताही लख्यौ नाँहि ।।७५
मधुकैटभ उपजे दनु मदंध, सविसेख बली मल के समंध।
हरि नाभ-कमल मै प्रगट होय, सत्वक गुन सातुकी लीयै सोय ।।७६
जवनीय-वीच दनु फिरत जाय, ऊतमासन विध कौ लखे आय।
भयभीत करे तिन दनुज भेट, हरि नाभ-कमल विध चले हेट ।।७७

---

१ सावर्णि। २ चैत्र वंश में।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

हरि लीन प्रमीला नैन हेर, विस्मय मन बाढचौ तँही वेर ।
मति उपजी विध के हीय-मझार, मोहि स्याहिक नाँहिन विन मुरार ।।७८
गुन सक्ति ताँमसी पाय गात, तेऊ पौढे आपौ भूल तात ।
जब सक्ति ताँमसी करचौ जाप, वँह विस्नू छोर गई दूर आप ।।७९
वर्नना करी विध पाय वंद, अत देवी हीय वाढचौ अनंद ।
तहाँ जाग सेषसाई[1] तुरंत, विध कहन लगे अपनौ वृतंत ।।८०
सुनकै मधुकैटभ वात स्राँन, गति सीघ्र करचौ जुध-काज गाँन[2] ।
इतने-पै दाँनव मिले आय, करनै नियुद्ध लागे कुपाय ।।८१
आई न दनुजकै अंग-आँच, परिवत्सर वीते सहँस पाँच ।
देवी तव हरि की दसा देख, वस मोह करे दाँनव विसेख ।।८२
माँगकै मुखा निज लई मीच, विस्नू दनु मारे जुद्ध-वीच ।
निरनै माहाकाली इही नाँम, कल्याँन करन जग जाहि काँम ।।८३

दोहा

माहाकाली महमाय कौ, कह्यौ चरित अरु क्रीत ।
लखहु चरित माहालक्षमी, जन रिपु लैहौ जीत ।।८४

छंद द्वै-अख्खरी

मेधामुनि वोले मति महाँन, सुन नृपत-कथा हुय सावधाँन ।
महषासुर प्रगटचौ जब महीप, जिह लोकपाल कौं लये जीय ।।८५
सुर वृहंमा के गये सरन संग, पुन जाय सिंभु भाख्यौ प्रसंग ।
सिव-वृह्मा मिलकै देव-साथ, निज कथा कही सब रमाँनाथ ।।८६
जब कह्यौ जनार्दन समय जाँन, मेरी इह लीजै वात माँन ।
नारी सौं मरहै महिष नीच, विनता नही ऐसी जगत-वीच ।।८७
मिल सबही मनावहु आदमाय, वँह करहि दैत मारन-उपाय ।
सुर मुनी रमाँपति की सलाह, उठ चले हिमाचल जुत उछाह ।।८८
जगतंबा करनै लगे जाप, तनहू-मनहू सौं भरन ताप ।
जव निखसन[3] लागी अंग-जोत, येकठाँ भई मिलकै उदोत ।।८९

---

१ विष्णु । २ गमन । ३ निकलने ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तासौं इक परगट भई तीय, कर जोर स्तुत सब सुरन कीय ।
महिषासुर मारहुँ कह्यौ माय, सुखी करहु देव करकै सहाय ।।९०
जब देवी देवन कह्यौ जाँन, पति दनुज महिष कौ हरहुँ प्राँन ।
तव दयौ त्रसीरख सिंभु तास, पुन विस्नु चक्र करता प्रकास ।।९१
पासी तिह दीने संखपास[1], जागरव[2] सतघ्नी सक्ति जास ।
पवपान[3] दये धनु-बाँन पूर, जमराज दंड दीने जरूर ।।९२
ऐंरावति घंटा वज्र इंद्र, सुच हार वस्त्र दीने समंद्र ।
दीय परमेष्टी रुद्राक्ष दाँम, लै नीर कमंडल अत ललाँम ।।९३
कीय सूर प्रकासक रोमकूँप, रगमगत किरन तै तेज रूप ।
करवाल ढाल दीय देव काल, नागाधिप[4] दीनी नाग-माल ।।९४
असवारी कारन सिंध येक, उदगद्रि दये रत्नन अनेक ।
कीय अर्पन मद पात्रहु कुबेर, विस्त्रकृत् फरस दीय तही वेर ।।९५
अरु अलंकार दींने अनूँप, रमनीय प्रकासन करत रूप ।
भुज माँझ अठारह भरयौ भार, सविसेख वलय वजुला सु धार ।।९६
अत सुरन करी पूजा अनेक, कर विनय पदारथ दये केक ।
देवी प्रसंन्न ह्वै देव देख, धारयौ असुरन सौं महाँ ध्वेख ।।९७
कर सिंघनाद कोपी कराल, थरहरन लगे दनुँ नीर थाल ।
महिषास्वर सुनकै धुनँ मदंध, वहु सुभट अनीकनी अनी-बंध ।।९८
आयौ सु लरन करकै उमंग, जाजुल्य होन कौं लग्यौ जंग ।
कर कोप तहाँ देवी करूर, चिक्षुर सेनापति करयौ चूर ।।९९
दाँनव दुर्द्धर कौं दयौ दाट, कीय दूर कलेवर सीस काट ।
दुरमुख कौं दीनौ प्राँनदंड, वास्कल ताँमर कौ तन विहंड ।।१००
पुन विड़ालाख्य सेना प्रवेक, असुरन गन मारे येक-येक ।
महिषासुरहू कौं लयौ मार, भूँम कौ उतारयौ सकल भार ।।१०१
भये सुखी देव लहि जग्य भाग, जायकै वसे अप अपुन जाग ।
अघ हरन लक्ष्मी चरित येह, निर्नय कर वर्नय निसंदेह ।।१०२
अब महा सरस्वती चरित आद, वपु धारयौ सुर मेटन विखाद ।
भये प्रगट सुंभ निःसुंभ भूप, आसुर प्रभाव पौरुख अनूप ।।१०३

---

१ वरुण । २ अग्नि । ३ वायु । ४ हिमाचल ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जिह देवन जाती लये जीत, दिसपाल सोम पावक अदीत।
जुर हिमगिर पै तिह करचौ जाप, आराधन साधन पुन अमाप ।।१०४
जब कोस रूप सौं दिव्य-जोत, इक अबल भई देवी उदोत।
कौसकी नाँम सुर प्रगट कींन, पुन स्तुत करी बहु विध प्रवींन ।।१०५
देवी तब बोली ह्वै दयाल, हित चाहत जो कछु कहहु हाल।
जब देवन ताही समय जाँन, निःसुंभ-सुंभ भाख्यौ निदाँन ।।१०६
कीय पीड़त देवन दनुज क्रूर, संपत हर लीनी महाँसूर।
निःसुंभ-सुंभ करकै निपात, जन निर्भय करीयै देवजात ।।१०७
देवी देवन सुन वचन दीन, देवी देवन कौं अभय दींन।
उठ चली हिमालय गिर उतंग, इक वाग माँझ करकै उमंग ।।१०८
सेनापति दनुपति महाँसूर, जहाँ चंड-मुंड आये जरूर।
देवी तहाँ सुंदर रूप देख, पिक-वैनी मृगनैनी परेख ।।१०९
नृप सुंभ आयकै तिह नजीक, ठाहर देवी की दई ठीक।
सुग्रींव दूत कौं भेज सुंभ, समजास करी देवी ससुंभ ।।११०
देवी तव बोली दूत देख, वातै सुन लीनी मैं विसेख।
सुंभ नृप कहहु मेरौ सँदेस, याकौ कछु नाँहिन उर अँदेस ।।१११
पन[1] मैं हूँ कीनौ इक प्रमाँन, जाही सु जाय कहीयै सुजाँन।
पति करहुँ मोर-सम बल परेख, तासौं जुध करहूँ धार तेख ।।११२
जीत है सोय मो-पति जरूर, सुख सयन दैहुँगी तँही सूर।
जुध करै आय कहीयौ जनाय, इह कारन ठहरी इहाँ आय ।।११३
प्रति उत्तर सुनकै तुम प्रधाँन, थिरता कर जावहु और थाँन।
देवी सुन वाचा फिरचौ दूत, नृप कह्यौ सँदेसौ आय नूँत ।।११४
निःसुंभ-सुंभ सुनकै निदाँन, भेज्यौ सु धु्म्रलोचन भयाँन।
सो भयौ भसम हुंकार साथ, ह्वै राजा क्रुद्धत पीस हाथ ।।११५
बहु सैनक भेजे बार-वार, रूठी तहाँ देवी रोप रार।
भारथ[2] चढ आये जुगल भ्रात, निःसुंभ-सुंभ कीने निपात ।।११६
देवी निर्भय सब करे देव, अततार्इ जीते दनु अजेब।
सोई महा सरसुती महंमाय, पूजे मिल देवन सुखद पाय ।।११७

---

१ प्रण। २ योद्धा।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

उतपति त्रहु देवी कही ग्राद, मंडता, च्यार वेदन मृजाद ।
माहाकाली भजहू ग्राद माय, पुन महाँ लक्षमी पुज्ज पाय ।।११८
ज्यूँही महा सरसुति लेहु जाँन, इनके सम संमृथ नहिन ग्राँन ।
मेधा मुनि सुनके येहु मंत, तप करनै चालेऊ नृप तुरंत ।।११६
निर्जनवन पहुचे तव नरेस, देख्यौ इक उत्तम महाँ देस ।
जप जपनै लागौ तँही जाग, श्रीदेवी चरनन साँनुराग ।।१२०
देवी नरपति पै ह्वै दयाल, तिह दरसन दीनौ तातकाल ।
वरदाँन लहहु कहि वार-वार, वरवीर मनो वाँचत विचार ।।१२१
जव सुरथ कह्यौ विव करग जोर, महमाया सुनीयै विंनय मोर ।
मिट जाय ग्रविद्या जाल मोह, कसमल नहि व्यापै काँम कोह[1] ।।१२२
रेना निस्कंटक मिलै राज, सुखदायक मंत्री भट-समाज ।
सुरथ के स्रवन सुन इह सवाल, कहि तथाँग्रस्तु देवी कृपाल ।।१२३
पुन बोली तासों पेम-पूर, जन्मांत कथा भाखत जरूर ।
भूंम पै होयकै पूत भाँन, सावर्न मनू ह्वै हौ सुजाँन ।।१२४
संतति लहहू तुम राज सिद्ध, पुहमी प्रभाव वाढहि प्रसिद्ध ।
ग्रंवका पाय वरदाँन येह, सावर्न भये मनु निसंदेह ।।१२५
ग्राख्याँन सुरथ नृप कह्यौ ग्राद, मनु फेर भये रचता मृजाद ।
कोऊ पढै सुनै जाकौं कवेस, वसुधा प्रभाव वाढै वसेस ।।१२६

सोरठा

षट मनुवन की ख्यात, कहत सोई विसतार कर ।
जोन जुगंतर जात, होनहार वस होयगे ।।१२७

छंद द्वै-ग्रक्षरी

नाराँयन वरनत प्रति नारद, विमल कथा षट मनू विसारद ।
वैवस्वत मनु सुत षट वीरा, धरम-धुरंधर भये मति धीरा ।।१२८
नाँम जही कारूख[2] निदाँना, प्रखद[3] ग्रौर नाभाग प्रमाँना ।
तथा दिष्ट सरजात[4] त्रसंकुव, हितकारी जग महाबली हुव ।।१२६

१ क्रोध । २ करुष । ३ पृषध्र । ४ शर्याति ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तट जमना कै पहुँचे तेऊ, करनी करन लगे विध केऊ।
निज आस्रम कर-करकै न्यारा, मूरत देवी माँड मझारा ।।१३०
सोरह विध पूजा कर साधना, उर मँह लागे मंत्र अराधन।
वायु जीत अरु प्यास विभूखा, द्रढ तप करन लगे निरदूखा ।।१३१
किरन-पाँन अरु धूँम-पान कर, ध्याँवन देवी लगे ध्याँन धर।
जिन तप सौं मन कौं जीते, बारह वरख तहाँई बीते ।।१३२
देवी आय दयौ तव दरसन, पेखी षट भाई ह्वै परसन।
करनै लगे वर्नना केती, समुझ-समुझ अपनी मति-सेती ।।१३३
जाँन निरंतर जन षट जन कौं, उत्तँम वर दीनौ पुन उनकौं।
संतति वढहि राज-सुख साजा, मन्वंतरा अधिप माहाराजा ।।१३४
समय-समय सब होउ सुग्यानी, धरा-धरम वाढहि रजधाँनी।
सुजस लेय परलोक सिधावहु, वैवस्वत कुल नाँम वढावहु ।।१३५
देवी भ्राँमरि जग-सुखदाई, सबहिन दै वरदाँन सिधाई।
ये मन्वंतर होवहि आई, समय पाय जग कौं सुखदाई ।।१३६
जुदे-जुदे तिह नाँम जनावत, गृंथति वेद पुराँनन गावत।
प्रथम दक्षसावर्णहु पावन, नवम मनूँ भये बिरद निभावन ।।१३७
दूसर दसम भये मनु दाँनी, सुनहु मेरसावर्न[1] सुग्याँनी।
सूर्यसावर्ण तीसरे सुनीयै, ग्यारहमे मनु तिनकौं गनीयै ।।१३८
चौथे भये चंद्रसावर्णी, वारहमे की कथा जु वरणी।
रुद्रसावर्ण पाँचमे रहेऊ, तेरहमे मनूँ भये जु तेहू ।।१३९
भये विस्नूसावर्णि छटे भल, चौदहमेसे विगत दंभ छल।
भ्राँमरी देवी सुनीयै भासन, निर्मल कथा महाअघ नासन ।।१४०
अधोलोक देवन आराती, जहाँ बसत सब दाँनव-जाती।
जहाँ तैं येक दिती कौ जायौ, अरुण नाँम भुँव ऊरध आयौ ।।१४१
गंगा-तट हिमगिर पै गयौ, ठहर हेत ब्रह्मा तप ठयौ।
स्वास निरोध करन कीय साधन, अरु गायत्री-जाप अराधन ।।१४२
पत्र भखे केऊ दिन पीय पाँनी, वरख सहँस-दस वार विताँनी।
वरख सहँस-दस पीयौ वयारा, अयुत वरख जिह तज्यौ अहारा ।।१४३

१ मेरुसावर्णि।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तप-ज्वाला वाढी तिह तन की, केऊ उड़नै लागी तिह कनकी ।
देव लगे सबही वपु दाधन, सरए गये व्रह्मा हित साधन ।।१४४
अंतरध्याँन करचौ विध ऐसौ, जाँन्यौ तप दानव कीय जैसौ ।
गायत्री संग लै तहाँ गयेऊ, भाँव दनुजकौ देखत भयेऊ ।।१४५
वर माँगहु विध कह्यौ विचारी, सत्य कहत मै सुनहु सुरारी ।
कह्यौ दनुज मेरी इह काया, मरै न मारी हरै न माया ।।१४६
जग मे अमर होय सुरजेता, जहाँ-तहाँ विचरूं जगत-जनेता ।
जव विध कह्यौ दनुज सुन जाही, हमहु काल बल गये हराही ।।१४७
करूँ अमर तेरी इह काया, मिलै न कोउ सामग्री माया ।
जोग लहहु वरदाँन जाँनकै, मै हूँ दै हूँ साच माँनकै ।।१४८
जव बोल्यौ दाँनव कर-जोरी, महाँराज इह विनती मोरी ।
जुध मरू न मै सस्त्र-जोग सौं, रत ह्वै आधी व्याध रोग सौं ।।१४९
सुर नर-नारी घात न साधै, बपु चौपद द्वीपद नही बाधै ।
इह वर देवहु नाथ उदारा, ह्वै वंचत सब काँम हमारा ।।१५०
तथाअस्तु कहि गये विधाता, वर लै दनुज भयौ विख्याता ।
धाँम पताल दनुज सब धाये, इक-इक अरुन पास सब आये ।।१५१
तिलक करचौ नृप ताकौ ताके, थाँन-थाँन देवत सब थाके ।
भयकौं पाय सरन सिव भागे, लारै मारन दाँनव लागे ।।१५२
चिंतातुर ह्वैकै मति चित सौं, हीय सोचन लागे निज हित सौं ।
भई गिरा नभ भजौ भवाँनी, जहाँ-तहाँ सब देवन जाँनी ।।१५३
विबुधन गिरा कही फिर वाचा, सुत दिती इहै भक्त है साँचा ।
जप गायत्री करत है जौलौं, तुमसौं इह मरै नहीं तौलौं ।।१५४
जब सिद्धांत देवन इह जाँन्यौ, पठवन कौं निज गुरू प्रमाँन्यौ ।
गुरू जाँनकै अत गत गहनी, करी सबै देवन इह कहनी ।।१५५
जप भूलै गायत्री जैसौ, तुम उपाय करीयै गुरू तैसौ ।
जब गरू गये अरुन जिह जागा, सुवच कह्यौ दनुविंद्र सभागा ।।१५६
गायत्री-जप करचौ गोयकै, जाँन्यौ नही जजमाँन जोयकै ।
आयौ मैं करनै उपदेसा, रह्यौ न राग-द्वेष कौ रेसा ।।१५७

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

स्वर्ग भोग भोगहु सुखदाई, वसहु होय निर्भय वरदाई ।
इह कहि गये वृहसपति आगै, भृगु सिःख्खन उर संसय भागै ।।१५८
भोग-विलास करन रस भीनौ, द्रढ गायत्री जप तज दीनौ ।
कला घटन लागी दनु केरी, घट मै बाधा वढी घनेरी ।।१५९
वृसपत आय कह्यौ वरतंता, समले सुर देवी के संता ।
जग करनै लागे केऊ जपकौं, तन कसनै लागे बहु तपकौं ।।१६०
कीय अराधन साधन केता, विध-विध सौं देवत ततवेता ।
दया देख देवी दीय दरसन, पढ-पढ स्तुत करी सुर परसन ।।१६१
वेख अनूँपम जुतै भवाँनी, वपु सुगंध फैलत विलगाँनी ।
आस-पास अली उड़त अनंता, जपत मनहु ह्रींकार जयंता ।।१६२
सुर विरंच विस्नू कर साखी, भ्राँमरी स्तुति सव[1] मिल भाखी ।
मूल स्तुति सोइ लिखत मनोहर, व्यास रचत जाँनत जिह दुजवर ।।१६३

स्तोत्र मूल

नमो देवि महाविद्ये सृस्टिस्थित्यन्तकारिणि ।
नमः कमलपत्राक्षि सर्वाधारे नमोस्तु ते ।।१
सविश्वतैजसप्राज्ञविराट्सूत्रात्मिके नमः ।
नमो व्यागतरूपायै कूटस्थायै नमो नमः ।।२
दुर्गे सर्वादिरहिते दुष्टसंरोधनार्गले ।
निरर्गलप्रेमगम्ये भर्गे देवि नमोऽस्तु ते ।।३
नमः श्रीकालिके मातर्नमो नमः सरस्वती ।
उग्रतारे महोग्रे ते नित्यमेव नमो नमः ।।४
नमः पीताम्बरे देवि नमस्त्रिपुरसुंदरि ।
नमो भैरवि मातंगि धूमावति नमो नमः ।।५
छिन्नमस्ते नमस्तेऽस्तु क्षीरसागरकन्यके ।
नमः शाकम्भरि शिवे नमस्ते रक्तदंतिके ।।६
निशुंम्भ-शुंम्भ-दलनि रक्तबीजविनासिने ।
धूँम्रलोचननिर्न्नासे वृत्रासुरनिर्वाहिणि ।।७

---

१ मू. प्र. सवन ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

चण्ड मुण्डप्रमाथिनि दानवान्तकरे सिवे।
नमस्ते विजये गंगे सार देवी कचानने ।।८
पृथ्वीरूपे दयारूपे तेजोरूपे नमो नमः।
प्राणरूपे महारूपे भूतरूपे नमोस्तु ते ।।९
विस्वमूर्ते दयामूर्ते धर्म्ममूर्ते नमो नमः।
देवमूर्ते ज्योतिमूर्ते ज्ञानमूर्ते नमो नमः ।।१०
गायत्री वरदे देवि सावित्रि च सरस्वती।
नमस्स्वाहे स्वधे मातर्द्दक्षिणे ते नमो नमः ।।११
नेति नेतीति वाक्यैर्य्या बोध्यते सकलागमैः।
सर्वप्रत्यक्स्वरूपान् ताम्भजाम परदेवताम् ।।१२
भ्रमरैर्वेष्टिता यस्माद्भ्रामरीया ततस्स्मृता।
तस्यै देव्यै नमो नित्यन्तित्यमेव नमो नमः ।।१३
नमस्ते पार्श्वयोः पृष्ठे नमस्ते पुरतोम्बके।
नमः ऊर्ध्वन्नमश्चाधस्सर्वत्रैव नमो नमः ।।१४
कृपां कुरु महादेवि मणिद्वीपाधिवासिनि।
अनन्तकोटिब्रह्माण्डनायिके जगदम्बके ।।१५
जयदे देवी जगन्मातज्जयदेति परात्परे।
जयश्री भुवनेसानि जय सर्वोत्तमोत्तमे ।।१६
कल्याणगुणरत्नानामाकर भुवनेश्वरी।
प्रसीद परमेसानि प्रसीद जगतोरणे ।।१७।।इति।।

स्तुति करी देवन समुदाया, माहेश्वरी सुनी महमाया।
कह्यौ प्रगट करीयै कछु काजा, सुखी होउ सब देव-समाजा ।।१६४
जब सुर बोले सब कर जोरी, माता सुनहु अरज इह मोरी।
प्रगटचौ दनु अरुनाख जु पापी, पीड़त देवन करत प्रतापी ।।१६५
तिह मिटायकै हमकौं तारहु, विहत वेद विध विरद विचारहु।
सुन देवन की वात सयाँनी, भय मेटत भई उदित भवाँनी ।।१६६
उर विचार कछु कीन उपोहा, कर मुष्टी खोली कर कोहा।
छुटे भ्रमर पाँखन छननाते, भई भीर आँखन भननाते ।।१६७

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अवनी गगन ऊठ अँधीयारी, कांठल मनहु मेघ को कारी ।
असुरन लैन लगे सोई आँटा, काढ पूँछके तिछ्छन काँटा ।।१६८
विषधर डसन जेम विष वारे, कंटक छेदन लगे करारे ।
येक असुर पर गिरत अनेका, सलभा ज्यूँ कृषि खेमे तसका ।।१६९
ताक-ताक असुरन के तनकौं, दीनौ मोद महाँ देवनकौं ।
मारे असुर सबै छिन माँही, वपु विदार जहाँ-तहाँ विलगाँही ।।१७०
सुर-जाती सब करे सुखारे, निहसन लागे संख नगारे ।
जय-जय सबद पढत कर जोरै, किंन्नर गंध्रव मिलै करोरै ।।१७१
गीत लगी अछ्छर बहु गावन, पढ-पढ देवी कीरत पावन ।
देवी नाँम भ्राँमरी दीनौ, निरख येहु अवतार नवीनौ ।।१७२
जुर-जुर पूजा करी जु जाही, आराधान साधन अवगाही ।
वेद पढन लोग सब व्रांमन, जग्य करांय बोध जजमाँनन ।।१७३
च्यार वरनकौ धरम चलाई, श्रीईसाँनी जोत समाँई ।
भ्राँमरी देवी चरित जु भाख्यौ, उर देवी भक्ती अभिलाख्यौ ।।१७४
मनुँवनहू की कथा जु मंडी, श्रवन जिनहु परभाव अखंडी ।
पातक मिटै सुजस सुन पावन, निगँम कहत त्रयताप-नसावन ।।१७५

———

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बुधसिंह चारण रचित

देवीचरित

एकादश-स्कंध

दोहा

कथा जु दसम-स्कंध की, सुन नारद मुनि स्याँन।
श्रीनाराँयन सौं समुझ, पूँछ्यौ प्रस्न प्रधाँन ।।१
अब कहीयै आचार वँह, देवो होय दयाल।
भाव वढै साची भगत, नर सुर होय निहाल ।।२

छंद पद्धरी

बोले नाराँयन विमल-वाँन, सुन नारद मुनि वातै सयाँन।
आचार वेद विध की उदंत, सुखदायक साधन परम संत ।।३
जिह अनुष्टाँन कर करै जाप, ताके मिट जावत तीन ताप।
जोइ विप्रन-जाती करन जोग, लख तिह अधार सब करै लोग ।।४
भाखत अब तातै तत्व-भाग, माँनव सुर पावै धर्म-माग[1]।
जग-हेत कहत आचार जोय, सुन होय कृतारथ सुजन सोय ।।५
इह जीव जाँनीयै रूप आद, परतत्र घेर लीनौ प्रमाद।
जोनी सौं जोनी वीच जात, वस कर्म देह उतपत विलात ।।६
पुन धर्म सहायक तिह पिछाँन, नही मात-पिता पुत्रही निदाँन।
तिह धर्म-हेत साधन तितेक, विध-जुत सोई करीयै गहि विवेक ।।७
स्रुति सुँमृति पुराँनन लेय साच, विध अरु निषेध के लखै वाच।
आचार धर्मकौ मूल आद, पथ गहै सुद्ध तजकै प्रमाद ।।८
चाहीयै विप्रकौं इहीं चाल, आचार रहै नित अंतराल।
वाढै आयुर्बल तिह विसेस, अघ करै नहिन वाधा असेस ।।९

---

१ धर्म का मार्ग।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जीवन-मुक्ती सो लहै जीव, सुख ग्याँन धर्म बाढै सदीव।
जग जन्म-मरण सौं छूट जाय, आचार धर्म-वर्धन उपाय ।।१०
काढन जग याही अंध कूप, आचार दीप जाँनहु अनूप।
मनु कहे वाक्य सुमृति मझार, आचार धर्म ही कौ अधार ।।११
आचार-हीन दुज सूद्र येम, जाँनीयै अधिक नही न्यूँन जेम।
आचार दोय परकार येह, निर्नय तिह करीयै निसंदेह ।।१२
सास्त्रीय और लोकोक समाँन, जाँनकै करै दोनूँ सुजाँन।
धर ग्राँम-धर्म अरु जात-धर्म, कुल देस-धर्म आस्रत सुकर्म ।।१३
जोई है करनै जोग जाँन, करीयै सुधर्म सौं नहिन काँन।
नाराँयनहू के दोय नैन[1], विध औ निषेध के कहे वैन ।।१४
प्रत जिती पुराँनन हृदय पेख, द्रग सौं प्रतक्ष त्रहु लेय देख।
इन मै विरोध कहुँ परै आय, जाँनकै असुभ कौं त्याग जाय ।।१५
जासौं सुख उपजै जात जीव, साधन सोइ करीयै हेत सीव।
कहुँ कह्यौ गवालंभन[2] हु कर्म, इन आद कर्म सोऊ अधर्म ।।१६
अनुकूल वेद तंत्रहु इतेक, जाँनीयै सदा उत्तम जितेक।
वेद सौं विरोधी जिती वाँन, देत है नर्क-वासौ निदाँन ।।१७
वेद कौ पंथ उत्तम विचार, साधै जग प्राँनी सदाचार।
करीयै कुसास्त्र नही ग्रहन कोय, हित मुक्ति सधै नही नर्क होय ।।१८
उत्तम विधाँन करीयै उपाय, मन-वचन कर्मना कौं मिलाय।
उपकार करयौ कहा करहि और, भामन सोइ करीयै साँझ-भौर ।।१९
चितवन नही करीयै दुराचार, वाँनीं क्रमना सौं मन विचार।
वेदन मै वरनी इही वात, जाँननै अरथ सब मनुज-जात ।।२०
लेखत हित आन्हित[3] इहाँ लेख, वतलाय काल आदिक विसेख।
रह जाय पहर भर जबही रात, तव सयन त्यागकै उठै तात ।।२१
पग वाँमै ऊपर दहिन पाय, जाँनु सौं जाँनु बैठे जमाय।
मुख मोर चिबुक छाती मझार, दोऊ नैनन के मूँदै द्वार ।।२२
दाँतन के ऊपर दाँत देय, लोला[4] तालू मै थपै लेय।
वपु इंद्रिन कौं रोकै जु वेग, उरमी कौं त्यागै सब उदेग ।।२३

१ श्रुति और स्मृति। २ गोबध। ३ अहित। ४ जिह्वा।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

आतमा जोत रूपी अनूँप, सोई विचार अपनौ सरूप।
स्वासा गृह प्राँनायाँम साध, इक मंत्र सहित इक निरउपाध ॥२४
भल रीत जाँनीयें उभय भेद, विन लछ्छ लछ्छ-जुत कहे वेद।
तेऊ षट प्रकार के कहे ताह, रेचक कुंभक अरु पूर्क राह ॥२५
विच वाँम नासका रोक वायु, जप प्रनव करत वत्तीस जापु।
इम दछनहू पुट करै ओर, जा प्रनव वत्तीसहु जोर-जोर ॥२६
गनती चौसट कौ लहै ग्याँन, सोरह पूरे करलै समाँन।
ऊतरै चढावै स्वास येम, निसपाप होन कौ इहीं नेम ॥२७
निज मूलाधारहु लिंग नाभ, लहि हृदय कंठ अरु भाल लाभ।
दुइ पत्र कमल कौ दरस देख, वरणहु हः क्ष लखीयें विसेख ॥२८
वर कर प्रनाँम आगै वढंत, कंठ के कूप मारग कढंत।
षोड़स अक्षर कर लखै खाँत, पुन स्वर अरु अक्षर जुरी पाँत ॥२९
दल च्यार कमल थित मूल देस, वर्नन विचार लीजै विसेस।
कुंडलनी करकै नमस्कार, निज गरु-ध्याँन करीयें निहार ॥३०

गुरु मन्त्र:

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुगुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुरेव परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥१ इति॥

आचार सुनावत गुरु उदंत, सिख ग्रहन करत सोई परम संत।
विद्या अभ्यास कर पढै वेद, भ्यासै न विना आचार भेद ॥३१
कवहूँ पवित्र नही होय काय, जन देह तजै जब त्याग जाय।
जम जावत पछ्छी पछ्छ ज्याँह, कुल आन त्याग उड़जात काँह ॥३२
आचार विना षट वेद अंग, सुभ विद्या प्राँनी तजत संग।
गहि प्रथम सुद्ध आचार ग्याँन, प्रति वेद पढै सास्त्रहु पुराँन ॥३३
विद्या सिध होवत जुत विवेक, पंडित सोइ जाँनहु जन प्रवेक।
उठ व्रंह्म-महूरथ वीच आद, प्रमीला त्याग आलस प्रमाद ॥३४
धारै गुरु हरिकौ हृदय-ध्याँन, पुन वेद पढै विद्या पुराँन।
अथवा-क व्रह्म कौं करै याद, विध जुक्ति दंड षट तज विषाद ॥३५
जिम होय येकता व्रह्म जीव, साधना करै तातै सदीव।
जीवन-मुक्ती सोइ लेहु जाँन, आचार समाँन न धर्म आँन ॥३६

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

इह कारन लायक करन याद, माँनव तन वनंत कछु मृजाद ।
पच्चावन दंड जाँनहु प्रमाँन, गनीयत है ऊपा-काल ग्याँन ।।३७
सत्तावन अरुनोदय सु होत, अठ्ठावन दंड प्रातहु उदोत ।
जन प्रात होय जब ऊठ जाय, पुर ग्राँम-सींम जंगल पुलाय ।।३८
सर चाप गिरै जेतक समाँन, जित नैरत दख्खन जाय जाँन ।
जो होय व्रह्मचारी जरूर, पर काँन जनोई रखै पूर ।।३९
पीठ पै गृहस्थी बाँनप्रस्थ, हिलगाय गटी लै आप हस्थ ।
सिर बाध अलप कोऊ वस्त्र सूत, छित पै त्रन मेलै हरन छूत ।।४०

मन्त्रः

देवता ऋषयः सर्वे पिशाचोरगराक्षसाः ।
इतो गच्छन्तु भूतानि बहिर्भूमिङ्करोम्यहम् ।।१ इति

धुर मंत्र पढै फिर मौन धार, इह जाँन लेहु कारन ऊधार ।
पश्चात तजै बस्ती पुरीख, नही वायु अग्न सुरभी नजीख ।।४१
नही गाय विप्र कोऊ लखै जात, द्रग सूरज चंदा लही दिखात ।
मुख उत्तर कीजै दिवस माँहि, रात मै दिसा दक्षन रहाहि ।।४२
जाँनकै तजै फिर इती जाग, देबै मसाँन जहाँ मृतक दाग ।
पर्वत देवालय जलप्रवाह, रहै जीव जहाँ अथवा-क राह ।।४३
बाबी रु बिमोरी तथा बाग, जहाँ हरी त्रण जोती[1] धाँन्य जाग ।
मल-मूत्र करै नही धरम लीन, पुनवाँन[2] पुरख सोऊ प्रवीन ।।४४
जप संध्या वंदन करै ज्याग, रति नारीहू सौं सांनुराग ।
तर्पन अरु भोजन करत तेम, जाँनीयै देव-कारजहु जेम ।।४५
गरू निकट दंत-धावन ग्रहंत, क्रतु व्रंह्म दाँन दाता करंत ।
मल-मूत्र तजै मुख-धार मून, जँन जाँनहु उत्तम जात जूँन ।।४६
मल तजै स्वास समता मिलाय, वढ सकै पेट मै नही वाय ।
मल त्याग उठै कर वाँम माँहि, जुत सिस्न पेल ग्रह दूर जाँहि ।।४७
ढेला त्रण पत्ता मैल ढंक, वायू वचाय चल सूँध वंक ।
जलपात्र भरै सर नदी जाय, कछु दूर जाय सुच करै काय ।।४८

१ जोती हुई ।　२ पुण्यात्मा ।

T　CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कर मृतका लेवै मिलै कूल, औरी जो रातीं पीत धूल।
ब्राँमन खत्री अरु वैस वर्ण, कर सूद्रन कारो सुद्धि कर्ण ।।४९
अथवा-क मिलै जिह देस आद, वर मृतका लेवै तज विषाद।
तहाँ सातौ मृतका देय त्याग, जल मध्यनीय अरु देव-जाग ।।५०
मूषक की खोदी भूँम माँहि, सर्पहू जिह बाँवी माँहि समाहि।
ाथन सौं खनती खुदी होय, सौच सौं बची लीजै न सोय ।।५१
मूत्र सौं दुगुन हैं सौच मूल, त्रगुनौ मैथुन कौ कह्यौ तूल।
तव केवल मूत्रही करै त्याग, लहि गार वार इक लिंग लाग ।।५२
त्रय-बार गार करलै तजंत, कर वाँम धोय जल सुध करंत।
द्वै-वार हाथ धोवै दुहूँन, इनमै क्रम नाहिन करै ऊँन ।।५३
मल त्यागै दूंनौ सौच मेल, पुन गार लेय जल देय पेल।
अथवा इह अनुक्रम येक और, भूँय मल त्याग संध्या-क भौर ।।५४
द्वै-वार लगावै लिंग-देस, रज पाँनी तै हू देय रेस।
मल-थाँन पाँच वेला मलाय, दस वार वाम कर सौच दाय ।।५५
सुभ वार सात दुइ हाथ सोध, विध-जुत गृहस्थ कौ कह्यौ बोध।
दूँनौ वृंहमचारी सुदेह, अरु बाँनप्रस्थ त्रगुनौ जु येह ।।५६
संन्यासि चौगुनौ करै सौच, पग बाँम च्यार वेला जु पौच।
दछ्छन पग छोती करं दूर, जल सौं भिजोय अंबर जरूर ।।५७
मृतका जलहू कौ करै मेल, भूरै करहू सौं झेल-झेल।
इह दिवस कह्यौ आचार आद, माँनीयै रात आधी मृजाद ।।५८
वीमार रात सौं अरध वेस, हित अरथ मग्ग चालत हमेस।
स्त्री सूद्र और बालक सँभार, दूरी दुरगंधी करै द्वार ।।५९
है सोई अस्पक आचार हूँत, मल त्यागै अथवा तजै मूँत।
मनूँ कही नही संख्या मिलाय, करीयै पवित्र सुखदाय काय ।।६०
च्यारू वरनन की इही चाल, तजीयै मलीनता तातकाल।
दुरगंध-जुक्त राखै न देह, आचार सबन कौ सुखद येह ।।६१
परपाटी जाँनहु इह प्रतीत, निज करै सौच कर वाँम नीत।
करीयै नाभी सौं तरै काँम, विसरै न क्रीया जहाँ हाथ वाँम ।।६२
ऊपर नाभी सौं गनहु अंग, पाँनीय क्रीया दछ्छन प्रसंग।
मल तजै हाथ जल-पात्र मेल, जन बैठै कबहु न हाथ जेल ।।६३

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कबहूँ प्रमाद सौं गहै कोय, हथ प्रायश्चित कर सुद्ध होय।
जल कौ अहार त्रय दिवस जाँन, पातक कौं मेटै इह प्रमाँन ।।६४
सुद्धी पुरीख की करत संग, इह क्रीया कीजीयै फेर अंग।
जल कुरला द्वादस कर जरूर, दुरगंध नाक मुख करै दूर ।।६५
वस्ती की वेला च्यार वार, दक कुरला धीरै देय डार।
जल फेर आचमन फेर जाँन, पश्चात् दंतधावन प्रमाँन ।।६६
कंटकी दुधारा वृक्ष कोय, जाही का दातुन लहै जोय।
आंगुल द्वादस कौ काष्ट येक, छुरका सौं लाजै ताहि छेक ।।६७
ये तरवर नीके सात आठ, कंजी गूलर कौ लहै काठ।
आंवहु कदंब लै लोध आध, बेरी अरु चंपक तज विवाध ।।६८

मंत्रः

अन्नादाय व्यूहध्वं सोमो राजायमागतः।
समे मुखं प्रक्षालन्ते यशसा च भगेन च ।।१
तूरने के समय इह मंत्र पढै।
आयुर्वलं यशो वर्च्चः प्रजापशुवसूनि च।
ब्रह्म प्रज्ञाञ्च मेधाञ्च त्वन्नौ देहि वनस्पते ।।२

दोहा

कह्यौ सदा दातुन करन, तिथ प्रतिपदा तजंत।
अमा नवम येकादसी, दीजै काठ न दंत ।।६९
तिथ षष्टी रिववार तिम, करै सु दातन कोय।
पुन्य घटै पातक लगै, सदा अमंगल सोय ।।७०
दातुन करकै दाँन दै, धोय पाव जलधार।
दातुन कह्यौ निषेध दिन, बारह कुरला वार ।।७१
दातुन कर त्रय वार दक, पीयै सु होत पवित्र।
कर साधन उपरांत कछु, तन ह्वै सुद्धी तत्र ।।७२
जलपी अँगुरी तर्जनी, मोर[1] अंगुष्ट मिलाय।
पुट नासा जल जुत परस, सुद्धि करै सरसाय ।।७३

---

१ मोड़।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अंगुठा और अनामिका, द्वै-वेला चख दोय।
सपरस कर करवैं सलल, करैं क्रीया सह कोय ।।७४
काँन अंगुष्ट कनिष्टका, हृदय छुवे निज हाथ।
करतल कर अँगुरीन कर, मेले सपरस माथ ।।७५

छंद पद्धरी

जप गायत्री ओंकार जुक्त, अभ्यास करै निज हृदय उक्त।
करहूँत सिखा बंधन करेह, आचमन करै मुर्जाद येह ।।७६
हीय बाहु कंध सपरस हमेस, देही पवित्र निज करै देस।
छिक्का अर थुवकन भूँठ होत, मिथ्या जु कहन सौं जोयत मौंत ।।७७
ज्यू वात करै दुज पतित जात, पातकी होत है माहापात।
जिह पाप प्रहारन काज जाँन, कर दछ्छन दछ्छन छुऐं काँन ।।७८
जल अग्नि वायु सिस सूर जाँन, कहै वेद वसै दुज दछन काँन।
निश्चिन्त होय कर स्नाँन नित्त, करीयै दुज देही कत्त-कत्त ।।७९
नव द्वार मलिन मै मल निकास, जिह हेत सुद्धि करीयै सु जास।
सुद्धि हेत कह्यो विध प्रात स्नाँन, प्राँनींन कहत वेदहु पुराँन ।।८०
प्रतिगृहन अगंम्या गमन पाप, येकंत मैथुनी दिकहु आप।
तन मन पवित्रहू होत ताहि, निर्मल जल सरवर नदि नहाहि ।।८१
विन स्नाँन क्रीया सब होत व्यर्थ, उत्तँम सिनाँन सुभकर्म अर्थ।
संध्या सिनाँन कुस धर सरंत, कुल उभय सोय पावन करंत ।।८२
सात दिन करै जो नही स्नाँन, संध्या विहीन त्रय दिन सयाँन।
अरु अग्नि दिवस द्वादस असेव, भूदेव सूद्रता लहै भेव ।।८३
कर स्नाँन साधोयै होम काल, क्रत प्रात साँझ मध्याँन काल।
जप गायत्री-सम नही जोय, गाने की रक्षा करै गोय ।।८४
गावन वारे जो छंद गीत, परमार्थ अर्थ साधक पुनीत।
धारचौ गायत्री नाँम धेय, विप्रन-जाती कौ जप विधेय ।।८५
ओंकार तीन व्याहृती उक्त, जप करीयै प्राँनायाँम-जुक्त।
ब्राँमन कौं चहीयै इही बात, पढ करै वेद अध्ययन प्रात ।।८६
अपने कर्मन पै ह्वै अरूढ, पढ वेदिक मंत्रन मति पढूढ।
लोकिक सौं नाँहिन मिलै लभ्य, साधन उपदेसत सुजन सभ्य ।।८७

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सरसौं सुरभी सिर रहत स्रंग, इत संधै जु प्राँनायाँम अंग ।
येकसौं पित्रि होवत ऊधार, चित सुध सौं कीनै सदाचार ।।८८
कर प्राँनायाँम सु इते काँम, धारणा करै दुज सुक्रत धाँम ।
देव रिख पित्र तर्पण द्रवंत, सुच वस्त्र पहर क्रम अनुसरंत ।।८९
रुद्राक्ष धार भस्मी रचाय, जहाँ चाहै जहाँहि ऊठ जाय ।
रुद्राक्ष धरन की कहत रीत, चाहना करै जा सुद्धि चीत ।।९०
बत्तीस कंठमै लेय बाँध, सूतमै धातुमै साँध-साँध ।
मस्तक मैं चालिस करै मेल, सुवृन मै द्वै-द्वै गुहि सँकेल ।।९१
बारह-बारह कौं हाँथ बाँध, सोरह-सोरह कौं बाहु साँध ।
नेत्रन मैं येकही कह्यौ नेम, येकही सिखा मै धार येम ।।९२
उर माझ येकसौ आठ और, जग्योपवीत मै कंठ जौर ।
हाथमै तूंदमैं पर्म हेत, साधना करै जो जप सहेत ।।९३
ओंकार मंत्र कौं कह्यौ आद, पंचाक्षर जैसैं तज प्रमाद ।
जुत भक्ति करै साधन जरूर, दुख जाके जावै पाप दूर ।।९४
ब्राँमण-जाती कौ इह विधाँन, कुल सूद्र मंत्र सौं करै काँन ।
रुद्राक्ष धरै सोई सिंभु-रूप, वँह दरसन लायक अत अनूप ।।९५
पूजन जन जाकी करत पाय, जाही के पातक दूर जाय ।
अज रुद्र धरत रुद्राक्ष आप, तन-मन मै व्यापत नही ताप ।।९६
हाटक मय चाँदी रचत हार, ध्रुव उरमै-करमै रहत धार ।
सो रुद्र-रूप जाँनहु सदीव, जम जाल काल सौं छुटै जीव ।।९७
भाव सौं गहै अथवा अभाव, सोइ लहत मुक्ति सहजै सुभाव ।
उतपति सुन लीजै तिही येह, निरनौ सब भाखत निसंदेह ।।९८
भय त्रपुर दनुज परगट भयाँन, अत दीनौ देवन कष्ट आँन ।
देवन मिल सुमरे माहाँदेव, सिव करयौ मतौ मारन सभेव ।।९९
लागे तव सोचन ध्याँन लाय, चख मुद्रत करकै रहे छाय ।
इक सहँस वरख वीते अखंड, चख दोवन पाँनी बूँद छंड ।।१००
वढ भयौ तहाँ रुद्राक्ष वृछछ, सबकौ हितकारी माहास्वच्छ ।
अठतीस भेद ताके अँनूप, रवि चख तै बारह रवी-रूप ।।१०१
बहु वर्ण ताहि माँही विख्यात, द्रग गोचर आक्रत सुभ दिखात ।
अरु सोम नेत्र सौं गिरयौ आप, तिह कला सु सोड़स हरन ताप ।।१०२

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सित वर्ण दिखावत सदा सुद्ध, पहिचाँनत ताँकौं मति प्रबुद्ध ।
तीसरैं नेत्र सौं गिरयौ तोय, सु क्रस्न-वरण दस जात सोय ।।१०३
जिनमैं सुपेत दुजवर्न जाँन, जुत लाल रंग खत्री सुजाँन ।
वैंस्य कौं पिछाँनहु मिस्र वर्ण, है क्रस्न सूद्र जो दोष हर्ण ।।१०४
इक मुखी सिंभु कौ रूप ग्राद, विनसाय ब्रंह्म-हथ्या विषाद ।
रुद्राक्ष दोय मुख के रचंत, देवता दैत रूपी दिपंत ।।१०५
ताकौं कोऊ धारन करत तोख, दोनू प्रकार के मिटै दोख ।
त्रय-मुखी ग्रग्न-रूपी तिकोय, स्त्री-हथ्या मेटत सकोय ।।१०६
मुख च्यार रूप ब्रह्माँ मिलाय, माँनव की हथ्या दै मिटाय ।
कालाग्न रुद्र मुख पंच केर, जो पाप ग्रगंम्या करत जेर ।।१०७
केऊ षट मुख रूपी कार्तिकेय, दक्षन कर धारै गाँठ देय ।
मिट जात ब्रंह्म-हथ्या मलींन, पुदगल के पातक मिटै पींन ।।१०८
गहीयै मुख सप्तक सूत गोय, स्वर्न के हर्न दुख मिटत सोय ।
गनपती ग्राठ मुख के गनंत, गुरू-पत्नीगाँमी ग्रघ ग्रसंत ।।१०९
नव-मुख भैरव भुज वाँम नेम, ग्रघ मिटत भ्रूँन-हथ्या जु येम ।
दस-मुख विस्नू कौ रूप देख, पैसाच-जात पंन्नग परेख ।।११०
वैताल ब्रंह्मराक्षस विलाय, थित ग्रेह मंगलाचार थाय ।
मुख येकादस रुद्राक्ष मेल, येकादस रुद्रहु गुन ग्रपेल ।।१११
धारीयैं सिखा मै वढै धर्म, कीने जिग जाँनहु सुक्रत कर्म ।
गज-दाँन दये जनु कोट गाय, ग्रंन्नेक पुंन्न-फल मिलत ग्राय ।।११२
मुख द्वादस के रुद्राक्ष मिंत, स्रवनन मै धारत महासंत ।
संतुष्ट दवादस होत सूर, पुन ग्रस्वमेध फल मिलत पूर ।।११३
अंग की मिटावत व्याध ग्राध, सुख पावत परमारथ समाध ।
ग्रस हाथी मृग-हथ्या ग्रनेक, भुजंगाद भूपका स्वाँन भेक ।।११४
स्रंगाल ग्राद हथ्या नसाय, परमारथ साधन ग्रर्थ पाय ।
कहि तेरह मुख के कार्तिकेय, धारै स्वरूप लहि नाँम धेय ।।११५
जन होत सिद्ध कारज जरूर, द्रग दरसन जावत पाप दूर ।
ह्वै विलय गोत हथ्या हरेक, ग्रर्थना फलै सुक्रत ग्रनेक ।।११६
मनका चातुर्दस कोऊ मिलाय, मस्तक मै धारै तिह मगाय ।
साख्यात गनौ सिव-रूप सोय, पावत मुक्ती कौ गहै पोय ।।११७

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दोहा

धारन कौ रुद्राक्ष ध्रम, कहत दुतीय परकार।
मुनिजन वरनत सुलभ मत, निरनय कर निरधार ।।११८
येक सिखा छब्बीस ग्रन, माला मस्तक माहि।
हीय पचास भुज सोरहाँ, पहुँचा द्वांदस पाँहि ।।११६
ग्रष्टोतर ग्रथवा-क सत, पंचासत कौं पोय।
माला धारै सुभ मनिन, सप्तकविंस सकोय ।।१२०
धारन सौं जप सौं धरम, कलिमिख[1] काटै काय।
ग्रस्वमेध-फल ऊपजै, जन सोइ सिवपुर जाय ।।१२१

छंद उधोर

ग्रब कहत माला येह, मनका सु जोर मिलेह।
वरनत सु लक्षन वेख, रुद्राक्ष ग्राँनन रेख ।।१२२
मुख जास व्रंह्मा माँन, जिह विंदु रुद्र सु जाँन।
है सुछ्छ विस्नु हमेस, भल, भोग दाता भेस ।।१२३
देही मिटावत दोख, मृतु भयै पावत मोख।
मणिका पचीस मिलाय, मुख पंच-पंच मगाय ।।१२४
कंटक सहेता कोन, सित वर्ण ग्रौरं स्रोन।
माला सु रचत समोय, गो-पुछ्छ ग्राकृत गोय ।।१२५
मणिमाल नाँम महंत, सब कहत तासौं संत।
क्रम कहत ग्रंथन काज, सुभ हेत संत-समाज ।।१२६
मुख-मुखहि देत मिलाय, जिह पूँछ-पूँछ जमाय।
ग्राँनन सुमेरू ऊँच, पुन तरै राखत पूँछ ।।१२७
गुन नाग-पास जु गाँठ, उपर लगावै ग्राँठ।
सिध मंत्र कारक सोय, धरुपै सोजल सौं धोय ।।१२८
सोगंध भूँम सुखेत, सुध करै भूँम सहेत।
तत गव्य छिरकै ताहि, उर हेत सुभ ग्रवगाहि ।।१२६

---
१ कल्मष = पाप।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

धारा सुजल सौं धोय, कर मंत्र न्यास सुकोय ।
सेवास्त्र मंत्र समूल, कर छूय मति-अनुकूल ।।१३०
कहि मंत्र हूँम्म येकत्र, पुन पढै मंत्र पवित्र ।
अंन्नम मंत्र अराध, सम प्रथम साधन साध ।।१३१
इम करैं आपहि आप, पुज्जक गुरू परताप ।
जप अठोतरसत जाँन, पढ मूल-मंत्र प्रमाँन ।।१३२
जप करत पौचत जाय, माला सु हाथ मिलाय ।
ऊपरैं माला और, गज सत्रु थप्पै गौर ।।१३३
निज भक्ति कीजै न्यास, हित सिभु हीय हुलास ।
इह क्रीया सौं अभिराँम, द्रुत ह्वै प्रतष्टत दाँम ।।१३४
फलीभूत होवत फेर, माला सु संजुत मेर ।
सुर मंत्र सिद्ध सकोय, हित सफल साधन होय ।।१३५
जप अंत मस्तक जाहि, मेलै तथा कंठ माहि ।
जप दाँन स्नाँन जितेक, क्रतु स्राध आदक केक ।।१३६
ह्वै सफल जासौं हेत, सुर पूजनादि सहेत ।
साख्यात मनुज सरूप, रुद्राक्ष विन खर-रूप ।।१३७
मणि तथा स्वर्ण मिलाय, रुद्राक्ष-माल रचाय ।
धारना वाढै धर्म, केऊ ऊपजै सुभ कर्म ।।१३८
वन जहीं याके वृछ्छ, सुख सुभगदायक स्वछ्छ ।
जासौं पवित्र न जाग, वन और भूँम विभाग ।।१३९
स्रुति कही वात सकोय, जावाल, साखा जोय ।
जप करै धारन जोय, सिव-रूप मानव सोय ।।१४०
मृतुकाल पावत मोख, द्रढ दूर जावत दोख ।
रुद्राक्ष धारन-रीत, करतूत वरनी क्रीत ।।१४१
जिह सुनै पातक जाय, कुल होत सुद्धी काय ।
सब बली माझ समीर, नदि माँज गंगानीर ।।१४२
सुर माँज ईस्वर सोय, ज्यूँ ग्रहादिक रवि जोय ।
उचस्रवा अस्वन और, गन देवीयन मै गौर ।।१४३
भुव-नरन मै ज्यूँ भूप, रुद्राक्ष-माला रूप ।
धारना धारै ध्याँन, दै विप्र कौं कोऊ दाँन ।।१४४

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पु न्या म सोय पवित्र, सिव पूजता सरवत्र।
पट भाल देय त्रपुंड, माला सु धारै मुंड ॥१४५
कोऊ करै मंजन काय, सम गंग फल सरसाय।
माला सु विरचत मेर, फल आमलक सम फेर ॥१४६
जाँनीयै उत्तँम जात, जिह धरै पातक जात।
करकंधु[1] फल सम कोय, जाँनीयै मध्यम जोय ॥१४७
सम चना अधम सरूप, अध्ययन काज अनूप।
मंडत न माला माँहि, तन होय खंडत ताहि ॥१४८
छत होत आपै छेद, भल जाँनीयै इह भेद।
कर क्रीया छेद करेह, अध्यम सु जाँनहु येह ॥१४९
उत्तम सु डोर अभूत, सन तथा अलसी सूत।
पोइयै माला पूर, जप काज ताहि जरूर ॥१५०
धारनै कारन ध्याँन, सुभ हेत सुखद समाँन।
सिर धरै माल सँवार, ईसाँन मंत्र उचार ॥१५१
तत पुरख मंत्रति कोय, स्रवनाँ सु धारै कोय।
उर धार मंत्र अघोर, ज्यूँ भाल जागा जोर ॥१५२
पच्चास मनका पोय, कर करै धारत कोय।
जप वाँम देव जुराय, धारना उदर धराय ॥१५३
पढ मूल-मंत्र प्रकार, सरबांग माल सँवार।
भल साधना इह भेव, सिव-रूप भक्त सहेव ॥१५४
संक्रांत गृहन सदीव, सित पूर्नमा हित सीव।
धारीयै वाढै धर्म, कल्याँन सुक्रत कर्म ॥१५५
रुद्राक्ष धारन रीत, पढ होय मोक्ष पुनीत।
कल्याँनदायक काय, सब कही विध समुझाय ॥१५६

दोहा

कहत अहो विस्तार कर, भूत सुद्धि कौं भेव।
वेदतत्व-ग्याता विमल, दुज जाँनत हित देव ॥१५७

---

१ बेर।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

छंद पद्धरी

आधार मूल कुंडलि उठाय, पथ सुषमनकै दीजै उठाय।
थिर ब्रंह्मरंध्र मं थपै थेट, मन के सब संसय देय मेट ।।१५८

भज हंस मंत्र कौं जीव भाय, जोजना ब्रह्ममय करत जाय।
पुन पाद आद जाँनू प्रजंत, जुत वज्र चतुसकोनी जपंत ।।१५९

लंम्बीज चित्त लीजै लगाय, जहाँ कुंडलनी हीय मै जगाय।
सब स्वर्न-वर्न आभा समाँन, धर-मंडल कौ उर धरै ध्याँन ।।१६०

जाँनु सै नाभि परीयंत जाय, चंद्रमा अर्ध-आकार छाय।
द्वय कमल सहित बम्बीज देख, बहु स्वेत-वर्न जाँनहु विसेख ।।१६१

धारै जल-मंडल अचल ध्याँन, सब विध सौं ह्वैकै सावधाँन।
नाभ सौं हृदयहू के सनिद्ध, स्वस्तिकाकार रम्बीज सिद्ध ।।१६२

सब रक्त-वरणमय अनुसरेह, अग्नी-मंडल कौ ध्याँन येह।
अरु हृदय भौंह लौं ध्याँन येम, षट विंदु गोल आकार खेम ।।१६३

यम्बीज धूँम-आकार येह, स्पर्सन ध्याँन कौं अनुसरेह।
भ्रूँह सौं ब्रंह्म कौ रध्र भाग, मन हरन स्वच्छ हेम्बीज माग ।।१६४

नभ-मंडल गोलाकार नित्त, चिंतना ध्याँन की करै चित्त।
पुन भूत चिंतना इह प्रकार, सब येक मिलावै इक सँभार ।।१६५
प्रथवी मै जल जल अग्नि पेल, जग प्राँन करै आकास जेल ।।१६६
आकास माँझ लहि अहंकार, साधना साध महतत्व-सार।
अहंकार प्रकृत मं कर अरूढ, पथ सुद्धि सँवारै मति पढूढ ।।१६७

महतत्व आतमा में मिलाय, प्रकृती आतमा मेल पाय।
संम्बिन्मय[1] ह्वैकै आप सुद्ध, पुन वाँम कूँख चितै प्रबुद्ध ।।१६८

महा कृस्न-वर्ण अंगुष्ट माँन, थित पाप पुरख कौ थाप थाँन।
हथ्या सिर लादै हेर-हेर, घट भीतर जेती घेर-घेर ।।१६९

हिंसा ब्रहंमहथ्या हरेक, अरु चोरी स्वर्णादिक अनेक।
गरू संङ्यागाँमी कुपथ गौंन, तन पोषक मदरा पाँन तौंन ।।१७०

---

१ संवित।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

हथ्या चोटी अरु मोट हेल, सिर पाप पुरख लादै सँकेल ।
इह रूप करै तिह पुरख याद, प्रक्रती दुष्ट घेरै प्रमाद ।।१७१
तरवार ढाल जिह हाथ त्यार, मुख नींचै बोलत मार-मार ।
दुस्सहा रूप जाकौ दिखाय, जातना जँहाँ-तहाँ करै जाय ।।१७२
चिंतना निरंतर करै चित्त, इह पाप पुरख प्राँनी अमित्त ।
यंम्बीज मनही मन करै याद, सुमरन सौं उपजै सुख समाद ।।१७३
पूरक कर प्राँणाँयाँम पूर, कर सुस्क पाप पुतरा करूर ।
जब जाँने अपने अंग जुक्त, उपजावै उरमैं येह उक्त ।।१७४
रम्बीज अग्न कौ रूप-रास, उच्चारन करकै अनायास ।
पाप कौ जरावै पूतराह, अभ्यास हृदय धारै उछाह ।।१७५
यम्बीज उचारन करै और, ठिक भस्मी करीयै तँही ठौर ।
रेचक कर प्राँणाँयाँम राह, चिंतना बाहरै करै चाह ।।१७६
जाकौं निकाल बंम् बीज जंप, सम् सुधा बीज सीचै समंप ।
लम्बीज भूँम भोजी सु लेय, सो भस्मि करै येकत्र स्रेय ।।१७७
इंडा बनाय जाकौ अनूप, सुवर्णाकार चिंतै सरूप ।
हम्बीज उचारन कर हिलाय, तव करै मुकर आकार ताय ।।१७८
लै भस्मी इंडाकार लाय, मस्तक सौं पावन तक मलाय ।
भल आकासादिक पंचभूत, उतपंन्न करै उक्ती अभूत ।।१७९
सर्बांग वनावै तत समंध, पुन आगै कौं चिंतै प्रबंध ।
पढ सोहं-सोहं प्रथम पोत, जीव कौं मिलावै ब्रंह्म-जोत ।।१८०
आनंद पाय हीय-कमल आय, पहलै कुंडलनी-बोध पाय ।
जीव की येकता ब्रंह्म जाहि, मिल रहै येक हीय-कमल माहि ।।१८१
अरु मूलाधार सु ठौर आद, वस रही सदा हंता विषाद ।
जिह कुंडलनी कौ जपै जाप, परब्रंह्म जीव ह्वै मेट पाप ।।१८२
ध्यावै याही विध सदा ध्याँन, पावन सरूप आधार प्राँन ।
वंदन कर धारै तन विभूत, भस्मी इह वरनी पंचभूत ।।१८३
नित जपै कुंडली इहै नाँम, करता जन पूरन सदा काँम ।
ईश्वरी आद माया अनूप, सांभवी भुजंगी नित सरूप ।।१८४
ध्यावै निस-वासुर हृदय ध्याँन, गम पावै जासौं सकल ग्याँन ।
आनंद उपजै उर अमाप, पुद्गल के नास न होय पाप ।।१८५

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कुंडलनी देवी सुभग काय, बालार्क वरण सोभा बसाय ।
निज लाल कमल सम अरुन नैन, बोलत धुन मधुरी सुधा बैन ।।१८६
दाड़मी दसन चिब हसन देत, सुभ ओठ रसन लाली सहेत ।
अत सोभा जुत उन्नत उरोज, सय उभय रक्त संधक सरोज ।।१८७
लालहु कपाल आभा लसंत, वर पाँच वाँन जामै बसंत ।
ऊख का सूल धन्वा उचाय, गुन पासांकुस जासौं गृहाय ।।१८८
पद कमल मुक्ति-दाता प्रवेक, जोग की जुक्त जाँनत जितेक ।
सामुद्र लाल नवका सुहाय, विच लाल कमल जापै वसाय ।।१८९
इह मात त्रनैनी जग-अधार, प्राँण की सक्ति सवहि प्रकार ।
आतम परमातम वहै येक, विसवास कुंडली लहि विवेक ।।१९०

दोहा

क्रीया वखाँनी कुंडली, जोग-रीत कौं जाँन ।
ततवेता मुनिजन तिते, गावत साधन ग्याँन ।।१९१
कहत सिरोवृत अब कथा, भस्मी हू कौ भेद ।
मुनिजनहू को सिद्ध मत, वरनन कीनौ वेद ।।१९२

छंद हरगीतका

अब सिरोवृत कौं कहत हूँ इह ब्रह्म विद्या वृद्धता ।
निस्पाप प्राँनी होत निर्भय सकल पावत सिद्धता ।।
वरनी अथर्वन वेद मै वृत की सिरो स्रुति वारता ।
तातै सिरोवृत कहत ताकौ सुजन जन्म सुधारता ।।१९३
भल रीत साखा भेद सौं कोऊ पासपत वृत कहत है ।
सिववृत्तहू कोऊ कहत सज्जन लाभ येको लहत है ।।
नह करत समुझत सोऊ नरा जिह पसू रूप ही जाँनीयै ।
वरनी सु जाकी वेद-विध परतीत माँन पिछाँनीयै ।।१९४

अथर्वन वेद की स्रुति मूल यह है—

अग्निरिति भस्म, जलमिती भस्म स्थलमिती भस्म वायुरिति भस्म व्योमेती भस्म सर्वंहवाइदं भस्म—

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पढ वार षट इह मंत्र प्रथम ही लेय अंग लगाइयै ।
करीयै जु संध्या काल मै धुर ध्याँन जप सुर ध्याईयै ।।१६५
परमाँन बारह वरख पुन अथवा-क बार्षक येकही ।
षट मास अथवा पक्ष षट वरन्यौ प्रमाँन विसेखही ।।
येकहु वनै नही क्रीया या विध बारहाँ दिन विस्तरै ।
गम पाय जाप प्रताप गुरु निस्पाप काया निस्तरै ।।१६६
सिख करचौ हैं जिह सिरोवृत कौं देय गरू उपदेस कौं ।
नहि देय विद्या निफल ह्वै कुलगुरू लहत कलेस कौं ।।
चित सुद्धिकै ह्वै धर्मचारी क्रीया जन्मांतर करै ।
जब सिरोवृत की जुक्ति जाँनत व्रंह्मविद्या विस्तरै ।।१६७
निरव्रह्मविद्या पसू-सम नर पाप भाजन पुद्गला ।
कीय वेद वरनन इही कारन करन तन मानव कला ।।
ओंकार मंत्र त्रपुंड आदर भरत भस्मी भाल कौं ।
कोऊ मंत्र त्रंबक सौं करै तत साधना सु त्रकाल कौं ।।१६८
पंचाक्षरी पढ मंत्र की धारै सु भस्मी धीमता ।
ओंकार सबसौं कह्यौ उत्तम सिंभु भक्ती संम्मिता ।।
विधु बाल सम आकार विरंचत सजल वा निर्जल सही ।
चर्चा करै निज व्रह्मचारी बाँनप्रस्थ गृहस्थ ही ।।१६६
विधवत करचौ जिह आद व्रंह्मा जाँनीयै दुज जात कौं ।
तातै क्रीया नित तिलक की विस्तार वरनी वात कौं ।।
संन्यासि कौं ओंकार संम्मत व्रह्मचारित्र आयुखा ।
सूद्रादि नमहसिवाय सौं उरन्याँन वाढै आयुखा ।।२००
जानै न मंत्र कछू न जो हरि-भक्ति संजुत हेत सौं ।
रच भाल मै त्रयपुंड रेखा हृदय बाहू हेत सौं ।।
त्रयपुंड धारत तिलककौं निस्पाप होय सोई नरा ।
त्रय ताप जावत ताहि के भेटै न भीत भयंकरा ।।२०१
जग्यादि भस्मी होय जो प्रक्षाल जल सौं पाँन लै ।
षट मंत्र प्राँणायाँम कौ त्रय भाल रेखा ताँन लै ।।
त्रय वार मंत्रत करै तिह अथवा-क सप्तक वारई ।
वरनी सु ताकी प्रथम विध धरमात्म हीय मै धारई ।।२०२

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

उत्पन्न ह्वै अग्नोत्र सौं सम जाँन विरजानल सही।
उत्पंन्न ओपासन इहै जन व्याह होम करै जही ।।
छित होम करता वृंह्मचारी कहत है समदग्निकै।
पंचाग्नि उपजत रसोई प्रति अरु दवानल अग्निकै ।।२०३
अरु वेदपाठी अंतका की सूद्र भस्मि सँवारीयै।
दावानलोद्भव देखकै अन लोगहू अवधारीयै ।।
उतपत्ति विरजानल अहै भस्मी सु भाखत भेद कौं।
जो सदा उत्तँम जाँनीयै जन छार पातक छेद कौं ।।२०४
मिल नखत चित्रा पूर्णमासी ताहि प्रथम त्रयोदसी।
कर स्नाँन आन्हिक-क्रीया करकै गुरु वुलावै सुकृत ग्रसी ।।
पूजाद कर परनाँम कै सित वस्त्र धारै सुद्धिकै।
सित जनोई धारै सही सित पुस्पमाल सनिद्धकै ।।२०५
विध सौं कुसासन वैठकै कसकी सु मूठीकौं कसै।
उत्तर-मुखा कर आपकौ अथवा-क पूरब दिस असै ।।
त्रयवार प्राँनायाँम कर तव ध्याँन सुर देवी धरै।
संकल्प वृत कौ करै सरवस तथा वृत वारह तरै ।।२०६
षट वर्ष वा त्रय वरष इक वृत मास षट त्रयमेकही।
द्वादस दिना षट तीन दिन कै अरप दिन कौं येकही ।।
संपूर्ण वृत ना होय सवही हवनकौं करता रहै।
पूरब ही होवत पूर्नमासी नेम्र विरजा निव्वहै ।।२०७
तत सुद्धि ताके हेत तहवाँ मूलमंत्र मिलायकै।
सिख देह मै सुमरन करै गुरु-वचन कौं अवगाहिकै ।।
पंचभूत की माता जु पाँचौ-पाँच कर्मिद्री पखै।
पुन पाँच ग्याँनिंद्री प्रवर्तंत सप्तधातू संमुखै ।।२०८
प्राँनादि पंच परेखीयै मन वुद्धि मिलवत मेलकै।
अहंकार सत्वादिक इते प्रक्रती पुरष अपेलकै ।।
कुल-रागविद्या की कला कालहु निपात कहीजीयै।
माया रु सुध विद्या महेस्वर लेख इतने लीजीयै ।।२०९
सक्ती सदा सिव-संजुता सिव-तत्व येते है सही।
चिंतना क्रम ही क्रम चितै कल्याँन-हेत कथा कही ।।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

होता सु विरजा मंत्र हवनह बिरज सिख वनजात है।
सिख चेतकै इह करै साधन हेत गुरुकै हाथ है।।२१०
गोवर वनाय सु गोलका पस्चात अगन प्रवेसीयै।
हवखाँन भक्षन कर हुतासन निसर ताहि निवेसीयै।।
दिन प्रात होत चतुर्दसी रहो निराहार सुरीत सौं।
परवेस ह्वै जद पूर्नमा नित कृत्त करीयै नीत सौं।।२११
पुन पूर्नमा के अंत पै अग्नी विसरजन कर वहै।
रुद्राग्नि उत्तम रूप सौं गुरु-ग्याँन लै भस्मी गहै।।
ध्रुव राख कच ह्वै जटाधारी सिखा मुंड सवाँरकै।
इक सिखा राखै तथा ऊपर चैल गैरक चारुकै।।२१२
इक वस्त्र बलकल वस्त्र ओढन चीर चर्म तथा चहै।
तज लाज नग्न रहै तथा गहि मेखला दंड ही गहै।।
पस्चात पाव परवारकै कर आचमन द्वै-वारकै।
येकत्र भस्मी करै उत्तम अनल विरज अधारकै।।२१३
पूर्वोक्त रीत प्रचारकै जल घोरकै भस्मी जँही।
ओंकार-मंत्र उचारकै सिव-मंत्र सौं लीजे सही।।
मूर्धादि सौं पद आद मल पुन त्रीया पुस्प परेखीयै।
संग्या इही विध समुझकै लै भाल उंन्नत लेखीयै।।२१४
त्रयपुंड धारन कीय त्रेखा भाव सिव प्रापत भया।
डोलै सु जहाँ-तहाँ दिसंतर द्वेष तज गाहिकै दया।।
वृत पासुपत आख्याँन वरन्यौ मुक्ति-मारग माँनीयै।
नरदेह कौ फल इही निर्भय जाँनकै मत जाँनीयै।।२१५

दोहा

मुक्ति-भुक्तिदायक महा, विरजा कीजै वृत्त।
ततवेता पसुता तजै, काया ह्वै कृत-कृत्त।।२१६
सिव-मूरत पूजै सदाँ, सिवकौ लिंग सरूप।
लेवै सदाँ लगायकै, अंग वभूत अनूप।।२१७
आयुस वढै अरोगता, महामारी मिटजाय।
मिटै अमंगल पाप-मत, संपत वढै सिवाय।।२१८

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

भस्मि लगावत भाल मैं, सो सिव-रूप सदीव।
मिटैं ताहि जाँमन[1] मरन, जाँन सुकृती जीव ।।२१९

छंद द्वं-अक्षरी

क़रन भस्मि पातक-जन कोऊ, त्रविध भस्म भाखत है तेऊ।
गोवर त्यागै जवही गो लौं, जोनी पै नही आवत जौलौं ।।२२०
झेल लेय ताकौं कर झटकै, ब्राँह्म-मंत्र सौं जारें वटकें।
सांतक भस्म जाँनीयै सोई, करता सुभग कहैं सह कोई ।।२२१
अधर झेलकैं गोवर आँनै, जमी परेकौं लेय न जाँनै।
जाहि षटंग मंत्रग सौं जारै, पौष्टक भस्मी नाँम प्रचारै ।।२२२
इही रीत गोबर लै औरै, भस्मी करै मंत्र ही भौरै।
काँमद भस्मी सोय कहावै, लै कर सौं पुन अंग लगावै ।।२२३
गोमय गृहन प्रकार गनावत, जाही वृत-मुरजाद जनावत।
सुरभी बैठक गोष्टि सदाई, जन-उठ प्रातकाल जहाँ जाई ।।२२४
नमस्कार कर गऊ निवेरै, हित चित वरन वरन की हेरै।
ब्राँमन की उज्जल है वरना, खत्री गऊ लाल है खरना ।।२२५
वैस्य गाय कौं पीत वखाँनी, सूद्र गाय कारी सुख साँनी।
अपने अपने वरन अंतरा, पारै जामै नही पंतरा ।।२२६
अमा तिथी पूनम अरु अष्टम, सुद्धी हेत प्रथम गाहि संजम।
गोमय लैहूँ मंत्र गढाई, पिंड वनावै नमह पढाई ।।२२७
बूसा-बूसी सीस बसावै, सुस्क करै पुन ताहि सुकावै।
मंत्रत्र कर होम् मंत्र-मंत्र समेता, दावाअग्नि लायकै देता ।।२२८
जिग करता ब्राँमन घर जोई, सुद्धि जाँनीयै अगनी सोई।
गोमय लेय बीज सिव गहिकै, द्रढ भस्मी करीयै तिह दहिकै ।।२२९
तिहीं कुंड सौं लैकै ताही, पढ-पढकै होम मंत्र पकाही।
लैकै खस अरु केतकी लेई, केसर-चंदन समल करेई ।।२३०
पुन पदार्थ सोगंध पवित्रा, कुसल क्रीया करीयै येकत्रा।
सद्यो मंत्र पढै तिह समा, करै सिनाँन जुगत अनुक्रमा ।।२३१

---

१ जन्म।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पुन सिनाँन भस्मी ता पाछै, उचर मंत्र ईसाँन सु आछै।
मुख तत पुरष मंत्र मल वाँही, मत्र अघोर हीया के माँही ।।२३२
वाँम मंत्र सौं नाभ विसेसा, सद्यो मंत्र अंग जोई सेसा।
पूरब वस्त्र त्याग नव पहरै, हाथ पाव धोवै नही हहरै ।।२३३
करै आचमन सुध कर काया, मोह मिटै मन छूटै माया।
सर्ब अंग मै भस्मि न साधै, एक त्रपुंड भाल आराधै ।।२३४
प्रातकाल मध्याँन प्रमाँना, जल जुत भस्मि लगाय सुजाँना।
सायंकाल विना जल सेवा, भाख्यौ भस्मि लगावन भेवा ।।२३५
अगुरी करै त्रपुंड जु यातै, जेठी मधमा मध्या जातै।
रीत भस्मि की मुख सोई राखी, इधक बहुत ग्रंथन मै आखी ।।२३६
रेख त्रपुंड तीन सुर रूपा, सुरजेष्टा हर हरी सरूपा।
दुज खत्री जुत मंत्र जु देई, वैस्य सूद्र विन मंत्र विधेई ।।२३७

दोहा

भस्मि लगावत भालमै, तथा अंगमै ताहि।
महमा वरनन करत मुनि, उर अंतर अवगाहि ।।२३८

छंद त्रोटक

कही उत्तँम गाय सदा कपला, अत उत्तम है जिह के उपला।
विध ताहि की राह वखाँनत है, जिनकी करनी मुनि जाँनत है ।।२३९
वर गोमय लै दुरगंध विना, छपवायकै गोल वनाय छना।
सिव मूलहि मंत्र सौं आग समा, जर होय विभूतन काज जमा ।।२४०
करकै सुध सोय गहै कपरा, खलकै-मलकै विच लै खपरा।
सुभ धातु कै पात्र तथा समिलै, झटकै लहिकै तिह वीच भिलै ।।२४१
अपअंग लगावत आद इही, करनी सुध संमृती प्रोक्त कही।
सिव के तुल होवत सो सुक्रती, जग पुज्जत जाँनीयै जोगी जती ।।१४२
वर तांत्रक उक्ति विभूत वनी, गहीयै नही वैदक-रीत गुनी।
भसमी अधकार सदाँ भल कौं, करनीय क्रीया दुजके कुलकौं ।।२४३
दुज भस्मि विना समसाँन-दसा, गँनीयै तिनकौं तन-पाप ग्रसा।
दुख वाढै प्रजा तिह देखन तैं, पुन जावत वेख परेखन तैं ।।२४४

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

विन जेम सिवालय ग्राँम वसा, दुज भक्ति विना जन हीन दसा।
विन भाल विभूत अनर्थ भरा, नित निंदत जाँनीयँ सोय नरा ।।२४५
सुर पूजन निस्फल होत सबै, करनी वन आवत पित्र कबै ।
जप दाँन क्रीया सुभ जावत है, पद मुक्ति कहाँ जस पावत है ।।२४६
विध कीन त्ररेख ललाट विचै, जिह तै करनीय त्रपुंड जचै ।
करीयै ओंकार की मंत्र-क्रीया, दुज राखीयै भाल त्रपुँड दीया ।।२४७
व्रत दाँन-कथा जितनी वरनी, करीयै न त्रपुंड विना करनी ।
रुदराक्ष की माल विभूत रही, करनी हित उत्तँम दोउ कही ।।२४८
परतीत सौं पाप प्रनासन की, ऊर्ध रीत है देव-उपासन की ।
जती ग्याँन कौं पावत जा हीयतै, वनवासी विराग वसाइयतै ।।२४९
गहै धर्म की वृद्धिहु जात गृही, जत तत्त लहै ब्रमचारि जँही ।
त्रयपुंड पुनीत अवरनन कौं, कलि पाप निकंदन कर्नन कौं ।।२५०
सरबंग लगावत भस्मि सदा, त्रयपुंड रचै कोऊ भाल तदा ।
जिग-रूप गनौ सोई जोगी जती, जिनसैं इहै पावन ह्वै जगती ।।२५१
सिव विस्नु विरंचन आद सदा, सुर औरहू कौं गनीयै सुखदा ।
हर भाँमन गौरी गिरा हित कौं, निज भाल त्रपुंड रचै नित कौं ।।२५२
जग मै नर-नारीय रूप जिता, करनी वरनी सुभ हेत कृता ।
सिध गंध्रव राक्षस यक्ष सबै, फिर ब्राँमण छत्रीय वैस्य फबै ।।२५३
सुद्र आदक जे व्रनसंकर[१] ही, भय भस्मि मिटात भयंकर ही ।
कोऊ आड़ करै उर धूल कहू, सिव रूप विचारहु जीव सहू ।।२५४
गनीयै नर-नारीय ऊँच गती, सुभदायक लायक सिंभु सती ।
भसमी कर धारन भोजन लै, दिगवासा सती संग दोजन लै ।।२५५
भसमी विन लै भख पेट भरा, कहीय तिनकों सुकरा-कुकरा ।
छल सौं भसमी कोऊ अंग छुएं, हर भक्ति वढै दुख दूर हुएं ।।२५६
भय मैं भसमी कोऊ अंग भरै, जम ताप मिटै सब पाप जरै ।
मल मेटन हेत विभूत मला, कुल नीच ऊपावत ऊँच कला ।।२५७
करनी जिह उत्तँम त्याग करी, भसमी इक वीच ललाट भरी ।
सोऊ पूजन लायक है स्रवदा, करीयै न निरादर जाहि कदा ।।२५८

---

१ वर्णसंकर।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सिव-भक्ती चहै सोई पूज सरै, भसमी विच अंग ललाट भरै।
कुल जात ऊधारन की करनी, अपवित्र पवित्रन उद्धरनी ।।२५९
जत की मति पावत भाव जती, गम ग्याँन बढावत जोग गती।
भसमी के सिनाँन सौं पुंन्य वृधै, सहजै फल तीरथ जात सधै ।।२६०
गहरी जिह अंग विभूत गही, जगवंदन लायक जाँन जँही।
कर पूजन ताहि प्रसंन्न करै, जनके तनके त्रय-ताप जरै ।।२६१
तप साधन भस्मि गहै तनकै, जुर राक्षस दोष मिटै जिनकै।
हथ कुष्ट भगंदर रोग हुवै, छत आदक जावत भस्मि छुवै ।।२६२
असी वातज रोग कौं रूप अँही, कफ रोग दुविंसत जात कँही।
अहलोक मिलै फल आतम कौं, परसैं मृतुपै परमातँम कौं ।।२६३
भसमी के त्ररेख ललाट भरै, कर ता दुर अक्षर दूर करै।
गल-धारन सौं भसमी गहरै, थित मुंड लौं पाप सबै थहरै ।।२६४
भुजमैं भसमी जिह पूर भरी, घटजात भुजा अघ ताहि घरो।
हीय माझ वभूत लहै हित सौं, मनहू सुध ह्वै चित सौं मति सौं ।।२६५
तर नाभि विभूत लगै तवही, सिसनिंद्री के पाप मिटै सबही।
कटि प्रोथ गता भसमी करीयै, अघ-अंग के पाप सबै हरीयै ।।२६६
लिंग छोर विभूत लगावन सौं, पथ होत है पावन पावन सौं।
सबाँग लगावत भस्मि सदा, कोऊ पाप नजीक न होव कदा ।।२६७
भस्मी कौ सिनाँन करै भरकै, दुज दोख पलाय भजै डरकैं।
करैं भासत ताहि सौं भस्मि कहै, अघ भक्षन भस्मि है नाँम अहै ।।२६८
सोइ देत विभूति विभूति सदा, जन राखत राख है नाँम जदा।
वसु सोम अमा जबही वरतैं, वर पाप मिटैं भस्मी धरतै ।।२६९
दुरवासा रिखी तन भस्मि दियैं, केऊ जोगि मुनिंद्र कौं संग कीयैं।
गवने सबही पित्र-लोक गये, द्रग नारकी देखन चित्त दये ।।२७०
तँहाँ झाँखन पापी लगे तबही, जट-जूट सौं भस्मि गिरी जबही।
तिन अंग लगी उड़ ऊँच तरा, निरदोखी भये सब नारी-नरा ।।२७१
सिवलोक गये बरखे सुमना, गँनीयै सोई आज लौं भद्र गना।
भस्मी कौ महातम ऐसौ भन्यौ, बिधपूर्वक रीत-जुतै वरन्यौ ।।२७२

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ऊर्धपुंड[1] माहातम कौं उचरैं, विस्नू जन धार सुखी विचरैं।
कथ वैस्नव सास्त्रन वीच कही, गम पायकै ताही की राह गही ।।२७३
वरन्यौ अँगुरीन के भेदन कौं, निज अंग के पाप निषेदन कौं।
मृतका इतनी गहीयै जु मही, जर पर्वत की तरहेटी जँही ।।२७४
सिव-खेत्र तथा नद-नीर समी, जलरासीय-कूल पवित्र जमी।
बलमीक विमोरीय ऊँच वनी, खनती तरु वृंदाय पेढ खनी ।।२७५
इतने थल उत्तम जाँन इला, सुध रेत गहै क्रम ह्वै सफला।
मृतका अन[3] जाग[4] की कीन मनै, तिन कौ ऊर्धपुंड न भाल तनै ।।२६६

दोहा

स्याँम गार[2] ऊर्धपुंड सुभ, सांतकार सुखकार।
वसीकरन अरुण ही वरन, वैस्नव कहत विचार ।।२७७
पीतहु गार पवित्र पुन, देत लक्ष्मी दाँन।
धर्म वढावत स्वेत धन, ऊर्धपुंड अभिराँम ।।२७८

छंद उधोर

अँगुरीन भेद उचार, विध कहत सकल विचार।
सुभ देत और समाद, अंगुष्ट पुष्टी आद ।।२७९
मध्यमा आयु मिलाय, अनदै अनामिक आय।
तर्जनी करत पुंड, उर भक्ति देत अखंड ।।२८०
आकार वर्नंत और, ठिक वाँध तन की ठौर।
आकार बाहु अनूँप, रचीयै जु मस्तक-रूप ।।२८१
दुइ कर्ण दंडाकार, उर-कमलकै आकार।
पुन दीप-रूप पिचंड, ताँनै सु रेख त्रपुंड ।।२८२
दलवाँस अथवा देख, रचीयै जु मृतका-रेख।
पुन बाहु कंधर पीठ, रच जामुना सुरगीठ ।।२८३
प्रभु हेत ऊरधपुंड, इम रचै रूप अखंड।
नख है स्पर्स न नेम, अभिरूप भाखत येम ।।२८४

---

१ तिलक। २ मिट्टी। ३ अन्य। ४ जगह, स्थान।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पुन अंगुलिन परमाँन, मिलवाय जासौं माँन ।
आंगुल सु दस अभिराँम, नव मधम जाकौ नाँम ।।२८५
कहि अंगुल अष्ट कनिष्ट, सप्तकहु पंचम सिष्ट ।
त्रहु कहत मध्यम ताहि, ऊर्धपुंड कौं अवगाहि ।।२८६
ऊर्धपुंड देवत येह, मत सत्त कहत मिलेह ।
मस्तक सु केसव माँन, जन ह्वै पवित्र सुजाँन ।।२८७
नारायणाय जु नित्त, तुद ठौर जाँनहु तत्त ।
उर वीर माधव आप, जन करत अजपा-जाप ।।२८८
गल क्रस्न अरु गोविंद, जिह कहत है जोगिंद ।
दक्षन सु पारस देस, है विस्नु-वास हमेस ।।२८९
मधुसुदन पारस वाँम, स्रुति त्रविक्रम घनस्याँम ।
वाँमी सु कूख विसेख, सुख रूप वामन सेख ।।२९०
वाँमी सु वाहु विचाल, श्रीधरहु रूप संभाल ।
स्रुति वाँम वीच सुभाय, वर ऋषिकेस वसाय ।।२९१
श्रीदमोदर हित संत, कंधर सु वास करंत ।
नित वासुदेव निदाँन, सिर वास करत समाँन ।।२९२
ये कहे द्वादस अंग, सुर ऊर्धपुंड ही संग ।
विध होम पूज विचाल, करीयै जु तीनहु काल ।।२९३
पापी जु ह्वै अपवित्र, चर्चा जु करीयै चित्र ।
अघ कटत ताके अंग, सुख उपजै सरबंग ।।२९४
इक छिद्र-जुत आकार, विन छिद्र दुतीय विचार ।
गुरू कहत ताकौ ग्याँन, जन जाँन लेहु सुजाँन ।।२९५
पद विस्नु आक्रत पूर, सुभ हेत करहु समूर ।
सुभ अंतराल सहेत, हरि-नाँम सौं कर हेत ।।२९६
भरीयै त्रपुंड सुभाल, कवहूँ न झंपै काल ।
वयकूँठ वास वसाय, सुख रूप मुक्ति समाय ।।२९७
वरन्यौ त्रपुंड-विधाँन, पुन ऊर्धपुंड प्रमाँन ।
संध्या-उपासन संध, पुन कहत सकल प्रबंध ।।२९८
पहली सु संध्या प्रात, द्रग जब नछत्र दिखात ।
मध्याँन संध्या माँन, दो-पहर कौं सुख दाँन ।।२९९

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

संध्या सु संध सपष्ट, द्रग सूर देखत द्रष्ट।
तीनहू संध्या तेम, नित राखीयैं इह नेम ।।३००
त्रय भेद इक-इक ताय, सो देत सकल सुनाय।
जब नखत दीसत जात, पाछली-रात प्रभात ।।३०१
जब करै संध्या जाप, उत्तम सु गनहु अमाप।
जब नखत जावत जोत, अंबर न सूर उदोत ।।३०२
सो मधम जाँनहु संध, परभात कहत प्रबंध।
जब सूर चमकै जोत, अरु बिंब होत उदोत ।।३०३
पस्चात मध्यम प्रात, संध्या सु कहत सुग्यात।
दोपहर ऐसै देख, विध जाँन लेहु बिसेख ।।३०४
क्रम इही सायंकाल, लहै रंग सूरज लाल।
संध्या सु उत्तम सोय, सुध होय करहु सकोय ।।३०५
सूर्जास्त होत समाँन, सो मधम कहत सुजाँन।
नखसत्र दीसत नैन, यँह अधम है बुध ऐन ।।३०६
दुज वृक्ष रूपी देह, अरू मूल संध्या येह।
जिह वेद-साखा जाँन, पुन कर्म-धर्मही पाँन ।।३०७
जर जतन करीयै जोय, सब वृक्ष-रक्षा सोय।
जर वृक्ष काटत जाँन, प्रकांड रहत न पाँन ।।३०८
इह जाँन मति अवदात, त्रय संध करीयै तात।
सो जाँन करत न संध, वँह विप्र है हीय-अंध ।।३०९
पापी सु होवत पिंड, अवदात नेम अखंड।
उदीयात सूरज अस्त, पहली सु होय प्रसस्त ।।३१०
त्रय दंड पूरब ताय, संध्या सु कहीय सुभाय।
कालाति कर्म कहूक, चूटै सु वेला चूक ।।३११
साधना होवन सिद्ध, इह कही विध अविरुद्ध।
त्रय अंजुली दै तोय, गायत्री-जप हीय गोय ।।३१२
इक सत्त वेला आठ, पुन करै जप कौ पाठ।
जप करै सुद्धी जीव, दुजजात नेम सदीव ।।३१३
जिहि काल ईस्वरी जौंन, तिह ध्याँन करीयै तौंन।
करीयै सुकर्म कराय, सुभ हेत सुख सरसाय ।।३१४

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

है फलीभूत हमेस, इह नेम है अवसेस।
गृह करै संध्या गोय, साधार्न कहीयै सोय ।।३१५
गोष्टी सु मधम गनंत, तट नदी उत्तँम तंत।
देवी सु मंदर देव, सपवित्र संध्या सेव ।।३१६
दुज वेद अग्या दीय, गायत्री-जाप गरीय।
करीयै त्रसंध्या-कार, उर ध्यानँ कर ओंकार ।।३१७
आचमन करीयै आद, प्राँणाँ सु याँम प्रसाद।
केसव ऊ नाम कहंत, नारायनाय-निमंत ।।३१८
माधव गुविंद मिलाय, श्रीविस्नु नाँम सुभाय।
मधुसुदन नाँम समाँन, जैसै त्रविक्रम जाँन ।।३१९
वाँमन सु श्रीधर वेस, कह तहाँ ही ऋखीकेस।
अरु पद्मनाभ उचार, पुन दमोदर परचार ।।३२०
संकरषणाय सनिद्ध, पुन वासुदेव प्रसिद्ध।
प्रद्युम्न-अनुरुध प्रीत, पुरसोतमाय प्रनीत ।।३२१
अरु अधोक्षज उच्चार, पुन नारसिंघ प्रकार।
अच्युत जनार्दन येम, नाँमहु उपिंद्र सु नेम ।।३२२
हरिक्रस्न सौं हीय हेत, चौवीस नाँम सचेत।
अंत मै स्वाहा आँन, पढ-पढ ही सब्द प्रधाँन ।।३२३
आचमन करीयै और, जुत नमः सब्द सु जोर।
अंत मै स्पर्स अंग, सुच कीजीयै सरबंग ।।३२४
विध देत और वताय, संध्या सु करन सुभाय।
सुखदाय जाँनहु सोय, जिह लीजीयै हीय जोय ।।३२५

सोरठा

चित सुध नाँम चौईस, श्रीविस्नू के सुमर कर।
जग-व्यापक जगदीस, आतम-सुद्धि करन उर ।।३२६

दोहा

केसव नाराँयन कहत, माधव नाँम मिलाय।
आद करीयै जल आचमन, सुद्धि हेत सुभाय ।।३२७

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अरु गोविंद-विस्नू उभय, पढकै नाँम पुनीत।
दोऊ कर धोवै उदक सौं, संध्या-काल सप्रीत ।।३२८
मधुसूदन त्रय विक्रमह, ये दोऊ नाँम उचार।
मुख धोवै सुध होय मन, संध्या-काल सुधार ।।३२९
वाँमन श्रीधर वचन कहि, करीयै मार्जन काय।
रिखीकेस कहि कर मलै, पद्मनाभ दोऊ पाय ।।३३०
पढ दामोदर नाँम पुन, सिर कच धोवै सेस।
नाँम संकर्षण आद निज, द्वादस पढै निदेस ।।३३१

छंद द्वि-अक्षरी

नाँम पढै जाकौ इह निरनै, विध ताकी दुजवर सब वरनै।
पढ संकर्षण नाँम पवित्रा, त्रय अँगुरी मुख छुऐ जु तत्रा ।।३३२
वासुदेव प्रद्युम्न वसेसा, नाँम पढै मुनि कहत निदेसा।
अँगुष्टा तर्जनी उभै सै, तव नासापुट छुऐ जु तैसै ।।३३३
अनुरुध पुरषोतम उच्चारै, अँगुठ अनाँमिका नेत्र अधारै।
आधोक्षज नरसिंघ उचारत, तैसैही कर्ण छुऐ जन तारत ।।३३४
कहि अच्युत अंगुष्ट कनिष्टा, छुऐ जु नाभी उत्तम चेष्टा।
पाँणी तलहु जनार्दन पढकै, विच हीय नाँम उपिंद्रहु वढकै ।।३३५
सिर हरियेनम कहै सपरसै, करनी करीयै दक्षन कर सै।
कहि क्रस्नायनमह सुभकारी, परसै वाहू मूल पछारी ।।३३६
करै आचमन दक्षन कर सै, पाँन वाँम अध रहै जु परसै।
अनुक्रम कह्यौ आचमन ऐसै, जोरै हाथ गऊ स्रुति जैसै ।।३३७
जल मासा-भर पीयै जु जाँनी, इधक-न्यूँन सौं होय अग्याँनी।
त्रय अँगुरी कौ मैल वतावै, चिटी अँगुष्टा नाँहि छुआवै ।।३३८
प्राँनायाम करै पुन पाछै, ओंकार मंत्र पढ आछै।
गायत्री चतुरांस गहाई, विध दक्षणपुट तजै जु वाई ।।३३९
वाँम नासका पुट सौं वायू, उदर करै पूरक हित आयू।
कुंभक वायु धारना करनी, विध इह प्राँणाँयाम सु वरनी ।।३४०
जोग सास्त्र तै जाँनन जोगू, पुन-पुन दिन-दिन करै प्रयोगू।
पूरक काल नाभि मै प्राँनी, विस्नु-ध्याँन की करै विधाँनी ।।३४१

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कुंभक-काल ध्याँन विध करीयै, हृदय-पाप जासौं सब हरीयै ।
रेचक-काल भाल विच रूरौ, पसुपति-ध्याँन करीजै पूरौ ।।३४२
विधवत प्राँणायाँम बखाँना, पातक नासन कहत पुराँना ।
वेदोकत[1] अव कहत विधाँना, जाँनत मुनिवर कोउक सुजाँना ।।३४३
कष्टसाध्य जाकी है करनी, विधवत सिद्धि हेत मुनि वरनी ।
महरिसी साधन कर धीमंता, पुरश्चरण जप पूज प्रजंता ।।३४४
जेष्टवरन करवेकँह जोगू, परपाटी लख करत प्रयोगू ।
और वर्ण अधिकार न याकौ, जादाँ वर्नन करचौ न जाकौ ।।३४५

———

1 वेदोक्त ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बुधसिंह चारण रचित

देवीचरित

द्वादश-स्कंध

दोहा

श्री नारायन समुझकै, नारद भाख्यौ नेम ।
दुज-कुल नित्याचार द्रढ, जाँनन कौ फल जेम ।।१

वृत चंदायन वारता, दोऊ दुज-कुल फल देत ।
सुनवौ करवौ समुझबौ, है मुनिजन कौ हेत ।।२

कष्ट सहित कर तत्व केऊ, इहाँ न वरने ग्रौर ।
सुख साधक करनी सुगम, वरनत कथा बहोर ।।३

पुंन्यदाय नित-नित प्रतै, करनी ग्ररु करतूत ।
वरनत दुज-कुल हेत विध, इह ग्राख्याँन ग्रभूत ।।४

छंद पद्धरी

चौइस वरन गायत्री छंद, सो भाखत हूँ संध्या-समंध ।
जिह वर्न-वर्न के ऋषी जोय, गनती इह ताकी कहत गोय ।।५

दुज-कुल के मंडन वाँमदेव, ग्रत्री वसिष्ट सुक्रहु ग्रजेव ।
ऋषि कहे परासर महाराज, सोऊ भये प्रगट दुजकुल-समाज ।।६

तेजस्वी विस्वामित्र तेम, जाँनीयै कपिल सोनकहु जेम ।
दुज जाकबल्क ग्ररु भरद्वाज, जमदग्न तपोनिध तप जहाज ।।७

गोतम ग्ररु मुदगल जाँन ग्याँन, पुन वेदव्यास माँनहु प्रमाँन ।
लोमस ग्रगस्त कौसकहु लेख, वत्सहु पुलस्त मांडुक विसेख ।।८

दुरवासा नारद मुनि दुजेस, वर्नीयै ग्राद कस्यप विसेस ।
ये रिखी वर्न चौईस येम, नित संध-काल सुमरत सुनेम ।।९

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तिह गायत्री के छंद तेहु, गनतो सौं भाखत सुमति गेहु।
गायत्री आद उष्णिक[1] गनाय, लेखीयै अनुष्टप चित्त लाय ।।१०
अरु वृहति पंकती जाँन येम, त्रस्टुप जगती अतजगती तेम।
सकरी[2] अतिसकरी धृति सरेह, अतधृति विराटप्रस्तार येह ।।११
पंक्ती कृती प्रकृती कौं परेख, आकृती संसकृत्ती[3] असेख।
अक्षरक्ति भूः भुवः स्वः अनाद, ज्योतिष्मति चौइस जुत मृजाद ।।१२
चौईस वर्न चौईस देव, भाखत हूँ ताकौ प्रगट भेव।
अग्नी परजापति सोम येह, इसाँन रु सविता अनुसरेह ।।१३
आदति और वृसपती येम, जाँनहु पुन मैत्रावरुन जेम।
भगदेव अर्यमाहू सुभेव, ग्यारमे देव जाँनहु गनेस ।।१४
तुष्टा है पूषा इंद्रा तेम, अग्निहू वायु कौं जाँन येम।
देवत सोरहमे वाँमदेव, मैत्राहुवरुन फिर अवसमेव ।।१५
विस्वेदेवा अठ-दसम वर्ण, सुभ उनविसत माता सुमर्ण।
विस्नू वसू रुद्रहू सुर कुबेर, अस्वनिकुमार मेटत अंधेर ।।१६
सक्तीयाँ वर्ण चौईस सोय, जाही कौं वरनत नाँम जोय।
प्रथम है वामदेवी प्रीयाह, सत्या विस्वा भद्रा सिहाय ।।१७
जाँनहु विलासनी नाम जास, पुन प्रभावती करता प्रकास।
जाँनीयै जया कौं नाँम जोय, सांता अरु कांता कहत सोय ।।१८
दुर्गा सरस्वती नाँम देख, विद्रुमा विसालेसा विसेख।
व्यापनी नाँम विमला वसाय, तंम्मोपहारणी सुमर ताय ।।१९
सुक्षमा विस्वयोनी सराह, पुन जया वसा पद्मा लयाह।
नाम है परा सोभा निदाँन, जुत भद्रा त्रपदा सक्ति जाँन ।।२०
चौईस वर्ण के रंग चारु, वर्नंत हूँ ताकौ पुन विचारु।
चंपक अतसी के पुस्प संग, संन्निभ -मूगा के सम सुरंग ।।२१
नव पल्लव के रंगत निदाँन, पुन पद्मराग रंगत प्रमाँन।
मणि-सद्रस इंद्र नीलम समाँन, मोती कुंकम अंजन मिलाँन ।।२२
जाँनीयै लाल वैडूरीय जेम, निज सहद हरद्रा रंग नेम।
कुंद के दूध के रंग केक, आकार सूर्य की कांत येक ।।२३

---

१ उष्णिक छंद। २ शक्वरी। संस्कृति।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वालधी सुवा के रंग वेस, आकार कमल रंगत असेस।
फिर पुस्प केतकी वेल फूल, कंदैल-वर्न के साँनुकूल ।।२४
चौईस-वर्ण चौईस-तत्व, प्रथवी जल तेजस वायु प्रत्व।
आकास गंध रस रूप येह, सब्द रू सपर्स जुत अनुसरेह ।।२५
औरहु उपस्थ गुद पाय आद, अरु उभय करग वाँनी अनाद।
नासका जीह नैनहु निदाँन, अरु तुचा काँन प्राँनहु अपाँन ।।२६
व्याँन है फेर साँमाँन वाय, गनती तत्वन की दीय गनाय।
अव मुद्रा वरनत कहत और, जाकी गनती कौं जोर-जोर ।।२७
संमुख संपुट पुन वितत स्रेय, विस्रता द्वमुख त्रयमुख विधेय।
मुख च्यार पंच मुख षट मुखार, पुन अधोमुखी जाही प्रकार ।।२८
व्यापक अंजुलिका सकट वैंत, सम जम-पासी गूंथति समैत।
संम्मुख हुंम्मुख जाँनहु सरूप, जाँनहु प्रलंव मुष्टका जूप ।।२९
मत्साक्रत क्रूरम जिम मिलाय, वाराह आक्रती कौं वसाय।
कहि संध्या-कांती महाँ क्रंत, गुन जाँन लेहु मुद्गर गृसंत ।।३०
पल्लवहु सूलयोनी प्रकार, सुरभी रु अक्षमाला सुमार।
पुन लिंग कमल आकार पूर, जाँनीयै इति मुद्रा जरूर ।।३१
गायत्री-महिमा महागूझ, सुभ जेष्टवर्ण जाँनत सहूज।
भाख्यौ तिनही के अरथ भेद, वरदायक स्याहिक मात वेद ।।३२
जिह गायत्री कौ पर्म जाप, पुंन्य कौं वढावत मेट पाप।
जन होत वृह्म के रूप जीव, देवता रूप देही सदीव ।।३३
कर्महू विधी-पूर्वक कहंत, अरु न्यास और रिखी छंद अंत।
गायत्री-कवच इक पर्म गूढ, सव भाखत साधन सहज सूढ ।।३४
आराध्यौ वृह्मा विस्नु आद, अरु महाँदेव जोगी अनाद।
ततवेता जेते रिखी ताय, गायत्री ध्यावत गाय-गाय ।।३५

दोहा

जिह गायत्री जाँनीयै, ऋक् यजु स्याँम रिचाह।
वेद अथर्वन सहित वर, छंद लखहु हीय चाह ।।३६
वृह्म रूप गायत्री वुध, तत इह वीज तहीज।
भर्ग सक्ति ताही भनत, धिय कीलक लहि धीज ।।३७

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अरथ मोक्ष विनयोग इह, वरनन करत विसेस।
च्यार वरन सौं हीय छुएँ, सीस वरन त्रय सेस ।।३८
च्यार वरण केसी छुएँ, कवच वर्णत्रय काय।
च्यार वर्ण स्परस चख, अस्त्र च्यार अवगाह ।।३९

ध्याँन-मूल श्लोक[1]

मुक्ताविद्रुमहेमनीलधवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणै-
र्युक्तामिन्दुनिबद्धरत्नमुकटां तत्वार्थवर्णात्मिकाम् ।
गायत्रीं वरदाभयांकुशकशाः शुभ्रं कपालं गुणम्,
शंखं चक्रमथारविन्दयुगलं हस्तैर्वहन्तीम्भजे ।

दोहा

कहत हूँ गायत्री-कवच, रक्षा हेत सरीर।
सुख पावत ध्यावत सुजन, पाप मिटावत पीर ।।४०

छंद पद्धरी

गायत्री रक्षा करै गात, पूरब दिस जाँनहु साँझ-प्रात।
दक्षन गायत्री रखै देह, सरस्वती पिछम-दिस अनुसरेह ।।४१
उत्तर जलसायनि रखै अंग, पार्बती अग्नी कोनी प्रसंग।
जोई जातुधाँन भयकरी जोय, सक्ती नैरत-दिस रखै सोय ।।४२
पवमाँन विलासनि वायु पेख, ईसाँन रुद्राँनी हू असेख।
वृह्माँणि अद्ध ऊध वैस्नवीय, सर्बांग स्याहि भुवनेस्वरीय ।।४३
ततहः व चर्न[2] कौं रखै तेम, अरु सवतू जंघा रखै येम।
करि हाँव वरेणं स्याहि काज, सुभ गर्भ रखै नाभी समाज ।।४४
देवस्य रखै पुन हृदय देस, अरु धीमहि गालन कौं असेस।
नेत्रन की स्याहिक विध निदाँन, जैसै यकार थित भाल जान ।।४५
निज सीस देस माँनहु नकार, पुन प्रचोदयात् सु सिखा प्यार।
दूसर प्रकार अब कहै देत, है जेष्टवरन कौं परम हेत ।।४६

---

१ देवीभागवत से शुद्धिकृत। २ पद।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ततू मुंड करै रक्षा जु तेम, जाँनहु सकार कौं सीस जेम।
विध इही नेत्र रक्षा विकार, तैसै कपाल रक्षा तुकार ।।४७
जाँनहु वकार नासिका जाग, लेखहु रकार मुख ठौर लाग।
कहीयै जु ओठ ऊपर निकार, अध ओठ स्याहि जैसै यकार ।।४८
जाँनहु भकार मुख-मध्य जास, विच दाढी है गोकार वास।
देकार कंठ कै जाँन देस, ऐसै वकार कंधर असेस ।।४९
समुझीयै हाथ दहिनै स्यकार, धीकार सु वाँमै हाथ धार।
पुन हृदय मकार हिकार पेट, थित नाभ धिकारह वर्ण थेट ।।५०
योकार कहै कटि ठौर येम, जाँनहु नकार उरु उभय जेम।
जाँनू प्रकार चोकार जांघ्रि, घुटनूँ दकार याकार अंघ्रि ।।५१
व्यंजन नकार सबंग वेस, है रक्षा कै कारन हमेस।
इह दिव्य कवच गायत्री और, भल सुमरन करीयै साँझ-भौर ।।५२
गायत्री हृदय अब कहत ग्याँन, सुनीयै मुनि नारद संन्निधाँन।
गायत्री जप-फल होय गेय, धारना कृतारथ सो विधेय ।।५३
सो देत अथर्वण वेद-साख, भूदेव पिछाँनत भेद भाख।
वैराट रूप गायत्री वेख, लीजीयै वेद की मात लेख ।।५४
प्रति अंग-अंग सुर वसत पूर, निज रूप पिंड वृहमंड नूँर।
भावना करै गायत्री भास, आराधक रत ह्वै हीय उजास ।।५५
गायत्रीमय जिह होत गात, स्वै रूप सुद्धि तनमय समात।
नाराँयन भाखत लोकनाह, रिखि हम है ताही जाँन राह ।।५६
गायत्री-छंद गायत्री-गीत, परमेसुरि देवत नित पुनीत।
पूर्वोक्त रीत जाही प्रकार, अंग न्यास करै मंत्र ही उचार ।।५७
नित कह्यौ ताहि षट वार नेम, जाँनीयै सुमुख गुरु कहै जेम।
देखकै फेर येकंत देस, आसन लगाय बैठै असेस ।।५८
मन कौं सुस्थिर कर गहै मौंन, धारै गायत्री हीयै ध्याँन।
नित करनी वनंत अर्थ न्यास, सुनीयै मुनि नारद सावकास ।।५९
द्यौ मस्तक मै स्वरवैद दंत, विच ओठन कै संध्या वसंत।
मुख अग्नि सरस्वती जीह माँन, जिह ग्रींवाँ मै वृसपत्ति जाँन ।।६०
वसु अष्टस्तन मै करत वास, निज वाहु उभय मारुत निवास।
हीय मेघ पेट आकार होय, जिह अंतरीक्ष नाभी सु जोय ।।६१

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

करहाव इंद्र वासौ करंत, विच जघन प्रजापति नित वसंत।
उरु उभय थाँन जाँनहु अरेह, कैलास मलय वासौ करेह ।।६२
उरुआँ मै विस्वेदेव आय, जाँनुआँ जंघ कौसक जमाय।
उरु पितर पाय प्रथवी अड़ोल, अरु वनस्पती अंगुली ओल ।।६३
ऋखी रोम महूरथ नख रचाय, ऋतु हाड़ मास लोहू रहाय।
जिह पलक भाजनै वर्ष जात, दिन-रात प्रवर रवि सिस दिखात ।।६४
दिव्र नैन सहस्रक रही देख, लीजीयै सरन गायत्री लेख।
उच्चार प्रथम कर ओंकार, तत्ससवतुव्वरेण्यं नमस्कार ।।६५
नेम कौं धारकै करै नित्त, परभात दुफैरहु साँझ प्रत्त।
सूरकौं उदय कर नमस्कार, अघ निसा करे मेटत अपार ।।६६
साँझ कौ करै संध्या सकोय, जरजात दिवस पातक जिकोय।
जो करै त्रसंध्या ध्याँन जाप, पिंड के मिटावत सकल पाप ।।६७
गायत्री-हृदय कौ कह्यौ ग्याँन, धारना करै निस-दिवस ध्याँन।
अघ मिटै कटै बाधा अनेक, याकौ समाँन साधन न येक ।।६८
याही कौ सुमरन करै याद, जप साठ-सहँस फल मिलै ज्याद।
उपदेस देत जो विप्र आठ, पूजन जुत सुमरन बोध पाठ ।।६९
गायत्री सफल ह्वै तत्व-ग्याँन, सो विप्र होत देवत समाँन।
अघ छूट जात तन तंत अंत, वृह्म कै लोक वासौ वसंत ।।७०
करीयै स्तोत्र गायत्री केर, विध संध्या साधन वेर-वेर।
गायत्री आद सक्ती गनंत, जग-माता जड़-जंगम प्रजंत ।।७१
भक्तन वरदायनि दिव्य भेस, व्यापका अनंता श्री विसेस।
वेला त्रय संध्या वार-वार, करत हूँ तुमही कौं नमस्कार ।।७२
गायत्री सावत्री गनाय, सरसुती तुही व्राँह्मी सुहाय।
वैस्नवी तुही रौद्री विसेस, स्वेता रक्ता क्रस्ना सुवेस ।।७३
बाला-स्वरूपनी प्रात वेर, कउमार जुवती मध्याँन केर।
कर वृद्ध-अवस्था साँझ-काल, तूँ तीन रूप दरसत त्रकाल ।।७४
आरूढा व्राँह्मी हंस ओर, अरुड़ासनि सरस्वति अंग गौर।
सावत्री वृषभ-वाहनी सुभाय, जिह ध्याँन चिंतना पाप जाय ।।७५
व्राँह्मी ऋगध्यायनी भूँ विराज, सो दरस देत तपसी-समाज।
वर पढत सरस्वती जुजरवेद, अंतरीख विराजत सोई अखेद ।।७६

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सावंत्री साँम गावत सदीव, सो भ्रमत भूँम तल पोख सीव ।
रहीयत सावंत्री रुद्र-लोक, अरु सरस्वति वासौ विस्नु ओक ।।७७
ब्राँह्मी सु वृह्म-थांनक वसंत, सो सदा सहायक सुजन संत ।
पुन सप्तरिखिन सौं पर्म प्रीत, वर दैनै वाली सुभग वीत ।।७८
सिव-सक्ति कर्ग सौं प्रगट सोय, तन स्वेद ऊपजी अंसु-तोय ।
आनंद जनेता तूँ अनाद, वाँनी विधेय हंता विखाद ।।७९
दुर्गा है तूँही दस प्रकार, ये नाँम तिहाँरे जन-अधार ।
धुर कहै वरेण्या नाँम धेय, वगद रु वरेष्टा नित विधेय ।।८०
वर वर्णनीय आह्वहि विसेख, लीजीयैं नरेष्टा नाँम लेख ।
वर वर्णनीय कहीयत विसेस, सुभ नाँम गरिष्टाहू सुवेस ।।८१
वराही वरारोहा विचार, अरु नील गंग संध्या उचार ।
सुच मोक्ष भोगदा सदा चाल, तूँ गायत्री दरसत त्रकाल ।।८२
भागीरथी भूतल मध्य-भाग, अधलोक भोगवंती अथाग ।
स्वर्ग मै तुही सीता सरूप, त्रयलोक तिहारे तीन रूप ।।८३
लेखीयै धारणा भूरलौक, थित वायु-सक्ति भुव ओक थोक ।
स्वर्ग मै तेज तेरौ सुभाय, महा सिद्धि महर थाँनक मिलाय ।।८४
तपलोक तपस्वनि तत तुहींज, सतलोक सत्यवाँनी सहीज ।
विस्नु कौ लौक कमला वसाय, चिब वृह्मलोक गायत्री छाय ।।८५
रुद्र के लोक गौरी रहंत, अर्द्धांगी-रूपा अनुसरंत ।
प्रकृती तुँही अहमह पुनीत, गायत्री-गायन होत गीत ।।८६
परमा परातपर जुत प्रकास, निज इच्छया-सक्ती अनायास ।
सुभ क्रीया-सक्ति अरु ग्याँन-सक्ति, भय मेटहु धारनि भाव-भक्ति ।।८७
गंगा तूँ जमना दिव्य गात, सरस्वती पिपासा नदि सुहात ।
देविका सिंधु सरजू द्रवंत, नर्मदा कौसकी निर्झरंत ।।८८
ऐरावति गोदावरी आप, सरता सतद्रुत मेटन सराप ।
काँवेरी पूरन करन काँम, लेखीयैं चंद्रभागा ललाँम ।।८९
सरस्वती वितस्ता तोय-सोत, गल्लगी गोमती तोहि गोत ।
करतोया पावन जग करंत, वसु वेत्रवती धारा वृहंत ।।९०
सब जग पवित्र करता सरीर, निर्भर धारा नदी-नाल नीर ।
नाड़ी सरीर मै तूँ निबंध, सब रोह रही तन संध-संध ।।९१

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

इंगला पिंगला आद-अंत, सुषमना मुक्ति दैनी जु संत।
गंधारी हस्त जिह्वा गरीय, पूषा रू अपूषा पासरीय ॥६२

औरै अलंबुखा कुहू एव, संखनी प्राँन वाँहिन सभेव।
थिर रोक रही सब थाँन-थाँन, गम पावत तेरी ग्याँनवाँन ॥६३

हीय-कमल प्राँन सक्ती हरोल, परकास सुप्न की कंठ पोल।
तालू मै सदाँ धारा तुलंत, भौंह मै बिंदु मालिन भजंत ॥६४

विच कमल मूल कुंडलि वसाय, केस के मूल व्यापनि कहाय।
तूँ कला ग्याँन आसन करेह, परमात्मरूपनी तूँ परेह ॥६५

रहि मनोन्मई तूँ वृहमरंध्र, निज ऊर्ध धाँम दैनी निरंध्र।
श्री संध्या तूँ गायत्री सत्त, नित नमस्कार तेरे निमत्त ॥६६

विप्राद तारणी च्यार वर्न, भज संध्यावंदन मंत्र भर्न।
करता स्तोत्र इह संध-काल, जन तरै छूट माया-जंजाल ॥६७

लहै पुत्र अपुत्रहु अलभ लाभ, नित भक्ति निवाजै पद्मनाभ।
जोगी जन पावै जोग-जुक्त, मन फलै मनोरथ अंत मुक्त ॥६८

गुनवंत प्रकासै सुद्ध ग्याँन, सब तीरथ मै मनु करयौ स्नाँन।
गायत्री-महमा कही गाय, कोऊ पाठ करै हुय सुद्ध गात ॥६९

पावै फल इछ्छत सहित पेम, नित सदाचार वरन्यौ सु नेम।
इह सदाचार उत्तँम अनंत, त्रय संद्धकाल साधन सतंत्र ॥१००

दोहा

अष्टोतर अरु सहँस इक, कहत नाँम जप-काज।
वृह्मग्याँन पावत विसद, सब मुनिराज-समाज ॥१०१

वृह्मा जाके ऋख विदत, चितहु अनुष्टप-छंद।
देवी गायत्री देवता, दोष मिटावत दुंद ॥१०२

अक्षर हल है वीज इह, सुर जुत अनुसरीयै जु।
सक्तिमात येकाक्षरी, अंगन्यासु करीयै जु ॥१०३

करंन्यास कर साधकह, धारन करै जु ध्याँन।
नाँम अराधन करत निज, गम पायै गुरू-ग्याँन ॥१०४

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मूल

रक्तस्वेतहिरण्यनीलधवलैर्य्युक्तां त्रिनेत्रोज्वलां,
रक्तां रक्तनवाम्बुजन्मनिगर्णैर्युक्तां कुमारीमिमाम् ।।
गायत्रीं कमलासनाङ्करतलव्यानद्धकुण्डाम्वुजा-
पद्माक्षीञ्च वरं स्रजञ्च दधतीं हंसाधिरूढाम्भजे ।।१

अब अकरादि ३५ नाम कहते हैं—

अचिन्त्यलक्षणाऽव्यक्ता अर्थमाता महेश्वरी ।
अमृतार्णवमध्यस्था अजिता चापराजिता ।।
अणिमादिगुणाधारा अर्कमण्डलसंस्थिता ।
अजरा चापराधर्म्मा अक्षसूत्रधरावरा ।।
अकारादिक्षकारान्ता अरिषड्वर्गभेदिनी ।
अंजनाद्रिप्रतीकासा अंजनाद्रिनिवासिनी ।।
अदितिरजयाऽविद्या अरविन्दनिभेक्षणा ।
अन्तर्व्बहिस्स्थिताऽविद्याध्वंसिन्यन्तरात्मिका ।।
अजा वाजिमुखाऽवासा अरविन्दनिभानना ।
अर्द्धमात्राऽर्थदानज्ञा अरिमण्डलमर्द्दिनी ।।
असुरघ्नी अमावास्या अलक्ष्मीर्ह्यन्त्यजार्चितां ।

आकारादि २२ नाम—

आदिलक्ष्मीरादिशक्तिराकृतिरायतानना ।
आदित्यपदवीचारा आदित्यपरिसेविता ।।
आचार्य्याऽऽवर्त्तनाचारा आदिमूर्तिनिवासिनी ।
आग्नेयी चामरी चाद्या आराध्या वासनस्थिता ।।
आधारनिलयाऽऽधारा आकाशान्तनिवासिनी ।
आद्याक्षरसमायुक्ता अन्तराकाशरूपिणी ।।
आदित्यमण्डलगता आन्तरध्वान्तनासिनी ।

इकारादि नाम १३—

इन्दिरा इष्टदा इष्टा इन्दीवरनिभेक्षणा ।
इरावती इन्द्रपदा इन्द्राणी इन्द्ररूपिणी ।।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

इक्षुकोदण्डसंयुक्ता इषुसंधानकारिणी ।
इन्द्रनीलसमाकारा इडापिंगलरूपिणी ।।
ईकारादि दो नाम इन्द्राक्षी ईश्वरी देवी इषणातपर्वजिता ।

उकारादि आठ नाम—

उमा चोष्मा उडुनिभा उर्व्वारुकफलानना ।
उडुप्रभा उडुमती उडुपा उडुमध्यगा ।।

ऊकारादि ५ नाम—

ऊर्ध्वा ऊर्ध्वकेशी च ऊर्ध्वाधोगतिभेदिनी ।
ऊर्ध्वबाहुप्रिया ऊर्म्मिमालागन्धदायिनी ।।

ऋकारादि १३ नाम—

ऋतं च ऋतुमती ऋषिदेवनमस्कृता ।
ऋग्वेदा ऋणहर्त्री च ऋषिमण्डलचारिणी ।।
ऋद्धिदा ऋतुमार्गस्था ऋतुधर्म्मा ऋतुप्रदा
ऋग्वेदनिलया ऋज्वी—
लृकारादि अप्रसिद्ध होने के कारण नहीं कहे ।

यद्यपि लकारादि आगै वरनन करेंगे पर यहाँ भी तीन नाम लकारादि कहते हैं।

लकारादि तीन नाम—

× × × × लुप्तधर्म्मप्रवर्त्तनी ।
लूतारिवरसंभूता लूतादिविषहारिणी ।।

एकारादि चार नाम—

एकाक्षरा एकमात्रा एका एकैकनिष्ठिता ।

ऐकारादि तीन नाम—

ऐन्द्री ऐरावतारूढा ऐहिकामुष्मिकप्रदा ।

ओकारादि चार नाम—

ओकारा ओषधीरोषा ओतप्रोतनिवासिनी

औकारादि तीन नाम—

और्व्वा औषधसम्पन्ना औपासनफलप्रदा ।

अंकारादि एक नाम—

अंडमध्यस्थिता देवी

अःकारादि नाम—

अःकार मनुरूपिणी

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ककारादि ६६ नाम—

कात्यायनी कालरात्रिः कामाक्षी कामसुन्दरी ।
कमला कामिनी कांता कामदा कलकंठिनी ।।
करिकुम्भस्तनभरा करवीरसुवासिनी ।
कल्याणी कुण्डलवती कुरुक्षेत्रनिवासिनी ।।
कुरुविन्ददलाकारा कुण्डली कुमुदालया ।
कालजिह्वा करालास्या कालिका कालरूपिणी ।।
कमनीयगुणा कांतिः कलाधारा कुमुद्वती ।
कौशिकी कमला चाथ कामचारप्रभंजिनी ।।
केसरी केशवनुता कदम्बकुसुमप्रिया ।
कालिंदी कालिका कांची कलसोद्भवसंस्तुता ।।
काममाता क्रतुमती कामरूपा कृपावती ।
कुमारी कुण्डनिलया किराती कीरवाहना ।।
कैकेयी कोकिलालापा केतकीकुसुमप्रिया ।
कमण्डलुधरा काली कर्म्मनिर्म्मूलकारिणी ।।
कलहंसगतिकख्या कृतकौतुकमण्डला ।
कस्तूरीतिलका कम्रा करीन्द्रगमना कुहूः ।।
कर्प्पूरलेपना कृष्णा कपिला कुहरक्षया ।
कूटस्था कुधराकम्रा कुक्षिस्थाखिलविष्टपा ।।

खकारादि ११ नाम—

खड्गखेटधरा खर्व्वा खेखरी खगवाहना ।
खड्गधारिनी ख्याता खगराजोपरिस्थिता ।।
खलघ्नी खण्डितजरा खण्डखानप्रदायिनी ।
खंडेन्दुतिलका—

गकारादि ३६ नाम —

× × × गंगा गणेश ग्रहपूजिता ।
गायत्री गोमती गीता गान्धारी गानलोलुपा ।।
गौतमी गामिनी गन्धा गन्धर्व्वाप्सरसेविता ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गोविन्दचरणाक्तान्ता गुणत्रयविभाविता ।।
गन्धर्व्वी गह्वरी गोत्रा गिरीशा गहनागमी ।
गुह्वावासा गुणवती गुरुपापप्रणाशिनी ।।
गुर्व्वी गुनवती गुह्या गोपिका गुणदायिनी ।
गिरिजा गुह्यमातंगी गरुडध्वजवल्लभा ।।
गोकर्णनिलयासक्ता गुह्यमण्डलवर्त्तिनी ।

घकारादि १४ नाम—

घर्म्मदा घनदा घंटा घोरदानवमर्द्दिनी ।
घृणीमन्त्रमयी घोषा घनसम्पत्तिदायिनी ।।
घंटारवप्रिया घाना घृणिसंतुष्टिकारिणी ।
घनारिमण्डला घूर्णा घृताची घनवेगिनी ।।

ज्ञाकारादि एक नाम—

ज्ञानधातुमयी ।

चकारादि ४६ नाम—

× × × चर्च्चा चर्चिता चारुहासिनी
चटुला चण्डिका चित्रा चित्रमाल्यविभूषिता ।
चतुर्भुजा चारुदन्ता चातुरी चरितप्रदा ।।
चूलिका चित्रवस्त्रान्ता चन्दना चूर्णकुण्डला ।
चन्द्रहासा चारुदात्री चकोरी चन्द्रहासिनी ।।
चन्द्रिका चन्द्रधात्री चौरी चोरा च चण्डिका ।
चंचद्वाग्वादिनी चन्द्रचूडा चोरविनाशिनी ।।
चारुचन्दनलिप्तांगी चंचच्चामरवीजिता ।
चारुमध्या चारुगतिः चन्द्रिका चन्द्ररूपिणी ।।
चारुहोमप्रिया चार्व्वी चरिता चक्रवाहुका ।
चन्द्रमण्डलमध्यस्था चन्द्रमण्डलदर्प्पणा ।।
चक्रवाकस्तनी चेष्टा चित्रा चारुविलासिनी ।
चित्स्वरूपा चन्द्रवती चन्द्रमा चन्दनप्रिया ।।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

चोदयत्री चिरप्रज्ञा चातका चारुहेतुकी ।

छकारादि १४ नाम –

छत्रपात्रा छत्रधरा छाया छन्दःपरिच्छदा ।
छायादेवी छिद्रनखा छिन्नेन्द्रियविसर्पिणी ।।
छन्दोनुष्टुप्प्रतिष्ठाता छिद्रोपद्रवछेदिनी ।
छेदा छत्रेस्वरी छिन्ना छुरिका छेदनप्रिया ।।

जकारादि ४४ नाम—

जननी जन्मरहिता जातिभेदा जगन्मयी ।
जाह्नवी जटिला जेत्री जरामरणवर्ज्जिता ।।
जम्बूद्वीपवती ज्वाला जयन्ती जलक्षालिनी ।
जितेन्द्रिया जितक्रोधा जितामित्रा जगत्प्रिया ।।
जातरूपमयी जिह्वा जानकी जगती जरा ।
जनित्री जन्हुतनया जगत्त्रयहितैषिणी ।।
ज्वालामुखी जयवती ज्वरघ्नी जितविष्टपा ।
जिताक्रान्तमयी ज्वाला जाग्रती ज्वरदेवता ।।
ज्वलन्ती जलदा ज्येष्ठा ज्याघोषास्फोटदिङ्मुखी ।
जम्भिनो जम्भिरा जम्भा ज्वलन्माणिक्यकुण्डला ।।

झकारादि ४ नाम—

झिंझिका झणनिर्घोषा झंझामारुतवेगिनी ।
× × × × झल्लकीवाद्यकुशला ।।

ञकारादि २ नाम—

ञरूपा ञभजा

टकारादि ६ नाम—

टंकबाणसमायुक्ता टंकनी टंकभेदिनी ।
टंकीगुणकृताघोषा टंकनीयमहोरसा ।।
× × × टंकारकारिणी देवी ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ठकारादि १ नाम—

ठठशब्दनिनादिनी

डकारादि ८ नाम—

डामरी डाकिनी डिम्भा डुण्डुमारैकनिर्ज्जिता ।
डामरीतन्त्रमार्ग्गस्था डमरूमरुनादिनी ।।
डिण्डीरवसहा डिम्भालुप्तक्रीडापरायणा ।

ढकारादि ३ नाम—

ढुं ढविघ्नेशजननी ढक्काहस्ता ढिलिप्रजा ।

णकारादि नाम न थे इससे नकारादि ५ नाम कहते हैं

नकारादि ५ नाम—

नित्यज्ञाना निरुपमा निर्गुणा नर्मदा नदी ।

तकारादि ६२ नाम—

त्रिगुणा त्रिपदा तन्त्री तुलसी तरुणा तरि ।
त्रिविक्रमपदाक्रांता तुरीयपदगामिनी ।।
तरुणादित्यसंकासा तामसी तुहिनी तुरा ।
त्रिकालज्ञानसम्पन्ना त्रिवली त्रिलोचना ।।
त्रिशक्तिः त्रिपुरा तुङ्गा तुरङ्गवदना तटी ।
तिमिंगिलगिला तीव्रा त्रिस्रोता तामसादनो ।।
तन्त्रमंत्रविशेषज्ञा तनुमध्या त्रिविष्टपा ।
त्रिसंन्ध्या त्रिस्तनी तोषासंस्था तालप्रतापिनी ।।
ताटंकिनी तुषाराभा तुहिनाचलवासिनी ।
तन्तुजालसमायुक्ता तारहारावलिप्रिया ।।
तिलहोमप्रिया तीर्था तमालकुसुमाकृतिः ।
तारका त्रियुता तन्वी त्रिशंकुपरिवारिता ।।
तिलोदरी तिरोभाषा ताटङ्कप्रियवादिनी ।
त्रिजटा तित्तरी तृष्णा त्रिविधा तरुणाकृतिः ।।
तप्तकाञ्चनसङ्काशा तप्तकाञ्चनभूषणा ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

त्रैयम्बिका त्रिवर्या च त्रिकालज्ञानदायिनी ।।
तर्पणा तृप्तिदा तृप्ता तामसी तुम्बुरुस्तुता ।
तार्क्ष्यस्था त्रिगुणाकारा त्रिभङ्गी तनुवल्लरी ।।

थकारादि ३ नाम—

थात्कारी थारिणी थान्ता ।

दकारादि २७ नाम—

× × × दोह्निनी दीनवत्सला ।
दानवान्तकरी दुर्गा दुर्गासुरनिबर्हिणी ।।
देवप्रीतिर्दिवारात्रिर्द्रौपदी दुन्दुभिस्वना ।
देवयानी दुरावासा दारिद्र्यभेदिनी दिवा ।।
दामोदरी दिवोदीप्तादिग्वासा दिग्विमोह्निनी ।
दण्डकारण्यनिलया दण्डिनी देवपूजिता ।।
देववंद्या दिविषदा द्वेषिणी दानवाकृतिः ।
दीनानाथस्तुता दीक्षा देवतादिस्वरूपिणी ।।

धकारादि २० नाम—

धात्री धनुर्द्धरा धेनुर्धारिणी धर्म्मचारिणी ।
धाराधरा धराधारा धनदा धान्यदोह्निनी ।।
धर्म्मशीला धनाध्यक्षा धनुर्वेदविशारदा ।
धृतिर्धन्या धृतपदा धर्म्मराजप्रिया ध्रुवा ।।
धर्मवती धूमकेशी धर्म्मशास्त्रप्रकाशिनी ।

नकारादि ५५ नाम—

नन्दा नन्दप्रिया निद्रा नृनुता नन्दनात्मिका ।
नर्म्मदा नलिनी नीला नीलकंठसमाश्रया ।।
नारायणप्रिया नित्या निर्म्मला निर्गुणा निधिः ।
निराधारा निरुपमा नित्यशुद्धा निरञ्जना ।।
नादविन्दुकलातीता नादविन्दुकलात्मिका ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

नृसिंहिनी नगधरा नृपनागविभूषिता ।।
नरकक्लेशशमनी नारायणपदोद्भवा ।
निरवद्या निराकारा नारदप्रियकारिणी ।।
नानाज्योतिसमाख्याता निधिदा निर्म्मलात्मिका ।
नवसूत्रधरा नीतिर्निरुपद्रवकारिणी ।।
नन्दजा नवरत्नाढ्या नैमिषारण्यवासिनी ।
नवनीतप्रिया नारी नीलजीमूतनिस्वना ।।
निमेषिणी नदीरूपा नीलग्रीवा निशीश्वरी ।
नागवल्ली निशुम्भघ्नी नागलोकनिवासिनी ।।
नवजम्बूनदप्रख्या नागलोकाधिदेवता ।
नूपुराक्रान्तचरणा नरचित्तप्रमोदिनी ।।
निमग्नारक्तनयना निर्यातसमनिस्स्वना ।
नन्दनोद्यानिलया निर्व्यूहापरधारिणी ।।

पकारादि १२५ नाम—

पार्वती परमोदारा परब्रह्मात्मिका परा ।
पञ्चकोशविनिर्म्मुक्ता पञ्चपातकनाशिनी ।।
परचित्तविधानज्ञा पञ्चिका पञ्चरूपिणी ।
पूर्णिमा परमप्रीता परतेज प्रकाशिनीः ।।
पौराणी पौरुषी पुण्या पुण्डरीक्षनिभेक्षणा ।
पातालतलनिर्म्मग्ना प्रीता प्रीतिविवर्द्धिनी ।।
पावनी पादसहिता पेशली पाकशासिनी ।
प्रजापतिपरिश्राता पर्वतस्तनमण्डली ।।
पद्मप्रिया पद्मसंस्था पद्माक्षी पद्मसम्भवा ।
पद्मपत्रा पद्मपदा पद्मिनी प्रियभाषिणी ।।
पशुपाशविनिर्म्मुक्ता पुरन्ध्री पुरवासिनी ।
पुष्कला पुरुषा पर्वा पारिजातसमप्रिया ।।
पतिव्रता पवित्राङ्गी पुष्पहासपरायणा ।
प्रज्ञावतीसुतातौत्रीपुत्रपूज्या पयस्विनी ।।
पीठपाशधरा पंक्तिः पितृलोकप्रदायिनी ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पुराणी पुण्यशीला प्रणतार्त्तिविनाशिनी ।
प्रद्युम्नजननी पुष्टा पितामहपरिगृहा ।।
पुण्डरीकपुरावासा पुण्डरीकसमानना ।
पृथुजंघा पृथुभुजा पृथुपादा पृथूदरी ।।
प्रवालशोभा पिङ्गाक्षी पीतवासा प्रचापला ।
प्रसवा पुष्टिदा पुण्या प्रतिष्ठा प्रणवागतिः ।।
पञ्चवर्णा पञ्चवाणी पञ्चिका पञ्चरार्चिता ।
परमाया परज्योतिः परप्रीतिः परागतिः ।।
पराकाष्ठा परेशानी पावनी पावकद्युतिः ।
पुण्यभद्रा परिच्छेदा पुष्पहासा पृथूदराः ।।
पीताङ्गी पीतवसना पीतशय्या पिशाचिनी ।
पीतक्रिया पिशाचघ्नी पाटलाक्षी पटुक्रिया ।।
पञ्चभक्षप्रियाचारा पूतनाप्राणघातिनी ।
पुन्नागवनमध्यस्था पुण्यतीर्थनिषेविता ।।
पञ्चाङ्गी पराशक्तिः परमाल्हादकारिणीः ।
पुष्पकाण्डस्थिता पूषा पोषिताखिलविष्टपा ।।
पानप्रिया पञ्चशिखा पन्नगोपरिशायिनी ।
पञ्चमात्रात्मिका पृथ्वी पार्थिकी पृथुदोह्निनी ।।
पुराणन्यायमीमांसा पाटला पुष्पगन्धिनी ।
पुण्यप्रदा पारदात्री परमार्गैकगोचरा ।।
प्रवालशोभा पर्णाभा प्रणवा पल्लवोदरी ।

फकारादि ७ नाम—

फलिनी फलदा फल्गु फूत्कारी फलकाकृतिः ।
फणीन्द्रभोगशयना फणिमण्डलमण्डिता ।।

बकारादि ५३ नाम—

बालबाला बहुमता बालातपनिभांशुका ।
बलभद्रप्रियाचारा बडवा बुद्धिसंस्तुता ।।
बन्दीदेवी बिलवती बडिसघ्नी बलिप्रिया ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बान्धवी बोधिता बुद्धि बन्धूककुसुमप्रिया ।।
बालभानुप्रभाकारा ब्राह्मी च ब्रह्मदेवता ।
बृहस्पतिस्तुता बृन्दा बृन्दावनबिहारिणी ।।
ब्रालाकिनी बिलाहारा बलाकाशा बहूदका ।
बहुनेत्रा बहुपदा बहुकर्णावतंसिका ।।
बहुबाहुयुता बीजरूपिणी बहुरूपिणी ।
बिन्दुनादकलातीता बिन्दुनादस्वरूपिणी ।।
बद्धगोधांगुलित्राणा बदर्य्याश्रमवासिनी ।
बिन्दारिका बृहत्स्कन्धा बृहतीवानपातिनी ।।
बृन्दाध्यक्षा बहुनुता बनिता बहुविक्रमा ।
बद्धपद्मासनासीना बिल्वपत्रतलस्थिता ।।
बोधिद्रुमनिजावासा बडिस्था बिन्दुदर्पणा ।
बाला बाणासनवती बडवानलवेगिनी ।।
ब्रह्माण्डबहिरन्तस्था ब्रह्मकङ्कणसूत्रिणी ।

भकारादि ३९ नाम—

भवानी भीषणवती भाविनी भयहारिणी ।
भद्रकाली भुजङ्गाक्षी भारती भारताशया ।।
भैरवी भीषणाकारा भूतिदा भूतिभासिनी ।
भोमिनी भोगनिरता भद्रदा भूरिविक्रमा ।।
भूतवासा भृगुलता भार्गवी भूसुरार्चिता ।
भागीरथी भोगवती भवनस्था भिषग्वरा ।।
भामिनी भोगिनी भाषा भाविनी भूरिदक्षिणा ।
भर्गात्मिका भीमवती भवबन्धविमोचिनी ।।
भजनीया भीमधात्री भूषिता भुवनेश्वरी ।
भुजङ्गवलया भीमा भेरुण्डा भागधेयिनी ।।

मकारादि ५४ नाम—

माता माया मधुमती मधुजिह्वा मधुप्रिया ।
महादेवी महाभागा मालिनी मीनलोचना ।।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मायातीता मधुमती मधुमांसा मधुद्रवा ।
मानवी मधुसम्भूता मिथिलापुर वासिनी ।।
मधुकैटभ संहर्त्री मेदिनी मेघमालिनी ।
मन्दोदरी महामाया मैथिली मरुताशिनी ।।
महालक्ष्मी महाकाली महाकन्या महेश्वरी ।
माहेन्द्री मेरुतनया मन्दारकुसुमार्च्चिता ।।
मञ्जुमञ्जीरचरणा मोक्षदा मञ्जुभाषिनी ।
मधुरद्राविनी मुद्रा मलया-मलयान्विता ।।
मेधा मरकतस्यामा मागधा मेनकात्मजा ।
महामारी महावीरा महाश्यामा मनुस्तुता ।।
मातृका मिहिराभासा मुकुन्दपदविक्रमा ।
मूलाधारस्थिता मुग्धा मणिपूरकवासिनी ।।
मृगाक्षी महिषारूढा महिषासुरमर्द्दिनी ।

यकारादि २० नाम—

योगासना योगगम्या योगा यौवनकाश्रया ।
यौवनी युद्धमध्यस्था यमुना युगधारिणी ।।
यक्षिणी योगयुक्ता च यक्षराजप्रसूतिनी ।
यात्रायानविधानज्ञा यदुवंससमुद्भवा ।।
यकारादि-हकारांता याजुषी यज्ञरूपिणी ।
यामिनी योगनिरता यातुधानभयङ्करी ।।

रकारादि २७ नाम —

रुक्मिणी रमणी रामा रेवती रेणुका रति ।
रौद्री रौद्रप्रियाकारा राममाता रतिप्रिया ।।
रोहिणी राज्यदा रेवा रमा राजीवलोचना ।
राकेसी रूपसम्पन्ना रक्तसिंहासनस्थिता ।।
रक्तमाल्याम्बरधरा रक्तगन्धानुलेपना ।
राजहंससमारूढा रम्भा रक्तमलिप्रिया ।।
रमणीययुगाधारा राजिताखिलभूतला ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

रुरुचर्म्मपरीधाना रथिनी रत्नमालिका ।।
राकेशी रोगशमनी रागिनी रोमहर्षिणी ।
रामचन्द्रपदाक्रांता रावणच्छेदकारिणी ।।
रक्तवस्त्रपरिच्छिन्ना रथस्था रुक्मभूषणा ।

लकारादि १३ नाम—

लज्जाधिदेवता लोला ललिता लिङ्गधारिणी ।
लक्ष्मी लीला लुप्तविषा लोकिनी लोकविश्रुता ।।
लज्जा लम्बोदरीदेवी ललना लोकधारिणी ।

वकारादि २७ नाम—

वरदा वन्दिता विद्या वैष्णवी विमलामति ।
वाराही विरजा वर्षा वरलक्ष्मी विलासिनी ।।
विनता व्योममध्यस्था वारिजासनसंस्थिता ।
वारुणी वेणुसम्भूता वीतहोत्रा विरूपिणी ।।
वायुमण्डलमध्यस्था विष्णुरूपा विधिक्रिया ।
विष्णुपत्नी विष्णुमती विशालाक्षी वसुन्धरा ।।
वामदेवप्रिया वेला वज्रिणी वसुदोहिनी ।
वेदाक्षरपरीताङ्गी वाजपेयफलप्रदा ।।
वासवी वामजननी वैकुण्ठनिलयापहा ।
व्यासप्रिया वर्म्मधरा वाल्मीकिपरिसेविता ।।

शकारादि २९ नाम—

शाकम्भरी शिवा शान्ता शारदा शरणागति ।
शान्तोदरी शुभाचारा शुम्भासुरविमर्दिनी ।।
शोभावती शिवाकारा शंकराशरोरिणी ।
शोणा शुभासया शुभ्रु संहारग्रहकारिणी ।।
शरावती शरानन्दा शराज्योत्स्ना शुभानना ।
शरभा शालिनी शुद्धा शवरी शुकवाहना ।।
श्रीमती श्रीधरानन्दा श्रवणानन्ददायिनी ।
× × × × शर्व्वानी शर्वरीवन्द्या ।।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

षकारादि ५ नाम

× × × × × षड्भाषा षड्ऋतुप्रिया ।
षडाधारस्थिता देवी षण्मुख प्रियकारिणी ।
षडंशरूप शतरूपा च सुरासुरनमस्कृता ।।

सकारादि २७ नाम

सरस्वती सदाधारा सर्वमंगलकारिणी ।
सामगानप्रिया सूक्ष्मा सावित्री सामसम्भवा ।।
सर्ववासा सदानन्दा सुस्तनी सागराम्बरा ।
सर्वैश्वर्य्यप्रिया सिद्धिः साधुबन्धुपदाक्रमा ।।
सप्तर्षिमण्डलगता सोममण्डलवासिनी ।
सर्वज्ञा सान्द्रकरुणा समानाधिकवर्ज्जिता ।।
सर्वोत्तुङ्गा सङ्गहीना सङ्गुणा सकलेष्टपा ।
सरयू सूर्यतनया सुकेसी सोमसंहिता ।।

हकारादि ४ नाम

हिरण्यवर्णा हरिणी ह्रींकारी हंसवाहिनी

क्षकारादि ३ नाम

क्षौमवस्त्रपरीतांगी क्षीराब्धितनया क्षमा

अब आठ 'नाम' क्रमरहित 'कहते हैं।' सहस्र 'तो' होगये—
गायत्री चाथ सावित्री पार्वती च सरस्वती,
वेदगर्भा वरारोहा श्रीगायत्री पराम्बिका ।

नारायण महाराज वर्णन करते हैं कि हे नारद ! यह गायत्री-सहस्रनाम पुण्यद सर्वपापनाशिक महासम्पत्तिदायक तुमसे कहा। इस प्रकार ये नाम गायत्री के सन्तोष उत्पन्न कराने वाले हैं। इन्हें ब्राह्मणों के साथ अष्टमी को विशेष करके पढ़ना चाहिए। प्रथम जप पूजा होम ध्यानादि करके उच्चारण करना चाहिए। यह सहस्रनाम हर किसी को न देना चाहिए किन्तु सुभक्त सुशिष्य ब्राह्मण ही से कहना चाहिए। भ्रष्ट साधक-बन्धु को न देखना चाहिए। जिसके घर में यह लिखा धरा रहेगा उसके भवन में भय न होगा और चञ्चल भी लक्ष्मीजी हैं पर उस गृह में स्थिर होकर टिकेंगी।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

छंद पद्धरी

अब दीक्षा काल सु कहत और, तव गायत्री ह्वै सफल तौर।
सिख सिद्ध होत गायत्री साध, उर मिटै सकल जासौं उपाध ।।१०५
दीक्षत बुलाय सिख आप द्वार, करीयै भक्ती-जुत नमसकार[1]।
जाचै दीक्षा कौं हाथ जोर, निज मात-पिता संजुत निहोर ।।१०६
पुन सासन लै गुरुराज पास, काया पवित्र कर सावकास।
सरवर तट नद सौं कर सिनाँन, पाँनीय कमंडल लऐ पाँन ।।१०७
वृत धारन कर निज गृह विचाल, कर गमन सु आवै प्रातकाल।
थित दीक्षत पास ही जग्य-थाँन, सासन लै आसन संनिधाँन ।।१०८
बैठकै करै करनी बहोर, आचमन[2] रु प्राँनायाँम और।
पूजै सु कमंडल फट पढाय, चंदन अरु पुस्पादिक चड़ाय ।।१०९
जप सात वार जपीयै जरूर, पुन द्वार सीचीयै नीर पूर।
हित मंत्र गृहन के काज हेर, षोड़स छाँना लै रज़ खखेर ।।११०
आरंभ करै पूजा इकंत, द्वारपै बारसक येक दंत।
सुरसुती और लच्छी जु संग, पुस्पाद गंध पूजै प्रसंग ।।१११
गंगा कौं पूजै जुत गणेस, दछ्छन के द्वारा जहाँ सुदेस।
पुन वायै वाजू खेत्रपाल, कर जमुना पूजा तातकाल ।।११२
फट मंत्र और फट देव फेर, हद चौखट मै पूजै सु हेर।
चिंतै देवीमय सबही चित्त, पूजा-विधाँन मै देवप्रत्त ।।११३
सुभ मंत्र कहै फट लहै सीख, उदवासै विघ्नन अंतरीख।
पुन याद घात सौं धार पाद, उदवासै विघ्नत धरा आद ।।११४
वायैं बाजू कौं पकर बाह, प्रथमै सु दायना चरन पाह।
चौखट उघार धारै सु चाल, विचरै सु फेर मंडप विचाल ।।११५
सुभ कलस थाप जल भर समाँन, पुन अरघा सौं जल गहै पाँन।
नैरत दिस पूजै वास्तुनाथ, हित वृह्मा कौं दोई जोर हाथ ।।११६
तत गव्य वनावै फेर तिष्ट, गरुतोर्ण जग्य थाँभा गरिष्ट।
पौंचीयै जाहि करता पवित्र, तव देव जुहारै जत्र-तत्र ।।११७

---

१ मू० प्र० न्मसकार। २ मू० प्र० आचम्न

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जाँनै देवीमय सकल जास, उर ध्याँन धरै फट मंत्र ग्रास।
कहि मूल मंत्र प्रोक्षन करंत, फट मंत्र जग्य भूँमी फिरंत।।११८
ताड़न करै जु ताहो तरीय, हूँम्मंत्र उचारण करै हीय।
कर सेक धूप दीपही करंत, येकट साँमग्री करै ग्रंत।।११६
लावा चंदन सरसौं जु लेह, महराख़ दूव ग्रक्षत मिलेह।
संग्या जु विकर है इह्न सवीन, विथरावै मंडल जिग्यवीन।।१२०
बढनी कुसकी तैं लै बुहार, ईसाँन कोन धरीयै उछार।
उच्चार वाच पुण्याह ग्राद, पूजै दीनन कौं विन प्रमाद।।१२१
कुसकी वढनी येकत करेह, लावाद ढेर पै धरै लेह।
करकै गरू ग्रपने नम्सकार, बैठे ग्रासन पै सुभ विचार।।१२२
मुख पूरब हैकै लहै मंत्र, तिह मंत्र देवता गहै तंत्र।
कर ध्याँन भूत-सुद्धी कराय, वरनी सकंध इकदस विचाय।।१२३
देवै सु सिख्ख ही मंत्र दाँन, जिह रिखी न्यास करीयै सुजाँन।
मंत्र के ऋखी सिर न्यास मंड, ताहि के छंद है वक्रतुंड।।१२४
त्रिच हृदै देवता गुहा बीज, पाद मै सक्ति जाँनहु पतीज।
ग्ररु ताल वजावन त्रय उदेस, दिग वेधन करीयै येम देस।।१२५
ग्ररु करीयै प्राँणायाँम ग्रौर, जुत मूल-मंत कौं जोर-जोर।
मात्रका-न्यास करीयै मिलाय, ग्रब कहत जुक्त ताकौ उपाय।।१२६
निज ग्रंन्नम सिर मै करै न्यास, याही प्रकार करीयै ग्रभ्यास।
ग्रान्नमह इन्नमह ग्राद एम, जाँनकै विधी करीयै जु जेम।।१२७
पुन खंडन्यास याही प्रकार, ग्रंगुली मूल-मंत्र ही ग्रधार।
हृद ग्रायन मह सौं करै हेय, स्वाहाय सिखा ग्रादक सुमेय।।१२८
जिह खंडन्यास है नेम-जुक्त, वँह गुरूमुख लीजै जाँन उक्त।
षट वचन कहै कवचाय संग, पुन हूँ चख त्रय वोही प्रसंग।।१२६
षट ग्रस्त्राय सु फट सब्द साथ, है क्रीया ग्रंगुरी ग्रौर हाथ।
निज मूल-मंत्र सौं वर्णन्यास, जिह-जिह स्थाँन करीयै जु जास।।१३०
विध इही न्यास की है विचत्र, कर दूखन करीयै जत्र-कत्र।
ग्रपने सरीर ग्रवगाह ग्राप, थिर ग्रासन की कल्पना थाप।।१३१
गन धर्म दाहिनै वाँम ज्ञाँन, पुन करै न्यास पूरब प्रमाँन।
वाँमैं उरु माँही ज्यू विराग, लखीयै दछ्छन ऐस्वरीय लाग।।१३२

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मुख मै अधर्म कौ न्यास. मंड, पारस वाँमौ चिंतै सु पिंड ।
नम अर्ध माय कहिकै निदाँन, अ वैराग्यं थित नाभि आँन ।।१३३
दक्षन पारस अग्याँन देस, अन ऐस्वरि आय न्मह उदेस ।
करकै सवहिन कौं नमस्कार, वरन्यौ सु ऊपरै जिह विचार ।।१३४
पीठ के लखहु धर्माद-पाद, अरु अधमदि अनही ऊपाद ।
विस्तर पै पलका तहाँ विचाल, अंनत कौ न्यास कर अंतराल ।।१३५
तहाँ है अनंत परपंच त्याँहि, मिल कमल ध्याँन करीयै जु माँहि ।
धरीयै जु कमलकै माँहि ध्याँन, जहाँ रवि ससी पावक रूप जाँन ।।१३६
जाँनकै कला इह न्यास जोर, बारहाँ सूर की है वहोर ।
सोरह चंदा दस अग्न साच, रहीयै सुमर्ण त्रहु देव राच ।।१३७
तिन ऊपर सत्वागुन तितेक, हित गुनन न्यास करीयै हरेक ।
आत्मा अनंतरात्मा अनाद, परमात्मा ग्याँनात्मा प्रसाद ।।१३८
निज पूर्वदिसा मैं करै न्यास, अमुकास नाय नन कहिऊ पास ।
आसन की पूजा करै और, जगतंब ध्याँन ऊपरै जोर ।।१३९
जिह देव-मंत्र लेवन जरूर, पूजा सु माँनसी करै पूर ।
मुद्रा देखावै फिर मिलाय, वरनी सु प्रथम जैसै वनाय ।।१४०
आनंदत देवी होय येम, जाही सै कहीयै क्रीया जेम ।
जब दैनै वाले मंत्र जोन, षट-अंग पूजीयै षट ही कोन ।।१४१
अगनाद कोन कौं जाँन आद, माँनहु कोनन कौं जुत मृजाद ।
पश्चात संख जो तरै पात्र, पुन हाथ गृहन कर सिख सुपात्र ।।१४२
फट मंत्र बोल पौंचै जु फेर, हित मंडल थापन करै हेर ।
मंत्र कौं जपै अक्षर मिलाय, विधिपूर्बक सौं वाँनक वनाय ।।१४३

मंत्र—मं वह्निमंडलाय दशकलात्मने दुर्गा देव्यर्घपात्रस्थापनाय नमः—इति ।

थप्पन सुसंख आधार थाँन, जाहि कौ लेहु इह मंत्र जाँन ।
आधार दिसा पूर्वाद आँन, क्रमहि सौं कला दसं है क्रसाँन ।।१४४
दसहू कौं पूजै देख-देख, पौछीयै मूल-मंत्र ही परेख ।
संख कौं मूल मत्रहि सुधार, आधार थपैं सुमरन उचार ।।१४५

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

इह मंत्र उचारन करै और, ठहराय ध्याँन कौं हृदय ठौर।

मंत्रः—अं सूर्यमण्डलायद्वादशकलात्मने दुर्गादिव्यर्घपात्राय नमः—इति।

संखाय नमह कहि संख सीस, विध जुत जल सीचै विसावीस।।१४६
वारहाँ कला पूजन वढाय, पुन रवि मंत्रन संजुत पढाय।
मात्रका उलट अरु मूल-मंत्र, जल करै सु पूरत संख जंत्र।।१४७
सोरहाँ कला थप्पै सु सोम, विचरंत विंवकौं देख व्योम।
इह मंत्र प्रथम करकै उचार, वाँत्री कौ नीकै लहि विचार।।१४८

मंत्रः—ॐ सोममंडलाय षोडशकलात्मने दुर्गादिव्यर्घ्यामृताय हृदयाय नमः—इति।

इह मंत्र तहाँ वाँई इकंत, कुसमुद्रा जल पूजा करंत।
तीरथ आवाहन करै ताँम, कर आठ वार जप पूर्न काँम।।१४९
निज मूल-मंत्र सौं षड़न्यास, उर-वीच जाप करकै अभ्यास।
पुन हृदा मंत्र जल करै पूज, गहि मूल मंत्र अठवार गूझ।।१५०
मझ हाथ मत्समुद्रा मिलाय, आछादन करीयै जहाँ उपाय।
प्रोक्षनी संख धर दछन पाँन, साँमग्री पूजा जल समाँन।।१५१
छिरकीयैं आपनौ अंग छाँट, वार सौं पूज साँमग्री वाँट।
ता पाछै वेदी वनी तेह, ऊपर जुक्ती कौं अनुसरेह।।१५२
सर्वतोभद्र लिख चक्र सोय, जड़हन चाँवल कौं लेय जोय।
कर्नका करै पूरत सकाँम, लैकै चावल कौं कर ललाँम।।१५३
ताही पै धरकै कुस त्रनाह, सतविंस कूर्च करीयै समाह।
थापकै सक्ति आधार थाँन, मंत्रात पीठ पूजै महाँन।।१५४
कढ छिद्ररहित सुन्दर करीर, थापै फट मंत्रत धर सधीर।
जल पूरत करकै तँही जाग, तिह लाल तीन लपटाय ताग।।१५५
नवरत्न कूर्च गंधाद नीर, भन तार मंत्र डारै सभीर।
ऊँकार पढै फिर मंत्र आद, कहि उलट वर्नमाला क्षकाद।।१५६
पूरै अकार परजंत पाठ, घोखीयै न करीयै वाध घाट।
पुन धरै कुंभ ऊपर सुप्रष्ट, तीरथ जल पूरत करै तिष्ट।।१५७
पढ मूल-मंत्र सुर इष्ट प्रीत, चरनन मै ताही धार चीत।
पीपर कटहर अरु आंम्र-पत्र, कोमल-कोमल करीयै इकत्र।।१५८

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पूरत कर द्वै वस्त्रन लपेट, मूँदकै धरै संदेह मेट।
सब प्राँन-प्रतष्टा रीत साध, आवाहन करीयै निर उपाध ।।१५९
देवता पूज मुद्रा दिखाय, सोचकै कल्प धर्मही सुभाय।
वाही विधाँन है भक्ती आद, पूजीयै ध्याँन धर अप्रमाद ।।१६०
आई भगवंती लखै ऐंन, चित कुसल प्रस्न करीयै सु चैन।
क्रम पादअर्घ आच्मनी कराय, मधुपर्क और लीजै मँगाय ।।१६१
अभिअंग करावै स्नान और, दै पाटंवर द्वै अरुन दौर।
औरै सुमात्रका वर्न येह, संपुटत मंत्र पूजा सरेह ।।१६२
गूगल कपूर संजुक्त गंध, सुच कस्तूरी कुंकम समंध।
लेपन पटीर तनमै लगाय, [1]कुंदादिक पुस्पावली वसाय ।।१६३
अर्पण देवी कौं करै येह, करपूर अगर धूपत करेह।
चंदन उसीर सर्करा चूर, पुन सोगंधादिक मधू पूर ।।१६४
दीपक जुराय नैईवेद देय, प्रोक्षनी छोर जल मिष्ट पेय।
अरु ता पाछै कल्पोक्त उक्ति, जाँनीयै अंग आवर्न जुक्ति ।।१६५
करीयै सु पूज देवी कृपाल, तिह रिखी मुनी ध्यावत त्रकाल।
देवी जु साङ्ग अरु वैसदेव, भजीयै सुभाव सौं जाँन भेव ।।१६६
ताही कौ वरनत सकल तत्त, माँनत मृजाद जैसैं महत्त।
मंडल सौं दक्षन देख मंड, थिर करै चौतरा गार थंड ।।१६७
ऊपरै स्थापत करै आग, जाही कै उत्तम वीच जाग।
मूर्तिस्थ देवता तहाँ माँन, पूजै आवाहन कर प्रमाँन ।।१६८
कहिओ उंकार व्याहृति कैंक, विध मूल-मंत्र लहिकै विवेक।
पढ आहूती दै मंत्र प्रेर, हूँनै जाऊर पचीस हेर ।।१६९
साकल्य और गंधाद संग, पूजै देवी कौं लहि प्रसंग।
विसर्जन अग्नि कौं कर बहोर, ठहरावै देवी पीठ ठौर ।।१७०
ककरी आदिक वलि देय केय, सब भाँत सुधारै विवध सेय।
देवी के पार्षद जिते देव, भल पूजै पूजन जाँन भेव ।।१७१
जपीयै देवी कै अग्र जोय, सिख ग्रहन करावै मंत्र सोय।
वेला सहस्र ताकौ विधाँन, गुरु करै समर्पन आद ग्याँन ।।१७२

---

१ म. प्र. में कुंदादिक से पहले 'वहु' शब्द और है।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ईसाँन कोन धर सरकरीय, पुन दुर्गा थप्पै परकरीय।
पूजा आवाहन करै फेर, विधिपूर्वक सौं सब तँही वेर ।।१७३
कहि रक्ष-रक्ष फट मंत्र काज, वसु सीच देय गुरु रहित व्याज।
सिख संग करै भोजन सुभाय, जहाँइ गरू सोवै थित जमाय ।।१७४
निस तँही वितावै धार नेम, गुरु हितकारी जाँनहु निगेम।
कुंड अरू चौतरा संसकार, वरनत हूँ ताकौ इह विचार ।।१७५

दोहा

मूल-मंत्र उच्चार मुख, देखै कुंड सुदीठ।
जल छिरकै फट मंत्रजुत, पाटै फटकहि पीठ ।।१७६
तीन-तीन वेला तहाँ, जल छिरकै जँह जाग।
निरनय कीनौ नेम कौ, भेद लखै बड़ भाग ।।१७७

छंद द्वै-अक्षरी

ओउंकार कहि पीठ अराधै, सबविध देवी पूजन साधै।
आधार सक्ति ये नमह उचार, अमुक नाँम कौ रखै अधार ।।१७८
कर देवी पीठाय नमसक्रत, पीठ मैं कुंड की पूजा प्रापत।
पीठ तँही पै सिव-पारवती, आवाहन करीयै निज उकती ।।१७६
गंधाधिक सामग्री गहिकै, रुचर पूज करीयै सुच रहिकै।
काँमातुर सोई सिव की काँमन, दुति दमकत घन मै मनु दाँमन ।।१८०
कीयै न्हाँन रितु वेस किसोरी, चितवत सिव जिम चंद-चिकोरी।
देवी-रूप माहि चित दीजै, कछुक काल इह ध्याँन करीजै ।।१८१
अग्नी-पात्र माँहि फिर आनै, संसकार कर सुद्ध समाँनै।
जप रम्वीजहु ओउंकार जुत, सात वार चेतन्य करत चित ।।१८२
मुद्राधेन दिखाय गरूमत, रक्षा फट मंत्रही सौं राखत।
अवगुंठित हुम् मंत्र उचारत, पुन गंधादिक् पूज प्रचारत ।।१८३
अग्नि घुमाय कुंड कै ऊपर, तीन वार जप ओउंकार त्वर।
चिंतै चित देवी-जोनी छत, सिवकौ बीरज माँहि संचरत ।।१८४
तजै कुंड मै अग्नि तहाँई, रत जुत दंपत रूप रहाँई।
निज लीला सिव-सक्ति निवारै, सिव-सक्ती आचम्न सुधारै ।।१८५

मंत्र—हन हन दह दह पच पच सर्वज्ञाज्ञापय स्वाहा—

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अग्नि कुंड मै डारै ऐसै, जरै कहै इह मंत्रही जैसै।

श्लोक

अग्निम्प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम्।
सुवर्णवर्णममलं समिद्धं विश्वतोमुखम्॥ इति।

अगन मंत्र इह करै उचारन, करै स्तोत्र अग्नि सुभ-कारन॥१८६
हेत अग्नि मंत्रही हीय हेरे, करीयै षडन्यास तिह केरे।
जाके अंग कहत हौं जोई, सहस्रार्चि 'स्वस्ति' पूरन सोई॥१८७
पुन उतिष्ट पुरख पहिचाँनहु, व्यापी धूम सु फेर वखाँनहु।
सप्त जीह धनुधार संकेता, षडंग नमह स्वाहाय सहेता॥१८८
अग्नि सुवर्न रूप अवगाहै, चित्र त्रनेत्र ध्याँन कौं चाहै।
पद्मासन जुत धारै प्रीती, रहँस विचारन की इह रीतो॥१८९
कुंड मेखलाँ सीचन करीयै, वगल विछाय दर्भ बिसतरीयै।
पुन त्रकोन षटकोन पवित्रा, परठै जंत्र अग्नि अठ पत्रा॥१९०
ता मध अधो लिखे मंत्रहि कौं, जा अग्नि ही पूजै जंत्रही कौं।
पढै मंत्र इह ताही पाछै, उर मै ध्याँन धारकै आछै॥१९१

श्लोक मूल

वैस्वानरस्ततो जातवेदपश्चादिहावह।
लोहिताक्षंसम्प्रोच्य सर्वकर्माणि साधय॥ इति

पुन षटकोन मध्य मै पेखै, लोला सात अगन की लेखै।
प्रथम हिरण्या जिगना पूरी, सक्ता क्रस्न सुप्रभा रूरी॥१९२
वहुरूपा अति रक्तका बरनी, अग्नि जीह सातू उद्धरनी।
पूज करै इनही की पूरी, जाँन-जाँन दल कमल जरूरी॥१९३
मूरतवंत अग्न कौं माँनै, पूज जहाँई तहाँ प्रमानै।
जातह वेदा सप्त जीह जुत, हविवाहन कीह पूजै आहुत॥१९४
अस्वोदर जसज्ञ वैस्वानर, पुन कुमार तेजा संख्या पर।
मान विस्वमुख जाँन देवमुख, सब विध पूजै अग्नि पाय सुख॥१९५

पूजा का मंत्र

ॐ अग्नये जातवेदसे नमः—इति।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वज्रादिक आयुध जुत वाँना, पूजै लोकपाल परधाँना।
संसकार स्रुवग्राज्य सकोई, होम कीजीयै सब सुध होई।।१९६
स्रुव सौ घृत लै होमै सोई, जहाँ दक्षन अग्नी चख जोई।
ओं अग्नि स्वाहा इत्यादिक, मंत्र पढै लख-लख मुरजादिक।।१९७
ओं सोमाय स्वाहा ऊचारै, नेत्र-मध्य घृत सीच निवारै।
फेर भाग दक्षन घृत फेरी, होम करै अग्नी-मुख हेरी।।१९८
अग्नि स्वष्टि कृते स्वाहा इम, मंत्र उचारन कह्यो महाँतम।
ओं-ओं पाँच वार उच्चारै, स्वाहा-स्वाहा सहित सँभारै।।१९९
भुव स्वाहा इत्यादिक भाखै, आहूती सुधमति अभिलाखै।
तीन वार पूर्वोक्त अग्नि तन, संजुत मंत्र देय आहुत सन।।२००
आठ प्रनव जप दै फिर आहुत, घोर-घोर साकल्य तथा घृत।
संस्कार हित करै जु साधन, गर्भाधाँन आँन आदिकगन।।२०१
गर्भाधाँन प्रथम ही गायौ, बहुर पुंसवन वेद वतायौ।
सीमंत रु उपनयन समाँना, जातकर्म क्रम नामही जाँना।।२०२
निस्कासन अन्नप्रासन कहीयै, चूड़ाक्रम व्रत बंधन चहीयै।
महानात्मव्रत फेर मनायौ, वर उपनिसद व्रत्त वतरायौ।।२०३
गऊदाँन अरु दाहकर्म गन, वरने संसकार इह वेदन।
सिव अरु सिवा पूज अनुसरीयै, कर सु-प्रसंन्न विसर्जन करीयै।।२०४
पाँच समधि-जुत अग्नि प्रजारै, येक-येक आहुत अवधारै।
सौ आवर्ण अरथ सु विचारा, अगन-मंत्र ही के आधारा।।२०५
पाछै ही दस महागनेस प्रति, मंत्र गनेस उजार महामति।
पूजा पीठ अगन मै पावन, निर्भय करीयै कलुष नसावन।।२०६
देव जही कौ मंत्र सु दीजै, ध्याँन अगन-मुख माहि धरीजै।
मूलमंत्र पच्चीस मिलावा, दै आहुत साकल्य दहावा।।२०७
अगनदेव इक मुख अवगाहै, चित सथ आप भावना चाहै।
येकीभूत जाँनकै आपन, जपै षड़ंग देवता जापन।।२०८
हूँनै होम दै आहुत ही कौं, देव अभिष्ट येक तादीकौं।
येक देवता प्रतै ऊ देसा, आहुत दै अगनी अवसेसा।।२०९
तिल जव सेष रहै जो तातै, जमा येकठे करै जु जातै।
देवी नाँम पाठ सौं दाहै, अष्टोतर सहस्र अवगाहै।।२१०

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

हवन करै इम दे-दे ग्राहुत, ग्रगनीदेवी देवी ग्रावृत।
मंत्रन सौं संतुष्ट मनावै, जाके पाछे सिख्ख जनावै ।।२११
कर सिनाँन संध्या सिख कारीय, धौरे वस्त्र अंग मै धारीय।
ग्ररु पहरै सोवर्न-ग्रलंक्रत, गहै कमंडल हाथ सुद्धगत ।।२१२
गरु पँह ग्रावै ग्याँन गरिष्टी, देखै गरू ताहि सुभ दिष्टी।
निकट बुलावै कुंड निदाँना, सिख्ख ग्रापनौ जाँन सुजाँना ।।२१३
जिह गुरु पास सभासद जेते, कुल देवन मंडत थित केते।
पाय लाग वैठै तिन पासै, ग्रासन दै सिख गुरु विसवासै ।।२१४
चेतन चाव भाव हित चाढै, गरू सिख लखै येकता गाढै।
सिख सरीर के ग्रध्वा सोधै, बिगत ताहि की सब विध बोधै ।।२१५
करकै हवन सुद्धि पुन करीयै, सुद्धात्मा करनी ग्रनुसरीयै।
जवही चितै क्रतारथ जेही, देव ग्रनुगृह लायक देही ।।२१६
षटग्रध्वा है तिह इह ख्याती, जाँनत है सब ही दुज-जाती।
जाँनहु पावक लांध्वा जैसै, तत्वाध्या मेहन मै तैसै ।।२१७
भुवनाध्वा नाभी कै भीतर, तैसै वर्णाध्वा स्तनांतर।
मस्तक माँहि पदाध्वा मंडत, थित मंत्राध्वा मुंडहि थंडत ।।२१८
सिख कौ कूर्चभाग कर सपरस, तहाँ इह मंत्र पढै धारै तस।

मंत्र—ग्रोंमस्य सिष्यस्व कलाध्वाँनं सोधयामि स्वाहा—इति।

इक-इक मंत्र पढै ग्रठवेला, ग्रध्वा लै-लै नाँम ग्रकेला ।।२१९
पुन-पुन ग्रध्वा षष्ट परेखै, लीन वृह्म मै भावत लेखै।
पुन भग स्रिष्टि करै उत्पादन, ग्रातम थित चेत्तंन्न ग्रराधन ।।२२०
सिख तन की गुरु करै जु सुद्धी, त्रिम विचार जाँन ग्रविरुद्धी।
होम करै पूरन ग्राहूती, कलस देव थप्पन करतूती ।।२२१
करं विसरजन सव विध करकै, पट बाँधै सिख नैनन परकै।
पट बाँधत वौषट कौं पढकै, कुंड निकट लेजावै कढकै ।।२२२
थप्पन कलस करचौ ताही थित, पुस्पांजली करै देवी-प्रत।
पुन खोलै नेत्रन के पटका, विष्टर दरभ रचै त्रन वटका ।।२२३
बैठावै सिख कौं गृह बाहू, सुद्धी भूत करै सब काहू।
जोई मंत्र दैन कै जोगू, पुद्गल सिख कर न्यास प्रयोगू ।।२२४

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

इह मंडल तै मंडल औरै, ठहरावै बैठाय सुठौरै।
पढ-पढ फेर मात्रका पूरी, पल्लव कुंभ गहै भरपूरी ।।२२५
सिख-मसतक पै मेलै सोई, ग्याँनी गुरू क्रीया सुभ गोई।
कलस नीर सौं सिनाँन करावै, जलवर्द्धन कौं सीचत जावै ।।२२६
द्वै सुच[1] वस्त्र पहन सिख देही, भस्मि विभूति करै भर तेही।
गुरु समीप जावै सिख ग्याता, सिख की गुरू सवाँरै साता ।।२२७
देवी-जोत हीयै मझ देखै, सोई प्रवेस सिख हृदय सँपेखै।
जिह सिख देव येकता जाँनै, सुगंधाद पूजा सनमाँनै ।।२२८
रक्षन कर गुरु सिख सिर देवै, भरै मंत्र दक्षन स्रुति भेवै।
गहि सिख मंत्र हृदय अवगाहै, अष्टोतरसत जाप उगाहै ।।२२९
करै प्रनाँम गरू सुख-काजा, महाप्रभू जाँनै महाराजा।
मन-तन अर्पन करै जु माया, गुरु हरि भेद न वेदन गाया ।।२३०
रित्वज क्रीया हवन कीय रीती, पूजै देय दक्षना प्रीती।
भोजन स्रजै विप्रकुल भरकै, कंन्या त्रप्त सुवासिन करकै ।।२३१
दीन अनाथन कौं अँन दीजै, लाग पाय जन आसिष लीजै।
दिक्षा लेयै जाही दिन सौं, महाँ कतारथ समुझै मन सौं ।।२३२
कर आराधन पावन काया, मंत्र पूज ध्यावै महँमाया।
नाराँयन दीक्षा सिख निरनौ, विध-जुत मुनि नारद सौं वरनौ ।।२३३
वेदक-रीत दुजन वरदाई, गुप्त-रीत कहु तांत्रक गाई।
देवी-सम नाँही कोऊ देवा, भजन करै भक्ती लहि भेवा ।।२३४
व्यास कहत जनमेजय वाचा, सक्ति हेत आराधन साचा।
नाराँयन सौं सुनकै नारद, विपन गये तप करन विसारद ।।२३५

दोहा

वेदव्यास सुन वारता, जनमेजय जीय जाँन।
उर-संका मेटन अरथ, इहै प्रस्न कीय आँन ।।२३६
च्यार वरन कौं चाहीये, वेद-रीत सुविचार।
संध्या त्रय भगती सकत, आराधन आचार ।।२३७

---

१ स्वच्छ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सकत भक्ति तज वेद स्रुति, पंथ गहत पाखंड ।
आँनहु देव-उपासना, माँन आँन ध्रम मंड ।।२३८
कहा कारन यामै कहौ, वात विचार वहोर ।
इह संका मेटन अरथ, जाचतहूँ कर जोर ।।२३९
देवी के मणीदीप कौ, वरनन करहु विसेस ।
अद्ध ऊद्ध किह आकृती, देख परत है देस ।।२४०
जनमेजय सौं व्यासजू, भाखी कथा अभूत ।
वरनत सोइ विस्तार सौं, सोनकाद सौं सूत ।।२४१

छंद पद्धरी

इह पूर्बकाल वीती उदंत, समुझाय कहत हूँ स्रुति सिधंत ।
इक दनुज मधोदत नाँम आय, कीय देवन सौं जुध प्रबल काय ।।२४२
सत बरख लरचौ सोई महासूर, केऊ सस्त्र-अस्त्र चाले करूर ।
पुन परासक्ति सुर कृपा पाय, हठ त्याग दनुज भागे हिराय ।।२४३
भूलोक त्याग पाताल भौंन, कर गये सुरन सौं जुद्ध कांन ।
अभिमाँन वढचौ देवन असेस, दिगपाल वसे निज देस-देस ।।२४४
कहि-कहि कै आपुन आप कीत, जन-जनहि जनावत जुद्ध जीत ।
भूलकै परासक्ती सु भाव, संमृथ तन माँनत मत सुभाव ।।२४५
अहमत सौं प्रगटचौ अहंकार, उर मोह छाय छायौ अँधार ।
जब तेजोमय इक उपज जोत, आपसौं आप ह्वैकै उदोत ।।२४६
परकास पुंज कोटक पतंग, सीतलता कोटक ससी संग ।
कोटक विजुरी-सम दीप्त काय, पुन नाँहिन कोऊ हाथ पाय ।।२४७
भासंत येक सम साँझ-भौर, अदभूत चरत लख देव और ।
वाढचौ अत विस्मय लख विचार, येकठे भये तज-तज अगार ।।२४८
वहु सोचत मिल-मिल विबुध वृंद, चित चकित भये सब सूर चंद ।
अगँन कौं बुलायौ निकट इंद्र, चल जाहु लखौ इह कहा छंद ।।२४९
सुन इंद्र-वचन कौं सावकास, पावक तव पहुच्यौ तेज पास ।
पावक मुख वोल्यौ तेज प्रत्त, तुम साच कहहु हम अगन-तत्त ।।२५०
इह स्रष्ट गनहु मेरै अधार, छिन माँहि खीजकै करू छार ।
कह देहु हमहि कौं तुमहि कौंन, जाँन्यौ तत चाहत रूप जौन ।।२५१

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जब तेज कह्यौ तुम बली जोर, तिनका इह मेलत येक तोर।
जिह जारहुगे बलवाँन जाँन, कहिहू तत मेरौ सुन क्रसाँन ।।२५२
तिनुका इक मेल्यौ बिंब तेज, महाबली अगन के मुहाँमेज।
प्रज्वलत भयौ पावक प्रचंड, खय भयौ न तासौं त्रनाखंड ।।२५३
महालज्जत ह्वै मन पाय मोह, देवन विच आयौ त्याग द्रोह।
निर्बेद भाव सौं कही न्याय, वीती सु वात जैसी वनाय ।।२५४
देख कैं अगन कौं रूप दीन, कछु काल इंद्र ठहराव कीन।
वलवाँन जाँनकै देव वाय, पुन तेज परख कारन पठाय ।।२५५
पवमाँन जायकै तेज पास, पारख कौं बोल्यौ बल प्रकास।
मै पवन मातरिस्वा महाँन, प्राँनी मै व्यापक रहत प्राँन ।।२५६
चीटी गज आदक जे चलंत, वल मोही कौ जाँनहु वृतंत।
हम निकस जात जब ह्वै विहाल, कौलीया होत है जीव काल ।।२५७
मेरे सम और न बलीमाँन, जाँन्यौ मै चाहत तोहि जाँन।
तेज नै धरयौ सोई त्रनाह, चख पवन दिखायौ ताहि चाह ।।२५८
याकौं उड़ाय दैहौ जु आप, प्रबलता जाँन लैहौ प्रताप।
जब पवन करचौ वहु वेग जोर, ठहरचौ त्रन त्याही तही ठौर ।।२५९
बलहीन चल्यौ तव देव वाय, इह कही हकीकत इंद्र आय।
बोले जु देवगन इंद्र वेख, द्रगनन सौं लीजै तुमही देख ।।२६०
पति देवन के मति अत प्रवीन, छल-बल कौं लैहौ तुरत छीन।
देवन कौ विस्मय टार देहु, आपकैं जोग है काँम येहु ।।२६१
वढ इंद्र चल्यौ सुन सुरन वात, कछु तेज पिछाँनन करामात।
आवत जब देख्यौ तेज इंद्र, छिप गयौ कछू पायौ न छंद ।।२६२
विबुधन औरन सौं करी वात, कल-बल दिखायकै करामात।
इंद्र सौं करी नही वात येक, पहिचाँन देवगन कौ प्रवेक ।।२६३
अपमाँन विचारचौ इंद्र आप, पिछतात कहत कहा करचौ पाप।
ढिग अगन पवन कौं तेज ढाव, जिनसौं प्रस्नोतर करे जाव ।।२६४
हम देखत कै सोई विलय होय, जिह परम तेज सक्के न जोय।
अपमाँन भयौ मेरौ अतीव, जग कहा करू इह राख जीव ।।२६५
कहत है विदुष साची कहाँन, माँनकै गयै मुरदा समाँन।
ऐसौ विचार मघवा अचंव, बैठे सुथाँन जहाँ तेज विंब ।।२६६

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

आकासवाँन भइ तबही येह, निरनौ इह सुनीयै निसंदेह।
पुरहूत करहु और न उपाय, जप बीज जपहु सुख होय जाय ।।२६७
इक लाख वरख जहाँ बैठ इंद्र, दोऊ नैंन मूंदकै छोर दुंद।
जपते रहे माया बीज जाप, कीनौ वृत-भंग न जिह कदाप ।।२६८
क्रमपाटी सुकला चैत केर, वरती नवमि जाही सुवेर।
महाँउत्तँम मंडल वीच माँहि, अवतरचौ कुमारी रूप आँहि ।।२६९
दुति नवजोबन मनु चंद दूत, परभात सूर जिम प्रभा पूज।
दुपहरीया मणिवक रंग देह, चमकंत वीजुरी ज्यूँ अछेह ।।२७०
अंगीया ढके उन्नत उरोज, सोभायमाँन आँनन सरोज।
नासका दीप अरविंद नैन, वनपीह कोकला मधुर वैन ।।२७१
कीय रत्नन नाना अलंकार, मल्लका माल ग्रींवा मझार।
पवसाक मनोहर झीन पाट, केऊ जरी किनारी भरी काट ।।२७२
जगमगत चहूँ दिस जाहि जोत, आभास चंद पूरन उदोत।
हित भरे अधुर जुत मंद-हास, पंकती दसन दाड़म प्रकास ।।२७३
वपु सरसत परसत आय वाय, सोगंध वढत ज्याँ-ज्याँ सवाय।
पग करत धरा कोमल पसाय, जहाँ पद्मराग जनु विखर जाय ।।२७४
भक्तन कै ऊपर रचत भाव, सम कल्प-लता सांता सुभाव।
सुः प्रभा समालंभन सुहाय, भाल मैं लाल चंदन भराय ।।२७५
दहु हाथ उठावत बोध देत, करुनारस जाकौ हीय निकेत।
वर्नना करत जिह च्यार वेद, भुवनेस्वरीय पावत न भेद ।।२७६
निव्याज उमा जिह सिवा नाँम, लेखीयै त्रनैनी बिच ललाँम।
भुज च्यार अभय अंकुस भरेह, वर पास वीच वासौ वसेह ।।२७७
कीनौ सुरिंद्र तिह नमस्कार, पुन करी स्तुति नाना प्रकार।
सु प्रसंन्न देख देवी स्वरूप, भासन कीय आसा देवभूप ।।२७८
बोल्यौ विचार मुख जपत बीज, प्रेम न नेम सौं हीय पतीज।
मैं करी तपस्या महाँमाय, जिह कहहु हृदय संदेह जाय ।।२७९
विच मंडल उपज्यौ तेज बिंब, इह कहा हतौ कैसौ अचंब।
विधजुक्ति वखाँनहु तिही वात, किनकी इह कैसी करामात ।।२८०
भगवती कह्यौ सुन इंद्र भूप, सो तेज वृह्म मेरौ स्वरूप।
कारन कौ कारन जिह कहंत, आतमा अखंडत आद-अंत ।।२८१

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

है अधिष्टाँन माया हमेस, भूतन कौ साखी रूप भेस।
पद वेद जिही माँनत प्रबुद्ध, सो निरामई है सदाँ सुद्ध ॥२८२
जपतंत जिही हित तपित पाय, लै वृह्मचरीय आपौ लगाय।
तम पद सै भाखत तिही तत्त, वेदन निरनय है लखहु वृत्त ॥२८३
येकाक्षर कहीयत ओउंकार, है येकाक्षरहू ह्रीयंकार।
ये उभय मंत्र है बीज आद, सुमरन कौं मोहित सुख समाद ॥२८४
इक माया भाग सु वृह्म येक, पहचाँन उभय लीजे प्रवेक।
जातै उपजावत सकल जीव, संसार रूप नाना सदीव ॥२८५
धुर जाँन लेहु उर मुक्ति धाँम, नित भाग सच्चिदानंद नाँम।
प्रकती आदमाया प्रवाहि, जाँनीयै परासक्ती सुजाहि ॥२८६
मै सक्ति ईस्वरी मतीमाँन, प्रक्रती नँही न्यारी प्रधाँन।
ज्यूँ चंद्र-चंद्रका येक जोत, अवस्था सांम्य है ओतपोत ॥२८७
जब प्रलय-समय सब जक्त जीव, सोइ लीन होत मोमहि सदीव।
परिपाक कर्म प्रानींन पाय, स्रष्ट कौ उदय आवत सुभाय ॥२८८
बन जात जबहि नहि लगत वेर, ताही सौं माया कहत टेर।
अंतरमुख मेरी अवस्थाह, थित माया जाकौ नहिन थाह ॥२८९
अवस्था वीहर मुख लखहु येह, तम सब्दही योजत होत तेह।
रचता सु बहिरमुख तमो-रूप, सतगुन कौ परगट ह्वै सरूप ॥२९०
स्रष्ट की आद रज गुन सबंध, परकास होत त्रहु गुन प्रबंध।
रजगुन वृह्मा मै अधिक रेख, विस्नु मै सतोगुन ज्यूँ विसेख ॥२९१
रुद्र मैं तमोगुन इधक राच, तीनहू गुनन की तीन ताच।
जग करता देह सथूल जाँन, विस्नु कौं लिंग देही वखाँन ॥२९२
कारन है देही रुद्र केर, हम चौथी इनसै भिन्न हेर।
सांम्यावस्था त्रयगुन समाहि, माया है अंतरमुखी माँहि ॥२९३
चौथी जु अवस्था इही चित, तिह परै हमारौ रूप तंत।
परवृह्म कहत जाकौं पुनीत, तिह रूप रेख नही गुनातीत ॥२९४
द्वै-रूप निगुन-सर्गुन दिखाय, लेखीयै भेद जैसै लखाय।
निर्गुन है माया रहित नित्त, पुन मायाजुत सरगुन प्रवृत्त ॥२९५
जग-उपजांवन हम हेत जीव, सब अंतह मै प्रवसत सदीव।
प्राँनीन सुभासुभ पुंन्य पाप, आप सौं कर्म ही करत आप ॥२९६

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जीव कै पूर्ब ही कर्म-जोग, भुकता है आस्रत जँही भोग ।
विध हरी रुद्र कौं हम विचार, प्रेरना करत जाही प्रकार ।।२६७
उपजावत पालन करत अंत, वस कला हमारी कौ वृतंत ।
तप्त है सूरकी किरन ताव, पवन मं गवन मेरे पसाव ।।२६८
जारन सक्ती है अग्नि जोग, रच मृत्यू मारत जाल रोग ।
जीते तुम दाँनव हमहो जोर, भजते हमकौं नही सौंभ-भौर ।।२६६
उपज्यौ गर्ब सौं अहंकार, अहमति हीय छायौ अंधकार ।
जब भयौ तेज परगट जरूर, देवन दुख तुमरौ करन दूर ।।३००
वस मोह होत वाढत विकार, यातै वहु आगै अनाचार ।
जब वृह्मतेज की भई जोत, आपसौं आप रूपी उदोत ।।३०
सच्चिदानंदनी भजहु सोय, कबहूँ दुख व्यापै नही कोय ।
दै मूल प्रक्रत उपदेस देव, भल रीत सुनायौ भक्ति-भेव ।।३०२
देवनहु निरंजनि रूप देख, वर्नना करी वाचा विसेख ।
वरदे प्रसंन्न हुय तँही वार, निज लोक गई सुर दुख-निवार ।।३०३
अभिमाँन समौ[1] नही सत्रु और, तम वाढत त्यूँही वढत तौर ।
देवी देवन कौं जाँन दास, अंधार मेट हीय कीय उजास ।।३०४
गत गूढ प्रकास्यौ हृदय ग्याँन, धारचौ गायत्री जाप ध्याँन ।
विवहार तज्यौ आधार बीय, आराधन लागे ईस्वरीय ।।३०५
साधना त्रसंध्या कर्न सर्ब, सक्ति की भक्ति माँनी सुपर्ब ।
जिह देवी करनै लगे ज्याग, भरनै अनुसरनै लाग भाग ।।३०६
ओउंकार ह्ललेखां मंत्र आद, नित जपनै लागे निर्बिखाद ।
वेदन मै वरन्यौं सत्र वृतंत, मनु आद वखाँन्यौ सुँमृती मंत ।।३०७
येकाक्षर वाची ओउंकार, सब सास्त्र[2] पुराँनन तत्व-सार ।
गायत्री व्राह्मन तजै ग्याँन, पावत है अधोगत छुटै प्राँन ।।३०८

दोहा

गायत्री दीक्षा गृहै, इह विप्रन मत आद ।
सत त्रेता द्वापुर समै, मत जत चली मृजाद ।।३०६

१ समान । २ मू० प्र० में साखण ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वरनी कवि इह वारता, भाषा छंद वनाय।
करनी मै ह्वै है कुसल, समीगर्भ समुदाय ।।३१०

छंद पद्धरी

वरनन पुन करनन लगे व्यास, जुग अंतर वीती कथा जास।
वरख्यौ नही पनरा वर्ष वार, दुरभिक्ष वढचौ दुख दुराचार ।।३११

त्रन पाँनी अन की परी त्रास, नर-नार भये जग के निरास।
भक्षहु अभक्ष ना रह्यौ भेद, खयकारक वाढी महा खेद ।।३१२

मुरदा कौ खावन लगे माँस, गर्दभ घोरन के गरा गाँस।
जीवन की आसा तजी जीव, दुस्तर अत वरती गति दईव ।।३१३

विप्रन मिल कीनौ इह विचार, इक गौत्तँम मुनि कौ है अधार।
सरनौ तिह लीजै इह सलाह, ऋषी आस्रम की सब लहहु राह ।।३१४

ऐंसौ विचार कर चले ऊठ, आस्रम-आस्रम सौं ह्वै अरूठ।
निज गोतँम आस्रम लख्यौ नैन, चित विप्रन कै अत भयौ चैन ।।३१५

दरसन दीय गोतम तिनही देख, विसवास दयौ आदर विसेख।
विनती कीय विप्रन तँही वार, निरवाह करहु दुज-कुल निहार ।।३१६

दुरभिक्ष परचौ रोरव दिगंत, अवलंब न दीसत आद-अंत।
आपकै विना स्याहिक न और, कुल डूब जाय विप्रन करोर ।।३१७

आधार देह अन विना येक, आचार भ्रष्ट ह्वै है अनेक।
आचार राखीयै रिखी आप, करीयै न ज्ञात टारौ कदाप ।।३१८

विनती सुन गोतम कही वात, जप संध्या भूले विप्रजात।
नित क्रत करहू जप ध्याँन न्यास, येकाक्षरि पूरन करहि आस ।।३१९

इह कहिकै गोतम रिखी आप, जपनै गायत्री लगे जाप।
वहु करी स्तुत मुनि वार-वार, देवी निज मिंदर वैठ द्वार ।।३२०

विनती सुन गोतम मातवेद, भूदेव विपत अवगाह भेद।
दरसन परसन ह्वै रिखो दीन, कर जोर रिखीस्वर अरज कींन ।।३२१

दुरभिक्ष परे चहु ओर देस, विप्र है दास तेरे विसेस।
आस्रम कौ सरनै वसे आय, मुनि पालन करीयै महामाय ।।३२२

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ह्लींकारी दुज-कुल देख हाल, दीय पूर्न पात्र ह्वैकै दयाल ।
ऋषी गोतम जो कछु चहै रिद्ध, सुख पाय लहहु अन त्रन समृद्ध ।।३२३
ओउंकार-रूपनी इह उचार, पाछी सु गई थाँनक पधार ।
तिह पूर्ण पात्र[1] सौं अन त्रनाह, अंन्नेक जात निकसे अथाह ।।३२४
परिपूर्ण भये दुज भोज्य पाय, पसु भये त्रप्त त्रन घास पाय ।
वस्त्रादि अलंकृत अत विचत्र, अंन्योन भाँत निकसे इकत्र ।।३२५
जे गोतम दीने विप्र जात, करनी दिखायकै करामात ।
सौ जोजन आस्रम वढचौ सोय, तल ताल तलाई भरे तोय[2] ।।३२६
जिग होम लगे गायत्री जाप, पुन गोतम कौ प्रगटचौ प्रताप ।
इह देव सभा मै कही इंद्र, महमाँ न कही जावत मुनिंद्र ।।३२७
परताप भये जिह विप्र पुष्ट, स्वर जग्य-भाग लेवत संतुष्ट ।
वसु अनावृष्टि मै इहीं वार, इक कल्पवृक्ष गोतम अधार ।।३२८
गोतम कौ आस्रम जगत-ग्यात, मंडप विचत्र गायत्री मात ।
कऊमारी तरुना वृद्ध काय, देवी प्रतिछाया जहाँ दिखाय ।।३२९
परभात मध्य दिन साँझ प्रत्त, नेम सौं दिखावत रूप नित्त ।
जहाँ ऋषीवृंद आस्रम जमाह, सुख पाय रहे द्वादस समाह ।।३३०
जहाँ बैठत मुनि आसन जमाय, औरहु रिखी बैठत आय-आय ।
मुनि नारद आये अकस्मात, गोतम की करनी करन ग्यात ।।३३१
नारद कौं गोतम मुनि निहार, कीय वार-वार बहु नमस्कार[3] ।
पूजा लै बैठे मुनी पास, पुन सुजस कह्यौ गोतम प्रकास ।।३३२
इंद्र सौं सुनी हम वात येह, दुज-कुल तुम तारचौ निसंदेह ।
अंबका-भक्त हौ धंन्य आप, परगट जग जाँन्यौ तप प्रताप ।।३३३
कहि नारद येती गवन कीन, लख मंडप देवी दरस लीन ।
गहि वीना सुरपथ करचौ गौंन, भूदेव रहे निज भौंन-भौंन ।।३३४
उग्रता सुनी गोतम अतीव, जरनै कौं लागे दुजन जीव ।
ईरखा पायकै ह्वै उदास, उर भरन लगे मिल-मिल उसास ।।३३५
केऊ दिवस विते पावत कलेस, दुरभिक्ष मिटचौ दुख देस-देस ।
मुनि करन कलंकत करचौ मंत, अवगुन गुन सोचे नही अंत ।।३३६

---

१ म प्र. पातृ । २ जल । ३ मू. प्र. नम्सकार ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दुर्बल माया सौं महादीन, कृत्रमी गाय इक प्रगट कोन।
होम की बखत मै करन हाँन, जिग साला प्रेरी तही जाँन ।।३३७
ओउंकार करचौ मुनि जांहि हेर, वरजी आवन सौं जँही वेर।
गिर परी गाय सोई धूज गात, उत्पात भयौ इह अकसमात ।।३३८
कृतघनी पनौ कर विप्र केक, अत करचौ कुलाहल विध अनेक।
होवन कौं लाग्यौ हाय-हाय, गोतम मुनि मारी दीन गाय ।।३३९
कर होम उठे मुनि भये क्रुद्ध, विप्रन सौं वाढचौ अत विरुद्ध।
धर इष्टदेव कौ हृदय ध्याँन, जब दिव्य चखन सौं परी जाँन ।।३४०
अंसुया पाय विप्रन अनेक, विघ्न कौं करचौ परहर विवेक।
गुन पै अत अवगुन करचौ ग्यात, विप्रन नहि सोची नैक वात ।।३४१
ऋषी गोतम दीनौं स्राप रुष्ट, देवी तै वेमुख होहु दुष्ट।
जप गायत्री नही फलै ज्याग, भूदेव भूलकै मंत्र भाग ।।३४२
रत दुराचार पाखंड राच, वेमुख तुम होवहु वेद-वाच।
सुमृती-पराँयन धर्म सोय, खलता कर दीनौ आज खोय ।।३४३
नारकी वास ह्वै है निदाँन, मेरे तुम बायक लेहु माँन।
आचम्न करचौ मुनि कहत येह, छप्पर जिग-साला करत छेह ।।३४४
जब पँहुचे देवी थाँन जाग, लीय दरसन माता पाय लाग।
बोली गोतम सौं विमल बाँन, सुन लेहु वात मेरी सयाँन ।।३४५
दूध कौं पायकै लेहु देख, विष सर्प वढै जैसै विसेख।
गोतम तुम कहीयत ग्याँन-वाँन, सुविचारहु मन मै समाँधाँन ।।३४६
इह दुजन दोख लख अनाघात, मुख मोर लयौ गायत्री मात।
अचरज मय मूरत सोइ आज, विच रही दिब्य मंदर विराज ।।३४७
जब स्राप-दग्ध हुय विप्रजात, गोतम-ढिग आये धूज गात।
कीय विनती होवहु मुनि कृपाल, परवार बचावहु विरदपाल ।।३४८
डूबैगौ दुज-कुल आप द्वेख, वात की हाँन तौहू विसेख।
आप तौ महाँग्याँनी अदोख, रिखीराज निवारन करहु रोख ।।३४९
विनती सुन गोतम विप्रवृंद, मन हुय प्रसंन्न बोले जु मंद।
हम स्राप कवहु मिथ्या न होय, करनी तुमही कहा करै कोय ।।३५०
अवतार नही ह्वै कृस्न आय, जब लौं तुम भोगहु नरक जाय।
अवतार भये पै कलू आद, मिल जन्म लेहु वर्जंत मृजाद ।।३५१

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

हम पाप मिटावन होय हाँम, जपीयै गायत्री अष्ट जाँम।
कहि येती विप्रन विदा कीन, पथ वेद-धर्म गोतम प्रवीन ।।३५२
कहि व्यास सुनहु कुरविंद्र काँन, अवतरे विप्र वे धरा आन।
अवतार क्रस्न पाछै अनेक, भये विप्र गहै पाखंड भेख ।।३५३
कापालक केते पंथ कौल, डारन कौं लागे नये डौल।
कोऊ बोध जैन चार्बाक क्रूर, पथ दुराचार मती पूर-पूर ।।३५४
जाँनत त्रकाल संध्या न जाप, सबही गोतम के दग्ध स्राप।
स्वाहा रु स्वधा वर्जंत सुमर्न, सत कर्मन प्रक्रति मूल सर्न ।।३५५
अगनोत्र वेद कौ धर्म आद, मानत न सुंमृती की मृजाद।
चित पिंडत हैं तऊ दुराचार, नर्क के कुंड सौं जिह निकार ।।३५६
इछ्या परमेस्वरि है अगाध, ऊपजै धर्म नाना उपाध।
सक्ति की भक्ति है पर्म स्रेय, गायत्री जप है सदा गेय ।।३५७

दोहा

पूँछ्यौ सो भाख्यौ प्रथम, गायत्री कौ ग्याँन।
कथा कहत मणीदीप की, थित जहाँ देवी थाँन ।।३५८

छंद द्वै-अक्षरी

प्रथम सुनहु कथ्थ वेद पुराँना, माया वृह्म विचार महाँना।
जग प्रपंच माया सब जाँनहु, सुनत स्रवंन द्रग लखत समानहु ।।३५९
बुद्धि जहाँ लग करै बिचारा, सो प्रपंच माया कँह सारा।
व्यापक वृह्म अद्रस्य बखाँना, ओत-पोत माया अनुमाँना ।।३६०
जँहाँ वृह्म जहाँ माया जाँनहु, इह सिद्धांत भलै उर आँनहु।
जाँनहु प्रभा प्रभाकर जैसै, तोय-तरंग भिन्न नही तैसैं ।।३६१
इह सिद्धांत अनाद अभंगा, सक्तवाँन नित सक्ती संगा।
पै कछु कोविद भेद पिछाँनै, इधक न्यूँन गुन तै अनुमाँनै ।।३६२
उभय रूप माया अनुसरनी, विद्या अवर अविद्या वरनी।
विद्या रचत ईस कहि वरनै, सवही जीव रहै तिह सरनै ।।३६३
ईस सोई चिर देह अनंता, उपजै खपै जीव तन अंता।
जीव ईस इह भेद जतायौ, गुनन रीत सौं विदुषन गायौ ।।३६४

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ईस भेद इह रूप अनादू, विदुख तजै सब वाद विखादू।
जिनके नाँम सुनत स्रुत जातै, इहाँ प्रकास करत हूँ यातै ।।३६५
व्रह्मा विसन महैस वखाँनहु, सेस गँणेस दिनेस समाँनहु।
इनकौं जो कोऊ जीव उपासा, वसै व्रह्मलोक ही सो वासा ।।३६६
उर धर जैसौ रूप अभ्यासै, परम रूप जैसौ परकासै।
ईस रूप भूलँहि जो आदू, विवध भाँत जीय लहै विखादू ।।३६७
माया चक्र अविद्या माँही, भ्रमत रैन-दिन ईस भुलाँही।
ईस अराधन साधन येते, जोग ज्याग जप-तप है जेते ।।३६८
ईस्वर-रूप अँनाद अखंडत, माया दिव्यलोक जिह मंडत।
लोक विरंच विस्नु कौ लोका, अद्‌भुतलोक महेस अदोखा ।।३६९
सेस दिनेस धनेस गनेसा, वरुण इंद्र ध्रमराज विसेसा।
ये सव व्रह्मलोक मै येसै, जाँनहु उड़गन अंबर जैसै ।।३७०
सत रज तम गुन तीन समाँना, व्रह्मा विसन महेस वखानाँ।
माया दिव्य रचत अहुँ मूरत, सवहिन जुदी-जुदी है सूरत ।।३७१
माया रचत जिनहुँ कौं माँनत, जो विग्याँन ग्याँन कौं जाँनत।
जगकारन माया इक जाँनहु, ईस जीव-कारज अनुमानहु ।।३७२
जग प्रपंच कारन जगजननी, हेत भक्त दारुन दुख-हननी।
व्रह्मलोक मै तिह कीय वासा, परम दास हित रूप प्रकासा ।।३७३
सरबलोक राच्यौ तिह सुंदर, मनिन-जटत तामै वहु मंदर।
इह कारन मणीदीप उचारत, सरब लोक तिह नाँम सँवाँरत ।।३७४
आद प्रक्रते सोइ रचत अधारा, सारधातु[1] मय जाहि सवाँरा।
विमल ऊद्ध सबही व्रह्मंडा, छाया भूत अभूत प्रचंडा ।।३७५
सब लोकन मै उत्तम सोहै, मनन-जटत देखत मन मोहै।
वहु जोजन ताकौ विस्तारा, सुधा समुद्र ही बीज सुधारा ।।३७६
हीय धर मात-चरन भ्रम हरहूँ, कछु वरनन ताकौ मै करहूँ।
उत्तम सुवृत लोक है ऐसौ, आवृत तिह पाथोद हैं ऐसौ ।।३७७
रोहित रंग अनूंपम राजत, भँवर तरंग सुधा भर भ्राजत।
कहु-कहु जल-कन ऊठत कोहर, मिलत अरुन जिह प्रभा मनोहर ।।३७८

---

१ लोहा।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गिरत बूँद ऊठत जल गहरै, लाल वदक स्वानी मनु लहरै ।
तट डिंडीर जु छिकेत राजत, रतन-जटत भूषन मनु राजत ।।३७९
कूल-कूल कर्दम अनुकूला, अत कुंकम करुविंद अमूला ।
निकसत जल ताही की नहरै, लाल कमल की तिह पर लहरै ।।३८०
भुय पर्बत तट पै कहु आजत, विद्रुम लाल अनूप विराजत ।
मच्छ कच्छ तन स्वच्छ विमोहै, सुकती खुल्लक विहरत सोहै ।।३८१
विवधरूप सगती गन विहरै, पट अनूप भूषन तन पहरै ।
नाचत गावत राग नवींना, वंसी आद वजावत बींना ।।३८२
विवध रीत की क्रीत भवाँनी, क्रीड़ा विमल अनूंप कहाँनी ।
प्रगट करत देवी जस पावन, भोग जोग दहु रीत सुहावन ।।३८३
सिलासार[1] मंडत जहाँ साला, विमलरूप अत रुचर विसाला ।
दिव्यरूप जिह चँहु दरवाजा, सत-सत द्वारपाल बल साजा ।।३८४
भक्ति-जुक्त गण संग भवाँनी, दिव्य काय देवन सुखदाँनी ।
राजत है जहाँ रंम्य-रूपनी, भक्त दरस हित जक्त[2] भूपनी ।।३८५
दिव्य-रूप आवत सुर द्वारै, बैठ विमाँनन जस विस्तारै ।
अमित बाज गजराज असेसा, विवध रूप के वाँहन वेसा ।।३८६
गन-वाहन रव होत अनत गत, सबही क्रीत गावत जहाँ सुनीयत ।
वापी कूंप विमल भर वारी, फल संजुत फूली फुलवारी ।।३८७
घोष[3] साल उत्तर तिह घेरी, घटा अटा दुति छटा घनेरी ।
सतगुन लोह साल तै सोभित, लखत कंत भगतन मन लोभित ।।३८८
दिग्घ अनूप रूप दरवाजा, सब कपाट सुभ घाट समाजा ।
वन उपवन वहु वृक्ष विसाला, रुचर फूल-फल सहित रसाला ।।३८९
कुँजरासन बहु पत्र कदंबा, पर्णसप्त सुरपर्ण प्रलंबा ।
जहाँ श्रीफल असोक बहुजाती, सहकारक जहाँ बकल सुहाती ।।३९०
अरजुन वृक्ष उदंवर येते, कँदली, कुटज विदुल तरु केते ।
साल अरिष्ट पिचुल जहाँ सोहै, माहातरु कंटक रहत विमोहै ।।३९१
नक्तमाल क्रतुमाल निरंतर, तापस तरु तमाल बहुरंतर ।
करनकार पाडल जहाँ केते, तिंन नड़ीक रथ द्रुम कहु तेते ।।३९२

---

१ लोहा । २ जगत । ३ काँसा ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सिवा ग्रक्ष श्रीपर्णा सुहावत, लखत मनोहर चित ललचावत।
पीतसाल मंदार प्रकासै, नाग रंग तरु जपा निवासै ।।३९३
चंपक जहाँ मालती सुहावन, पीत जुँही वृंदा ग्रत पावन।
वीजपूर जंभल ग्ररु वरना, कपिकछ्छक प्रीयंग तरु करना ।।३९४
बहु ग्रनार कचनार बिराजै, नालकेल ग्ररु क्रमुक निपाजै।
कुबली तरु राजत जहाँ कहुवा, माहाकाल कटहर ग्ररु महुवा ।।३९५
नद्यावरत सुखद विध नाना, थल निकुँज सोहत तरु थाँना।
ग्रवकेसी तरु जहाँ न येका, वनस्पती सुख रूप विसेका ।।३९६
लता सुखद तरु-तरु लपटावत, ललना मनहु पीव उर लावत।
कोमल दल पल्लव नव केते, तरु फल-फूलन संजुत तेते ।।३९७
केकी पिक कोकल जहाँ कुंजत, गहरे स्वर पारावत गुंजत।
कहुँ मराल सुक करत कलोलै, विवध भाँत वाँनी वर बोलै ।।३९८
मृग-गन नाना-रूप मनोहर, विचरत झुंड-झुंड ग्राक्रत वर।
उत्तर कांस्य साल सुख ग्रालही, सोहत ताम्रवनी सोई सालही ।।३९९
समल विमल सोई दिव्य-सरूपा, ऊँची जोजन सप्त ग्रनूपा।
मध्यनीय उपवन जहाँ मंडत, ग्रद्भुत कलवृछ जहाँ ग्रखंडत ।।४००
सघन सुमन ग्ररु परन सहेता, कंचनवरन ग्रनूँपम केता।
बीज रत्न सुघरत दुति विलसत, फल-सुगंध जोजन दस फैलत ।।४०१
उभय साल चिब परम ग्रपारा, रितु वसंत ताकँह रखवारा।
पुस्प छत्र धारै सोई धूपर, पुस्प सिंघासन राजत ऊपर ।।४०२
पुस्प ग्रलंक्रत संचर पहरै, विवध भाँत ग्रानंदत विहरै।
मधु-माधवि जहाँ उभय मनोहर, सदाँ संग सोई विहरत सुंदर ।।४०३
मंद-मंद मुसकात ग्रमोलै, क्रीड़ा कंदुक करत किलोलै।
पाँन पुस्परस करत संग पति, रहत सदाँ जहाँ प्रीत रीत रति ।।४०४
जिह उपवन की दस-दस जोजन, सुमन विकास सुवास सुहावन।
काँमी पूरन करत काँमना, इह रितुराज सुभाव ग्राँमना ।।४०५
गन गंधर्व जहाँ गुन गावत, वंसी मुरज विपंची वजावत।
ताँम्रसाल कै ग्रग्र तहाँही, साल सुवर्नक[1] ग्रधिक सुहाँही ।।४०६

---

१ छी स्वच्छ पीतल।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जोजन सप्त ऊद्ध सोई जाँनहु, जिह आकृत अनूँप वृत जाँनहु।
आरकूट साला तिह ऊपर, छित तहाँ उभय वीच बहु छत्वर ।।४०७
वनी तहाँ संताँन वाटका, सब प्रकार सोहत सु घाटका।
पर्न पुस्प द्वत स्वर्न प्रकासहि, जाँनहु फल अंमृतमय जासहि ।।४०८
सुक्रस्रीया सुचिश्रीया सहत है, राजा ग्रीषम जहाँ रहत है।
तपत ताप जन-वृंद तहाँही, रुचर रूप तरु छाँह रहाही ।।४०९
सिद्धदेव जहाँ रहत सुखारी, नानारूप लीयै संग नारी।
पौंन करत लैलै तन पंखा, सीतल मंद सुगंध असंका ।।४१०
सीस साल सम पित्तल साला, वनी अनूपम रूप विसाला।
आर साल पंचलोह कै अंतर, कंमृ जहाँ हरिचंदन कंतर ।।४११
वरखा-रितु राजा तहाँ वासा, जहाँ मेघवाहन है जासा।
विद्वत लोचन कंकट वादर, सहित वज्र निरधोक जु सादर ।।४१२
इंद्र चाप जुत रूप अपारा, धृवत सोई अगनत जलधारा।
नभश्री और नभस्वहू नारी, स्वर सामालनी संग सुधारी ।।४१३
अंब्रादुला निरंत्नि नाँम इह, मेघपंक्तिका आँमृवती मह।
वरखयंती नारी फिर वेसा, नारि चिबुनका संग नरेसा ।।४१४
वारीधारा नारि विचारहु, संख्या द्वादस नाँम सुधारहु।
नवपल्लव-जुत वृक्ष नवीना, लता नवींन सुखद वन लीना ।।४१५
हरि त्रण वेष्टत पुहम मनोहर, सरसत नदी वार वहु सरवर।
सिद्धदेव जहाँ रहत सुखारी, कसमल रहत देवि क्रमुकारी ।।४१६
दीये कूँप वापी हित देवी, सुद्ध उपासन तै जिन सेवी।
त्रिवध जहाँ नर करत निवासा, इह देवी उत्तंम इतीहासा ।।४१७
आर साल जिम राजत अंबा, पंचलोह की साल प्रलंबा।
उपवन विच मंदार अनूपा, भ्राजत रितु सारद जिम भूपा ।।४१८
नवपल्लव फल पुस्प निरंतर, विवध भाँत सोहत बहुरंतर।
दूस लक्षमी ताहि दुलहिनी, ऊर्ज लक्षमी येम उलहनी ।।४१९
सिद्धलोक जहाँ वास सुहावन, प्रगट करत देवी जस पावन।
पंचलोह की साल प्रमाँनी, दीपत रूप साल सुखदाँनी ।।४२०
पारजात उपवन तरु पूरत, सुखद सुहावन पावन सूरत।
सरस फूल-फल संजुत सोहै, महकत जिह सुगंध मन मोहै ।।४२१

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

रितु हेमंत जहाँ के राजा, सहित गमन सुख संग समाजा।
सहश्री और सरस्य सुहागन, भ्राजत उभय नार बड़भागन ।।४२२
अखल करत देवी उपवासा, वसत जहाँ जन सोई कर वासा।
विमल सात जोजन विसतरिन, साला दिघ्घ विराजत सोवृन ।।४२३
उपवन जहाँ कदंब अनुकूला, फूल अनूँप रूप वहु फूला।
धर कदंव मदरा की धारन, है जहाँ अंमृत-रूप हजारन ।।४२४
सिसर्र ऋतुराजा जहाँ सोहत, मिल तप स्त्री तपस्प मन-मोहत।
नाना भोग-विलास नवींना, परम गँनन-जुत सिद्ध प्रवीना ।।४२५
देवी अरथ दाँन जो देवै, सुभग-लोक जन ताकँह सेवै।
स्वर्न साल तं अग्र सुहावन, पुस्पराग साला अत पावन ।।४२६
जोजन सप्त ऊद्ध सोई जानहु, सोइ कुंकम के वरन समाँनहु।
पुस्पराग रंग-भूँम पुनीता, सघन कुंजवन लता सहीता ।।४२७
पसु-पक्षी जल-कमल पिछाँनहु, जहाँ सव पुस्पराग-रंग जाँनहु।
सबही मंडप सुभग सरूपा, येक-येक तै इधक अनूपा ।।४२८
माया रचत वहुत व्रह्ममंडा, अगनत संख्या जास अखंडा।
दिसापाल जावत दस-दिसहू, अग्या देवी लहत अनिसहू ।।४२९
इक-इक मूरत जाँनहु इनकी, जगतंबा हाजर है जिनकी।
पूरब-दिसा पुरी इक पावन, सतगुन अमरावती सुहावन ।।४३०
सतगुन गन अच्छ्छर जहाँ सोहै, ऐरापत हसती आरोहै।
विहरत जहाँ इंद्र कर वासा, प्रगट जहाँ मणीदीप प्रकासा ।।४३१
वेस्वाँनर दिस अग्न विराजै, स्वाहा स्वधा श्रीया संग साजै।
संजँमनी पुर तछ्छनँ सोहै, इहाँ समवरती वास उपोहै ।।४३२
संग धुर मोणा नार समाजै, द्वारपाल वैइध्यत दरवाजै।
लेखक चित्रगुप्त संग लीना, पाप-पुंन्य सव जाँन प्रवींना ।।४३३
चंड और दूसर माहाचंडा, इन दासन जुत रहत अखंडा।
वस नैरत दिस नैरत-वासा, प्रकृत अपुन सहित परकासा ।।४३४
जलकांतार पिछ्छम दिस जाँनहु, प्रकृत सहित जाहि पहिचाँनहु।
वायु कूँन मह वायु विराजत, श्रीय-गन प्रकृत सहित समाजत ।।४३५
उत्तर अलकापुरी उदारा, नरवाँहन जँहाँ वास निआरा।
जिह विमाँन पुस्पक जग जाँनत, वनहु चेत्ररथ जाहि वखाँनत ।।४३६

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

नल कूवड़ जिह सुत कौ नाँमा, धननिधाँन जाकौ ध्रुव-धाँमा ।
सेनापत मणीभद्र समाँना, पूरन भद्र सोऊ परधाँना ।।४३७

मनिकंधर मनिमाँन विमल मति, अरु मणिस्त्रावी मनीभूस अति ।
मनि कामुक धारक मति माना, समवरती नित हुकम समाँना ।।४३८

जिह सेवक फिर येते जाँनहु, पुन इनके इह नाँम पिछाँनहु ।
जिक्ष येक दूसरहु पुन्यजन, तीसर राजा लखहू ततछिन ।।४३९

गुह्य कचव थंम नाँम गिनावत, पंचमवट जिह जाँनहु पावत ।
सष्टम किन्नर नाँम सँपेखहु, लौंहि सप्तम कि पुरख ही लेखहु ।।४४०

अत उत्तँम जाँनहु ईसाँना, वास रुद्र कौ सुखद विधाँना ।
रत्नन रचत विवध रमनीका, तिह जाँनहु सब लोकन टीका ।।४४१

रुद्र जहाँ के स्वाँमो राजत, जटा-जूट मै गंग विराजत ।
मुंड-माल सोहत गल माँही, सुभग काँन कुंडल सरसाँही ।।४४२

कंधर बाहु व्याल कर कंकन, अमित तेज विच तीनहु अंखन ।
चिता भस्म तर दुपीयर छाला, खंड पर्सु ओड़न गज-खाला ।।४४३

अट्टहास कर गर्जंत ऐसै, जिह रव भद्द बलाहक जैसै ।
रुद्राध्याय लिखे जे रुद्रन, जिनतै सव जाँनहु संख्या जिन ।।४४४

कोऊ दस कर जुत सतहु सहंसा, पावन त्रसिर हु जाँन प्रसंसा ।
पावक चख जाँनहु परसंसा, आद रुद्र के ये सब अंसा ।।४४५

भूचर केऊ खेचर परभावा, सरसत जिनके सहज सुभावा ।
कोटन रुद्र कोट रुद्राँनी, भद्रकालका आद भवाँनी ।।४४६

नाना सक्त सहेत निरेखहु, डाँमरी आद गनन-जुत देखहु ।
वीरभद्र गन सहित विसेका, विकटरूप तन विध-विध वेखा ।।४४७

परम रंम्य मणिदीप प्रकासा, विदसा दिसा सकल सुर-वासा ।
प्राचीनन ग्रंथन महि पाये, गनदेवन के नाँम गनाये ।।४४८

दोहा

कूँन दिसा वरनन करी, उपवन राज अगार ।
देवी जे मणिदीप की, वरनत सुकव विचार ।।४४९

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

छंद द्वै-अक्षरी

पुस्पराग साला अत पावन, सबही वरनन करी सुहावन ।
साला पद्मराग अत सुंदर, महाँप्रलंब सु- सोहत मंदर ।।४५०
वर दस जोजन जिह विस्तारा, दिघ्घ विराजत जाकँह द्वारा ।
दिव्य-कला चौसट जहाँ देवी, सदाँ आदमाया-पद-सेवी ।।४५१
दिव्य-रूप तन की दुति दरसत, सबही रत्न अलंकृत सरसत ।
प्रथक-प्रथक तिह ग्रेह पुनीता, आयुध वाँहन आद अमीता ।।४५२
प्रकृत अपुन-अपुन भरपूरी, राजत मणिदीपही विच रूरी ।
पिंगलाक्षी अरु विसालाक्षी पुन, इनतै आद गनहु देवी अन ।।४५३
समध्री वृद्धी स्वधा सु स्वाहा, गनहु स्वधा अभिस्या अवगाहा ।
माया और सकँध की माता, संग्या त्रदसेस्वरी सुग्याता ।।४५४
स्वयरूपा बहुरूपा सुनीयें, गायत्री सावत्री गनीयै ।
वसुंधरा जाँनहु फिर विमला, अरुणी आरुणी सष्टी अमला ।।४५५
कमलासना लंबोष्टी प्रकृती, बहुरूपा माता स्थिती विकृती ।
अग्रे भुवनपालका अंन्या, उर्धकेसी बहुसीर्ष अनंन्या ।।३५६
समुखी त्रमुखी अरु सती साँनहु, मर्दका वज्रका हंसी माँनहु ।
रथरेखा ससीरेखा राजत, वृकोदरी भगवती विराजत ।।४५७
सुर आसुरहु विमर्दनी सोहत, मदनातुरा अनंगरत मोहत ।
अंनग मंथ्थना जाँन उदारा, विस्वरूपासुर आद विचारा ।।४५८
अनंग मेखला नाँम उचारत, पुन अनंग कुसमा परचारत ।
गँगन पवन वेगा सम गनीयै, सुचवंता वागीसी सुनीयै ।।४५९
क्षयंकरी संह्रती अक्षोभा, संध्या सत्यवादनी सोभा ।
देवमाता देवकी धात्रेई, अच्युत प्रीया जाँनीयें येही ।।४६०
इन सक्ती आधीन अनेका, उरजत इधक येक तै येका ।
साँमग्री जुध-काज सँवाँरै, धंन्व वाँण अयुध कर धारै ।।४६१
वाँहन आद अनेक विधाँना, सवही उद्दत येक समाँना ।
येक-येक मै कला अनेका, बल-पौरुष-जुत समर-बिवेका ।।४६२
अरुनोपल साला कै उत्तर, साल वालवायंज सुच चत्वर ।
जोजन दस विसतरिन जाँनहु, पुन उतंग प्राकार प्रमाँनहु ।।४६३

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सकल भूँम तिह रंग सुहावन, पछिछ वृछ्छ वापी सर पावन ।
सबही मंदर दीप्त समाँना, वन-उपवन जहाँ विवध विधाना ।।४६४
विवध सक्तिगन तामहि विहरै, पट भूषन वैडूरज पहरै ।
पुज्जत जन जिह लोक पुनीता, ऊद्ध-बुद्ध उरजस्व अभीता ।।४६५
अक्षोहन दस-दस जिह आस्रत, सदाँ जुद्ध अभ्यासत सासत ।
धेख धरै दुष्टन मति धूरत, पच-पच चिंध-चिंध रव पूरत ।।४६६
पर जहाँ करै सु रोष प्रचंडा, विनसै लाख-लाख वृहमंडा ।
इन सक्तन के साथ असंता, है देवी दुष्टन-गन हंता ।।४६७

दोहा

वैडूरज साला वनी, वसत सु देवी-वास ।
सुनहु नाँम ताके सकल, करत सोई परकास ।।४६८

छंद हरिगीतका

विद्यात्थाह्नी पुष्टी प्रग्यासिनी वाली विरीयजा नँदा प्रभा ।
पुंनपोषनी नित अंबका रिधदा अजा ।।
नारायणी पुन कहत नारी महिष दाँनव मर्दनी ।
महारात्री सुंभ-निसुंभ मथनी कालरात्री कपर्दनी ।।४६९
कहि प्रभा पुन तिह भद्रकाली संकरार्ध सरीरनी ।
रुद्राँनी पालनी नाँम राजत विक्रती रु त्रसूलनी ।।
अहलादनी पुन इंदुखंडा सुनहु और सिखंडणी ।
कहीयै जु रुद्रा अरु कुहू महमाय दंडनी मंडनी ।।४७०
श्रीभगवती की सक्तीयाँ वृहमंड कोट वनायकै ।
कर क्रपा फिर पालन करै सब रीत सुख सरसायकै ।।
कहु कर्मजोग प्रकोप करही संघरै छिन मै सही ।
जयकारनी सोई तारनी जगदारुनी दुष्टन दही ।।४७१
गोमेद साल विसाल आगै साल हीरक सोहनी ।
विसतार दस जोजन वनी मिल प्रभा उज्जिल मोहनी ।।
पुर द्वार वज्र कपाट त्याँ उतरंग आटन उन्नती ।
जंजीर अरर अनूप जाके क्रंत अद्भुत की किती ।।४७२

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

महि मध्य राजत वज्रमय गृह चौहटा तैसी गली।
तरु आलवाल विचाल त्यौं नद-नाल जीवन की नली ।।
बहु कूँप वापी वाटका सर घाटका बहु संजुरे।
उपमाँ न वरनी जाय उनकी अत सुहावन उज्जरे ।।४७३
कुटहारका कमनीय जहाँ कुटअंबका हित आतुरी।
जोई लक्ष लक्षन दासीयन-जुत चित्त-चंचल चातुरी ।।
गुन रूप जोवन गर्बता मदमत्त सुंदर मोहनी।
नेपथ्थ अंवर झीन निर्मंत सुभग संचर सोहनी ।।४७४
स्रंगार रूप अनूँप सरसत कसत कट हट किंकनी।
पदकमल साझ विराज नूपर ध्वन्नत सिंजतहू ध्वनी ।।
कोऊ मुकर वीणा लीयै करमै रोम गुछ्छ विराजही।
कोऊ तालवृंतहु छत्र कंकत रत्न भूषत राजही ।।४७५
श्रीखंड रंजन अंग मंजन लीयै अंजन हू लली।
कोऊ चंद्रकेसर यक्षकर्दम कर प्रसूनन की कली ।।
सिंदूर औ कुरुविंद सिंदल सम चतुस्म सुगंधहू।
तांवूल संपुट मंजुषा तहाँ सेव देवी समंधहू ।।४७६
कोऊ पद पलोट्टत कमल कर कोऊ अंग राग करावही।
कोऊ स्नाँन निरवेसन करावत समालंभन साजही ।।
कुच पत्रवल्ली रचत केसर सुमन-माल सु धारही।
गुन रूप रंग उमंग गर्बंत अंतरंग उदारही ।।४७७
तिह नाम धेय जु कहत तातै तिही जाँनहु ताहि तै।
जगतंवका की कृपा जिह पर जक्त पुज्जत जाहि तै ।।
रमनीय वेस अनंगरूपा अनँगमदना हू अली।
मदनातुरा हू अनँगमेखल भुवन-पालक चित्र भली ।।४७८
सरवस्व सिसरा मदनविदना भुवनवेगा भ्राजही।
पुन पेम नेम अखंड पूरत सुखद सेवा सझही ।।
इह वज्रसाल विसाल उत्तरसाल वेडूरज सही।
विसतार दस जोजन विराजत दिघ्घ जाके द्वारही ।।४७९
कासार मनिमय दीर्घका उदपाँन जाँन निपाँनहू।
विथुरी पँनी महि वालुका सब आलवाल समाँनहू ।।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

उर्बरा मंजु निकुंज आगम लता सोहत लहलही।
अद्भूत क्रंत अनूप आकृत सबही लोक सुहावनी।।४८०
संकेत देवी अत सुहावन बालवायज[1] मय बने।
वृहमंड की माता वहै घर अंगना राजत घने।।
ब्राह्मी कुमारी वैस्नवी माहेस्वरी जगमातहू।
इंद्राँनी चामुंडा वराही सुभगमति सरसातहू।।४८१
लखीयै जु तिन मह महालछ्छी स्वछ्छअंग सुहावनी।
जिह लोक के महि हर्म जाके पर्म कोरत पावनी।।
जिह द्वार आगै रहत हाजर देवि-बाँहन देखीयै।
सुखपाल और बिवाँन सिदन लाख-लाखन लेखीयै।।४८२
वर्क्रांग सुस्क्रापांग वारण वृषभ गरुड़ विराजहीं।
पारंद्र आदक को पढै सब सस्त्र-अस्त्र समाजहीं।।
बैडूर्ज मणी उत्तर बनी मणि इन्द्र नीलम निर्मता।
प्राकार दस जोजन प्रमाँनहु साल की अत सुभगता।।४८३
आरण्य उपवन भवन आदक कूप वापी सर किते।
सब इंद्रमणि नीलम सु धारे जुक्त अदभुत के जिते।।
पुन कमल सोरह पाँखरी कौ जहाँ निरमल जानीयै।
अस्थिर सुदर्शन चक्र आकृत पुंज्ज तेज प्रमानियै।।४८४
पुन सदन खोड़स पंखुरी पै सक्तियाँ षोड़स सुनौ।
अभिधा वखाँनत उदत उनकी गुन अनूपम जुत गनौ।।
बिकरालि और करालि बरनत श्रुती मेधा श्रुमृती।
श्रीसरस्वती दुर्गा श्रधा धुर नाम तिहि ऊखाधृती।।४८५
लखहू जहाँ पुन उमाँ लक्षी कांति मेधामति किती।
सेनान देवी-सक्तियाँ जग-रक्षकारक है जिती।।
कोउ आततताई काम[2] करकै वेद-मग बिहीन ह्वै।
कल मंड दुष्ट बिहंड करनी पिंड पौरुख पींन ह्वै।।४८६
जिनकौ पराक्रम जानकैं सतसेशहू वरनण सकै।
बरजोर क्रुद्ध बिरुद्ध तै अविनाम सुनत हीं औद्र कै।।

---

१ पन्ना। २ मू० प्र० कार्म।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

प्राकार मुद्रा तिहि परै जोइ जाँनियै दस जोजना।
द्रढ अष्ट मंत्रणि रहत देबी खबर स्रष्टहु खोजना ।।४८७
ब्रहमंड जेतक बिस्तरे जिह बीच लोगन नेजनै।
जिह हृदय की मति जाँननी सब पाप-पुंन्य सनै-सनै ।।
सोइ नीत रीत प्रणीत साखी-रूप सबकी स्वामनी।
हित रहत देवी-निकट हाजर द्रगन लख दरसावनी ।।४८८
कहीयै जु संज्ञा अनंग कुसमा अनँग-कुसमा आतुरी।
पुन अनँग-मदना तुरा पुज्जत चित्र लीनै चातुरी।।
मन मुदित देबी अनँग-मदना गँगँनवेगा हू गनौ।
पुन गगनरेखा भुवनपाला सुभग ससिरेखा सुनौ ।।४८६
सब पास अंकुस आद सस्त्रन कियैं धारन कर्ग में।
सुभ रूप गुन जुत सुन्दरी बिख्यात देबी-वर्ग में।।
प्राकार मुक्ता मुनि महाँ मर्कत मनमई सोई।
सांत जास बिसाल सोभा सुभग दस जोजन सई ।।४६०
महाँ रम्य है खट कौंन जामहि बिपलदेव बिराजहीं।
सुनियै जु पूरब कौंन संज्ञा सहित सकल समाजहीं।।
गायत्रिदेवी बेदगर्भ सु बेद-भेद बिसेसहू।
सुन सास्त्र औरहु सुमृती व्याहृति मूरत वेसहू ।।४६१
अवतार अंसी जिते इनके जहाँ हाजर जानियै।
सोइ अर्थवाद करैं सदाँ गायत्रि गुन जोई गानियै ।।
महाँविष्णु औ सावित्री-मूरत बसत गैरत बास मैं।
कर संख चक्र गदा कियैं पुन कमल सहित प्रकास मैं ।।४६२
अवतार कूरम मच्छ आदक इहाँ तैं सब अवसरै।
मनिदीप जो निज-लोक तामहि सेव देबी अनुसरै।।
महाँरुद्र के जे भेद भानत दक्षनासादिकन मैं।
महरुद्र औ सरस्वती-मूरत कहत वायव कौंन मैं ।।४६३
अरु भेद गवरी के इते चवसट्ठ आगम जे चितै।
सब मूलभूतैं समान संचर वहाँ हाजर हैं इतै।।
पुन महालछ्छी श्रीद पावक कूण मैं वासहु करैं।
मनि-गन टिपारी निध महाँ भल रत्न कुंभ लियै भरै ।।४६४

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जहाँ दिस प्रतीची आत्मयौंनी जुक्त रति सोइ जानियैं।
धनु पास अंकुस बाँणधारन पर्म-रूप पिछानियैं।।
शृँगार खोड़स धरैं संचर रहै सो सासनरता।
जग माझ व्यापत कला जाकी नार-नर तन निर्मता।।४६५

ईसाँन प्रदिक गणेश आलय पुष्टि साथ प्रभाव ज्याँ।
कुसपास धारन कियै करमैं दहत विघ्नन दाव ज्याँ।।
जेतक बिभूती जाहिकी जहाँ रहत हाजर जाहतैं।
गननाथ साथ तहीं गनौ तिहि जक्त पूजत जाहितैं।।४६६

माहेस्वरी भगवती माता सकल सुर सेवत सदा।
सोइ लोक कौं वरनन सकै, समरथ्थ सेश न सारदा।।
मै मंदमति कहा कहूँ महिमा श्रवन जैसी अनुसरी।
प्राचीन ग्रंथन देख कैं पुन कछुक इहाँ बरनन करी।।४६७

इहि साल हूँत विसाल उत्तर प्रगट साल प्रवालका।
वन ताल तरु जहाँ आलवाल बिचाल लालहु बालका।।
प्राकार सत जोजन प्रमानहु बहुत मन्दिर जहाँ बनैं।
रचना अनूपम जाल रंधर सरल सुन्दर सोहनैं।।४६८

तिही मद्ध पंचहुभूत की सोई रहत पंचहु स्वामनी।
तन चमक भूषन-वसन की चिब दमक मानहु दामनी।।
आख्या वखानत हूँ इहाँ रक्ताहु आद करालका।
गगनाहु लेखा महोचुस्मा पर्स जग-गति पालका।।४६९

पुन पंचभूत सुभाव प्रगटत जहा तै सह जानीयैं।
सोई पास अंकुस लियै सखन महाँमाया मानीयैं।।
गजगाँमनी मद-रूप गर्वंत जुत प्रभा नवजोवना।
वँह लोक-वीच बिलोकियै बहु सक्तियाँ संख्या बिना।।५००

तहाँ हैंम कंदल साल त्याँ नवरत्न साला निर्मही।
अत जानियै बिस्तार बाकौ जुक्त अदभुत की जहीं।।
बर अंबका की महाँविद्या तहाँ है अवतारते।
महाँमंत्र समकक कोट मिल ध्रव जहाँ संचर धारते।।५०१

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दोहा

दिग देवी अरु देवता, बिदसहु किय बाख्यान।
भवनहु जिन भवनेस्वरी[1], अब बरनत आख्याँन ।।५०२

छंद

नवरत्न साला अग्र निर्मंत साल चिंतामणि सुनौ।
महाँमाय कौ जहाँ महामन्दिर गढत सुन्दर के गनौ।।
प्राकार अचला बलक पूरत क्षौम व्यौम अरे खरे।
कपि सीर्ष-सीर्ष अनूप आकृत जुक्त अद्‌भुत संजुरे।।५०३
निस्सरन गोपुर प्रभा निरखत अक्ष नाहि अघावही।
भुवनेस्वरी निज भवन भ्राजत प्रगट राजत पावही।।
जुत रत्न रचत[2] जुदे-जुदे पुन पन्न की अनगन प्रभा।
स्वच्छन्द द्वार बिलंद साखी सुख अनंद जहा सभा।।५०४
सम चतुर साला चंद्र साला अत विसाला नभ अरी।
उतरंग सोभा त्याँ उदंबर जाल पाली संजुरी।।
कमनीय पाट कपाट केत आट थाटन उदत्रही।
तिह्नि मद्धनीय बिनर्द तँह अबनीय सोह अमुदत्रही।।५०५
सव थंभ खुंभी नागदंत सु सद्म छंद चिब सोहनी।
सोपाँन जान समान सुन्दर रुचर बहु अधरोहनी।।
भंडार गरभा गारभर जहाँ संधला प्रतिहार जे।
नव निद्ध-रिद्ध समृद्ध निर्मंत अद्ध-उद्ध अपार जे।।५०६
अभराम उद्दत धाम अनगन कोट विद्रत की कला।
जगमगत आभा सूर सिस जिम जाँन रस्मी प्रतिज्वला।।
महामाय मंडत महाँमणी ग्रह सम सतंभ सहंस ज्याँ।
मन रत्न भवन असंख निर्मंत सबहु कौ अवतंस ज्याँ।।५०७
नाना वितानन-जुक्त लालित मिली बन्दन-मालका।
कर चित्र अंजलका किनी परकासमय पंचालका।।

---

१ मू. प्र. भवनेश्वरी। २ मू. प्र. रचत्न।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जहाँ चतुर्भवन जुदे-जुदे श्रृंगार-मंडप सोभही।
महामाय कौ पुन महामंडप ज्ञानमंडप दुति ग्रही ।।५०८
एकांत मंडप सुभग अत कछु ओपमा जात न कहै।
सोगंध गंध पिसाचका गति गंध वह चित कौं गहै।।
दुति उदंत जाकी दसहु-दिस किधु कोट सूरज की कला।
किधु सरद-चंद प्रकास किरनन चमक कोटक चंचला ।।५०९
वन कासमीर सुकंधका वन मदत्रका वन मानीयै।
सारंगमय मदगंध-संजुत जहाँ विचरत जानियै ।।
वन महापद्म बिसाल त्याँ जुत आलवाल नरे जुरे।
सोपाँन रत्न निपाँन सुन्दर भल सुधारस सौं भरे ।।५१०
मदमत्त गुंजत भृमर मिल कल हंस कुंजत जँह किते।
बहु राजहंस बिराजही जुत मोर चातक खग जिते ।।
मिल अमल प्रगटत पर्म पर्मल समिल लोक सुहावही।
सुख सुसन .सीत सुगंधहू दस-दिसन मैं दरसावही ।।५११
श्रीराज राजेस्वरी कौ श्रृंगार-मंडप सोइ सुनौ।
दुत अमित जाकी देखियै सरसात विद्रत सौ गुनौ ।।
वर बीच सिंहासन बिराज मृदंग वाजत मदत्रकी।
वरखात बैंनन मैं सुधा हरषात नैंनन हल्लकी ।।५१२
श्रृंगार सज-सज सुन्दरी महमाय मंडप मै मिलै।
सुरसप्त त्याँ सुरग्राँम सौं गहि मुर्छना गावत गलै ।।
छइत्रीस आदक रास राचत तहाँ नाचत ताल दै।
द्रुत दमक विद्रुत-सी दिपै छित छिनक चक्रत चाल दै ।।५१३
उनमत्त[1] नवरस भाव हावन वृती च्यार विधान मैं।
जिही रूप कहत जुदे-जुदे इहि अंबका आख्याँन मै ।।
श्रृंगार करुणा हास सरसत कैसकी वृत्ती कहै।
रस वीर अद्भुत हास-रस वृति भारथी जानहु वहै ।।५१४
अदभूत समरस वीर उन्नत सातुकी वृत्ती सही।
भय रौद्र जहाँ बीभत्स भासन आरभटी वृत्ती वही ।।

१ मू. प्र. उनपत।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

देवी प्रशंसत देबियाँ गुन गायकैं मधुरी गिरा।
कलकंठ लाजत कंठहू प्रति धुनत सुनत पपीहरा।।५१५

महामाय कौ पुन महामंडप जाहि वीच विराजकैं।
जहाँ जक्त के बहु भक्तजन कौ नियत मुक्ति निवाजकैं।।

जगतंबका कौ जाँनियै तहाँ ज्ञाँनमंडप तीसरौ।
उपदेस ग्यान करै वहाँ भक्ति सु इंमृतरस भरौ।।५१६

थित जहाँ मंडप है चतुर्धाम मंच इक मणि निर्मता।
पुर च्यार विरमा विष्णु ईस्वर पुन पुरंदर पर्मता।।

सुख वल कथान कहै सदा शिव वही मंच अरोहनी।
ऊमिया अजा सोई ईस्वरी माहेस्वरी जगमोहनी।।५१७

इहाँ आपकी लीला अरथ द्वै भाग तन दरसात है।
निर्मंत महेस्वर नाम सौ वर विस्व मैं बिख्यात है।।

कंदर्प कोटक दर्प कौं मति रूप मर्दन विव मिली।
सुर नयन पंकज पंचमुख की अमित सोभा उज्जली।।५१८

कर-कमल हरिण अभीत की बर फरस फिर आयुध बनै।
मन गनन भूषन रतन मिल तन चंद्र-मनि आभा तनै।।
परकास कोटक प्रभाकर ससि कोट सोहत सीलता।
वामांग श्रीदेवी बिराजत नित्त जग की निर्मता।।५१९

पद विमल कमल समानहू प्रद मूल लाली पेखियै।
उदयात तरुन अरुनतामय सरन वा मन लेखियै।।

कमनीय चंपक की कली पद अंगुली जाकी प्रभा।
दुति नखन की इम देखियै सुख सदन उड़गन की सभा।।५२०

विछिया सुअनव सुघट्ट वर ध्वन नखदन सिंजत धुनी।
कल हंस बोलत पुंज्ज कुंज्जत गुंज्ज मैं जु सुहावनी।।

साँमाँन धर्म-निदाँन जुग सोइ पूर्न रूप प्रचंडका।
नीकी अनंग निखंग तैं मति मोहनी गोविंदका।।५२१
नंथा अरोम अनूप जुग ग्रह मानकै खंभागना।
उपमा न रंभा लहै यातैं लग्यौ सीस अँदोलना।।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अत भार सरभर उद्धआक्रत जुग नितंबन चिब जही।
निर्मल नदी-तट सुभग निस्तुल मद-सी खरी थल मही ।।५२२
कट केहरी नीवी कुसी भुवन मैत चलनी भार सौं।
बर किंकनी तापर बनी झुक रही रव झनकार सौं ।।
चिब उदर सोहत पत्र चल दल नाभि ऊपर निर्मई।
सर नदी भँवर करै न समता मनहु भ्रामर भ्राजई ।।५२३
रचना अनूपम रोमराजी रेख ऊरध राजही।
समबेल रस श्रृंगार की भुव स्वर्न पै मन भ्राजही ।।
सुख रूप सोभा संजुरी वर विमल त्रवली चिब वनी।
रुच रंग मंगल मंग राचत तोय गंग तरंगनी ।।५२४
कुच्छ पींन माँनहु कलस कंचन सुभग ऊपर स्याँमता।
दुजराज मै मन देखियै लघु लक्ष-जुत लात्रंनता ।।
ध्रुव कुचन कुंकुम गंध्ध धूली पत्र वदत्री उन्ननी।
लपटी मनहु गिर हैंम लालन सुभलता संजीवनी ।।५२५
अत झींन अंसुक ऊंद्धआवृत ओपियत कंचुक अटी।
बन समर विजई शिंभु बैठे कियै छाया पट कुटी ।।
सत पत्र सोहत पंच साखा साँख पाँन सुहावनी।
कोमल अनूपम रूप किशलय कर्ज हीरक की कनी ।।५२६
मनिमई सुन्दर मुंदरी गप गोल गुन मानक गची।
तल हाथ लालित लाल निम् रमनीय मनु महदी रची ।।
मनिबंध्र गजरा गुलक मणीमय बलय झलक विराजही।
कमनीय बीच कलांचका लख सूर ससि बसु लाजही ।।५२७
दमकत झलाझल दीप्त के विहू वाँह बजुला बंधकै।
चमकत चलाचल चंचला सरसात जलधर संधकै ।।
बिहुँ बाँह वगुला बंध की गुल्लाल मुक्ता गुंज्जकी।
पुन पतिन बेला पंसलगु वहु मुकी बहुला झुंमकी ।।५२८
लखियै जु अंबुज लोचनी की कंबु कंठ कपोतसी।
लावंन्यग्रेह ललंतका जगमगत जाहर जोतसी ।।
मुक्तान मुक्ता मीन मिली उर इंद्र चंद्र अरोहकैं।
दुति जीत लीनी दाँमनी मनुमाँय उड़गन मोहकै ।।५२९

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पुन पीठ रंभा पत्र-सी कलधोत पाटी काम की।
पति चित्त सेज्या पौंढवे की हेत पूरन हाँम की ।।
चिब धाँम ज्या अभिराँम चिंबुक कुसुम अंबुज की कली।
मकरंद पाँन सुगंध मोहित आन बैठ्यौ मिल अली ।।५३०
उपमीय कहुँ अधुरान की उपमान जान असाधकै।
जिहि कारनै तन गही जड़ता हैंम कंदल हारकै ।।
द्रुति वज्रकन-सम दसन दमकत मिली चित्र मुक्तावली।
कली कुंद कैसी झली आक्रत किधू दाड़म की कली ।।५३१
चित्र चंद्र कैसी चंद्रका मुख मंद-हासी मोहनी।
अरविंद आनदकंद तै सतगुनी सोभा सोंहनी ।।
मुख वास हास विलास सौं सहुलास बात बसंतसी।
सुखनिलय मानहु कंज सरवर मलयचल महकंतसी ।।५३२
मुख राग लाली अत मनोहर नागवल्ली पर्नंता।
माहेस्वरी माहेस कै अनुराग की जनु अनंता ।।
रसना अनूपम रूप की वाँनी उचारत वीन की।
सारंग कोकल मोर सम झाँई लखै सुर झींन की ।।५३३
वर रक्त तुंड विकूनका विचरही लटकत वालका।
मुख रक्त तुंड गही मनौ मनि-मुक्त की लघु मालका ।।
कहा कहै गोल कपोल की दरसै न उपमा दैन की।
सोहत मधुष्टल कुसम आक्रत मनु मुकर है दोइ मैन की ।।५३४
रुच कंज गंजन शिभु रंजन द्रगन मैं अंजन दियै।
खग जान खंजन उभय खेलत काँमजल मंजन किये ।।
भ्रकुटी कमाँनहु नमन भ्राजत भली दुति भ्रूँहावली।
चख खंजकै भ्रम होय चक्रत भ्रमत मनु भ्रमरावली ।।५३५
आनन्द आलय भाल उन्नत बनी बंदन बिंदुपै।
तज तरुन अरुनहु अष्टमी तिथि आय बैठ्यौ इंदु पै ।।
भुक चलक मुख रुख स्याँम झलकत अलक दुति दुहु ओर सौं।
तमराज ससि बंधन तकैं सिंगार-रस की डोर सौं ।।५३६
मुख सुन्दरी को सोह मंदर कमल आँनद कंद ज्याँ।
निर्मल निसाका निरखियै चिव जान राका चंद ज्याँ ।।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

भर करन - भूसन भार सौं रस कूप का जुग रंधरा ।
मधुदीप को जग सीप मंडत कर्न सुसकति किंदरा ।।५३७
ताटंक गोल मयंक आक्रत काम सिदन चक्रवा ।
झलमलत लोल कपोल झाँईं नटत कर नदी नक्रवा ।।
सिर उदत आक्रत अमल श्रीफल केश-रचना परकरी ।
ललचाय तमके पटल लपेट घरकै मनु हिमगिरी ।।५३८
मणिजटित सीस किरीट मंडित दुति अखंडित देखियै ।
कर लियै परकर कल्प कौं पूर्बाद्रि ज्यौं रबि पेखियै ।।
इद्रायतन रक्तांक आभा किधू पक्कन किंदुरी ।
जरतार सारी सुही जाकी मिली कंत अमंदरी ।।५३९
मग चाल देख मरालहू नद - नाल तालन निब्बहै ।
गजराजहू मन लाज गहि रज सीस पै झारत रहै ।।
मदमत्त गुंजत माल मधुकर प्रगट परमल पिंड सौं ।
गुलमाल ताक गुलाब सौं सतगुनी सोइ श्रीमंड सौं ।।५४०
सुभ स्वच्छ लच्छ महेस्वरी सुख सांत-रूपा स्वामनी ।
दीपक-सिखा-सी देखियै शृंगाररस सरसावनी ।।
तन निष्ट सिष्ट वलिष्ट त्याँ मद महो दुष्टन मोचनी ।
जगदंबका जग-जीव जननी त्रंबका त्रय - लोचनी ।।५४१
वर पास अंकुस चिब विसाला अस्त्र-सस्त्र अभीत कौं ।
किय करन धारन लियै आयुध कोमलांगी भरन दानव भीत कौं ।।
सहचरी दासी संगमै सुंदर्यअंग सँवारकैं ।
गुन प्रभारंग अनंग गर्वंत शेव देव सुधारकैं ।।५४२
सुभ ग्याँनसक्ती क्रियासक्ती सक्ति इक्षा जुत सही ।
कीरती लज्या क्षमा कांती तुष्टी-पुष्टी नित तही ।।
सुमृती मेधा लक्ष्मी पुनि अमितबुद्धि अरू दया ।
स्तुति करत देबी सोई सदा महमाय की संजुत मया ।।५४३
अपराजता अरु जया विजया मंगला दुगधी महा ।
नित्या विलासनी मंगला नव जाँन अजिता जुत जहा ।।
अवदात मति देबी अधीरा पीठ सक्ति परावका ।
कर जोर नित शेवा करैं आराध विध-विध अंबका ।।५४४

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अपसब्य सब्य परे अरे निध पद्म शंख निहारियैं।
नवरत्न सप्तक धातु निर्मत वहै निर्मल वारियैं ॥
पीयूष जुत पाथोद मै मणिदीप आवृत मह मिली।
जिह ब्यास येक सहस्र-जोजन भवन देवी चित भली ॥५४५
माहेस्वरी माहेसकै वाँमांग संग विराजही।
परमेस्वरी परभाव सौं सरबेसता पद साझही ॥
दध दुग्ध घ्रत रस दाय दाडमी आम्ररस मधु ईखकै।
जेतक रसाला वस्तु जाकी वापि कूँप विसेखकै ॥५४६
नर-नार खग म्रग आद निर्जर भक्त सक्ती भाव सौं।
थिर वसत आप अखंड थाँनक पुन्य के परभाव सौं ॥
लय प्रलय मैं सोइ इहाँ नाहिन सकुर जावत तिही समैं।
आधार नाहिन कोय वाकैं निराधारहि गगन मैं ॥५४७
दिन छेह होय अद्रष्ट दिनकर कमल ज्याँ सकुचात मै।
फिर देखकै तिम कमल प्रफुलत प्रभा लख परभात मै ॥
जिहिं लोक की गति इहीं जानहु स्रष्ट समय सुभाव सौं।
बिस्तार बेला होय बिस्तर पूर्नता परभाव सौं ॥५४८
जहाँ रोग-सोग न जीर्नता उद्वेग नाहिन येकहू।
नर-नार सब आनन्द निबहत बस्तु-भोग बिसेखहू ॥
पुन मुक्ति चार प्रकार की जिहि जुक्त जाँनहु जीव जे।
राजेस्वरी के राजमें सरसात सुखन सदीव जे ॥५४९
सब महाँबिद्या मंत्र सप्तक कोट अस्तुत जिहि करैं।
द्रगपाल देबी देवता वृहमंड जेतक विसतरैं ॥
माहेस्वरी अग्या मही प्रग्या बिचार प्रभाव सौं।
उतपत्ति पालन प्रलय आदक सबहि सह सुभाव सौं ॥५५०
कोटक निसापति तारका सबिता न समता कर सकै।
चिब चित्त भाँनहु चंचला परकास पावत जिह पखै ॥
सरबग्यता ऐस्वरीय संजुत सर्बउत्तँम गुन सही।
श्रृंगार करुणा दया स्रधा जानियें हाजर जही ॥५५१
मुख लोक सिमरन मात्र तें सब पाप जाय संतापहू।
पीयूख पाँन समाँन प्रद जगतंबका कौ जाँनहू ॥

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

श्रीबेदव्यास विचारकैं सव कही राजा कौं कथा ।
नाराँयनाय सुनाय नारद जगत- हित भाखी जथा ।।५५२
कुरबिंद्र सौं पुन व्यास कींनौ इही प्रस्न उचारकै ।
तेरे पिता कौं भूप तुम अवगाह चहत उधारकै ।।
गायत्रीदेवी मंत्र गृहियैं देतहू सुखदायकैं ।
कतु कीजीयै सुख कारनैं पुन रात नव हित पायकैं ।।५५३
आसोज मास उजाल आयो पक्ष परवा पायकैं ।
धोम्याद गुरु बुलवाय कैं धुर बिहत पाठ बचायकै ।।
जिग करचौ फिर तिहि जायगा पूजा कुमारी पुन करी ।
दैं बटुक भोजन पुन दुजनमा औंर दखना अनुसरी ।।५५४
अवसेख दीन अनाथ कौं पुन दाँन बहु सुख पायकैं ।
सुरभी सबछ्छा धाँन द्रब सब सुर्न रत्न सुभायकैं ।।
निश्चित होय नरेसुरा जनमेज करकैं ज्याग कौं ।
उपजाय अत आनन्दकौं उर अंबका अनुराग कौं ।।५५५
भूपती इंद्रक भौंनमैं बैठे सभा विस्तारकैं ।
नभ पंथ आये मुनी नारद नृपति ढिग निस्तारकैं ।।
किय मुनी आदर नमसक्त कर. स्तुति राजा कर सही ।
मुनिराज नारद भूप सौं मिल कथा सुरपुर की कही ।।५५६
पितु रावेर सुरपुर पधारे मोक्ष हुय विपदा मिटी ।
कतु अंबका हित करन सौं पुन बात नव इंह परगटी ।।
सुन बात राजा सभासद सब पाय आनद पग परे ।
मुनिराजहू आसीस दैं मिल उद्ध मारग उद्धरे ।।५५७
श्री अंबका की सेव कौं राजा लयौ फल सुखरता ।
पद-कमल देबी भग्ति उपजी कथा देबीं रुच कता ।।
श्रबनन कराय सिधायगे श्री व्यास निज सुसथानकौं ।
धौम्राद आदक दुज धुरंधर मिलेऊ पूजा मानकौं ।।५५८

दोहा

भाषा देवीभागवत, सार लयौ कछु सोध ।
चित सुध किय देवीचरित, बुद्ध सुकव हित बोध ।।५५९

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कवित्त छप्पय

सौनकाद सौं सूत कथा इंहि बरनन किन्नी।
व्यास कही कुरुविंद्र भक्ति देवी रस भिन्नी॥
पौंढ रहे बट पाँन विष्णु प्रलयाजल वेला।
ग्राधा जग ईश्वरी ग्रचेतन जान ग्रकेला॥
भागवत दयौ ग्रर्धश्लोक भज मुदत रहे सकुचे न मन।
सोइ पुराँन पुन विस्तरचौ सुन्यौ पितामह सौं सुरन॥५६०
सोइ पुराँन कौ सार व्यास सुकदेव बचायौ।
बरन्यौ तिहीं पदबंद रुचर सुर वाँनि रचायौ॥
पढै गुनै जुत प्रीत-भाव देवो-उर-भ्यासै।
जोत-रूप जग-जननि परम हिय ज्ञाँन प्रकासै॥
मानवी होय जीवन मुकत ग्राँनँद सत्त चित ऊपजै।
कवि बुद्ध ग्रौर जानै न कछु भगवंती-चरनन भजै॥५६१
माधवसिंह महीप ग्रमेठीपती उदारा।
नीलकंठ पंडित निहार टीका निस्तारा॥
वह टीका वारतक महेस्वरदत्त मिलाही।
मुंशी नवलकिशोर जाय मुद्रत किय जाही॥
जयपुर-नरेस श्रीराँम जँह प्रगट हेत कूरमपती।
भुव भारत-खंड इंहि भागवत छाप करी जाहिर छती॥५६२
सिंडायच बुधसिंह बरन चारनकुल कबिवर।
व्यास कही मति विमल मनन किय कथा मनोहर॥
छन्दबन्द चित चाह करचौ देवी-जस-कारन।
भक्त-जुत भावना उभय निजलोक उधारन॥
उगनीस संमत पचपन ग्रवद चित सुध कहि **देबीचरित**।
कायस्थ वैद श्रीवास्थस्व परमाँनन्द लिखी परत॥५६३
ग्रन-जल कौ उपकार उभय राजन कवि ऊपर।
सुभचिंतकपन सदाँ धारना राखत ध्रूपर॥
धंन्य देस राजाधिराज सिरदार सिरोमन।
मालव देस महीप उदित ग्राभा तन ग्ररजुन॥

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जोधपुरपती जाहिर जगत पुर नरसिंहगढ़ अधपती।
जिहि कृपा बुद्ध सुधरचौ जनम थिर पालन करता थिती ।।५६४

ग्रंथ लिखनेवाले की अर्ज [एवं] पता

दोहा

इँग्रेजी झाँसी जिला, गुड़ा गाँम कौ नाम।
जन्मभूँमिका जांनियै, वँह कदीम[1] सुखधाँम ।।५६५
नाँगनाथ परबत तहाँ, नदी दसाँन पुनीत।
झारखंड मन्दिर तहाँ, सिय रघुबीर सहीत ।।५६६
बृसिंघदेव के बंस के, क्षत्रि बुंदेला बास।
तिन्ह के मंत्री सदाँके, मम बुजुर्ग यह खास ।।५६७
कायस्थस्व श्रीबास्थस्व, अजा बिहारीलाल।
पिता नाम मम जानियैं, लाला मौजीलाल ।।५६८
पुत्र सुंमित्रा नामकें, बड़े भ्रात है नाँम।
परमाँनंद अनंदमय, राख्यौ मम गुरुनाम ।।५६९
सुद्ध प्रती देखी लिखत, लिख नहि सका बिचार।
भुल-चूक सब सोधकें, दीजे सुजन सुधार ।।५७०

इति श्रीदेवीचरित्र ग्रंथ द्वादस स्कंध संपूर्ण समाप्तः

जदीद मुकाम[2]

हस्ताक्षर लाला परमाँनंद कायस्थ श्रीवास्थस्व हलका पटवारा हाल मौजा भाटखेड़ी परगनै तहसील छापीहेड़ा रियासत नरसिंहगढ़।

सी. आई. मालवा

---

१ परम्परागत। २ वर्तमान पता।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दो शब्द

मध्यप्रदेश में पंवारवंशीय उमट-क्षत्रियों का राज्य रहा है। इसकी स्थापना दीवान फरसरामजी ने की थी जिन्हें श्री रघुनाथजी का इष्ट था, अतः वे श्री रघुनाथजी को ही राजा मानते थे एवं अपने को उनका दीवान सम्बोधित करते थे। इनकी राजधानी कुछ समय तक पाटन में भी रही थी। नरसिंहगढ़ के इस राजवंश में कई राजा वीर एवं उदारमना हुए जो कवियों और विद्वानों के आश्रयदाता भी थे।

मेरे पूर्वज इसी गौरवशाली वंश के कृपापात्र एवं राज्यकवि रहते आये हैं। हमारे परिवार को इस राज्य के प्रथम श्रेणी के उमराव जागीरदार का कुरब (सम्मान) प्राप्त है। जिस प्रकार क्षत्रियों, सामन्तों एवं चारणों का सनातन सम्बन्ध रहा है, नरसिंहगढ़ के राजाओं की नौ पीढ़ियों की हमारे परिवार की सात पीढ़ियाँ निरन्तर कृपापात्र रही हैं।

हमारे वंश के कवियों ने अपने समकालीन नरेशों की वीरता, उदारता एवं शालीनता की प्रशस्ति में काव्य-रचना की एवं दान, मान, सम्मान से प्रतिष्ठा प्राप्त की।

दीवान राजा अचलसिंहजी की मेरे भाऊजी पर विशेष कृपा रही। मेरे पितामह वुद्धसिंहजी राजा हनवंतसिंहजी के कृपाभाजन होने के साथ-साथ उनके प्रमुख परामर्शदाता भी रहे, जिसका परिचय सुधी पाठकों को इस सङ्कलन की रचनाओं से हो सकेगा। बुद्धसिंहजी के विद्यागुरु श्री दुलेरामजी सांढायच थे जो कि मसूदा के राव श्री देवीसिंहजी के कृपापात्र तथा डिंगल एवं पिङ्गल भाषा के विशिष्ट विद्वान्-कवि थे। पाठकों के रसास्वादनार्थ इनकी कविता की वानगी (नमूना) निम्न रूप में प्रस्तुत की जा रही है जो कि मसूदा के राव देवीसिंह की वीरता की प्रशस्ति का परिचय कराती है—

गीत सावझड़ो

थिये ग़ांमठा[1] थाट वांका गिरंद थरहरे,
घणी जस थाट डाका त्रंबक[2] घरहरे।

---

१ इकट्ठा। २ नक्कारों की गरज़।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

फब चमर झाट फीलां झंडा फरहरैं,
कमध किरण ऊपरा दाट[1] वालण करै ।।१
आछजै वाढ खुरसांण तरवारियां,
आखड़ा[2] भीच[3] सिलहां करै त्यारियां ।
सोभ पावै भिड़ज[4] पाखरां-सारियां[5],
आज रिण-वावळा[6] कठी असवारियां ।।२
सजो-सज वलो-वल[7] नकीबां सदो-सद,
सिंधुओं जांगड़ा[8] हुवै सबदो-सबद ।
वजै तासा तबल भूंभरा वदो-वद,
हठी देवा[9] कठी हुवै सज हदो-हद ।।३
जकड़ियां कड़ा धज[10] जड़ाऊ जीण-सा,
नौवती[11] फिरै मृग मन पवन मीन-सा ।
विळकुळे[12] सिभ नारद लियां वीण-सा,
देख बळ सवळ दळ हुवै खळ दीन-सा ।।४
टांमका[13] ध्रीह[14] वज लाग तोपों टलां,
भुजां लज साहियां[15] भीच कडछै भलां ।
मेलिया चकारा घीट आपह मला,
झोकसी[16] कठी धज आज ऊंची झलां ।।५
तोर सुभटां धसल देख पमगां-तणी[17],
घर गिरंद तजै अर संक मानै घणी ।
धारियां खत्रीवट दूठ दूदां-धणी[18],
आजरी क्रोध-झल[19] केण सिर ऊफणी ।।६
जोध आपायता दिपै जड़ियां जरद[20],
गमागम साकुरां खुरां उडै गरद ।

---

१ चढ़ाई । २ युद्धोद्यत । ३ वीर । ४ घोड़े । ५ पाखरों से सज्जित । ६ युद्धोन्मत्त । ७ निरन्तर । ८ दमामी । ९ देवीसिंहजी । १० घोड़ा । ११ नगारों से सुसज्जित घोड़े । १२ उत्साहित होते हैं । १३ नगारा । १४ चोट । १५ लिये हुए । १६ चढ़ाना १७ घोड़ों की । १८ दूदावत (मेड़तिया राजपूतों का स्वामी) । १९ ज्वाला (क्रोधाग्नि) । २० केशरिया वस्त्र (युद्ध में क्षत्री धारण करते हैं) ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मेल दळ ऊससै[1] जतुं हेठा मरद,
साबळा[2] ओघ अणमोघ खळ ह्वै सरद ।।७
झालियां[3] सेल भुज आग चसमां झड़ै,
चौगुणो देख छक आव कमधां चड़ै ।
ऊछटां सुणे मेवात[4] सोहि ऊजड़ै,
पांण[5] तज आंण मेहरात कदमां पड़ै ।।८
दिपै कर बंदूकां झड़ै तोडां दमंग,
पोह-वगत वांगळा[6] खड़ै खाता पमंग ।
भुयण भरम चौळा पड़ै धूजै भमंग[7],
आच[8] खग आपडै[9] कवण तोसूं उमंग ।।९
जोध अवधारियां करण[10] प्रजरा जतन[10],
पछट खागां लियण खलां वाळा पतन ।
अंगां लावण-पणौ[11] न को पूगै अतन[12],
रजोला[13] धिनो नखतेत[14] दूजा रतन[14] ।।१०
भुजां-बळ पांण खाटण सुजस भांमणा,
दूठ अजरेळ[15] उदम खळां दांमणा[16] ।
तेग-झळ अखाड़ा जीत भैरव-तणा[17],
मसूदे तपो जुग क्रोड़वे ढीमणा ।।११

मेरे पिता श्री पीरदानजी महाराज अर्जुनसिंहजी के विश्वसनीय कृपापात्र रहे और उनको नरसिंहगढ़ रियासत की ओर से 'राजपूत हितकारिणी सभा' के सदस्य रहे । उक्त सभा में प्रतिनिधित्व करते समय उन्होंने कई अन्य राजा-महाराजाओं से सम्मान प्राप्त किया ।

मेरे अग्रज ठा० नाथूसिंहजी वर्त्तमान नरसिंहगढ़ नरेश महाराजा श्री भानुप्रकाशसिंहजी (केन्द्रीय उप-मन्त्री, भारी उद्योग) के विश्वासभाजन रहे

---

१ उत्तेजित होते हैं । २ पराक्रमी । ३ लिये हुए । ४ जाति विशेष । ५ पराक्रम । ६ चौकी रखनेवाले सवार । ७ शेषनाग । ८ हाथ । ९ मुकाबले में, पकड़े । १०-१० प्रजा की रक्षा । ११ सुन्दरता । १२ कामदेव । १३ वीर धीर । १४-१४ दूसरा रत्नसिंह । १५ स्वाभिमानी । १६ पैर बांधने का रस्सा । १७ भैंरुसिंह का पुत्र ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जो अब वृद्धावस्था के कारण अपनी जागीर के गांव में ही निवास करते हैं। इनके पुत्र व मेरे भतीजे श्री दौलतसिंह जो कि वर्त्तमान महाराजा साहब की निजी सम्पत्ति के प्रबन्धक (कण्ट्रोलर) हैं और अपने दायित्वनिर्वाह के साथ-साथ रियासत में रहते हुए पितृसेवा का लाभ ले रहे हैं—यह महाराजा साहब की विशेष कृपा का शुभ परिणाम है।

इसी काव्यानुरागी राजकुल के संरक्षण में मेरे पितामह कविराजा बुद्धसिंहजी ने २५ हजार पद्यों में आबद्ध 'देवीचरित' नामक काव्य-ग्रन्थ की रचना की। इसकी पाण्डुलिपि लगभग सप्तदशकों तक हमारे पास अप्रकाशित रूप में रही। मैंने कवि उदयराजजी उज्ज्वल की प्रेरणा एवं डॉ० मोहनलालजी जिज्ञासु के सत्परामर्श से इस ग्रन्थ की पाण्डुलिपि को भारतीय संस्कृति के पोषक, हिन्दी-संस्कृत के उद्भट विद्वान् एवं ख्यातनामा डॉ० फतहसिंहजी, निदेशक, राजस्थान-प्राच्यविद्या-प्रतिष्ठान, जोधपुर की सेवा में अवलोकनार्थ प्रस्तुत किया। प्राचीन-काव्य के पारखी ने इस ग्रन्थ के प्रकाशन की व्यवस्था कर हमारा प्रोत्साहन किया है, इसीसे और उत्साहित होकर मैंने डॉक्टर साहब से निवेदन किया कि यदि "ग्रन्थकर्त्ता की भक्ति-विषयक एवं शौर्यौदार्य विषय की कुछ प्रकीर्ण रचनाएँ हैं जिनका उल्लेख प्रकाशित प्रस्तुत ग्रन्थ के प्रथम भाग में 'कवि-परिचय' में किया गया है; उनका तथा ग्रन्थकर्त्ता द्वारा ही रचित 'महाराजकुमार चैनसिंहजी री वात' नामक वार्त्ता एवं प्रकीर्ण गीत-संग्रह को भी सम्मिलित कर दिया जाय तो अत्युत्तम होगा।"

हर्ष का विषय है कि डॉक्टर साहब ने हमारे निवेदन को तुरन्त स्वीकार कर उक्त कृतियों के सम्पादन का कार्यभार मुझे ही सौंप दिया। इसीके परिणाम-स्वरूप ग्रन्थकर्त्ता की प्रकीर्ण कृतियाँ 'परिशिष्ट' में स्थान पा सकीं।

विषय—परिचय

परिशिष्ट १ में प्रस्तुत 'महाराजकुमार चैनसिंहजी री वार्त्ता' में नरसिंह-गढ़ के राजा श्री सौभाग्यसिंहजी के पुत्र श्री चैनसिंहजी के युद्धकौशल, सुदृढ़ प्रशासक, देशभक्ति एवं प्रजा-प्रिय होने का चरित्र-चित्रण किया गया है।

श्री चैनसिंहजी पर अपने पिता की विद्यमानता में ही राज्य-सञ्चालन का कार्य-भार आपड़ा था। ये उदयपुर के महाराणा भीमसिंहजी के दौहित्र

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

थे। इन्हें मातृकुल से शिसोदिया राणाओं की देशभक्ति एवं स्वाभिमान विरासत में मिले थे जिसके फलस्वरूप अंग्रेजों के शासन की पराधीनता को ललकारा था एवं स्वातन्त्र्य-ज्योति प्रज्वलित की थी। इनका विवाह झलाय ठा० चैनसिंहजी की सुपुत्री से हुआ था।

वि० संवत् १८८१ में महाराजकुमार श्री चैनसिंहजी २२ वर्ष की युवावस्था में अंग्रेजों से युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। इनके श्वसुर भी उसी युद्ध में काम आये।

कविराजा द्वारा रचित इस ऐतिहासिक वार्त्ता का भारतीय स्वतन्त्रता-संग्राम के इतिवृत्त में अपना विशिष्ट स्थान है। वार्त्ता में समकालीन मालवी भाषा का एवं कहीं-कहीं खड़ी बोली का भी प्रयोग हुआ है।

परिशिष्ट २ में नरसिंहगढ़ के राजा-महाराजाओं के रणकौशल्य, औदार्य एवं दानशीलता पर तथा भक्ति विषयक गीतों आदि का बहुत ही प्रभावशाली सङ्कलन है जिससे इनके रचयिता कविराजा वुद्धसिंहजी के बाल्यावस्था की कवित्व-शक्ति का परिचय मिलता है—जैसा कि प्रथम गीत से स्पष्ट है। इस सङ्कलन में गीत, कवित्त, दोहे, छप्पय, सोरठे आदि वीर, रौद्र, करुण आदि रसों में रचित डिङ्गल भाषा के उत्कृष्ट नमूने हैं, इसका तो पाठकों को पढ़ने से ही परिचय मिल सकेगा।

प्रस्तुत दोनों परिशिष्टों में आवश्यक अपरिचित शब्दों के अर्थ भी पादटिप्पणियों में दे दिये गये हैं।

आभारस्वरूप

मेरे पितामह बुधसिंहजी का 'देवीचरित' ग्रन्थ व उनकी अन्य स्फुट रचनाएँ काव्यानुरागियों के लिए प्रकाश में आएँ—यह मेरी व मेरे परिजनों की उत्कट इच्छा थी।

काव्यमर्मज्ञ डॉ० फतहसिंहजी ने कृपा करके इस साहित्य को प्रकाशित करवाने की व्यवस्था कर हम सभी को अनुगृहीत किया है जिसके लिए मैं डॉक्टर साहब का सदैव आभारी रहूँगा। इसके साथ ही इस बृहत्काय ग्रन्थ के सम्पादक श्री हुक्मचन्दजी चतुर्वेदी ने बहुत ही कुशलतापूर्वक सम्पादन-कार्य को सुसम्पन्न

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

किया है । अतः मैं श्री चतुर्वेदीजी एवं श्री लक्ष्मीनारायणजी गोस्वामी (जिन्होंने इस कार्य में अपना अमूल्य योगदान दिया है) साधुवाद देकर अपने को धन्य मानता हूँ । अन्त में मैं कर्मठ एवं विद्याप्रेमी नवयुवक श्री गिरधर-वल्लभजी दाधीच को भी हार्दिक धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने इस कार्य में संशोधन मुद्रण आदि में पूर्ण सहयोग दिया है ।

संयोग की बात है कि प्रस्तुत वार्त्ता में स्वतन्त्रता-संग्राम की ऐतिहासिक झलक के सम्बन्ध में मेरे ये दो शब्द आज स्वतन्त्रता-दिवस के उपलक्ष्य में दो सुमन बनकर प्रकट हुए हैं, अतः मैं इन्हें मेरे सुहृद्राष्ट्र को समर्पण करता हूँ—जय भारत ।

हमारे कुल की नरसिंहगढ़ के नरेशों के शौर्य, औदार्य एवं स्वातन्त्र्य-प्रेम की प्रशस्ति करने की अनुपम परम्परा रही है—यह क्रम निरन्तर बना रहे इस प्रेरणा से मैंने वर्त्तमान महाराजा श्री भानुप्रकाशसिंहजी साहब पर छन्द लिखे हैं जिनमें से कुछ दोहे निम्नलिखित हैं—

थूल लक्ष सुक्षम हग सु, पुनि नृप नीति-निधान ।
भूपति भानुप्रकास के, बुध-जन करत बखान ।।१
पोख गरीबों पालणा, अभकी पूरण आस ।
नरसिंहगढ़ राजै निपुण, भूपति भानुप्रकास ।।२
किण दीठो सुरतरु कठै, जगत कळपना जास ।
औ दीपै माळव-इळा, सुरतरु भानुप्रकास ।।३
अरियां थट-गंजण अडर, रंजण प्रजा सुराह ।
प्रण द्रढ भानुप्रकाससी, नरसंगढ़ नरनाह ।।४

स्वतन्त्रता-दिवस, सन् १९६९   **माधोसिंह**

———

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

परिशिष्ट (१)

बुधसिंह चारण रचित

महाराजकुमार श्री चैनसिंहजी री वार्ता

महाराज श्री सोभागसिंहजी[1] तो कपतान पेमसिंघ नु बुलाय नौकर राख्यो। माहाराजकंवार श्री चैनसिंघजी कपतान हरीसिंघ नु नौकर राख्यो। अकेक पलटण अकेक पायगा चार-चार तोपों, कोई दिनां बाद माहाराजकंवार श्री चैनसिंघजी धामधोर[2] गाम डेरा जाय कीया। सात-आठ दिना बाद [3]विहार की गढ़ी[3] में वखसी वदनजी नु जाय घेरिया। वदनजी के पास गढ़ में जावतो[4] घोड़ा तो सौएक नें प्यादल पांचसे जवान था सो गढ़ी में राड़[5] को जाबतो वांधियो। राड़ चार पहर दिन हुई, निदान वैस्य सूं संग्राम कद करीजें सो रात पड़तों अपणे साथ को जावतों ले ने नरसिंहगढ़ गया ने श्री माहाराज-कंवर चैनसिंहजी गढ़ी :में डेरो कर दियो, पलटण नील-खाड़ी पै उतर गई। फेर दिन पनराक बाद नानणपुर उगेरे बारा गाम तो नरसिंहगढ़, राजगढ़ का लूटचा फेर शुजालपुर इलाके का गांव मेंमदपुर उगेरे लूटिया। मेंहमदपुर का पटेल नु बांध पकड़ लाया। मेंमदपुर का पटेल कौ छोटो भाई कपड़ा जलाय शुजाल-पुर गयो। सूबा आनाभाऊ से फरियाद करी जद आनाभाउ बीस हजार फौज, बीस तोपों लेर चढचो सो विहार के घेरो आय दियो। नोल-खाड़ी तोज बरड़ी पै मोरचा लगाया। माहाराजकंवार नें गढ़ी सजी और तोपां की राड़ सरु हुई। दिन पांच त्था सात राड़ हुई। गनीमों को फौज वालों ने विचार बांध्यो के गढी में पांणी बंद करदां तो भीतर वाला कायल हो जायगा। सो गड़ी के भीतर मोत्या कूआ से पाणी पोहचे थो सो मोत्या कुआ पर मोरचो आय लगायो, सो पाणी बंद हुओ, निदान भीतर सारा लोग कायल हुआ। भीतर से तोपों मोत्या-कुआ ऊपर लगाय मेहताब जोई, सो तोप गोळो उगल दियो, वडो विसमय सारों

---

१ नरसिंहगढ़ के राजा। २ नरसिंहगढ़ के पास का एक गाँव। ३—३ गाँव का नाम। ४ सुरक्षार्थ व्यवस्था। ५ युद्ध।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

के आयो। तोप की पूजा कर भरके चलाई सो मोत्या कुआ के मोरचे तोप का मूंडा में गोळो लागो सो तोप उलट पड़ी चरख टूट गयो अतरे गढी। भीतर सें वारगीर साथ का जवान दोयसै म्यांना मांहे सूं तरवारां ले मार-मार करता दौड़्या। मोरचा वाळां से जाय [1]लोहां मिलिया[1]। कतराक तो मारचा गया और कतराक दुसमण भाग निकल्या, श्री माहाराजकंवार की फतै हुई। फेर दोनु मोरचां पैहली-मुजब राड़ सरु हुई। या खबर राजगढ़ रावत श्री नवलसिंहजी नु लागी के माहाराजकंवार श्री चैनसिंघजी के और आनाभाऊ[2] के अणी तरह राड़ हुई सो पुरांणी वैर याद कियो के कोटड़ा[3] में फौजदार भोपजी दांगी थो जणी वगत में कोटड़ा सूं मीरखां की फौज घेरो दियो। जद दीवाण श्री अचलसिंघजी आगे रहै कोटड़ो तोड़ायो थो सो अबै आंपणे वार आय गयो सो अपण विहार तोड़ाय देवां सो या बुरी सलाह विचार रामगढ़ का चवांण अमरसिंघजी, सींदल जालमसिंघ, राठौड़ ईसरीसिंघ उगेरे[4] बंदूकों सें जवान दोसेक को जावतो देकर भेज्या सो गनीम की फौज में आय दाखिल हुआ। आनाभाऊ से मिलिया, गनीम नु हमगीर[5] कियो निसरण्यां लगाय हल्लो कर गढ़ी में कूद पड़ा, कतरीक वड़ी बात छै। जद आनाभाऊ के भी याही सलाह जची, जद कोटड़ा में परबारी निसरण्यां त्यार कर मंगाई और प्रभात संमें बड़ी फजर चारहजार चुणवा जवान ऐकटा किया और जरीपट का निसांण खुल रह्या छै, जुंझाउ वाजा वाजतां गोळ वांध कर हल्लो चाल्यो। जद भीतर गढ़ी में खवर लागी कै हल्लो आवै छै, जद माहाराजकंवार श्री चैनसिंघजी कपतान हरीसिंघनु हुकम कियो के तुमारा जवांन लेके हल्ला के सामने चालो और हम बंदूका तोपाँ की ऊपर से भरमारी[6] लगावां। जद हरीसिंघ कपतान का ओधेदार नट गया के कोट भीतर बंदूकौं की राड़ हम करांगा, हल्ला के सामने हम नहीं जावें। जद रतने वागरी हाथ जोड़ अर्ज करी के गरीबनवाज चाकर नु हुकम फरमावै। जद हुकम फरमावतां समा सलाम कर हल्ला के सामने चाल्यो सो गढ़ी के अगाड़ी रतनजोत की झाड़ी में तीनसो बंदूकों जाय जमाई। हल्ले का लोग को गोळ सूधो नजदीक आतो एकसमचे आग पटकी सो जवान चारसै गनीम का टूट पड़्या, जरीपट का को निसांण गिर पड़्यो, ऊपर सूं गढ़ी मांहे सूं तोपों बंदूको की भरमारी हुई सो हल्लो भाग निकल्यो।

१—१ युद्ध किया। २ मरहठों की फौज का अफ़सर। ३ राजगढ़ रियासत का गांव। ४ इत्यादि। ५ अगुआ। ६ लगातार मार।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

चहुवांण अमरसिंघजी हल्ला में हरोळ[1] था सो भागतां ही वणी । निदान वीस दिन राड़ हुई सो लाचार हुय आनाभाउ तो कूच कर शुजालपुर गयो और अमरसिंघजी पीछा राजगढ़ गया । माहाराजकंवार श्री चैनसिंघजी की फतै हुई । कपतान हरीसिंघ ने राड़ हुई जिण में हल्ला-सांमे[2] जावा को हुकम दीयो सो नहीं मान्यो जीसूं अलबत्तां दिल में कड़वाई आई सो कपतान हरीसिंघ को हिसाब कर रोजगार चुकाय [3]सीख दीवी[3] नें फेर असवारी खुजनेर पधार गई । एक दिन टौड़ी[4] का ठाकर वैरीसालजी ने सहज में कही के कंवरजी तो फकत सूतली का सांप है । म्हे लोग राज करा रया हां कोई चुगल आदमी अरज श्री माहाराजकंवार नु कर दीवी सो बोहत कड़वाई दिल में आय गई । आंबेराय गनीमएं शुजालपुर समचो[5] दियो सो फौज खुजनेर आय गई । ठा० वैरीसालजीऐ पकड़ाय शुजालपुर भेजाय कैद करवाय दिया । या वात करी जींके ऊपर साथ वालों को सबको दिल विगड़ गयो सो– सगतावत अमरसिंहजी उगेरे सरदार बदल ने नरसिंहगढ़ चालिया गया........अतरे केही दिनां का अरसा सूं हुलकर का अजीटण रोसनवेग की फौज खलचीपुर आई जेकी खबर नरसिंहगढ़ माहाराज श्री सोभागसिंघजीहै लागी, सो रोसनवेग सूं मिलावट कर कहवाई के लालजी हमारो कैणो मांने नही मुलक विगाड़े छैं, सो इनके पास आदमी है ज्यां है तो कैद करो ने लालजीहै हमारे पास भेज दो सो रोसनवेग फौज लाय खुजनेर घेरो देर कवाई कै आप तो नरसंगढ़ पधारो और बौरा रूपराम। वहादुरखांजी राजावत रुगनाथसिंघजी, राठौड़ जालमजी इण सखसां कूं हमै कैदमें सोंप देवो एसो श्रीदरबार साब को हुकम है । जद माराजकंवार श्री चैनसिंघजी पाछी फरमाई कै या तो हमें मंजूर नही हैं, खैर मुलक नही बिगाडों, ने हमारा आदमीयों की साथ हम खुद कैदमें चालांगा । जद अजीटण रोशनवेग कही कै हम तो या नहीं कहां, ने आप-की मरजी है तो आप जांणो और आपके पास के आदमी तो बिलकुल हमको कैद करणे का हुकम है सो छोड़ों नही । जद आपही साथ का साथ लश्कर में चाल्या गया । फेर कोई अरसा सूं संवत १८७५ का साल में अंगरेजी फौजों माळवा में आई सो हुलकर की फौज के और अंगरेजी फौज के राड़ हुई सो केही राड़ां हुई । एकराड़ मालकिन साब सूं मलारराव के सीतामऊ की झाड़ी में हुई सो हुलकर की फौज तर-वितर हो गई सो मलारराव की रांणी अंगरेजी सवारों घेर लीवी, ने ले

१ सेना की प्रथम पंक्ति । २ मोर्चे के सामने । ३—३ विदा किया । ४ नरसिंहगढ़ में प्रथम श्रेणी के उमराव खीचियों का ठिकाना । ५ समाचार ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

चाल्या । या खबर मुकाबलै पर माहाराजकंवर श्री चैनसिंहजी नु लागी सो निरा-ताळ[1] का घोड़ा और दीया ने तरवारां, भालां की ऐसी मार दीवी सो अंगरेजी सवार तो भाग गया ने मलारराव की रांणीऐं छोडाय लीवी बिलादार[2] छीतर की घोड़ी पै झट बैठाय चाल्या सो लश्कर में हुलकर के पास आय गया । जद मलारराव ने बड़ी शाबासी दीवी ने कही कै कंवरसाब मेरी इज्जत आपने बचाई। अणी झगड़ा में महाराजकंवार की वात लसकर में बड़ी बहादुरी के साथ ऊची दीसी । फेर मीरखां, गफूरखां हुलकर के और अंगरेजां के सलूक[3] हुओ, कौलनामों[4] बांध्यो। जद माहाराजकंवार श्री चैनसिंहजी ने पण रूपराम[5] नु कही कै अपणो भी कौलनांमो बांध लेवां । जद रूपराम कही के गरीबनवाज जागीर में मुलक थोड़ो लिखावां सो खीरणी[6] वाजवी ठैरसी। श्री महाराज हुकम फरमायो के अंगरेजीराज तुरत जांणे को है आज ज्यांके नामें लिखां सो फेर छोड़ावणो मुसकल हो जाय जद कही के गरीबनवाज हुं तो जात को ब्राह्मण कुछ दावो करणे सूं रयो; म्हारे नाम पर लिखाव कर दीजै सो पाछी नजर कर देसूं राज में फायदा की अर्ज करूं सो विचारी चायजै, सो था तो बड़ा बुद्धिवान पण अठै सला हार गया ।

युद्ध का कारण

गांव चालीस वड़ा-वड़ा भारी बौड़ा उगेरे रूपरामजी के नाम लिख दिया। रूपरामजी मुखत्यार था सो कौलनामो बांध लियो, अंगरेजों में बात सनद होगई। फेर मलारराव हुलकर सूं सीख मांग तीन वरस सूं पीछा नरसंगढ़ पधारिया जद वौरा रूपरामजी को कांम सर्ब सोबे हुय गयो ने खुजनेर में रोशनवेग की फौज को घेरो दरायो ने तोहमत[7] कराई, सोई तोहमत श्री माहाराज सोभागसिंहजी सूं वौरे करी, या कहवाई कै—आपतो धणी राज का परन्तु आपके नजदीक रैवा वाळा अतरा सगसांहै सीख दे देवी चायजै। बारठ अमरसिंहजी, रावळ हठीं-रामजी, साजी वखतरामजी, गोपालजी, पड़िहार प्रथीराजजी। जद श्री सोभाग-सिंघजी हुकम फरमायो के ईणै सीख हरगिज नही देउं ऐ रहसी जठेई हूं रहसूं

१ तेजी से, अगणित । २ म० कु० चैनसिंहजी का हुजूरी (पदविशेष)। ३ राजीनामा, सुलह । ४ सन्धि-अनुबन्ध । ५ म० कु० चैनसिंहजी का कृपापात्र पल्लीवाल ब्राह्मण । ६ अंग्रेजी सरकार का अधीनस्थ राज्यों पर लगने वाला कर । ७. आपत्ति, आरोप ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जद श्री दरबारसाब रुसाय कर राज लोगों समेत उदैपुर पधार गया। श्री माहाराजकंवार तो राज-काज कौ सलतन कर लियो। वौरौ रूपराम सरब सौबे मुखत्यार हुय गयो ने वड़ी जुलम पर कमरबंदी करी। सरब रियासत सूं खतरा कर-कर निकालणा सरु किया। भाटखेड़ा[1] का सरब गांव जवत कर लिया। महाराज हणवंतसिंहजी रुसाय भोपाल जाता रया और टौड़ी उगेरे जागीरदारां का गांम सांसण गांम सरबेत जवत कर लिया सारी रियासत के नाक में दम अणाय दियो।

जेपे[2] श्री माहाराजकंवार अंतहकरण में बिलकुल नाराज हुआ, फेर एक दिन वौरा सूं हुकम फरमायो के अंगरेजां सूं कौलनांमो हुयो जद गांमा की सनद म्हारा सूं लिखाई सो आज तक पाछी दाखल नहीं करी सो अबै दाखल राज में कर देणी चायजै। जद वौरे अरज करी—गरीबनवाज शाजापुर में म्हारो आदो चार है सो कतरीक घरकी रकम भाव उठै रहै छै सो वा भी उठै भेज दीनी सो दन पनराक में मंगाय हाजर [कर दे] सूं, जद पनरा दिन की जगा महीनो भर गुजरवा देने फेर हुकम फरमायो के वों दस्तावेज हाल-तोड़ी[3] मंगाया नहीं, जद फेर भी याही अरज करी। फेर महीना दो महीना सूं योही हुकम फरमायो जद फेर भी उसी तरह अरज करी। जद वौरा के दिल को कपट निज़र आय गयो ने या दीख गई के जो अबै कोई तरह रो इण सूं खतरो गैर तजबीज करु तो अंगरेजी में पर कर जादा बढ़ गयो सो सायब लोगोंऐं दस्तावेज वताय रयासत वटाय लेसी। या विचार दस्तावेज मंगावणरी वात तो ढीली मेल दीवी ने चूक कर मारणरीज विचार लीवी, पण[4] श्री दरबारसाब तो उदैपुर माहाराज हणवंतसिंघजी भोपाल ठा० वैरीसाल जी उगेरे मांणहीण हो गया सो कुछ तजबीज हो सकै नहीं, जद रूपराम नु फरमाई कै हुं तो राज करु ने वासाव[5] परदेस में विराज्या सो अणी बात की मोहै पूरी सारी कपूती आय रही है ज्यूं करौ ज्यूं करो, पण नरसंगढ बुलावो जद वौरे कही कै—जो हुकम। वौरे अपणो भांणेज नु खरची दे तयार कियो ने दूसरो चवांण बलूंतसिंघ नु जावतो बांध रवांने किया सो उदैपुर गया। अरजियां कागद ले गया सो दीना ने साहूकारों रो करज चुकावण ने उदैपुर सूं सीहोर आया उण दिनां में श्री माहाराजकंवार भी सीहोर था सो बाप-वेटा दोनु सरदारों के

१ नरसिंहगढ़ की प्रथम जागीरदारी। २ जिस पर। ३ अभी तक। ४ किन्तु। ५ नरसिंह-गढ़ के राजा सौभागसिंहजी।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सीहोर में मिलाप हुअो। जद वौरै रूपराम फेर या ही भांज गढ़ पटकी कै—श्री माराजकंवार नु तथा सायब श्री दरबारसाब सूं कही कै—बाप बेटा तो दोनु सरदार राजी-बाजी होय नरसंगढ़ पधारो ने बारठजी, अमरसिंहजी उगेरे पांचु जणाहै तो सीख दीनी चाहिजै। जद श्री दरबारसाब हठ चढ़ गया कै इणै तौ हरगिज सीख देऊं नही फेर पीछो उदैपुर तथा तीरथा चल्यो जाणो कबूल है।

अणी तरह वात अड़ी जद श्री माराजकंवार आधी रात के समीये एक दिन साह गोपालजी ने बुलाय हुकम फरमायो कै—बारठजी नु कहो सो हुं बी (भी) डेरां बाहर अकेलो आय जाउं, ने वे भी अकेला आय जावै कुछ समाचार वतलावणा है, तीसरा कोई आदमी नु खबर पड़े न्हीं। जद गोपालजी अमरसिंघजी नु समाचार कया सो घोड़ां की पछाड़ी यां की मेखां गड़ी थी जठै आप भी पधार गया ने अमरसिंघजी, पण आया जद हुकम फरमायो कै बारठजी! वौरो तो कामदार कर थाप्यो थो, पण दाईदार[1] वण गयो। तमें तो कोईऐं अणी वात की मेहरम[2] नहीं पण कौलनामो कियो जद अणीने म्हारै सूं, धोको देकर गाम बौड़ा उगेरे चालीस लिखाय लीया। अपणा राज में जीवन था सो और हुं पण सलाह हार गयो सो लिख दिया, पण जद तो कही थी कै आप हुकम फरमाव सो जदेई दस्तावेज निजर कर देसूं। इण दिनां में तोन वार मांग चूको सो पाछी देवा की नियत है नही और तम लोग सवी रयासत का कदोमी हो जिणै राज में ठैरबा देवे नही अणी की कार परवारो[3] मैने कदम दियो, जणी ही दिन अंगरेजी में मामलो पेश कर गाम विजनस कावू में कर लेसी सो मैने ही तो सला हार कर रयासत खोई और हुं ई पाछी रयासत की बहाली राख सू जद रहसी, वौरा ने म्हारा सूं जाळसाजी करी छै सो जीवतो वोरा ने हरगिज छोंडू नहीं, फेर भविष्य है ज्यूं हुसी। वौरो थांने जाणे की कहाय रहयो है सो कारण न्ही तम जाओ, और श्री बासाहबहै या वात तौ मती प्रकासो ज्यूं वणे ज्यूं करै, परंतु अठै रहबो मंजूर करै सो उपाय करो। जद श्री महाराजकंवार साथ लेकर श्री दरबार में गया ने अमरसिंहजी अर्ज करी कै श्रीलालजी साहब अर्ज करै छै कै—आप पाछा पधारवा के हठ चढ़ गया सो हुं आपघात कर आपके ऊपर मरँ जावसूं न्ही तो आप नरसगढ़ पधारो ने आप को

१ दावेदार = स्वामी। २ मालूम। ३ बाला-बाला = अज्ञातरूप से।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राज आप करौ और वौरो हम लोगों के सीख की कह रयो है सो हाल पांच दिन अणी को कैतव[1] राख जाणे में ठीक छै फेर सफाई के साथ हम भी आय जावसां, पण आपको फेर पीछा पधारवा में तो श्रीलालजी[2] संाव की लोकिक विगड़ै नें हम लोगो को भी वदनाम हुवै सो म्हाने तो हाल-घड़ी सीख दीनी चायजे, आप दोनु सरदार विचार सो जदई म्हे हाजर आवसां, निदान रामधरम बंदोवसत खरच उगेरे कौ हुकम तो फरमाय दियो ने अमरजी, साजी बखतरामजी, गोपालजी, रावळ हठीरामजी, पंडीया प्रथीरामजी कै तो उदैपुर जाणे की सीख दीनी सो रवांने हुया। वाप-वेटा राजी-वाजो हुय ने नरसंगढ़ पधार गया। असाढ महीने तो या वात हुई। केई दिनां बाद वौरा रूपराम कने भाटी रायसिंघ व मालो रहै, ज्यां सूं रामधरम देकै फरमायो के—वौरा रूपराम नु चूक कर मार नोंखो तो पांचहजार की जागीर हीन हयात देउ, सो वेइमानी कर वौरानु ज्यूं का ज्यूं समाचार कह दिया पण होणहार तावे कुछ खयाल में वौरा के आई नहीं और वांरा नु समाचार कया जेकी मालम श्री माहाराजकंवार नु पण लाग गई। फेर पाछी वौरासूं खातरी दिलासा हँसी-ठठ्ठा राजीपा के साथ ऐसी रीत वरती कै विलकुल रंज मिट गयो। रायसिंघ ने वौरे उलटो लाचार कियो के तूं झखमारे छै म्हारो मालिक म्हारे सूं तो राजी पैलासूं[3] सवाय छै। रामगढ़ का चहुवांण अमरसिंघजी राजगढ़ रहे था सो अंगरेजी में रसालदारी सौ घोड़ौं की हुय गई ने माळवा में गिराई को काम हुय गयो।

रामगढ़ अमरसिंहजी आया तरै नरसंगढ़ बुलायां ने वडी खातरी करी और कही कै तुमांरी मारफत वालों से वौरा ने [4]चूक करावो जेका[5] रामधरम[6] हुआ ने अमरसिंहजी वात मंजूर करली। जद अमरसिंघजी के इजारे का गांम बांसिया पाटेड़ का गूजर मोती छावड़ो ने वारासो रु० तो पहली जनानी डौढी का कामदार जोशी तेजकरण की मारफत सूं दिया, फेर कही कें वौरानुं मारयां वाद इनाम-इकराम जमीदारा उगेरे फेर आछी तरह देसां। असां खातरी पूरी सारी करीने कुछ लिखावट भी कर दीनी।

संवत १८८० का मिती कुंवार सुदी ५ को वौरो किला पर आयो सो रात पहर भर गई जद श्री माहाराजकंवार सायबां सूं तलेटी जावा की सीख की अरज

---

१ गुप्त। २ महाराजकुमार श्री चैनसिंहजी। ३ पहले से। ४-४ छल से मार डालो। ५ जिसका। ६ दोनों ओर से वचन-निर्वाहार्थ समझौता।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सलाम करी, अतरै छींक हुई जद फरमायो छींक हो तों मत जावो जद फेर बैठ गयो। अणी तरह फेर सीख करी फेर छींक हुई फेर ढब गयो फेर सीख करी अतरे फेर छींक हुई जद आप तो हुकम कै वौराजी ढव जाओ। वौरं अरज करी कै गरीबनवाज घर जातां छींक कांई करै। अणी तरह रात पैर[१] सवा डौढ जातो रही पीनस[२] में बैठ घोड़ा-घाटी होयतां चालियो, साथे अड़दली का जवांन तो वीसेक ने मसालां दोयके उजाळे विलादार मौवत पीनस की खूंटोड़चा पकसाथ अदवीचै काली के दरखत कने आवतां तींदू[३] के पेड़ों में मोती छावड़ो आसामी पनरा दोय जागा[४] सात-सात आठ-आठ जणा दबने बैठा था सो वौरा के नजर आय गया सो ढोर[५] जांणिया, या कहो कै देखो सहर में रात को भी ढोर नही बांधे सो कराड़[६] में खड़ा है। या कहतां पीनस थोड़ीक आगे निकलतां धावड़ियां[७] के हाथ का पत्थर पीनस पै वहचा, अतरै वौरो बोल्यो कै देखो श्री कंवरजी साहव ने देवी-देवतां का बलीदान बंध कर दिया सो देवता पत्थर मारे छै। अतरे तो पत्थर बोहतसा वहवा लाग गया। एक तरफ सभी देख रया था अतरै दूसरी तरफ वाळा भी पथर चलावणा सरु किया, पथरों की मार दड़ादड़ लागी। जमादार, मदारी, फाजल, रमजान सारा जवांन भाग गया। मसालची नाथू गोपाल भी मसालां पटक भागा, अतरे धावड़ियां आय पीनस नजदीक लीवी। विलादार मोवत पीनस की खूंट पकड़चां थो। मोवत के तरवार वही सो गिर पड़यौ ने भोयां[८] ने पीनस पटक दी। पीनस तीन कुलाटां खाइ ने वौरो निकल भागो धावड़ियों पीनस देखी तो भीतर वोरो नजर नहीं आयो। जद मोतो छावड़ी कोलूखेड़ी का दूदा पटैल से कही के भाई हुं तो वौरानुं पिछाण नहीं, तूं बता। न्ही मिलेगो तो थेट हवेली जाय मार कर आवसूं। अतरेक राड़ में उतरतां-उतरतां उजळी अंगरखी को पळको[९] देखतां मोती छावड़ी की बरछी वही सो मौरां[१०] में लाग छाती में फूट निकल गई, वौरो गिर पड़चो। मोती छावड़ी के नौकर खैराती मेवाती रपटकै[११] तरवार मारी सो वौरा कै जनेउ ढाल होगई। वौरो गिर पड़चो, धावड़िया फूटी भुरज नके होता हाडा कुंड पै होता किला की कराड़ उतर भागा।

---

१ पहर। २ पालकी, जो आदमीयों के कन्धों पर ले जाई जाती है। ३ जिसके फल खाने व पत्ते बीड़ी बनाने के काम में आते हैं। ४ जगह। ५ मवेशी। ६ पहाड़ी की तलहठी। ७ घात करने वाले। ८ जाति विशेष, जो भारवाहक होते हैं। ९ चमक, प्रकाश। १० पीठ। ११ दौड़-उछल कर।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

नाथू मसालची भागो सो श्री माहाराजकंवार की हजूर में अरज गुदराई[1]। सहर में तथा वौराजीरी हवेली में सारे ही चूकरी वात जारी हुई। अतरै श्रीदरवार साहब तथा श्री माहाराजकंवार साहब भी आय देखिया पीनस में लास नांख[2] वौराजी की हवेली पहुंचाई। फजर में भरतगढ़ के वाग में दाग हुम्रो। देस परगना में सारे ही वात मसहूर हुई, अंगरेजी में भी खबर गई अलबत्तां बाला-बाला तेहकीकात होणी सरु होण लागी सो कुछ पतो सावत[3] लागो नहीं। अणी धावड़ियां में खाखरा को टुंडो मैणो सामल थो जिणी नें मलावर का वौरा सीताराम से हकीकत पता वार कह दीनी सो वौरा का नुकता[4] में नरसिंहगढ़ आयो पण समाचार कोई से कया नही। कई दिना वाद रूपराम का भाई सिव-लाल सूं जोशो तेजकरण की बेटी वाकब थी सो रुपिया दीया उणी मुदा सूं अणोने पण कह दीनी। शिवलाल के पूरी खयाल में तुली नही।

फिर माह महीने [5]डावड़ी की छावणी[5] चार सायब[6] लोग आया जिणकी साथ में चार कंपनी एक रसाळो केई दिन नरसंगढ़ रया। वौरा ने चूक होयो जणी की तेहकीकात करो। अंगरेजी में तथा लोकिक में सुबो श्री दरबार साहब की तरफ को जांणियो गयो। गुमानजी मेड़तियो, तारेखां कायमखांनी, कालू रुंआळो यां तीन जणांऐं तो सजा भी विसेस दीनी और पूछ-ताछ इजार तो सभी का लिया पण चूक की साबूती कोई के ऊपर हुई नही। निदान सायब लोग महीनो डोडेक नरसिंहगढ़ रहकर पीछा चाल्या गया। तलेण[7] का वौरा आसाराम नु मलावर वारे वौरे सीताराम तुंडया मेंणा सूं हकीकत सुणी सो कही-आसाराम सिवलाल सूं कही। सिवलाल पण जोसी की बेटी सूं पैला भी सुणी थो ने फेर आसाराम सूं सुणी जद अखीर जची। आसाराम सिवलाल दोनू जणां कागद में लिख सीवर (सीहोर) भेज दीनी, सीवर सूं सागर पहुँची जद बुंदेलखंड का अजंट मेंडक[8] साब सागर सूं रवाने हुआ जेकी पीछी खबर सीवर लागी, जद रसालदार चहुवाण अमरसिंघजी रसाला समेत भेलसां के अगाड़ी जातां सांमा[9] गया। मेंडक साब सूं मिलिया सलाम करी जद मेंडक साब अमरसिंघजी नु कही कै तुम गिराई[10] का काम पर था सो नरसंगढ में वौरा रूपराम कुं चूक हुआ जिसकी चौकस

१ गुजारी = की गई। २ रखकर। ३ निश्चित। ४ मृत्यु भोज। ५ गाँव का नाम। ६ अँग्रेज। ७ गाँव का नाम। ८ मेटकॉक अंग्रेज। ९ सामने। १० सेना की व्यवस्था।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

नहीं करी। अमरसिंघजी अरज करी के गरीब परवर हमने चौकसी तो वोहतेरी करी, परन्तु आज तक तो कुछ पता नहीं लागा जद सायब ने पीछो हुकम दीयो के अच्छा तुम जाओ सो 'वांसीया पाटेड़'[1] का गूजरां कु गिरफतार करो जद अमरसिंघजी अरज करी के हमकूं एक इस्तिहार मिला चाहीजै कै कोई मुझ कूं रोके नहीं जद सायब ने इस्तिहार लिख दियो सो लेने रवांने हुया, सो कितराक सवार तो अहीरवाड़े की तरफ भेज दिया, कतराक सवार बजार वरखेड़ा की तरफ भेज दिया और सेंगर[2] चमनोजी, अमरसिंहजी रामगढ आया। रात आपके घर रया, सबी घरकां सूं मिल मिलाय पंजाब की तरफ चाल्या गया। तीन वरस सूं लाहोर पूगा की खबर लागी पीछा रामगढ़ तथा माळवा में आया नही। सायब भेलसां सूं बैरसिये आया जद बैरसिये के मुकाम श्री माहाराजकंवार साब मिलण नु पधारिया अतरा सरदार ठावा[3] आसामी साथ था। माहराज श्री हणवंतसिंघजी[4] टौड़ी ठा० वैरीसालजी, जैसींघजी, लसूरड़िया का ठा० गुलाबसिंघजी, बोरखेडा का ठा० सिवसिंघजी, भाड़क्या का ठाकुर सेरसिंघजी, रोसला का ठां० जसवंतसिंघजी, गूधाहेड़ा का ठा० इन्द्रसिंघजी, विजैगढ़ रावजी गोपालसिंघजी माहाराजा वख्तावरसिंघजी, पाडल्या का सगतावत मौकमसिंघजी, हमीरसिंघजी, बेलास का माहाराजा वदनसिंघजी, लछमणसिंघजी, राव दौलतरामजी, स्यामलालजी अमला का मुसदी बखसी बदनजी, केसराजी, उंकारजी उगेरे और कुल आदमी सातसे आठसो को भीड़-भाड़ सूं वौरा रूपराम को भाई सिवलाल साथ थो जिण सायब की फौज में डेरा जाय कीयौ जद खातरी कराई, बुलायो पाछो आयो न्ही। श्री माहाराजकंवार सायब के साथे साथ हुया सो सातनवाडी मुकाम पांच रया, खोखरे मुकाम अठारा रया। होळी को तेंवार अणी मुकाम पै हुओ बेराड़ मुकाम तीन रया, शुजालपुर मुकाम वीस रया फेर सीहोर की छावणी दाखिल हुआ।

श्री माहाराजकंवार को डेरो सहर सीहोर सूं पिछम की तरफ हुओ आसटा[5] की सड़क सं उतरादी छावणी वणाय लीवी वाग में सायब

१-१ गाँवों के नाम। २ जाति निशेष। ३ प्रतिष्ठित। ४ ये भाट खेड़ा के और नरसिंहगढ़ के राज-घराने से सम्बन्धित थे कुंवर चैनसिंहजी की युद्ध में वीरगति हो जाने के पश्चात् तथा इनके कोई सन्तान न होने के कारण, हनुवन्तसिहजी नरसिंहगढ़ की राज-गद्दी पर बैठे। ५ गांव का नाम।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अंगरेजी छावणी में दाखिल हुआ, फेर मेंडक साव के और श्री माहाराजकंवार के पड़-उत्तर[1] होता रया। अतरै कई दिनां पहली वांसीया पाटेड़ का गूजरां नु बुलाय लीना उण के कंहवा सूं चूक की साबूती श्री माहाराज कंवार पर होगई। जद पेहली तो सायब ने यो हुकम फरमायो के (पहुँचायो) अब असाढ का महीने वरसात का मौसम आय गया सो आप नरसंगढ़ तसरीफ लेजावें और रइयत की खातरी करै फेर काती महीने दरियाफ़त हो जायगा। जद नरसंगढ़ पधारवा की त्यारी हुई। वौरा रूपराम की बहु ने खबर पड़ी जद सायब कें बंगले अर्ज करी के मेरे खांविंद कूं कंवर साहब ने सरबसर मारचा जिसका आपने कुछ दरियाफत न्हीं किया और नरसंगढ़ की रुखसत दे दोनी तो मेरे कूं किलकत्ते का रवांने का परवांना मिला चाहिये सो लाठसाहबहैं जाय अरजी देउं। सायब लाचार हुया ने मंगल जमादारहैं श्री माहाराजकंवार साब के पास भेज्यो ने कहाई कै किलकत्ते रिपोट गई है सो जबाव पीछा आवै ज्यां तक नरसंगढ़ जावा की मौकूंफी करावै। दूसरा हुकम सादर हुवेगा जद आपको जाणा होगा जद पाछी मौकूफी हुय गई फेर किलकत्ते सूं जवाव आयो। जद मेंडक साब ने श्री माहाराजकंवार साहबहै पहर रात गयां बंगले बुलाया मुलाकात करी खुरसी पै विराज्या जद कही कै आप जांनसेन साव की कोठी तसरीफ लेजावै, किलकत्ते सूं हुकम आया सो सुण लीजै। जद जांनसेन साब की कोठी पधारचा खुरसी पै मुलाकात हुई बराजीया[2], जद सायब हुकम सुणायो या तो चंद रोज के लिये दिली तसरीफ लेजाओ अथवा कासीजी पधारें जद श्री माहाराजकंवर साब ने फुरमायो कै सदर सूं हुकम आयो सो मांथा ऊपर है, दस ग्यारा रोज में पाचो[3] जबाब देउंगा। अतरी फरमाय कर खुरसी ऊपर सूं ऊठ बंगले बाहर पधारचा। घोड़ा पं सवार होय डेरे पधार गया। उणोज वगत डेरांके आसपास सायब गुपत पैरा[4] भेज दिया।

दिन चारेक बाद श्रीमहाराजकंवार साव घड़ी दो एक [5]दिन पाछळा का[5] घोड़ा फेरवा जाणे लाग्या अतरे रसाला का सवार पचासेक घोड़ा आडो आय फिरीया ने कहीके छावणी के बारे घोड़ा फेरबा जाणे का हुकम नहीं है सो मत जाओ। आप हुकम नहीं मानोगे तो तोपां पलटणां आवेगी ने किस्सा[6]

१ प्रश्नोत्तर। २ बैठे। ३ पीछे. पश्चात्। ४ चौकसी रखने वाले (गुप्तचर)। ५—५ अपराह्न में। ६ लड़ाई (युद्ध)।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

हो जायगा। जद श्री महाराजकंवार साहब फरमायो के जाओ सायब नु खबर दो, तोपां पलटणां जल्दी भेजे। श्री महाराजकंवार साहब अतरी कैहकर दिखणाऊ तरफ घोड़ा फेरबा पधार गया सो [1]मुसाल के चांदणों[1] पाछा डेरां पधारचा। आचारज सदारामजी मुरजीदान था ज्यां सूं हुंस्या के सदाराम अब तो काशी जी चालांगा, और तमें फूलकुन्ड में पटकांगा, जद डेरां में सबके अगाड़ी बात खुली कै कुछ सायब ने हुकम सुणायो छै जद यो ऊकम फुरमायो छै। रसाला का सवारां जाय ने सायब सूं खबर गुजराइ[2] के श्री कंवरसाहब आज पिछले दिन का छावणी की हद के बाहर घोड़ा फेरबा जावा लागा, जद हमने हुकम सुणायो सो हुकम की तामील नहीं की, घोड़ा फेरबा चले गये। खिसा[3] करने का हुकम नहीं था जिससे हमने खिसा नहीं किया, आइन्दा सायब हुकम करै सो सही। सायब ने सवारां सूं फेर बी कही कै अच्छा तुम जाओ तुमारे काम की चौकसी राखो फेर हुकम होवे जैसा करना। अणी वात पै सायब लोगां के विलकुल आय गई कै जोर दियां विदून[4] हुकम मंजूर करेगा नहीं। जद डाबड़ी[5] की छावणी सूं तो पलटण बुलाई और हुसंगाबाद सूं रसाला का सवार तीनसैक बुलाया। भोपाल सूं कंटनजंटी[6] का सवार चारसैक बुलाया और खुद सीहोर की छावणी की फौज थी। सारी मिल-जुड़ने फौज हजार पांच-छैएक के आसरे[7] इकठी हुई।

संवत १८८१ सावण सुद १३ सनीसर कै दिन पिछली रात डेड पैर[8] रयां आठ मोरचां तुंग[9] जुदा-जुदा कर श्री माहाराजकंवार साहब के छावणी के आसफेर[10] घेरो आय दीयो। छावणी के भीतर नजदीक था सो तो छावणी का छावणी में घेराय गया, कतराक साथ वाळा जागीरदार उगेरे दूर उतरचा था सो दूर का दूर रह गया। दखण तरफ आसटा की सड़क कै जड़ा सूं धूआदू[11] मूंढ़ो कर तोपां को जाड़ो जमायो। गांव की तरफ ऊगूणी-बाजू[12] नजूमी पलटण जमाई और चौफेरां और थोक[13] पलटणां को जम गयो।

श्री माहाराजकंवार साहब डेरां में पौढिया था अतरे पहरायतां[14] देखियो सो डेरां के आस-पास असफेर घेरो लाग गयो। श्री माहाराजकंवारहै जगाया,

---

१—१ मशाल की रोशनी में। २ अर्ज की। ३ युद्ध। ४ बिना। ५ गांव का नाम। ६ कन्टनजेन्सी। ७ लगभग। ८ पहर। ९ मार्गों में। १० चौ तरफ (चारों ओर)। ११ उत्तर दिशा में। १२ पूर्व की ओर। १३ समूह। १४ पहरेदारों ने।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

साहबहै जगाया और सारो साथ जाग्या पण यो ही हुकम फरमायो के आप-आपकी जागा जम्या रहो और हाथ-मूंडा धोय लेवो। कतरीक वगत वीतां बाद आप हाथ-मूंडा धोया, दातण कियो अतरै पण दन[1] ऊगवा की त्यारी हुई। राव स्यामलालजी [2]कसूंमल पाग[2] लाय हाजर करी। आप पाग बांधता हुकम फरमायो के बासाव अजबसिंवजी[3] सूं रतनपुर पै झगड़ो हुओ जेको कवित्त तनै याद हवै तो पढ़। जद स्यामलालजी यो कवित्त पढचो:—

सवैयौ

आया उजैन सों साह सुजान, महा भर भीर मसंद हकारे।
आवध अंग अभंग सजे, जनु रोप बकत्तर पक्खर सारे॥
देवळ पार-सुपार छता, अजवा खल खग्गन खूंदन वारे।
डार दिये वटके-वटके केउ, ऊमट के झट केनके मारे॥

वार्त्ता—अतरे सोनखेड़ा वाळा ऊमट कोकजी बड़ी अंगरखी पेटी लाय हाजर करी, जद हुकम फरमायो के वड़ी अंगरखी तो मेल दो, छोटी अंगरखी लाव। आज अपणै, अंगरेजां के झटकामार होगी, जद छोटी अंगरखी दोवड़तां लाय हाजर करी सो पहरी। ऊपर सादो कमरबंदो बांध्यो तरवार बांधी, ऊपर चंदेरी को जरदोजी[4] दुमट्टो बांध्यो और ढाल कत्ती हथवांसे[5] धारण कियां डेरा में आय विराज्या और केसराजी ऊमट सोनखेड़ा वाळा सूं हुकम फरमायो के सव साथ वाळा सूं कहदो आप-आपकी जागा जम्या रहै। [6]अमल की चवटां[6] देदो सो आप आपस में मनवार[7] कर आछी तरह अमल ले लेवें। केसराजी सारा साथ वाळाहै[8] अमल की वटियां वांट दीवी हुकम सुणाय दियो सभी साथ में आछी तरह अमल की मनुहारां ऊई।

अतरे दोय घड़ी दन चढतां मेंडक साब जंगी-पोसाख[9] पैहरचां वडी किलंगी टोपी पर लाग रही किरच लटकती हुई कमर के बंध रही। गरड़ै[10] घोड़े पै सवार कपतान साब इणहीज मुजब जंगी-उरदी पेहरचां। कुमेत घोड़ा पै सवार

---

१ दिन। २—२ केशरिया पगड़ी, जो युद्ध के समय में सिर पर बांधी जाती है। ३ ये महाराजकुमार चैनसिंहजी से चार पीढ़ी पूर्व के नरसिंहगढ़ के राजा थे जिन्होंने नरसिंहगढ़ से १० माइल दूर पार्श्व में रतनपुर में मुग़ल बादशाही फौज के साथ भयङ्कर युद्ध किया था। ४ केशरिया। ५ हाथ में। ६—६ अफीम के टुकड़े। ७ साग्रह सत्कार। ८ वालों को, 'है' विभक्ति का रूप है। ९ युद्ध-समय के वस्त्र। १० कागड़ा रंग के।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सीवर[1] को जांनसेन सायब, फेर दोय सायब और इणाहीज मुजब उरदी पहरचां घोड़ा पै सवार और [2]हावड़ी की छावणी[2] को दीवांळ सायब जंगी उरदी पहरचां और प्यादल[3] सायब लोग आया सो तोपां के मोरचै ऊभा रया फेर आथूंणी[4] तरफ चाल्या सो उत्तर-पूरब की तरफ का मोरचा संभाल पीछा तोपां के मोरचे आय खडा रया ने मंगळ जमादारहैं श्री माहाराजकंवार के पास भेज्यो सो आप अर्ज करी सायब ने सलाम कवाई[5] है और सदर का हुकम है—आठ सरदार आपके साथ लेकर आप सायब सूं मुलाकात करवा पधारो उमेदवार खड़ा है। श्री माहाराजकंवार साहब ने हुकम फरमायो के जो बंगळा पै सायब मुलाकात करबा वी अकेला है बुलावता तो हम चल्या आवता, परंतु आसफेर घेरो लगाय दबावणी देकर हमैं बुलावै सो हम राजपूत हां आबरू गंवावण ने आवां नहीं। या मुलाकात करवा हम हरगिज आवां नहीं सायब नु करणी हो वेसो करो, और इन्साफ करो तो हमारी दस्तावेजां देखे। जद मंगळ अरज करी गरीबनवाज ऐ तो सायब सूं अरज करबा का मेरा मकदूर[6] न्ही है। आपका वकील भेजावै सो वो सायब से अरज करै। जद लाला भागीरथजीऐं[7] सायब के पास मंगळी के साथे-साथ भेज्या सो सायब के पास गया अर्ज करी, जद मेंडक साब बोल्या के—अबतो हमारा अखतयार न्ही है कपतान जांनसेन सायब के पास जाजो। जानसेन सायब के पास गया जद सायब कपतान कयो के तीन घंटों का इकरार था सो अब पूरा होणे पर श्री कंवरसाहब को जांन रखणा होवे तो अजंट मेंडक साहब से मुलाकात करे। काशी का हुकम दै तो काशी जाओ, दिली का हुकम दै तो दिली जाओ न्ही तो तोप का फेर[8] होणे की तयारी है।

जद लाला भागीरथ ने पीछा आय अरज करी तद श्री माहाराजकंवार साब [9]उव्या-पगां वहाल हुया[9] और जो-जो सरदार डेरा में था सौ हाजर हुया। सबसूं हुकम फरमायो के—जिण को मन मांने सो हमारे साथ चलो और कोई को दिल न्ही होय सो जाओ। अतरै लेहमभर[10] हुई ने तोप चाली सो गोळा गोळ[11] में लागा, ऊपरातळी[12] फेर बारा हुआ जिण सूं अतरा सरदार तो काम आया।

---

१ सीहोर। २ यह गाँव नरसिंहगढ़ रियासत में है जहाँ फौज की छावनी थी। ३ पैदल। ४ पश्चिम दिशा। ५ कहलवाई। ६ साहस। ७ ये महाराजकुमार के विश्वासपात्र थे। ८—८ वार, मार। ९—९ जिस स्थिति में थे उसी स्थिति में युद्धोद्यत हो गये। १० पाव घड़ी (कुछ समय)। ११ सेना का समूह (घेर) १२ एक के बाद एक (लगातार)।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पठांण उजीर खां, गुसांई चिमनगिरजी, जमादार पैंड़ियो, मोहणसिंघ राठोड़, वरखेड़ो का तरवरसिंघजी, बावाजी सुखरामदासजी, नायक लालो, नाई वखतो, गोळी खांसाब बहादुरखांजी के लाग गई। हिमतखां जी हजूर में साथ जाय हाजर हुग्रा। बंदूकां तोपां चाली जिणसूं धुंग्राधोर ब्रद गयो। चन्द्रावत ग्रखैंसिंघजी के हाथ में गोळी लाग गई। श्री माहाराजकंवार साहब दरीखांना की जाजम पै साथ-समेत ऊभा जंणी जागा सूं ग्रागे वह्यौ, बोल दियो—कुछ सुणी कुछ नहीं सुणी ग्रतरे सगतावत बखतावरसिंघजी नु फुरमायो के सायब कहां है, धुंग्राधोर तो हो गयो पण ग्रलबत्ता देखो, देख कर कही कै—गरीबनवाज तोपां पर तो दीखे नहीं; जद फुरमायो के कहां ढूंढांगा। चालो सो सरस का पेड़ तळे पगरखी[2] उतार सीधा तोपां ऊपरै ईश्वररो नाम लेर चलाया; जाय [3]तरवारियां-मिळिया[3]। तोपां ऊपर जवान था सो सारा भाग गया तोपां जाय छोड़ाई, सायब भाग गया ग्रोर फौज चौतरफ भागी। कतरीक फौज भागी सो उतरादी तरफ [4]गोळ वांध्यो[4]। वंदूकांरी मार फेर साथ ऊपर दीनी। ग्रतरे फेर दोड़्या सो फेर जाय [5]लोहां मिळीया[5] फेर फौज भागी। ग्रगाड़ी[6] जाय गोल फेर वंधियो, ग्रंगरेजी फौजरी वाड़-झड़ी[7], कतराक[8] श्री माहाराजकंवार का जवान [9]झड़ पड़िया[9] ने फेर ग्रंगरेजी फौज भागी, फेर ग्रगाड़ी जावतां फकत दिवालसाब[10] ने तो गोळियां का वार करया पण फौज ने पग मांँड्या[11] नहीं। ग्रगाड़ी तो ग्रंगरेजी फौज भागी जावै ने पछाड़ी नंगी तरवारां लियां श्री माहाराजकंवार को साथ। ग्रतरै फौजदार खलीलखांजी मोती गज ऊपर चढ्या ग्राया सो हाथी फौज ऊपर हुल्यो[12] सो फौज तर-वितर हुय गई। डेरां सूं कदम चारसो-पांचसै के ग्रासरे [13]साळ का डंरां की पाळ[13] ऊपर अंगरेजी फौज जाय पहुँची। ग्रतरे श्री माहाराज-कंवार जाय मुकावले पहुँच्या ने ग्रंगरेजी फौज नु सायब ललकारी। जद झट गोळ इकट्ठो बंधतो हुग्रो, हुयो ने गोळीयां की [14]भाड़ झड़ी[14] सो सारा सरदार साथ झड़ पड़्या। श्री माहाराजकंवार के सांमी छाती छररा गोळियां लागी सो [15]गोड़ियां जमी जाय टिकी[15] फेर साहंस कर ऊठिया कदम दस-बाराक ग्रगाड़ी

१ ग्रागे चले। २ पादरक्षिकाएं=जूतियां। ३—३ मुठभेड़ हुई। ४—४ एकत्रित हुई। ५—५ मुठभेड़ हुई। ६ ग्रागे। ७ शस्त्रों का प्रहार किया। ८ कितने ही। ९—९ वीर गति को प्राप्त हुए। १० ग्रंग्रेज ग्रफ़सर का नाम। ११ ठहरी। १२ रोंधता हुग्रा गया। १३ चांवल के खेत। १४ झड़ी लगी। १५—१५ जमीन पर घुटने टिक गये।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

चाल्या परन्तु छर्रा गोळियां छाती में निपट मार की लागी सो लोही की छीछां[1] उड़बा लाग गई सो फेर जाफ[2] आय गई सो गोड़ियां टिक गई। फेर बैठ ने खड़ा हुय गया, परंतु देह धूजरण लाग गई। जद तीजी वार फेर गोडियां टेक विराज गया। मुठ पै जोर देकर तरवार की अरणी जमी ऊपर टेक दीवी ने एक हाथ सूं जमी ऊपर सूं अ्रतका[3] का पिंड बांध ने लोही की धारां छूटै ज्यां सांमी ऊंचो हाथ लेने लोही सूं सींचने जमी ऊपर पिंडांरण धरता जावै, असां पिंडांरण छ:-सातेक जमी ऊपर धरचा। अतरे सूबेदार कनयासिंघ नजदीक आय कर संगीन पाग के ऊपर मारी। संगीन पाग के छुआवतां समा[4] सुवेदार की कमर पै कत्तो वही सो कमर मांहे सूं दोय टूक सूबादार क न्यारा-न्यारा टूट पड़चा—कनयासिंघ के जवांन श्री महाराजकंवार के सामी छाती संगीन मारी सो पार निकळ गई। उतरादे मूंडे वराज्या था सो मूंडो ऊगूरणी तरफ हो गयो रणखेत में पौढ गया हंसराजा[5] चाल तो रयो। श्री माहाराजकंवार चैनसिंहजी के साथ अतरा ठावा[6] सरदार काम आया ज्यां की बिगत:—

गढ गागरोरण का सारा खीचीयां का पाटवी, गागरोरण छूटां पाचै नरसंगढ़ आया सो विजैगढ़ गांगारणी बैठक दरीजी[7] थी। माहाराज श्री दीवांरण खूमारणसिंघजी रावजी रतनसिंघजीहैं दरीजी ज्यां सूं चौथी पीढ़ी रावजी गोपाळसिंघजी था सो काम आया। माहाराजा वखतावरसिंघजी, सोभागसिंघजी यांका भाईवंद ३ तीन सरदार तो यांका घरांरणा का, राजावत ठाकुर सिवनाथसिंधजी झलाय का, माहाराजकंवार श्री चैनसिंघजी का सुसरा, राजावत रुगनाथसिंघजी, खांसाब बहादुरखांजी, हिम्मतखांजी, गौड़ प्रतापसिंघजी, वेळास का माहाराजा ऊमट-खांप[8] सूरतसिघोत बदनसिंघजी, लक्षमरणसिंघजी, ईशरसिंघ जी, सगतावत मौकमसिंघजी, हमीरसिंघजी, स्यांमसिंघजी, नापानेरा का सगतावत वखतावरसिंघजी, सोळंखी उमेदसिंघजी, बरणावद का सोळंकी प्यारसिंघजी, सोनखेड़ा का ऊमट केशरीसिंघजी, कोकासिंघजी, बाळी का उमट मोतीसिंघजी, सरारणा का सींदल गजसिंघजी, दईया गुमानसिंघजी, जमादार सुभांन, बैरो रुसतम, चोपदार देवो, रावजी गोपालसिंघजी के डेरा का दोय धौळा[9],

---

१ धारा। २ मूर्च्छा। ३ मृतिका = मिट्टी। युद्ध में अपने खून से मिट्टी का पिण्ड बना कर रणभूमि को पिण्ड देना प्रशस्त माना गया है। ४ छुआते समय। ५ हंसरूपी जीवात्मा। ६ प्रमुख, नामवर। ७ दी गई। ८ क्षत्रियों की ऊमट शाखा। ९ जाति विशेष।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वांणियौ मयाराम, मसरियो उगेरे जवांन डेडसो दोयसेक तो काम आया। गागोर राधोगढ़ राजा धारूजी खीची के घरांणे का पाटवी[1] ठा० गोपालसिंघजी, राठोड़ जालमसिंहजी उगेरे सरदार चालीसेक घायल हुआ और आसांमी पचास-साठेक, राव दौलतरामजी स्यामलालजी उगेरे भाग निकल्या झगड़ा की सुरुआत में और जागीरदारों के साथ में ठा० वैरीसालजी टोड़ी उगेरे झगड़ा सूं पेहलीज सभी टालो[2] देने बदलने न्यारा हुय गया था सो कुशले रया। खेत[3] सायब जो आयो घायलां नू अस्पताल भेजिया और दुफेर बाद सिंढायच बारठ अमरसिंघजी, बखसी बदनजी, केसराजी उगेरे कैद सूं छोड़्या (इनको रूपराम ने पहले कैद करवा दिया था) फेर किला का फतेहसिंघजी राजगढ का दीवांण शंकरलालजी तथा नरमंगढ़ का जागीरदारां नुं हुकम दियो सो तीजे पहर का दाग-विधि ऊई।

संपूर्णम्।

---

१ पट्टायत, मुख्य उत्तराधिकारी। २ टाल कर। ३ रणक्षेत्र।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

परिशिष्ट (२)

प्रकीर्ण गीत-संग्रह

गीत—सिढायच बुधसिंहजी री १४ वर्ष री उमर में बणायो, परमात्मा रो

गीत छोटो सांणोर (१)

रसणा[1] तूं निसदिन सुमर रामने, कर ढीलो [2]अनुराग कुटम्ब[2] ।
ओछी ऊमर तणे आसते, इतरा केम करे आरम्ब[3] ।।१
काया माया हेक पलक में, विजनस[4] जासी सरव विलाय[5] ।
भजन हरी करतां अत भाया, माठौ[6] किम थावै मन मांय ।।२
थूं मत जांण कुटंब औ थारौ, पाळ मती इतरौ चित-प्रेम ।
चलतां साथे न को चालसी, जासी जीव वटाऊ[7] जेम ।।३
पिता मात बंधव सुत प्रमुदा[8], लोभी गरज तणा सहलेक ।
सांप्रत[9] अंत-वगत रो साथी, अनंत[10] विचार हिया में एक ।।४
जांमण-मरण पाप मिट जावै, तारै जीव हुंत इक तोल ।
रटतां नाम मुखां राघव रो, मूरख दाम न लागे मोल ।।५
राजी हुआं थकां नारायण, देवे मुकत-दान[11] दातार ।
साचो कर जांणे परमेसर, सपना ज्यूं जांणे संसार ।।६
सकव बुधो आखे कत साची, दिल में धारे दीनदयाळ ।
प्रभू-भजन कर रे नित प्रांणी, जाय विलाय पापरा जाळ ।।७

गीत—ईश्वर रो बुधजीरै कयोड़ो

बड़ी सांणोर (२)

पड़ी भीड़[1] जळ डूवतां धीर नह धरी पळ,
ररी करुणा ग्रहण ग्राह रीधी ।
अहिअरी[2] तजे आयो वडी आतुरी,
करीरी स्याह जद हरी कीधी ।।१

(गीत १)—१ जीभ । २-२ कुटुम्ब का प्रेम । ३ प्रपंच । ४ निश्चय । ५ मिट जावेंगे । ६ शिथिल । ७ राहगीर । ८ स्त्री । ९ प्रत्यक्ष । १० ईश्वर । ११ मुक्तिवान ।

(गीत २)—१ विपत्ति । २ गरुड़ ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

हरणाकस्यप दनुज[3] कोपियो पुत्र हणण[4],
[5]फाड़ पाहण[5] असह पाड़ फीको ।
राखीयो वाळ प्रहलाद तारण तरण,
नरहरी चरण रो सरण नीको[6] ।।२
वीर पांचूं[7] वचन हारतां सभा-विच,
हुई तकरीर पांणप हटायो ।
द्रोपदी चीर गह खांचतां दुसासण,
अरज सुणतां समो भीड़[8] आयो ।।३
भरोसो राख दिल तेण भगवंत रो,
जबर बळवंत खळ जेण जीता ।
विमळ जस गाव गुण ग्रंथ निस-दिन बुधा,
संत-जन सहायक [9]कंथ सीता[9] ।।४

गीत—तीजो कुंवर चैनसिंहजी रो ।

दोहा

अरिदळ साभण ऊससे, कर ग्रह तेग कराळ ।
चढै जुधाँ रिण चैंनसी, वज बंवाल विकराळ ।।१

गीत जात वेलियो (३)

कर ग्रह किरमाळ[1] चढै रिण काहुल, वाज त्रंबाळ[2] विषम जिण वार ।
अड़ अंगरेज विधूसण[3] आयो, जग जेठी चैनो जोधार ।।१
पाड़े कितां पछाड़े इळ पर, घेंसा हरां रमाड़े घेर ।
ढूला[4] गजों विहंडण[5] ढूको, सादूळा ज्यूंही समसेर ।।२
गोळा तोप वहै नभ गाजै, कायर-उर थरके कहर ।
भूरो सिंघ अघायो भारथ, भूरो भड़ धुवियो[6] समर ।।३

(गीत २)—३ राक्षस । ४ मारने को । ५-५ पत्थर फाड़कर । ६ उत्तम । ७ पाण्डव । ८ सहायता । ९ सीतापति ।

(गीत ३)—१ तलवार । २ नक्कारा । ३ विध्वंस करने । ४ समूह । ५ बरबाद । ६ उत्तेजित ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ग्रह कै ग्रीध गूंद लेवे गळ, सरतारत[७] चालै सरस।
हिचै जुधों अरणभंग हठाळा, [८]रजवट धर दूजा परस[८] ।।४
धसकै धरण लचक धरणीधर, संगत किलक [९]हंस खिलेरिषीस[९] ।
ओपे कटक रोळतो[१०] ऊमट, सीह-रूप अरियांणों-सीस ।।५
[११]वाजै भीख ससतरा[११] वेखम, वीर विक्राळ ताळ जंग वाग।
तोड़ै घंणां गयंदां तेगां, भाला हथां सुतन सोभाग ।।६
वर अपचर सुरपुर-विच वसियो, दारुण कंपनी-दळां दह।
कंवर कळह अचळा-हर[१२] कटियो, सुज खटियो संसार सह ।।७

गीत– महाराज हणवंतसिहजी रै बाईजी रो विवाह जोधपुर माहाराजा जसवंतसिहजी सूं कियो जिणरो–

गीत सपंखरो (४)

इसो करतां विवाह आब[१] घरांणे चढ़ाय ऊभो,
दांन लखां देर ऊभो कविदां दीवांण।
भांमीकरां[२] अगंजीत कीरती कहाड़ ऊभो,
माठों[३] मांण गाळ ऊभो विजाई खूमांण ।।१
आंटीला[४] देसोत छोलां इन्द्र वाळी देर ऊभो,
लाखां मुखां प्रभा लेर ऊभो गुणां लोड।
आकारीठ[५] सोभाग सुजाव माठी वेर ऊभो,
वाढ खेर ऊभो पातां दळद्रो वितोड़ ।।२
उजाळा वंसरी रीझां ताकवां[६] समाप ऊभो,
गाल ऊभो अदत्तारों सान गाढेंराव[७]।
अनमी ऊमटों-नाथ नीर पखां चाढ ऊभो,
महावीर लाखों दांन दे ऊभो अमाव ।।३

(गीत ३)—७ खून की नदी। ८ क्षात्रधर्म धारण करने में द्वितीय परशुराम (इनके पूर्वज)। ९-९ नारद हँसते हैं। १० विध्वंस करता हुआ। ११-११ शस्त्रों के प्रहार। १२ अचलसिंह का पौत्र।

(गीत ४)—१ शोभा। २ दानी। ३ कृपण। ४ स्वाभिमानी। ५ पराक्रमी। ६ चारणों को। ७ धीर, गंभीर।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

आचार जीतरा खत्री ढोलड़ा वजाय ऊभो,
करै ऊभो अखी[८] वसू ढोलड़ा कंठीर।
अचळेस-हरा रोर[९] रूप मनो तोड़ ऊभो,
हणुतेस झोका-झोका हेळांरा हमीर ।।४

गीत—नरसिंहगढ़ माहाराज हणवन्तसिंहजी रो

गीत सपंखरो (५)

वाचै वाखांण प्रथमी भूप सवाई खूमांण वीर,
जांण भेद कायवां[१] सुदत्तो भोज जेम।
मांणरा द्रुजोध गिरव्वाण[२] पती जेम गुणां,
ओढी चाळ धारियों दीवांण जूंझ एम ।।१
खेळणा अनमी खत्री वाटरा अखेला खेल,
गजों भार ठेळणा[३] संग्राम गाढेराव।
रैणांह का उवेळणा[४] प्रभती वसाउ राजा,
अनोखा विरद्दों लीधां क्रोधंगी अभाव ।।२
वरीसण[५] रैणवां भिड़ जों गजों माठी वार,
काटणा केवियों-दलों[६] [७]सँग्रहे केवांण[७]।
जाळणा[८] सूमड़ां छाती दांनरा करन्न ज्यूंही,
तेज-अंसी[९] झोका झोका उंची तांण ।।३
सुजाव सोभाग वसू सीस वातां रखै साजा,
रूपगां खरीछै जाझा अभीड़ा दातार।
हणुता निवाजां[१०] पातां आजा अचळेस-हरा,
साहियां[११] ऊधरा आछां सिरे दांन सार ।।४

दोहा

डंड अडंडा नित दियण, खंडण खळां खतंग।
मंडण कुळ हणवंतसी, सुभटां लियां सुचंग ।।१

(गीत ४)—८ अमिट कीर्त्ति । ९ दुख, विपत्ति ।

(गीत ५)—१ काव्य, कविता । २ हिमालय । ३ हटाना । ४ चरितार्थ करना । ५ देना । ६ शत्रुओं की फौज । ७-७ तलवार लेकर । ८ जलाना । ९ अग्निवंशी । १० परवरिश, प्रतिपालन करना । ११ लिये हुए ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गीत—नरसिंहगढ महाराजा हणवंतसिंहजी रो वीरता रो

गीत सावझड़ो (६)

मरद भीड़ अंग जरद थट[1], अघट सुभटों मिळे।
चळ कटक खुर वजट, त्रंबट[2] सिर अहि चळे ।।
[3]पाज लोपे संमद हले[3], करवा प्रळे।
कलोधर[4] फरस इम, कठी जुड़सी कळे[5] ।।१
झळळ सावळ भुजां, तड़ळ कळ झबझबै।
पाकड़े वजर सक्र, परां छेदण पबै[6] ।।
धीठ नर अडर वय, आग चसमां[7] धुबै।
फजर वागां नजर इसी, किण सिर फबै ।।२
गुमर घोड़ों भड़ां नांवतां घरहरै।
वीर भरियो गुमर त्रजड़[8] झळ बरवरै ।।
जहर रो पियालो अचळ-हर[9] कुण जरै।
काळ-दळ केवियां क्रोध किण पर करै ।।३
स्याल देखें तरण[10] रथां अछरां खड़ै।
जोध भीना मगज नाग धू नग जड़ै ।।
क्रीत पूगी विहद अडप समदां कड़ै।
ऊमटांनाथ समराथ कैसूं अड़ै ।।४
अकारा चखां झड़ अंगारा आगरा।
गहर घण सिंधुवा[11] हका पड़ रागरा ।।
निपट हल चल धरण मचरका नागरा।
राजरा कठीने धका वज रागरा ।।५
घरर वज[12] टांमकां मांण अरियां घटै।
डरर सुण सींहरी दसूं-दिसरा दटै ।।
रिधू चहुं देसरा सुजस वीदग[13] रटै।
कंवारीघड़ारा[14] वींद झोके कटै ।।६

(गीत ६)—१ समूह। २ नगारा। ३-३ समुद्र मर्यादा छोड़ कर। ४ पुत्र। ५ युद्ध। ६ पर्वत। ७ नेत्रों में। ८ तलवार। ९ अचलसिंहजी का पौत्र। १० सूर्य। ११ सिन्धुराग में वीररस को उत्तेजित करने वाले गीत, बड़ी राग। १२ नगारों की आवाज। १३ कवि। १४ जो सेना हारी हुई न हो।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

करी झंडा फरक थरक उर कायरां।
सुभट साथे लियां भीच[१५] रिण साहरां।।
विलाला वाहरे-वाह खग वाहरा।
दुझल ग्रस मेलसी खळ समर दाहरा।।७
घाल ग्ररियों घरे घाय चक लियां घरण।
ताहरी जोड़ नह हुग्रो सोभाग तरण।।
जगत जाहर करै सुजस कव जरणो-जण।
केहरी[१६] डांखियां(थारी) झाट झेले कवरण।।८
[१७]वीया खूमांरण[१७] तन पूर छिलते वरै।
राग-रंग हवोळा जांगीयां[१८] नद घुरै।।
फतै कर ग्रडर ग्राथांरण दिसने फुरै।
सदन उजवाळ हरणवंत सारां सिरै।।६
भांरण कुळ ताहरी दुग्रा नावे भती।
करण वैरी हरां जुधां ग्ररणभंग जत्ती।।
रजीला[१६] प्रगट मुख विमळ जळहळ रती।
तपो जुग क्रोड़ नरसिंघगढ़ नरपती।।१०

गीत—महाराज हरणवन्तसिंहजी रो

गीत खुड़द सांणोर (७)

फौजों बोह डमर[१] चकारा फाबै, पारंभ अंग ग्ररणभंग प्रबळ।
खड़सी केरण दिसा ग्रस खाता[२], खाग वजासी केरण खळ।।१
रुड़ै त्रमाट[३] हका पड़रांगां, तकै ख्याल[४] रथ रूक तरण।
हाले कठी जोध ग्रचळा-हर, रिमां प्रहाररण खेतरण।।२
घेंसा हरां लड़ड़ंग देखे घरण, प्रसरण[५] मरै माथा पटक।
किरण रुख चालै ग्राज कराळो, कोमंखी वाळो कटक।।३
भुजडंड ग्रणी छड़ालो[६] भळकै, ऊसस डाररण क्रोध अंग।
वेढक ग्राज ग्रनम[७] वीरतरत, जुड़सी सुत सोभाग जंग।।४

(गीत ६)—१५ वीर। १६ सिंह। १७-१७ दूसरा खुमानसिंह। १८ दमामी। १६ वीर, पराक्रमी।

(गीत ७)—१ समूह। २ तेज। ३ नगारे। ४ युद्ध। ५ शत्रु। ६ सैल। ७ जो नत मस्तक न हो।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पग-पग फतै करै खग पांणां, जुडै अथांणां खेत जद।
राजो क्रोड जुगां रंग-रसिया, हणवंत भूरा वाघ हद ।।५

गीत—माहाराज हणवंतसिंहजी रो

गीत सुद्ध सांणोर (८)

वसव रखण जस वात घण आथ समपण कवां,
सुज [1]वरण कीत कुळ[1] तरण साजा।
व्रद धरण भुजांमत महण [2]मोती बिया[2],
रिण वहण सघण अरि-दहण राजा ।।१
ताकवों पाळगर मछ्छर[3] घर अमर तर,
कमर कस समर जीपण[4] कराळा।
अडर भूपत सघर वीरवर अड़ाकी,
[5]विभाडण अरी[5] सोभाग वाळा ।।२
दियण दत कविन्द जसअकल[6] अनमुख दखै,
वडम तन नृपत वीरत वडाळा।
पाळगर कवां-हित वगत माठी प्रबळ,
[7]अरिंद तोड़ण[7] नरिंदकुळ-उजाळा ।।३
चहोड़ण[8] पखों जळ अमळ दूजा अचळ,
जैत जळहळ कमळ विमळ घण जांण।
प्रघळ[9] जसअकळ लेवण मयंद पटाळां,
दळ खळों मुड़ावण झोक[10] दीवांण[11] ।।४
ऊमटांनाथ गुण गाथ परखण अखर,
रखण प्रभुता रिधू प्रथी रिम[12] राह।
नखत[13] हणवंत धिन वैरियां-नवावण,
महाभड़ फतै पावण जंगां मांह ।।५

(गीत ८)—१-१ कुल की कीर्त्ति को रखने वाले। २-२ दूसरा मोतीसिंह। ३ वीर। ४ जीतने में। ५-५ शत्रुओं को मिटाने में। ६ निर्मल यश। ७-७ बड़े-बड़े शत्रुओं के समूह को खंडित करने वाले। ८ चढ़ाना। ९ अधिक। १० प्रशंसनीय। ११ नरसिंहगढ़ के राजा पहले अपने आराध्य देव रघुनाथजी के दीवान कहलाते थे। १२ युद्ध। १३ ओजस्वी।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दोहा*

तोड़ण थट अरियां तणा, मोड़ण अदवां माण ।
सूर छत्री-ध्रम साहियां[1], खग हथ हरा खुमांण ।।

गीत—महाराजा हणवंतसिंहजी नरसिंहगढ़रो

गीत वड़ो सांणोर (९)

अनड उथाळा दियण रिण गजों काळा अंगा, अतुल बळ उजाळा[1] विरद ओपै ।
पाथ असरा नचळ झोक सिंघ पातळा, रिधु[2] हर-अचळ इळ प्रभत ओपै ।।१
अंसपरमेस रवि-वंस आपायता, समर अर-दहण[3] नित पखां सप्रवीत ।
[4]पेख छौलों सुदत अदन उर प्राजळै[4], वीर राखण धरण क्रीत वेभीत[5] ।।२
करण धक चाळ किरमाळ[6] जुध काहुळा, सबळ भड़ आंवळा[7] झूळ सरसैत ।
गळै सूंबां दरप[8] देख चक गमागम, नाम उबरै अवन प्रभा नखतैत ।।३
सुतन सोभाग रा हणु सुदती तसो, उरवरां करण-जस सुरांपत ओड़ ।
पती नरसिंघगढ़ पंवारों क्षत्रपती, आज सिरताज जग-मांझ आरोड़[9] ।।४

सौरठा

घरर जांगियां घाव, कायर उर थरहर करै ।
देवण अरियां दाव, हणवंत अस किण दिस हकै ।।

गीत—महाराज हणवंतसिंघजी रो

गीत वेलियो (१०)

आचां आघाट[1] करण दत ऊमट, प्रभता-माणण सिंघ पटैत ।
छोयण[2] घड़ खंडां-झळ डोहण, आंटीला कळहां[3] अखडैत ।।१

---

* १ लिये हुए ।

(गीत ९)—१ उज्ज्वल । २ उदार । ३ शत्रुओं को जलाने वाला । ४-४ श्रेष्ठ दान की हिलोरें देखकर कृपणों के हृदय जलते हैं । ५ निडर । ६ तलवार । ७ सज्जित । ८ घमण्ड । ९ वीर का विशेषण, पराक्रमी ।

(गीत १०)—१ दान दी जाने वाली भूमि । २ शत्रुओं की फौज । ३ युद्ध में ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

आथ करां समपण अलंबलिया, सूंबों [४]चक गाळण समराथ[४]।
फौजां डमर समर अरि-फाड़ण, [५]परस दुवा रूपी[५] पाराथ ॥२
रजवट वट अणघट घटराजै, साझै दान कवांण सदा।
रिम हर खागां वहण रसीला, जुड़ै अचळ-हर खेत जदा ॥३
सुत सोभाग आघ[६] कर सकव्यां, देवण त्याग अथाग दुवांह।
भिड़ भाराथ अरियणां-भंजण, [७]मनरंजण दुनियों[७] इळ मांह ॥४
हणवंत करण हुमायू-हाथां, संक धरै दसदिस-सीमाड़।
जंगों वीर खगों झळ जीपण, झूठा सीह अरिंदां झाड़ ॥५

गीत—महाराज हणवंतसिहजी रै बाइजी रो विवाह आछो कियो जिणरो।
(ये बाईजी जोधपुर महाराज श्री जसवंतसिंहजी को ब्याही थीं)

गीत (११)

तें कीधो जाग[१] इसो हणवंतसी, कीरत बोल कहाया।
थट रेंणव[२] दस-दिसरा थटिया, (ज्यांने) लाखों दिरब लुटाया ॥१
सोभांणी[३] राचंतां सारै, जस खटियो जग जारों।
आया सुकव सुमौ जस वाका, वित दीधो वड वारों ॥२
ऊमट अचळ-हरा अड़पायत[४], राखण प्रभत अकारां।
जिगन सुणे मिळया कव जाझा, ध्रवै चौळ हिमधारां ॥३
पातां द्रब लाखों लग पाया, पात घणा दत पासी।
आंटीला वातों अखियातों, जाता जुगांन जासी ॥४

गीत—महाराजा हणवंतसिहजीरो

गीत छोटो सांणोर (१२)

मिणधर अजरैल[१] अडर कुळमंडण देवण सदा अडंडां दंड।
सुभड़ो डमर लियों मन सरसै खतम क्रीत सरसै[२] नवखंड ॥१

(गीत १०)—४-४ कंजूसों का मान मिटाने में समर्थ। ५-५ दूसरा फरसराम। ६ आदर, सत्कार। ७-७ प्रजा का मन प्रसन्न करना।

(गीत ११)—१ विवाह-यज्ञ। २ कवियों, चारणों का समूह। ३ सोभागसिंहजी का पुत्र। ४ उदार।

(गीत १२)— १ वीर। २ शोभायमान होती है।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

लहरी समंद भोक लंकाळा धर वाळा दीरघ धैधींग[3] ।
महपत अरी खगां भळ मेटण सुजस करण कळ हणवंतसींघ ।।२
वेलां छौळकरण अतुळी बळ वीरारस भरियो वैभीत[4] ।
सोखण अर समहरों सदोसा जग-जाहर प्रभता इळ-जीत ।।३
भळहळ रती कमळ भालाहळ उजवाळा परियां आथांण ।
अचळ-हरा चळचळ अरियोंणा जोध अनम-वंका घण जांण ।।४
चित्त दध नाहर धर छौगा घासण दोयण थाट घणा ।
इळा अथाग लियां कर ऊमट त्याग खाग सोभाग तणा ।।५

गीत—माहाराज हणवंतसिंहजी नरसिंहगढ़ रो

गीत छोटों सांणोर (१३)

असमर[1] इळ-जीत सकळ अवनाड़ा किरणाला ग्रहियां किरमांळ ।
महिप सुजस संसार मभाळा राखण अकळ सकळ विरदाळ[2] ।।१
वीर अचळ-हर जोस वडाळा समर खळां सोखण भळ सार ।
भड़जो सेल रसीला भूपत सुरपत जिम सुपहों[3] सिंणगार ।।२
आगाहट गज भिड़ज अरोड़ा वीर भलोड़ा कवों-वरीस ।
घट असहां छड़ियाळ घमोड़ा सुत सोभाग विकट अवनीस ।।३
ऊमट राव हणुता आछां भूमंडल जीपण[4] भाराथ ।
तंडण गजों विहंडण तेगां अकळ कवों बगसण नित आथ ।।४
[5]धूजे अर थरहर[5] पड़धाकां लीधों सुभड़ सिराकां लार ।
पाज समंद नरियंद पराका जस वाकां प्रगटै जोधार ।।५

गीत—माहाराजा हणवंतसिंहजी रो

गीत वडो सांणोर (१४)

विरद साहियां[1] भुजांबळ अडग भड़ बाघला, सचाळा वसावण क्रीत सारी ।
अचळ-हर वीत वड क्रीत नित ऊधमण, धरपती आसदी कळाधारी ।।१

(गीत १२)—३ शत्रुओं को शंकित करने वाला । ४ निडर ।

(गीत १३)—१ तलवार । २ विरदों को धारण करने वाले (क्षात्र-धर्मरत)। ३ राजाओं का । ४ जीतने वाला । ५-५ शत्रु कंपायमान होते हैं ।

(गीत १४)—१-१ श्रेष्ठता लिये हुए ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दांन केवाण वीरांण पांणां दिपै, जांण रंग मांण गिरवांण पत जेम ।
करण घमसांण[2] अरियांण-तोड़ण कमळ[3], अांण अप्रमाण आथांण अंब एम ।।२
अदेवां जाह उरदाह देवण अनम, करण गजगाह रिण माह काळा ।
गुण कवां चाह नरनाह लीधां गुमर, तवै दोय राह जब्र वाह ताळा ।।३
उपासक जटाधर पटाळा जोरवर, घटां सुभटां थटां जंगों धासैं ।
मांण हठ मंठा दत छटा देखे अमिट, भूप विकटा अंगों तेज भासैं ।।४
तणै सोभाग पातां कुरंद[4] ताहतो, भमर जय पायतो समर-भांमी[5] ।
भीच[6] हणवंतसी खळां अणभायतो, निडर आपायतो[7] आप नांमी ।।५

गीत—नरसिंहगढ़ माहाराज हणवन्तसिंहजी रो

गीत सुद्ध सांणोर (१५)

विमळ अंगों वडवेस नर समंद ताळा विलंद, [1]मुड़ावण अरियणों खेत मजबूत[1] ।
सुतन सोभागरा वडम[2] तन साहियां,धारियों विरद भुज अघट नर धूत ।।१
पटाळा सिंघ भड़ हठाळा नरपती, अरी-भांजण[3] गढों सुदृढ़ आचों ।
जंगां काळा उवर खळों-साळा[4] जबर, विलाला कठालग कीत वाचों ।।२
सरतपत चीतमस त्रपत अतदत सकत, संहसकर-वंस[5] राजेस साजे ।
दूसरा अचळ तो भोक खग दावरा, भूमंडल अरिंदां-मांण[6] भाजे ।।३
जोध हणवंत मुखक्रांत सोभंत रज[7], सुजळ-कुळ चढ़ावण लियों दत सार ।
वधावण कवंदों कुरब नित महाबळ, ऊमटां-नाथ षटवरण-आधार ।।४

दोहा*

नर नाहर सोभाग नृप, तवां[1] अचळ वड तोल ।
राजै जिण गादी रिधू[2], हणवंत गुणां-हरोळ[3]।।

(गीत १४)—२ युद्ध । ३ मस्तक । ४ दरिद्री । ५ युद्धविशारद । ६ वीर । ७ स्वावलम्बी ।

गीत १५—१-१ रणक्षेत्र में शत्रुओं को धकेलने में प्रबल । २ बड़प्पन । ३ शत्रुओं को मिटाने वाला । ४ दुष्टों को खटकने वाला । ५ वंश-प्रतापी । ६ शत्रुओं का मान । ७ तेज ।

* १ कवि कहता है । २ वीर । ३ गुणों में श्रेष्ठ ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गीत—महाराजा हणवतसिंहजी रो

गीत वडो सांणोर (१६)

कळह-जीत[1] सप्रवीत धिन रीत जांणण सकळ, अडग कुळ-मीत वडचीत आचे ।
[2]कहाड़ण कीत[2] घण वीत छौळां करण, रैण सिर वीर-गुण गीत राचै ।।१
दान क्रन भोज विध उदध मन लियां दृढ़, नीर चढ़ वंस अर गहण गढ़ नांम ।
दांम वरदान सोभाग तण विलाला, सहायक कवियणां ऊमटां स्यांम ।।२
अगंजी[3] धजाबंद जांण कव-बांण अंग, मांन भंग अदेबां[4] तणा मन मांह ।
रिण फतै ऊवारु अरी थाटां रहच, सधर भड़ करण नित सुपातां स्याह ।।३
हाहुलीसमंद[5] हणवंत अचला-हरा[6], धरा गहरा विरद भुजां धारा ।
अनम घण जांण अप्रमांण दूजा अजब, [7]थिरु धर थिय वाखांण थारा[7] ।।४

गीत—माहाराज श्री हणवंतसिंहजी रो

गीत सुद्ध साणोर (१७)

अमर अंस रवि-वंस नरियंद आपायतो[1], इन्द-सम नंद सोभाग इळ-जीत ।
ग्रहण अरियंद सामंद लहरी गहर, विंद कीरत्त कवां समापण वीत[2] ।।१
वदै संसार आचार धर वाहरै, रिमा उर-दाहरै दियण राजेस ।
गजव रिण खाग वळ करण गज-गाहरे[3], दखै दोय राहरै सुजस दस देस ।।२
अथग अणछेह अपहड़ अनम आजरो, प्रसण-दळ[4] साभरो सार पाखे ।
कहर व्रद धरण दुज कवां वडकाजरो, दसूं-दिस राजरो सुजस दाखे ।।३
पंवारण चढावण आव दूजा परस, सरस-जस वात खाटण सकाजा ।
अरी-भांजण[5] थटों भटों चाढे उरस, उमटों राव खग दाव आजा ।।४
पजांवण-दोयणां[6] प्रथी भोका पुणों, कवी धिन-धिन मुखां बांण कहसी ।
वीर हणवंत नृप बार[7] वह जावसी, रिधू जुग चार लग वात रहसी ।।५

(गीत १६)—१ युद्ध विजेता । २-२ कीर्त्तिप्रिय । ३ अजेय । ४ कृपण । ५ गुण के समुद्र । ६ अचलसिंह के पौत्र । ७ पृथ्वी पर आपकी स्थिर प्रसंशा होती है ।

(गीत १७)—१ स्वाभिमानी । २ वित्त, धन । ३ हाथियों को मारने वाला । ४ शत्रु-दल । ५ शत्रुओं को विध्वंस करने वाला । ६ शत्रुओं को जीतने वाला । ७ समय ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गीत—माहाराज श्री हणवंतसिंहजी रो

गीत सपंखरो (१८)

करां ऊधरां उपट्टै मौजां आहंसीक धारू क्रीत,
प्रथी जीत आराण[1] कविदां प्रीतपाल ।
वंसरा आदीत पखां प्रवीत वांनेत वीर,
ऊचैचित्त वित्त व्रवै[2] प्रवाड़ां[3] उजाळ ।।१
जंपे तो प्रभत्ती इळा घणु मोतीसींघ वाळा,
रैंणां-जीत सत्रां गाळ सचाला राजांन ।
जीपणां[4] कराळा जंगा विरद्दाला महाजोध,
दूठ अंगां रैणवां हमेस देण दांन ।।२
धजाबंदी[5] तोडणा अरिंदा खगां महाधीठ,
विरदां अगंजो पांणों साहियां बेवाह ।
नांमी आय वरीसणां[6] ताकवां उमटांनाथ,
इन्द्र-रूपी सुद्रबों अनमी नरांनाह ।।३
सुजाव सोभाग धिनो नृपत्ती पटाला सेर,
कळां चाळा ताळाधारी आंटीळा क्रोधार ।
सम्मरां अपाळा सूर घाव थाला सत्रां-साळा,
आथ जुधां काळो कवों समापै अपार ।।४
हेळारा हंमीर हणुतेस झोका भाला-हथां,
केवियां मनाई संक आरांण सकाज ।
सक्र जेम छौळां देण हनोज पातवां साजा,
[7]ओड़े न को आंन राजा वसू सीस आज[7] ।।५

गीत—माहाराज हणवंतसिहजीरो

गीत वडो सांणोर (१६)

थरर थिये दस देस अर मछर[1] देखे सथर, समर भर कहर भुज लियों साजै ।
धरर त्रंबटां[2] वजै फजर वागां सघण, रूप इण फरस-हर अडर राजै ।।१

(गीत १८)—१ युद्ध । २ देते हैं । ३ विरद । ४ जीतना । ५ राजा । ६ देना ।
७—७ पृथ्वी पर दूसरा राजा बराबरी करनेवाला कोई नहीं ।
(गीत १६)—१ योद्धा । २ नगारा ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

हसत[३] घूमें मसत बाल अस[४] हुंकलै, दसत मांनें अरी देख चक दौर ।
जांगीयां घोर घरण रोर[५] पातां तजै, इम रमें फतै कर सघर चहुं ओर ।।२
भूप खळहळ लंगर लाज तप भळहळे, चळचळै प्रवळ खळ पांण नचळा ।
सजै घोड़ो क्ळळ अकळ भरता धसळ, इसी विध समाजै बिया अचळा ।।३
रहै पासे तुरंग फलंग भरता कुरंग, अभंग अंग सुतन सोभाग वाळा ।
हुवै नित राग-रंग उमंग मन हवोळा, संग सुचंग सुभंग सोहै सचाळा ।।४
आव हणवंत-कुळ चढावण ऊमटां, लियां सुभटों थटां संग लाखां ।
हटाला वीर दत करण आगाहटां[६], सजो अरिदळां[७] उजवाळ साखां ।।५

गीत—महाराज हणवंतसिंहजी रो

गीत छोटो सांणोर (२०)

अणभंग वडचीत धिनो अड़पायत[१], वंस-चढावण नीर विसेस ।
तेज-अंसी तांणण दळ तूभी, आंटीला व्रद लिया असेस ।।१
अरियां तणा थटा अवगाहण[२], उजवाळण परियों अप्रमांण ।
काळा जंग दियण दत क्रोड़ों, [३]खाटण जस[३] दूजा खूमांण ।।२
जग जेठी ऊमट वण जांणग, घेटी चळण धारियां धूत ।
सुत सोभाग अभावण संत्रवां, इळा सुजस खाटण अदभूत ।।३
अदवां[४] दाह दियण अजरायल[५], प्रथवी प्रभत[६] वसायल पूर ।
धरपत्त हणवंत झोक धुरंधर[७], प्रतपो जोस अंगा भरपूर ।।४

गीत—महाराज हणवंतसिंहजी रो

गीत छोटो सांणोर (२१)

वीरत वरियांम झोक भड़ वंका, सुज जीपण[१] संग्राम सुचंग ।
अस गज गांम दियण कवियांणों, इळ अमाप व्रद ळियां अभंग ।।१
गाढापत नरपत्त गाढीला, सुरपत भत[२] प्रथमी साधार ।
अतवर कीरत तोड़ण अरियां, वप सूरत दत धर वडवार ।।२

(गीत १९)—३ हाथी । ४ अश्व, घोड़े । ५ विपत्ति । ६ दान स्वरूप प्रदत्त गांव । ७ शत्रुओं की सेना ।
(गीत २०)—१ वीर । २ बरबाद करने वाला । ३—३ यश को बढ़ावा देने वाला । ४ कृपण । ५ वीर, हठी । ६ शोभा । ७ क्षात्र धर्म की धुर को धारण करने वाला ।
(गीत २१)—१ जीतने वाला । २ भांति, तरह ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मांणण आथ दूसरा मोती, तांणण दान कवांण तस।
³हांणण रोर³ सुकवियां हाथां, जांणण गुण अर लियण जस ।।३
सुतन सोभ खूमांण सवाई, सुजस धरण चाई समराथ।
विरदाई⁴ हणवंत महाबळ, हदकुळ आब चढाई हाथ ।।४

गीत—महा० हणवंतसिहजी रो

गीत सपंखरो (२२)

अखां मांणरा सधीर धिनो अगंजी माहेस अंसीं,
¹पांण रा करन्न¹ पाथ बांणरा महीप।
आंनाड़ा केवांण झलै रिमां थेल आरांण रा,
दाखै गुणों बांण रा वाखांण जंबूदीप ।।१
पटाळा मयंद कवां कुरंद² गाळवै पांणां,
वाळवै उधारा वैर अंगां महावीर।
सत्रों खेत³ राळवै कराळ तेगां ग्रहे सूर,
हणुतेस झोका करां हेळरा हमीर ।।२
मिणधारी खळां मोड़ों अरोड़ा मारका माझी,
कवां वित्त ब्रवै⁴ माठी वारका सकाज।
दैसोत सारका कोट असार का आन दळां,
गुणै क्रीत सचाळका पात इळा माज ।।३
सुजाव सोभाग नाथ ऊमटों आंटीला साजै,
⁵भांजै मांण अरिंदां⁵ तराजै वंस भांण।
समाजै सुभट्टां संग निवाजै कविंदां सदा,
तवै रैणा प्रभती घरांणे ऊंछी तांण ।।४
सत्रां धू खेरियां वाढ़ कईवार महासूर,
मोड़ियां सुपातां हाथां दळद्रां अमाप।
जंगां काळा.अदतारां साला अंगां प्रथी जीप,
जपै ताळा धारी घणा कवी प्रभा जाप ।।५

(गीत २१)—३-३ विपत्ति मिटाने वाला। ४ विरद (श्रेष्ठता) धारण करने वाला।
(गीत २२)—१-१ कर्ण जैसे दानी। २ दरिद्री। ३ युद्ध भूमि। ४ देते हैं। ५-५ शत्रुओं का मान-मर्द्दन करते हैं।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

उवारु कीरतो हका वीर वंका दिलां ओपै,
दाखे सोभा अमाप प्रथमी दसूं-देस ।
गज्जवी उवेड़ जाडा अरी हरां गाढेराव,
उजाळा प्रवाड़ा भुज दूजा अचळेस ।।६

गीत– महाराजा हणवंतसिहजी रो

गीत सपंखरो (२३)

प्रथी साधार विरदां भारा नरिंदां सिंघाळां[1] फाबै,
समंद्रां-प्रमांण रीझां करंदां सधीर ।
अरंदां गिरंदां घाव घालणा मरदां ओप,
कुरंदां[2] विभाड़ै पातां नौ-हत्था कंठीर ।।१
छौळां देण हमेस अदेवां अंगां मांण छूटै,
रूठै दळां केवियां[3] विछूटै तेगां रोड़ ।
ऊठे जंगां सैंसोन सेरसों क्रोधवंत इखां,
आप नांमी भुटै गजां अगंजी अरोड़ ।।२
दूसरा खूमांण गाढ़ औनाड़ साहियां दिलां,
चाढ नीर प्रवाड़ा सुदत्ती गुणां चाव ।
वाढ खगां जमदाढ़ दोयणां[4] विरोळै वीर,
सूर धीर दीपै खत्रीपणै रा सभाव ।।३
नंद सोभाग रा झोका हणुतेस आप नांमी,
भांमी भुजां पैळां दळां भांजै करै भूक ।
चौळ चखो चांमीकरां[5] हीरां रीझ देण चंगी,
रोस अंगी अभंगी साहियां दांन रूक[6] ।।४

गीत—महाराज हणवन्तजी रो

गीत वेलियो (२४)

व्रद कुळ उजवाळ[1] ऊधरा वाहें, पड़दाहों सूंबां अणपार ।
नांम करण ऊपर नरनाहां, अण थाहां गुणधर आधार ।।१

(गीत २३)—१ सिंह । २ दरिद्री । ३ शत्रु । ४ वैरियों को । ५ सुवर्ण । ६ तलवार ।
(गीत २४)—१ प्रकाश ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गाढापत[2] रूपग जांणीगर, मांणीगर रंगां माहाराज।
चाढण वंस श्रावकर चंगा, दांन उमंगां जोमदराज ।।२
काळा जंगां केवियां[3] कटकां, भड़ खागों झटकों भांजेस।
अनमी श्राथ दियण अणथागों, वागों फजर कवां वड़वेस ।।३
सुपह हणुत झोक सोभांणी, वीदग[4] धर वाचै वाखांण।
ए दोय वात घरांणे श्राछी, खागत्याग[5] दूजा खूमांण ।।४

गीत—महाराज हणवन्तजी रो

गीत वेळियो (२५)

परगट निज भाल तेज नर पूरा, [1]चूरा अर[1] तेगों मुंह चाढ़।
भाला हथां केहरी भूरा, ग्रहियां अग [2]रजवट रा गाढ[2] ।।१
जग पाळग भड़ मिण जोधारां, अर सारां तोड़ण अप्रमांण।।
धूना विरद[3] लियां धेंधीगर[4], प्रभता धर धारण आपांण ।।२
चाक गुणों अणभंग नित चकिया, अदवांरा[5] थकिया मन अंग।
आठू-पहर सुजस धर अखिया, रोर[6] कवां मुकीया इकरंग ।।३
पालण कुरंद कवां अणपारां, सालण खळां सुतन सोभाग।
उथालण जंगां गज अणचळ, भल चालण कुळ-ध्रम वडभाग ।।४
भांजण मद सूंबां भिन-भिनरा, सहियां करदकरां समसेर।
तोर दोर हणवंत अत तनरा, गाढापत [7]मनरा गिरमेर[7] ।।५

भोपाल रियासत में सोलंकियों का एक मेंगलगढ़ ठिकाना है, वहाँ के ठा० शत्रुशालसिंहजी ने वि० सं० १९५३ में एक बहुत बड़े डाकुओं का गिरोह जो अंग्रेज गह्वर्नमेंट के छावड इलाके में डकेती करके आये थे और रास्ते में मेंगलगढ़ के पहाड़ों में पार्वती नदी पर ठहरे थे—जब शत्रुशालसिंहजी को मालूम हुआ तो अपने सुभटों के साथ गये। कुछ वीर ठा० साहब की तरफ के वीर-गति को प्राप्त हुए और ठा० साहब घायल हुए। उधर डाकुओं का मुखिया मय साथी डाकूओं के मारा गया और डकेती का माल छुड़ा लिया गया—जिस

(गीत २४)—२ गंभीर, धीर। ३ शत्रुओं। ४ कवि, चारण। ५ वीरता, उदारता।

(गीत २५)—१-१ शत्रुओं को चूर्णित करने वाला। २-२ क्षात्रधर्म में प्रबल। ३ श्रेष्ठता। ४ प्रभावशाली। ५ कजूस। ६ दुख, विपत्ति। ७-७ सुमेरु गिरि जैसे ऊंचे चित्त वाले।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पर भारत सरकार की तरफ से ठा० शत्रुशालसिंहजी को राव बहादुर का खिताब व खिल्लत मिली। भोपाल रियासत में यह सबसे मुख्य ठिकाणा है। इस पर यह गीत सिंढायच बुधसिंहजी ने कहा—

गीत छोटो सांणोर (२६)

छावड़ ने लूट डकेती छाया, मेंगलगढ़ आया निज मेर।
आडां फिरिया राड़ अघाया, सोळंकी लोधां समसेर ।।१
भारत करण परसपर भिड़िया, अड़िया भुज ज्यांरा असमांण।
खळ छल छोड़ खेत तज खड़िया, पड़िया धरण विछूटा प्रांण ।।२
केहर[1] लारे लगे कुंजरों, सत्रुसल लीना लार सही।
दांतां नखां ग्रास जिम डसणों, वैरियां ऊपर खाग वुही ।।३
लेले ओट लड़णनु लागा, परमोखी देखी हित प्रांण।
तूटा ज्यां ऊपर खिताळां, काढ-काढ खापां केवांण ।।४
गोळी तीर गेंग गणणांया, धुआधारां ज्वाळ धुकी।
चोर लाग चोटां चळ-चळिया, मिळिया सांमा आय मुखी ।।५
रवि तिण वार तमासो रीधो[2] देखण वीरां खेल दिसी।
पराघाती रो सोक पखारां, तरवारांरी धार तिसी ।।६
धुके कितां धड़ लाग घमोका, हाकां फाटै बाक हिया।
काढ़-काढ़ किरमाळ[3] कजाकां लोह सजाकां मार लिया ।।७

गीत—महाराज सरप्रतापसिंहजी रो चीण रो पैलाँ युद्ध कर फतै करी जिण रो—

गीत सुद्ध सांणोर (२७)

करी मूंम कावल कितों हेमगिर किनारे, धरा पूरब दिखण चढी धाड़ा।
वारनिध लोप पेकन[1] अजव विलायत, मुहिम चढिया गजव मारवाड़ा ।।१
सांमठा सोहड़ां[2] हले चढ़ साकुंरा, झाल खग त्रभागा[3] आग झड़ता।
चीणरा देस ऊपर दलों चलाया, भुजा व्रहमंड रै माग[4] भिड़ता ।।२
करे घण थाट ले साथ सुभटो कटों, राह खत्रवाट री अंग रोधी।
दाट अंगरेज रा दोयणां दियणनु, लाठ रे हुकम दध-वाट लीधी ।।३

(गीत २६)—१ सिंह। २ रुका। ३ तलवार।

(गीत २७)—१ पेकिंग, चीन की राजधानी। २ वीर। ३ त्रिशूल रूपी माला। ४ मार्ग।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दौड़ ठाकर गया और देखा-दिखी, हिये धेका धकी नमाई हौड़।
बोधमतिया[५] मुलक छांड विमुहा[६] वहै, ठौड़ तिण रहै [७]पग मांड[७] राठोड़ ।।४
भरोसो भडां परताप रै भाग रो, डरै नृप [८]दुआं ज्यूं[८] नहीं डरसी।
फरकता झडाला संग फिरंगांण रै, फतै करसी जदे पीठ फिरसी ।।५

गीत—सलूंमर-रावजी श्री केसरसिंहजी रो (जो नरसिंहगढ़ के महाराज हनुवन्तसिंहजी की छोटी पुत्री व्याहे थे)

गीत वेळियो (२८)

दीपक-कुळ[१] सबळ झोक वरदाई, विमळ चित्त वडहथ[२] इण वार।
माठा नरां साल मिणधारी, दिल अरणव[३] झोका दातार ।।१
गेंवर द्रब हेंवर गढ़वाड़ा, दत पातां देवण निस-दीह।
पदम-सुतन[४] खटव्रन रा पाळग, सुपहां-मुगट[५] पटाळा सीह ।।२
रैणों सिरै समापण रीझां, लाखों मुखा सुजस लेवाळ।
[६]करगां भोज करन ज्यूं केहर[६], रजधारी[७] पातां रिछपाळ[८] ।।३
माठी समै ऊधमण[९] मांजों, भालम लियों अभनमा भांन।
खाटी प्रभत पढचौ खूमांण, वीरत पाटी तणौं विधान ।।४

नरसिंहगढ़ रियासत के प्रथम श्रेणी के ठिकाणा रोंसला के जागीरदार ठा० वनैसिंहजी के सवारी की एक घोड़ी बहुत अच्छी थी, उसकी बुधजी ने प्रशंसा की—जिस पर वह घोड़ी उदारमना ठा० ने बुधसिंहजी को प्रदान की, और सविनय कहलवाया कि यह घोड़ी आपके भेंट है। जिसका गीत इस प्रकार है—

गीत सपंखरो (२९)

[१]चौड़ी उराटां बाजोट[१] चंगी वाटां कुरंगा ज्यूं वहै,
[२]बंटा नटां जेम[२] लेतो उडांणां विहंग।

(गीत २७)—५ बौद्धमत वाले, चीनी। ६ विरुद्ध। ७-७ पैर जमाकर। ८-८ दूसरों की तरह।

(गीत २८)—१ वंश के प्रकाश। २ दानी। ३ समुद्र। ४ पद्मसिंहजी के पुत्र। ५ राजाओं के मुकुट। ६-६ दान देने में केशरीसिंहजी, कर्ण एवं भोज जैसे हाथों वाले। ७ रजोगुणी। ८ रक्षा करने वाले। ९ उमंग से दान देना।

(गीत २९)—१-१ चौड़ी छाती बाजोट जैसी। २-२ नट के छोकरे जैसे (उच्छृंखल)।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

काच सीसो सरीसी पसम्मां जाडै कंध वाळी,
पद्मेस[3] तणौ इसी वरीसी पमंग ।।१
नळी जंत्र ढळी थंभ प्रसाद चंद्रसी नखां[4],
ताळी छेक जावै न को अताली तरास ।
जांणी दसूं-दिसां क्रीत न जावै जावतां जुगां,
हाथां जसूतेस-हरै[5] सामापी व्रहास ।।२
चागरै इसारों लागां चक्री चक्री चाल वाळी,
[6]सिरै बाल वाळी[6] धरै पेंतरा संभाळ ।
राखी रीत ऊमटां घरांणे वाली क्रीत रीधां,
गुणां साटे दीधी पीळी[7] [8]विजाई गोपाळ[8]।।३
करां रांसला रो धणी सदा ऊंच कारणा रो,
[9]धारणा रो दांनी जेहो भारांणी धेधींग[9] ।
मौजमें वछेरी देतां अणायो सुपातां मोद,
साचो हेत हियारो जणायो वनेसींग ।।४

गीत—महाराज कुमार श्री चैनसिहजी जो वि० सं० १८८१ में अंग्रेजों से, मुकाम सीहोर में युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए जिसका—

गीत सपंखरो (३०)

चले आवतां फिरंगी फौजां ऊससे[1] क्रोधार चैनों,
चोळ[2] चखी सारधारां[3] ढाहणा[4] चंचाळ ।
[5]ऊवकै आरावां आग[5] [6]हूबकै जोधारे[6] अंगां,
(जठै)ताता जंगां पमंगां[7] मेलिया निराताळ[8]।।१
वगे वीर हाक जगे[9] ज्वाळ तोपां जेण वार,
ससत्रां संभाळ ठाळ करे महासूर ।

(गीत २६)—३ पद्मसिहजी । ४ सूंभ (पैर) । ५ जसवन्तसिंह के पौत्र ने । ६-६ अच्छी नस्ल की । ७ पीले रंग वाली घोड़ी । ८-८ गोपालसिंहजी के वंशज । ९-९ दान देने में भारमल के पुत्र जैसा ।

(गीत ३०)—१ उत्तेजित हुआ । २ लाल । ३ तलवारों की धार से । ४ विध्वंस करना । ५-५ छोटी तोपें आग उगलती हैं । ६-६ वीरों में वीररस का संचार होता है । ७ घोड़े । ८ वेगपूर्वक । ९ जागृत होती है ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कोमंखी[१०] कराळ जंगां मिले घड़ी प्रळे-काळ,
　　किरमाळों[११] निराताळ वाजिया करूर ।।२
उभै ओड़ा[१२] घाव वहै हकै चमूं[१३] उभै ओड़ा,
　　घमोडां साबळां[१४] घोड़ां भड़ां दाव घाव ।
झटक्का हजारों वहै सरीरों बटक्का झड़ै,
　　रटक्का कटक्कां रिमां करै गाढेराव ।।३
ईखे भांण आरांण तमासो तुरीतांण ऊभो,
　　वारंगा[१५] विमांणां मिले मगां व्योम ।
फीलो[१६] झंडा फरक्कै भभक्कै घाव तनां फावै,
　　[१७]धधक्कै लोयणां क्रोध[१७] जुड़ै रूपीधोम ।।४
कटै गजां असुंडां[१८] प्रचंडां झड़ै तुंडा केही,
　　उभै फौजां थंडा[१९] वीर घुमंडा आपांण ।
लेवे मुंडा माहेस जोगणी झुंडा छाक[२०] लेवे,
　　जुड़ै आडाखंडा जोम छाकीया जोधार ।।५
मुके सेल धुकेधरा दड़कै घड़ां सूं माथा,
　　मुड़क्कै[२१] कायरां सूरां बकै मार-मार ।
फड़क्कै फींफरा रैणां धड़क्कै केवियां फौजां,
　　धकै चाढ भांजै उरां घणा सार-धार ।।६
रूठो दळां केवियों क छूटो सांकलां सूं सरे,
　　उलक्कापात रौ तारौ तूटो आसमांण ।
जो सेल कंवारीघड़ा छैल खेल माते जूटो,
　　खंडाळों निराळों एम दूसरो खूमांण[२२] ।।७
वेढो जुधां अरिदां ठालवै खेत वेढीगारो[२३],
　　चालवै ससत्रां पंजां बरूथां संचाळ ।
लूथ बथां अंग्रेज सूं सूर काळ-रूपो लड़ै,
　　उनागांखड़गां[२४] सीह विरद्दां उजाळ ।।८

(गीत ३०)—१० क्रोधित । ११ तलवारें । १२ बराबरी से । १३ सेना । १४ लोहे की सांग (छड़) । १५ अप्सराएं । १६ हाथी । १७-१७ नेत्रों से क्रोध की ज्वालाएं प्रज्वलित होती हैं । १८ हाथी की सूंड का ऊपरी भाग । १९ समूह । २० रक्तपान । २१ पीछे हटते हैं । २२ द्वितीय खुमानसिंह (जो इनके पूर्वज थे) । २३ युद्धप्रिय । २४ नग्न तलवारें लिये हुए ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

केता धजां[२५] पछाड़े रचाड़े खेत नरां केतां,
अखाड़ मचाड़ै वीर विहंडे उदार।
नीवड़ै झटक्कां झड़े लड़े तीन जांम त्रभे[२६]
[२७]सुजाव सोभाग[२७] पडे कंवरा श्रंगार ।।९
अच्छरां वधावै राग-रंगां गावै मोद अंगां,
अढंगा उवारे हका प्रभत्ती असेस।
पांचसै सुभट्टों साथ करे इन्द्रलोक पूगो,
[२८]ऊमटां चढ़ाव आब बियो अचळेस[२८] ।।१०

गीत दूजो—कंवर चैर्नसिहजी रे युद्ध रो

गीत पालवेणी (३१)

चख वाघै साज सेन चतुरंगी, [१]सांमण कांठळ[१] जेम सुचंगी।
जळहळ[२] सेळ घरहरे जंगी, फजर वगां आवियो फिरंगी ।।१
आगे चैन पाथ ज्यूं अणचळ[३], विढण[४] काज ऊठै दाखे वळ।
वग असमर[५] समहर विच वळवळ, दुसह जोस आहुड़ै उभै दळ ।।२
चप कायर थरहर जिण वारां, पळचर गहर वाज पंखारां।
अखर अछर[६] अंवर अणपारां, करकर वळ भड़ लड़ै करारां ।।३
धमचक मचक धरा हुय धड़धड़, हंसे मुनिंद्र देख जुध हड़हड़।
फावै धरण फींफरा फड़हड़, झटकों सीस पड़ै धड़ झड़झड़ ।।४
उड वरंग तूट रुंकां[७] अत, मुरड़ै धड़ा वीर दुरधों मत।
भंवर अणी [८]जमराज तणी भत[८], वाहै खाग जठै वर वीरत ।।५
वरै वरण जुंझार वडाळा, खळहळ रुधिर इळा पर खाळा।
क्रोध चखां भटकै कळ चाळा, कंवर तणा भड़ लड़ै कराळा ।।६
लाखों फिरंग तोड़ घण लाडो, गुमर[९] धार रुपियो गुण गाढो।
जुध सीहोर खेत कर जाडो, अणखीलो[१०] पडियो नर आडो ।।७
सुतन सोभ कंवरों मिणसारों, परम अंस उजवाळ पवारों।
[११]धड़ चेरितां कितां खग धारों[११], जडलग[१२] हथ पौढे रिण जारों ।।८

(गीत ३०)—२५ घोड़े। २६ निर्भय। २७–२७ सोमार्गसिंह जी के पुत्र। २८–२८ द्वितीय अचलसिंह, ऊमट-वंश की शोभा बढ़ाने वाले।
(गीत ३१)—१–१ श्रावण की घटा। २ चमकता हुआ। ३ स्थिर। ४ युद्ध। ५ तलवार। ६ अप्सराओं का समूह। ७ तलवारों से। ८–८ यमराज की भांति। ९ हठ करके। १० घायल। ११–११ तलवारों की धारों से टुकड़े-टुकड़े कर दिये। १२ तलवार।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

फौजां लख पाछो नह फिरियो, गजबी वीर जंगां गेहरियो ।
विमळ उछाह ग्रपछरां वरियो, इळ विच नाम ग्रमर ऊबरियो ।।६

गीत—चंडावल ठा० श्री सगतसिंहजी रो सिंढायच बुधजी रो कयोड़ो

गीत सोहणो (३२)

कमधज सगतेस करंतां क्याबर[१], कंवर मांड है हरक कर ।
सोभ कना उपकंठ मानसर, पात मुराळ उजाळ पर ।।१
चित्त उजाळ दीध वित छौलां, भुयण उधारण वात भली ।
खित जाहर पंगी[२] खैड़ेचा, हिमगिर हुंता गंग हली ।।२
धणी चंडावल विया गोरधन, करवा दत नह कीध कुमी ।
महि ऊपर प्रभता[३] राव मारू, सरदचंद चाँदणी तणी ।।३
ग्रादू-रीत सभाव ऊजळा सोह, चढावण प्रसिध सुंणी ।
इळ-कीरत ऊघड़ी ग्रमोलक, कनक[४] जड़ी जिम हीर-कणी ।।४

गीत—रावत श्री बळबहादुरसिंहजी रियासत राजगढ़ का, बुधसिंहजी रो कयोड़ो।

गीत छोटा सांणोर (३३)

ग्रोपम की कहुं ताहरी ऊदा, धजबंधी[१] बैठौ छत्र धार ।
सिंघासण बीरत दरसाई, सरसाई[२] कीरत संसार ।।१
[३]तण वखतेस-वंस[३] निज तारण, वसुधा सीस उवारण बोल[४] ।
मोहण नवळ नखत मुरजादा[५], तें जादा कीधी नभ तोल ।।२
माळवपत ऊमट-कुळ-मंडण[६], चढ़ी प्रभा ढुळतां चमर ।
ग्रादूरीत[७] घरांणे वाळी, उजवाळी बीजा ग्रमर ।।३
बळीबहाद्र[८] धिनो ग्रतुळीबळ, जसमुख दाखै[९] जणो-जणो ।
जग सारै कीधो धर जाहर, पाट विराज सपूतपणो ।।४

(गीत ३२)—१ विवाह । २ कीर्त्ति ३ शोभा । ४ स्वर्ण में ।

(गीत ३३)—१ राजा । २ शोभायमान हुई । ३–३ वखतसिंह के वंशज । ४ बात-रखना । ५ मर्यादा । ६ ऊमट-कुल की शोभा बढ़ाने वाले । ७ परम्परागत रीति । ८ बल बहादुरसिंह । ९ उच्चारण करते हैं ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गीत—सिकारपुरै ठा० वभूतसिहजी रो मरसियो

गीत (३४)

तूटा नह फूल वाढ़ तरवारां सात्रव[1] खेत न सूता।
मनड़ो नह मांने राव मारू [2]वीसम गयो[५] वभूता ॥१
गोळी बांण नही गड़वड़िया तड़फड़िया नह ताई।
मोच अभंग भीच[3] मुरधररा अणचीती किम आई ॥२
हेंवर[4] वेढन को हड़वड़िया अरी न भिड़िया आडा।
पोहव कवन्ध सिकारपुरा रा जोखमियो[5] किम जाड़ा ॥३
पड़िया चळ दळ[6] नहीं पागती जेर करण खल जांने।
करणो जिकूं विधाता कीधी (पण) मरणो हियो न मांने ॥४

गीत—राजा अचळसिहजी नरसंगढ़ रो, सिढायच भाउजीरो कयोड़ो (बुधसिहजी के पितामह)

गीत (३५)

अवतारो इन्द्र माळवै अचळो, वीत[1] समापण कीत[2] वरै।
लाखां कुरव कोड़रा लेखा, कौडी हुंत लांखरा करै ॥१
गाढेराव[3] तपै नरसिंहगढ़, आसत इती धारियां आज।
गिर जितरा राई कर गेरे, राई हुंत करै गिरराज[4] ॥२
नाम[5] प्रमांण करै जग-नांमा, नंद खूमा दातार निगेम।
सुद्रस दीये निहारे सांमा, जैता थये सदामा जेम ॥३
विक्रम भोज सवर इण वारे, धारे अंजस उजीणी धार।
परसा-हरो हुमांयू पारस, सुरतरु अचळो प्रथी साधार ॥४

गीत दूजो वडो सांणोर (३६)

कंदळ विभाड़ण क्रोधरा पाथ कर, अकळ खग त्याग विरदां उजाळा।
सकळ कुळ छळां हिंदवांण रा स्याय कर, अचळ भुजबळ प्रबळ तूझ वाळा ॥१

(गीत ३४)—१ शत्रु। २ मृत्यु को प्राप्त हुए। ३ वीर। ४ घोड़े। ५ अवसान, मृत्यु। ६ सेना।
(गीत ३५)—१ द्रव्य। २ कीर्त्ति के लिये। ३ गंभीर। ४ हिमालय। ५ अचल।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अधारण अरस खटतीस[1] सु ऊधरा, चुरसधक पंकरा धाव चावां।
सुरस गजघड़ा[2] काढण धजर सूसरा, दूसरा फरस तस सिरै दावा ।।२
उजागर पाट खत्रवाट रा आभरण, नाट भगवाट रा धारियां नेम।
ऊगतां भांण दीवांण जग ऊपरा, ताहरा पांण खूमाण रा तेम ।।३
बरंग अरि करण उचरंग धरै बहादुर, तरंग गत तणा परवाह तेहा।
आस्तिक छौल दत दियण आगाहटां, ऊमटांनाथ रा हाथ ऐहा ।।४

गीत तीजो—मोतीसिंहजी नरसंगढ़-महाराज रो, भाऊजी रो कयोड़ो

गीत (३७)

[1]धड़चण अरि थाट[1] खुरां खग धारा, कमलागढ़ दावण कसवार।
पुड़बै हु न धरै चित पाछी, असकाछी ऊमट असवार ।।१
धाव[2] विहंग जिम अभंग धारणा, रिमां डंड देणा फिरै वार।
रिण जंग फतै उतंग हुय रूकां[3], पमंग[4] निहंग जा चढै पंवार ।।२
ओपे पाव धाव रिण अणचळ, गढां पाड़ रिण पाड़ गयंद।
अरिदळ वहण हुयण की इचरज, मोरखंध हय चढै मयंद ।।३
तिण दळ साह गढां जड़ तोड़ा, नरवहिया जोड़ा ध्रम नूत।
मोती तूज तणा खळ मोड़ा, प्रथमी सिर घोड़ा रजपूत ।।४

गीत—दीवांण (राजा) मोतीसिंहजी रो, भाऊजी रो कयोड़ो

गीत (३८)

सभै काछियों[1] ऊडणां भड़ां कजांकां भीड़ियों,
सिले[2] धमाधमें मेदनी ओदका पड़ै धाम।
गाजतां त्रंबाटों[3] डाकां पातसाहां सोभाग में,
रमैं सूरां नाहरां सिकारां मोतीराम ।।१
गाहटै है-खुरां धरां नगारां बाजतां गिरां,
भगारां[4] ग्रासियां धरा पड़ै ऊगै भांण।
घाट आसुरांणे[5] तणा खाग भाटों वाह ठेले,
डाढ़ाळों लंकाळों[6] खेळे आखेटां दीवांण ।।२

(गीत ३६)—१ छत्तीस। २ समूह।
(गीत ३७)—१-१ शत्रुओं के समूह को काटने वाले। २ दौड़। ३ तलवारें। ४ घोड़ा।
(गीत ३८)—१ घोड़े। २ बखतर। ३ नगारा। ४ भगदड़। ५ मुसलमान। ६ सिंह।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

केकांण पाखरों कसै केवांणां[7] धारियां करां,
सूरां मार लीजिये लीजिये मार सीह।
भ ड़ों मेळिया थाटां बंबाळां[8] धुरंतो भूरो[9],
अडाड़ों सभाड़ों रमें दलारो[10] अबीह ।।३
मारे मांण पातसाहां केकांण वरीसे मौजां,
प्रतपै ऊमटांनाथ [11]फरसरै पाट[11]।
थाहां सूरां औदकै औदका पड़ै खळां-थाट,
नाहरां औदका[12] पड़ै थाहरां निराट ।।४

गीत मरसियो—प्राडल्ये ठा० कोकसिंहजी रो, बुधसिंहजी कह्यो

गीत (३६)

जग में कर नाम सरग[1] दिस जातां, दुवा जैतसी खांच दिल।
इण तन हूंता कियो आंतरो[2], पड़ै पांतरो नहीं पळ ।।१
सुतन गुमांन सुजस कर संगी, अमरापुर[3] कीनो आवाद।
समता मन ममता न समावै, आवै घड़ी-घड़ी में याद ।।२
गजन-हरा[4] थारो गरवापण, दीठो जिसो न दीठो दीठ।
चित हित मत मुरजाद चलण में, पाछी फेर मिलणने पीठ ।।३
धर विचहरतां तथा और घर, जावन देस-विदेस जदें।
सोक[5] दियो सो हियो सांसवै, कोकसींग भूलै न कदे ।।४

गीत—महाराज हणुतसिंहजी घोड़ी बख्शी जिणरो, बुधजी रो कयोड़ो

गीत (४०)

थोका अरिदां[1] पाल री काठी वाड़री नीपनी थेट,
विसाल री उरां तुच्छी[2] पड़च्छी वखांण।
सुचाल चालरी [3]हिय दरार घालरी सूबां[3],
कविंदां समापी सिरेवालरी[4] केकांण ।।१

(गीत ३८)—७ तलवार। ८ नगारा। ६ वीर। १० दलेलसिंह का। ११-११ परसरामजी की राजगद्दी पर।

(गीत ३६)—१स्वर्ग। २ अन्तर, दूरी, वियोग। ३ स्वर्ग। ४ गजसिंह का पौत्र। ५ दुःख।

(गीत ४०)—१ शत्रुओं। २ छोटी। ३-३ कृपणों के हृदय को विदीर्ण करने वाली। ४ श्रेष्ठ नस्ल की।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

परी-सी निरंतां[५] सोहै वाटका उलटा पौड़ां,
हावां-भावां दपट्टा झपट्टां देण हार।
सुभावां सुचंगा पंगी[६] धिगारां लगावा सारु,
दूथियां[७] पमंगी[८] एही वरीसी दातार ।।२
हलंबी काच-सी अंगा पसमा [९]समीर हाळी[९],
अंजळी पियांण नीर वेवरी अमाव।
अमीर सोभाग वाळे कायबां[१०] वासते अखां,
हाथां हणुतेस वीर उबारी[११] है राव ।।३
निरक्खे वखांणी दसू-देसरा दूसरां नरां,
जांणी सिंधां-तटां[१२] तांई प्रभत्ती जरुर।
[१३]हांणी रोर पातवां[१३] ऊमटांनाथ मोती-हरं,
समापी वडाळी काठीयांणी[१४] महासूर ।।४
अदत्तारां[१५] मांण मोड़ी निखोड़ी सुभावां ओपै,
पातां-रोर तोड़ी अंगां भळोड़ी अपार।
घणा झोका झोका दाखां वाहरे पीलोड़ी घोड़ी,
हाथां झोका झोका एही घोड़ी देण हार ।।५

छप्पय—श्री महादेवरां सिंढ़ायच बुधजी रा कयोड़ा

छप्पय

संकर गुरु सहज में श्रवण शिव नांम सुणायो।
जग झूठो जंजाळ दिव्य नयणों दरसायो ।।
त्याग ग्रहण दुज तणो विगत सूं ग्यांन वतायो।
मतमतांत्र मरजाद वाद अविवेक वहायो ।।
हुं महिमा कर कितियक कहुं हृदय मोह-माया हरी।
अघ हरण मंत्र उपदेस उर करुणानिध किरपा करी ।।१

पातक दहण प्रचंड भीर संतां भव-भंजण।
अलख विस्वपत ईस-रमण गिरजा मनरंजण ।।

(गीत ४०)—५ नृत्य करने में। ६ कीर्त्ति। ७ चारणों को। ८ घोड़ी। ९-९ पवन जैसी वेग वाली। १० कवियों। ११ प्रदान की। १२ समुद्र के किनारे। १३-१३ चारणों के दुख को मिटाने वाली। १४ काठियावाड़ देश की। १५ कंजूसों का।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अंग-भसम अवधरण[1] तरण-तारण जग-त्राता।
धिन जोगी अवधूत सेव कीधां सुखदाता ।।
नर नाग देव आगम निगम गहर मुनी जस गाइये।
हर सदा तूझ आरत हरण बुधा न चित बिसराइये ।।२

दै तूं संपत देव विपत पण तूझ विडारै।
तूं सुख दियै तमाम निपट दुख तुंहिज निवारै ।।
वड़ा पुन्न तूं ग्रवै[2] पाप मोटा परजाळै।
मुगती दियै मांनवां गहर भव-बंधन गाळै ।।
सिमरियां संभू असरण-सरण मिटै नरां आखर मठा।
तूंहिज तूं नाथ तारण-तरण जगकारण धारण जटा ।।३

अंग-वभूत अवधूत सिवा अरधंग सु राजै।
मुख प्रसन्न तन विमळ विहद कर डमरू विराजै ।।
हार व्याल हिंडुलै गरल कंठ रजे गह्वर।
भाल-चंद्र भळहळे सीस खळहळै सुरसुर[3] ।।
चख अरुण करण-कुडल छजै उतमंग मुगट अनूपरा।
पिनाकी जटाधारी परम(हूं) वारी इण छिब ऊपरा ।।४

दिख प्रजेस जिग दलण[4] महा त्रिपुरासुर मारण।
पियण हळाहळ प्रथक अखिल त्रहुंलोक उबारण ।।
जाळंधर जोखमण[5] इन्द्र मन गरब-उतारण।
मदन-दहन खिण मात धिनो चरितों जटधारण ।।
किवलास गिरंद वासो करण जग उदार जस जगिये।
समरथ न को संकर सरिस (बुधा) इसो धणी ओलगिये[6] ।।५

सिवसंकर सिमरियां सकळ संपत सरसावै।
सिवसंकर सिमरियां निकट त्रयताप न आवै ।।
सिवसंकर सिमरियां परम आणंद प्रकासै।
सिवसंकर सिमरियां विकट अघ ओघ विणासै ।।

---

१ धारण करने वाले २ देते हैं। ३ गङ्गा। ४ नाश करनेवाले। ५ मारने वाले। ६ पहिचानिये।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अजोनी नाथ तारण-तरण मेटण दुख जामण-मरण ।
विच हृदय धार सिमरे बुधा सिवसंकर असरण-सरण ।।६

भव व्यापक भगवान ध्यांन-धुन धरण जोग-धुन ।
करण ज्ञान परकास महा अघ-हरण वंद मुन ।।
तेज तत्व तम त्रसण वसण किवलास गवरवर ।
रसण सुजस जग रटण दुसह दुख ग्रसण दिगंबर ।।
निध दियण दास साहिक निकट सुरसुरि ध्रुव-धारण सुधा ।
गहि सरण मिटै आवागमण विमळ चरण श्रीहर बुधा ।।७

इच्छा हूंत उदार प्रथम जग आप उपायो ।
तिमर-हरण तत तेज नेत्र रवि-रूप निपायो ।।
जीव अज्ञानी जिको कारणै ज्ञान करी कथ ।
सिव-सक्ती-संवाद सुणत आणंद होय श्रुत ।।
जग-जणणि उमा अघ जारिणी जगत-पिता जग जांणिये ।
करुणानिधान कल्यांण कृत विसद[1] सुजस वाखांणिये ।।८

कहत वेद उंकार एक निज रूप अवचल ।
सासत्र-मत[2] अनुसार वतावत विगत सु विमल ।।
आगम सुजस उदार विसद अंत प्रसिद्ध वतावै ।
सारद नारद सेस पढत व्रद पार न पावै ।।
कव बुधो क्रीत कितियक कहै तिमिर मिटावण ताह रो ।
कहि रसण थाह पावै कवण गुण संकर अवगाह रो ।।९

करी उपाय कितीक जिती निज आश्रय जांणी ।
पूछी सत पुरुसांह कही ज्यां सार कहांणी ।।
सुणी पुराणां साख कथी सद कथा कविंदां ।
आतम-ज्ञानी अवर जोय साखी जोगिंदां ।।
मत देस काल प्रकृत मुदै जुदा-जुदा दीसै जंहीं ।
सिव नाम सरब व्यापक समज सत्य एक भ्यासे सही ।।१०

१ पवित्र । २ शास्त्र सम्मत ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मतमतान्त रो मूळ जगत रो कारण जांणो।
सत पुरुसां रो साच निगम प्रत तणों निसांणों ।।
साहिब संतों तणो.......रौ प्रांण प्रचै पद। *
जांण सकल रो जांण सरब ध्रम तणो सार सद ।।
भव-समंद तरण मेटण भरम परम तत्व परमांणियै।
गुर तणौ ज्ञान-दीपक गिणै जिको नाम सिव जाणीयै ।।११

करै रतन काकरा जिकण खायां तन जोखो।
रुच आभूषण रुचै धरै मन तस्कर धोखो ।।
संचिया चलै न साथ पलक में हुवै पराया।
मनसा अटकै मुआं कहै अहि[1] पावै काया ।।
सतगरु दुकांन सूंगो सुलभ मिले जिकां मन मौज सूं।
अमोलक रतन सिव-नाम उर चित सुध लिये न चोज सूं ।।१२

गिण-गिण बांधी गांठ हरख माया मन हूंता।
धरो रही विच धांम सेज[2] जद आखर सूंता ।।
वस ठगणी[3] वे काम रह्या जे चहिया रीता।
विध सुकृत वापरी जिके जमवारो जीता ।।
माया जंजाळ अळुझे मुआं वलियो कागद वांचियो।
.... ।।१३*

नरसिंहगढ़ के दीवान (राजा) अचलसिंहजी जिस दिन क्रोध में होते, चाहे इजलास में होते अथवा महल में होते, सिर पर पघड़ी उलटी फिराकर रखते थे। उस वक्त उनके पास बगैर उनकी मर्जी के कोई नहीं जाता था। अगर कोई चला जाता तो उसे पिटवा देते थे अथवा भारी दण्ड देते। एक दिन सिंढायच भाउजी किसी समय उनकी पगड़ी फिरी हुई थी, चोपदार के आगाह करने पर भी महल में चले गये और अग्रिम पृष्ठाङ्कित छप्पय बनाकर वहीं सुनाया। राजा जी बहुत प्रसन्न हुए तब से भाउजी विशेष कृपापात्र हुए।

---

१ सर्प। २ मृत्यु शय्या। ३ ठगनी माया।

*११ वें व १३ वें छप्पय के रिक्त स्थान वाले अंश मूल प्रति में धुल चुके हैं।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

छप्पय

पाटण जिण दिन फरस[१] रांण संग्राम[२] उदैपुर।
रामपुरे रतनेस[३] बुंदी बुधपत[४] हाडां धर।।
रावत [५]मोहन अमर धीर[६] खीचीयां धुरंधर।
छतो[७] बुंदेलां छात राज गजसीह[८] नरव्वर।।
उण वार इता अब तूं अचळ उजवाळण कुळ ऊमटां।
सांसणां गजां लख साकुरां[९] सुरयंद समापण जस-सटां[१०]।।

श्री गंगाजी री स्तुति रा दोहा, सोरठा बुधजी रे कयोड़ा

दोहा

सुखम लखै कोइ सुखमणा, धार अनूपम ध्यांन।
इण कारण इळ अवतरी, सुरसरि नदी समांन।।१

सोरठा

जोग करण हठ जंग, प्रथा दिखावण प्रांणियां।
गरबो जायो गंग, भीसम सुत भागीरथी।।२
[११]वेद उलांघे वाट[११], विषय फलर भूला वहै।
कळंक जिकां रा काट, जीव उधारै जान्हवी।।३
गंग न भीनो गात, निरमळ जळ पावन नदी।
प्रांणी सूकरपात[१२], जे किण दिस उड़ जावसी।।४
प्रांणी रेळापेळ, सांपड़वा[१३] आवै सुजळ।
झटत वहै अघ झेळ, समंद डुबोवण सुरसरी।।५
ब्रह्मलोक रो वास, सूनो लख धर-संचरी[१४]।
सुरसरि कियो सुवास, भरथ-खंड मांनव भरै।।६
सुरसुरि समंद समाय, रहै निराळी रूप सूं।
ब्रह्म गुणां विलगाय, मिलै न ज्यूं जीवां मही।।७

---

१ परसराम। २ महाराणा संग्रामसिंह। ३ रतनसिंह चन्द्रवंशी शिशोदिया। ४ बूंदी के राजा राव बुधसिंह। ५ राजगढ़ के मोहनसिंहजी। ६ धीरजसिंह खिलचीपुर के। ७ बुंदेला शत्रुशाल। ८ गजसिंह नरवर नरेश। ९ श्रेष्ठ। १० यश के लिए। ११-११ वेद-मार्ग का उल्लङ्घन। १२ सूखे पत्ते की तरह। १३ स्नान करनें। १४ पृथ्वी पर अवतरित हुई।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पुनवांनां प्रतपाळ, करै जिको इचरज किसो ।
[1]पापी पिन्ड पखाळ[1], सुरग सिधावै सुरसरी ।।८
सुत पितु मात सकोय, हाड न्हांक न्यारा हुवै ।
जिको उधारे जोय, गंगा ग़म थारी गहरण ।।६

दोहा

पाप रचायो पिंजरो, तूं गंगा निसतार ।
थारे की म्हारै थिये, भरिये गाडे भार ।।१०

सोरठा

कोस चारसै कोय, नीर नहावै नांम ले ।
हिये कतारत[2] होय, भजन कियां भागीरथी ।।११
देह [3]पड़ै जिरण देस[3], हाड़ पड़ै हरद्वार में ।
कै पड़ जावै केस, भव[4] तारै भागीरथी ।।१२
केस दिये जो काय, नीर न्हाय गंगा नदी ।
वे भवसागर आय, भ्रमें नही भागीरथी ।।१३
घड़िया मांनव घाट, पापों हंदा पूतळा ।
वहतां गंगा-वाट, मोख[5] किया मंदाकिनी ।।१४
उर भीना अनुराग, तन भीना जळ गंग-तट ।
पग-पग माग प्रयाग, जिग-जिग फल पावै जको ।।१५
अघ भरिया जग अंग, जीव पखाळै[6] जायने ।
गरवापरण रो गंग, नहीं छेह देवे नरां ।।१६
हाड पखाळरण हाल, जावै गंगा जातरू[7] ।
नर सोई हुआ निहाल, भव तरिया भागीरथी ।।१७
देही नरक-दवार, मैल उतारे तो मही ।
त्यां जीवां निसतार, मुगत करै मंदाकिनी ।।१८
आया अंग अन्हाय, गोता खाह रू गंगजळ ।
जे जम किंकर जाय, भेटे नह भागीरथी ।।१६

१-१ पापियों के शरीर धोकर । २ कृतार्थ । ३ जिस देश में गिरे । ४ संसार से । ५ मोक्ष । ६ स्नान करने । ७ यात्री ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

शाप वशिष्ट समेट, वन-वन में फिरता वसू।
पाप पचायो पेट, देवधुनी[1] करने दया ॥२०
गया न थारी गैल, मैल उतारण मांनवी।
वहिया ज्यूंहिज बैल, भार भरण भागीरथी ॥२१
असमंजस नृप आद, सफल फली तप साधना।
वडकों[2] टली विषाद, भागीरथ भागीरथी ॥२२
निज घर छायो नाहि, ब्रह्मलोक कैलास विच।
मिळी न सागर मांहि, मानव हित मंदाकिनी ॥२३
सुरसुति जमना संग, कीनो तोसूं हेतकर।
रज[3] तूं मेट्यो रंग, सतगुण भीनी सुरसरी ॥२४
दियो न हिमगिर दाव, गाहटती वाका गिरां।
भागीरथ रो भाव, आई गंग उतावळी ॥२५
पाप करै परचंड, जम डंडां लायक जिके।
तारै जीव अभंड, भेट हुआं भागीरथी ॥२६
सुर मुनि चारण सिद्ध, सिद्धकरण कारण सकल।
पुहमी धार प्रसिद्ध, भरथ-खंड भागीरथी ॥२७
मत प्रकृति सर मंग, करण उदै थारी कळा।
ऊजळ निरमळ अंग, जाहर दीठो जान्हवी ॥२८
हरी सतोगुण होय, तमगुण रंगभीना तिके।
हुई न गंगा होय, रंग आपसूं और रंग ॥२९
धर पर थारी धार, हिमगिर सूं नह हालती।
सारा नर संसार, जमपुर-मारग जावतां ॥३०
[4]मही समांणी[4] मात, भागीरथ रै भाव सूं।
जमपुर-मारग जात, भीड़ मिटी भागीरथी ॥३१
सीतळ पवन सुवास, गंगारै धोरे ग्रहै।
तन छूटै जम-त्रास, वास वसै किवलास विच ॥३२
ऊगां सूर अंधार, गिरवर उड जावै गुफा।
धसियां गंगा-धार, दुरै पाप नर देह रा ॥३३

१ गंगा। २ बड़े बूढ़ों की। ३ रजोगुण। ४-४ पृथ्वीपर आई।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सागर कीनो संग, संहस धार हुय संचरी।
रळीन लीनो रंग, कड़वी हुय मंदाकिनी ।।३४
तिण गंगा री तीर, वासो नारायण वसै।
सीतल परस सरीर, मुगत लिये केई मांनवी ।।३५
धरहर गंगाधार, जटी जटा सूं झरहरी।
ब्रह्म कमंडल वार, भुवमंडल आयां भलां ।।३६
जावै भागा जेम, कुंजर दीठां केहरी।
तट जावंतां तेम, भागा अघ भागीरथी ।।३७
साधू साधन संग, पावै गति परमेस्वरी।
गति सोई देवे गंग, [1]पांणी रो कणको[1] पियां ।।३८
विध पाती वैकुंठ, सूनी होती सिवपुरी।
धोट पाप जल घूंट, मांनव गंग न मेलतो ।।३६
जीव हुवै केई जोत, चार भुजा केई तीन चख।
और भाव उद्योत, भव दीठां भागीरथी ।।४०
जागा-जागा[2] जीव, फिर-फिर क्यूं भागा फिरै।
सरणै राख सदीव, देवी गंगा देहळी ।।४१
[3]हाल हिया[3] हरद्वार, जिण गंगा तन जीवतो।
पड़िया हाथ पसार, मुंआंई देसी मुकत ।।४२
प्रांणी करवा पाप, अवतरियो जणणी उदर।
टलियो चाहै ताप, गंगारो अवलंब गुणौ ।।४३
जणणो घणी जमात, पोखण हित परिवार नूं।
मुगत करण नु मात, सुखमण दूजी सुरसुरी ।।४४
आ थारी अखियात, वात वमेक विचार तो।
मीठी गंगा मात, खपने समंदर-खार में ।।४५
चतुरानन ग्रह चाल, जाय समांणी सिव जटा।
हिमगिर ऊपर हाल[4], गंगा तूं सागर गई ।।४६
गंगा कीधी गैल, समजै कोई जिणरी सता।
जीवन सो तज वैल, आप मिलायां आयगा ।।४७

१-१ जल की बूंद। २ स्थान-स्थान पर। ३-३ हे हृदय चल। ४ चलो।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

निगम-पदी जिण नाम, विस्नु-पदी पद विस्नु दै ।
क्यूं रे मनवे कांम, ध्यांन न धारे धारणा ।।४८
जिण गंगा-तट जाय, पित्रां नह पांणी[1] दियो ।
इळ अवतरिया आय, मळ कीड़ा ज्यूं मांनवी ।।४६
चंद दिखावै छौत, ताप दिये आतप तरण ।
साचांणी-सा जोत, गंगारो पांणी गिणो ।।५०
मळ धोवण नु माय, इळ में धारा ऊतरी ।
निरमळ करी निकाय, मांनवियां मंदाकिनी ।।५१
क्रमीन कीट कुरंग, जीवतड़ा मांनव जिके ।
गया न मारग गंग, सांपड़वा[2] निरमळ सुजळ ।।५२
समदर गई सकोय, विण गंगा संगम वहै ।
खार मिळी गुण खोय, आपो छोड़े आपरो ।।५३
कादै[3] विच कळियाह,जळिया केई सिसु तेल जळ ।
गंगा अघ गिलियाह, पाछा नह चलिया पगां ।।५४
ब्रह्मद्वार री वाट, देख लखौ हरद्वार में ।
घट-घट मांहे घाट, जांणो सो नर जांणियो ।।५५
घेरा दे-दे घाट, काट-काट हिमगिर किया ।
विधना काढी वाट, सुरग वसावण सुरसरी ।।५६
समजळ समतळ संग, कठण पहाड़ों काटवा ।
गती तु हाली गंग, अदभुत दीठी आंखियां ।।५७
अवगुण छूटो अंग, तमगुण रंग हूंतां तिको ।
गुण थारा लख गंग, सिव उतमंग[4] राखै सदा ।।५८
तीर-तीर तासीर, वरत रही वसुधा विचै ।
सोखे पाप सरीर, सहज सुभावां सुरसुरी ।।५६
मिटी त्रास जम मार, परसंतां सीतल पवन ।
[5]अघ बुझ गया[5] अंगार, भीना जळ भागीरथी ।।६०
माता सुत धण मोय, चोय-चोय मुख चूंमियो ।
हुवै तो ऊरण होय, गंगा हाड गळावियां ।।६१

१ जल । २ स्नान करने । ३ कीचड़ । ४ मस्तक । ५-५ पाप नष्ट हुए ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पित्र पती कर प्रेम, पित्र वसावरण पित्रपुर ।
नरां उधारण नेम, भलो कियो भागीरथी ।।६२
निगमपदी रै नाम, पावै प्रांणी अगमपद ।
जिणरो आठुंहि जाम, सिमरण कर बुधिया सकव ।।६३
हेठो बैठो हार, गहरी करतो गरजना ।
खार समंदर खार, भीनी नह भागीरथी ।।६४
संगी रह्या समाय, रोम-रोम रग-रग रता ।
गंगा दिया गमाय, तें म्हारा पातक तिके ।।६५
सुघड़ां-सुघड़ां ईह, [1]दुरै न[1] ज्यूं परदेस में ।
गंगा गरवाईह[2], आगे वध पाई इधका ।।६६
संहस धार हुय संग, सागर मांहे संचरी[3] ।
आगे एकरण अंग, सो न मिलाया सुरसुरी ।।६७

फुटकर सोरठा भक्ति दृष्टान्त रा बुधजीरें कयोड़ा—

सजन वाळा सोह, वेळा अंत विसारने ।
माया छोड़े मोह, अलबत[4] जाणो एकलो ।।६८
भलपण राखे भाव, हर जिण सूं हक बोलणो ।
साचो औहिज साव, मिनख जनम रो माढवा ।।६९
पड़पण सारू पेख, खाणो पीणो खरचणो ।
हलै न कवडी हेक, मरतां साथे माढवा ।।७०
धन ऊपर चित धार, नांणो[5] जे खरचै नही ।
ले जासी की[6] लार, मरतां साथे माढवा ।।७१
बुधिया मत वीसार, पलक हेक त्रिभुवनपती ।
है ऊ[7] राखण हार, पड़ियां संकट प्रांणनें ।।७२
पावै संकट प्रांण, आवै नह साहिक[8] अवर[9] ।
जिण पुळ [10]आरत जांण[10], धावे वेगो चक्रधर ।।७३

१-१ छिपते नहीं। २ बड़प्पन। ३ प्रवेश हुई। ४ अन्ततोगत्वा। ५ द्रव्य। ६ क्या। ७ वह (ईश्वर)। ८ सहायक। ९ और (अन्य)। १०-१० दया समझ कर।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सोरठा मरसिया—नरसिंहगढ़ माहाराज महताबसिंहजी रा बुधसिंहजी रै कयोड़ा

सोरठा

मरण तूझ महताब, असह[१] अचांणक आवियो ।
खांवंद कियो खराब, मोनू[२] वूढापै मही ।।७४
सजन न दीसे साथ, ऊमरं दिन ओछा करूं ।
नरसिंहगढ़ रा नाथ, [३]मेल गयो[३] महतावसी ।।७५
हियो फटै दुख हेर[४], कटै विपत रा दिवस किम ।
वीसरगो इण वेर, माळवपत महतावसी ।।७६
हणवंत नृप रो हेत, ज्यूंहिज थारो जांणियो ।
आखर कियो अहेत, माठै[५] दिल महतावसिंह ।।७७
हरि घर नांहि हिसाब, जाहर मन में जांणियो ।
माळवपत महताब, जोखमियै[६] की जांणेन ।।७८
दीन दया द्विज देव, पूजा संकर में निपुण ।
अहियो अलक अभेव, निग्रहियो महताब नृप ।।७९
औ नरसिंहगढ़ आज, विरंगो दीसे तो विना ।
रोर[७] मिटावण राज, घणी आब मेहताब धर ।।८०
निजरां आवो नांहि, गढ़ महलां रे गौखड़ां ।
मन मुरझावै मांहि, नित तो विण महताब नृप ।।८१
हाथी हलकां हूंत, असवारी करवा अवस ।
हित कर सुतन हणंत, भूप आव महताब भव ।।८२
मिंदर संकर मांझ, वातां करण विवेक री ।
संकर सेवा सांझ, क्यूं भूलो महताब कह ।।८३
खांवंद आवै ख्वाब[८], निस-दिन सूतां नींद में ।
मिळसो कद महताब, जग मांहै मानव जनम ।।८४
वासण गयो विलाय, वांसे[९] रहोज वासना ।
जोवां किण दिस जाय, माळवपत महताब ने ।।८५

---

१ असह्य । २ मुझको । ३-३ छोड़ गये । ४ देखकर । ५ निर्मोही । ६ मृत्यु ।
७ विपत्ति । ८ स्वप्न । ९ पीछे ।

T　CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कवित्त मरसीया—खेतड़ी माहाराज अजीतसिंहजी रो बुधसिंहजी रो कयोड़ो

असरन-सरन नाम तेरो जग उच्चरत[1],
बाल प्रह्लाद को मिटायो दुख भीत[2] को।
तारन-तरन गजराजहू को तारचो तैंने,
तंतव को तारें चक्र पायो व्रद जीत को ।।
रन तज भागो तातें पायो रनछोर पद,
द्वेष ना दिखायो जग नातो राजनीत को।
अकरन-करन नाम तेरो जान्यो ईस अब,
ऐरे तें सुनायो कान मरन अजीत[3] को ।।१

कवित्त—नरसिंहगढ़ रा राजां री पीढ़ियाँ रो सिंठायच बुधजोरो कयोड़ो

दूदाजू दिवान भये डूगरेस रावत को,
पायो पद दुहुं ठौर रान सुरतान में।
हठेसिंह अजबसिंह ताके सुत फरसराम,
दळा मोतीसिंह क्षत्री धर्म खुमान में ।।
ऊमट अचळसिंह तनय सोभागसिंह,
राजा हनवन्त नीत रीत के निधान में।
नृपत प्रताप महताबसिंह ताके सुत,
अर्जुन उदार जस जाहर जहान में ।।२

कवित्त—महाराज मेहताबसिंहजी रो

आसतिक पक्ष प्रजापालन प्रतक्ष दक्ष,
सेना पक्ष ज्यूंही कोसाध्यक्ष राजधानी को।
नीति में निपुण पृथु नृपति युधिष्टर सो,
रामचन्द्र रीति मरयाद आद मानी को ।।
मेधावी महान मन पंकज को जैसे रवि,
[4]न्याय को निवेरो करै हंस पय-पानी को[4]।
भूप महताबसिंह प्रबल प्रतापी तुम्हें,
सुयस सराहुं के सराहु सावधानी को ।।३

१ कहता है। २ भय। ३ अजीतसिंह। ४-४ न्याय करने में हंस के समान (जो दूध व पानी को अलग-अलग करने की क्षमता रखता है)।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कवित्त—महाराज अर्जुनसिंहजी रा बुधजी रै कयोड़ा

विद्या ग्रो विवेक ग्रोज[1] चातुरता चित्त की त्यों,
नीति की निकाई[2] नृपताई तैसी मन में।
क्षत्री-कुल खेल-ख्यात[3] वीरता विसेस वात,
उर में उदारताई तेज पुंज तन में।।
परजा सों प्रीत रीत मंत्रीगन मोद मान,
गुन की पिछान जान गौरमिन्ट गन में।
अर्जुन नरेस तेरी कहां लों सराह करां,
प्रभुता कों पाय राज पायो वालपन में।।४

केसर के रंग वारो वागो अंग सोहत है,
तैसो ही लपेटो[4] उतमंग[5] जरीतारो है।
भूषन व्रसन जगमगत जवार-जोत[6],
मानहु नछत्र मान प्रभा को पसारो है।।
वानक किसोरवय [7]रांनक में रूप रूरो[7],
मालव सुदेस प्रजा परम पियारो है।
आनंद के कंद जैसो राजत मुखारविंद,
अर्जुन नरेन्द्र किधों नंद को दुलारो है।। ५

कवित्त मरसिया—प्रतापगढ़ दीवान (राजा) श्री उदैसिंहजी रो बुधजी रो कयोड़ो

वंस मेदपाटेश्वर ताको अवतंस[8] भूप,
गंगा कैसो नीर मनो सागर में बहिगो।
सज्जन चकोर वृन्द आनंद को कंद अहो,
राका चन्द मन्दमति राहू कैसे गहिगो।।
कठिन करेजा वेजा वात सुन एसी श्रोन,
आरा दुख धारा तें बरारा क्यों न लहिगो।
उद्दल[9] पतन भयो जतन न लागे जस,
रतन अमोल कवि-कंठन में रहिगो।।६

---

१ पराक्रम। २ बहुलता। ३ युद्ध में ख्याति प्राप्त। ४ साफा (पगड़ी)। ५ मस्तक।
६ रत्न-ज्योति। ७-७ सुन्दरता में श्रेष्ठ। ८ श्रेष्ठ। ९ उदयसिंह।

T　CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कवित्त—खिलचीपुर राजा अमरसिंहजी को

समय सुभाव तें अभाव भयो दानिन को,
ज्ञानिन की बातें सुनि [१]हियो हहरात है[१]।
दोरे एन त्रसना को रसना न भीजे नीर,
ऊसर में बोऐ कहौ तूसरहु[२] पात है॥
उद्दल नरिंद वलवंत हनवंत जात,
मालव उदास भयो ताकी सुध आत है।
खिच्चिय नरेस अमरेसहू[३] के हातन तें,
पातन सनातन की तान कछु आत है॥७

कवित्त—नरसिंहगढ़ दरबार श्री अरजनसिंहजी रो, बुधसिंहजी रै कयोड़ो

संपत सुधारक त्यां धारक धरम धीर,
उतरा प्रगलभ विस्व भरता विभूती[४] को।
परम प्रसंस अवतंस[५] वंस ऊमट के,
करता कुसळ काज राज करतूती को॥
सूरता उदार ताके गुन में गरिष्ट गात,
प्रगट प्रकास पुंज रोस रजपूती को।
अर्जुन नरेस सारग्राही मत सावधांन,
नीत को निदान सांचो अंकुर सपूती को॥८

कवित्त—नरसिंहगढ़ महाराज अर्जुनसिंहजी का राजतिलक-समय को बुधजी रो कयोड़ो

सज्जन समागम को आगम भो आनंद को,
गावत वधाई गुनी गुन को उचारकैं।
वाजन अवाजन सों गाजत है गोम गिर,
भूसुर[६] भनत स्वस्तिवाचन सुधारकैं॥
मंत्रीगन नजर निछावर करत मिल,
कीरत कहत कवि कोविद अपारकैं।

१-१ विदीर्ण होता है। २ घास। ३ अमरसिंह। ४ ऐश्वर्य। ५ शिरोमणि। ६ ब्राह्मण।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अर्जुन उदार भूप नृपता तिलक तेरे,
परजा निहाल भई भाल में निहारकै ।।९

कवित्त—महाराज प्रतापसिंहजी नरसिंहगढ़ का वलायत सूं पधारचा जींको बुधजी रो कयोड़ो

हिम्मत बहादुर की किम्मत कहां लों कहुं,
नरसंगढ-नाथ परताप[1] नरइन्द को ।
साहन के साह कों जुहारचो उरमोद मान,
व्हें गयो अचंभो ग्रेटविट[2] अरु हिन्द को ।।
सज्जन चकोर वृंद[3] हेर-हेर चंदमुख,
देर-देर दीह दृग पावत अनंद को ।
दीपान्तर जाय नीके कुरब बढाय आयो,
मोतिन बधायो निज थान मालविंद को ।।१०

कवित्त दूजो

ऊजळ अवास[4] खास वदर विराजमान,
घन की गरज रव[5] दुन्दभी को छायो है ।
चात्रक[6] की सोर त्यांही गावत गुनीजन है,
बटत वधाई नीके दांन झर लायो है ।।
जरत जवासा[7] जैसे सत्रूगन दाहत है,
सज्जन रहत तरु मोद सरसायो है ।
जायके विलायत कों पायके महान पद,
इन्द्र के प्रताप[8] माळवेन्द्र[9] घर आयो है ।।११

कवित्त—नरसंगढ महाराज मेहताबसिंहजी रा, बुधसिंहजी रा कयोडा

साख[10] पंचतीसहु को राजा महताबसिंह,
सरद-जुनाई जैसी लागी कुल लाज है ।

---

१ नरसिंहगढ़ के राजा प्रतापसिंह । २ ग्रेट ब्रिटेन । ३ समूह । ४ महल । ५ ध्वनि, शोर । ६ पपीहा । ७ पोधा विशेष, जो वर्षा के पानी से जल जाता है । ८ प्रतापसिंह । ९ मालव देश के स्वामी । १० पंवारों की पेंतीस शाखाएँ ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सज्जन चकोर वृंद बाढत अनंद उर,
रहे अरविंद[1] खल मंद छल व्याज है ।।
वटत बधाई त्यां मयूख[2] मग मालव में,
पियुष[3] प्रवाह प्रजा पावत समाज है ।
छत्रिन में छत्रधर राजत विचित्र रूप,
मंडल नछत्रन में राका दुजराज है ।।१२

कवित्त दूजो

दूदा जैसो दुग्धमति[4] [5]हठी हठैसिंह जैसो[5],
सूर अजबेस[6] जैसो छत्रिन-समाजा को ।
[7]पन को फरसराम[7] [8]मोती सो विसाल भाल[8],
[9]अचल उदार[9] [10]किरवान चैन[10] काजा को ।।
[11]साख पंचतीसहु को मुगट महीसन को[11],
टीको जसहू को नीको नरसंगढ़ राजा को ।
भूप महतावसिंह तेरे भुज भार सोहे,
नंद हनमंत हनवंत कुल लाजा को ।।१३

कवित्त—महाराज अर्जुनसिंहजी गद्दी-विराज्या जींका

धन्यवाद वार-वार कीन हिन्द केसर को,
पारलियामेंट सभा प्रभा[12] के प्रचारक ।
धन्यवाद कलकत्ताधीस लाठसाहव कों,
भारत की रीत नीत विविध विचार की ।।
धन्यवाद मालव मुकीम वार साहब कों,
मींटहु अजंट दीठ राखत सुधार की ।
अर्जन कों भूप कीनो रोसन[13] को काम दीनो,
नरसंगढ़ कीत लीनी सरस सुधार की ।।१४

---

१ कमल । २ किरण । ३ अमृत । ४ दूदाजी जैसा श्रेष्ठ बुद्धिमान । ५-५ हठ करने में हठीसिंह जैसा । ६ शूरता में अजबसिंह जैसा । ७-७ प्रण-निर्वाह में परसराम जैसा । ८-८ मोतीसिंह जैसा भाग्यशाली । ९-९ उदारता में अचलसिंह जैसा । १०-१० तलवार चलाने में चैनसिंह जैसा । ११-११ पंवारवंशी राजाओं में श्रेष्ठ । १२ शोभा । १३ रोशनलाल ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

संवत गुनीस साल चौवन को पौस सुदी,
तीज बुधवार [1]सुभ सकुन सुभाय कै[1] ।
महारानी भारत अधीश्वरी की कृपा भई,
देस-देस दीपन लों प्रभा दरसाय कै ।।
गौरमिन्टहू सों गौर करके निहार गुन,
अर्जुन नरेस काज नरसिंहगढ़ आय कै ।
बार रजीडेंट मींट साहब अजंट आय,
सदर नसीनी कीनी कुरब सवाय कै ।।१५

कवित्त मरसइया—नरसिंहगढ़ महाराज श्री महताबसिंहजी रा, बुधसिंहजी रो कयोड़ो

उजरे अवास में अवाज वीन वाजन की,
गहर अवाज तहां गोम गहरात है ।
प्रजापाल नीतहू की रीत निरवाह नीक,
फैली वसूधायै कीत धुजा फहरात है ।।
सज्जन-सभा को तज गयो वैकुंठ ऊठ,
विरह वियोग दुख छायो अह-रात[2] है ।
भूप महताबसिंह दीठ चहुँ ओर फेरू,
हेरूं पै मिलत नांहि हियो हहरात[3] है ।।१६

अगहन मास कृष्ण पंचमी कुं वार कवि[4],
समत गुनीस साल तेपन तपायगो ।
कितव अरिष्ट[5] काल निष्ट दिन वेला वीच,
जगत असार को विसार विच लायगो ।।
हाय कोन दिसा हेरूं हियो हहरात मेरो,
परम प्रतापी सोइ पर्मपद पायगो ।
मालव के देस को नरेस महताबसिंह,
संकर उपासी लोक[6] संकर सिधायगो[7] ।।१७

१-१ अच्छे शकुन मनाकर । २ दिन-रात । ३ हृदय विदीर्ण होता है । ४ शुक्र । ५ क्रूर । ६ शिवलोक । ७ गये ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कवित्त—नरसिंहगढ़ माहाराज अर्जुनसिंहजी रा

दक्षता उदार ताको राजत[1] अथाह सिंधु,
धीर ध्रुव[2] धरम धरा को रखवारो है।
गाहिक गुनी को त्युंही साहिक[3] दुनी को नीको,
महत मनी को मोद मांन मतवारो है।।
माळव धरा को ईस मित्र अवनीसन को,
सीस को मुगट न्याय नीत निरधारो है।
भूप अर्जनेस आज पोरस[4] प्रचंड पुंज,
साख पंचतीस को अखंड उजियारो है।।१८

गुनन को आगर[5] उजागर जहान वीच,
धीरज को सागर प्रकास जस जाई को।
विहित विचार निज-धर्म अनुरत्त सदा,
चित्त पै न दर्प[6] है प्रभुत्व जग पाही को।।
साख पंचतीस को श्रंगार भुज भार सार,
उद्दित उदार नीत रीत निपुनाई को।
हेर आन नृपत सराहुं कहा वेर-वेर,
भूप अर्जनेस गिरमेर[7] गरवाइ को।।१९

सवइया—नरसिंहगढ़ माहाराज मेहताबसिंहजी रो, बुधसिंहजी रो कह्यो

सूरज चंद रु बुध कवी भृगु[8] भोम सनातन रीत सों जीके।
राहु रु केत अहेत असम्मत वक्रत[9] छांड सहेत सनीके।।
क्रूर स्वभाव तें सोम भये महताव मया अनुकूल मही के।
पीयट साहब मींट अनुग्रह[10] हो गये सीधे नवग्रह नीके।।२०

---

१ शोभायमान। २ निश्चय। ३ सहायक। ४ पौरुष, पराक्रम। ५ भण्डार। ६ घमण्ड। ७ सुमेरु गिरि। ८ शुक्राचार्य। ९ टेढापन। १० कृपा।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

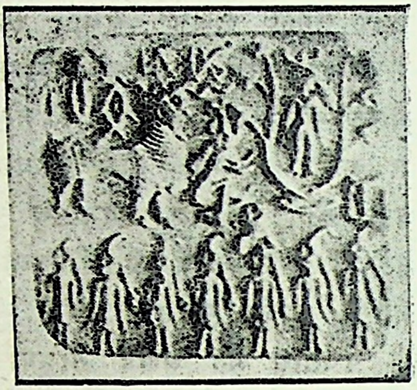

कः स्विद् वृक्षो निष्ठितो मध्ये अर्णसो यं तौग्र्यो नाधितः पर्यषस्वजत् ।
पर्णा मृगस्य पतरोरिवारभ उदश्विना ऊहथुः श्रोमताय कम् ॥
तद् वां नरा नासत्यावनु ष्याद् यद् वां मानस उचथमवोचन् ।
[ऋग्वेद-मण्डल-१, सूक्त १८२, ७-८]

स्पष्टीकरण के लिये देखिये त्रैमासिक **'स्वाहा'** दिसम्बर १९६९ का अङ्क।

सिन्धुलिपि एवं संस्कृति का रहस्य जानने के लिये नियमित रूप से पढ़िये, **राजस्थान प्राच्यविद्या-प्रतिष्ठान**, जोधपुर की त्रैमासिक मुखपत्रिका **'स्वाहा'**

वार्षिक मूल्य – १५.००
एक अङ्क का मूल्य – ४.००

डाक-व्यय पृथक्.

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

हमारे नवीनतम प्रकाशन

नाम	सम्पादक	मूल्य
१. बालशिक्षा-व्याकरणम्	मुनि श्री जिनविजय	७-७५
२. नृत्यरत्नकोशः, भाग २	श्री आर० सी० परीख	६-७५
[illegible]न्द्र-व्याकरणम्	पं० बेचरदास जे० दोसी	७-००
४. गोरा-बादिल-चरित्र	मुनि श्री जिनविजय	४-००
५. हम्मीरमहाकाव्यम्	मुनि श्री जिनविजय	१५-००
६. मुंहता नैणसी री ख्यात, भाग ४	श्री बदरीप्रसाद साकरिया	८-७५
७. मधुमालती सचित्र कथा	डॉ० फतहसिंह [प्र०सं०]	१८-७५
८. आगमरहस्यम् पूर्वार्द्धम्	श्री गङ्गाधर द्विवेदी	१५-००
९. शकुनप्रदीपः	डॉ० फतहसिंह [प्र०सं०]	१-००
१०. पाठ्यरत्नकोश	[illegible] गोपालनारायण बहुरा	३-५०
११. ए केटलॉग ऑफ संस्कृत एण्ड प्राकृत मैन्युस्क्रिप्ट्स पार्ट III-B	श्री मुनि जिनविजय	४८-७५
१२. नन्दोपाख्यान	डॉ० [illegible]सिंह [प्र०सं०]	१-००
१३. राठौड़ां री वंशावली एवं राठोड़ वंश री विगत	[illegible] सिंह [प्र०सं०]	२-१५
१४. [illegible]ड़ीशतकम् टीकाद्वयसहितम्	श्री [illegible]नारायण बहुरा	५-२५
१५ कविकौस्तुभम्	डॉ० [illegible]सिंह [प्र०सं०]	२-००
१६. मीरां बृहत्पदावली, प्रथम भाग	पु[illegible]नारायण	७-५०
१७. स्थूलिभद्रकाकादि	डॉ० आत्माराम जाजोदिया	१-७५
१८. राजस्थानी वीरगीत-संग्रह, प्रथम भाग	श्री सौभाग्यसिंह शेखावत	६-५०
१९. गजगुणरूपकबन्ध	श्री सीताराम लालस	९-००
२०. वैताल-पचीसी	डॉ० पुरुषोत्तमलाल मेनारिया	३-५०
२१. मारवाड़रा परगनां री विगत, प्रथम भाग	डॉ० नारायणसिंह भाटी	१५-५०
२२. राजस्थानी वीरगीत-संग्रह, द्वितीय भाग	श्री सौभाग्यसिंह शेखावत	६-२५
२३. देवीचरित, प्रथम भाग	श्री हुक्मचन्द चतुर्वेदी	१३-२५
२४. राजनीति रा कवित्त	डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली	५-००
२५. सिन्धुघाटी की लिपि में ब्राह्मणों और उपनिषदों के प्रतीक	डॉ० फतहसिंह	५-००
२६. शङ्करीसङ्गीतम्	श्री लक्ष्मीनारायण गोस्वामी	१-२५
२७. संघपति रूपजी वंश-प्रशस्तिः	महोपाध्याय विनयसागर	१-२५
२८. सनत्कुमारचक्रिचरितमहाकाव्यम्	महोपाध्याय विनयसागर	११-५०
२९. पथ्यापथ्यस्वरितः (हिन्दी-व्याख्या सहिता)	श्री सुरजनदास स्वामी	६-००
३०. [illegible]आगमरहस्यम्-उत्तरार्द्धम्	श्री गङ्गाधर द्विवेदी	११-७५
३१. मारवाड़ रा परगनां री विगत, द्वितीय भाग	डॉ० नारायणसिंह भाटी	१२-५०
३२. मन्त्रभागवतम्	सुश्री श्रद्धा चौहान	१-७५

प्राप्तिस्थान—

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर (राजस्थान)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy